गुसाईं-गुरुबानी

गुसाईं-गुरुबानी

(गुसाईं मत का गुरु-ग्रंथ)

प्राक्कथन
डा० गोकुलचन्द नारंग
एम० ए०, पी-एच० डी०, बार-एट-ला
भूतपूर्व मंत्री, पंजाब सरकार

भूमिका
डा० विजयेन्द्र स्नातक
एम० ए०, पी-एच० डी०,
रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सतगुरु सिद्ध बाबा साईंदास सेवक संघ, दिल्ली
के निमित्त
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बाबा साईंदास के सेवक और प्रेमी इस पवित्र ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए 'सतगुरु सिद्ध बाबा साईंदास सेवक संघ' के अत्यन्त आभारी हैं। इस ग्रन्थ के विषय में कुछ कहने से पहले बाबा साईंदास के सम्बन्ध में कुछ कहना अप्रासंगिक न होगा। वे संत थे और उनका जन्म गुजरांवाला (अब पाकिस्तान में) के पास एक छोटे-से गांव में हुआ था। कुछ समय पश्चात् वे अपने प्रिय शिष्य बद्दो—चीमा कबीले के एक जाट—के साथ अन्यत्र चले गये। वहां उन्होंने बद्दोकी गुसाईं नामक गांव की स्थापना की। वहीं उन्होंने तपस्या की और शीघ्र ही ईश्वर-भक्ति और आत्मज्ञान के लिए प्रसिद्ध हो गए। उनके उत्तराधिकारियों ने उनके पुनीत कार्य को उनके नाम से एक गद्दी स्थापित करके चालू रखा। उनके उत्तराधिकारी लगभग ५०० वर्षों तक गद्दी को सफलतापूर्वक चलाते रहे। देश के बंटवारे के समय पंजाब के अन्य हिन्दुओं की भांति उनके उत्तराधिकारियों को भी गांव छोड़ना पड़ा।

गुसाईं जी के उत्तराधिकारियों के कार्यकाल में उस गांव की महत्ता और भी बढ़ गई, क्योंकि वहां पानी का एक तालाब था जिसके बारे में यह समझा जाता था कि उसमें बीमारियों को ठीक करने की एक अद्भुत शक्ति है। सेवकों की संख्या बढ़ती गई और उनके सेवकों में से एमनाबाद (गुजरांवाला के पास एक सुप्रसिद्ध नगर) का प्रमुख नन्दा-परिवार भी था। जब दीवान कृपाराम जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री थे, तब उन्होंने वहां एक बड़ा मंदिर और एक लम्बा-चौड़ा तालाब, जो पहले एक छोटे तालाब के रूप में था, बनवाया। गुसाईं जी के सेवकों के लिए यह स्थान तीर्थ यात्रा-स्थल बन गया। 'यज्ञ' नाम से एक बड़ा मेला मई मास में यहां होता था। इस मेले के अवसर पर गुजरांवाला जिले के सभी कोर्ट और स्कूल बन्द रहते थे और भारी सख्या में हिन्दू और मुसलमान इस मेले में भाग लेते थे। पूर्णमासी की रात को यहां संगीत का मोहक कार्यक्रम होता था। इस कार्यक्रम में आसपास के सभी प्रसिद्ध सगीतज्ञ भाग लेते थे और कार्यक्रम रात-भर चलता रहता था।

बंटवारे के बाद भी साधारण रूप से गद्दी चलती रही और अब भी गद्दी पर एक महन्त बैठते हैं और संघ के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष अब भी एक प्रकार का मेला उत्तराधिकारी महन्त की अध्यक्षता में भारत में होता है।

इस 'गुसाईं गुरुबानी' ग्रन्थ में बाबा साईंदास तथा उनके वंशजों, अनुयायियों और कुछ शिष्यों की रचनाएं संगृहीत हैं। ८०० पृष्ठों के इस महाग्रन्थ में अनेक पुस्तकें सम्मिलित कर ली गई हैं। पहली पुस्तक—रत्नज्ञान—संभवत: बाबा साईंदास का अपना मुख-बाक् है। इसके बाद वार श्री भागवत,अमृतवाणी, दशावतार तथा विभिन्न पद, हरिश्चन्द्र की कहानी, बाबा साईंदास की जीवनी, महादास की जीवन-गाथा, अमरदास और कांशीदास—जो बाबा साईंदास के अनुयायियों में से थे—के वार वर्णित हैं। धन्ना भगत की कहानी का भी वर्णन है। इसमें गुरु नानक और बाबा साईंदास की, (जो गुरु नानक के समकालीन थे—और जो नानकजी से कुछ महीने पूर्व या पश्चात् पैदा हुए थे) संभावित भेंट का भी वर्णन है। पुस्तक में रामनाम के गुणगान पर ही जोर दिया गया है, ठीक वैसे ही जैसे कि सिक्खों के गुरु ग्रन्थ साहिब में उपलब्ध होता है।

शहंशाह जहांगीर जब शिकार के लिए हरनमुनारा गये थे उस समय महन्त कांशीदास के साथ हुई उनकी मुलाकात का भी वर्णन पुस्तक में किया गया है।

मुझे यह ग्रन्थ इसलिए भी प्रिय है कि बद्दोकी गुसाईं ही मेरा जन्म-स्थान है और मुझे प्रसन्नता है कि यह ग्रन्थ सुन्दर रूप में प्रकाशित हुआ है। मुझे विश्वास है बाबा साईंदास के सेवक, प्रेमी और उत्तराधिकारी तथा साहित्य में रुचि रखने वाले महानुभाव इसे काफी पसन्द करेंगे।

—गोकुलचन्द नारंग

भूमिका

मध्ययुगीन संत साधकों के इतिवृत्त तथा साहित्य के सम्बन्ध में अद्यावधि जो शोध-कार्य हुआ है वह इतना अपूर्ण है कि उसके आधार पर न तो संत परम्परा का सम्यक् आकलन संभव है और न उनकी उपलब्धियों का ही हमें पूरा ज्ञान होता है। पन्द्रहवीं-सोलहवीं शती में उत्पन्न हुए पंजाब तथा राजस्थान के संत साधकों की जो विशाल सूची प्रकाश में आ रही है वह इस तथ्य को पुष्ट करती है कि सगुण भक्ति के उन्मेष से पूर्व संत साधकों की रहस्यमयी भावधारा का प्रवाह समस्त देश में व्याप्त हो चुका था। आचार्य क्षितिमोहन सेन, पं० परशुराम चतुर्वेदी, पं० वियोगी हरि, डा० बड़थ्वाल, डा० माधव आदि विद्वानों ने अपनी कृतियों में संत परम्परा का विभिन्न दृष्टि-बिन्दुओं से वर्णन किया है। किन्तु इन सत्प्रयत्नों के बाद भी संत साधकों की सम्पूर्ण जानकारी अभी तक हम उपलब्ध नहीं कर सके हैं। पंजाब के संत और भक्त कवियों की रचनाएं अभी तक अज्ञात बनी हुई हैं क्योंकि गुरुमुखी लिपि में होने के कारण उनका विधिवत् अध्ययन ही नहीं हुआ है। पटियाला में ही शताधिक ग्रन्थों की सूचना शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त हुई है। इन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का कार्य शनैः-शनैः प्रारम्भ हुआ है। 'गुसाइँ गुरुबानी' इसी परम्परा की दुर्लभ एवं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति है।

बाबा साईंदास मध्ययुगीन संत साधकों की परम्परा के उज्ज्वल रत्न हैं जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में हिन्दी-जगत् को कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। ज्ञान और भक्ति की समन्वित भावधारा से जिज्ञासुओं को परम शान्ति का सन्देश देनेवाले बाबा साईंदास किसी पन्थ या मत के अनुयायी न होकर स्वयं एक सन्त मत के प्रवर्त्तक थे जिसे 'गुसाईं पंथ' या 'गुसाइँ मत' के नाम से व्यवहृत किया जाता है।

बाबा साइँदास ने 'गुसाईं पन्थ' का प्रवर्तन क्यों और किन परिस्थितियों में किया, यह प्रश्न कई संदर्भों में विचारणीय है। किन्तु मैं इस प्रसंग को यहां विस्तार से प्रस्तुत नहीं करना चाहता, केवल इतना ही संकेत करना चाहता हूं कि गुरु नानकदेव के समकालीन होने से बाबा साईंदास ने तत्कालीन धार्मिक,

सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों को उसी परिप्रेक्ष्य में ग्रहण किया था जिस परिप्रेक्ष्य में गुरु नानक ने। गुरु नानक की उपासना-पद्धति में एकेश्वरवाद के निर्गुण स्वरूप का आग्रह था जिसे ज्यों का त्यों उनके पुत्र श्रीचन्द ने भी स्वीकार नहीं किया। फलत: श्रीचन्द ने अपने पिता के पन्थ से कुछ हटकर स्वतन्त्र उदासी सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और अपनी धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त अवकाश खोज निकाला। बाबा साईंदास गुरु नानक की विचार-धारा से पूर्ण परिचित थे। दोनों संत एक ही जिले के निवासी एवं समकालीन थे; समाज के उद्धार में रुचि रखनेवाले उच्च कोटि के साधक थे। गुरु नानक ने जिस धरातल पर हिन्दू धर्म की धार्मिक मान्यताओं एवं परम्पराओं को स्वीकार किया उसमें राम और कृष्ण जैसे अवतारी महापुरुषों के लिए वह स्थान नहीं था जो सगुणोपासक भक्तों की आस्था-श्रद्धापूर्ण दृष्टि में चला आ रहा था। बाबा साईंदास ने हिन्दू धर्म की आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए राम और कृष्ण के अवतारी रूप को भक्त की भावना में अनुरूप बनाया। साथ ही, योग मार्ग की साधना को सहज-साधना का रूप देकर प्रस्तुत किया जो गुरु नानक की पद्धति से सर्वथा भिन्न स्तर पर है। साधना के क्षेत्र की प्रतिक्रिया के रूप में बाबा साईंदास ने अपने पन्थ में ज्ञान, भक्ति और योग के समन्वय पर बल दिया तथा एक ऐसा सहज पन्थ खोज निकाला जो हिन्दू धर्म की परम्पराओंको निगीर्ण करता हुआ संत साधना का नवीन पथ प्रशस्त करने में सक्षम हो सके। यह एक संकेतमात्र है जिसके द्वारा बाबा साईंदास के पन्थ-प्रवर्तन के मूल कारण का उद्घाटन संभव है।

बाबा साईंदास गुसाईं सम्प्रदाय के आदि प्रवर्त्तक तथा मूल पुरुष माने जाते हैं। 'गुसाईं गुरुबानी' के 'साईंदास जीवनी' प्रकरण में साईंदास का जन्म संवत् १५२५ लिखा है। तिथि, मास आदि का पूरा विवरण इस प्रकरण में मिलता है। यदि इसे प्रमाण माना जाय तो ईसा की पन्द्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध में इनका जन्म मानना होगा। साईंदास शैशव से ही विरक्त स्वभाव के थे किन्तु बचपन में ही विवाह हो जाने से साधु बनकर घर-बार छोड़ नहीं सके। सद्गृहस्थ के रूप में शान्त वृत्ति से जीवन-यापन करते हुए अपने विचारों का प्रचार करते रहे। अपने पुत्रों को भी इन्होंने अपनी विचारधारा के अनुकूल बनाया।

बाबा साईंदास वैष्णव परम्परा के भक्त हैं या निर्गुणधारा के समर्थक संत साधक, यह प्रश्न विचारणीय होने के साथ बड़े महत्त्व का है। इस प्रश्न का समाधान दो मार्गों से संभव है। 'गुसाईं गुरुबानी' के अध्ययन से उपलब्ध निष्कर्ष तथा सम्प्रदाय में प्रवर्तित उपासना-पद्धति के अनुशीलन से प्राप्त तथ्य। इन दोनों स्रोतों के अवगाहन के बाद मैं इस सम्प्रदाय को उस प्रकार का वैष्णव भक्ति

सम्प्रदाय नहीं मानता जैसा कि रामानन्द का सम्प्रदाय है। रामानन्द की भक्ति-पद्धति का अनेक संत सम्प्रदायों पर गहरा प्रभाव देखा जा सकता है किन्तु उन सबको वैष्णव सम्प्रदायों में समाविष्ट नहीं किया जा सकता। यही स्थिति गुसाईं मत की भी है। वस्तुतः यह पंथ पूर्ण रूप से विकसित सम्प्रदाय नहीं है अतः वैष्णव साधना की मर्यादा भी इसमें नहीं है। राम और कृष्ण की कथा को 'गुसाईं गुरुबानी' में पूरे उल्लास के साथ इस मत के संतों ने गाया है किन्तु कथा के पल्लवन में न तो वैष्णव भावना है और न सिद्धान्तों में अवतारी राम या कृष्ण की वैसी स्वीकृति है जैसी वैष्णव साहित्य में मिलती है। राम और कृष्ण को उपास्यदेव मानते हुए भी उनके रूप, गुण, शील वर्णन में निर्गुण भावना का विचित्र ढंग से आरोप किया गया है। रामानन्द की परम्परा में अपने को मानते हुए और गुरुमंत्र या दीक्षा मंत्र में राम का स्तवन करते हुए भी ब्रह्म, जीव और जगत् के विषय में इनकी विचारधारा ज्ञान मार्ग के मेल में है। उपनिषद् और वेदान्त को स्वीकार करते हुए "एको एक सब में बसे, अवरि न दूजा कोय। साईंदास जो जाने दरि दूसरा, दरि दरि वाला होय।" आदि वाक्यों द्वारा अद्वैत भावना का ही समर्थन है। ब्रह्म वर्णन में इन्होंने अपने आध्यात्मिक तत्त्व को बड़े स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है—

> आदि निरंजन जानियो निर्भो तुम निरंकारि।
> अगम अगोचर सुनि मैं रचना राचनि हारि॥

संक्षेप में, ब्रह्म, ओंकार, माया, जीव और जगत् के नानाविध वर्णनों को पढ़कर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उपनिषद् और वेदान्त के प्रतिपाद्य को स्वीकार करते हुए गुसाइयों ने राम और कृष्ण के चरित को अपनी शैली में ढाला है। राम की उपासना तो है किन्तु वह उपासना वैसी ही है जैसी निर्गुणधारा के अन्य मतों या पंथों में स्वीकृत है। इस पंथ की विशेषता है कि इन्होंने कृष्ण भक्ति को भी अपनी वाणी में स्थान दिया है। राम और कृष्ण को अवतारी सगुण ईश्वर के रूप में गाकर भी निर्गुण रूप में ध्यान का विषय बनाना ही इस पंथ की विशिष्टता समझी जानी चाहिए।

निर्गुण और सगुण का जिस सामान्य धरातल पर मेल संभव है उसे देख पाना और प्रस्तुत करना कठिन काम है किन्तु मध्ययुगीन अनेक संत महानुभावों को यह दिव्यदृष्टि प्राप्त थी और उसी के द्वारा यह विलक्षण चमत्कार इन संतों ने कर दिखाया है।

'गुसाईं गुरुबानी' में साधना के जिन सोपानों का स्थान-स्थान पर उल्लेख हुआ है वे भी इस तथ्य के समर्थक हैं कि गुसाईं गुरुओं के सामने समन्वय का आदर्श

था। गुरु नानक के सिख पंथ ने तथा श्रीचन्द के उदासी मत ने जिन दो विचार-धाराओं को साधना के क्षेत्र में उस समय प्रस्तुत किया था, इन गुसाईं गुरुओं ने उनके पार्थक्य को विस्मृत कर हिन्दू धर्म की परम्परागत मान्यताओं के भीतर ही अपने गुसाईं पंथ की नींव रखी। योग के प्रपंच को भी इन महानुभावों ने त्याज्य नहीं बनाया, वरन् बड़े विस्तार के साथ अपनी वाणी में उसका वर्णन किया। सहज साधना के नाम से मध्ययुग में जो उपासना पद्धति चल पड़ी थी और जिसका मूल नाथ सम्प्रदाय के भीतर था, इस पंथ में भी किसी न किसी रूप में स्थान पा गई है। जप, तप, नाम स्मरण आदि सामान्य साधन मार्गों का भी उल्लेख इस पंथ में मिलता है। आचार-विचार में पवित्रता के प्रति उसी प्रकार का आग्रह इस पंथ में है जैसा कबीर आदि संत महात्माओं ने व्यक्त किया है।

'गुसाईं गुरुबानी' एक संकलित रचना है जिसमें व्यक्ति-भेद के साथ काल-भेद भी है अतः अभिव्यंजना कला में भी एकरूपता होना संभव नहीं है। बाबा साईंदास की वाणी अन्य गुसाइयों से अधिक प्रौढ़ एवं परिमार्जित है। उसमें विस्तार भी औरों से अधिक है। दशावतार वर्णन में इनकी सरस काव्य शैली का रूप द्रष्टव्य है। पद शैली परम्परागत रागों पर आश्रित है, उसमें कोमल कान्त पदावली का वैभव स्थान-स्थान पर लक्षित होता है। यों सामान्यतः जैसा काव्य वैभव वैष्णव कवि सूर, तुलसी, मीरा आदि में है वैसा इस वाणी में नहीं है किन्तु निर्गुण धारा के अनेक मत-पंथों के संतों की तुलना में इस वाणी की काव्य-सुषमा अधिक आकर्षक है। सुदूर पंजाब प्रान्त में ब्रजभाषा को मेरुदंड बनाकर काव्य सर्जन करने वाले इस पंथ के गुरुओं की वाणी का अभी तक मूल्यांकन नहीं हुआ है। मैं समझता हूं कि काव्य-सौष्ठव तथा भाषा-वैभव की कसौटी पर भी इसका अध्ययन होना चाहिए।

'गुसाईं गुरुबानी' के अनुशीलन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि बाबा साईंदास की रचनाओं में इसका प्राण है, शेष पांच अन्य महानुभावों की रचनाओं में विभिन्न विषयों पर विचार व्यक्त हुए हैं। साईंदास जी विरक्त परम्परा के साधु नहीं थे। उनकी उपासना में गृहस्थ भक्तों को भी पूरा अधिकार था। गुसाईं नरहरिदास जी बाबा साईंदास के आत्मज थे, अपने पिता के बाद गुसाईं गद्दी के स्वामी बने और उन्होंने श्रीकृष्ण लीला वर्णन द्वारा अपनी भक्ति भावना का परिचय दिया। इनके पुत्र कांशीदास जी गुसाईं गद्दी के तीसरे महन्त हुए। इन्होंने योग विषयक पद रचना की है। गुरुबक्शदास, सवायाराम, और साँवलदास के सम्बन्ध में वाणी ग्रंथ के आधार पर कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती। इनके अतिरिक्त कुछ और संतों के नाम भी वाणी में मिलते हैं किन्तु न तो उनकी रचना

प्रभूत मात्रा में है और न उनकी गुणवत्ता ही आलोच्य बनने योग्य है।

'गुसाईं गुरुबानी' के सम्बन्ध में आज से लगभग पांच वर्ष पूर्व मुझे सूचना मिली थी। भारत विभाजन के बाद इस मत के अनुयायी गुसाईं वृन्द तथा उनके सेवक गुजरांवाला छोड़कर भारत चले आए और उनका पूज्य ग्रंथ पाकिस्तान में ही छूट गया। ग्रंथ की प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति का इस पंथ के अनुयायियों में उसी प्रकार पूज्यबुद्धि से पाठ होता चला आ रहा था जैसा सिख पंथ के गुरुद्वारों में 'गुरुग्रंथ साहब' का होता है। अतः इस अमूल्य निधि के पाकिस्तान में छूट जाने की वेदना सामान्य नहीं थी। फलतः एक भक्त ने प्राणों की बाज़ी लगा पाकिस्तान जाकर इस वाणी-ग्रंथ को लाने का संकल्प किया और अपनी निष्ठा-शक्ति से वह इस ग्रंथ को अक्षत रूप में लाने में समर्थ हुआ। जिस समय यह ग्रंथ मुझे दिखाया गया था, उस समय तक इसका महत्त्व केवल गुसाईं मत के अनुयायियों तक ही सीमित था। मैंने ग्रन्थ को देखकर अवकाश के दिनों में इसके अध्ययन का वचन दिया था किन्तु न तो मुझे अवकाश मिला और न ग्रंथ के स्वामी को इतना धैर्य रखना संभव हुआ कि अनिश्चित काल तक वे ग्रंथ मेरे पास छोड़ सके। फलतः अन्य व्यक्तियों के सहयोग से इसका लिप्यन्तरण, टंकन तथा बाद में मुद्रण हुआ। मुझे हार्दिक संतोष है कि अब बड़े सुन्दर रूप में गुसाईं श्री ओमप्रकाश जी के प्रयत्न से ग्रंथ का प्रकाशन हो रहा है। भारत-विख्यात विद्वान् डा० गोकुलचन्द नारंग इस पंथ के प्रवर्त्तक की जन्मभूमि के हैं। इस पंथ की उन्हें अच्छी जानकारी है अतः उनके प्राक्कथन ने इस ग्रंथ की उपयोगिता द्विगुणित की है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

मैं आशा करता हूं कि 'गुसाईं गुरुबानी' के प्रकाशन से संत-साहित्य की परम्परा में एक नवीन कड़ी जुड़ेगी और संत साधना से अनुराग रखने वाले विद्वानों का ध्यान इस कृति की ओर अवश्य आकृष्ट होगा।

हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
३० जुलाई, १९६४

—विजयेन्द्र स्नातक

विषय-सूची

गुरुबानी पढ़ने की विधि

इस ग्रन्थ का लिप्यन्तरण, टंकन अथवा मुद्रण करते समय हमने किसी प्रकार का परिवर्तन करना उचित नहीं समझा। हिन्दी के जिन मूर्धन्य विद्वानों से हम परामर्श प्राप्त कर सके, सब का यही मत था कि प्राचीन पाण्डुलिपि यथावत् रूप में ही प्रकाशित होनी चाहिए। अतः मुद्रित रूप में यह ग्रन्थ प्राचीन हस्तलिखित प्रति का अक्षरशः प्रत्यंकन ही है। प्रूफ पढ़ते समय कुछ स्थानों पर जो त्रुटियाँ रह गई हैं, उनका निवारण दूसरे संस्करण में सम्भव हो सकेगा।

ग्रन्थ का अध्ययन करते समय पाठक महानुभावों को जहाँ-जहाँ कोई त्रुटि प्रतीत हो, वे हमें सूचित करने की कृपा करें। हमारा यत्न होगा कि इस ग्रन्थ का दूसरा संस्करण सब प्रकार की त्रुटियों से मुक्त हो।

जिन सज्जनों को प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ पढ़ने का अभ्यास नहीं है, उन्हें इस ग्रन्थ का प्रस्तुत रूप में अनुशीलन करते समय थोड़ी-सी असुविधा का अनुभव हो सकता है। उनकी सुविधा के लिए हम निम्नलिखित संकेत दे रहे हैं।

१. कई स्थानों पर ' ि' का अतिरिक्त प्रयोग हुआ है, जैसे :

आधुनिक व्यावहारिक रूप	**ग्रन्थ में प्रयुक्त रूप**
गम्भीर	गंभीरि
पूर्ण	पूरिण
प्रसाद	प्रसादि
प्यास	प्यासि
शरीर	सरीरि
मृ	मृ

—२. उो—इस ग्रन्थ में जहाँ-जहाँ 'उो' का प्रयोग हुआ है, पाठकजन उसे 'ओ' के रूप में ग्रहण करें।

'कीउो', 'उठिउो', 'लीउो' आदि शब्दों को क्रमशः कीओ, उठिओ (उठ्यो), लीओ के रूप में पढ़ा जाए।

३. ष—'ष' का उच्चारण 'ख' किया जाए !

४. ड़ी—'ड़ी' का उच्चारण 'ई' के समान किया जाए

५. श्र—कई स्थानों पर 'श' के स्थान पर 'श्र' का प्रयोग हुआ है जैसे 'शुकदेव' के स्थान पर श्रुकदेव।

६. नि—कुछ स्थानों पर 'नहीं' के स्थान पर 'नि' का प्रयोग हुआ है। 'नि' नहीं का संक्षिप्त रूप है।

हस्तलिखित मूलग्रंथ साहेब के प्रथम पृष्ठ का चित्र

उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः

॥ अथ रतन ज्ञानि लिष्यते[1] ॥

दीनानाथ दयाल प्रभ दुष दूर कर्न विसवास।
औगिनि मेटे गुण कर्न गुरि पूर्न साईंदासि॥
बाबा रामानंदि जिस सिमरे होति अनंदि।
जिह समरनि ते पाईए लक्ष्मी परिमानंदि॥
गुरि नरिहरि पूर्न सकल करिणा बुद्धि विवेक।
औरि नहीं कोई आसरा एक तुम्हारी टेक॥
गुरि कांशीदासि के दर्स कों सुरि नरि धरे ध्यान।
मनि की देत है वांछना पूर्न पुर्ष निधान॥
विहारीदास केविल गुरि भेटआ मिटि गए सकल विकार।
कर्मचंदि गुर चर्न लगि भौजलि उतिरे पारि॥

सलोकु[2]—ग्यानि रतन जपि जौ पडै सुनते मुक्त सिधाह।
साईंदास गुरि चर्न लगि भ्रम भौ जलि तिस नाहि॥

---

१. **अथ रतन ज्ञानि लिष्यते**—रतन ज्ञानि बाबा साईंदास जी की रचना है। इसलिए "अथ रतन ज्ञानि लिष्यते" यहां से बाबा साईंदास जी की वाणी समझी जाएगी किन्तु यहां "दीनानाथ दयाल प्रभ दुष दूर कर्न विसवास" से लेकर "कर्मचदि गुरचर्न लगि भोजलि उतिरे पारि" तक बाबा सांईदास जी की वाणी नहीं है। बस्तुतः यह गुसाईंयों की "अरदास" (प्रार्थना) है। इस में—साईंदास, उनके सुपुत्र रामानंद, नरहरि तथा परवर्ती गुरु काशीदास, विहारीदास और कर्मचंद आदि को नमस्कार किया है। इसके अनन्तर ज्ञानरतन का प्रारम्भ है।

२. **सलोकु**—यह श्लोक का अपभ्रंश है। यह हिन्दी का दोहा छंद है। रचना के प्रारंभ में इसी श्लोक या दोहा का प्रयोग है। अनंतर २० अर्द्धालियों या ५ चौपाइयों के प्रयोग के बाद दोहा या श्लोक मिलता है। ज्ञानरतन की रचना इसी रूप में प्राप्त है।

आदि नरंजनि जानियो निर्भौ तुम निरंकारि।
अगिम अगोचरि सुंनिभै रचना राचन हारि[1] ॥

१

आदि निरंजनि हय निरंकारा। रहिता सुंन्नसमाध निआरा ॥
वपि विस्थारि कीनो विस्थारा। उपिजे तीनि देव अधिकारा ॥
अलिष पुर्ष अकास बनायों। पोनि थंह्मि मिल पौन उठाओ ॥
पौन मध्य जब तेज नवासा। ताते जलि धरि कीनी आसा ॥
जलि के ऊपरि धरिन बनाई। आसा मनिसा तहां समाई ॥
धर्मधुजा ते धौल विचारा। धर्ती राषे रापन हारा ॥
तांका बंधन वासव कीना। पौनि थह्म दस चारि प्रवीना ॥
जोति प्रकास चंदि रवि तारे। रचना राची राचनहारे ॥
जो जो जीवि जनिम जुगि करिआ। सोई सोई नाम ताह फुनि धरिआ ॥
माया मोह पटल जवि कीआ। तापरि उरिझ रह्यो एह जीआ ॥
अलिष पुर्ष की धारना क्या कोई सके विष्यानि।
साईंदास अछरि साधू हुकम प्रभ सो मति हिर्दे मान[2] ॥
रंगि रंगि बहु रंगै मै सभ रंगि रहयों संमाई।
जेता बूझे प्रभ साईंदास तेता दीओ बताई[3] ॥

२

कौनि वेला कौन बीचारि। रुति थित जुगि तहा कौंन वारि[4] ॥
नछत्रि लग्न जोगि वीचारि। जिह समे होइआ ओंकारि ॥

---

१. **आद नरंजनि जानियो**—इस दोहे में बाबा साईंदास जी ने एक अगम अगोचर तत्त्व से जिसे "आदि निरंजन" कहा है, सृष्टि रचना हुई मानी है। यह सृष्टि किस प्रकार बनी आगे की पंक्तियों में इसी का वर्णन है। यहां सृष्टि रचना सम्बन्धी सारा पौराणिक वर्णन सामने आ जाता है।

२. **अलिष पुर्ष की धारना**—यहां सृष्टि रचना का वर्णन समाप्त है।

३. **रंगि रंगि बहुरंग में**—प्रभु की सर्वव्यापकता वर्णन है।

४. **कौनि वेला कौन वीचारि**—यहां ओंकार स्वरूप अव्यक्त परमात्मा के अजन्मा होने का वर्णन है। यही बात गुरु नानक देव जी ने रौरास में कही है। तुलना परिशिष्ट में देखिए।

ओंकारि सभ अपर अपार । सभ रचना सोई राचनिहार ।।
सुर्ति शास्त्र सिमृति वर्न भेष । सभ औरे औरे पूछ देष ।।
पूछयां सुने सुनयां मन लेइ । तांकों सतिगुर परिचा देइ ।।
परिचे की मनि कों परितीति । तबहूं टुटे भर्म की भीति ।।

षगि नगि जगि मगि होइ रह्यो इह मनुआ मनि पोह ।
साईंदास गुरि चर्न लगि मलि तजि निर्मल होइ ।।
सूषमि सुर्त विचार के आनंदि मगिन भयंति ।
कहु नरिहरि गुरि क्रपा ते पसरी किर्ण अनंति ।।
अलष अगम्य अगाध प्रभि सुरि नरि जांकी सेव ।
अनंदि लै मस्तक धर्यो श्री चर्न कविल गुरि देवि[1] ।।

३

गुरि चर्नी मति चित जनि राषी । तांते सुनि द्रोपत की साषी ।।
गुरि चर्नी राता प्रहिलादि । पिता संग कीनो उपिवादि ।।
नार्दमुनि का राष्यो मान । गुरि चर्नी पावन परिवान ।।
गुरिगोविंद से नाहीं भेद । पूछो शास्त्र सिंमृत वेद ।।
सभ सभ नीच ऊंचा तेरा नाम । गुरि विनि कौनि बतावै थाउ ।।
थाउ लहे दरि ठाक न पावे । मिल रहे विछर्या नहीं जावे ।।
मिलना हो सतिगुरि की दात । साईंदास फरि जनम न जाति ।।

अस्थावर जंगम सभै सर्व व्यापी ताह ।
साईंदास नाम अनेक अनंति गुनि जपि जपि संति तराह[2] ।।

४

तेरे नाम सो तुही अनंता । अंतु ना पावै कविला कंता[3] ।।
दीनानाथ नाथन कों दाता । श्रीमोहिन मनि हित करि जाता ।।
अघनासन गोपाल गोसाई । सभ मै पूर रह्यो सभ थाई ।।

---

१. **आनंद लै मस्तक धर्यो श्रीचर्न कविल गुरि देवि**—यहां से "गुरु महिमा" वर्णन प्रारंभ है ।

२. **साईंदास नाम अनेक अनंति गुनि**—यहां से एक ही प्रभु के अनेक नामों का वर्णन है ।

३. **कविलाकंता**—कौला या कविला शब्द कमला के अपभ्रंश है । कमलाकांत-कविला कंता ।

विशु रूप धर्नी धार्न । कर्णासिंध सभै करि तारन ।।
तू करिता कर्नहारि अविनाशी । केविल ब्रह्म तू सर्वनिवांशी ।।
निर्भौ निरंजन निरंकार । नाम न अन्त अन्त नहीं पार ।।
प्रभ क्रपाल पूर्न वीचारी । गर्व देन प्रभ गर्व प्रहारी ।।
अलिष पुर्ष पततां को पाविन । नारिसिंघ परिसराम अरि बावन ।।
राम क्रष्ण गोविंद बनिचारी । जुगि जीवनि गोवर्धन धारी ।।
तार्न तर्न सरन जगि तार्न । भगित निधानि सो लाजि निवार्न ।।
गोविंद केशवि संतन सुषिदाई । जुगि जुगि जोति सुजादिवराई[1] ।।
कर्म धर्म सभाह[2] रहंता । साईंदास प्रभ रूपि विअंता ।।
तीनि ताप तन को भए आदि उपाध विआध ।
साईंदास जिहते पाईए परमपद, सो उत्तम दर्सनिसाध[3] ।।

५

दर्सन ते उपिजे मनि बुद्धि । दर्सन ते तनि होवै सुद्धि ।।
दर्सन ते मैल मन ते जाइ । दर्सन चोटा बहुड न षाइ ।।
दर्सन सिध साध वैरागी । दर्सन ते दुरमत उठ भागी ।।
दर्सन सिद्ध साध संतोष । दर्सन ते तनि रहे निर्दोष ।।
दर्सन दूष भूष कों नास । दर्सन मुक्त परायण वास ।।
दर्सन होइ अंतर की प्रीति । दर्सनि ते दुरमति मिल जीत ।।
दर्सन ते विगसे घटि चन्दा । दर्सन ते मनि होइ अनंदा ।।
दर्सन पर्सन प्रेम रस जि पूरण बडि भागि ।
साईंदास प्यास मिल रहित दोष अनिरागि ।।
नरिहरि नाम न वीसरे सदा साध के संग ।
रसना रसीए राम रस औरि न लागे रंग ।।

---

१. सुजादिवराई < सुयादवराय—श्रीकृष्ण भगवान् का नाम ।
२ 'सभ मांह'—होना चाहिए (लिपिकार से 'म' छूट गया है)
३. साईंदास जिहते पाईए परमपद सो उत्तम दर्शन साध—यहां से साधु दर्शन की महिमा का वर्णन है ।

अलषकोटि ब्रह्मंडि मै सर्व निरंतर सोइ।
साईंदास जिह् किह् तित जानआ तुझ बिनु औरि नि कोइ[1] ।।

६

तू कर्ता तुझ विनु नहीं कोई। सर्व निरंतरि बसआ सोई।।
आपे करि करि आप करावै। आपे मति आपे भरिमावे।।
आपे गुनी ज्ञानी आप। आपे देषो थापो थाप।।
आपे धर्म कर्म वीचारी। सभ मै अपुनी जोत पसारी[2] ।।
जोगि जुगत जागे जुगितांई। एकों नामु सहंसी नाई।।
जिन जान्या तिना हरि लिव लाई। तेऊ वडै जिन्हा दरों वडिआई।।
दरि की दात होवै दरिवान। कागत फार परे परिवान।।
परै परिवांन तौ उपिजे सांति। साईंदास फिर जनिम न जात।।
जोग जुगत अर ज्ञान ताते सहिज समाधी होइ[3]।
साईंदास उलिट पलिट का षेलना बिर्ला चीन्हे कोइ।।
वडि भागी हरि रस जानिआ छाडि क्रोध अर काम।
साईंदास अष्टधाति सभु यगित[4] है पारस हरि कों नामु[5] ।।

७

जपि तपि संजम कर्म ध्यान। सभ ते ऊंचा तेरा नाम।।
नाम जपत गज गनका तार्यो। नाम जपति प्रहलादि उधार्यो।।
सुति हित नाम अजामल लीना। नाम जपति ध्रू निहचल कीना।।
नाम जपति नृप कन्या तरी। वकी दैत विष प्रगिट पुकरी।।

---

१. सर्वत्र एक ही तत्त्व की प्रधानता है। आगे की पंक्तियों में इसी विषय का प्रतिपादन किया गया है।

२. **सभ मैं अपनी जोत पसारी**—जडचेतन में इसी की ज्योति का प्रसार है। गुरु नानकदेव से तुलनीय —**जाति महि जोत जोतमहि जात।**

३. जोग जुगत अर ज्ञानते सहज समाधीं होई। बाबा साईंदास सहज समाधि के लिए दो बातों को प्रधानता देते हैं—योग युक्ति और ज्ञान।

४. यगित < जगत्।

५. यह संसार अष्टधातु के समान है और हरि का नाम पारस है जिससे ये अष्टधातुएं भी कंचन बन जाती हैं। यहां से नाम की महिमा का वर्णन प्रारम्भ है।

गौतम त्रीश्रा चर्न लगि तरी । हरि हरि करित पार बहु परी ॥
जनिक सुता हरि हरि धरी । लंका सहत बभीछनि मंदोदरी ॥
हरिणाषस रांवण श्ररि सिसपाला । तीनि जनिम प्रभ भए क्रपाला ॥
बृजिवासी हरि की गति जानी । उनि की गति हरि हिरदे मानी ॥
को गुनि सुने श्रवन धरि प्रीत । को कीर्तन करे राग मिल गीति ॥
को ले माला सिमरन करे । को पादागविनी तीर्थ फरै ॥
को श्ररिचा पूजा सो चितु लावै । इकि कर दंडौति परम गति पावे ॥
इक षटि दर्सन के होवै दास । इकि होइ सहाई पूर्न श्रास ॥
इकि श्रातम श्रर्पि मिले भगिवान । नविगुन भगति[1] सो गुणानिधान ॥
जो जो इनि भगिती चितु लावै । सुनित वकित बैकुंठ सिधावै ॥
नाम जपै संतन की साषी । नाम जपै द्रोपत पत राषी ॥
नाम जपे सभ सुषकों दाता । नाम जपै पांडवि को भ्राता ॥
नाम जपे सोई हरि को दास । ज्ञानि रतन चीन्हे साईंदास ॥

श्रविगत गति मै सभ बसे जाका नामु बिर्श्रति ।
जो कछु कीया सो तुम कीश्रा मैं कित विध पावो श्रंतु[2] ॥

८

श्रंतु नहीं जीई श्रंतु नहीं जंत्री । श्रंतु नहीं पौण पाणी नछत्री ॥
श्रंतु नहीं धर्नी श्रंतु नहीं गौणी[3] । श्रंतु नहीं निसी श्रंतु नहीं रैणी ॥
श्रंतु नहीं सुरिती श्रंतु नहीं ध्यानी । श्रंतु नहीं वेदी श्रंतु नहीं ग्यानी ॥
श्रंतु नहीं रंगी श्रंतु नहीं रूपी । श्रंतु नहीं तडाग श्रंतु नहीं कूपी ॥
श्रंवृति महात्म गति क्या कहीए । निज पद साध संग ते लहिए ॥
साईंदास श्रनंदि प्रभ मूल । सुंन्न सविद राच्यो स्थूल ॥

एको एक श्रनेक मै घटि घटि कीयों निवास ।
पूर्ण पूरे सभन को प्रणवति साईंदास ॥

---

१. **नविगुन भगिती**—यहां नवविधा भक्ति का उल्लेख है । साईंदास ईश्वर प्राप्ति में इसे भी साधन मानते हैं ।

२. **मैं कितविध पावों श्रंतु**—यहां प्रभु को बेश्रन्त (श्रनन्त) माना है, उसी श्रनंत की महिमा गाई है ।

३. **गौणी>गगनी**

अंतु न पावे जगितगुर हरि जी अगम अगाहि।
हरिद्वारे केती षडी करिती सिफत सलाह[१] ॥

६

केते वेद ब्रह्मे मुष गांवे। हरि जी तेरा अंतु न पावे॥
केते शंकरि धरे धिआन। केते विह्न[२] चढति निशान॥
केते इंद्रासन सुरि इंद्र। केते वासक सेस फुनेन्द्र॥
केते जोगी धियान लगावे। केते सुरि किंनरि गुनि गांवे॥
केते असरि रहे हरिद्वारि। अंतु न पांवे अलिष अपारि॥
केते रंगरूप बहु भेष। केते दरि दरि वांनी सेष॥
केते धर्म कर्म बिचारी। कागिज मसि केते लेषारी॥
साति सिंध करियों मसि वाणी। कागति धर्न गगन का वाणी॥
भारि अठारा लिष्यन लाए। एह थौड़े वहु गुनि अधिकाये[३]॥
जो लिषिए सो हरि का रंगु। दर्सन होइ साध के संग॥
सभ अंतिर प्रभ तेरी बासु। ज्ञानि रतन चीन्हे साईंदास॥
गातनि गरियों गर्ब मैं ना हरि भजिनि पिआस।
जनिनी गर्भ किस राषयों पोटि बांध दस मास[४]॥

---

१. यहां मूल ग्रंथ में शब्द 'दरिद्वारे' है पर उपयुक्त 'हरिद्वारे' ही लगा। हरि के द्वार पर कई उसकी अगाध महिमा को गा रहे हैं। पर कोई भी उसका अंत नहीं पा सका। यहां 'सिफत सलाह'—ये शब्द फारसी के हैं। प्रशंसा और गुणवर्णन करना इनका अर्थ है।

२. 'विह्न' यह शब्द विष्णु है, इसे प्राचीनकाल में 'को इस रूप में लिखा जाता रहा है।

३. सात सिंधु ही स्याही बनाऊं धरती तथा आकाश को कागज और सभी अठारह भारयुक्त वृक्षराशि को लेखनी बनाऊं तो भी प्रभु गुण लिखे नहीं जा सकते। तुलनीय—

कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ।
बसुधा कागदु जउ करउ हरिजसु लिखनु न जाइ॥
संतकबीर सलोकु—८१ (डॉ० रामकुमार वर्मा)

४. यहां से प्रभु के गुणों का वर्णन है तथा प्रभु को भूलकर संसार में लगे जीवों को चेतावनी दी है।

गौतम त्रीश्रा चर्न लगि तरी । हरि हरि करित पार बहु परी ।।
जनिक सुता हरि हरि धरी । लंका सहत बभीछनि मंदोदरी ।।
हरिणाषस रांवण अरि सिसपाला । तीनि जनिम प्रभ भए क्रपाला ।।
वृजिवासी हरि की गति जानी । उनि की गति हरि हिरदे मानी ।।
को गुनि सुने श्रवन धरि प्रीत । को कीर्तन करे राग मिल गीति ।।
को ले माला सिमरन करे । को पादागविनी तीर्थ फरै ।।
को अरिचा पूजा सो चितु लावै । इकि कर दंडौति परम गति पावे ।।
इक षटि दर्सन के होवै दास । इकि होइ सहाई पूर्न आस ।।
इकि आतम अर्पि मिले भगिवान । नविगुन भगति[1] सो गुणानिधान ।।
जो जो इनि भगिती चितु लावै । सुनित वकित बैकुंठ सिधावै ।।
नाम जपै संतन की साषी । नाम जपै द्रोपत पत राषी ।।
नाम जपे सभ सुषकों दाता । नाम जपै पांडवि को भ्राता ।।
नाम जपे सोई हरि को दास । ज्ञानि रतन चीन्हे साईंदास ।।
अविगत गति मै सभ बसे जाका नामु बिर्अति ।
जो कछु कीया सो तुम कीआ मैं कित विध पावो अंतु[2] ।।

८

अंतु नहीं जीई अंतु नहीं जंत्री । अंतु नहीं पौण पाणी नछत्री ।।
अंतु नहीं धर्नी अंतु नहीं गौणी[3] । अंतु नहीं निसी अंतु नहीं रैणी ।।
अंतु नहीं सुरिती अंतु नहीं ध्यानी । अंतु नहीं वेदी अंतु नहीं ग्यानी ।।
अंतु नहीं रंगी अंतु नहीं रूपी । अंतु नहीं तडाग अंतु नहीं कूपी ।।
अंवृति महात्म गति क्या कहीए । निज पद साध संग ते लहिए ।।
साईंदास अनंदि प्रभ मूल । सुंन्न सविद राच्यो स्थूल ।।
एको एक अनेक मै घटि घटि कीयों निवास ।
पूर्ण पूरे सभन को प्रणवति साईंदास ।।

---

१. **नविगुन भगिती**—यहां नवविधा भक्ति का उल्लेख है। साईंदास ईश्वर प्राप्ति में इसे भी साधन मानते हैं।

२. **मैं कितविध पावों अंतु**—यहां प्रभु को बेअन्त (अनन्त) माना है, उसी अनंत की महिमा गाई है।

३. **गौणी > गगनी**

अंतु न पावे जगितगुर हरि जी अगम अगाहि।
हरिद्वारे केती षडी करिती सिफत सलाह[1]॥

९

केते वेद ब्रह्म मुष गांवे। हरि जी तेरा अंतु न पावे॥
केते शंकरि धरे धिआन। केते विह्न[2] चढति निशान॥
केते इंद्रासन सुरि इंद्र। केते वासक सेस फुनेन्द्र॥
केते जोगी धियान लगावे। केते सुरि किंनरि गुनि गांवे॥
केते असरि रहे हरिद्वारि। अंतु न पांवे अलिष अपारि॥
केते रंगरूप वहु भेष। केते दरि दरि वांनी सेष॥
केते धर्म कर्म बिचारी। कागिज मसि केते लेषारी॥
साति सिंध करियों मसि वाणी। कागति धर्न गगन का वाणी॥
भारि अठारा लिष्यन लाए। एह थौड़े वहु गुनि अधिकाये[3]॥
जो लिषिए सो हरि का रंगु। दर्सन होइ साध के संग॥
सभ अंतिर प्रभ तेरी बासु। ज्ञानि रतन चीन्हे साईंदास॥
गातनि गरियों गर्ब मैं ना हरि भजिनि पिआस।
जनिनी गर्भ किस राषयों पोटि बांध दस मास[4]॥

---

१. यहां मूल ग्रंथ में शब्द 'दरिद्वारे' है पर उपयुक्त 'हरिद्वारे' ही लगा। हरि के द्वार पर कई उसकी अगाध महिमा को गा रहे हैं। पर कोई भी उसका अंत नहीं पा सका। यहां 'सिफत सलाह'—ये शब्द फारसी के हैं। प्रशंसा और गुणवर्णन करना इनका अर्थ है।

२. 'विह्न' यह शब्द विष्णु है, इसे प्राचीनकाल में 'को इस रूप में लिखा जाता रहा है।

३. सात सिंधु ही स्याही बनाऊं धरती तथा आकाश को कागज और सभी अठारह भारयुक्त वृक्षराशि को लेखनी बनाऊं तो भी प्रभु गुण लिखे नहीं जा सकते। तुलनीय—

कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ।
बसुधा कागदु जउ करउ हरिजसु लिखनु न जाइ॥

संतकबीर सलोकु—८१ (डॉ० रामकुमार वर्मा)

४. यहां से प्रभु के गुणों का वर्णन है तथा प्रभु को भूलकर संसार में लगे जीवों को चेतावनी दी है।

१०

मैं औगिनहारि कोई गुनि नाही । हरि हिरदे ते किउ बिसरांही ।।
तांका नामु नहीं किउ भाक्ष्यो । अग्नि कुंड ते जिन प्रभ राष्यो ।।
जिउ तंबोली राषे पान । इउ तूं राषे गुणानिधान ।।
तेरा कौन सहाई वाला । जिन गर्भ वीच करि प्रतिपाला ।।
नैन नासका श्रविण वणायों । मुषि वोलति वह लाड लडायों ।।
करि अरि चर्न गही पग धारे । नषि अंगिरेष सो रोम सवारे ।।
जीविन नाम मर्न कें ताई । गर्भे अंतर जपे गुसाई ।।
गर्भते निकस आयों संसार । हरि गुनि बैठा मूढ बिसार ।।
माया मुष लागी जबि मीठी । नेत्री सुर्त पसार्न डीठी ।।
रच रहआ जबि दूध के स्वादि । बाला जनिम गवायों वादि ।।
साईंदास नाम हरि चेति । भी मनि छुटे नाम के हेति ।।

रे बाल काल सरि सांधयों मिर्ग भयों इह जीय ।
अविपल तो विसवास क्या सो भोगो जो कीय ।।

११

माता पिता भाई संगि षेला । धर्म न सुर्त भयो जगि मेला ।।
दारा सुतु सो मोह बढायों । धनि अरि धाम देष बहुरायों ।।
मनि अभमानि सु लीए जाता । त्रैढी चाल अंध मदि माता ।।
नहीं सूझति कोई मीति न भाई । हौमै धनु मदि वडी वडिआई ।।
राजछत्र चविर सिरि झूला । मनि अभिमान देष करि भूला ।।
रे सेर चूंनि विन सकल विरान । इह तुम जान लेह सुनि काना ।।
सेति मिले वग उडिरे कागा । जोविन देष देह ते भागा ।।
पिंडरि केस भए अविचारी । जूया षेलति बाजी हारी ।।

कबिहूं चेति अचेत मनि जूये जनिम नि षोइ ।
पछतावा पाछे रह्यो रास वोड किति रोइ ।।
जिउ जांनो तिव ही करों जति कति समरन सार ।
साईंदासि नाम हीनि गुनि वाहरा ध्रिग जीवनि संसारि ।।
अनाथ जी सभ तुम कीए तुम कित विध हये अनाथ ।
वर्न नि साकों मात्रिकी तेरी कथा अगाधि ।।

आपि आपि ते साजि के न्याजि करी बहु भांति।
निआज विराज पछान के सभ एक पुर्ष की दाति[1]॥

१२

पूर्न पूरे सभ विचारी। कोऊ दाता कोऊ दीन भिषारी॥
कोऊ भूपत को ठाढे द्वारि। कोऊ छत्रपति कोऊ ऊपर ढालि॥
कोऊ अस्व गज रथ कें ऊपरि चढिते। कोऊ उनि के आगे पाणी भरिते॥
कोऊ पहिरे कोऊ उतारे। इक पाणी सेती चर्न पषारे॥
इक पषे सेती पौण भुलावै। इकि टुकड़े मंगि मंगि भोजन पावै॥
इकि दाते देनहारि प्रभ कीने। इक आत्म परिमात्म चीन्हे॥
इक जोगी इक जंगम ध्यानी। इकि मुनि सिद्ध साध इक ग्यानी॥
इक जटि मुंडि जती संन्यासी। इक तीर्थ भ्रमत फरित वनिवासी॥
इक मौनी नगिन फरे दगंबिर। इकि भगवे करि करि पहिरे अंविरि॥
केऊ ब्रह्मचर्य केऊ ब्रह्मचारी। कोऊ निहस्वादी कोऊ पौन अहारी॥
कोऊ तपि ध्यानि षटि शास्त्र वकिते। कोऊ षटि कर्म जुगित सो रहते॥
इकि धोती संजम रहति सुचीलं। इकि होति असोच सदा जु कुचीलं॥
सुच असुच तुमते नहीं दूरं। सभ मह तुही रहया भरि पूरं॥
सर्व अंगि प्रभ कीयो निवास। इहि विध जाचे साईंदासि॥
औगिन राचे गुनि तजे या मनि छठे गवारि।
आइओं एक छिन पलक मै काल लेत करि वारि॥

१३

तेरा कीआ सभ दिआल तूं किसि ना कीआ।
सभ से माह वरतिआ जलि थलि जो जीआ॥
जेते जलि थलि जीवि समाने। जेता जां को तेता आने॥
जांको वाध घाट नहीं देति। पूर्न पूर पूर सभ लेत॥
सभ ही अऊरे तुम ही पूरा। वाज वाजि के फाटे तूरा॥
बाजे फूटे रे भैआ रहे बजाविन हारि।
बहुडि बजावे थिरु रहै साईंदास एक बिना सभ छारि॥

---

१. प्रभु की कृपा के कारण अनेक प्रकार की रचना हुई है। उसी एक पुरुष की सबको देन है। सभी में वही एक पूर्ण है। रूप-रूप अलग-अलग है। कोई भी हीन नहीं और कोई भी अपूर्ण नहीं। "पूर्ण पूरे सभ विचारी।"

साहिबु एक अनेक गुनि गिनिति न आवे मोह।
कोटि रसना सों जपु करों अंतु न पावे तोहि॥

१४

गुनि अनेक तेरे रूप अनंता। नामि बिस्रांति सो कैसे अंता॥
अगम गम्य विर्ले को आवै। जांको सति गुरि बूझ बुझावै[1]॥
बूझा पडै परिम सुष होय। तुरीआ ततिकों बूझे कोय[2]॥
मनि विसवास आत्म रस ज्ञाना। मनूआ उलिटयां मनि मांहि समांना॥
मन अरि ब्रह्म एक जवि भैया[3]। प्रगिटी जोत तिमरि नस गियां॥
पिंड षंड ब्रह्मण्ड सु लीना। सुन्न सविद अपिती जपतीना॥
आत्म भेद परिचा भैयां। शिवि नगरी में वास लिया॥
तत्त सविद अनेक अनहद बानी। सुनि-सुनि सविद सो सुर्त पछानी॥
नाम निरंजणि होति प्रकाश। इहि विधि जांचे साईंदास॥
आदि अन्त की धारना करिना बुद्धि विवेक।
ग्यानि ध्यानि सम सरि रहे पसरी किर्न अनेक॥
रजि तम सांतक तीन गुनि[4] चौथे पदि अलसानि।
लिव लागी धुनि जहां ते साईंदास तहा समाने प्रानि॥

१५

त्रय गुनि थकत पदि चौथे अलिसाना। तुरीआ तत मैं जाइ समाना।
निहि कंचिन जलि दुविकी षाई। भ्रम वादिर तहा गियों वलाई॥

---

१. **अगम गम्य विर्लेको आवे**—वह परमात्मा अगम्य है किसी विरले को ही, गम्य है अर्थात् उसका ज्ञान होता है किसे—'जांको सतिगुरु बूझ बुझावे।" यहां 'गुरु' के महत्त्व का स्पष्ट उल्लेख है।

२. **तुरीआ तत्त**—तुरीय तत्त्व चतुर्थ तत्त्व ब्रह्म है। शेष तीन हैं——जागृति, स्वप्न सुषुप्ति।

३. जीव और ब्रह्म के ऐक्यभाव का यहां वर्णन है। तादात्म्य होते ही एक ज्योति (ज्ञान की ज्योति) प्रगट हुई जिससे अंधकार (अज्ञान) नष्ट हो गया।

४. चौथे पद ब्रह्मपदमें 'सायुज्य' मुक्ति होने पर रज तम सात्विक तीनों गुणों से रहित होना पड़ता है। कारण निर्गुण (गुणों से रहित) ब्रह्म में मिलने के लिए जीव को भी निर्गुण (इन तीनों गुणों से रहित) होना पडता है।

प्रगिटि चिह्न दिषलाविन लागा। राग द्वेष परियों अनिरागा।
भौना ठा अनि भै[1] मिले विन श्रविनि सुन ध्यान।
साईंदास नैन बिना जो देषना गुप्तचिह्नि परिवान॥
बिनु देहा ध्यावित रहे बिन धुनि धरे ध्यान।
साईंदास तवि जानीए ठौडि बिना निशान॥
विमल सरोवरि मनि वसे अनिभै अगिम अपारि।
साईंदास सतिगुरि ही ते जानीए ततिपदि को विवहारि॥

१६

अगम गम्य की कहज सुनावे। समझ पडैं कछु कहिन नि आवै॥
कहिन सुनिन ते भया निआरा। सहिज समाध सदा जु षुमारा॥
अलिमस्ती लिव लागी जांको। जम जंजाल करे क्या ताको॥
बंधन छूटे मुक्त षलौना। चंदि सूरि मिल पौन विलौना॥
जांका सीस सोई हो रहया। साईंदास कछु जाय नि कहया॥
सभ का दावा धरत है साहब अलष अभेवि।
साईंदास जिनि प्रेम अपना जानआ सोई साध गुरुदेवि॥

१७

सभ को सेवक साध कहावे। सो सेविक जो साहवि भावे॥
साहिवि जागे सेवक सोवे। माषनि कहा जु नीरि विलोवे॥
साई सुर्त सविद जो लागी। तत्त विचार भयो वैरागी॥
तवि जान्या जवि चेतन भया। प्रगिटी जोति तिमर नस गिया॥
अनिहदि मिल आनन्द हुआ। साईंदास तवि जीवित मूआ[2]॥

---

१. भौना ठा अनि भै मिले—यहां भौन=भवन ठा=स्थान अर्थात् घट (शरीर) में ही ब्रह्म की प्राप्ति मानी है। उसमें दिव्य संगीत सुनाई देता है। वहां विदेह की स्थिति है। वहां इन इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं है। इन इन्द्रियों से परमात्मा का दर्शन नहीं होता। इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को विराट् रूप दिखाने से पूर्व दिव्य दृष्टि प्रदान की—

"दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥"—गीता ११-८

२. साईंदास जीवित मुआ—साधक का सर्वोत्तम लक्षण है कि वह जीते हुए भी मृत है। जो संसार से लिप्त है वह जीवित है जो अलिप्त है वह मृत के समान है

सलोकु—जागृति सुफन सुषोपती। मनिमै मेटो तीनि॥
तुरिया तति विलम न करौं सारि सविद लेहो चिह्न॥
जिहि ते पाइ परिमपदि सो गुरि दीओं बताइ।
धरि निशान जबि निकसते पद नापै दस माई॥
को रसीआ इह रसि मिले विछुड्या बहुड न जाइ।
सतिगुर ऐसा चाहिए जो दुभदा देत मिटाइ[1]॥

१८

जोगी प्रान पुर्ष जब भया[2]। गुटिका पौन संग ते लिआ॥
निज भविनन में आसन कीना। संध्या कूपी वृज मेषल दीना॥
निहिकेवल जवि वद्ध आधार्‌या। जुगित उठानी सील षिथार्‌या॥
सचमुद्रा करि मन पहिराई। त्रिगुटी संगि डिवी दिषलाई॥
द्वादिसकपाली दसवे द्वारि। पीवै पौनि अंवृत की झारि॥
अनहदि सविदि किंड्री बाजे। सिंङी सुर्ति सदा धुनि गाजे॥
मनि अकत्र भयो जु विचारा। निर्भौ नगिरी का इह विवहारा॥
प्राप्त संतोष सुफल फल पाया। साईंदास इसिविधि जोगी जोगु कमाआ॥

सलोकु—वसुधा पिजरि नाम वीज रे मनि वोईंदआ।
कीर्तंश्रविनी जिह्वा नाम कों शामु नेत्री देषलआ॥
करि चरिदाने गविन कों सील संतोष सरीरि।
साईंदास मुनि जन जगति के ऊपरे पदिम जिवे ही नीरि॥[3]

१९

ज्ञानी गुनी जोगी वैरागी। जुगि-जुगि जिनकों ताड़ी लागि॥
जिनकों लागा हरि का रंगि। ते भाले साधू का संगि॥
साध संगि मिल प्रगिटी लोइ[4]। पारिस भेटिआ कंचिन होइ॥
कंचनि होइ सकल भ्रम भागे। अषै मिलै फिर षैई[5] न लागै॥

---

१. गुरु का लक्षण—द्विविधा (दुभदा) का मिटानेवाला हो।
२. योगी जब पुराण पुरुष बन जाता है अर्थात् साधक जब ब्रह्ममय हो जाता है उस दशा का रूपक द्वारावर्णन है।
२. अलिप्त दशा—'पद्मपत्रमिवाम्भसा'—गीता ५-१०
४. लोई=ज्योति (उजाला) लौ।
५. षेई=धूल (मायाजाल)

सचु पाई ते सूचा हूग्रा। हिर्दै ग्रविरि न जाने दूग्रा ।।
एक रंगि एको घरि वास। ज्ञानी रतनि चीह्नै साईंदास ।।
सलोकु—कजुलु काला रे मना जगु कजिल थी न किरठि।
मैं भी ग्रंदिर कज्जले इकि होर भी पौदे डिठी ।।
इक पै इक पेइ निकसे तेरे नाम लगि-लगि तजि-तजि भूपत राजि।
ग्रवि कछु करिए साईंदास पलिके विनसे काज ।।
पलिकें ग्रंदिर पलिक है जो इक ग्राई गंढ।
जनिम पदार्थ षोइयो पढ़ि पढ़िते जगि ग्रंध ।।
पडिने नू मतु दोस दे वेदि वकावित सचु[1]।
साईंदास पल्हे पिग्रा ग्रविवेकीया कंचन थीग्रा कचु ।।

२०

मनि करि नाथ पंच करि चेला[2]। सहिज मदान सदा घरि षेला ।।
एक ध्यानि त्रिगुरण ग्रतीति। तांका नामु कैहो रणिजीत ।।
मनि रणजीते ग्राश्रम करे। हौमा छाडि सु जीवत मरे ।।
जीवित मरे[3] मिले वड्यांनी। साईंदास सोई ब्रह्मज्ञानी ।।
सलोकु—जोगजुगति ग्ररि ज्ञानि गुन सहज समाधी होय।
साईंदास उलिटि पलटि का षेलरणा विर्ला चीन्हे कोई ।।

२१

दयापत्र दंडा बीचार। मुद्रा मौनी पौन ग्रहार ।।
षटिरस स्वादि ज्ञान घरि बसे। सभ मनि मैला दुर्मत नसे ।।
भाउ वभूति ग्रंगि जबि लागीं। तांते कहीए मनि वैरागी ।।
नांदि विंद राषै इकि ठौरा। मनिते मार्न काले जौरा ।।
चंचल मनि का मारे मानि[4]। कहु साईंदास जोगी परिवानु ।।

---

१. शास्त्र झूठे नहीं—गुरुनानक कवीर ग्रादि के भी यही विचार।
२. मन को नाथ (गुरु) बनाग्रो पंचेन्द्रियों को उसका शिष्य (ग्रधीन करो)
३. जीवित मरना ही—ब्रह्मज्ञानी का लक्षण।
४. चंचल मन को नियंत्रित करना—'चंचलं हि मन : कृष्ण' गीता ६-३४। साधना में चंचल मन को नियंत्रित करना ग्रावश्यक है।

सलोकु—साधू सहिज समाधि मै शिवि मिल शक्त हरंति।
साईंदास मध्यम थीवे आपथी सभ ते ऊंचा दिसंति ।।

२२

जोगि जुगति मेल गुरि ते पाई[1]। मिटि गियों भर्म दूसरा भाई ।।
रोकआ मूल विर्छ का पेटु। दो दल ऊपरि राचे षेल ।।
नाडी तत्त मूल जवि जान्या। चतुर्दल छीन षटिदलि ठहिरान्या ।।
अष्ट कविल दल पौना जाई। सूषम कुंडिली रहयो समाई ।।
रोक्या सूर सोम गृह आइआ। साईंदास पदि गुरते पाआ ।।

सलोकु—सभे नाती कूडीआ तेरी वाह अनाति।
तूं दरि इको जेहवा पुछे नाही जाति ।।
जाती को जरवधि परी किस पअ करौं पुकार।
नाम उधारे प्रभ पापा के कैइ भारि ।।

२३

भगिवन्त पष्प की चाल अपर्सी। तवि अपर्स[2] होवे समदर्सी ।।
लोभ मोह की तोडे फासी। ताकी श्रिष्ट सकल होय दासी ।।
चर्न दिष्ट ते राषे नयना। भूठे कविंहूं नि बोले वैना ।।
आत्म ते परिमात्म जाने। हरि का मार्ग तांवी पछाने ।।
सील संजम जुगत सो रहे। इंद्री पंच आत्मा गहे ।।
साईंदास अपर्स कहावन। जो पापा के निकटि नि आवन ।।

---

१. **योग युक्ति और ज्ञान**—ये दो सहज समाधि के साधन हैं। यहां योगयुक्तियों का वर्णन है।

२. **अपर्स**—स्थित प्रज्ञ का लक्षण। वहयोग युक्तियों के बिना भी मुक्तहो सकता है। समदर्सी बन सकता है। उसी का वर्णन यहां से प्रारम्भ है—

(क) लोभ मोह से रहित होना।

(ख) नीची नज़र (चरणों पर दृष्टि)

"दृष्टिपूतं न्यसेत् पादम्," मनुस्मृति।

(ग) सत्यभाषण।

(घ) शील, संयम तथा युक्ति से रहना।

(ङ) पंचेन्द्रियां तथा मन को वश करें।

सलोकु—जलि थलि मै जो जीवि है सभै तिहारी आस[1]।
भाणे अंतरि पाईए दुष सुष भोगि विलास॥

२४

भाणे चले पौण अरि पाणी। भाणे बोले अनिहदि वांणी॥
भाणे मूरष भाणे सुरता। भाणे नरिकी भाणे मुक्ता॥
भाणे राज भाणे मुहिथाज। भाणे सर्व सवारे काज॥
भाणे चले अचल होय भाणे। भाणे कर्म अकर्म कमाणे॥
जनिम पाइ ते कहा कमाणा। जो कछु होय सो तेरा भाणा॥
साईंदास प्रभ जपिए ईस। जो कछु करे सोई जगिदीसि॥
सलोकु—रचना राची अगम प्रभ धौल धर्न अकास।
जागृति सोवित दुष सुषी भाणे अंतिर सास॥

२५

भाणे भौन रषे ब्रहिमंडि। भाणे सप्त दीप नौषंडि॥
भाणे सलिता सिंध सवारे। भाणे थलि डुंगर[2] वीचारे॥
भाणे धौल धरे सिर भार। तिस ते परे तुही निरंकार॥
भाणे भानि चले करि जोत। भाणे अंतिर ससकी योति॥
भाणे नक्षत्रन की माल। तिस ते परे तेरी टंगिसाल॥
तेरा कौनु शरीकु समरथ है कौन। तूं मेटे प्रभ आवा गौन॥
साईंदास प्रभ जपीए ईस। जो कछु करे सोई जगिदीस॥
राम नाम हरि सिमरीए मुषि से बारंवार[3]।
साईंदास गुर क्रपा ते मनि के मिटे विकारि॥
सप्तदीप नौषंडि मै परिदछनि जो देइ।
साईंदास समसरि नाही हरिभजिन जो एक वारि कहि लेय॥

---

१. मुक्ति मिलना, नरकों में जाना सभी कुछ परमात्मा की इच्छा (कृपा) 'भाणा' पर निर्भर है। इसीका वर्णन यहां से प्रारम्भ है।

२. डोंगर < डुंगर < दुर्गम स्थान (पर्वतीय प्रदेश)

३. रामनाम का स्मरण और गुरुकृपा दो ही साधन 'मुक्ति के हैं'। यहां से अब केवल नाम की महिमा का प्रारम्भ है।

२६

जो प्रथिवी सकल प्रदछनि देय। मकर प्राग कलिवत्रि सिर लेय ।।
जीवित वहन देत जो प्राना। उर्द्धपाउ सो धरै धिम्राना ।।
कोटि जनिम जुक्त सो रहे। इंद्री पंच आत्मा गहै ।।
एक पलिक हरि सिमरनि कीजै। तां सम सरि कछु अविर न दीजै ।।
कोटि अस्वुमेध यग्य जो कीजै। तुल्हापुर्ष दान भरि दीजै ।।
सिहजा भूम दान जो करे। ले दुविकी मनि काम न मरे ।।
निहि स्वादी नहीं पावे स्वादि। तजिए पनि सभ वादिविवाद ।।
बोलनि छाडि मौन घरि जांह। भी हरि सिमरणि समसर नाह ।।
कुंभ करे शिव द्वादश वारा। प्रान देत जहां हैहि बंधारि।
जोगि जुगित सो राषे ध्यान। पांच भूत का मारे मान ।।
रेचक पूरक कुंभक साधे। वाउ पंच अग्नि तटि बांधे ।।
उलिटि पौन दटि चक्र को भेदी। मगिन समाध सो भेदि विभेदी ।।
नौ दरि रोंक दसवे घरि जाह। भी हरि सिमरनि सम सर नाह ।।
बांधि जटा वभूति चडावै। गंग जमनि विच सुरसुरी नावै ।।
अंविरि छाडि दिगंबिर होवे। निद्रा जोगि ध्यानि मै सोवे ।।
पीवे पवन सहज घर पानी। मंडल गगन चडा वैवांनी[1] ।।
तालाकुंजी की गति जाने। अंतिर ध्यान लाग मनि मांने ।।
मूंड मुडाय होत वैरागी। निंद्या चिंद्या सकली त्यागी ।।
तीरथ कोट सकल भरिमांह[2]। भी हरि सिमरनि समसर नाह ।।
साधे पंचअग्नि त्रैकाल। जलि तपि सीत करे परिजाल ।।
शिषर बांध कुंभनि की धारा। दयाहीनि मनि भ्रमे विकारा ।।
करि पषंडि चडावै षेह। विन विवेक कित दंडे देह ।।
मनि वच कर्म साच धरि रहे। जैसा हिर्दे तैसा कहे ।।
बंधनि मुक्त हो जायगो प्रानी। मिटे वियोगि सहजि लिव ठानी ।।
मिल सतिगुरि ऐसी मति पावै। तौ साईंदास फिर जनिम न आवे ।।

---

१. वैवांनी <विमानी=जहाज़।

२. भरिमांह=भ्रमण किये।

अषे निहारे नेत्र दो रसना पीविश्र पीव।
सांईंदास अकास प्याले[1] क्या भ्रमे ते अंतिर नरि षीव॥

२७

सो ज्ञानी सो पुर्षु कहावे। हौमै जल विच धर्न न पावे॥
त्रिगुण अतीत रहे लिवि लाइ। आतम भेटे तौ भ्रम जाइ॥
सभ आतम मैं एको देखा। लषी नि जाइ अलिष तेरी सेवा॥
सो सेवक साचा परिवान। जिस के रिदे वसे भगिवानि॥
भय ते भक्त भर्म को नास। इहि विध जाचे साईंदास॥
नाविन मैल सो उतरे मलन[2] न उजिल होय।
साईंदास यहि प्रर्वत संसार मनि विवेक मल धोय॥

२८

नाविण[3] सील सुजती को संसारी को दान।
छत्री नाविण वचनि को, संतोष विप्र को जान॥
राजा नाविण नीति को, स्त्री को नाविण लाजि।
भय करि नाविण मुक्त को अधिष्टा परि काज॥
जोगी नाविण जुगत को संन्यासी निरवंध।
जुगति न जाणे जोग की किति विध पावे अंधि॥
सुर्त विवेकी बोलना संजम चेता ध्यान।
साईंदास नावे ता नामु संभाल लय इति विध करो स्नान॥
सलोकु–हौमै चिंता जगत को मोह माया जंजाल।
साईंदास सांति सहज घरि पीविना अंमृति नाम निहार॥

२९

नावे सचि ज्ञानी सूरा, गुरि मति मिले ते नाविण पूरा।
सति संजम अरि सील विचारे, रिदे ध्याय दुष्टां को मारे॥

---

१. प्याले <पाताल।
२. मलन <मलिन = मैला।
३. नाविण <स्नान (नौणा पंजाबी शब्द) यहां बाह्यस्नान को शारीरिक पवित्रता का द्योतक माना है। मानसिक पवित्रता के के लिए प्रत्येक व्यक्ति का अपने कम क्षेत्र में अलग-अलग रूप है। यतिकास्नान-शील है। संसारीका दान है। इसी प्रकार आगे वर्णन है।

साध संगि सो धरे धियान, सांति ले सहज सों मनि मान।
अछरि नजिरी गुर बचिन मनि बवेक सचु पाय।
नहीं बंधनि तांकों साईंदास जीवन मुक्त सिधाय॥

सलोकु—भर्म न जाइ भगति विन चूकति नाहीं भीति।
ओंह निट रवे साईंदास जो कछु कीन्हि अकीति॥
अकीति न कवि हूं लागिही कीये न अनि किति जाह।
साईंदास कीति अकीत दोऊ मिटै हरि सर्नी जवि पाह॥

३०

शिवि दर्सन की सुर्त समावे। सांति कला तवि मनूआ पावै॥
सीतल भया थक्ति विध जाय। शिवि सोभा इस विध ते पाय॥
सहजे आवे सहजे जाइ। सहजे बोले सहिजे षाइ॥
सहजे जागे सहजे सोवे। सहजे ते त्रैलोक विलोवे॥
शिवि नगिरी मैं आसुन कीना। सविदि विचारि निहचल जलु भीना॥
तांते भर्म भूल सभ जाई। शिवि सोभा इसि विध ते पाई॥
शिवि संतोष विध जोग निवास। इहि विध जाचे साईंदास॥

सलोकु—सिषा सूत्र संजम करम जो कछु निग्म वीचारि।
साईंदास सति संजम ते जानीए परिवानि कला बीचारि॥

३१

सिषा सूत्र संजम गति पाई। धर्म नेम चलो मेरे भाई॥
जलि इस्नान त्रिसंध्या धारन। षटि कर्मा वहु विध वीचारन॥
माला मंत्रि दीक्षा गुर सेवा। संगति साध सर्वमय देवा॥
सालग्राम तुलिसी की माला। दया दानि दिज चर्न पषाला॥
पूर्नब्रह्म सदा भगिवान। मानो वेद कला परिवान॥
परिवान कला का इह विस्थार। साईंदास रिदे करो वीचार॥

सलोकु—इह मनि मारि मैदान कर षेलति सहज विवेक।
साईंदास कहिन सुनन को दोइ है जानिन कों प्रभ एक॥

३२

एको एक न दूसरा कोई। वाघ दर्सन ते ऐसी होई॥
मिहरिवांन मिहिर ते पावे। मिहिर बसो जिस आप वसावे॥
होइ निवाजि निवे सभ माही। छाडि भूठ सचु भिस्त समाही॥

रोजा रिदे संतोषि विचारे। कूजा कर्म सील वीहारे।।
आसा एक साहब की कीजै। गुरु अंतर मंतर महि दीजै।।
मुसावे आप तां सचि घरि आवे। साईं दास फिर जनम नि आवे।।
सलोकु–दान पुंन्य अरि यग्य होम नेम धर्म व्यवहार।
साईं दास सांति सहिज हरि सिमरना इहि विध दर्सन चारि।।

३३

राम नाम रसना हित कीजै। ता सम सरि कछु और ना दीजै।।
धर्म नेम संजम हितकारी। नामु जपे तांसो बलिहारी।
सहज समाध रहे लिव लाइ। आतम भेटे तौ भ्रम जाइ।
मिल सतिगुर ऐसी मति पावे। अहि निस मिल साहबि गुनि गावे।।
निर्मल साध संग जो करे। साचा नामु लै हिर्दे धरे।।
साईंदास भजि इह विवहारि। इहि विध दर्सन कहु बीचारि।।
सलोकु–विष्यावुध व्यापे नहीं अनि इछया विसराम।
साईंदास जती नामु सभ को कहे कठन धराविन नाम।।

३४

जती सोई जाने सभ माही। घटि प्रकास दूसरा को नाहीं।।
निर्ष धर्न जो पगे पसारे। केवल ज्ञानि रिदे मै धारे।।
आसा ही ते रहे निरास। वहेत सरोवरि रहे उदास।।
जती नामु कहु विध वीचारा। काम क्रोध ते रहे निआरा।।
जवि घृति अग्नि निकट नहीं आवे। हठि करि नाम सो जती कहावे।।
घृति ते उलटि भयों जवि पानी। सम सीतिल जलि अग्न समानी।।
रहंति देव को करे प्रणामा। सभ रूपनि में तेरो नामा।।
जिहि सरूप तुम ही को जानो। गुरि प्रसादि दुभदा मत हरि आने।।
सर्व अंगि प्रभ कीयों निवास। इहि विधि जाचे साईंदास।।
जहां देषौ तहा एकु है दूसरा कोही नाह।
साईंदास करे करावे आप ही तूं मनि कहा भरमाह।।

३५

बोध रूप की बुध प्रवीनी। सकल जगित कों जिहि बुध दीनी।।
जहा देषो तहा एको एका। सभ घटि पसर रह्यो जु अनेका।।
अंतिरि बाहरि एको जाने। गुरि प्रसादि साच करि मांने।।

एक ही विचर कीयो जु पसारा। जगित रचिना कों बहु विस्थारा।।
सहज समाध रहे लिवि लाय। हम तुम कौन कहेगो आय।।
कहा ते आआ कहां ते जाही। एह बीचारि देष मनि माही।।
चक्र भेदि षटि भेदि बीचारा। शंषनी चक्र भयो उजिआरा।।
तबे विल्हाय मिलो पदि माही। तहा आविण जाविण ही कछु नाही।।
साईंदास परिचे सो जांणे। एहि विध दर्सन बोध बषाणे।।
सलोकु–षटि दर्सन में लोक सभ मति मार्ग विसवास।
साईंदास जित विध किनहूं जानआ तितिही पूर्न आस।।

३६

षटि दर्सन अनिपेषन गए। अश्चर्य रूप में विसमै भए।।
किनहू सुंन्न हस्त का देक्षा[1]। उनि जान्या प्रभ एही सरेक्षा।।
दूसरे बात और जो कही। तांका भर्म हीए ते लही।।
कोऊ दंत देष पतीआना। उनि वाही ले सच करिं माना।।
कानि निशानि हाथ जिन परा। उनि जाना प्रभ ऐसा षरा।।
अंग नीशान हाथ जिह लागा। बांका वाही ते भ्रम भागा।।
किनि हूं देषा पाउ पसारा। उनि जाना प्रभ यहि विवहारा।।
पूछ परो गिर तैसा जाना। औरि भूठ वाही सच माना।।
देषनि कों रचना रची, अंधि विषनि कों धयानि।
साईंदास सभ में एकों वसि रह्या समझे ते सचु मानु।।
एको एक सभ में वसे अविरि न दूजा कोय।
साईंदास जो जाने दरि दूसरा, दरि दरि काला होय।।

३७

दरि एको दरिवान घनेरे। जिनि कों दाति तेऊ दरि चेरे।।
एक जानि करि चेरा होय। ताकी चाह करे सभ कोय।।

---

१. यहां—हस्ति-अंधन्याय का वर्णन है। जिस प्रकार कुछ जन्म से अंधों ने हाथी को देखा। जिस जिस अंधे ने हाथी के जिस भाग को देखा उसी रूप में हाथी को मान लिया। इसी प्रकार जगत् के अज्ञानी लोग जिस रूप से प्रभावित होते हैं, उसे ही परमात्मा मान लेते हैं, वस्तुतः परमात्मा की वास्तविकता को केवल ज्ञानी ही जानता है।

जिनि सभ ही में एको जाना। बहु विध रंगी रंग पछाना ।।
षालक बन्या षलक के माही। षालिक षेल षाकि होइ जाही ।।
षालक हू ते षाक जिनावे। षुशी षालक की तबिहूं पावे ।।
हौमे मेटे ते अलिसाना। जीवित षाक होइ षसमाना ।।
षसिम मने तौ नौ-निध पावे। जिस को अपुना आपु जनावे ।।
साईंदास प्रभ अकथ नीशानि। मैं तेरी कुदिरत तो कुरिबांनि ।।

सलोकु–करि करिवाल जो काल के काटति पलिक पलाहि।
तबि जान्या जवि गिर परा सनिमुष जूझे जाहि ।।
जो जूझे तेऊ भले अनि झूझति किह काज।
साईंदास तवि क्या झूझणा जवि जम के भए मुथाज ।।
निमिषि पलिक नहीं बीसरे हीए तिहारो नामु।
करि पसार दोउ मांगिते साईंदास यहि विसराम ।।

३८

मूले चक्रे लागे बंधि[1]। इंद्री चक्रे थिर भए कंधि ।।
नाभे चक्रे उलटै पौना। ताते मिट गियो आवा गौना ।।
रिदे चक्रि मन कविल प्रकास। चूकी मार्न जीविन की आस ।।
कंठी चक्रे टुटे ताला। जोगी होइ वृद्धि ते वाला ।।
शंषनी चक्र भयों उजिआरा। जो चीन्हे सो जोगी सारा ।।
षटि रस भेद गगिन गडि गाजा। जिह परिचा अनहद बाजा ।।
आदि अनादि भओं ओंकार। जिह मिल सुर्त कीओ संचार ।।
सुर्त निर्त मिल एको भआ। जीवि सीवि मिल संसा गआ ।।
संसा गिआ भअ निहसंस। जित देषो तित एको वंसि ।।
उत्तम मधम तहां को नाही। साईंदास पदि पूर्न घटि माही ।।

सलोकु–मूल रोक षटि चक्र कों रिदे पंकज कों ध्यान।
संषनी ते सचु पाईए तहा समाने प्रान ।।

---

१. योग साधना द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिए साधक को प्राणायाम द्वारा कुंडलिनी को जागृत करना होता है। यह कुंडलिनी शरीर में स्थित छः चक्रों को पार करती हुई सहस्रदल कमल में पहुंच जाती है, यही साधक की परम-सिद्धि है। उन्हीं चक्रों का यहां वर्णन है। इनके विशेष ज्ञान के लिए परि-शिष्ट देखिए।

ब्रह्मरूप निर्लेपु है माया शक्त न कोय।
साईंदास तांको छेदे वल करे कर्मा वाला होय ।।

३६

एको परिमातम निरमाया[1]। आतम उपिजे तांकी छाया ।।
वपि धरि आतम कर्म कमाया। कर्मा ही ते जीउ कहाया ।।
जबि जीउ इति उति डोलन लागा। तांते कहीए मनि अनुरागा ।।
मनि मनिसा मिल षेल बनाओं। चितवति ही ते चित्तु कहायों ।।
जबि चितु फेर पिछौड़े जाया। तौ परिमातिम जाय समाआ ।।
षेचरी[2] साधे चितै चितवनी जाय। भूचरी ते मनि उलिटि समाय ।।
अगोचरी ते आतम लिवे लागे। उनिमनी ते संसा सभ भागे ।।
चाचरी साधे सहिज निवास। साईंदास आतम भयो प्रकास ।।
कर्म करे सोई नाम ही समझि विचार विवेक।
साईंदास कहिन सुनिन को दोय है जानिन कों प्रभ एक ।।
उपिज विनस क्या कहो सभी रहअ भरिपूर।
साईंदास किनहूं नेडे जानआ किनहूं समझयो दूरि ।।

४०

किनहूं राम निकट करि जाना। किनहूं दूर दूर करि माना ।।
किनहूं साध लीओ घटि माही। किनहूं दिष्ट पडो कछु नाही ।।
किनहूं अपिना आपु पछाना। किनहू जान्या किनहू न जाना ।।
किनहूं दीपक जोति प्रकासी। किनहूं भर्म परो उरि फासी ।।
साईंदास जिह इह सुष मानयों। थान थनंतर रहया समायों ।।
धर्म नेम सभ कों करे घाति करे नहीं कोय।
साईंदास जप लीजिए जो कुछ होय सु होय ।।

४१

राम नाम मनि लेह विचारी। भर्म की भीति चित हूं ते टारी ।।
राम नाम अंमृति फल षायो। राम नाम घटि माह समायो ।।

---

१. यहां से ब्रह्म अंश किस प्रकार जीव बना, इसका वर्णन है।
२. खेचरी, भूचरी, अगोचरी उनिमनी और चाचरी ये पांच यौगिक अवस्थाएं हैं। अधिक स्पष्टता के लिए परिशिष्ट में देखिए।

राम नाम जपि निर्मल होय। राम नाम जपि दुर्मति षोय ॥
राम नाम जांके घटि वसग्रा। पर्म भावि ताहू मन वसग्रा ॥
राम नाम महिमा कों जाने। सत्य सविद ताहू मन माने ॥
साईंदास राम चित धारि। भौ जलि विषम उतारे पार ॥
ब्रह्म रूप होय पसरग्रा देषो नैन पसार।
साईंदास ग्रंतिर बाहरि निर्षयो भक्त हेति चिति धारि ॥

४२

देषो नैन पसार गुसाई। राम रमग्रो है सभनी थाई ॥
ग्रंतिर बाहरि लेह निहार। साध संगि मिल भ्रम मृग मार ॥
कुसम माह वास संचारी। रिदे प्रतीत होय जिन धारी ॥
जो प्रतीति रिदे नहीं ग्रावे। सुनो वेदि सुन्न भाष सुनावे ॥
गुरि जनि वचनि लीयो निज धारी। तौ प्रतीत होय मन भारी ॥
कौन बचन कहिके समभायो। पूछो कोऊ को उत्तरि पायो ॥
बिना जोत क्या माटी बोले। बिना जोत कहूं मार्ग डोले ॥
बिना जोति कहु कहा पसारा। बिनु जोते किउ कहा उजिग्रारा ॥
ब्रह्म जोत सभ ही कों जांनो। जो दीसे सो साच करि मानो ॥
साईंदास जिन ब्रह्म पछाना। बाका चूका ग्राविन जाना ॥
सलोकु–सरि भरिग्रा ग्रनिभै जले, को जनि पीवे जाय।
साईंदास जावित जावन जाविही फिरि सुध रही नि काय ॥

४३

सरि ग्रनिभै भरिग्रा लील्हाई। जो जावे जल सो ग्रचिवाई ॥
ग्रनिभै जल जिनने ग्रचिवायों। भौ जलि तिनने मनि विसरायो ॥
त्रिह्ना[1] त्याग दीनी तिसताही। ताह निकटि चिंता कछु नाही ॥
सहिज भयों त्रैय ताप मिटाये। शिव नगिरी ग्रासनि हि राये ॥
मानि महति सभ दीयो बिसारी। घटि घटि ग्रपिनी जोत पसारी ॥
दूसरा भेद रिदो मिटि गयों। ग्रपिना ग्रापु पछाने लीयो ॥
साईंदास ग्रनिभै पुर माही। विचरति है संसा कछु नाहीं ॥

---

१. त्रिह्ना <तृष्णा।

संसा दीनो डार के निहसंसे मनि होय।
साईंदास तांकों क्या संसय पडै जिस रिद वसिग्रा होय ।।

४४

संसा कहा जु हरिगुन गावे। नामि जपे दुभिदा मिटि जावे ।।
त्रयगुन मनूग्रा सूत परोवे। स्वास संमाल्ह ग्रषंडि नहीं षोवे ।।
एक स्वास हरि हरि गुनि गावे। स्वास ग्रविर्था कोई नि जावे ।।
कहु साईंदास सदा सुष होय। गुरि प्रसादि लषे जनि कोय ।।
सलोकु–जिन के मनि मह उपजयों मुक्त भयो फुनि सोय।
साईंदास गुरि क्रपा सुष पाययो दुष दरिद्र भ्रम षोय ।।

४५

जिन के मनि उपिजी परितीत। निर्मल होवे तांका चीत ।।
भावे वेद पडे गुनि गांवे। भावे मनि मंडलि होय ग्रावे ।।
भावे उदिर भरि भरि षावे। भावे सूषम भोजिन पावे ।।
भावे कपिर्डे ग्रंगि हढावे। भावे नागा वनि उठि धावे ।।
भावे सुंन्न सविदि सो राचे। भावे सोहं पदि सो माचे ।।
भावे ग्राप ग्राप हो जाय। भावे ग्रविगति ग्रलिष लषाय ।।
साईंदास बिरथा जो जाने। सो सुष सागिर मांह गलताने ।।
सलोकु–हरि पदि मय गलतान जनि ग्रविगति विसराय।
साईंदास ममता मिटी दुभदा गई सति गुरि दीग्रों बताइ ।।

४६

सतिगुर जिन के मनि मह भायों। पर्म पदार्थ तिनहूं पायो ।।
सतिगुरि जिन को दीयो उपिदेसा। ताहू का मिट गग्रा ग्रंदेसा ।।
सतिगुरि है दीपक की न्याई। पर्सति तिमर छिनमै दुर जाई ।।
सतिगुरि दर्सन भेटति दुष गियों। महाग्रनंदि रिदे मह भयो ।।
जीविन मूलि रिदे मह ग्रायों। जो कछु इछग्रा सोई फल पायो ।।
गुरि का मंत्र राष रिदे माही। राषति ही सुष सहिज समाही ।।
साईंदास सतिगुरि बल जायो। तिहि प्रसादि हरि के गुन गायो ।।
सलोकु–प्रथमि बुद्ध व्याकल भई ग्रौरि प्रकासयो भाय।
साईंदास ग्रादि पुर्ष उतिपत करी सो मनि विसरयो ताह ।।

४७

जनिम लीयो सागिर भ्रम आयो। कौल करारि सकल बिसरायो ॥
जनिनी कों पय जबि ही पीयो। भजिन गुपाल तविही तज़ि दीयों ॥
ममतां के गृह माही आयो। मं मं वचन मुष ते सुनायो ॥
तुम माता के प्रगिटि आइ होयो। बिसर गियो रस माता सोओ ॥
त्रैय गुनि माही षेलन लागा। गोविंद भजन रिदे ते भागा ॥
कनिक कामनी हेत बधायो। अपिना मनि ताहूं चितु लायो ॥
ओंकारि कों दीयो विसारी। महा मलीनि मनि ले चित धारी ॥
साईंदास जिस हरि विसरायो। अंत समे बहुत दुष पायो ॥
अनिहदि बाजे रे भैआ निसवासरि पल छीन।
साईंदास सुर्त निर्त ताहू भई गुरि किरपा करि दीन ॥

४८

अनिहदि तार बजे मेरे भाई। निसवासरि तांको लिवि लाई ॥
जांकी लिव लागी फुन तांको। अनिहदि उपज रह्यो घटि वाको ॥
त्रिगुटी भेद रह्यो उरिझाई। उनिमनी मै फुनि ध्यान लगाई ॥
तहां रचिति सोहं पदि बोले। इति उति मनूआ मूल न डोले ॥
तहां रचत सभ सुर्त पसारे। अनिहदि सविद होत उजिआरे ॥
आवागवन ते भआ निआरा। छाडि दीयो सभ सकल पसारा ॥
साईंदास गुरि मंत्रि दिढायो। तिहि प्रसादि अभै पदि पायो ॥
तीन भविन में विचरते सूषम अति अस्थूल।
साईंदास जब जान्या तवि निकटि है पाओ जीविन मूल ॥

४९

ज्ञानी ध्यानी की सुन बाति। धरो ध्यानि बहु वेद बकात ॥
अंतिर ध्यान वेद मुष भाषे। हरि रस माता अंमृत चाषे ॥
जो अंमृति हरि नाम कहीजै। सो अंमृति मिल साधनि पीजे ॥
सुष अंमृति हरिनामु कहावे। जांके भागि सोई जनि पावे ॥
मिल साध संगि करे आनंदि। सदा बसे घटि परिमानंदि ॥
जाके रिदे आनंदि हूयो। सो नरि सदा सदा जुग जीयो ॥
गुरि प्रसादि साईंदास बताइयों। पूर्न नाम रिदे में आयो ॥
सलोकु—परिम पदार्थ पाइयो हरि सेवा चितु लाय।
साईंदास गुर प्रसादि भ्रम उतिरयो तिमर मिटायो जाय ॥

५०

पर्म पुर्ष का ध्यानि करीजे। गुरि मंतरि अंतर्मह दीजे ॥
गुर मार्ग छिन मह दिषलावे। ठौरि ठिकाणा निकटि बतावे ॥
दर्पन न्याई मुष उलिटि दिषाई। दिष्ट पडो ममता मिटि जाई ॥
जविते उलिटि परचो गृह माही। बूझे बूझे आप आप होइ जाही ॥
साईंदास गोविंद गलतान। चूको जनि को आविण जान ॥
तुमरी गति अपार है लषी न जावे वाति।
साईंदास ना काहू सो उपजयो विसमर हो तिह गाति ॥

५१

तू दियाल अपार प्रभ होई। लषी नि जाइ अवगति गति सोई ॥
दुषिभंजनि हरि दीनदआलं[1]। करुणामय गोविंद गोपालं ॥
परिमानंदि सदा सुषदायक। भगित वछल हरि सदा सहायक ॥
गुनि निधान माधो मधसूदनि। सकल यगित पसरचो मधुसूदन ॥
निर्मल जोत उजिआरा रूपा। अटल जोत प्रभु सदा अनूपा ॥
गिरवरि धारो नंद के नंदन। सकल जगत ताहू चित बंधन ॥
परिमानंद मुकंद मुरारी। वामिन रूप वन्यो ततिकारी ॥
नारिसिंघ सूकर बपु धार्न। भगितहेत सभ काज सवारन ॥
बिसु रूप धर्नी ठहिराई। सकल सरूप रचना रचाई ॥
मनि मोहनि हरि कुंजबिहारी। श्री गोपाल भगितन हितकारी ॥
पतित उधार्न दीनदिआला। आदि अंति मधि है रषिवाला ॥
संकटि काटिन दूष निवारन। भगित हेत प्रभ रूप पसारन ॥
मोहन मंछ गोवरधन धारी। पूर्ण पुर्ष श्री कुंज बिहारी ॥
दीनिबंध बृजिवासि ठाकुरु। गुनिन षान सभ के गुनि आगिर ॥
सर्व अंगि प्रभ रह्यो समाई। कौलापति[2] हरि त्रिभुवन राई ॥
जो जो ताहू के गुनि गावे। मुक्त लहे पदि सांति समावे ॥
साईंदास सुषि नाम निधान। गुरि किरपा पायो भगिवान ॥

---

१. यहां से प्रभु के अनेक अवतारों की महिमा का वर्णन है।
२. कौलापति < कमलापति।

आत्म मनि बुद्ध एकु है यामै भेद नि कोय।
साईंदास जौ माने तो मान लेह कहे होत नहीं दोय[1] ॥

५२

एक रूप आतम सभ माही। कर्म करे फुनि नामु सदाही ॥
बुधि प्रकास परिमातम होई। आत्म मनि मिल दुर्मत षोई ॥
सभ ही भीतिर ब्रह्म पछाना। अपिना आपि देष पतीआना ॥
नैनन माही दीयों दिषाई। औरि नहीं कछु नाम सुहाई ॥
एको राम रमयों सभ थाई। साईंदास सुष आनंदि माही ॥
सलोकु—जौग ध्यान षटि कोटि कों जांते जोगी होय।
बिन जाते घरि ना बसे जतिन करे जो कोय ॥

५३

प्रथमे मूल द्वारि रोकावे। दुतिए लघ दुआरे फुनि आवे ॥
नाभि कविल वाउ धरि अहे। वर्तत अदिभुत लीला कहे ॥
उलिटि पविन जवि हिर्दे आवे। आनंदि होइ अनंद समावे ॥
जीवित आइ वस्यो तिस मंदर। अतिभुति रूप वन्यो अति सुंदरि ॥
विसर गियो जो काम कमावित। करि क्रीडा तवि सुष उपिजावत ॥
त्रैगुनि गियों अगम घरि आवे। जगित मांह सभ ही विसरावे ॥
पंचि दूति का कीनो षापु। षडग लियो सोहं करि जापु ॥
अवि तो उनिमन माह समायो। भयो कछू था जो जगि आयो ॥
लीयो पछान परिमात्म सुष जविही। उनिमनि में राता जनि तविही ॥
सोंहं पदि सो रहयो उरिझाई। साईंदास गुरि दीयों बताई ॥
चिह्न चक्र ना वर्ग कछु दिष्ट पडो नहीं मीति।
साईंदास अपिना आपु पछानियो निर्मल होइयो चीति ॥

५४

चिह्न चक्र कछु दिष्ट न आयो। मानि गयो आतिम सुष पायो ॥
जो कछु था सोई कछु भयों। संसा सोग रिदे मिटि गयो ॥
मगिन होय पुरि माहि समाओ। अनिहदि तार बजे मनि भायो ॥
वाजित वजंत्र तारि अधिकाई। निर्त कर्त को कह समझाई ॥

---

१. साईंदास जी का सिद्धान्त—"अद्वैतवाद"।

कहे कौनु को निर्त करावे। कहे तवे जो दिष्टी आवे ।।
सुंन्नि भये चक्रति भयो तति ताही। सुर्त निर्त कछु रहतो नाहीं ।।
विसर गियों सभ भोगि विलासा। जवि निरभय पुर पायो वासा ।।
साईंदास निरभै पुरि माही। विगसति सदा सदा सुष ताही ।।
नामु अनंत्ति नि अंत्तु है अंत्तुलषे नहीं कोय।
साईंदास वेद पुरान संमृत कहति बुधि परिबांधे सोय ।।

५५

नारायण दुष टारन हारा। आदि पुर्ष है प्रान अधारा ।।
दमोदरि भक्तन हितकारी। परिसराम सुंदिर अधिकारी ।।
दीनिबंध सुष सागिर पूरन। नामि निधान सदा भरपूरन ।।
भक्तिवछलि त्रिभवनि को नायकि। गहिर गंभीर सदा सुष दायकि ।।
मंछि कछि को रूप पसारन। भगित हेत सो हरि वपि धारिन ।।
महाराजि गोविंद गोपालं। धर्नी धरि सभ के प्रतिपालं ।।
वंसीधरि वादन वपु धारन। राम नाम अनिभै सुष कैंारन ।।
मनि मोहनि मुकंदि मुरारी। मधिसूदन हरि प्रान अधारी ।।
करिन कराविन करिता आपे। जीवि जंति में रहआ विआपे ।।
नंदि नंदन हरि प्रान अधारी। राधा-रविन[1] सदा बलहारी ।।
केसि-दलन वृजि वासी लाल। काली नाथ परि भए कृपाल ।।
दावानलि को प्रानि अचिवायो। निर्षासिरि कों वेगही आयो ।।
बाघासुरि कों ले पटिकायो। नरि कंस को मारि चुकायो ।।
विस्वुरूप अविगति गति रूपा। सुंदिर रूप सदा जु अनूपा ।।
परिमानंदि पूरन पति स्वामी। दीनि दियाल गुर अंतिर जामी ।।
कौलापति त्रिभवनि कों राजा। सर्वअंगि उत्तम गुन गाजा ।।
नारिसिंघ सूकरि बपधारन। पूर्न पुर्ष प्रभ रूप पसारन ।।
करिणामय परलंवि पछारन। सुपलकि सुति कों चरित दिषारन ।।
गोपीनाथ गोवरिधनि धारी। चर्नकमल निर्षंत बलहारी ।।
साईंदास गोविंद गुनि गावो। जपो नामु फुन और जपावो[2] ।।

---

१. राधारविन < राधारमण—यहां से भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन प्रारम्भ है।
२. नामस्मरण पर बल।

सलोकु—जाके भाग फुनि जागिही हरिजनि सो चितु लाय।
साईंदास हरि हरिजन अंतर नहीं जे समझे जनि कोय[1] ।।

५६

हरि में साधि साध हरि माही। जा में भेद भेद कछु नाहीं ।।
जिउ तुरंगि जलि माह समायो। षिनि उपजयो छिन माह मिलायो।।
जैसे दीपक जोत समाइ। पाविक लागी तिमरि मिट जाइ।।
जैसे जीवि फुनि सीव कहावे। जहा तेज शिव तहां दिषावे।।
पै[2] में घिरत वसे है जैसे। साधनि में हरि हरि भयो ऐसे।।
जैसे दिन मैय रैन समानी। गुरु प्रसादि समझे को ग्यानी।।
जैसे कुसम सुगंध बिसारी। ऐसे साध जोत हितकारी।।
जांको बूझ पड़ै सोही जाने। गुरिप्रसादि साईंदास बषाने।।
साधनि के संगि चित धरे विमल मोह भ्रम टार।
साईंदास ताको बिघन न लागही मुक्त होति तृति काल।।

५७

जो साधनि मैय हर गुनि गावे। आपा त्यागे नीच[3] कहावे।।
जीविति मुक्त होयगो सोई। साधि संगि मिल दुरमति षोई।।
परिमपदार्थ तिस ही पायो। हरिभगतन सो जिन चितु लायो।।
प्रभु उतिरचो तासो चितु लायो। साध क्रपा हरि भजिन कमायो।।
भजिनि करति कछु दुष नि विश्रापे। हरि सेवा त्रय गुनि न संतापे।।
साईंदास साधि संगि हू ते। साधि क्रपा उधरे तनि हूं ते।।
सलोकु—ध्यानि धरो फुनि सिषर में तहा बसे सुष होय।
साईंदास अपिना आपु पछानाआ हीये निर्मल जन सोय।।

---

१. हरि और हरिजन में अभेद है। इसी तथ्य का उपमाओं द्वारा वर्णन है। पहली उपमा है—जल और जल की तरंग। कबीरदास ने भी इस उपमा का प्रयोग किया है। दूसरी उपमा है—दीपक और ज्योति की। तीसरी उपमा है—दूध और घृत की। चौथी उपमा है—रात और दिन की। पांचवीं उपमा है—कुसुम और सुगंध।

२. पै <पय, घिरत <घृत।

३. नीच=नम्र।

५८

धर्न उलिटि मन गगनि चढायो । भर्म मिर्ग तवि ही हत आयो ।।
भूल गियो जो कछु था वकिता[१] । जोगि जुगंतर जोग सो जुगता ।।
भइ की भीति सुर्त विसरानी । अनभय पुर को परी निशानी ।।
चित्र रूपु कहन नहीं आवे[२] । जो मुष कहो कहा नहीं जावे ।।
अविगत गति कछु लषी नि जावे । विसम होय सुष नाउं चिरावे ।।
अतिभुति लील्हा नैन निहारी । साईंदास जवि मिले मुरारी ।।
द्याल पुर्ष सुष देन को दुषि विसिरावन हार ।
साईंदास तांकी सेवा लागीए और वाति चित टार ।।

५९

दिआल पुर्ष की सेवा लागो । भजो गोपाल निसि वासर जागो ।।
जागृति चोर मुसे नहिं घर कों । गुरु प्रसाद लहो हरि दरिको ।।
जो कछु कहो सु हरि की बांनी । नाहीं ता मोंन भला है प्रानी ।।
ठौढ राष चितु नाह डुलावो । राम जपति सहजे सुषु पावो ।।
हरि की भक्त लेह चित धारी । वेद पुरानं सभ एही पुकारी ।।
भक्त भाउ जोग सुष पायो । साईंदास जिस हरि गुनि गायो ।।
सलोकु—हरि प्रसादि भ्रम उतारियो होवनिहारि पछान ।
साईंदास साध संग्य सुषु पाइआ प्रेम भक्त चित आनि ।।

६०

जो कछु कीयो सु हरि ही कीयो । जो सुषु दीयो सु हरिही दीयो ।।
विन भगिवानि और को नाहीं । गुरि मिल समझि देष मनि माही ।।
विनु रघुनाथ सूझति को नहीं । संमृति वेद सभ भाषि सुनाही ।।
विनु रघुनंदनि कुंज विहारी । सूझति नाह जो सूषि दिषारी ।।
विनु श्री क्रष्न मुक्त को पावे । रविसुति फासी तेउ बिरावे ।।
विनु त्रिभवन नागिर सुषि आगिर । कौन दिषावे सुषि बिनु आगर ।।
विनु धरिनी धरि कौन उबारे । संसा मनि का कौन उतारे ।।
विनु मनिमोहनि को नहीं दाता । माति पिता वनिता सुति भ्राता ।।

---

१. वकिता <वक्ता=वाचालता ।

२. प्रभु के दर्शन से जो सुख मिला वह अवर्णनीय तथा अनिर्वचनीय था.

विन जगिदीस कौनु जगि परे। भौजलि विषम जो पार उतरे ।।
विन गिरधारी को सुषदायक। ऐसा औरि न सूझति लायक ।।
विनु मुकंदि परिमानंदि स्वामी। विरिथा कोल है अंतिरजामी ।।
विनु कौलापति प्रान उधारन। ऐसा औरि नहीं दुषि टारन ।।
साईं दास तौ सरिनी आयो। गुरिप्रसादि जसु भाष सुनायो ।।
देषो नैन निहार के चलिआ जाति जगवीरि।
साईं दास विलम छोड हरि सिमर ले मानो गुरि अरि पीरि ।।

६१

जगि चलिआ नैन लिवि लायो। विमल छाडि जसु हरि का गायो ।।
षिनि पलि जाति अविध तिहारी। घटि घटि जात मनि लेह वीचारी ।।
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावे। अविध घटित सठ समिझ न आवे ।।
आन अचानिक कालि गिरासी। उरि में डारि चलित ले फासी ।।
तवि पछुताउ रहयो मनि माही। हरि का सिमरन कीनो नाहीं ।।
इहु पछतावा काम नि आवे। जोर न लागे नीर ढुलावे ।।
अवि तो तुमरे प्रान वसाई। काहे ना हरि सिमरओ भाई ।।
विनु हरि सिमरनि सुषु नहीं कोई। मीन बिछुरि जल विना न होई ।।
कलवतर[1] रविसुत[2] सिर परिधरियो। काटि अविध तिहारी तरिवरियो
छाडो विलम मनि लेह संवार। साईं दास जनि कहिआ पुकार ।।
सलोकु—नरिपति सुरपति सभ भजे भजिन कर्त लिव लाइ।
साईं दास जात पाति पूछे नहीं जो सिमरे सुष पाय ।।

६२

नरिपति वेद भाष भषि जांने। आसि रिदे हरि जी की आने ।।
कहा भया नरिपति जो हूयो। ताह कर्न हरि ही दीयो ।।
मनि माही बहु लेति वीचारी। मोह नरिपत कीना गिरधारी ।।
तिह ऊपरि जिनही ससताविन। जो दुष देत बहुति दुष पावन ।।
इह प्रजोग त्रास मनि धारे। डरिपति डरिपति राज संभारे ।।
तिह नरिपति कों बहु सुषि दिषायो। जिसको अपिना आपु जनायो ।।

---

१. कलवत्तर<करपत्र (आरा) मराठी (करवत)।
२. रविसुत=यमराज।

जो जो हरिजनि रिदे वसाई। जीविल मुक्त होति मेरे भाई ।।
साईदास आनंदि घटि जांके। हरि का नाम वस्यो घटि तांके ।।
सलोकु—देवनहारा एक है ताहू के गुनि गाय।
साईंदास पर्म मुक्त गति पाईए दुभदा देत मिटाइ ।।

६३

परालभित[1] जो कछु तिहारी। अनिवांछति है आविनहारी ।।
जो बांछति सो मिले ना आई। परालभत छनि मिलाई ।।
ठौडि राष चितु नाह डुलावो। जो कछु तुमरा है सो पावो ।।
हरि को जपो निसवासर धिआवो। परालभत ले ना उकिलावो[2] ।।
देवनहारि रह्यो भरिपूर। जाने निकिट अजाने दूर ।।
संसा छाड़ि भजो गोपाल। करिणामै जो सदा दिआल ।।
साईंदास हरि नामु ध्यावो। सुषिसागिर घटि माह बसावो ।।
अनेक राग अविनी सुनो नैन रूप समझाइ।
साईंदास उलिटि पड़ो जवि आतमा परिमातम हो जाय ।।
अविन धरो सुनो हरि की बानी। लषी नि जाइ अकथ कहानी ।।
अनेक राग बजे मेरे भाई। मगिन होत मनि अति अधिकाई ।।
ताल मृदंगि वीनि धुनकारी। अनिहदि शब्द होति अतिभारी ।।
सुन्न सविद की सुर्त सभारे। निरति करति गोविंद चितारे ।।
भगित भाउ रिदे माह बसाई। सहिजे मनि दुभिधा मिटि जाई ।।
नाचित निरत कर्त हरि केरी। काटि देत मनि भ्रम की जेरी ।।
उनिमनि माह सदा मगिन चित। जो गावित तौ आप सुनावित ।।
आपे बके सुनित फुन आपे। सर्वमाह जो रहआ विआपे ।।
साईदास विचार घरि आयो। उलिटि पड़ा जवि आप सुझायो ।।
जवि लगि रसीआ रस रह्यो होति व्यांध को मूल।
सुषि विसरति दुष जागही परिसति अति असथूल ।।

---

१. परालभित < प्रारब्ध = भाग्य। यहां से भाग्य का वर्णन है। भाग्य से जो कुछ भी मिले उसे सहर्ष लेना चाहिए।
२. अकलावो < अकुलाबो। आकुल = व्याकुल होना (नाम धातु)

६४

जवि लगि रसग्रा रस मे रसिग्रा। तबि लगि जांनो दुष मे फसिग्रा ।।
जबि लगि मनु ना मोंन करावे। कहा भया जिह्वा ठहिरावे ।।
जवि लगि मनु दहदिस भरिमाई। मोन कहा बहु मेरे भाई ।।
मनि चंचल चतुराई करे। परि घरि मूसिन सो चितु धरे ।।
मारित मगि तसकरि पंच भैया। तनि मनि माहि संताप जो दया ।।
नगिर मांह कैसे ठहिराए। रहे सहिज जो रह रणा पाए ।।
साईंदास विकटि गति भाषे। गुरिकिरपा जनि विर्ला लाषे ।।
सलोकु—सुनित वकत मुक्ते भए जिन कीनो परितीत।
साईंदास पारिब्रह्म अंतर वस्यो निर्मल होयो चीत ।।

६५

सुनित नाम हरि बहु मुक्ताये। हितकरि जनि हरि के गुनि गाए।।
गोविंद नामु रिदे जिन लीना। ताति काल प्रभ मुक्ता कीना ।।
जांके रिदे बसे गोविंद। सदा बसे घटि परिमानंदि ।।
प्रेम प्रीत जांके मनि ग्राई। उज्जिल भयों मिटी तिमराई ।।
मानो कुस्म मिल्यो जलधारा। निर्मल रूप भयो उजिग्रारा ।।
तीनि ताप संताप चुकायो। ब्रह्म मिल्यो सुष ग्रानंदि पायो ।।
सकल माह हरि रूप दिषायों। मिट गयो दुष गुरि नामि दिढायो।।
सतिगुर चर्न रहयो लपटाई। तिह प्रसादि भ्रमि मनि का जाई ।।
साईंदास ग्रानंद गलतानि। चूको तिन कों ग्राविन जान ।।
उरिध मति जनि त्याग के लेहो ग्रादि पछान।
साईंदास वैरभाउ पाछे रहयो निर्भो पदि लिव ठान ।।

६६

ध्यानि धरो धरि हरि गुन गावो। विष्या सुर्त सकल विसरावो ।।
गुनि गोविंद धरो चित माही। जठर ग्रग्न ते जिन उबिराही ।।
दग्ध होन तुम कों नहीं दीयो। पान-पाति[1] जो रष्या कीयो ।।
रे सठि दसि मास वस्यो तूं ताही। ताह वसति हरि के गुनि गाही ।।
भयो व्रतीत मास दस जविही। प्रगिटि भयो जगि भीतर तविही ।।

---

१. पानपति <प्राणपति (ईश्वर) ?

दीओ विसारि रष्या जनि कीनी। और मत्त ततषिन चित लीनी ।।
अपिना आप दीओ विसराई। कौन नीति ते उपिज्यो भाई ।।
मं मं बचन रुदनि करि भाख्यो। भूल्यो अंवृति विणु फल चाष्यो ।।
रेजनिजोगत अपिनी कीआलोरो। साधि संगि मिल दुरमति तोरो ।।
ताह् बंसति फुनि ना चितु आनो। यहि गोइल मिथ्या करि जानो ।।
जिउ बाजीगरि बाजी पाई। छल करि प्रभ इह् बनत बनाई ।।
अंभ सो अंभ मिलयो मेरे भाई। माटी सो माटी होइ जाई ।।
माटी पविन अंभ ते साज्यो। तामे जोत सरूप विराज्यो ।।
अंत माटी माटी होइ जाई। अंभ सो अंभ सह्जे मिल जाई ।।
पौन सो पौन मिलयो मेरे भाई। नर्क स्वर्ग मह् को ना जाई ।।
जो इह् बांत पुकार सुनावे। जगित बसेरा करि ठहिरावे ।।
जो कोकरिम करितूत तिह माही। मानि महति चतु दीनो ताही ।।
सभ ते आपि नीच कर जांनो। रिदे भगिवान रुचित करि मानो ।।
तांको नर्क स्वर्ग नहीं काम। जिस घटि पसरयो पूरण राम ।।
जिन ने कह्यो जु मै कछु कीयों। मान महति ताहू चितु दीयो ।।
गुरि के बचिन सुनित जनि भाषे। अबिगत गत कछु वाही लाषे ।।
अविगति गति गत सोई जाने। गुरि प्रसादि जो ब्रह्म पछाने ।।
साईंदास हरि नाम धिआयो। गुरि के बचन मनि ना विसरायो ।।

रवि सुति अरि जो देषते करिवति[१] जाने मीत।
साईंदास पलि पल छिन छिन अविध कों काटित सुन धरि चीति ।।

६७

निस वासर जोजाति अवेही। पलि पलि छिनि छिन अविध घटेही ।।
मनि मूर्ष कित स्वाद लुभाओ। पूर्न पुर्ष चित ते बिसरायो ।।
कौनि हेति अति अंध अज्ञानी। जो इस्थर[२] सो दीयो भुलानी ।।
जो अनित्त तासो चितु लायो। जो इस्थर चित ते बिसरायो ।।
जानि बूझ किउ विषु को षायो। पतित उधारनि को बिसरायो ।।
अंति न होई होति सहाई। माति पिता बनिता सुति भाई ।।

---

१. करवति < करपत्र = आरा।
२. इस्थर = यहां इस्थर शब्द का अभिप्राय स्थिर है। उसमें 'इ' का 'आदि स्वरागम' हुआ है।

जवि उरि फासी रवि सुति डारे। मुगिदरि सेती सीसु प्रहारे ।।
ताहि समे अंगि नीरि ढुलावे। हाथ पछोड़े बहु पछुतावे ।।
ताहि समे कछु नाह सहाई। साईंदास जबु हरि सुषिदाई ।।
पूर्न पुर्ष निधान सुषि घटि घटि ताह निवास।
मनि रुचिकरि ता सेवए गुरि किरपा साईंदास ।।

६८

जलि थल भीतिर रहया समाई। अविगति गत कछु लषी नि जाई ।।
पसु पंषी मे ताह निवासा। अस्थावर जंगम महं वासा ।।
जो दीसे सो ताह सरूपा। गहिर गंभीरि जो सदा अनूपा ।।
अनंति रूप कछु वरिन न जाई। जिन को जानो होति सहाई ।।
बिना सहाय कहा कछु होई। साईंदास जपु हरि हरि सोई ।।
सलोकु—सूरा सोई भाषीए सनिमुष झूझे जाय।
पीठि न देवे साईंदास हरि गुनि वान चलाइ ।।

६९

सूरा सो सनिमुष जा लरे। सति गुरि शब्द षडग करि धरे ।।
पंचि दूत का घाति करावे। निर्भौ नगरी माह बसावे ।।
ग्यान ध्यान मे रहया समाय। तिमरि अज्ञानि मिटै सुष पाइ ।।
निज पदि कों जवि ध्यान लगावे। आप सकिल विसरावे ।।
रवि प्रकास कीयो जवि हूंते। तिमर विनास भयो तवि हूंते ।।
त्रयगुन मेटें ते अलसाना। चूकी गियो फरि आवन जाना ।।
साईंदास अनिभै पुरि माही। सदा अनंदु त्रासु कछु नाही
बाजे बजित अनेक भांति सुर्त नर्त ठहराय।
साईंदास बिन देषे श्रविनी सुनो मुष ते भाष सुनाय ।।

७०

बाजे बाजित भांति अनेका। सुर्त निर्त करि समझ विवेका ।।
विनु पगि नाचै जिह्वा विनु बोले। नादि सुने श्रविन नहीं षोले[1] ।।
विना ताल करताल बजावे। बिन देहा करि जोत दिषावे ।।

---

१. यहां अनिभैपुरी (सहज समाधि) की अवस्था का वर्णन है। जहां नृत्य संगीत ध्वनि अतीन्द्रिय ज्ञान से प्राप्त है।

विना भानि[1] उजिआरा होवति । मनिकी मैल सविद[2]गुरि धोवति ।।
आपि भआ जबि आपनिहारा । साईं दास तबि भ्रम मृग मारा ।।
महा विकटि अति वाटि है पगि ठहराविति नाह ।
साईं दास इति विध पौहचि न पाईए विहंगम फासी लाह ।।

७१

महा विगट मार्ग मेरे भाई । फिसलति पगि फुनि धरियो नि जाई ।।
षगि ते मगि पगि धरिन न पाई । सुनित वकित गुर होत सहाई ।।
जौ तुमरी किरपा जनि पर होई । ताते पार पडो जनि सोई ।।
अंध कूप कछु नाह सुझाबत । सूझत नाह न कछू दिषावत ।।
होइ हैरान रहयो थकताई । साईं दास हरिदास सहाई ।।
गुनि आगिर भगिवान है नागिर तांको नामु ।
साईं दास नाम अनंत अनंति है सिमरो आठों जाम ।।

७२

गुनि आगिर भगिवान कहीजे । सिमरनि आठों जाम करीजे ।।
एकु पलु विलम नि करियो भाई । निसवासरि ताहू गुनि गाई ।।
विमल बुद्धि उजिआरा होइ । जाति पात दूसर नि कोई ।।
रामा पदि के मंगलि गाऊं[3] । जो गावो तौ सरिना आऊ ।।
आनि देव फल को है दायक । तांते मुक्त और नहीं लायक ।।
जो आनि देव किरपा जनि धारी । जो विरथाहरि होय बिचारी ।।
जवि किरपाल होवे जादोराय । तवि फल आन देव जनि पाय ।।
ताते एह भला मन आवे । राम नाम कित जात भुलावे ।।
नारायणि निर्भौ सुषदायक । साईं दास भजि लागो पायक ।।
सलोकु—मूर्ष मनि समझाविहो समझत नाहीं काय ।
साईं दास हरि प्रसाद सुष सहज मैं संसा चित ते लाह[4] ।।

---

१. भानि < भानु = सूर्य ।
२. सबिद गुरि = शब्द ब्रह्म ।
३. अनन्य भक्ति पर बल—ईश्वर ही मुक्ति का दाता और देव केवल फल दायक ।
४. लाह = उतारना (पंजाबी शब्द)

७३

मूर्ष मनि तुझ कह समिझाऊ। करि बिबेक तुझ नैन दिषाऊ ।।
जबि तै जनिम जगति ते पायो। माति गर्भ ते कहा लइग्रायो ।।
कहा ग्रापि कहा मोह दिषाई। जठिर माति ते जनिम्यो भाई ।।
जिन ने धारि इहि वनित बनाई। गुनि ग्रविगुन सभ नाह सुझाऊ ।।
जनिनी ग्रस्थानि पै प्रगिटायो। प्रथिमै पाछे जगि दिषलायो ।।
वहुड बाल ग्रवस्था त्यागी। भरि जोविन नारी ग्रंगि लागी ।।
तबि हरि तुम कों ना विसरायो। जो परालभित सो ग्रान पहुंचायो ।।
नाना भांति रक्ष्या तुझ करी। रिदे विसार चिति नाहै धरी ।।
रे सठ ते एकु गुनि नाहीं मान्यो। रच्यौ ग्रौरि चित ते विसरान्यो ।।
ग्रनंति स्वाद रसना जवि पायो। हरि के गुनि गाविन बिसरायो ।।
श्रविनी नाद सुन्यो जवि हीते। मंडिल ध्यानि चूको तवि ही ते ।।
नैन जीवित जगित निहारयो। माति पिता वनिता चिंत धारयो ।।
जहां हरि भक्त तहां नहीं जावे। जहां ठगित गति तहां सिधावे ।।
वह हरि गुन इहि तो गुनि कीने। मूर्ष सठ तै ब्रह्म न चीन्हे ।।
जो ग्रावित ग्रावित जानो। साईं दास ग्रवि उलिटि पछानो ।।
नाना रंगिहो पसरयो जिन जान्यो तिनि जानि।
साईं दास जिन जानियो सुष पाइयो ग्रानंदि में गलतानि ।।

७४

कोई नागा वनि उठि धावे[1]। उनि वाही मैं ग्रलिष लषावे ।।
किनिहूं जटा बधाई सीस। उनि जानियो ऐसो जगिदीस ।।
जोगी होके कान पडाए। उनि ऐसे हरि जानि लषाए ।।
कोऊ ग्रस्थावरि के है वासी। बाहू के मनि माह हुलासी ।।
कोऊ वैरागी जनि भए। द्वादिस तिलक ग्रंग मैं दए ।।
कोऊ मुष ते बचिन न भाषे। मोन गहे हरि ऐसे लाषे ।।
कोऊ ज्ञानि विज्ञान विचारे। कथा कीर्तन हरि ज्ञानि चितारे ।।
कोऊ षटि शास्त्र वीचारी। जपे नामु श्री क्रष्न मुरारी ।।
जो कबुद्धि है त्यागन हारे। सो उधिरे लै ज्ञानि बीचारे ।।

---

१. ईश्वर भक्ति ग्रनेक रूपों में की जाती है।

अनेक भांत प्रभ रूपि पसारा। सम दिष्टी जिन नैन निहारा।।
साईंदास जिन सम करि जाना। तांका भ्रम उतिरचो मनि माना।।
सलोकु—तुमरी गति मैं क्या कहो मति थोड़ी चित अंधि।
भ्रमि चित तू करि आवरचो अति दीर्घ तिह संधि।।

७५

तुमरी गति मैं कहा वषानो। मति थोड़ी चितु कहनि न जानो।।
सेस नागि[1] कछु अंति ना पायो। शंकरि जोगि ध्यानि चितु लायो।।
पंडित वेद पडित थकिताने। नारिद वैन बजाय भुलाने।।
जम दग्नि परासर पतन कमायो। रिष धूमासरि जतन करायो।।
गौतम तरीआ प्रीत रषाए। व्यास अगस्त हरि के गुन गाए।।
सुकि नाना विध ज्ञानि बीचारी। अंतु ना पायो तिह वनिवारी।।
साईंदास अविगति करि जानो। गुरि प्रसादि चिंता उतिरानो।।
जो निर्भौ जनि मान के, साधे पंचो दूत।
निरिमलि हो निरमलि भए नरिपति सकल अविधूति।।

७६

जिन हरि जाना आप पछाना। आप पछान ताह सुष माना।
उलिटि विचार पड़ो जवि हीते। सुषि निधानि पायो तवि हीते।।
साधू सहज अलिसाना जाय। मनि की दुभदा सकल चुकाय।।
रूपि रेष हरि चिह्न समानो। भयो सोई जो दिष्ट परानो।।
सुषि सागिर माह समायो। परिम पदार्थ तिस ही पायो।।
प्रगिटि सुगंध बसे जगि माही। पर्म जोत सो सहजि मिलाही।।
साईंदास प्रभ घटि मैं पेक्षा[2]। तत्त सरूप अरूप अरेक्षा।।
मूल सम्हालो आपना, काहू जो कहा भइयो।
सांईदास कौन रूप हो पसरचो, संसा सोगि गयों।।

---

१. तुलनीय रसखान—
सेस महेस गनेस दिनेस सुरेस हु जाहि निरंतर गावे।
जाहि अनादि अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावे।
नारद सेसु व्यास रटे पचि हारे तऊ पुनि पार न पावे।
२. प्रभु के दर्शन भीतर ही हुए— पर था वह निर्गुण।

७७

रक्त विंद ते उतिपति भयो। फुनि दस मास गर्भ में रह्यो ।।
अस्त रोम तुचा फुनि नाडी। उनि सभ हूं करि देह सवारी ।।
तांके नवि द्वार घरे बनाई[1]। दसिवा गुपत द्वार मेरे भाई ।।
गुपत द्वारा सोस मंझारी। सुनि ले हो रम रहियो मुरारी ।।
दोनों श्रवनी और सुनीजे। नासका गंध सुगंधे लीजे ।।
दोनों नेत्र धरे बनाई। मुषि दुआरा सुनहो मेरे भाई।।
मूलि द्वारा अविर बीचारो। इंद्री द्वारा रिदे जनि धारो ।।
अस्थन फुन रोम दो भए। होइ अतीत सोहंम पदि गए ।।
नावा द्वार नभ पछानो। इहि फुन पौना को अस्थानौ ।।
दसों द्वार परिसिद्ध बताई। नीके बोल कछु मिलन न पाई ।।
साईं दास इहि करो विचारा। सो जाने जो जानन हारा ।।
गुप्त द्वार को वाति सभ सुनि करि चित धरि लेय।
साईं दास संसा चूको हरि भजो रवि सुति त्रास नि देय ।।

७८

जवि आत्म तहा जाइ समाया। सुर्त निर्त सभ यगि विसराया ।।
अनिहदि सविद उठति जैकारा। निस वासर अनिभै झुनकारा ।।
देह सुर्त कछु रहनि न होय। ब्रह्म जोत सो जाय मिलोय ।।
नाना भांत वजंत्र जु वाजे। ताल मृदंगि झाझरी गाजे ।।
रह्यो विल्हाइ तहा जाय समाई। साईं दास कछु कहि न जाई ।।
सलोकु—श्रविन द्वार की बात सभ, सुनिए जनि परिधान।
कथा कीर्त्तन श्रविनी सुनो पूर्ण पद सुरि ज्ञान ।।

७९

श्रविन सुनो सुन हरि की बानी। कथा कीर्त्तन सुनो आनंद बानी ।।
भाउ प्रीति हरि जस सुन जानो। कर्म करों फल नाहन मानो ।।
प्रीति करो हरि हरि जस सुनही। गुर जनि बचिन रिदे पुनि धरिही ।।
भला बुरा फुन कर्म विचारा। श्रविन धारि जसि सुनित जैकारा ।।

---

१. देह के नवद्वारों का वर्णन। दसवें द्वार मे प्रभु हैं, इसे ब्रह्मरंध्र कहा है। इसे ही गुप्त द्वार कहा है।

साईंदास श्रवनन सुनि नीके। हरि जसु सुनो सुष चाहो जीके ।।
सलोकु–नैन वाति सभ भाषी ही, प्रेम लाहा सुनि लेह।
साईंदास दरिसन हरि का सभ माह है सुनि चित अविर न देह ।।

८०

नैन पसारि रूप हरि देषा। नैनन माह थके हरि लेषा ।।
नैन निर्ष चले मगि माही। वस्तु निर्ष जनि नैन लुभाही ।।
नैन निर्ष सकल विधि सूझे। वेद पढ़ति नैननि हर बूझे ।।
नैन निर्ष भला बुरा पछाने। नैन निर्ष हरि को जसु जाने ।।
साईंदास नैननि की बांनी। को जनि जाने ब्रह्म गियानी ।।
सलोकु–गुप्त श्रवनि नैनन कहे नासिका कहित विषआन।
साईंदास रे नर सुनि मन में धरो प्रेम प्रीति लेहो ठान ।।

८१

गंध सुगंध लेति ही रहे। तांका इहि विउहार जु इहे ।।
लेत सुगंध हर्ष बहु माने। आतम सुष परिसंन्न पछाने ।।
मानो विरिछ[1] मिलयो जलि धारा। हरिआ होत संगि ले परिवारा ।।
मानो कुस्म षिरचो मेरे भाई। हरिष वदिन तिन दीयो उघिराई ।।
गंध लेत बहु सुकिच करायो। और लेति तांपरि ठहिरायो ।।
कहा भआ जो ऐसा कीयो। अति सुगंध गंध तै लीयो ।।
साईंदास तै भाष सुनायो। प्रेम भाउ कछु नाह दुरायो ।।
सलोकु–सति गुरि नाम मंत्र दीयो[2], कीनो तिमर विनास।
साईंदास भौ चूका अनिभै भयो, होयो सहिज प्रकास ।।

८२

सति गुरि जबिही मंत्र द्रिडायो। सकिली मनि की भीत चुकायो ।।
जविही भीत चुकी मेरे भाई। दुभदा सहिजे दीयो हराई ।।
जवि ही दुभदा मिटि गई मनि ते। पांच दूत भागे तब तनि ते ।।
गए दूत नगर सुषु पायो। निर्भौ होय सभ लोकु बसायो ।।
गृह गृह माही मंगल गायो। मगिन भैया सुष सहज समायो ।।

---

१. विरिच्छ < वृक्ष।
२. साईंदास जी की मुक्ति—गुरुमंत्र द्वारा।

मुषि द्वारे हरि के गुनि गावे। हरि रस माता सदा भुभावे ।।
जो बोले सो अंवृत वांनी। मुष द्वारे हरि नामु विषानी ।।
हरि का नामु सदा मुष भाषो। प्रेम पिआला अंमृति चाषो ।।
असथन भविन ही रोम द्वारे। सोहं शबिद सदा उजिआरे ।।
नाभि दुआर में पविना रहे। सदा सदा हरि के गुन गहे ।।
मुषि भाषित जनि मुक्ता होवे। साईंदास सुष सागिर सोवे ।।
जवि इंद्री द्वार मै ठहिरते, काम भोगि सुष मान।
साईंदास तिरीआ अतर सभोगही बहु विध हो गलतान ।।

८३

जवि इंद्री मनि मथन करावे। होइ व्याकल सुध विसरावे ।।
मदि माता परि-धर्न[1] गिराई। सूझति माति पिता नहीं भाई ।।
गुर जनि वेद सिमृति विसरायो। मतिवारा मदि दिष्टी आयो ।।
नैनन माह भयो अंधआरा। भूलत विसिर ज्ञनि हारा ।।
प्रथिमे वचन सो दीयो विसराई। जवि मतिवारा होय विषु षाई ।।
हरि का भजनु तविही भुलानो। दारा सो चितु बहु विध मानो ।।
साईंदास हरि दीयों तजाई। रे सठि तै कछु समझ नि पाई ।।
लो०—मूल द्वारे आइयो सहज भयो मन माह।
साईंदास जोगि ध्यान जनि उलिटि परियो मनि माह ।।

८४

सहिजे मूल द्वारा सरिही। जो सरिही दुरगंध निकरिही ।।
जो कछु सहिजि माह होइ भाई। सहिजे सहज सहजि बनि आई ।।
सहिज समुद्रि ज्ञानि कहीजे। गुरि परिसाद राम रस पीजे ।।
एते गुन हरि ताह जो दीए। तांको कहा विसारो हीए ।।
निसवासरि तांको चितु दीजै। हरि सिमरन आलस नहीं कीजे ।।
कनिक कामिनी मैं उरिझायो। मनिमथ[2] सो हेत बढ़ायो ।।
मिथ्या रूप करि निहिचे जांनो। साच कहो करि मनि मैं आनो ।।

---

१. परिधर्न=पर स्त्री।

२. मनिमथ <मन्मथ=कामदेव (स्वर भक्ति)

आठ एक घरि ताक चडावो। दसिवा द्वार कपाट षुल्हावो ।।
विना नैन गुर सिष मनि ञीजै। गुरि प्रसादि आलस नहीं कीजै ।।
जो गुरि मार्ग नाह दिषाए। तौ लौ बात कहा सुध पाए ।।
जवि लगि दीपक करि नहीं होवे। तवि लगि वस्तु अगोचर षोवे ।।
गुर मंतर दीपक करि जानो[1]। बांको करि लै राहु पछानो ।।
जो गति आपनी कीआ लोडो। साईं दास तब भ्रम मृग मोडो ।।
जवि लग मनि सोधे नहीं, तबि लगि भ्रम करि जान ।।
साईं दास मृग पसु जो वनि मैं फिरै, चडँति नहीं निर्वान ।।

८५

जवि लगि मन सोझी नहीं पावे। तवि लगि मनि दह दिस भरमावे ।।
जवि लग सांध संग नहीं करे। तवि लग भ्रमता भ्रमता मरे ।।
जवि लगि हरि गुन नाहीं गावे। तवि लग मुक्त न कविहूं पावे ।।
जवि लग आत्म चीन्हे नाहीं। तवि लगि धृगजीविनि जगि माही ।।
जवि लगि तत्त नि रिदे वसावे। तवि लग मुघगि महादुषि पावे ।।
जवि ते तत्त सकल घटि जानो। साईं दास प्रभु अपुना मानो ।।
सलोकु—मूर्ष मनि अज्ञान तूं, हरि सिमरन चित धार।
साईं दास चडिते पदि निर्वानि मैं, प्रेम आदि वीचार ।।

८६

रे सठि मनि किउ समझ नि आवे। कहा जनिम तूं वादि गंवावे ।।
काहे मदि मतिवारा हूयो। विष्या फल मैं पच पच मूयो ।।
कहा हाथ कछु तुमरे आयो। जो हरि नामि रिदे विसरायो ।।
कहा भया विक्ष्या उरि भायो। कहा भया जो मान बधायो ।।
कहा भैया सिर जटा बधाई। कहा भआ जो मूंडि मुडाई ।।
कहा भयो मिरगान उढायो। कहा भया वनि षंड सिधायो ।।
कहा भओ मुष वेद बतायो। कहा भया जो जोग छनायो ।।
कहा भआ जो कान छिदायो। कहा भआ वाभूति चडायो ।।
कहा भयों प्रथिवीपति भयो। जु हरि को नाम नि मनि में लियो ।।
साईं दास सोई परिवान। गुरि का सविद घटि लये पछान ।।

---

१. गुरुमंत्र को दीपक की उपमा दी है।

रे मन हरि भजि लीजिए, तजीए मान गुमान।
साईदास प्रेम भावि सुष पाईए होइ न कविहूं हान॥

८७

हरि का नामु सदा चित धारो। गुनावादि हरि नाह विसारो॥
सुष सागिर हरि नामु ध्यावो। पर्म मुक्त गति तवि ही पावों॥
नामि निधान सदा सुषिदाई। रे जनि हरि का नामु सहाई॥
हरि प्रसादि सुष होवे तनि को। कलिपना मूल न व्यापे मनि को॥
अनिहदि नामु निधानि विहारी। सुषि सागिरि हरि हिरदे धारी॥
कौलापति दुषि नासन नामा। घटि घटि माह रह्यो विसरामा॥
साईं दास गोविंद गुनि गावो। प्रेम भाउ चित माह वसावो॥
मनिमथ जविही नाथयो, सहिज भयो मनि माह।
साईं दास तीन ताप संताप सभ चूके दुषि कछु नाह॥

८८

मनिमथि[1] जविही नैन निहारे। तीन ताप संताप निवारे॥
निर्ष रूप सहज मनि मानो। हर्ष माह सुष आनंदि जानो॥
प्रानि जीवि गोवर्धन धारी। पलि पलि छिनि छिनि में बलिहारी॥
सोहं सविद सदा धुन करति हो। अलिवरि ज्युं फुन[2] लुभद पडति हो॥
कुसम रूप[3] जवि नैन करति हो। हिरदे और न आन धरत हो॥
तांको धरि मस्तक गुर देवा। ताते प्रगिट भई जगि सेवा॥
सुरि नरि रिष मुन सुष जनि पायो। ताति काल दर्सन को आयो॥
दर्सन निर्ष भयों हैराना। अश्चर्ज[4] बाति नहीं जाति विषाना[5]॥
अगिम अगोचरि भाष सुनायो। जिन बूझआ तिन ही सुष पायो॥

---

१. मनिमथ <मन्मथ =यहां श्रीकृष्ण भगवान् के लिए आया है। श्रीमद्भागवत में भगवान् श्रीकृष्ण को काम का अवतार माना है।

२. फुन—वैसे इस ग्रन्थ में फुन शब्द पुनः के लिए आया है। पर यहां फुन अर्थ फुल्ल=पुष्प से है। सम्भावना है कि लिपिकार फुल्ल के स्थान पर 'फुन' लिख गया है।

३. कुसमरूप—यह शब्द भी भगवान् श्रीकृष्ण के लिए आया है।

४. अश्चर्ज <आश्चर्य।

५. बिपाना <व्याख्यान >बखान।

षेचरी[1] पद जांके मनि बसे। ग्रानि पदार्थ षिन मैं नसे ॥
ग्राप कहे कहा सुने न भाई। षेचरी पदि सो रह्यो विल्हाई ॥
जवि षेचरी पदि मनि माही लागा। ग्रानि पदार्थ तिन ते भागा ॥
समझति नाहीं क्या समझावे। साईंदास तत्त सविद विल्हावे ॥
हरिजनि[2] सोई भाषिए जिह घटि कपिट नि होय।
साईंदास जिह घटि कपिट न होवंही सदा सुषी नरि सोय ॥

८९

हरि जनि के मनि सोई भावे। ग्रापा तिग्रागे नीच[3] कहावे ॥
नीच कहावे तौ नौनिध पावे। जौ निध पावे सुष सहिज मिलावे ॥
सहिज मिलानो जवि ही भाई। नगिरी तसकरि[4] मूल नि पाई ॥
तसकरि तबिही त्यागे जाई। सतिगुर मिल जवि बूझ बुझाई ॥
ग्रंतिर सोध लीग्रा जवि तवि ही। ग्रति गंभीर राता जनि जबि ही ॥
संसा सोक व्यापे कछु नाहीं। वहु निध पाई सुष सहज मिलाही ॥
संसा सोग नि कबि हु पावे। जबि ते दुभदा मनि मिट जावे ॥
दुभिता चूकत है फुन वांकी। हरि संगि प्रीत लगी है जांकी ॥
हरि सो प्रीत ग्रधक जवि लाई। सभ सो ग्रपिनी जोत दिषाई ॥
जवि ही जोति मिले संग सभ ही। उलिटि पडो हरि होयो तबि ही ॥
साईंदास जिस ग्राप बुलायो। सुषि ग्रानंदि ग्रनंदि समायो ॥
लो०—ग्रविनी नाम निधान हरि, जिह सिमरनि गति होइ[5]।
साईंदास बिना नाम भगिवांन के ग्रौर नहीं है कोइ ॥

९०

सिमरो नामुनिधानि विहारी। कौलापति त्रिभवनि दातारी[6] ॥

---

१. खेचरीपद=ग्रविनाशीपद—जहां खे शून्य में रमण करने वाले मुक्ति शून्य में वास का ही नाम है। वहां ज्ञान की ग्रावश्यकता नहीं।
२. 'हरिजन' (प्रभु का भक्त) की परिभाषा उसका लक्षण दिया है।
३. नीच=नम्र।
४. तसकरि<तस्कर=चोर—काम, क्रोध, लोभ, मोह ग्रादि चोर हैं।
५. प्रभु स्मरण से ही गति (मुक्ति) मिल सकती है।
६. 'दातारा' शब्द यहां 'दाता' के ग्रर्थ में ग्राया है। 'दाता' √दा धातु से 'ता' कर्तृवाचक प्रत्यय (तृच्) से बना है। पंजाबी में इस तृच् कर्तृवाचक प्रत्यय के लिए 'ग्रारी' का प्रयोग मिलता है जैसे लिखारी (लेखक)।

पूरन नामु सुष देवन हारा। सकल सरूप ताहूं सिर भारा ।।
आपि एक अनेक दिषायो। जिन समझियो तिन आप लषायो ।।
अपिना आपि आप जिन लाक्ष्यो। हरि रस अमृत निज परिचाक्ष्यो ।।
हरि रस अमृत जिनही पीआ। तांको सति गुर क्रपा कर दीया ।।
सतिगुर क्रिपा ताहू धारे। रतन ज्ञानि जिन लीया विचारे ।।
जांके घटि मेय भयो उजिआरा। सो जनि प्रेम सो सदा षुमारा ।।
उजिआरा घटि ताहूं हूआ। जो नरि जवि ते जीवित मूआ[1] ।।
जीवित मूआ[2] सोई जानु। जिन ने मारा अपुना मानु ।।
अपिना मनूआ जिन ने मारा। सति गुरि मंत्रु रिदे विचारा ।।
साईं दास सहज घरि मांही। सिमरो हरि संताप मिटाहीं ।।

कुसम रूप सुष सहजि मे निर्षयो रूप अचंभ।
सांईं दास नैंन अंतिर निरषयो मानिस जनम दुर्लभ ।।

९१

मानिस जनिम दुरलंभ जो पायो। विन हर सिमरन वादि गवायो ।।
जवि लग कुसम रहित संगि वेला। तवि लगि होता रूप सुहेला ।।
वेल सो तोड डार जवि दीआ। औरि रूप निर्षत छिन लीआ[3] ।।
कुमलाना फिरि काम न आयो। डारि दीयों धरि राष मिलायो ।।
तैंसो रूपु मानस को भाई। पुंन्न कीए तै देहरी पाई ।।
इसि देहरी को सुर नरि ध्यावे। जतिन करै तौ भी नहीं पावे ।।
इहि प्रजोग हौ जतन करावे। देह पाई तै भगित कमावे ।।
रे सठि तै कछु मत्त[4] नि आवे। आवर दा सभ वादि गवावे ।।
सो समझे सो उलिटि पडीजे। साध संग मिल हरि जसु कीजे ।।
एहि समा फिर हाथ नि आवे। आलस करि करि जनमु गंवावे ।।
भजि मनि राम नाम सर्नाई। तिह प्रसादि दुष त्रासु ना कोई ।।
सिंमृति वेद पुराण सुनावे। समझि देष गुरि भाप सुनावे ।।

१. जीवित मूआ=जीते जी मरना साधक का लक्षण है।
२. यहां जीवित मूआ की परिभाषा दी गई है।
३. नश्वरता में कुसुम को उपमान चुना है।
४. मत्त<मति।

समझ देष मनि मैं जो कह्यो। तांते सत्त कछु अविर ना लह्यो ।।
उमिग उमिग जसि हरि का गावो। दुभदा मनि ते सकिल मिटावो ।।
जवि ते दुभधा मनि मिटि जाई। सहिज बैकुंठ सदा सुषि पाई ।।
साईंदास सिमरण हरिकारी[1]। और तिआगि हरि सर्न तिहारी ।।
सलोकु–प्रथिवीपति जवि होइयो कहा भयो मेरे मीत।
साईंदास जवि लगि राम ना जानयों कसो निर्मल चीति ।।

९२

कहा भया प्रथिवीपति भयो। जवि लगि राम नाम नहीं लयो ।।
सकिली प्रथिवी भई दुहाई। कहा भआ कहु मेरे भाई ।।
सकिल जगित ने सीसु निवायो। महाराज करि नामु बुलायो ।।
भांति भांति के महल उसारे। हाथी घोरे बहु विस्तारे ।।
सैना अधिक लै संगि फिराई। कनिक कामनी देष लुभाई ।।
अंति समै कछु संगि न जाई। माति पिता वनिता सुति भाई ।।
जवि रविसुति ले फांसी डारे। मुगदरि सेती सीसु प्रहारे ।।
रुदनु करे करि हाथ पछोरे। हा हा कर्त चलित नहीं जोरे ।।
तज ऐ कहा रहिआ सभ पाछे। संगि नि चलिति बिना गुन आछे ।।
बिनु भगिवान सकल विध वादि। साईंदास गोविंद करि याद ।।
सलोकु–निविली कर्म कमायो कहा भयो मेरे वीरि।
साईंदास जवि लगि मनि सोधे नहीं चंचल चपल गंभीरि ।।

९३

निविली कर्म कहा भयो करियो। मानि गुमानि रिदे मैं दीयो ।।
आपस को करि साध कहायो। हरि का नामु ना रिदे लिआयो ।।
जगति माह पसरी प्रभताई। महा कठन वहु जतन कमाई ।।
अंतिर बाहर आने धरी। कठन तपस्या साधन करी ।।
बाहरि अंतिर माही डारे। निवली करम कर ततिकारे ।।
इहि विध कीए मुक्त नहीं होवे। जवि लगि दुभदा मनि नहीं षोवे ।।
विन भगिवान सकिल विधवादि। साईंदास गोविंद करि यादि ।।

---

१. हरिकारी=हरि ब्रह्म (ईश्वर) बनाने वाला।

सलोकु—मूंड मुडाय कहा भयो जवि लगि मनि न मुंडाय।
साईंदास मनि मूंडे मुंड मुडीए इसिविध मूंड मुंडाय[1] ॥

९४

मूंड मुडाय कहा जु भयोही। जवि ते मनि न करोध गयोही ॥
मनि नहीं मूंड मुडायो। भेष बनाइ जगति दिषिलायो ॥
मूंडे मूंडे कहा कछु नाहीं। मनि मूंडे मूंड सहज मुंडाही ॥
वैरागी होवनि उठि धायो। मानो मृगि वनवासा पायो ॥
बनि मैं मिर्ग रहति कछु थोरे। कहा जाति वनि दौरे वौरे ॥
विनु भगिवान सकल विध वाद। साईंदास गोविंद करि याद ॥
सलोकु—कान पडाय कहा भयो सिंही उर न समाय।
षिथ उडाई कपट की जुगत न जोगि कमाय ॥

९५

कान पडाए दर्सन करियो। मनि नाहीं चीन्हे परियो ॥
नाथ नाथ मुष भाष सुनायो। अंताकर्न नि हेत वधायो ॥
भेष धरचो फुन कर्म विसारचो। नाथ नाथ फुन नाम चितारचो[2] ॥
मनि चाहै कछु और करे। परि घरि मूसन[3] सों चित धरै ॥
अनाहदि सविद न नादि बजायो। हीये मंत्र गुर नाह सुनायो ॥
षिथा क्षमा नि मनि पहिराई। कानि पडाय कहा भयो भाई ॥
पत्तर सहिज विचार नि कीनो। डंडा हाथ ज्ञानि नहीं लीनो ॥
भाउ वभूति अंग न लगाई। गुटिका पौन समाधि न लाई ॥
पंषिडी कला वबेक ना कीयों। मुकंद[4] परस सुष संहिजे दीयो ॥

---

१. **कबीर से मिलते जुलते विचार**—
केसन कहा बिगारिया जो मूंडे बार बार।
मन को कहां नहीं मूडिये जहां भरया विषय विकार ॥

२. पाखंडी साधुओं की यहां निन्दा की गई है। वे कान फड़वाते हैं। मन का वश नहीं करते। साधुओं का भेस धारण करते हैं। मुंह से नाथ नाथ कहते हैं। किन्तु मन में कुछ और ही सोचते रहते हैं। दूसरे घर चोरी करने की बात सोचते रहते हैं।

३. मूसन < मुष्णाति = चुराना।

४. मुकंद = श्रीकृष्ण—मुकंददास साईंदास जी के गुरु।

सोहं पदि की वाति जु पाई। इलिटि विचारचों आप सुझाई ॥
विन भगिवानि सकल विधि वादि। साईंदास करि गोविंद यादि ॥
सलोकु–केसि बधाए सीसि पर मनि ना बढ़ाई प्रीति।
कपिटि भक्त मनि मैं धरी धरचो नि हरि सो चीति ॥

९६

लिवि न लगाई केश बधाए। उभी भुजा करि जगि दिषलाए ॥
मोंन गहे मुष वचन न भाषी। करि पषंड अंन्न नाहीं चाषी ॥
दधि ले अहार फलाहर करिही। संकरि रूप परितक्ष जो धरिही ॥
रूप धारि जगि कों वस आने। मूर्ष जगि क्या उत्तर जाने ॥
निर्ष रूप हरि सकल लुभाए। बाकी मनि की वाति न पाए ॥
मुक्त न होत कपिट मन कीये। जवि लगि साच न धरया होये ॥
विन भगिवान सकल विधि वादि। साईंदास करि गोविंद यादि ॥
सलोकु–अगिम् निगम की बात सभ जान करो बीचार।
साईंदास मन में क्रोध नि राषीए मुक्त होत ततिकाल ॥

९७

अगिम निगम की बात वीचारो। करि बीचार रिदे नहीं धारो ॥
मुषि भाषे मनि ना ठहिरावे। वेदि बके वकि रिदे न लिआवे ॥
चतुर्परबीन आपस कों जाने। दूसरों को सरि आप नि माने ॥
कहा जो हम सरि कौन कहावे। मानि गुमान रिदे में ल्यावे ॥
जगि महि हमसर कौन सदावे। वेद पुरान सभ भाष सुनावे ॥
मानि महति मैं भइयों गलताना। रिदे विषे धरि मान गुमाना ॥
पंडति नामु कहाविन लागो। मानि महित के घरि अन्नरागो ॥
सूषम पडै कहै जग माही। अविगतिगत कछु कही नि जाही ॥
वेदि पडित ही भर्म भुलाही। निगिम वाति कछु रिदे वसीही ॥
वेदि कहित हरि भजन करीजे। तनि मनि अर्थ गोविंद के दीजै ॥
सर्व माह भगिवान विराजे। पसि विहंग मैं आप समाजे ॥
इहि विध तौ मनि माह न आने। आपस कों उत्तम करि जांने ॥
विनि भगिवान सकल विध वादि। साईंदास गोविंद करि यादि ॥

सलोकु–जती[1] नामु जगि मैं कहे इंद्री वस करि नाह।
सांईदास रूप कामिनी देष के आतम को भरिमाह ॥

९८

कामिनी रूपि जो निर्ष लुभाही। मिथ्या नाम सो जती कहाही ॥
मान महति जो वस नही आने। नामु जती मुषि झूठ वषाने ॥
द्रिढ करि राषे नहीं इंद्री तांई। कौन जुगत ते जती कहाही ॥
ध्रिग एह जनिमु विना हर वांनी। जवि लग अंध न होता ज्ञानी ॥
करि विवेक इंद्री वस करिही। गुरि का सबिदु षड्गु[2] ले लरिही ॥
विना सविद जो सती कहावे। जो झूठी मुष बात बतावे ॥
बिना भगिवान सकल विध वादि। साईंदास गोविंद करि यादि ॥

सलोकु–सुनिहो साधो प्रीत करि अंतर गति लिव लाय।
सांईदास प्रेम प्रवाह सदा वहे वहुविध नीके नाय ॥

९९

प्रेम प्रवाह वहे घटि मही। यामैं भेदु भेद कछु नाही ॥
समझि विचारि रिदे जो करिही। गुरि का सविद ले पंचन लरिही ॥
अनिभै पदि सो रहयो मिलाय। गुरि प्रसादि सदा गुनि गाय ॥
गुनि आगिर भगिवानि नहारे। साध संगि मिल सदा षुमारे ॥
नैननि माह षुमार सदाही। बिना षुमारी कविहू नाही ॥
नाम रता मतिवारा होय। बिन मदि पीते सुध मति षोय ॥
हरिरस माता जविही भयो। अनिरस तबि ही ते तजि दयों ॥
हरि रस माता और नि जांने। भाषे कहा जु नाम अघाने ॥
नाम अघाने भूष नि लागे। नाम अघाने दुभिदा तिआगे ॥
नामि रिदे जांके मनि बसे। सहिज सुमंडिल रसि मै रसे ॥
सांईदास सुष सागर माही। सदा सदा सुष सहिज समाही ॥

सलोकु–जो जो सरिनी साध जनि करिते तिआगि सभ माहि।
सांईदास जगि भीतिर सोभा मिले दरिगा होय परिवानु ॥

---

१. यति > जती यहां इसी जती की व्याख्या की है।
२. षड्गु = खड्ग = तलवार।

१००

सुनिहो साधो बात वीचारो। तसिकरि पंचा को परिहारो ॥
ब्रह्मि अग्नि मनि माह जरावो। दुभिदा मनि ते सकिल चुकावो ॥
आपि सहिज मिल आप लिषावहु। धर्न अकास आप मह लियावहु ॥
धरिनी को जलु अकासे धायो। सोहं पदि मै निज चितु लायो[१] ॥
संसा सोक सकल मिटाई। साधि संगि जवि होवे भाई ॥
बिन साधि संगि ज्ञानि नही पावे। बिन गुरि कैसे बूझ बुझावे ॥
विधि अंकर तविही प्रगिटाइयो। साध संगि सहिजे ही पायो ॥
जतिन कीए कछु होवति नाही। तटि तीर्थ चौसठ भरिमाही ॥
वीज बोय फल ऐसा कीजै। विना बीज फलु कैसा लीजै ॥
जौ लौ बीज न धरिनि वीजाई। कैसे फलि विनु बीज उपिजाई ॥
वीज बोइ फलु लीना भाई। विना बीज फलु ना उपिजाई ॥
ऐसे विध अंकरि की वांनी। विना अंकर क्या ब्रह्म पछानी ॥
ब्रह्म पछानी तवि ही जाई। ज्ञानि आंच लागे मेरे भाई ॥
ज्ञानी अंचि कैसे करि लागे। सुभ लगि मति अज्ञान तिआगे ॥
अगियान मति कैसे तजि दीजै। इकि नीके विचार करीजे ॥
भली भांति सुनिहो चितु लाई। बिना बीजि फल ना उपजाई ॥
कथा कीर्तन श्रविन सुनि धावहु। गृहि कुटंवि कार्ज विसरावहु ॥
दैआ धारि सेवा चित कीजे। मिहिनित करि काहू कछु दीजे ॥
हरि जनि वासु जहा सुनि पाई। विलम नि करीयो ततिषिन जाई[२] ॥
जहा साध मिल ज्ञानि विचारे। नाना विधि करि वाति उचारे ॥
श्रविनि धारि वाति सुनि लीजै। हरि रस रसना के सुष पीजे ॥
जो जो कहो मनि ठहिराई। समिझ विचार रिदे मै आई ॥
जवि सुगंध सभि हूं मै आई। भूल्यो आनि सुगंध प्रगिटाई ॥
ऐसे हरिजनि बचनि कहित है। जगित माहि फुनि कोउ लहित है ॥
जवि ते ज्ञान रिदे वसायो। अनेक वीचारि रिदे मै आयो ॥
सभि विधि को जवि जानन लागा। मिटि गियो तिमर भांन जवि जागा

---

१. यहां योग की युक्तियों का कूटात्मक वर्णन है।
२. यहां हरिकथा और हरिजन की सेवा के महत्त्व का वर्णन किया है।

रहिता रहिता सभ ते रहियो । गहिता गहिता जवि हरि को गहयो
हरि जी उलिटि दिषायो आप । भ्रमि तोरयो गुनि आगिर जाप ।।
पंचि दूत तवि बस करि लीने । अबुद्धि अज्ञान तिमर दूर कीने ।।
बिना ज्ञानि कछु करिन न पावे । थकित होय चरिनी लपिटावे ।।
सूरा होय कायां गडि जीते । साधि संगि मिल वस गति कीते ।।
पायो ब्रह्म लष गति भाई । उनिमनी माह रहियो समाई ।।
अपिना आपु जो दीयो विसारी । सहिज समाध जो लषे मुरारी ।।
सांईदास जननि सो जाने । गुरमुषु लषे लष ब्रह्म पछाने ।।
दो०—जानि बूझ बूझे सकल कहि जो कहा नि जाइ ।
सांईदास नैन विसम रसना थकित पगि हारे अलिसाय ।।

१०१

जानो कैसे भाष सुनावो । कहो तवी जो कहिना पावो ।।
जिहि नैनन करि रूप निहारा । चिहनि चक्र सभ घटि मै धारा ।।
रूप रेष जो कछु सो भाषे । अविगति गति बहु वाही लाषे ।।
सो तो नैन रहे विसमाय । अश्चर्जही कछु कहया नि जाय ।।
अदिभुति वाति निरिष विसमाय । इहि प्रजोग विसमाद समाय ।।
जो नैननि विसमा पर होहै । नैन निर्ष रसना जो कहियो है ।।
रसना थक्त भई अधिकाई । कही नि जाय प्रभ की प्रभिताई ।।
मंडिल मगिन भयौ नही भाषे । अंति समे विधि रसना लाषे ।।
नैनि निर्ष रसना उचिरावे । विन रसना कहा भाष सुनावे ।।
जविही नैन रहे अलिसाई । पगि थकत जो रहआ उरिझाई ।।
रसना कहा जो भाष सुनाई । उनि को कछु पलु ना विसराई ।।
निश्चल घरि जवि वासा पायो । आविन जान सकलि विसिराओ ।।
निर्भौ नगिरी मै पायो वासा । चूक गियो रवि सुति को त्रासा ।।
मगिन भयो निर्भे पुर माही । परिस जोति मंडल अलिसाही ।।
सहिजि सुमंडिल जाय अलिसाना । भरिम चूको मिटयो आविन जाना
बसे तहा अनिभै पुर माही । मनि मै त्रास त्रास को नाही ।।
त्रय गुनि ते जो भआ निआरा[1] । अनिभै परस्यो भयो उजिआरा ।।

१. तीन गुणों से रहित होने पर ही मुक्ति । गीता में श्रीकृष्णजी ने भी यही कहा है—'निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन' २।४५ ।

अभै किंडरी को जु वजावहु। प्रेम भाव फिर आप जसु गावहु ॥
मतिवारा सुध वुध नही काई। कहा भरिमु जवि आपि दिषाई ॥
निर्ष आप सकिल भ्रमु त्यागे। सुषि मंडलि आनंदि मै जागे ॥
हर्ष माह जनि आनंद पायो। निजि घरि मै जवि जाय समायो ॥
रहियो समाइ सहिज घरि माही। सहिज समाध सदा मुक्ताही ॥
साईं दास ईसरि जो जांने। गुरि प्रतीति निहिचे मनि आने ॥
दो०—तरिवरि सो फलु परिजयो तरिवरि जाइ समाय।
शविद आतिम परिकासीए आतम शविद मिलाय ॥

१०२

तरिवरि बीजि मै जाइ समाया। तरिवरि सो फुन फलु उपिजाया ॥
अज्ञानि तजे सो रहे मिलाय। तत्त ज्ञान सो रहे समाय ॥
रैन दिनस एक करि जाने। अरिस परिस जे हित करि माने ॥
जैसे शिवि शक्त मिल रहे। तां मै अंतिरि कौना कहे ॥
ज्ञानि विज्ञानि एक घरि माही। दीपक जोति बसे सभ माही ॥
राम रमियो ऐसे मेरे भाई। सभ मै अपुनी जोति दिषाई ॥
कहा ज्ञानि प्रकास भयो है। वही निकटि निकटि करि गहियो है ॥
समिता उपिज रही घटि तांको। निर्ष आपि समिझयो हरि जांको ॥
ताहू गुरि मिल अलष लषायो। सांईदास सहिज घरि आयो ॥
दो०—अटि पटी वाति अपारि है अटि पटि होवे जान।
साईं दास मतिवारा मुष जो रहे विन निर्षे परिवान ॥

१०३

अटिपटी वाति अटि पटी होई[1]। इसि अटि पटी को बूझे कोई ॥
नगिर वावरा लोकु सुजान। कारजि करे सहज सुष मान ॥
कविहूं नगिरी दिष्टि न परिही। कविहूं तरिवरि जिउ करि फरिही ॥
देष रूप रहियो उरिझाइ। विन पगि पहुंचे सो पहुंचाई ॥
जो जा बसे फुनि निकिसे नाही। वाविरा होत रहित सुध नाहीं ॥
आविन जाविन ते वहु रहे। निरिभौ नगिरी निज घरि अहे ॥

---

१. कूटात्मक बातें यहां कही गई हैं। यौगिक प्रक्रिया को बताने के लिए इस प्रकार कूट बातें सभी संत कवियो ने कही है।

मनि औरे रसना ठहिरानी। निरिषति बिना नैनिन हरि वानी ॥
कोटि सुन्न नगर अदिभुत होई। कहा कहो अविगति गति होई ॥
काचा कोटु दुआरे दस जांके। पांचि भए रषिवारे तांके ॥
रहित पंचीस पांच के संगी। उमिग अमी सदा मन रंगी ॥
सो लाषाई देह दुआरे। चकिर बाउरा सहित सवारे ॥
बाविन किगुरा है तिस घरि के। तसकरि फिरते निस दिन डरिते ॥
वसित लोक करि पगि मुषि नाही। चिहिन चक्र ते वाहर आही ॥
रसना तास बासि कछु नाहो। रूप रेष चिहिन अलिसाही ॥
करित कहा फुनि रहन न होई। आपे हरि आपे है सोई ॥
सांईदास गूंगा जो भाषे। विन भगिवानि गति कोई नि लाषे ॥

नगिरी के विवहार सुनु विसम होति मनि माह।
सांईदास रहित अनंदि विनोदि मै दुभदा ते अलिसाव॥

आनंद सदा कछु नि वियोगा। पर्म वसति सुषि आनंदि लोका ॥
आप आपि इनिही कछु पाया। सुति दारा अति बंधन माया ॥
षांन पान कछु लेन न देना। नाहो अविगुन नाही गुने बषेना ॥
ना कछु रूप सरूप अरेषा। ना कछु चिहन चक्र तहा देषा ॥
ना कछु मीरि मलक सुलिताना। ना कछु व्रह्म ना पौनि धियाना ॥
ना कछु निर्मल मैल पछाना। ना कछु ब्रह्म ज्ञान ध्याना ॥
ना कछु धरिन अकास दिषावे। रवि ससि कछु दिष्टी नहीं आवे ॥
ना सुगंध गंध तहा आही। ना मुष बको जो आष सुनाही ॥
ना आत्म परिमात्म कोई। ना कोई वेद उपारजि होई ॥
नाह पदिमनी संकर विष्णु। नाही सीत तहां कछु न उष्णु ॥
सांईदास तहा जो कोई गयो। आपा आपु सकल तजि दयो ॥

दो०—बसे सहिज अनंद मै बिसिर्यो दूजा भाउ[1]।
सांईदास आपे मिल आपे भयो कछु कौतिक कह्यो न जाय ॥

---

१. ब्रह्म प्राप्ति की अवस्था का यहां वर्णन है। वस्तुतः वहां विरुद्ध धर्मों का प्रभाव है। इस बात को साईंदास जी ने इस रूप में कहा है कि—एक कहे तो होवे दूया—(एक कहूं वे दो हैं) दोय होय तां एक बखानो। इसलिए वे कह उठे—"दो एको एको दुय कहो" (दोनों एक हैं और एक ही दो हैं) वस्तुतः ब्रह्मजीव का अभेद या भेद कहना अति कठिन अतः—"ना कछु कहिया ना भाष्या जावे।"

१०४

अंभ मिले क्या कहे कहावे। तति सति सम करि रहे रहावे ॥
पौनि मिले पौन हो सोई। माटी मिल माटी ही होई ॥
जागृति होवे मिल जागृत हूआ। एक कहे तो होवे दूया ॥
दोय होइ तां एक बषानो। एक कही ता दूजा जानो ॥
दो एको एको दुय कहो। तौ दूजा इसि माही लहो ॥
जो नही कहो तो अति बौरावो। जो मुष कहो तो कहि न आवो ॥
ताते एह भला मनि आवे। ना कछु कहिआ ना भाष्या जावे ॥
होइ रहियो विसमादि तिदाही। निरिषत आप अलिसाना जाही ॥
सुनिन वकिन ते भयों निआरा। मिटी आपि जवि कीयो पसारा ॥
परिस रह्यो द्रगि लागे वाही। कहो अचरज जिह नाही ॥
सांईदास कहा मुष भाषे। आप लषो लषि आपा लाषे ॥
दो०—कहिन सुनिन गुरु है कहा कहेगौ कोय।
सांईदास हर भजि भर्म चित टारीए जो कछु होय सु होइ ॥

१०५

हरि ते विना न कोइ सहाई। कहा कहो गति कही नि जाई ॥
तुम सभ विध विध राषनहारे। अघि[1] तोरत करि देत सुषारे ॥
हौ मतिहीनि सर्न जो आयो। पतित उधारन विरद सुनायो ॥
गही ओटि रिदे अति भारी। तुम किरिपा गति होइ हमारी ॥
भुजा गहे की लाजि परति है। निस दिन सेवक दीन करति है ॥
होय क्रपाल क्रपानिध धारहु। आपुना जान चित नाह विसारहु ॥
जिन अपिना आपि आपु तराना। तिन को विनती न दरो भुलाना ॥
जो टारो जनु टरे न दरि ते। कहा कहो होया प्रति घरि ते ॥
दीनि दियाल क्रपाल दिआला। करि किरिपा जन ताह सभाला ॥
सांईदास जो कछु हरि भावे। वेग करौ तौ किउ उकिलावे ॥
सलोकु—अपिने नाम की लाजि है पतित उधारन हरिनाम।
साईंदास निसवासरि छिन पल घडी सिमरो आठो जाम ॥

---

१. अघि < अघ = पाप।

१०६

तुमि विन कहा कौनि गुनि आगिर। त्रिभवनि नाइकि सभि विधि आगर
उत्तम मधम्य नामु तिहारा। सकिल सुरि नरि रिदे जनि धारा ॥
विगिसित आत्म हरि गुनि गाई। साध संगि मिल आनंदि पाई ॥
गुरि किरिपा ते साध संगु पायो। पावित ही जसु वहु मुक्तायो ॥
सुने वेद जो भाष सुनायो। जिनि सुनियो तिनही जसु गाइयो ॥
जनि किरपा ततिकाल करीजे। किरि किरपा अधिक नामु जनि दीजै
आठ जाम जपि हरि को नामु। औरि नही है हम कछु काम ॥
तुमरी भगित होय चित माही। विष्याबुध हम मति विसराही ॥
दीनि वचिन हमरा सुणि जीजै। सांईदास हरि गुन मन दीजै ॥
दीन दियाल समरथ हो तुम जाचक सभ को।
सांईदास तुम जाचक परिवान है जिह घटि परिगटि होय ॥

१०७

हे केशवि हे किरपाल, हे ईशनि ईश।
हे दियाल तूं दैया करि, जगि जीवनि जगिदीस ॥
तुझे छाडि कांसो कहो औरि नि कोई थाउ।
तू दाता सभ यगित का, सभ मै तेरो नाउ ॥
कौनि मात्र मै कीटकी हौं किन कीटो माह।
केते दुआरे रिष मुनी सिध साध फल माह ॥
भागीं हरि दरि पाईए, विन भागां कछु नाह।
भावी भाणे विच करे, तुझ भावे सोई करेह ॥
मुक्ति ना पावे नाम विनु ते तटि तीर्थ भरिमाह।
सांईदास जे प्रभ किरपाल होइ ता पतित भी मुक्ते जांह ॥

इति श्री बाबा सांईदास जी विचिरते[1] ज्ञान रतिन संपूर्ण सुभं भवित

---

१. विचिरते—यहां लिपिकार का दोष—शब्द विरचते होना चाहिए।

श्री:

ਉਂ सति सरूप बाबा सांईदास जी नम:

वारि श्री भागिवत की।

रागु असाविरो

कई जुगि रह्यो ध्यानि मो, कई जुग उदिम कीव।
सांईदास जिविही किवही वसरचो, निश्चे जानो जीव ॥

पौड़ी—१

जुगो जुगंतिर वरित्या हरि वैठा धुंधुकारे।
तवि सूरजु चन्दु न होता नारंजणु कंमु सवारे॥
नाभि कौल ब्रह्मा कीआ, तैं बैठा वेदु वीचारे।
ब्रहिमंडि चतुर्दस रचिआ, फोडि फोडि कीआ निआरे॥
धर्त अकास विछोडि के सिरि कूर्म दे धरि धारे।
सुति दलां दलि साजआ, वनराइ अठारा भारे॥
नौ षंड कीति मेदनी, सति दीपि तहा समिसारे।
सिंध सते ऊतपिजआ, बंध पाहन ते षीरि षारे॥
वर्न विहीनी साजीआ महिमे ऊच संसारे।
सूर्जु चंदु उडिगिने दुइ दीप करे आधीआरे॥
जाती चारि उपाईयो सूद्रि बंसि ब्रह्म षतीआरे।
इति विधि जगुतु वणाइआ पुनु पापु कीआ विवहारे॥
कंसराइ किस लषी अनरूपु अपारे।

दोहिडा—

ध्रिति वेद बांनरिपु ले चल्यो निर्भौ तुमि निरीकारि।
सनिमुष भूझोऊ भेकरि जगपति करी पुकारि॥

पौड़ी—२

दैतु होया अविलावली, षसि लै ङा[1] वेदु सकारे।
ओंकारि दरिगा[2] जगिपति सो ब्रह्मा जाइ पुकारे॥

---

१. ङा=गया।
२. दरिगा<दरिगाह।

मेरा प्रभु संति उधारण आविसी औतारि आवे दसि वारे।
प्रिथिमे होया मछ रूपु दैतु पकड सुमुद्र मझारे॥
वेदि चारि ले आया धीरिजि ब्रह्म धारे।
कूर्मि दा रूपु धारि के मधि कैटे दैत संघारे॥
दैतु मनोरथु वेद उनु वैराहु कीआ दडाले।
नारिसिंघ दा रूपु धारि के हरिनाकसि नषी विडारे॥
रसि वावनु विध दउन परिसराम सहस्रे मारे।
लंकि त्रिकूटी त्रोडीआ वंधि पाहन सागिर तारे॥
दसि सिरि रावणु काटियो नभौर छेदउनि न संघारे।
कंसिराइ सो वेला मथरि[1] मझारे॥

दो०—याहि भ्रम भाई भाई डगि मगि डोलत चीत।
कहा कहो मै क्रष्ण जी तुम सभना हो मीति॥

पौड़ी—३

संगि लीए सभ देवते हरि दर्गा धरि[2] उकिलावे।
वंदी वधे देवते तुझि वांझो कौण छुडावे॥
आसा नींद न सुत्या उसारी रैनि विहावे।
समिझे ना सिमिझाआ मनि कह्या नाहि सुषावे॥
कृष्ण जी कंस इही कर्म कमावे।

दो०—धीरजु धारो जगिपती सुरि संगि कर्त वीचारि।
सांईदास प्रिथमें हरि पहि जा वसुधा करि पुकारि॥

पौड़ी—४

मुक्ति पुरो अविलावली मथुरा पुरि है कंसु राजा।
वध्या वली[3] न जाणदा मनि माणे करे सु काजा॥
वंदि पिवाए देवते असुरा दा करे निवाजा।
सुरि बझनि दैत मनीअन कंसराइ अवेही साजा॥
विणाहु अयो कंस राजा॥

---

१. मथरि <मथुरा।
२. धरि=पृथ्वी।
३. वध्या वली न जाणदा—कंस बला है। उसे वध्य अवध्य का कोई ध्यान नहीं है। इसलिए मनमानी कर रहा है।

दो०—अभिमानी अति गर्व महि वहु दुषि देव सहाइ।
गर्व प्रहारी सांईदास सिर परि सूझत नाह ॥

पौड़ी—५

मुक्ति पुरी अविलावली अभिमान भरिया हंकारी।
जपु तरिपण अरि दान पुनु हरि भग्ति सुदैत विसारी ॥
वेद न सुणता भागवत कथा पंडति कहिनि वीचारी।
नेमि धरिम न जाणिही नही वर्तु रहे निराहारी ॥
नर्क स्वर्ग नही जाणदा अहिमेउ करे धरि धारी।
वेटा उगिरिसैण दा कंसिराइ वडा अविचारी ॥
पापु कमावे पैसवे सिरि सुझु सुनाह मुरारी।
कंसराइ दहिसिर उतो तेरी वारी ॥

दो०—कहियो क्रिष्ण वसुधा सुनो जो मै कहो सुनाइ।
मुक्त करो सुरि सकल की असुरनि मारि चुकाइ ॥

पौड़ी—६

हरि के सेवक जेतने सभ कंस राजे डरि पाए।
वसुधरीआ भारी भई सो भारु न सक चाए ॥
ने वि विजीरो कोई कंस राजा समिझाए।
कंसु राजा मथुरा पुरी जुधि षेमे ताणावाए ॥
वंन्ह ल्यावेआ किआ असुरेरा जो धावाई।
द्रोही राजे कंसि दी झण जा क्रोडि सवाए ॥
गहि भरिआ राजु पूरआ चिति अंदिर गर्वु हढाए।
गहवहि ले रावणु ज्ञा अभिमानी सीस कटाए ॥
कंसराइ दिन तेरे भी षोहे आए।

दो०—दीनानाथ दिआल प्रभ दुषि दूर्कनि विसवास।
औगिन मेटे गुनि करे पूर्न गुरि साईंदास ॥

पौड़ी—७

हरि कहिआ धर्ती सुनो इकु केहा बचुनु हमारा।
तेरा भारु उतारिसा सो न्याउ करी तुम्हारा ॥
सभ छिडाई देवते जो वंदि परे वीचारा।
उदिर जु आवो देविकी नंदग्रामु निवासु हमारा ॥

सुषि न सवियो कंसराइ सिरि सुझुस वधा षारा।
सो ऐश्रा वचुन हमारा ॥

दो०—इहि मित रची सकलपति सुरि संगि कीयो वीचार।
निश्चो मारत कंस को भूमि उतारनि भारु॥

पौड़ी—८

ठाकुर कीनी श्राग्या जदि श्रादि कश्राहे दोऊ।
लछमनि दुर्गा सदयोने कंसमारनि नू नरिषेउ॥
जो जो श्राहे देवते बंसि जादिव जनम सुभेउ।
प्रथिमे जनिमश्रा देवकी संकर्षण नामु सुचेतु॥
फिर उदिर समाणा रोहणी वलिभद्र महा वलिदेउ।
दुरिगा उदिर जिसौद के सो कन्या नंदि गृहि सेउ॥
श्रापि श्रावे प्रभु देवकी सो श्रावित नाथु सुचेउ।
ठाकुरि ठाटु रचाइश्रा कंसि मारिनि नू निरिषेउ॥
राया श्रौतार श्राई सभ देउ॥

दो०—विध संजोग श्रंकर मिले जो कछु होवनि हारि।
सांईदास मंगल देविकी-वासिदेव बहु तुम कहो वीचार॥

पौड़ी—९

वीवाह चलाई वासदेव सा वेटी सूरि सैनाणी।
नालि चलाया कंसिराइ बीरुय्या राषविरि कराणी॥
मथुरा मंझे जां ज्ञा कंसि गगिनो सुनीयो सुवांणी।
वाणी सुण के कंसराइ करि धूह लई करिमाणी[1]॥
क्रोध वहुति ले चलश्रा धोण कटिन देविकी श्राणी।
श्ररिदासी करे सुवासदेउ देवकी षरी धमाणी॥
तू किउ क्रपियो कंसराइ इकि देह विषानी सानी।
उदिरि जु श्रावे देवकी सो षंडे देह कंसानी॥
कंसा वनिता मारी नाह जसु क्या वजे जगत्र कहानी।
प्रिथमे होवे देविकी सो देवांगा तै श्राणी॥

---

१. करिमाणी=किरपाण (तलवार)

दो०—वालु भश्रा वसुदेव के वचुनु वीषारियो नाथ।
श्रति उछंगि उरि मै धरियो दीयो कंस के हाथ॥

पौड़ी—१०

प्रिथमे जनिमश्रा देवकी सो कंसे श्रान दितोसु।
श्रनंदु होया कंसराइ हसि बालक सो छडियोसु॥
कुछिड करि के वासदेवि सो बालक घरि षडियोसु।
तिति ही नार्दु श्राया कंस श्रासणि श्राइ बैठोसु॥
नार्द शास्त्रु सोध के सभ कंसे जोगु दितोसु।
उदिर जु श्रावे देवकी रिपु तेरा राजु जितयोसु॥
वचुनु गवायोसु श्रापणा वालु मारियोसु।
चित धरियोसु कंसराइ तिति वेले विणाहु थीयोसु॥

दो०—जो कछु भाणा श्राजु तै इहि पाछे कह्यो वीचारु।
मंदि ठाढे ब्रह्मसुति कह्यो वेद बीचारि॥

पौड़ी—११

भौ ऊंचे मथुरापुरी चडि बोले जोइ सुसारा।
पंडति पूरा सास्त्री दे जो इसदे वीचारा॥
देवां कुल ले श्राया वासुदेउ तितेही बारा।
उदिर जु श्रावे देवकी कंसराय षिकाल तुमारा॥
सुणि कंसे होई सारा॥

दो०—निगम वचिन तुम दिज कहा कंस पूछे ततकाल।
जो कुछु होसी सो कहो जित विध मारो वाल॥
बीचारि वचिनि श्रबि कहें श्रष्टि गर्भु रिपु ताहु।
सांईदास धर्नी वंपनपति कहो जनिमे मारो जाहु॥

पौड़ी—१२

सारि जु होई कंस नू सभ पंडति घरी सदाए॥
सास्त्र सोधे पंडितो सभ पुस्तकि सुध पाए॥
चारे वेद पुकारते दिन तेरे मंदे श्राए।
राउ षरे रों रोहया वासिदेव देबिकी वंदी पाए॥
नौ दरिवाजे रास कर भैण भुणुह्या ढकाए।
आजु बुरा कीश्रा कंसराए॥

दो०—वासुदेव अरि देउकी जो गरास होई वंदसालि।
बालक जंमनि जोति जे सो कंसु मरे दरिहालि॥

पौड़ी—१३

पापी मारे पढि नाल हरि करे नही प्रतिपाल।
वसुधरीआ भारी भई हरि होवो तुसी दिआल॥
आउ कंस देषय काल॥

दो०—जो जो पाछे सुषि दीआ देव भूम महाराजि।
सांईदास तुम दुषि निवारन संत को राषु विर्द की लाजि॥

पौड़ी—१४

अधी राती अष्टमी तिति वेले रोहण सारी।
तिति ही वेले आया यादिव वंस मुकंदि मुरारी॥
आवित ही विरधा भए मनि मोहनि लील्हा धारी।
पूछन लागी देवकी हमि है कौन भाग विहारी॥
तुमरा दर्सुनु पाआ हम पूर्व भगत संभारी।
दरिवाजे मुक्ते होहिगे सभ सुर्त षोई पतिहारी॥
जमिना होसी विमिल जलु हरि चर्नी लागनिहारी।
तवि जमुना जलु षंडि सी जलु वीथनि देसी सारी॥
दुर्गा उदिर जसौद के सौ कंन्या आदि कुआरी।
मुझि गोकल ले जाइयो ले आयो तुम हंकारी॥
हौ बालक दा रूपु धारिसा पीतंविर चक्र पसारी।
मति भर्म भुलाने होइ जाहु वासुदेउ देवकी है महतारी॥
सुणु नंदान सुण देवकी इउ चितवति वाति हमारी॥
राया इउ बोल्यो मुषो मुरारी॥

दो०—याहि वचिन मोहनि कहे इहि राषो चीति।
साईंदास बालरूप बपु धारचा प्रगिटि भए जगिदीसि॥

पौड़ी—१५

देवकी सिधा वासदेउ इकु केहा कहे वीचारा।
देंवकी नविही बैठे पहिरू नविही चडे किवाड़ा॥
लषनि असा जाधां कंसराइ जो देवन सारा राह उषरे रो रोहीये।
उठि पौनी वहुति त्रिकारा वसुदेव सिधा देवकी इकु केहा कहे वीचारा॥

एहनादे की हथि है एह आप लीआ औतार।
सो प्रभु वालुक जनिम्या सभि संति उधारिण हारा॥
सो प्रभु बालुकु जनिम्या बैकुंठ भए जैकारा।
सो प्रभु वालुक जनिम्या त्रैलोकि करे सुषारा॥
मधिवनि इसि ले जाहु तूं सुण कै सवचिन हमारा।
राया बंदि इसे दी परिकारा॥

दो०—कंति न भूलो याह मतु ले चलु सारंग पान।
साईदास छूटे नहीं किवारि जवि वहु तुम वंदि मै आनि॥

पौड़ी—१६

डरिदा जेहा वासुदेउ लै चल्या सारंगिपान।
दरिवाजे मुक्ते होहगे सभ पाहर सौंदे जांन॥
मथुरा मझे जा ग्या मनि सुषि कीनो तितथान।
बूंद नि परिती स्याविरे जलु वर्षनि चारि इंद्रानि॥
सेसु सहंसि फुनि तानि के सिष ऊपरि रहहा तान।
जाइ पहूता जमिनि तटि जलि देष डरिय भैमान॥
फेरि अपुठा चल्या सिंध पडो सुति तिनै दीनो दान।
जमिना आइ मगु धारिआ ले जाहो गुणानिधानि॥
जाइ पहूता नंदि ग्राम दे बालक लीनी कानि।
राया संग हलधरि ते सारंगपान॥

दो०—घोषि वचन सुनि लाल के चले देवि पगि मोरि।
साईदास गोदि पसारे देवकी रुदनि करे करि जोरि॥

पौड़ी—१७

कुछडि करि के कंन्या वसुदेव जु दई दिषाई।
जमिना के तटि आया फिर मगु दीआ जमिनाई॥
दरिवाजे तबि ही भए फिरि पाहरुअ सुध आई।
रोवणि लागी जु कंनआ जवि देविकी कुछडि आई॥
पुछणि लगे पाहरू क्या वालु भया रे भाई।
है इजी होई कंनआ वसुदेव जा षविर सुणाई॥
षविरि दिती कंसराय नूं कंसु तदि षडिआ आई।
क्या वालु भआ रे भाई॥

सलोकु—आनंदु चित सभ कंस मनि प्रगिट भए जादोराइ।
सांईदास वासदेव अरि देवकी सुषि सो नींद वढाय ॥

पौड़ी—१८

हथि षंडा केसी षिलरी वंदि साले कंसु आआ।
आइ मिल्या वसुदेवि देवकी अभिमानी अंदिर अभडवाआ ॥
अरिदासी करे सु देवकी वडि राजे कंसे राआ।
भाई मुझ को दीजै दक्षणा इहि कंन्या करों न घाआ[1] ॥
षसिलई कंस कंनिआ अपिराधी पापु कमाया।
किसे थो छुडिक जाह कंन्या संजोगा वचुनु सुखाया ॥
रिपु तेरा गोकल आया ॥

दो०—कंस मानु तवि हारिया जवि सुनियोसु गोकल वाल।
साईंदास वासदेउ अरि देवकी तुम बचो हमारे काल ॥

पौड़ी—१९

छुडिक गई जवि कंनआ कंसि चुका माया मोह।
कंसि पाई गलि पगिडी अपिराधी हों ताउोहु ॥
कंसि कटाईआ वेडीआ लोहा चूगर कटे लोहु।
राया बगवंते कीया वछोहु ॥

सलोकु—आवितीर जदेवंस भगवान भूति भवानहं।
क्रिता न ज्ञान भरिमान तां नहं वेद विचरिते ॥

पौड़ी—२०

बधाई बजी नंदि के।
वेद चारो अनंद थीएन, हरिषे होए देवते ॥
संति साधू जसु करेन, जतु सतीआ अरु सिध्य साध
ते बैठे कृष्न जपेन।
देषनि सभ महूर्ती मुनि अषे द्वादस एन ॥
ब्रह्मा विष्णु महान सुषु सो बैठे वेदि ढूंढेन।
सुरिपति सरिण इंद्रापुरी स्याम सुंदिर नू चौर ढुलेन ॥
नार्दि किंनरि संगती षटि दर्सन रागु करेन।
सरि वंदिर अरि करि रवाब जसुमंडल वहुति वरणेन ॥

---

१. घात<घाआ।

ढोल ददामे सरा नालि सो भेरी धू लाहेन।
किंग मृदंग उपंगि संगि सणि अंबृती ताल वजेन ॥
नारी मंगल गाइआ धनि ते बालक संगि नचेन।
हरिष होए नंदिराइ षटि दर्सन धनु षरिचेन ॥
नंदि जिसौदे वसुदेव देविकी अनंदि वारि थीएन।
वधाई क्रष्न दी सहिज सुणेन ॥

दो०—अभिमानी अति गर्वमै वहु दुषि देव सहाइ।
गर्वप्रहारी सांईदास सिरि परि सूझति नाह ॥

पौड़ी—२१

सैना सभ सदाय कै कंसराइ संमूरति सारे।
चंगे चंगे जोध सभ ते आइ बैठे मतिआरे ॥
कंसि राजा सैना सिघा मुषि वचनु कहे विच प्यारे।
सभना आषे कंसराइ इको वालिक नूं जाइ मारे ॥
तिसि हौ भला निवाजिसा ठौरि दूजी राज हमारे।
तेही गला होईआ जु चारे वेदि पुकारे ॥
कंस मते सुणे परिवारे ॥

दो०—गर्वु छाडि सभु कंस जी उहु गर्व प्रहारिन हारि।
उग्रसैण मतु भाष्यो तुम मनि मै करो वीचारि ॥

पौड़ी—२२

कंसा आयो सुझेउोकडिता तिसि नाल नि अडियो जाइ।
जरेसी मुचुविणाहआ मारे सी चढिदाइ ॥
चारे वेद पुकारिदे हरि मथुरा लैसी आइ।
कंसा तेये राज नूं घुणु लगा षादा जाइ ॥
राया सुष लोढे ता वंदि छडाय ॥

दो०—जो मनि मनिसा मानीए जो माने मनिसा होय।
साईंदास कौल कंडारी ना थीए तवि सुषु कैसा होय ॥

पौड़ी—२३

कंसा मनि मति जेही चेतिए सुषु तेहो जेहा होवे।
तिवेहा ही चलु पाईए जिवे हा वीरजु वोवे ॥

अषी वेषनि चलीए पै मरिए टिबे टोए।
चंगी मंदी ले वासिना सुण लैये विचहु लये॥
दुरिगंध मंदी बुरी वासुना चंग चंदन चोए।
जो विहु षाए जाण के विणाहु सिरे परि होवे॥
पिछले कंम विणाह के अभमानी राजनूं रोवे।
कंसराइ पछुताण कछु नि होवे॥

दो०—गर्व छाडि सभ कंस जी उहु गर्व प्रहारन हरि।
उग्रसैन मतु भाक्ष तुम मनि मै करो वीचारि॥
जिउ जानो तिव ही करो जित कित सिमरण सारि।
सांईदास नाम हीनि गुन वाहरा ध्रिगु जीविन संसारि॥

पौड़ी—२४

सांईदास सुणाया वीचारु।
सुणेद्या करिणा कला जहा जो वाहिरा भुजि सागिरि जाइ नि तर्नी॥
जो ममता मारे मति देसो क्रोधु नही चितु धर्णी।
सुता जाइ नि मारीए जो आइ पवे भजि सर्णी॥
जे पिउ होवे देवणा पुत्रि सिरे परि आवे भर्णी।
जलि मीना थलि सारगा अंकर वधक वस मर्नी॥
जैसो होइ पराक्रमी सिंध समरथ कविहूं नि हर्नी॥
कंसराइ अभमानु नहीं कछु कर्णी॥

दो०—कंसा पाछे भया सो क्या भया पूछो वेद वीचारु।
सांईदास जो जो पाछे गर्व्या तां को कीयो प्रहार॥

पौड़ी—२५

वेदि जिन चारे षडे दैतु वडा संषासुर सोई।
मधि कीटि मनोरथ छेदि उनि हणरूपु कहा सुणियोई॥
सिरि षथीआ हरिणाषसे जिन दिष्ट नि आवे कोई।
नरसिंघ दा रूपु धारि के प्रहिलादे इंद्रु कीओही॥
वाविन दा रूपु धार के वलि राजा जाइ छलिओई।
षत्री सभ संषार के सहस्रवाहो धेनु भुलिओही॥

दहिसिर जेवडि मंडिलीकु सिरि लंका दे थीआ डिठोई।
कंसराइ दिन तेरे आए ओही ॥

दो०—कंसा तूं अधक नही जरासिंध ते दूरि।
जांकी मदति आयो कालजमनि पलिक नि सकियो धारि ॥
वे ससिपाल त्रिनेत्र था रुकमनि गियो जु हारि।
सांईदास जिउ रघिवंसी राविणे तिउ यादव कंस द्वार ॥

पौड़ी—२६

कंसा मनि विच बहुत समिझीए समझाइ सुने वौरावे।
रावुणु सीआ विलावली जाइ जमु सुवधा पावे ॥
वासंतुरु धोवे कपिडे भाइ भग्ती अछे ल्यावे।
पौणु देवे वाहारीआ ससि सूरि रसोइ कमावे ॥
षाई जुसुरारंथ है को सागरपाउनि पावे।
वनिता जिस मदोदरी सतिवंती पापु नि भावे ॥
नंदनि जिसको एक लषु सवा लषु नाती देप चावे।
आपि नाति ब्रह्म देवता दस लष आविदी पावै ॥
सुष रही संजीवनी तिस पडिदे रावनि रावे।
रथु जु संदादामनी सो गगिने चमिकावे ॥
सैना जिस अषूहणी जुधि जोध रावन समिसावे।
विहु माता क्रोध दले सो सक्रोपाण ल्यावे ॥
लंकि त्रिकूटी वेष के मनि अंदिर बहुत वफावे।
दैत भुलावनि तिति थानि जे जानकी वंन्यन ल्यावे ॥
राया सो रावणु पछोतावे ॥

दो०—पदिम अठारा संगि करि चडे सु रघिपति जोरि।
सांईदास पाहन तारन मारि रिपु आनी सीआ वहोरि ॥

पौड़ी—२७

हरिजी गज दलि मेल के जा बांधां तवि ह्री सेतु।
जलि पाहनि तवि हों तरे गौरतनि भएतु लंका दा गडु
तोढिने जोधे जुझनि षगिसहेतु ॥
पाविस जेहे स्याम घटि दलि वरिष दे वेर केत।
गजि वेडे नरि तुल्य है भय ते रुडि दे जानि वहेत ॥

लंका तोडी गड़ु लुटिआ दसि कटे मिल्या भेतु ।
राया जिण सीआ ल्याया खेत ।।

दो०—राविण नूं कहे मदोदरी तेरी मति हिरी ।
मय जान्या लंका पुरी द्रोदी औरि फिरी ।।
छजीवंतरि चडि गए साईरु आआ हाथ ।
सांईदास काहे रावण गजीए जाइ मिलो रघनाथ ।।
लंक द्वारे थंह्मसाल हणिवंत जु पुटी जोर ।
पुत्रि जमे जसिरथि दे सुधे सारि नि कोर ।।
घडि दैता दे कटिअनि लंक होई होई षंड षंड ।
सांईदास दसि सिरी कटे राविणे भई मदोदरि रंडि ।।
जो जो आवे सकिल मिल तांसो अहि मति देति ।
कंस नि माने सांईदास असरनि की मति लेति ।।

पौड़ी—२८

मनि मैले बाहर उजिले कंसराइ दिवानु लगाया ।
सो अघासुर सदिआ वघासुरि संगि न दाया ।।
जानि सुमलि मुरुष्टि के मनि मग्नि मही धरि चल आया ।
परिलंवे अरि व्रषिभासरे कहु होगु तुम्हारा भाआ ।।
चंडूरे अरि चांडवे कैसी जोरि बहुते आया ।
जमिला अर्जन पूतना संगि सी घरि अठारह राया ।।
वछासुरि अरि धेनि के संष चूडि व्रिषभासरि नाल सदाया ।
सभना नूं आषे कंसराइ कोही मारे नंदणा जाइआ ।।
पहिला बोली पूतिना असुरेटी षड्गु उठाया ।
दासी जे मरेवा बालुकु नंदि दा कै पूतना कै कंस राया ।।
अहु वेला तेरा आआ ।।

दो०—कोऊ संठह कोऊ चलै जिह विध मारो वालु ।
साईंदास सिरिवकीके प्रथमे चडियो कालु ।।

पौड़ी—२६

मारित सुंदिर स्याम नूं पूतिना मधवनि जासी ।
लै हलाहल घसकर ले असथनि उते लासी ।।

जाइ पहूती नंदि ग्राम जाइ नंदाणे दिषासी।
आसुणु दितोसु जसुदा वडि महरी करि अरिदासी॥
माति जिसौदा छडि कौर किते कंम सिधाणी आसी।
रोवण लगा लाडुला इकु लील्हा चलित्रु दिषासी॥
उनि कंवकी पिछाहाऊ सटी उमि मूडि अस्थनि दे सुषिवासी।
दासी असथनि वदनि मुषि हरि रोक लैआ सभ रासी॥
सिर परिने ढठी विकराल विहालि भई जगि हासी।
पहिली लाविसु नंदिन सोर मोहन दी पषेऊ नपासी॥
राया प्रथिमै लै कंस दासी॥

दो०—व्रिजि तजि आए नंदि जी मिले देव के अंगि।
सांईदास वेगहि आवहु मधिपुरी चलो राइआ संगि॥

पौड़ी—३०

जालगि आया नंद जी मथुरापुरि दमके देण।
आइ मिले वसुदेव देवकी दुषि सुषि कीआ वाता लेण॥
नंदे आषे वासुदेउ मथुरा तजो संभेण।
ग्राम तुसाडे नंदि जी कछु उठे उलिकावेण॥
नंदि चलाया जोत रथु चल्या उडि रेण।
अगे रुंधि पई मग पूतना रथु जांदा थीआ दुषेण॥
वकी विकराल विहाल थी तनु कटि कीतो ने छेण।
राया सुणिओ ने वाताजेण॥

दो०—जो कछु था सोई भया कह्यो जु वेद वीचारि।
साईदास आह वचन सुति के सुने नंदि चले पगि धार॥

पौड़ी—३१

वालि लील्हा विच स्यावरे इकु हरि जी चर्तु दिषाइआ।
सुकठि सपूर्न पूर के नंदि राजे आण षजाइआ॥
माति जिसौदा लाडुला नौरंगु रथे ते पाइआ।
रोवण लगा लाडुला जसुदा चित कंमु वसाया॥
हरिजी आण उसरिआ मनि अंदरि क्रोध वसाया।
भंजनु सकिटे दा होया भंज सकटा चूरि गवाया॥

जा लगि आया नंदि राउ रथु भंन्ना ते वालु रुआआ
अचुरुजु भया व्रजि वासीआ सभ गोकलि पुछणि आइआ ॥
पोतिडिआ विच नंदि सोर मनि मोहनि चिलुत्रु दिषाआ ।
आपि संत उधारनि आआ ॥

दो०—इकि मोरी सुनी पूतना अरि रथु भंजनि कीउ ।
कंस असरि भैय जानआ धसि धसि कंपयो जीउ ॥
कंसे पायो त्रिणावर्तु ले चल्या तंवूल ।
पविन चक्रि अति करि चले कीनो रूपु बबूल ॥

पौड़ी—३२

मारिन सुंदिरि स्याम नूं असुरेटे वीडा लीआ ।
कंसे वीडा घिन के त्रिण राय सिधा णहठीआ ॥
उनि रूपु कीआ विलोहणे धरि गगिने धारि उठीआ ।
मात जिसौदे लाडुला निवलि पीडे मै दीआ ॥
उोकडि डिठा दैत सुति भुजि गह अपिने वस कीआं ।
मधिवनि भौली पै गई कीन्ह नाही अचिरुजि थीआ ॥
सभ ढूंढनि गोप गवारीआ हरि पाए थीय पतीआ ।
देषनि दैतु निआत्या नरिवंस ज्ञा सणजीआ ॥
जगु नंदि तहा रच्या पदार्थु टिका दीआ ।
हरि त्रिणावर्तु भी लीआ ॥

दो०—अविनाशी तूं प्रभु जगित गुरि सभ सुरि को परिनाम ।
सांईदास दर्सु दे तुम गर्ग जी ताह वचनि परिवानु ॥

पौड़ी—३३

वंद साला बैठा नंद सुर गर्ग स्वामी दर्सु दिषाइआ ।
करि जोरि करी तिह वंदना वसिदेव जु वचिन सुणाइआ ॥
व्रजि कुलि मह तुम जाहि जी नाम कर्म बालक वलिकाइआ ।
सतिवादी मुनि देवता नंदि ग्राम पहूता आइआ ॥
करि दंडौति मिल्या मुन नंदि जी सिंघासन छडि विछाइआ ।
चर्न पषाले जसुदा पादोदिक सीसि चडाइआ ॥
गर्ग पूछे देब को मुषि अपिने वचनि सुभाया ।
नंदि जिसौदा गर्ग देवि वह सास्त्र सुधिवाइआ ॥

आगे कर्षण हलि धरे वलिभद्र सु नामु कहाया।
ठाकर केरे नाम देष गर्ग देव रहआ भरिमाइआ ॥
गर्ग स्वामी देष एक नाम सहस्र कु सास्त्र गाया।
कान्ह क्रष्न करि टेरआ मुषि सास्त्र कूक[1] सुणाया ॥
बैकुंठ सकल व्रजि आइआ ॥

दो०—विंद्रावनि के विर्छ का मर्म नि जाने कोइ।
सांईदास एक पुतर को ध्यान धरि सोई चतुर्भुजि होइ ॥

पौड़ी—३४

नंदि रचाया नामकर्न भानु वणिया जाणु द्वादसे।
गोकलि गौआ मिलाईआ लेहधा षीरु परिसे।
रिष प्रकारि घ्रितार संगु पाकु पका कोटि बणसे ॥
सुरि नरि मुनि जनि देवते दिज ब्रह्म संग विगसे।
तहा दिजी अरंभणु रचया मुषि अहूति दिचे ॥
निशा शो जसुदा चषे गो प्रवेशु पंच अंवृति पाविनि असे ॥
भोजनि दितोने विपा नू दे दक्षणा चर्न परसे।
जसुदा आषे कर्न विच चिर जीवे लष वरसे ॥
अगे कर्षण हलधरि बलिभद्र सुनामु कु असे।
कान्हा नाम धराय के नंदि राजा चित विगसे ॥
देषे जगा होंदिआ कंस भूरे ते नंद विगसे।

दो०—प्रहिलादि की रक्षा करी हरिनाकस दीउो विडारि।
सांईदास सो ग्रह प्रगिटियो नंदि के हसि हसि षेलत द्वारि ॥

पौड़ी—३५

राम स्याम दोऊ भया चलि षेलो मुषि बलिहारी।
तरिताल मृदि भछन कीए बलिदेव जु भुजा पसारी ॥
तिन वलु थंभ नि सकियो जाइ जसुदा जाइ पुकारी।
जसुदा चली त्याग ग्रह तहा सनिमुषि मिले मुरारी ॥
ते माटी षाई लाडुले लै करि की मुष परि मारी।
वदुनु उघारि निहारि अति क्रोध भई महतारी ॥

---

१. कूक=कहना, संस्कृत क्वणति >कुणदि >कुंदि। √क्वण्=कूना (पंजाबी)

हरि का आननु उमिडआ विसु[१] अंदरि मुष के सारी ।
भै चक्रति होई देष के क्या वरिने अपरि अपारी ।।
राया मुष मधे धारिन धारी ।।

दो०—इहि ठाढि वचिनि मोहनि कहे सत्त कमरि दोऊ वीरि ।
सांईदास दर्स पर्स मुक्ते भए भेटे द्वारि अहीरि ।।

पौड़ी—३६

वेटे दोऊ कुमेरि दे नलि कूमलि ते मनि ग्रीव ।
इसनानु संग कुआरि को नार्द आए उति ही तीरि ।।
उनि गर्वु कीया नगिना रहे और सभो कीउ पटि चीरि ।
सरापु दितोने ब्रह्मसुति मृति मंडलि जाहु सपीरि ।।
उधरणु साडा आषदेह वस पासो वलि भद्र वीरि ।
जसुदा वांधे क्रष्न नूं अभमानी ग्वार अहीर ।।
इऊ उधिरे दोऊ वीरि ।।

दो०—द्वारि नंदि ठाढे रहे वतस संग लै वालि ।
सांईदास व्रजि वानी विच स्याविरे तुम षेलनि चलो गुपालि ।।

पौड़ी—३७

जमना के तटि स्यावरा ले षेले यादिवराई ।
दधि वेचन चली गूजरी सिरि गागर लई उठाई ।।
जो व्रिज की संग संग पुस दल सो लई संगाति वुलाई ।
सभ चलीआ प्रेम मदोरीआ करितारि जु वाति बुझाई ।।
सुंदरि स्याम हटिकीआ सा ठाढी सको नि जाई ।
गिरि गागिरि अरु तक्र ते दधि वीटे माषनु षाई ।।
हौ तिस पै जाइ पुकारसा जहा भूपति है कंसराई ।
समिझे नाही नंदि सोरु सुणनु देषी वंनाई ।।
भूपु ऐसा है कंसराई ।।

दो०—धरती जिवे वनारिसी मथुरा पुरिआ माहि ।
जमे मरे जभद्रीअहि ते बैकुंठी जाहि ।।

---

१. विसु > विश्व ।

कोटि मरणा के अष्ट धात मिले सुमेरे अंस।
सांईदास वेटा उग्र सैरण दा पार्स भेटउो कंस ।।

पौड़ी—३८

हनु हनु हते कंस दी क्या कहे होवे तेरे।
कूकि विषाजे कूकना क्या होसी ढिल पछेरे ।।
सभे चलिया गूजरीआ अकुलाए नंदाणे डेरे।
जाइ पहुती जसुदा पै अति क्रोध वोलन हनिनेरे ।।
जसुदा नंद उलाहरो व्रजि वाल सषा अपु केरे।
हौऊ तुझ पह जाइ पुकारोगी यहि झगिरा कंसु निबेरे ।।
समिझाइ जसुदा वालु आपरणा जे कहे लगे मेरे।
नहीं दूत कंस आविनगे तेरे ।।

दो०—तुम नहीं देष वर्जन करो श्रविन सुनोगी वाति।
जाहु सषी ग्रह आपिने यही कहियो जिसौदा माति ।।

पौड़ी—३९

हरि जी सोए नीदि भरि दधि मथन करे नंदिरानी।
तक्रति परि नौनीति चिति तवि मोहन गही मंथानी ।।
गिरि सागिर अरु अहिपती त्रैलोक भए हैरानी।
दीपक हानिउ सुविद सुन सति कहु केते चरित्र वषानी ।।
दधि भंजनि तवि तोडोउ निमिति माषन की पैछानी।
अहि देष माता हैरानी ।।

दो०—जोगि ध्यानि आवे नहीं जगि भोग नहीं लेति।
वांको गोकलि ग्वारिनी हसि हसि माषनि देति[1] ।।

पौड़ी—४०

वलिदा रूपु धारि कै आइ षडा जिसौदा पाही।
वै लकिरी वै कांविरी वै गूजरि संगि सगाही ।।

---

१. तुलनीय—

नारद से सुक व्यास रटे, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावे।
ताहि अहीर की छोहरियां छछियाभर छाछ पै नाच नचावे ।।
(रसखान)

जसुदा हौई क्रोपवत हौ हारी निति उलाहीं।
हरि जी नठे देष के माति निवारो क्रोधु कि वाही ॥
पकिडिनि कारन लाडले तिहि पाछे दोरती जाही।
जसुदा पकरिश्र स्याविरा मुषि ऊपिर करिकी लाई ॥
गोकलि सेली जेतडी ले बांधे ऊषलि माही।
दुइ दुइ उगिल सभ रही जो गोकलि सेली ग्राही ॥
राया विच सेली ग्रावि सुनाही ॥

दो०—वलि नार्द कपिलादि ऊधो दुह ववेकी सोधी।
कंस रावरण ससेपाल पूतना इनि पाइ विरोधी ॥

पौड़ी—४१

जसुदा चलित्र दिषाइओ विच सेली स्याम सरीरि।
उनि क्रोधि वहुते बांधश्रा श्रभमानी ग्वारि श्रहीरि ॥
जमला श्रर्जुन दौ वही व्रष दोवे ग्रापससीरि।
तनि मूसलि जा ठहिकया कलिधारी उधरनि धीरि ॥
भंजनि जुमले श्रर्जन ने कडि काडि दुहा समसीरि।
वेटे दोऊ कुमेर दे उधिरेही रसमीरि ॥
राया फलि पाए दुहा वीरि ॥

दो०—जमिला श्रर्जनि की सुनी कंसि द्वारे वाति।
हठु नहीं छाडे सांईदास प्रान न निकसे जात ॥

पौड़ी—४२

श्रापु त्याग परितष होय करि ठाढे श्रागे जोरि।
होहु दिश्रालि क्रपालि जी मनि की दुभदा मोर ॥
गुरण वाणी सो गाविदे हरि जी के भागि मथोरि।
करि करिमा सो रवि रहे मनु लागा साधा की उोर ॥
राया वनि सुति की वरिषा भोर ॥

दो०—जमिला श्रर्जन की सुनी कंस द्वारे वाति।
हठु नहीं छाडे सांईदास प्रान न निकसे जाति ॥

पौड़ी—४३

करि बछासुरु वछ सरूपु श्रसुरेटा कंस पठाइश्रा।
वालक हरि संग षेलते वछिरि के संग मिल श्राइश्रा ॥

लील्हा धरि तब जान्या असुरेटे फंदु रचाइआ।
पूछ ते पकर आनंदि कौर गगिनं तर लागि भवाया ॥
धरिनी धरि जो सटिआ संगि वसुधा के पछराइआ।
टुकु टुकु होई सभ देह अजि लावनि मै आइआ ॥
कंस राय करि लागे मुक्ति सिधायआ ॥

पौड़ी—४४

जमला अर्जन भजे उनि कंसे थेथीई कहाणी।
अचिरुजु भया असुरेटिआ सुणु सैना सभ थहिराणी ॥
धीरिज धरि तू कंसराइ संतोषु करि तूं गिरि सैनाणी।
हौ उसी वालिक मारसा नागि देह करि विसु धाणी ॥
हौ आही सकल सवारआ जा आविनि गे मैं थाणी।
एह वडु कंमु करे अघासुरु किनि कीचे एह कहाणी ॥
मनि कंसे एहा भाणी ॥

पौड़ी—४५

पासो जोधे कंसिराय असुरेटे बीडा लीआ।
उरिग श्रूप करि धारिआ असुरेटे फंदु रचीया ॥
धरिनी धरि अकास ते अकासुरि वदुनि पसारे।
सणु वछ आसणु गुजरा मुष अंदिर यादम राए ॥
असुरेटा अधरि मिलाइ ज्ञा सैना गोपनि के कहलाए।
अति डेरघु होया मुषि मेध चरित्रु दिआया ॥
वछि ग्वार उवारि उनि सो प्रीतमु है यादोराया।
वतिनि गइओ तिति था लै वीडा जिथो आइआ ॥
हरि जी अघासुरि मुक्त पठाआ ॥

दो०—इउ अघासुरि पचाउनि जिनि कीने रूप भुअंगि।
कंसु नि जाने सांईदास छीजित दीसे अंगि ॥

पौड़ी—४६

अघासुरि सुणआ मारिआ वाघासरि बीडा लीआ।
हथिपछोरे कंसराइ नि जाइसु पिछला कीआ ॥
कंसे काले कपिडे षावणु पीवणु विसरि गिआ।
कारिण वीरे आपणे वाघासुरि देसी जीया ॥
उनि विरिही वीडा लीया ॥

पौड़ी—४७

जमुना के तटि लाडुला मनि मोहनि वछे चारे।
वगि सरूपु कीआ बघासरे आइ ठाढा वनि मंझारे ॥
सुणु वछय सणु गुजरा मुषि अंदिरि यादिम पाआरे।
सभ कछु जाणे लाडुला अचेत सुगोप ग्वारे ॥
अति डीरघ होया लाडुला मुषि मधे कला पसारे।
दाडा दोवे ऊपाडिआ इकि सीस इक पगि धारे ॥
षोटु जिथो होउगिवे फिरि षोटु तिथाऊ मारे।
सारंगि झूझे सिंघ नाल सिंधु केहा सुषु गुजारे ॥
कंसराइ विधवंस भई दैतनारे ॥

पौड़ी—४८

वंन्हि दावा आया कौन रूप वनि मोह जु अग्नि लगाई।
दहि दिस ते प्रगिटी अगिन व्रजिवासी कहे जु आई ॥
गोकलि सकिल पुकारिया तुमि राषो जादम राई।
पसु पंषी अरि कीटि मीनि अकुलाविन अपिनी थाई ॥
हसि बोले नंदि लाडुला नैन मूंदो मेरे भाई।
नैनि मीटे अगिन समाई ॥

दो०—या लील्हा मोहन करी सुनित सकलि व्रजि लोक।
सांईदास आनंदि सुरि सकलि पायो कंस वियोगि ॥

पौड़ी—४९

ब्रह्मापठिआ देवितआ परितावण मदन मुरारे।
तटि जमुना के आइआ चित फंधक वेहा धारे ॥
ब्रह्मे वेद दुराउनि सण वछे गोप ग्वारे।
हरि जी तवि अविलोकआ इह जगिपति कीने चारे ॥
क्रष्न उठाई माया धरि अविनाशी लील्हा धारे।
जिन्ही रंगी धेनि सुति धीए रंगी गोप ग्वारे ॥
गौऊ आनंदि हिल मिली अत प्यारे।
नारी वालकि तिते रूप सुति माता बहु हितकारे ॥
सो अइसा मदिन मुरारे ॥

दो०—यहि लील्हा मोहनि करी प्रगिटि भए भगिवंत।
सांईदास वालक षेले स्वर्ग मै जगिपति पायो अंत ।।

पौड़ी—५०

भए दिहाडे वर्ष दिन ता ब्रह्मा कल मल थीआ।
जमिना के आइआ वछि गूजरि देष भुलीया ।।
पुनिरपु[1] गआ स्वर्गलोक वछि गूजरि बैठ उठीआ।
लै तिनन हू कों चलिआ लइ आइआ तिनहूं संगीया ।।
आइ मिलआ मेरे मोहने तजि माण निमाणा थीआ।
जे होवां वनि रेणका चलिदे[2] चर्न लगीवां ।।
वछि वाल तिन्हा धंनि भाग वडिभागि मुकरि लुटीवा।
द्रुम वेली तिन धंनि भाग धनि कावरी कंध वसीवा ।।
जगिपति अंतु न पायो इहि चलित्र मोहन कीआ।
राया तवि ब्रह्म थीआपतीआ ।।

दो०—तुमि पूर्न पारि ब्रह्म हम त्रिण तुछिक जीवि।
सांईदास कार्न कर्न समरथ प्रभ जो कछु कीआ सु कीवि ।।

पौड़ी—५१

सति वल भद्र गोप सुति व्रिज षेलति स्याम मुरारी।
अति सुंदरि फल पके व्रजि बालक हितकारी ।।
ते वनि भूले सहिज मै फल तूट परे चुनि कारी।
तिहि सुनि धेनक आयो गंधर्प की सैना सारी ।।
तिनिहूं उलिटि पलिटिउो निधरिने धरि उभारी।
चर्ना ते पकिड आनंद सोरि इकि उलिटै औरु पछारी ।।
उतो वनो सुटिउोने भै ढठा गति प्रहारी।
कंसराइ फल आदे गोपग्वारी ।।

दो०—जिह वनि नृप धेनिक वसे तिह वनि गोप ग्वार।
सांईदास द्रुम वेली नंदि लाडुलै निभौ करी गुपाल ।।

---

१. पुनिरपु>पुनरपि=दुबारा।
२. चलिदे=चलते हुए।

पौड़ी—५२

राजा कंसु महावली निति पापु करे नही संगे।
नेमु धर्मु नि जाणिही चित रषे नही चंगे॥
जो जो नाही धर्न परि अणिहोंदे वारिजु मंगे।
नालि अरि डंदे सारिदूल कवेहा सुषु कुरंगे॥
विणाहु आयो कंस अगे॥

दो०—दैति दुषत अति वहु कीए कंस कविल की डोरि।
सांईदास विरद मुषि देन को प्रगिटि भए नंदि सोर॥

पौड़ी—५३

वालि सषाई संग सभ मनि मोहनि गोदि[1] षिलंन।
वारी आयो आपणी ते वालक षेल करंन॥
हरि जी गेंदू मारआ विच काली कुंड परंनि।
डरि दा काली कुंडि ते नहीं वालक जाइ सकंन॥
कुसा लई हरि पुट के हरि नथण काली जान।
सहस्र फणा पै जा गए ते नारी वरिजनि॥
नेडा न आई वालिका सुरि किंनरि अगिन सरंनि।
क्रीडा चित मनि मोहने फनंद के सीस तुडनि॥
यहि लील्हा मोहनि करी ते नारी चर्न लगंन।
वरिषा भई महावली मथुरा पुरि कौल पडंनि॥
सभे वंदी छुटीआ जो कंस पवाईआ वंदि।
काला दर्सनु पाइआ कंसि कुविजा भागि थीअंनि॥
काली जलि ते काढ के राविण के जाइ वसंनि।
आया संति उधारिने नंदि केरे ग्राम वसंनि॥
कंसराइ मथुरापुरी सुष वसंनि॥

दो०—षगि पसु पंषी पीविह जलु काली दह तिन नामु।
चर्न लाग अंवृतु कीआ संतनि पूरे काम॥
चाडो चाडी षेलते हरि संगि गोप ग्वारि।
वालि सरूपु करि आइआ प्रानि देत ततिकारि॥

---

१. 'गोदि' इस शब्द का अर्थ गेंद है।

पौड़ी—५४

जमना के तटि लाडुला लै षेले यादम राया ।
वालिक दा रूपु धारि के परिलंबु मिल्या बलकाया ।।
त्रिभवनि नाथ पछानिश्रा कौ दैत विरोधी श्राइश्रा ।
जुगि कीने तिह वालका उहु हलिधरि संगि जुराइश्रा ।।
वालक षेलनि चडी प्रथिमे हलिधरि चढाइश्रा ।
वारी श्राई वलिभद्र दी चडि बैठो भारु सवाया ।।
हलि नि सके दैति तदि मिरजादा दूर दिषाश्रा ।
सिरि परि मुष्टक मारश्रा दैतु मूश्रा हंसु सिधाश्रा ।।
इहि लाहा हलधरि श्राया ।।

दो०—नन्ही नानी वूंद धरि जलु वरिषति वनि की उोरी ।
सांईदास गोपवाल सषा षेलते श्राये नंदि किसौरि ।।

पौड़ी—५५

ग्रीषम रुति पीछे परी वरषा की श्रादि जिनाई ।
लसि लसि चमिकै दामनी झिमि वूंद वरसनि श्राई ।।
जगि जीविनि हरिषे भए पिक चात्रक टेरि सुणाई ।
व्रजि के हरिषे लोक सभ मुषि निर्षत जादमराइ ।।
निर्ष निर्ष सभ दुष हरे श्रति श्रनंदि सो गुन गाई ।
कंसराय रुति देषी कौरि कन्हाई ।।

दो०—व्रजि वासी मिल सषा सभ जहा षेलति नंदि लालि ।
सरिदा रुति श्रति बहु वनी तुम षेलनि चलो गोपाल ।।

पौड़ी—५६

सरिदा रुति श्रति सुंदरि वनि सोभा श्रति क्या कहीए ।
सीतिल सुंदिर जल पविन द्रुम वेली ध्यानि सहीं पेहीए ।।
मधिकरि भुनिकति पुसम परि हरि उोटि चर्न की गहीए ।
कोमल पांनि विराजिही वहु रंगि वनाविन चहीए ।।
राइश्रा रुति रूप देष नि रिवहीए ।।

दो०—रुति हरि देषी स्यावरे मिले व्रजनि के लोक ।
सांईदास श्रानंदि उपिजयों सकिल को पाउो कंस वियोगि ।।

पौडी—५७

सरिदा रुति अति सुंदरी व्रजिवाल वधू वनि आए।
वनि फुले आनंदि सो जलि सुंदिर भूम सुहाए ॥
त्रिण द्रुम वेली सघनि घनि हर्ष सु आनंदि भाए।
निर्ष निर्ष हरि रूपि सो वहु लोचनि अति अघाए ॥
सरिदा रुति स्याम सुहाए ॥

दो०—वनि कुंजि जिह सघनि घनि तिह षेलत नंदि को लाल।
सांईदास लील्हा करी विच स्याविरे वंसी धरित गुपाल ॥

पौडी—५८

एक समे नंदि लाडले मनि मोहनि वैन वजाई।
अस्थाविर गति जंगम भई गति जंगम की इस्थरआई ॥
रवि रथ थाके जलि पाविन षगि मृग की सुध विसराई।
ते मोही व्रजि नारियां पहिर उलिटे भूषन लिआई ॥
काहूं वस्त्र लीए काहू न लीए काहूं कंचुकी पाई नि पाई।
काहू एक पंष गुंथे रहे काहू एक नि पंष गुथाई ॥
काहू एक नैन अंजुनु दीआ काहू एक न दई सराई।
काहू भरिता त्यागया सभ लोकनि की बात चुकाई ॥
जैसी सी तैसी मिली मेल करी जु वांदी पाई।
जवि मोहन वैन बजाई ॥

दो०—वहु अविला मजिन चली कालिंद्री के तीरि।
साईंदास वस्त्र कर्षण करि लीए हरि हलधरि के वीरि ॥

पौडी—५९

कर्नि सेवा सुरिकंनआ वर पाविह नंदि कसोर।
इष्नान कर्न तटि जमिन के सभ सषी आई करि जोरि ॥
आए मदनि गुपाल जी संगि वालक नंदि विलोर।
वसतरि कर्षण तदि भए जाइ बैठे कदम तरोर ॥
नावे प्राती झुसमुसे सुनि आने मुरिली घोरि।
जाय देषे तहा नही क्या कहीए चले नि जोरि।
वस्तर देह मेरे मोहना सभ ठाढी ककत नि होरि ॥

नगिना होइहा लै जाहु इहि मांगी क्रष्न अकोरि।
नगिना होय होय लै गईआ जलु त्याग अंतररि की छोर ॥
वस्तरि दीने किसोरि ॥

दो०—आई नगिन सु ले चली वसु दीने नंद नंदि।
सांईदास इकि मुरिली इक दर्स पर्स भई जु आनंदि कंदि ॥

पौड़ी—६०

वछे चारे लाडुला मनि मोहनि वनि के मांही।
षुध्या चाये ग्वार सभ कछु मंगे षाविण ताही ॥
हरि जो भेजे दिजा पहि दिजि देवण देदे नाहीं।
भला किया दिज पतिनीआ हरि कीने तोष कि वाही ॥
दिज पतिनी निर्भो करी क्रष्न क्रपाल तिदाही।
हरि आए आज्ञा माही ॥

दो०—दिजि पतिनी निर्भे करी अनिभै मिले गुपालि।
सांईदास प्रभ आगिर पूर्न प्रगिटि दिआल ॥

पौड़ी—६१

नंदे आषे लाडुला मुष अपिने वचिन सुनाई।
जगु नि करिसों इंद्र का इनि वाती कौन डराई ॥
जगु करो जे इंद्र का हरि जगु निहफल जाई।
वालक परि गोवर्धने संतोषु करो तिस भाई ॥
तिन लोका व्रजि वासीआ संपूर्न पाकु पकाई।
पकु संपूर्न पूर के तिस वालक नूं पहुंचाई ॥
जो आंदा व्रजि वासीआ सो वालुकु लै मुह पाई।
नंदु पूछे करि वेनिती संतोषु भआ किउ भाई ॥
लील्हा धरि तिह वोलआ कहु राजिन मैह क्या षाई।
बरुतदोनो होया इंद्र मंगे लैदा जाई ॥
नंद स्याम मसलत लाई ॥

दो०—वचन मान वसुदेव के जिह मानिति तेतीस।
सांईदास व्रजि परि वरिषे क्रोप करि तुम राषो जगिदीस ॥

पौडी—६२

भेटि नि मलश्रा इंद्र नूं रथू हो रोपासा सारी।
गहिर गंभीरन पूरके धरि मेरी छुउ भारी॥
चारे वेटे सदिउोंस जतु सावतु द्रोणु पुहकारी।
चौहां रचाईश्रा चार घट पूर्व पश्चम उतिर दछनारी॥
गगुनु गरिजे धरिन परि श्रति माश्रा मोहु श्रधिकारी।
मूसलधारि वरषणा इहि क्रोपु करे श्रति गोप ग्वारी॥
प्रभ गोवर्धन के उपिट के तल पांनि दीये वनिवारी।
वैन वजाई लाडुले षटि राग रंगन मलहारी॥
वरिषा भई महा वली दिन सप्ते रजनी सारी।
गोकल की पति राषी उन व्रजि वंस की पैज उवारी॥
इंद्रु पतीरणा वेष त्राणु हरि श्रगे बाजी हारी।
तदि भए गोवर्धन धारी॥

दो०—श्रविनाशी तुम पारिब्रह्म तुम ईसन के ईस।
सांईदास हम भूले तुम राष ले यगि-जीवनि जगिदीसि॥

पौडी—६३

सुरिपति श्राए मानि तजि लागि चर्नन प्रेम वढाइश्रा।
वडि जानश्रा उसि श्राप ते लघ दीर्घ देष जनाइश्रा॥
वर्षन लागे पुसम परि श्रभ षेकुसु नंद रचाइश्रा।
गोप वधू व्रज वाल सभ जसु जनिनी सीजोदो राइश्रा॥
कंसराइ इंद्र लोकन द्वारे श्राइश्रा॥

दो०—कंसा पुसप जल पांनि ले दिज देव कर्तश्र भषेष।
सांईदास दर्सन हति केलि विषै हरि पूजा सदा विसेष॥

पौडी—६४

निस उडिगनि सो सोभते नंदिराइ सुमंजनि श्राइश्रा।
सुष श्रासण सुता वरुणु पालु जलु डुलेते नींद जराइश्रा।
साषी मंत्र वेद का नंदि पाह पहूता श्राइश्रा॥
श्रंतिरजामी जानिश्रा नंदि राउ प्याल सिधाइश्रा।
वडि भागी वर्णु पालु था जलि भीतिरि दर्स दिषाया॥
सुतु ताति छडाय लिश्राइश्रा॥

पौडी—६५

जो जो साषी दसम की सो संता सुनित वीचारी।
था रचायो सुरास का मनि मोहनि मदिन मुरारी ।।
सुरि नरि देव गंधर्व सुण मुनि ध्यानों छुटिकी तारी।
वेषिन मंडिल आनंदि सो तनि कांछे गोप ग्वारी ।।
मंदिरि तजि तजि आपणे आइ बैठे वनुहु मझारी।
गाविनि रंगी आपिणी धुनि रंगी रंगि मलिहारी ।।
इक दे दे बुढिकी गाविती व्रिज की त्रीआ वनि भारी।
इकि नाचिति इक गाविते आनंदि भई विसु सारी ।।
जती जोगी तपी सकल तजि वैरागी वनि पै हारी।
मोनिदिगंवरि वारिनी संन्यासी अरि ब्रह्मचारी ।।
षटि दर्सन लालसा विसु लागी देषन हारी।
देषनि को नंद लाडुला आनंदि भई विसु सारी ।।
इउ रास रची वनिवारी ।।

दो०—गौऊ सुति अरि गोप सुति लील्हा करित वलास।
सांईदास मधिक वीच गोपी वनी अवि षेलन लागे रासि ।।

पौडी—६६

दसिम सकंदे अंतिरे मनि मोहनि रास रचाई।
नंद कौरि अरि स्याम तनि नौ जोबिन की चतुराई ।।
मोरि मुकिटि माथे वने लटिपटी कांछ वनवाई।
भौहां अरि कौल नैन अरि मोतनि माल वनाई ।।
पीतांवरि असतक कुसम ग्रंथ मगि सोभा कही नि जाई।
बीरी दांतो पांन छवि कछु अदिभुति रूप दिषाई ।।
चंद वदन छवि कौल नैन इहि सोभा वरिनी नि जाई।
त्रिभवनि नाथ निरंद गुनि निरंजन की विध पाई ।।
इउ मोहनि रास रचाई ।।

दो०—राजा को कछु सकल जगि तांकहि उपमा दीज।
सांईदास साध सरूपि तिह वर्णता चर्न राषु यहि जीज ।।

पौडी—६७

नौरंगी लालु बुलाइआ कहु आविन संति सरभालि।
कुसम-ग्रंथ सरिधनि षरी रुचि वेनी लटिकत नालि ॥
उरि कंचिकी पटि चीरि सिर कटि बांधे नवे बंधाल।
सारंग नैनी चंद मुषु सुकि नासक जैसी भालि ॥
श्रीफल कच अरु हेमतनि कटि के हरि गौंन मराल।
तिन अतर अवे नायका अति सुंदिर रूप रिसालि ॥
तिन के ऊपिर राधका सो पिआरी मदिन गोपाल।
आइि मिलआ मेरे मोहने प्रभ स्यामा स्याम तमाल ॥
संग सोभति नंद के लालि ॥

पौडी—६८

ठाकुरि कीनी आगिआ सुरि किंनरि गाविन आए।
किंनरी ताल रवाब डफ सो झालिरी सविद सुणाए ॥
तालि पषाविज अंवृती जो सुणिए तौ सुष पाए।
सभना ऊपरि वंसरी जो मदिनि गोपाल वजाए ॥
दिगि दिग ता थेई करे करि ताल चटाके पाए।
ठाकुरि मोहे तीन लोक जसि वेद पुराननि सुनारे ॥
अस्थावरि यंगम मोहीए नहीं अंत न कोई पाए।
सुरि मोनी शिव विरंच अर ब्रह्मा निगम सुणाए ॥
वछि वाल अरि धेनु धुनि त्रिण दंती गहे नि षाए।
स्वर्ग मोहयो सुरि इंद्रासण रथु सूर्ज का अटिकाए ॥
नाचित गावित षेलते व्रिज नारी सो चित्तु लाए।
अंतुरु राम का हिर लीआ संग राधा दुरब बजाए ॥
सौ असा त्रिभवनि राए ॥

पौडी—६९

विंद्रा वनि विच षेलते मनि मोहन मदिन मुरारि।
करित कतूहल आपि मै हरि संगि गोप गवारि ॥
गोप विराजह मंडिली अति सुंदरि कांछ बनाए।
इकि गावे इकि षेलेते इकि निरिषे जादिमराए ॥

षेलत रंगी आपणी संषचूड सुदर्सन आए।
लै कै गोपी उठि चलआ गोपी टेर सुसविद सुणाए ।।
धावण धाया चर्न की पडि पिछो देह भमाइआ।
टुक टुक कीता नंद कौरि तवि सैना सकल उजिराए ।।
सो अैसा त्रिभवनि राए ।।

दो०—धरि के देह फनिंद्र की आइआ बने मझारि।
सांईदास संषचूडि तवि तोडि उनि दीनानाथ मुरारि ।।

पौडी—७०

लैके वीडा कंस प्रति विषभासर रूपु पसारिआ।
दुहि परि वलि मैं आइआ अभमानी वहु हंकारिआ ।।
जिहि वनि षेलति लाडुला गोप वछ सुलता उबारे।
उलिटे चर्न चलाइउो नषुर पकरि सुधर्न पछारे ।।
विषभासरि मुक्त सिधारे ।।

पौडी—७१

जमिना के तटि बालका लै षेले जादिव राया।
केसी वदुनु पसारिआ आइ मिलआ धाय धाइआ ।।
आगे पाहनि की भुजि क्रस्न जी वलु सुनाह चलाया।
हरि जी अंतिरि जान्या दैतु ढठा सिर तलवाइआ ।।
वातिनि गियों तित था लै वीडा जिथो आइआ।
हरि दर्सुन केसी पाइआ ।।

पौडी—७२

लील्हा स्यामि विलोकते अति षेलति है व्रज सारी।
आनंदिमै सभ षेलते सभ सोहे गोप ग्वारी ।।
पुत्रु महामई दित्तदा चल आया वने मझारी।
गोप चला उनि सकल धरि मनि देषे मदिन मुरारी ।।
ऊमासुरु दैत निपात उनु व्रजि वंस की सैनि उवारी।
कंसराइ लै आए सारि संभारी ।।

दो०—मता नार्द कंसराइ रंगभूम रच दूरि।
सांईदास तां सदाइयो नंद सुति पाठिव देह अंकरूरि ।।

पौडी—७३

पासे जोधे कंसराइ नार्द षलोता आइ।
जाया उग्र सैण दा उठि मिलयो सनि मुष धाइ॥
भाउ भगत करि पुछआ विप नार्द कंसराइ।
सभै दैत निपात उनि सभ मारेगा धाइ॥
करि रंगा औतारि तूं असुरेटे सभ सदाइ।
जो व्रजिवासी लोक है सणु नंदे लेहु वुलाइ॥
भगित पुरातनि अंकूररपु चलि आए स्याम संगाइ।
कंसराइ अंक्रूरा मधवनि जाइ॥

पौडी—७४

लैके पतिआ राजे कंस दी अंक्रूरा देव सिधाणा।
जाइ पहूता नंदि ग्राम दर्सुनु मिलओसु मनिभाणा॥
अक्रूरे दर्सन पाइआ पुरातिन तपु कमाणा।
अक्रूरे कीनी वांछना सो सारा रूपु समाणा॥
नंदे आषे अक्रूरा रिपु दतु छड़े नाही माणा।
सैना सभु सदाई उस दैता णा॥

दो०—अवि हमारि भागि वडि दरुसु देति दिजिराइ।
सांईदास पूछ नि साको रसनि भर तुम आए किह भाइ॥

पौडी—७५

अंक्रूरे पासो पूछदे कछु नंदि जिसौदा वाति।
अंकरूरि यदिन धंनि तुम जो आए अजो की रात॥
कंस सदाए नंदि जी संगि कान्हा हलधरि भ्राति।
जोधे संगि भिडावने हम नाही कूडि कहाति॥
भइ चक्रति होए देषही नंद जिसौदा ताति।
किउ जीविन नरपति माति॥

दो०—मनि की जीविन ले चले किह विध धीरे प्रान।
कान्ह छाडि सभ धेन हरि तवि मेरे कलआनि॥

पौडी—७६

जवि लग चले अक्रूर जी कछु नंदि जिसौदे कहआ।
कौन काजि मेरे लाडुले कंस संगाती डहआ॥

सभ कछु देवा कंस जोग जो मंगे भूपति चहग्रा।
सकल हमारी धेन लेहु प्रभ गोकल जाइ नि वहग्रा ॥
डरिदा कंसो अक्रूरिरिपु इहु लोडो कार्ज न रिवहया।
सुपलकिसुतिमुभ्कि काटि डार द्रिग जनिम बछोहा रहिग्रा ॥
पाछो सूलु न जाए सहग्रा ॥

दो०—सभ परिपाटी कंस को तुम हरि भूलेह नाह।
सांईदास उलिटि फंद ताहू परे तुम काहू डरि नाह ॥

पौडी—७७

साँईदास सहिज विच कंस रंग रच्याउोतारि।
जोधे सारे सदिडोसु महि दैता है सिरिदारि ॥
ग्रसुरेटे सभ ग्रभमान विच लै फौजा करि विसिथारि।
हीडोली इक पालिकी इक जोडि रथा ग्रसिवारि ॥
चारे कुंडा मिल षले हरवति न मारनहारि।
नार्द किलका मारीग्रा जोगु कंसाणे पारिवार ॥
परु कंसे नूं नाही सारि ॥[1]

---

१. यहां पर "वार भागवत" की रचना समाप्त है। पर इस प्रकार भागवत की कथा की सहसा समाप्ति ठीक प्रतीत नहीं होती। कवि ने भागवत की कथा को पंजाबी के "वार" की शैली में प्रस्तुत किया है। इसमें ७७ पौड़ियां हैं मूल ग्रन्थ में पौड़ी संख्या ग्रन्त में है, पर सुविधा के लिए उसे प्रारम्भ में रखा है।

उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः

अथ अंब्रत बानी[1]

दो०—अंब्रत हारि को नामु है जो चितु करि अचवाइ।
सांईदास जरा रोग तन ना ग्रसे आवागउन मिटाइ ।।

अंब्रत वानी अंब्रत हरि नाम। अविनी सुनि पावै विश्रामु ।।
कोटि जनिम प्रभ मुक्ता करै। जो अंब्रत बानी चित ते धरै ।।
जो अउगुन हो सभ मेटे। जो सत गुरि कर्पा करि भेटे ।।
आवागउन ते लये उवारि। अयसी अंब्रत बांनी सारु ।।
अंब्रत वानी अव्रत रूपु। सांईदास भज भये अनूप ।। १ ।।

आदि अंति लग एक उोंकारि। सर्व निरन्तर तिः बिस्थारि ।।
आपे सांचा साचा नाउ। साचा साहव साचा थाउ ।।
साचा अमर साचा नीशानु। साचा हुकम साचा परिवानु ।।
साचा रूपु साचा भगिवानु। साचा पदि साचा निर्वानु ।।
साची बानी साचा रंगु। सांईदास वसत तिः संग ।। २ ।।

साचे कर्म साची कर्तूत। साजी साषी साचा सूत ।।
साची प्रीति साचा निरंकारि। साची भक्त साचा दर्वारि ।।
साचा अंब्रत हरि को नाउ। साची वुद्ध हरि हरि गुन गाउ ।।
साचा मुल्ल साचा वापारि। साची प्रीति तरै संसारि ।।
साचा साचा हरि निज जांनों। सांईदास यदि साच समांनो ।। ३ ।।

---

१. 'अंब्रतवानी'—तत्सम शब्द अमृतवाणी है। यह बाबा साईंदास जी की रचना है। इसमें २४ अष्टपदियां हैं। प्रत्येक अष्टपदी के अंत में दोहा आया है। दस अर्द्धावलियों का एक पद है। इस प्रकार आठ पदों की एक अष्टपदी है। "अष्टपदी" छन्द भक्तकवि जयदेव के गीत गोविंद में सर्वप्रथम प्रयुक्त हुआ है। परवर्ती प्रायः सभी भक्ता ने इस छन्द में प्रभु की महिमा पाई है।

साचे गुण साची मनि बुद्धि। साचे भवन धरै मन सुद्ध ॥
साची प्रीत साची तन जोत। साचे धरिम विषै सच होत ॥
साचे सिमरे साचे कर्तार। साचे दृढ हरि सेती प्यारि ॥
साची धर्न साचे ब्रह्मंडि। साचे धारि धरे नउषंडि ॥
साचो साचा जिसका वर्तमानु। सांईदास तिस्तो कुर्बानु ॥ ४ ॥

साचे तर्ते साचे भा। साचे भान मिले सभ जा ॥
साचा गगन नरायणु साच। साची बुद्ध अउर परिकास ॥
साची वानी साचा आपु। साच उपाय जपे सच जापु ॥
साचे बणत बणाइ साचु। उपिजे विनसे साचो साचु ॥
सर्व निरन्तर एको एक। गहु सांईदास दास तिः टेक ॥ ५ ॥

साचे सिद्ध साध हरि ध्यावै। साचे तीर्थ अठ सठ नावै ॥
साचे भक्त जो हरि रस राते। साचे जोग जुगत हितलाते ॥
साचे शः साचे पातशाहः। राम नाम भजि पावे राहः ॥
साचे घटि मय सत्त संतोषु। साचे राचे लगे न दोषु ॥
साचे जीव जंत्र सभ साचे। सांईदास सच सर्नी राचे ॥ ६ ॥

साची माया हरि भक्त मिला। साच भक्त विच राषे भा ॥
साचे ऊधो साचे अविधूति। साचे जिं बस कीने दूति ॥
साची बांनी अनिहदि भनिकार। साचे सो जनि हरि सो प्यारि
साचे सुंन्न मंदरि लिवलावे। गुरि प्रसादि सदा सुष पावै ॥
साची राम नाम की योट। साईंदास जिः की हय योट ॥ ७ ॥

साचा पाप साचा तिः रूपु। साचे घरि मै साच सरूपु ॥
साचा हरि साचा हरि जापु। साचा थापउ थापे थापु ॥
साचा अंव्रत सच्च पसा। साचा साचा साच सुभ ॥
साचा साचा साचा साचु। जो कछु कीनो साचो साचु ॥
साचा साचा साचा एक। गहु साईंदास दास तिः टेक ॥ ८ ॥

दो०—सर्व निरंत्तर एक हय, सभ दिष्टी गुर एक।
सांईदास मानस की क्या योट हय, राम नाम करि टेक ॥

अष्टपदी—२

एको पुषु सकल घट मा। धर्न अकास पताल सभ था: ॥
एको एक एक प्रभ एक। आदि अंति लग एको एक॥
एको पुर्षु उपावन हारि। जो सिमरे सो उतिरे पारि॥
एको नाम एको नीशानु। हुकम चले ति सकल जहानु॥
एको आप आप फुन एक। सांईदास गहु हर्की टेक॥ १॥

एको एक अनेका रूपु। नाम अनन्त सरूप अनूपु॥
एको ब्रह्म ब्रह्म हय एक। सर्व मांहि षेले फुनि एक॥
एको चिहन चक्र ति: रंगि। जयसे दीप दसद: पतंग॥
एको एक एक ओंकार। सर्वमाह तांका विसथारि॥
एको एक कर्जाने जो। सांईदास मत उत्तम सो॥ २॥

साहब एक आप दातारि। सकल सिष्ट को देवनहारि॥
एको राम एक गोपाल। एको भक्तां सदा दयाल॥
एको क्रहन एक भगिवानु। साध संगि मल एको जानु॥
एको कर्त्ता हर्त्ता एक। प्रान पुर्षु प्रानन की टेक॥
मय वलहारि सदा बलिहारि। सांईदास तां परि सदवार॥ ३॥

एको ए नंद नंदन नंदिलाल। एको सभ जीयन प्रतपाल॥
एको महाराजि त्रैलोक। एको कर्ता सभ से थोक॥
एको तिरआ पुर्ष ह एक। अनेक माह जांनो हरि एक॥
एक हि कीनो सकल पसार। तांको अंतु न पारावारि॥
एको साचा दीनि दयाल। सांईदास ति: दिष्ट निहाल॥ ४॥

एक मछ कछ वाराह। एको नरिसिंघ भयो सहा॥
एको मदन मुरारी राम। एको पर्स राम हर्नाम॥
एको विष्न महादेअवु। एको जौग जुगंन्तर थापु॥
एको ब्रह्म एको इन्द्र। एको सेस सहस्र फणिन्द्र॥
एको सति सरूप तुम्नामु। सांईदास जो करै सु रामु॥ ५॥

एको धर्ती अंबर ईस। एको हरि एको जगिदीस॥
एको पविन पानी संसारि। एको एक एक कर्तारि॥
एको मंत्र माला को नाउ। एको ओंकारि पसरचो सभ थाउ
एको गुणा निधानि अपारि। अलष्य निरंजनि गिनत न पार॥
एको एक अनेकतिः रूपु। सांईदास हय तत्त सरूपु॥ ६॥

एको मदन मुरारी श्री हरि। एको राम क्रहन बंसी धरि॥
एको रचना राचन हरि। एको कहित सवद बीचारि॥
एको ब्रह्म जोति सभ माहः। एको सभ मय उलिटि समाह॥
एको ज्ञानी ध्यानी आपु। एको रह्यो सर्व बीआपु॥
एको नरंकारि नरि रूपु। सांईदास वह तत्त सरूपु॥ ७॥

एको पर्म पुर्षु सभ ठउर। एको राम रम्यो नहि अउर॥
एको कउलापति परिमेश्वरि। एको गोंविंद एक महेश्वरि॥
एको सकल कला भरिपूरि। एको एक निकटि नहि दूरि॥
एको करुणामय नंदलाल। एको पूर्नु पुर्षु गुपाल॥
एको वर्तमान हरि जानु। सांईदास तूं जान प्रमानु॥ ८॥

दो०—आपे आपे आप प्रभ, दूसरि नाही कोइ।
सांईदास सर्व रंगमय आप हय, जो सोझी मनि होइ॥

अष्टपदी—३

आपे करिता हर्त्ता आप। आपे दारा भर्ता आप॥
आपे साधू आपे चोर। आपे वणियो नंदि किसोरि॥
आपे मोनी, बोले आप। आपे रह्यो सर्व बीयाप॥
आपे पूत आप पित मात। आपे नीची उत्तम जाति॥
आपे षेल षिलाविनहारि। सांईदास आपे परिवारि॥ १॥

आपे हस्त आप हय घोडाः। आपे अरयन आप हय भोराः॥
आपे ध्रू आपे प्रहलादि। आपे पूर्न आदि जुगादि॥
आपे मूरिष तत्त ज्ञान। आपे अठसठ को इसनानु॥
आपे अपिनी जाणे बात। आपे उपिजे आप समात॥
आपे सूर आप बलहर्तु। सांईदास ताही सभसुर्त॥ २॥

आपे पसु आपे सुर्जात। आपे तरिवरि आपे पात ॥
आपे सिद्ध साध अविधूत। आपे मुष परि मिले[1] भभूति ॥
आपे जोगी अलष कहावे। आप डगम्बर्तांडी लावे ॥
आपे अपिनी कीरति करे। आपे जीवे आपे मरे ॥
आपे पउन पानी वसंतर। सांईदास जो जाणे अंतर ॥ ३ ॥

आपे ब्रह्म उपाविन हारि। आपे गगन गुफा निरधारि ॥
आपे दाता आपे भुक्ता। आपे सकल घटामय जुक्ता ॥
आपे तीरथ तबदोवासी। आपे अस्थर आप उदासी ॥
आपे पूरन जलि थल माह। पूर रह्यो घट घट मय ताह ॥
आपे ज्ञानी ध्यानी आप। सांईदास हरि अयसे जापु ॥ ४ ॥

आपे एक आप विसथारि। आपे भउ, राइ, द्रणहार ॥
आपे जोध महाबल सूरि। आपे ब्रह्म सकल भरिपूरि ॥
आपे राज महाबलि राज। आपे दीन सदा मुहस्थाजु ॥
आपे कागा आपे हंस। आपे उत्तम मध्यम बंस ॥
आपे नटूआ संकरा। वलि वलि सांईदास सदा ॥ ५ ॥

आपे आपे ऊच आपे नीच। आपे न्यारो आपे वीच ॥
आपे मनोहरि आपे राम। सकल सिष्ट के साजे काम ॥
आपे पापी पाप कमावे। आपे प्रगट बैकुंठ सिधावे ॥
आपे सहज रहे गलतान। आपे गहरि गंभीरि सुजान ॥
आपे विष्णु कहावे वीरि। सांईदास हरि चल वल धीरि ॥ ६ ॥

आपे धूप आप हय छाउ। आपे चलति लहति विश्राम ॥
आपे ससि अरि आपे भानु। आपे उडगण भयो विमानु ॥
आपे धर्ती आप अकास। आपे धउल धर्न की आस ॥
आपे मीरि मलक सुलतान। आपे दीन रंक भी जान ॥
आपे राम रमयो सभ थाह। सांईदास अंतर कछु नाह ॥ ७ ॥

---

१. मिलो=मले=लगाना।

आपे गोविंद जनि कर्पाल। आपे पतित सदा दयाल ।।
आपे पर्म पुर्षु परिमेश्वरि। आपे सांत सरूप महेश्वरि ।।
आपे सिष्ट उपावनि हारि। आपे सकल सिष्ट करितार ।।
आपे आतम आपे जीउ। आपे तिरिआ आपे पीउ ।।
आपे सील आपे संतोषु। सांईदास कछु लगे न दोषु ।। ८ ।।

दो०—सभ जगु विनसनिहारि हय विनसे नाही एक।
सांईदास अहिनस हरि गुण गाईये राम नाम की टेक ।।

अष्टपदी—४

एक न विनसे हरि चितलावे। एक न विनसे अहनिस ध्यावे ।।
एक न विनसे परि उपकारी। एक न विनसे सर्न मुरारी ।।
एक न विनसे हर्गुण गाय। एक न विनसे नाम ध्याय ।।
एक न विनसे जिह घटि प्रेमु। एक न विनसे सिमरन नेम ।।
एक न विनसे हरि की सर्ना। सांईदास प्रभ सर्वस भर्ना ।। १ ।।

एक न विनसे साध के संग। एक न विनसे प्रभ के रंग ।।
एक नि विनसे जो प्रभ चीत। एक न विनसे जो हर्मीत ।।
एक न विनसे साध संग दरहे। एक न विनसे हरि हरि कहे ।।
एक नि विनसे हरि की सेउ। एक न विनसे आतम भेउ ।।
एक विनसे प्रेम वलभा। सांईदास उत्तम गत पा ।। २ ।।

एक न विनसे बोले हर्वानी। एकनि विन से सर्व पछानी ।।
एक न विनसे सिमरण रीत। एक न विनसे मन पर्तीत ।।
एक न विनसे हरि रस पीवे। एक न विनसे निर्मल थीवे ।।
एक न विनसे भक्त कमावे। एक न विनसे सर्नी आवे ।।
एक न विनसे निर्मल ज्ञान। सांईदास घट लेय पछान ।। ३ ।।

एक न विनसे पंज वस करे। एक न विनसे जीवित मरे ।।
एक न विनसे हर्सो प्रीत। एक न विनसे निर्मल रीत ।।
एक न विनसे क्रोध निवारै। एक न विनसे हरि चित धारै ।।
एक न विनसे विष्या ते रहे। एक न विनसे हर्गुण कहे ।।

एक न विनसे ब्रह्म पछाने । एक न विनसे सभ सम जाने ।।
एक न विनसे परम पुरातम् । सांईदास जाणे जो आत्म् ।। ४ ।।

एक न विनसे नीच कहावे । एक न विनसे हरि चर्नी धावे ।।
एक न विनसे हर्गुन वानी । एक न विनसे ब्रह्म ज्ञानी ।।
एक न विनसे साध संगत मोत । एक न विनसे हर्गुण चीत ।।
एक न विनसे परि उपकारी । एक न बिनसे नाम चितारी ।।
एक न विनसे जिह् हरि सो प्यारी । सांईदास तिस तो बलहारि ।। ५ ।।

एक न विनसे लोभ गवाए । एक न विनसे हरि चित लाए ।।
एक न विनसे हरि संगत रचै । एक नि विनसे हरि कीर्तन मचे ।।
एक न विनसे ब्रह्म विचारी । एक न विनसे त्रिभवनि दातारी ।।
एक न विनसे पूरन ज्ञान । एक न विनसे हरि सो ध्यान ।।
एक न विनसे हरि जस कहे । सांईदास अनभय हो रहे ।। ६ ।।

एक न विनसे पूरन परिमेश्वरि । एक न विनसे सर्व वसेस्वॅर ।।
एक न विनसे हरि को नाम । एक नि विनसे आतम राम ।।
एक न विनसे प्रभ संगत राता । एक न विनसे नाम पछाता ।।
एक न विनसे होय निरास । एक न विनसे साध निवास ।।
एक न विनसे हर्गुण गात ! सांईदास ता परि वल जात ।। ७ ।।

एक न विनसे करि जप तप पूजा । एक न विनसे जिह् नाही दूजा
एक न विनसे जाने एक । एक न विनसे हर्की टेक ।।
एक न विनसे कथा हर करे । एक न विनसे सर्नी परे ।।
एक न विनसे सुंन्न समाध । एक न विनसे अगम अगाध ।।
एक न विनसे जिह् आतम जीता । सांईदास तिह् प्रभ वस कीता ।। ८ ।।

दो०—सभु जगु विनसत देषयो चला जात दिन रात ।
सांईदास विन भक्त हरि धृग परिछाई पात ।।

अष्टपदी—५

विनसे सो जो गुण नहि गावे । विनसे सो जो हर्न धियावे ।।
विनसे सो प्रभ को नही जाने । विनसे सो विष्या मनि माने ।।

विनसे सो नहि साध संगत रहे । विनसे सो जो मिथ्या कहे ॥
विनसे सो रहे सदा अचेत । ताकों कबूं न उविरे षेत ॥
विनसे सो परि निंद्या करै । सांईदास सो जनमे मरै ॥ १ ॥

विनसे सो प्रभ कों नहीं चेते । विनसे सो हरि सो नहि हेते ॥
विनसे सो बुरा साध को कहे । विनिसे सो विष्या रच रहे ॥
विनसे सो जो क्रोध मन करै । विनसे सो माया चित धरै ॥
विनसे सो जो रहे कुचील । हरि सिमरण बिनु कहा सुचील ॥
विनसे सो हर कथा न जाने । सांईदास प्रभ क्रपा समाने ॥ २ ॥

विनिसे सो हरि सो ना रचे । विनसे सो हरि गुण ना मचे ॥
विनसे सो हरि गुण नहि गावै । विनसे सो हरि को नहि ध्यावे ॥
विनसे सो विष्या को ध्यावे । विनसे सो जो लोभ लुभावे ॥
विनसे सो जनि भूला आपु । विनसे सो जाणे विष जापु ॥
विनसे सो जो सदा विकारी । सांईदास तिह वाजी हारी ॥ ३ ॥

विनसे सो जो हर् न पछाने । विन हरि अउरि रिदे करि जाणे
विनसे सो जो ब्रह्म दुखाए । विन भगवान आनर् बसाए ॥
विनसे सो हरि न नाम लए । अहि निस आतम विष को दए ॥
विनसे सो दूजा करि जाने । विन भगिवान अउर चित आने ॥
विनसे सो विकारि कों धावे । सांईदास वहि गत नहि पावे ॥ ४ ॥

विनसे सो हरि सर्न नही पडे । विनसे सो पंचन नही लडे ॥
विनसे सो हरि सो नहि भेटे । विनसे सो हउमा नहीं मेटे ॥
विनसे सो जिन रिदे न प्रेम । हरि सिमरण को नही नेम ॥
विनसे सो हरि हेत न जाणे । प्रभ की प्रीत नि मन मयआणे ॥
विनसे सो हरि सिमरण हीन । सांईदास वह सदा अधीन ॥ ५ ॥

विनसे सो जिन मनि अभमान । विनसे सो हरि धरे न ध्यान ॥
विनसे सो पाषंडी होइ । हरि सिमरण ते भूला सोइ ॥
विनसे सो विष्या फल मोह । विनसे सो जिस मन मो ध्रोह ॥
विनसे सो मन वस ना करे । विनसे सो विष्या संग भरे ॥
विनसे सो गुरि चर्न न लागे । सांईदास तिह देषु अभागे ॥ ६ ॥

विनसे सो हर्कीत नहि करे। विनसे सो दुभधा चित धरे ।।
विनसे सो जिस लालच दाम। विना भजन धारे अनिकाम ।।
विनसे सो हर्को विसराइ। विन हरि सिमरण अउध गवाइ
विनसे सो गुरि मंत्र विसारे। जनिम अमोल लजान विकारे।।
विनसे सो जिस मर्म न जाना। सांईदास वह मर्म भुलाना ।। ७ ।।

विनसे सो हरि पंथ न जाने। विनसे सो हरि साध न माने ।।
विनसे सो संसा मन करे। विनसे सो हर्चित ना धरे ।।
विनसे सो ममता मद माता। विनसे सो जिस हर्न पछाता ।।
विनसे नाम विना तन अंध। रोम रोम आवत दुर्गंध ।।
विनसे सो जिस आप भुलावे। वारि वारि जूंनी भरिमावे ।।
सांईदास विनसे जनि सोइ। हरि सिमरण ते भूला होइ ।। ८ ।।

सलोकु–हरि हरि नाम जनि जो जपे अउर साध दस द्वारि।
सांईदास जरा मर्न ते न अचेता तितिह अपर अपारि।।

अष्टपदी—६

हरि सिमरे सो सदा सुखाला। ताके ऊपरि आप दयाला ।।
हरि सिमरे तेऊ परिवान। अहि निस हरि सो धरे ध्यानि ।।
हरि सिमरे सो कबूं न मरे। भउ जल सागर अनिभय तरे ।।
हरि सिमरे सो सर्व ते ऊचा। सोइी जानो मुक्त पहूचा ।।
हरि सिमरे सो सोभावानु। सांईदास तिस्तो कुर्वानु ।। १ ।।

हरि सिमरे सो जम ते छूटे। प्रभ की मत अंतरि ते तूटे ।।
हरि सिमरे सो सुंन्न विराजे। अहिनिस गह हर् वाको गाजे ।।
हरि सिमरे सो राजनराजा। सुंन्न सविद तिह अंतिर वाजा ।।
हरि सिमरे पावे सुःखमानु। दुर्गा माही होय नहान ।।
हरि सिमरे सो पुर्ष निर्धानु। सांईदास सो पूर्न जानु ।। २ ।।

हरि सिमरे सो भउ जल तरै। गुर के सवद नि जनमे मरे ।।
हरि सिमरे तिस दुःख न विआपे। सर्व घटा हरि हर करि थापे ।।
हरि सिमरे विष्या ते रहे। गुरि प्रसाद अंम्रत रस गहे ।।

हरि सिमरे सोभा जगि होइ। दर्गा ठाक नि साके कोइ ।।
हरि सिमरे सो पाट हढावे। सांईदास दु:ख तज सुष पावे ।। ३ ।।

हरि सिमरे सो पूरन ज्ञान। जाके रिदे वसे भगिवानि ।।
हरि सिमरे निर्मल हो रहे। कबू न मुष ते मिथ्या कहे ।।
हरि सिमरे तिस सभ कछु सूझे। गुरि प्रसाद सुंन्न गृह विध बूझे ।।
हरि सिमरे मिटया[1] वागउनु। हरि सिमरे पर्से त्रय भउन ।।
हरि सिमरे तिस वात को जानु। सांईदास सदा कुर्वानु ।। ४ ।।

हरि सिमरे सो सुष का वासी। सदा सदा मेटे अविनासी ।।
हरि सिमरे सो आप भर्मेरे। सकल जगत तिह सर्नी परे ।।
हरि सिमरे सो आप भगिवानु। जा के अंतर हरि रस ज्ञानु ।।
हरि सिमरे सो हरि का दासु। हरि सिमरे आतम परिकास ।।
हरि सिमरे उत्तम मत तांकी। सांईदास गति क्या कहु बांकी ।। ५ ।।

हरि सिमरे अहि निस गुनि गाइ। गुरि प्रसाद सुंन्न लिव लाइ ।।
हरि सिमरे सो रत्ते साधा। गुरि प्रसाद छूडे मृग बांधा ।।
हरि मिसरे मेटे अभिमान। सोइी होवे दर् परवानु ।।
हरि सिमरे सो निहजल आसनु। गुर्प्रसाद सर्व दु:ख नासन ।।
हरि सिमरे पूरन्ता तया। सांईदास तिह जगत वया ।। ६ ।।

हरि सिमरे आतम वस राषे। गुरि प्रसादि अंवृत रस चाषे ।।
हरि सिमरे सो पदि निर्वानि। राम नाम सो धरे धियान ।।
हरि सिमरे सोइी सुरि ज्ञान। हरि दर्गा सोइी परिवान ।।
हरि सिमरे उत्तम जगिदीस। हरि सिमरे सभ जगि को ईस
हरि सिमरे सो साध कहावे। सांईदास दास गति पावे ।। ७ ।।

हरि सिमरे सोइी गत पाइ। सहज समाध रहे लिवलाइ ।।
हरि सिमरे सोइी अविनाशी। प्रेम भक्त को घट घटि वाशी ।।
हरि सिमरे मन माह समावे। गुर प्रसादि अंवृत फल षावे ।।

---

१. "आ" लिपिकार से छूट गया है।

हरि सिमरे तिस विघन न लागे । गुरि प्रसादि अनंदि घट जागे
हरि सिमरे जो ओहो कहे । सांईदास दास सो चहे ।। ८।।

दो०—सभ जगु सोया देषयो को जागृत हय नाह ।
जो जागृत हय सांईदास सोई सुष के माह ।।

अष्टपदी—७

जागे सो जनि मनि परितीति । जागे सो जिस निर्मल रीति ।।
जागे सो जिस ज्ञानि प्रकास । जागे सो जिस सुंन्न की आस ।।
जागे सो जिस सति गुर दया । जागे सो जिस हर घटि लया ।।
जागे सो जिस अंतर पीड । हरि सिमरण विनु विकल शरीरि
जागे सो जिस प्रेम रिद अंतर । सांईदास कछु नाह निरंत्तर ।। १ ।।

जागे सो जगिदीस पछाने । जागे सो हरि दरि को माने ।।
जागे सो जो ब्रह्म गियानी । जागे सो हरि कथा वषानी
जागे सो ममता ते रहे । जागे सो जो हरि जस कहे ।।
जागे सो बोले हरि वानी । प्रेम भक्त घटि माह पछानी ।।
जागे सो हरि रस मतवाला । सांईदास तिह चर्न रवालाः ।। २ ।।

जागे सो जो सभ सम जांणे । जागे सो जो तत्त पछाने ।।
जागे सो चउरासी वेधा । जागे सो जो हरि रस गेधा ।।
जागे सो जो अहि निस जागे । जागे सो जो हरि सो लागे ।।
जागे सो जो हरि रस राता । जागे सो हरि अंम्रत माता ।।
जागे सो आप दे त्याग । सांईदास तिह पूरन भाग ।। ३ ।।

जागे सो जो निगम विचारे । अहि निस रसना नाम उचारे ।।
जागे सो जो नर् बुध्यवानु । निस दिन सिमरे पुर्ष निधान ।।
जागे सो जो सति गुरि सर्नी । तांका चिह्न चक्र क्या वर्नी ।।
जागे सो जिस हरि जस प्रीत । प्रेम भक्त की उपजी रीत ।।
जागे सो जो निर्मल जोत । सांईदास दास हरि ओट ।। ४ ।।

जागे सो जिस सभ कछु सूझे । अहि निस अगिमि निगम विध बूझे
जागे सो जिस आतम चीन्हा । कोटि जनम प्रभ मुक्ता कीना ।।

जागे सो जो हर्का मीतु । प्रेम भक्त सो निर्मल चीतु ।।
जागे सो जिस ब्रह्म गियान । सदा रषे सति गुरि सो धियान ।।
जागे सो जिस मनि पतयाना । सांईदास दास दर्माना ।। ५ ।।

जागे सो जिस सीस न होवे । हरि जल सेती मुख को धोवे ।।
जागे सो जो पंचन भाषे । तांको वस करि अहि निस राषे ।।
जागे सो जिस निर्मल ज्ञानु । पूर्ण पुर्ष सो लगो धियानु ।।
जागे सो जिस नाम हुलास । सदा रषे हरि रसकी प्यासि ।।
जागे सो जिस सत संतोषु । सांईदास मिटया तिस दोषा: ।। ६ ।।

जागे सो जस घटि मय पीडि । बेदना जाणे सकल सरीरि ।।
जागे सो जिस हरि संगत हेत । अहि निस लिउ आवे हर सेत ।।
जागे सो जिस हर्मुष जानी । सति गुरि मिल अंतरि ठहिरानी ।।
जागे सो जो ब्रह्म गियानी । घटि घटि भीतिरि ब्रह्म पछानी ।।
जागे सो जिस सतिगुरि मया । सांईदास तिह सर्नी पया ।। ७ ।।

जागे सो जिस हरि हरि करिया । हर्रस अंम्रत मन मोल्लय: ।।
जागे सो जिस ब्रह्म रिद माही । दर्सन देषत जम डरि जाही ।।
जागे सो जिस प्रीत हर्कन । राम भक्त घट अन्तर्लीन ।।
जागे सो जिस हर्मन भायो । हरि भायो त्रयताप मिटायो ।।
जागे सो जिस अनहद वानी । सांईदास घटि माह समानी ।। ८ ।।

दो०—हरि का नामु अमोल हय निग्मसुर्त[1] विष्यान ।
सांईदास रंचक मन ते मन रखै पायो परिम निधानि ।।

अष्टपदी—८

हर्कानाम जप पूरण भागि । तांते मिट गए सकल संताप ।।
हरि का नाम सोई जन लेवे । जीविपिनु अर्पे हरि देवे ।।
हरि का नाम जपे सुष पावे । वारि वारि जूंनी नहि आवे ।।
हरि का नाम महा सुषदाई । आदि आंत्तमध्य सदा सहाई ।।
हरि का नाम विनासे पाप । सांईदास सदा हरि जाप ।। १ ।।

---

१. निगम श्रुति ।

हरि का नाम जगत सभ ऊचा । जो सिमरे मुक्त पहूचा ।।
हरि का नाम संत्त मन वसे । तिहि प्रसादि दूत जन मरे ।।
हरि का नाम जपे सो पूरा । ताके मनि के मिटे विसूरा ।।
हरि का नाम जपो रे भाइी । याही मय तुमरी भलिआाइी ।।
हरि का नाम सदा सुषिदाइी । सांइीदास दास लिउ लाइी ।। २ ।।

हरि का नाम साध संग पाए । निस वासरि हरिके गुनि गाए ।।
हरिका नाम जप गनिका तरी । गउतमानारि जपति निसतरी
हरि का नाम गंभीरि सुजान । जो सिमरे पूरिरा निर्वान ।।
हर्कानाम जपे जो कोई । मनिका संसा डारे षोई ।।
हर्कानाम मुक्त को दाता । सांइीदास नवि षंडी जाता ।। ३ ।।

हर्कानाम संत्त जनि ओट । जपि हर्नाम तजो विष पोट ।।
हरि का नाम जनि तारण हारि । जो सिमरे सोउ तिरे पारि ।।
हरि का नाम चुकाये भीडि । दूरि करे तनि होवे पीडि ।।
हरि का नाम जपे वडिआाइी । जगि भीतिरि होवे प्रभताइी ।।
हरि का नाम जपत दुखजाइ । सांइीदास पदि सांत समाइ ।। ४ ।।

हरि का नाम जपे सो जागे । गुरि प्रसादि हरि सेवा लागे ।।
हरि का नाम जपति विश्राम । गुरि प्रसादि पूरण सभ काम ।।
हरि का नाम सर्व सुषिदाइी । मिटे वियोग मन हरि राइी ।।
हरि को नाम जपे जो कोइ । तीनि लोक ते न्यारा होइ ।।
हरि का नाम जपे दिन रयन । सांइीदास तिहि घटि मह चैयन ।।५ ।।

हरि का नाम जपे सुरि ज्ञान । गुरि प्रसादि हरि रिदे ध्यानि ।।
हरि का नाम जपे संन्यासी । गुरि प्रसादि काटी जम फासी ।।
हरि का नाम जपे जोप्रानी । गुरिप्रसादि मिटि आविरा जाराी
हरि का नाम जपे परिवानु । जम वयरी की चूकत कानि ।।
हरि का नाम जपे सो पूरा । सांइीदास मिटि सकल विसूरा ।। ६ ।।

हरि का नाम जपे वयरागी । गुरि प्रसादि भय सकल तयागी
हर्कानाम जपे मनि माह । गुरि प्रसादि अंतर्कछु नाह ।।
हरि का नाम जपे नही मरे । गुरि प्रसादि भय सागर तरे ।।

हरि का नाम परिम पुरिषोतम । निराकारि निरवयर नरोतम
हरि का नाम जपे चितराता । सांईदास नही जूंनि फराता ॥ ७ ॥

हरि का नाम जपे चितु लाइ । गुरि प्रसादि दुर्मत मिटि जाइ ॥
हरि का नाम मुक्त को दाता । तिहि प्रसादि नहीं जूंन फिराता
हरिका नामु हय अंमृत बाणी । तिहि प्रसादि सभ सुर्त पछानी
हरि का नाम जीविण को मूलु । तिस सिमरे तनि जावे सूलु ॥
हरि का नाम लिउो रिदे संम्हाल । सांईदास जपिए करितारि ॥ ८ ॥

सलोकु—पतिति उधारण मैय सुणे काज सवारण राम ।
सांईदास ताह ओट गह पाप जाय संग्य लिये हरिनाम ॥

अष्टपदी—६

सुनियत होय हरि भक्त जन तारन । सुनियत हो हरि काज सवारन ॥
सुनियत हो हरि पतित उधारन । सुनियत हो हरि असुरि सिहारिन
सुनियति हो गोवर्धन धारन । सुनियति हो हरि दुष्ट निवारन ॥
सुनियति हो हरि रघपति राइ । सुनिअति हो हरि भक्त सहाइ ॥
सुनियति हो मुरिली धरि माधो । सांईदास प्रभ अन्तर्साधो ।१।

सुनियति हो गोविंद मुरारी । सुनियति हो हरि कुंजि विहारी ॥
सुनिये तो महाराजन राजा । सुनियति हो हरि कारज साजा ॥
सुनियति हो त्रभवनि के दाता । सुनियति हो घटि घटि में राता ॥
सुनियति हो हरि गगनि निवासी । सुनियति हो हरि प्रभ अविनासी ॥
सुनियति हो हरि पुर्ष निधान । सांईदास सुनि पति निर्वान ।२।

सुनिअति हो त्रिभवनि के राया । सुनियति हो अनभय सुखदाया ॥
सुनियति हो पूरण परिमेश्वरि । सुनियति हो हरि आप महेश्वरि ॥
सुनिअति हो धर्नी धरि गोविंद । सुनियति हो पूरण परिमानंद ॥
सुनियति हो वसु देयुकि नंन्दन । सुनियति हो हरि असुरिनकन्दन ॥
सुनियति हो निरकार अकलहर । सांईदास सुनियति हय जलधरि। ३।

सुनियति हो मुकंदि मुरारी । सुनियति हो संतन हितकारी ॥
सुनियति हो राविण को मारन । सुनियति हो वभछनि तारन ॥

सुनियति हो हरि सन्त सहाई। सुनियति हो भक्तन सुषिदाई ।।
सुनियति हो दुख नासननामा। सुनियति हो घटि घटि विस्रामा ।।
सुनियति हो धारन सभ धर्नी। सांईदास रूप क्या वर्नी।४।

सुनियति हो करुणानिधि स्वामी। सुनिअत हो हरि अंतरजामी ।।
सुनियति हो भक्तनि सिर ताजु। सुनिअति हो महाराजनराजु ।।
सुनियति हो हरि मुक्त को दायक। सुनिअति हो भक्ता के नाइक ।।
सुनियति हो हरि अपरमवासी। सुनियति हो हरि सास विलासी ।।
सुनियति हो हरि ब्रह्म गियान। सांईदास पूरण पद जानि।५।

सुनियति हो हर्केवल ब्रह्म। सुनिअति हो हरि निर्मल धर्म ।।
सुनियति हो कउलापति केस्वर। सुनिअति हो पूरण परिमेश्वरि ।।
सुनियति हो हरि नंदि के नंदा। सुनियति हो विंद्रावनि चंदा ।।
सुनियति हो हर्कीट पछारन। सुनिअति हो हरि वकी उधारन ।।
सुनिअति हो वृजवासी ग्वाल। सांईदास भज भये निहालि।६।

सुनिअति हो हरि हरि हरिवर। सुनिअति हो माधो धर्नी धरि ।।
सुनियति हो हरि ईसनिईस। सुनिअति हो जगि के जगिदीस ।।
सुनिअति हो हरि राम के रामा। सुनिअति हो हरि पूर्ण कामा ।।
सुनियति हो निरवयर गोसाई। सुनियति हो व्याप्यौ सभ थाई ।।
सुनिअति हो वावन विपधारी। सुनियति हो दुख टारिण हारी ।।
सुनिअति हो जन पयज वढावनु। सांईदास संत्त गुण गाविन।७।

सुनिअति हो हरिकेस गुसांई। सुनिअति हो सुंदरि अधिकाई ।।
सुनियति हो हर्नंदकुमारि। सुनियति हो हरि अपरि अपारि ।।
सुनिअति हो हरि हरि भगिवान। सुनियति हो हरि पुर्ष निधानि ।।
सुनियति हो हरि बिश्वु के धारनि। सुनिअति हो हरि प्राण अधारन ।।
सुनियति हो सीतापति राम। सांईदास सुनि अति विश्राम।८।

सलोकु–सुंन्न सवद मनि बूझ के तत पद करि वियुहारि।
सांईदास अहि निस सति गुरि चर्न लग तारे तारण हारि।।

अष्टपदी—१०

निस दिन सति गुरि चर्नी लागो। अंम्रत हरि रस विष्या को त्यागो॥
सति गुरि चर्न सर्न सो राचो। विष्या तज अंम्रत सो माचो॥
सति गुरि चर्न जोऊ जन राता। सो जनि अवगति गत में माता॥
सति गुरि चर्न मिले वडिभागि। प्रेम भक्त जिस आतम लाग॥
सतिगुर चर्न धारि मनि माह। सांईदास सति गुरि बलि जांह।१।

सतिगुरि चर्न मुक्त के दाता। तिह प्रसादि हरि के रंगराता॥
सति गुरि चर्न जपत विश्रामु। वहुडो जनम सो नाही काम॥
सति गुर चर्न मय सुर्त समानी। गुरि प्रसाद हरि सो लिउ लानी॥
सति गुरि चर्न प्रीति करि ध्यावे। जम वयरी की तलवि न आवे॥
सति गुरि चर्न धारि मनि माह। सदा रहे सुख आनंदि तांहि॥
सति गुरि चर्न पतित को तारन। सांईदास प्रभ अपरि अपारन।२।

सति गुरि चर्न मिले मल खोवे। गुरि प्रसादि सर्व सुष होवे॥
सति गुरि चर्न जपो रे प्रानी। गुरि प्रसादि बोले हर्वानी॥
सति गुरि चर्न सकल जग तारन। भउ जल कठन सो पार उतारन॥
सति गुरि चर्न रचत दुषजाइ। भय सागर ते पार पराइ॥
सति गुरि चर्न जो परे। सांईदास तांके दुष हरे।३।

सति गुरि चर्न जपति सुख होवे। जन्मि जन्म सकले दुख खोवे॥
सति गुरि चर्न रषो घट माह। सुरि नर्मुन तांके बल जांह॥
सति गुरि चर्न सीस परि धरो। गुरि प्रसादि निश्चल सुष करो॥
सति गुरि चर्न जास निज गहे। आविन जाविन ते वह रहे॥
सति गुरि चर्न प्रानि सुख दाई। सांईदास घटि लिउो वसाई।४।

सति गुरि चर्न चेत घटि माहि। सुंन्न समाध रहो लिउ लाय॥
सति गुरि चर्न वषाने जोय। सदा सदा जग मुक्ता होय॥
सति गुरि चर्न कटे जम फास। निसवासरि विति माह हुलास॥
सति गुर चर्न मले दुषजाइ। जिउ गंग्या जल जगत्तराइ॥
सति गुरि जर्न जपत कै तरै। सांईदास चर्ना पर परै।५।

• सति गुरि चर्न लग पाप विनासा। सति गुरि चर्ण मन पूरण आसा ॥
सति गुरि चर्न हय सर्व निधान। जो सिमरे सो पावे दान ॥
सति गुरि चर्न जोड़ी चित लावे। आवा गउन को भर्म मिटावे ॥
सति गुरि चर्न जोड़ी चित लावे। आवा गउन को भर्म मिटावे ॥
सति गुर चर्न नाः सुष करे। सांईदास चर्नो दुष हरे।६।

सति गुरि चर्न तीरथ इस्नान। जो सिमरे सो पूरण जान ॥
सति गुरि चर्न चेत सुष अधक। जिउ पंछी मुक्ता वस बधक ॥
सति गुरि चर्न मटावे पाप। मुष अःहिनिनिसि कीजे यहि जाप
सति गुरि चर्न प्रानि सुषदाता। जो सिमरे त्रैयीलोकी जात्ता ॥
सति गुरि चर्न निर्मल नरि जोत। सांईदास चर्नो की ओटि।७।

सति गुरि चर्न सेवै सुरि ज्ञानी। मुष अहिनिस उचिरे हर्वानी ॥
सति गुरि चर्न रूप भगवान। जो सिमरे सो तरया जानु ॥
सति गुरि चर्न क्या महिमा वर्ना। जो सिमरे हो वृद्ध ते तर्ना ॥
सति गुरि चर्न प्रानि प्राना। सतिगुरि चर्न चेत ना हाना ॥
सति गुरि चर्न प्रगिटि नीशान। सांईदास निसवासरि ध्यान।८।

सलोकु—नमो नमो हरिकेस[1] हरि पूरण पुर्ष निधान।
सांईदास आदि लग एक हय ओंकारि हरि जान ॥

अष्टपदी ११

नमो नमो ओंकारि अकल हरि। नमो नमो पूरण वंसी धरि ॥
नमो नमो हरि मछ अवितारी। नमो नमो संतन हितकारी ॥
नमो नमो सुषकरि धर्धर्ना। नमो नमो नर्सिह अपर्ना ॥
नमो नमो हरि घटि घटि वासी। नमो नमो पूरण अविनासी ॥
नमो नमो वावन विपधारी। नमो नमो सांईदास मुरारी।१।

नमो नमो जमिदिग्नक सुत हरि। नमो नमो श्रीपति सारंग्य धरि ॥
नमो नमो क्रहन करुणा निध। नमो नमो हरि वोध विमल वुध ॥
नमो नमो गोविंद वनिवारी। नमो नमो हरि कुंजि विहारी ॥

---

१. हृषीकेश शब्द की सम्भावना है।

नमो नमो त्रिभवन के राया। नमो नमो अनभय सुषदाया ॥
नमो नमो रिषकेश गोसाई। सांईदास नमो हरितांई।२।

नमो नमो मोहन रिदवानी। नमो नमो हरि सारंग्य पानी ॥
नमो नमो गोवर्धन धारी। नमो नमो हरि पतित उधारी ॥
नमो नमो निरकारि निरंजन। नमो नमो हरि द्रग मय अंजन ॥
नमो नमो प्रान के प्रान। नमो नमो पूरण भगिवान ॥
नमो नमो हरि ब्रह्म गियान। सांईदास नमो हरि जान।३।

नमो नमो हरि प्रानि उधारी। नमो नमो घटि घट उजयारी ॥
नमो नमो प्रभ स्याम सुन्दर हर। नमो नमो लक्ष्मन श्री रघवरि ॥
नमो नमो हर्मुक्त के दाता। नमो नमो त्रयीलोकी जाता ॥
नमो नमो दुख भंज्जन राम। नमो नमो हरि पूरण काम ॥
नमो नमो श्री हलधर वीरि। सांईदास मनि में हरि धीर।४।

नमो नमो ओपाविन लोग। नमो नमो हरि पोषनि भोगि ॥
नमो नमो पूरण परिमेश्वरि। नमो नमो हरि सर्व बसेश्वरि ॥
नमो नमो हरि आदि जुगाद। नमो नमो करि मिटे उपाध ॥
नमो नमो हरि गनका वीरि। नमो नमो प्रभ स्याम सरीरि ॥
नमो नमो हरि दे दनदान। सांईदास नमो भगिवान।५।

नमो नमो धारिन ब्रह्मंडि। नमो नमो कर्ता नउषंडि ॥
नमो नमो हरि साध सहाई। नमो नमो भग्तन सुषदाई ॥
नमो नमो हरि केवल ब्रह्म। नमो नमो हरि निर्मधरिम ॥
नमो नमो माधो अविनाशी। नमो नमो काटी जम फासी ॥
नमो नमो हरि दान दातारी। सांईदास नमो ववित वारी।६।

नमो नमो निर्मल हरि जोत। नमो नमो सभ डारी पोट ॥
नमो नमो हरि ज्ञानि विचारी। नमो नमो तारे अघि भारी ॥
नमो नमो हरि जोति प्रकास। नमो नमो हरि पूरण आस ॥
नमो नमो हरि पतित उधारन। नमो नमो हरि संगट टारन ॥
नमो नमो हरि सर्वस मानो। सांईदास नमो हरि जानो।७।

नमो नमो हरि कंस विडारन। नमो नमो हरि रावण मारन ॥
नमो नमो हरिनाषस छेदन। नमो नमो दुसासनि वेधन ॥
नमो नमो पतिताको तारन। नमो नमो हरि पयज निवारन ॥
नमो नमो धारिन सभ धर्ना। नमो नमो हरि कारिन करिना ॥
नमो नमो हरि एको एक। सांईदास मनि मोहरि टेक।८।

दो०—एको एक अनेक गत नाना रूप अपार।
सांईदास जोगी जंग्यम मुनि जना अंत्त ना पारावारि ॥

अष्टपदी—१२

कै जोगी कै जोगि धियान। अंत न पावे श्री भगवानि ॥
कै जोगी के लिङ लडिकावे। सो भी प्रभ को अंत न पावे ॥
कै मुन जनि जो मुषो न बोले। देस दिसंतर माही डोले ॥
कैय वयरागी वनि को धावे। धाय धाय भ्रम थक जावे ॥
बनि षंडि सोवे सांति नि आवे। सांईदास समझे तै गत [illegible]।१।

कैइी उदासी रहे उदास। बनि माही है ताकों वास ॥
कबिहूं नगिरि माहि नही आवे। भरिमति भरिमत गत नही पावें
जवि लग सतिगुरि चर्नन भेटे। तवि लग तिमर कहा मनि मेटे ॥
घरि की सिद्ध कयसे करि पावे। जो वन मय भर्मे चित लावे ॥
रहे उदास सदा मन माह। सांईदास सोइी गत पाह।२।

कैइी रूप संन्यासी हूए। मनि पाखनु भ्रमत ही मूए ॥
हउमा मनि ते नाह भुलाने। तब ते वह पाखंडी जाने ॥
जटा धारि भगिवे करि अंवरि। भुजा खडी कर भए डिगंबरि ॥
नेत्र मूंद वह धरे धियान। कयसे गति पावे भगिवान ॥
प्रगट रूप हरि सभ घट माह। सांईदास निज धन धरि ताहि।३।

कैइी कहे जो हम भगवान। ताके रे मनि डूवा जानि ॥
कैइी कहें जो हम भए साध। सो विष्या की फासी बांध ॥
कैइी कहे जो जो हम भए पूरे। तांके कवूं न मिटे विसूरे ॥
कैइी कहे हरि अउरि न कोइी। आपस को करि थापे सोइी ॥
कै भुल्के विष्या अभिमानि। सांईदास अयसे अज्ञानि।४।

कैइी कहै जो हम निर्वानी । सो कयसे मिले सारंग्य पानी ।।
कैइी कहे जो हम वुद्धवानु । सो मूर्ष, करि अंद्धे जान ।।
कैइी कहै जो हम सभ ऊचे । सोइी हय सभ ही ते नीचे ।।
कैइी कहे जो हम परिउपकारी । सो कविहूं ना मिले मुरारी ।।
कैइी कहे हम ब्रह्म संग्य राते । सांइीदास वह भूठ वकाते ।५।

कैइी कहे हम सभ के राजे । तांके सदा न पूरे काजे ।।
कैइी कहे हम ते कछु होया । सोने सदा सदा सुख खोया ।।
कैइी कहे हम सरि कौं ना । सोई हय नीच जगत के मौना ।।
कैइी कहे हम ज्ञानि विचारी । ते डूबे भय धार मभारी ।।
कैइी कहे हम सभ ते रहते । सांइीदास विष्या मद वहते ।६।

कैइी कहे हम हरि मतवाले । सो भर्मत हय जिउ वरिवाले ।।
कैइी कहे हम हय सुंन्न वासी । सो फासे हय जगि की फासी ।।
कैइी कहे हम सभ के दाते । सोइी आनि लोक ते खाते ।।
कैइी कहे हम हय पतवानु । तांको रे मनि धृग कर्जान ।।
कैइी कहे हम हय सुरि ज्ञान । सांइीदास ते मूरष जान ।७।

कैइी कहे हम विप्प कहावे । सो हय अंध मुक्त नही पावे।।
कैइी कहे हम देवे दान । सो मूरष अंधे अज्ञान ।।
कैइी कहै हम सांत सरूप । क्षिन मय होवे गहरा रूपु ।।
कैइी कहे हम विद्यावान । पढि पढि भूले वेद पुरान ।।
कैइी कहे हम रषत पिंडु । सांइीदास सो काया डंनु ।८।

दो०—माया सभ जगि व्याप हय एक रहे अनिताह ।
सांइीदास प्रेम भक्त अह निस करे सो जनि उत्तम वाहि ।।

अष्टपदी—१३

मुष ते बोले अंवृत वानी । सोइी मुक्ते जानो प्रानी ।।
मुष ते बोले सभ ते नीच । तांको लगे न विष्या कीच ।।
मुष ते बोले हरि रस पीवे । सो तो आदि अंत मध जीवे ।।
मुष ते बोले सहज सुभाइ । जिहि निज सुण सभ जगत अघाइ
मुष ते बोले राम उचारे । सांइीदास ताह चल हारे ।१।

मुष ते बोले हरि गुनि गावे। सो तो प्रगटि बकुंठ सिधावे॥
मुष ते बोले हरि रस राचे। विष फल त्याग सुधा रस माचे॥
मुष ते बोले ब्रह्म विचारे। सदा सदा हरि अंतरि धारे॥
मुष ते बोले अंम्रत बयन। जिहि सुनि पावत हो सुष चयन॥
मुष ते बोले हरि रस चषे। सांईदास हरि संग्य चिति रषे।२।

मुष ते बोले हर हर हरि। ताके सवद सदा दृढ करि॥
मुष ते बोले सभ सुध जान। सो तो हरि दर्गा परिवान॥
मुष ते बोले हय मथ वानी। सहज सुध्व घटि माह समानी॥
मुष ते बोले हर्को नाम। जिह सुनि पावे जगि विश्राम॥
मुष ते बोले हरि इक जान। सांईदास तां परि कुर्वानि।३।

मुष ते बौले आतम चीन्हे। सो तो हर्ने मुक्ते कीन्हे॥
मुष ते बोले उलिटे पउनु। तांके मिट गए आवा गउनु॥
मुष ते बोले हरि चित धारे। पंचन वस करि ज्ञानि विचारे॥
मुष ते बोले दृढ़ करि ज्ञानि। जिहि सुन जगत लहत निर्वान॥
मुष ते बोले हरि लिव लाइ। सांईदास सदा मुक्ताइ।४।

मुष ते बोले दुर्मत छाड। विषु फलि कटि सुधा फल गाड॥
मुष ते बोले षुल्हे कपाट। तांकों सूझे अठसठ हाटि॥
मुष ते बोले विष फल त्याग। हरि सिमरे ते पूरण भाग॥
मुष ते बोले हरि की गाल[1]। निस दिन सिमरे श्रीगोपाल॥
मुष ते बोले सुंन्न विराजे। सांईदास सुष गहरे गाजे।५।

मुष ते बोले हरि संग्य हेत। विष्या मनि तजि हरि हरि चेत॥
मुष ते बोले हर्को वानी। सोई जांनो ब्रह्म गियानी॥
मुषते बोले अगम्य अथाह। वाह वाह जे को वाहः॥
मुष ते बोले उनिमनि हरे। गुरि प्रसादि अनिभय जस कहे॥
मुष ते बोले हरि सो ध्यान। सांईदास तिह पूरण जानि।६।

---

१. गाल >गल्ल=बात।

मुष ते बोले कहन कन्हैया। सो नरि सदा सदा सुषैया ॥
मुष ते बोले अनिहदि सूझे। सो नरि अगिमि निगम विध बूझे
मुष ते बोले हरि विज्ञान। तिस जनि परि जाईए कुर्बान ॥
मुष ते बोले गुरि चर्न पषालु। तिस जन परि प्रभ आप दियाल ॥
मुष ते बोले हरि नाम धिआवे। सांईदास सोई गति पावे।७।

मुष ते बोले हरि रस पीवे। सो नरि सदा ही जीवे ॥
मुष ते बोले हर्चित धरे। सो जनि जीवे कवूं न मरे ॥
मुष ते बोले सीता राम। तिस जनि सो जम नाही काम ॥
मुष ते बोले प्रेम कहानी। हरि सिमिरण गति तिन हो जानी
मुष ते बोले निज घरि रहे। सांईदास अविगति गत लहे।८।

सलोकु–अगम निगम सभ सोधयो अंत नाही गति पात।
सांईदास एक रूप पसरयो ब्राह्मण षत्री जात ॥

अष्टपदी—१४

अंत नहीं करुणा निध स्वामी। अंत नही हरि अंतर जामी ॥
अंत नही धरिनी धरि गोविंद। अंत नाही पूरण परिमानंद ॥
अंत नाही सागर अरि सलता[1]। अत नाही जो हरि संग मिलता ॥
अंत नाही हय सूरज चंदा। अंत नाही हय मेर मुकंदा ॥
अंत नाही घटि ज्ञान विचार। सांईदास अंत नहि पार।१।

अंत नाही हय जल थल वास। अंत नाही हय धर्न अकास ॥
अंत नाही बोलण चुप कर्ना। अंत नही हय जीवन मर्ना ॥
अंत न तर्वरु अंत न पत्तर। अंतु न पउन पानी बासंतर ॥
अंतु न सुन्न समाध हय अंत। अंतु न सांत उपाध हैय अंतु ॥
अंतु नही जो जल थल जीया। सांईदास अ अनंत हर् कीया।२।

अंत नहीं गंभीरि कउलास। अंत नही हय जोत प्रकास ॥
अंत नही हय सुरि नरि देवा। अंत नाही हय प्रभ की सेवा ॥
अंत नाही हय हर् के रूपु। अंत नाहीं हय तत्त सरूपु ॥

---

१. सलता>सरिता, "रलयोरभेदः"।

अंत नहीं हय वेद पुरान। अंत नही हर् कीर्त वषान।।
अंत नाही अयुतार्ज कीन्। सांईदास हरि अंत को चीन्।३।

अंत न सपना अंत न भूपु। अंत न छाउ अंत नहि धुपु।।
अंत न मूरष अरि बुधवानु। अत न राम क्रहन भगिवान।।
अंत न पडे, ज्ञान नहि अंत। अंत न चोट साध नहि अंत।।
अंत न तिरया पुर्ष न अंत। अंत न पुंन्न पाप नहि अंत।।
अंत न धउल पताल नहि अंत। सांईदास प्रभ अंत बिअंत।४।

अंतहि स्वर्ग नर्क नह अंत। अंत नहि राग दोष नहि अंत।।
अंत नहि हस्त अंत नह घोड। अंत नहि निगम अंत नह थोड।।
अंत न फुल फलन वृष न अंत। अंत नहि घाटि वाट नहि अंत।।
अंत न देव दानू नहि अंत। अत न पशू प्रेत नहि अंत।।
अंत न जुगत अजुगति नहि अंत। सांईदास प्रभ सदा बियंत।५।

अंत न भूष तृपत नहि अंत। अंत न उतपत षपत न अंत।।
अंत न जीवण हतन न अंत। अंत न सोव जाग नहि-अंत।।
अंत न जोगी जोग धियानी। अंत न मूरष अर सुर ज्ञानी।।
अंत नही सागर रतनागर। अंत नही प्रभ सभ गुन आगर।।
अंत विअंत अंत, को पावे। सांईदास धन नामि धियावे।६।

अंत न आन आप नहि अंतु। अंत पुछावण कहे न अंतु।।
अंत न धरिण धारण ब्रह्मंडि। अंत न सपत दीप नउषंड।।
अंत न सेस अंत नहि नागि। अंत अभागि अंत नह भागि।।
अंत न दीप न अंत पतंग्या। अंत अनंत अनंत तरंग्या।।
अंत अनंत अंत्तत निहारे। सांईदास दर्सन बलहारे।७।

अंत न पेषे ग्रह भगवान। अंत न हरि हर हर जान।।
अंत नहीं कउलापति के स्वर। अंत नही पूरण परिमेस्वर।।
अंत नहीं हर्नदकुमार। अंत नही हरि अपर अपारि।।
अंत नही, क्या अंत बषानूं। अंत कविन बिध कर्के जानूं।।
अंत नही क्या कह्ये अंत। सांईदास हर् जानि विअंत।।

सलोकु—सभना को प्रभ देत हय वर्धा कोई नाहि।
सांईदास जल थल जो जीव से सकले सिमरे ताह ॥

अष्टपदी—१५

साध देत हरि चोरिन देत। नरन्देत हरि ढोरन देत ॥
मूरिष सभ अज्ञानी देत। महा प्रसंन्न सुरि ज्ञानी देत ॥
तिरिआ देत पुर्ष भी देत। पूरण पूर्पूरि सभ लेत ॥
भर्म देत हरि सांतक देत। मद्धम देत कुल आगर देत ॥
देत देत क्या भाष सुनाऊ। सांईदास प्रभ के बल जाऊ।१।

दीना नाथ दयाल दियाल। सभ जीयनि को हय प्रतिपाल ॥
या विनु दूजा अविरि न कोइ। जल थल भीतरि रहा समोइ ॥
स्वास स्वास में सभे सम्हारे। एक स्वास नाम नो विसारे ॥
जी जी की हरि सोभी धारे। पल पल छिन छिन काज सवारे ॥
अयसे प्रभ पर्संद सद वार। सांईदास सदा बलहारि।२।

सभ जीयन को आप सहाइ। कउलापति हरि तृभवन राइ ॥
सभ जीयन को जानरा योग। वा विन अउर न होया होग ॥
अयसे ठाकुर परि वल जाऊ। निसवासरि तांके गुन गाऊ ॥
गाय गाय गुण आतम तोषू। ब्रह्म अग्नि यह विध कर्पोषू ॥
प्राणनाथ को घट मय लय्ये। सांईदास प्रभ के वल जय्ये।३।

दीन दियाल दया निध जानूं। पूरण पुर्ष सदा भगिवानूं ॥
वन तृण वृक्ष सलता परिवाह। जल थल भीतर वा हरि ताह ॥
या विनु अउर न सूझे कोइ। हरि समसरि, को दूजा होइ ॥
पलि पलि छिनि छिन ना विसरावो। स्वास स्वास हर्के गुनि गावो ॥
प्रेम प्रीत करि चित लाए। सांईदास सदा गुण गाए।४।

अयसे प्रभ के वल वल जाईए। उमगि उमग मन हर् जस गाईए
प्रेम प्रीत चित में ठहिराई। भ्रम प्रवाह को दिय वहाई ॥
देवन हारि निरंजनि देव। आठ जाम लग हर्की सेव ॥
साध संज्ञ मिल गावो गीत। त्याग डारि चित ते विपरीति ॥
अंतरि गत हो भज भगिवान। सांईदास निश्चे मनि मानि।५।

पल पल प्रेम बढाउो राम। आदि अंत सुफलो यहि काम ।।
अउरि लालसा चितवनि त्यागि। राम नाम की सेवा लाग ।।
प्रगिटि निशान वजे जगि माह। कछु संसा चित उपिजे नाह ।।
साहिब मिल जवि साहवु हूआ। संसा तउ जो होवे दूया ।।
एकु दुयी का षोवे मूल। सांईदास मिल आनंद भूल ।६।

चउथे पदि माही घरि वास। सांत सरोवरि माह विलास ।।
ज्ञान पंखडी षोल्हे जाइ। सहज झूलरणे झूले आइ ।।
करि ववेक तुरिया घटि लयन। चउथे पदि मय सभ भए चयन ।।
ज्ञानि ववेक रहत कछु नाह। चउथे पदि मय जाय मिलाह ।।
निश्चल मारग सांत पदि जानु। सांईदास तत्त लेय पछान ।७।

सकल घटा कों देत हरी हर। रे मनि सिमरण ताह करी करि ।।
तांकों त्याग न अउरी लाग। हरि रस रच विष्या सो भाग ।।
सभ जगि देत कहाउ चिराऊ। अयसे हरि सभ माह लषाऊ ।।
सर्व घटा मय आपे रहया। विन भगिवानि न दूजा भया ।।
प्रभ की कथा कहा कवि कह्यो। सांईदास हरि भज सुष लह्यो ।८।

सलोकु—मिथ्या विन हरि सिमरने तनि धन जोविन माल।
सांईदास मिथ्या विष्या चित धरय आरण आरण जंज्जाल ।।

अष्टपदी—१६

मिथ्या परि नारी चित राषे। मिथ्या सो विनु हरि कुछ भाषे ।।
मिथ्या हरि गुण विन कुछ बोले। मिथ्या देस दिसंतर डोले ।।
मिथ्या सो पर्द्रव्व चित धारे। मिथ्या सो विष्या संग भरे ।।
मिथ्या धनि जोविन विन नाम। मिथ्या विन हरि सकले काम ।।
मिथ्या विन हरि सिमरण देहः। सांईदास सिमरण विनषेहः ।१।

मिथ्या हर्ष शोक जो व्यापे। मिथ्या विन हरि अउर जु जापे ।।
मिथ्या सुति दारा परिवार। मिथ्या नाम विना अउतारि ।।
मिथ्या पहरण षावन भोगि। मिथ्या ध्यानि विना सभ जोग ।।
मिथ्या प्रेम विना मुष वानी। मिथ्या धरे आन विषानी ।।
मिथ्या थान्र थनंतर वासा। सांईदास मिथा सभ आसा ।२।

मिथ्या भक्त[1] विना जो करे। मिथ्या परि प्रीक्षा चित धरे॥
मिथ्या विन हरि सकले काम। मिथ्या विन रसना हर्नाम॥
मिथ्या विन हरि कथा गियान। मिथ्या विन हरि आउना जानु॥
मिथ्या रूप रंज्ञ अभमान। मिथ्या माया को करि जान॥
मिथ्या हस्त अश्व असिवारी। सांईदास तूं सिमर मुरारी।३।

मिथ्या राम नाम विन वानी। मिथ्या प्रेम भक्त विन हानी॥
मिथ्या पर्निद्या जो करे। मिथ्या लालच माया धरे॥
मिथ्या विन हरि नाम जु लए। मिथ्या हरि को तज चित दए॥
मिथ्या ग्रह कारज वियुहारि। मिथ्या हरि विन अउर विचारि॥
मिथ्या सति गुरि चर्न न लागे। सांईदास मिथ्या विन जागे।४।

मिथ्या श्रविण परिनिंद्या राचे। मिथ्या हर् तज विक्ष्या माचे॥
मिथ्या राज बिना हरि नाम। मिथ्या जोवन माने धाम॥
मिथ्या अंवरि अंग हढावे। मिथ्या परि विकारि कों धावे॥
मिथ्या परि धरि मूसन जाइ। मिथ्या चित जो लोभ लुभाइ॥
मिथ्या पिंडु प्राण भय होवे। सांईदास हर भज सुष सोवे।५।

मिथ्या साध हरि अंतर जांने। मिथ्या काम क्रोध मनि मांने॥
मिथ्या भूष प्यास जो व्यापे। मिथ्या सीत धाम कों तापे॥
मिथ्या बहुत नींद सो प्यार। मिथ्या वचनि न हो सच पारि॥
मिथ्या पगि तीरथ नह जाइ। मिथ्या कर्ना टहिल कराइ॥
मिथ्या विन बूझे सभ होइ। सांईदास मिथ्या सभ लोइ।६।

मिथ्या काम क्रोध हंकारि। मिथ्या नामि विना संसारि॥
मिथ्या उपजि विंस जगि माह। जवि लगि हरि सिमरण हो साह
मिथ्या हरि विन अउरि निहारे। मिथ्या हरि विन देहा जारे॥
मिथ्या हरि विन अउरि जो उोटि। मिथ्या हरि विन धंधा पोटि॥
मिथ्या विन भगवान सभ जान। सांइोदास सोई परिवानि।७।

---

१. भक्त=श्रद्धा।

मिथ्या साध चोरि जो होवे। मिथ्या तन धन हरि विन षोवे ॥
मिथ्या बहु पुत हित संग्य राता। मिथ्या नरि जोविन मदमाता ॥
मिथ्या विष्या उठे तरंगा। मिथ्या विन हरि राचे रंगा ॥
मिथ्या नयन भये जगि रूपु। मिथ्या सपनि भयो जो भूपु ॥
मिथ्या हरि विन तीनों लोक। सांईदास मिथ्या सभ थोक।८।

सलोकु–साधू हरि अंतर्नही वेद पुकार्त चारि।
सांईदास हरि साधू अंतिर करे सो ते सदा दुःषारि ॥

अष्टपदी—१७

हरि साधू अंतर जो करे। आवे जावे जनिमे मरे ॥
हरि मय साध साध हरि होइ। अयसो ज्ञान विचारे कोइ ॥
ज्ञानि विचारे सो मुक्ताइ। तांको हर्जी आप सहाइ ॥
हरि सहाइ कारज सभ सरे। जनिम जनिम के परि दुष हरे ॥
हरि सहाइ होइ मुक्ता करे। सांईदास हरि सर्नी तरे।१।

अंतर नाह साध अरि राम। साध सर्न पायो विश्राम ॥
साध के संग सदा सुष होवे। लोभ मोह मिल दर्सन षोवे ॥
साध का संग्य मिले वडि भाग। गुर प्रसादि हरि सेवा लाग ॥
हरि सेवा लागे जो कोइ। आवागउन को संसा पोइ ॥
सेवा लाग परिम सुष होइ। सांईदास जनि उत्तम सोइ।२।

सेवा करे सो नयुनिध पावे। साध राम करि एक धयावे ॥
साध राम कुछ भेद न जाने। हरि सेवा सेती मनि मांने ॥
जो नरि हर्की सेवा लागे। पंचि भूत तांके उठि भागे ॥
हरि सेवा ते सभ दुष जाइ। वहुडि वारि जूंनी नहि आइ ॥
लागे सेवा हर्जस करे। सांईदास भय सागर तरे।३।

सागिर तरे जु सभ सम जांने। साध राम अंतर नहीं आने ॥
जो अंतर जाने सो दुप पाइ। वारि वारि जूंनी भर्माइ ॥
जूंनी भर्मे विन गुरि पूरे। सो नरि सदा सदा मनि भूरे ॥
हरि सिमरे सो बहु सुष पाइ। आवा गउन कों भर्म मिटाइ ॥
भरिम मिटैं लागे हरि भेतु। सांईदास सति गुर सेतु।४।

महा कष्ट दुख लागे देहा। विष्या लागन को फल एहा ॥
भरिमत भरमत वहु थक जाइ। गुरि विन कयसे मार्ग पाइ ॥
वूझे हरि गुर सेवा लागे। अंवृत रस गह विष्या त्यागे ॥
जवि विष्या का कीनो त्याग। उदे भए पूरण बल भागि ॥
त्यागे विष्या सुषिया होइ। सांईदास जनि मुक्ता सोइ ।५।

भक्त होइ हरि भक्त पछाने। मोरि कीटि जीयु इक जाने ॥
जयसे हस्ती हस्त फुन जयसा। जयसे सोवे जागे तयसा ॥
जयसे हर्ष तयसे ही सोग। सदा नंद न कबूं वियोग ॥
जयसे माटी कंचन अयसा। जयसे पाथर हीरा तयसा ॥
सो दर्गा होवे परिवान। सांईदास तिस तो कुर्वान ।६।

तिह वियोग शोक कछु नाह। जो हरि सोध लये घटि माह ॥
सोधे मन हरि अंतर माह। सहज समाध विषे उरिझाहि ॥
लावे लिवि अरि साधे पउनु। तांके मिटि जा आवा गउनु ॥
आवागवन भर्म मिटि जाइ। गुरि प्रसादि हरि दर्सन पाइ ॥
आवा गउन मिटे हरि सेवा। सांईदास सर्न गुरि देवा ।७।

सर्न गुरों की जो को आवे। जनिम जनिम सोई मुक्तावे ॥
मुक्ता होइ परम गति पावे। रामनाम अहि निस लिव लावे ॥
लावे लिव विष्या ते रहे। गुरि प्रसाद अन भय पद गहे ॥
भक्त भाव जवि आतम लीना। सांत सरोवरि वासा कीना ॥
सांति सरोवरि को वियुहारि। सांईदास दास चित्त धारि ।८।

सलोकु–साधो हरि रस पीजिये तजीए विष्या विकारि।
सांईदास सोहे हंसा जाप जप तिह दर्स बलहारि ॥

अष्टपदी—१८

साधो पीजे हरि रस नीक। जिहि पीए सुष होवे चीत ॥
अमर होइ काल भय जाइ। या जग सोफन रूप दिषाइ ॥
महा परिम कलयाण सरूपु। मंगल रूपी महा अनूंपु ॥
जिउ मदिमाते कुंजर डोलें। जयसे मृग वाणी मध बोलें ॥
अयसो हरि रस पी मेरे भाई। सांईदास अचो चित लाई ।१।

*राम रसायरण जिन्न रे पीग्रा। सो नहि मूग्रा जीविन जीग्रा ।।
जीयन जीयन रह्यो समो। वांते नहीं अउर फुनि कोइ ।।
सभ जीयन कों चेते सोइ। वावन दूजा अउर न होइ ।।
हाथ जोरि करि ठाढे भए। करि डंडउत[1] पाहुन पए ।।
अयसो हरि रस जो जनि पीए। सांईदास सों जुग जुग जीए ।२।

राम रसाइरण अयसो वीरि। पीवित मिटि जा पीडि सरीरि ।।
सुष मेटे दुष जाय भुलाइ। परिम पुर्ष जवि होइ सहाइ ।।
पर्म पुर्ष को जाणे जोइ। तांको दुख न लागे कोइ ।।
निर्मल पंङ्कज जपो सरूपु। पंङ्कज पद भज भए अनूपू ।।
दुष को मूल काटि तिन दीन। सांईदास सो सदा सुषीन ।३।

दुःखु गिया जवि पायो राम। राम मिल्यो भए सुफले काम ।।
राम नाम सो लागी प्रीत। भूल गई सभ जगि की रीति ।।
लोक लाजि सभ दीनि डारि। भेटे पर्म पुर्ष इक बारि ।।
रोम रोम भयो राम सरूपु। कहा कहुं कछु अचरज रूपु ।।
हर्जी भज हर्जी होइ रहे। सांईदास दास पद गहे ।४।

हरि सो अपिना रूपु निहारा। भूल गिया जगि धंधा सारा ।।
जित देषो तित पूरण राम। राम भयो पायो विश्राम ।।
वाह वाह जी कयसा भया। मति उत्तम कछु जाइ न कहया ।।
अयसो राम भजन परतापु। मिटे भजन हर्तीनो ताप ।।
राम भजिन दर्गा नही हान। सांईदास दास परिवान ।५।

राम नाम से राषे ध्यान। तांको क्षेम कुशल कलयान ।।
सदा सुषी दुष भयो विनाश। आनंद मंगल सहज हुलास ।।
मंगल रूपी आठों जाम। जम वयरी सो कवूं न काम ।।
जम हो दास अधीनि हय सदा। गुरिचर्नी जो राषे रिदा ।।
चूक गई हरि लीयो पछान। सांईदास नही जम काण ।६।

---

१. डंडउत=डंडौत>दंडवत् ।

हरि सो जविही भैय सयान। मांनो पायो परिम निधान ।।
पूर्ण पुर्ष बसे मनि माह। चूक गए दुख सकले ताह ।।
संसा चूका भ्रम भय भागा। अनिभय सेतीया मनि लागा ।।
लागा मन जवि अनभय नाल। चूक गए सकले जंजाल ।।
सहिजे भेटे चतर सरूपु। सांईदास भए आनंदि रूपु ।७।

पङ्कज पदि घरि वासा कीना। डोल डुलावरण चित तज दीना ।।
गावित गावत गावे फूल। उनिमनी कला भूलणे भूल ।।
भूलति सहज पालणे माह। तीन ताप की गम ता नाह ।।
पानी पउन अग्नि घरि वास। पांच तत्त ते रहे उदास ।।
अयसी ठउर विषे मन दीना। सांईदास तहा वासा कीनां ।८।

दो०—दुष्यि विनासन स्याम घन नाथ अनाथन राम।
सांईदास तांकी सर्नी आईये रे मन आठो जाम ।।

अष्टपदी—१६

संग्यी राम विना को नाह। या तू समझ देष मनि माह ।।
निकटि कठन जह होवे ठउर। हरि सहाइ विन नाही अउर ।।
माति पिता वनता सुति मीत। छिनि मातर हय जगि की रीत ।।
जब मह भयानक काल भय होवे। हर्का नाम सकल भय षोवे ।।
अयसो नाम जपो मनि मेरे। सांईदास सुष होइ घनेरे ।१।

प्रथिवी पति राच्यो सुष माह। हर्के सिमरण सम सरि नाह ।।
दु:खि विश्रापे विन हर्नाम। हरि सिमरण विन विर्थे काम ।।
माया मोह तजो हो स्यानु। हरि सिमरण पायो निध ज्ञान ।।
गुरि मिल लीजै अयसी सीख। जयसे अंवृत उपिजयो डीख ।।
आदि पुर्ष का पायो भेव। सांईदास दास गुर सेव ।२।

गुरि मिल पायो निर्मल ज्ञानि। प्रेम भक्त कों लियो पछान ।।
जांते उपिजे निर्मल प्रीत। प्रेम भक्त की एही रीत ।।
लाष करोडी वंधन तोडि। आए श्री जगि पद की ओड ।।
मार्ग अंधकारि मिट गया। रोम रोम महि आनंद भया ।।
गुरि मिल लीनो तत्त पछान। सांईदास दास यहि ज्ञान ।३।

हर्का नामु जपति दुष जाइ। प्रेम भक्ति जिह उपिजे आइ।।
प्रेम भक्त करि गावो गीत। साध जनां की पावो रीत।।
हर के गुण गावो दिन रयन। मुष ते बोलो मीठे वयन।।
यह वयनन सो हरि गुनि गाइ। महा अनंदि रिदे उपिजाइ।।
आदि अंति हरि जी कों ध्यान। सांईदास दास चित आन।४।

देषो साधो नयन उघाड़। वह्यो जात जग लेहु सम्हाल।।
पल पल घटे वछे नहि आइ। हरि सिमरण मनि में उपिजाइ।।
मार्ग माहि सुहेला जा। हरि चर्नी लग ठाकनिपा।।
महासुषी करि हरि हय तुह जपसो। वंधनि तोडि वही सुष सो।।
आवा गवनि भरिम मिट जा। सांईदास सदा हरि ध्याइ।५।

हरि ध्यायो पायो निध गियान। राम राम सो लागो ध्यान।।
राम भजन तन मनि सुष हो। वंधनि तोडि बही सुष सो।।
वहुडे दु:ख न लागे आ। वाके अंदर अंग उढा।।
अनेक राग उपिजे छिन माह। जिह समान कछु होवे नाह।।
सु:षि पावे सिमरे वनिवारी। सांईदास दास गत नयारी।६।

एक दुई को कीजे नास। तवि निश्चल घरि होवे वास।।
पर्म पुर्ष तवि नयन दिखा। आपा उलटि आप समा।।
आप समाय भयो तेसो। जांते वहुडे हान न हो।।
आतम रूपी रह्यो समाय। जित देषो तित आत्मरा।।
कहा कहे हय अयसा जयसा। सांईदास दास हय तयसा।७।

देषों भाई अचरज वांनी। या नयनन मय वसत पछानी।।
वांको घटि मय पायो भेवु। जो नरि लागो हरि की सेवि।।
हरि सेवा मय रह्यो समा। हर् भज आपा दीयो तजा।।
पांच भूत का कीनो नास्। रोम रोम मय भयो हुलास।।
जवि पायो तवि आप भुलाइ। सांईदास दास सर्नाइ।८।

सलोकु—अविध्र अविध सम्हाल लय सुफनो सो संसार।
सांईदास पाउ पलक लागे नही छिनि मय विनसन हारि।।

अष्टपदी—२०

अविधू लीजे अविध सम्हारी। पलि पलि घटे वधे नहि वारी ।।
कंचन कोटि वहुड गत ले। विन हरि भजन कहा करले ।।
जिहि वस राग रंग सभ भोग्। तिह सेती होवे संज्जोग् ।।
एक भांत के पञ्च कहायन। अनेक भांति अंबिर अंग लायन् ।।
हरि भजि लीजे समा पछान। सांईदास दास सो जान।१।

याह समा फिर हाथ नि आवे। वहु जूंन भर्मे पचतावे ।।
जिउ जानो भज लय रघुराई। अटल राज महा सुषिदाई ।।
अवि जस के भजे रघुराई। राज न टले महासुष पाई ।।
अयसो राज नि कविहूं त्यागे। जो जनि हर्की सेवा लागे ।।
विष्या तजि हरि सो करि प्यारि। दुर्लभ देह का होय उधारि ।।
अअसे लीजे तत्त पछानि। सांईदास दास गुरि ज्ञान।२।

अविधू वाल अवस्ता वीती। हो अचेत हरि भक्त नि कीती ।।
भरि जोविन तिरया सङ्ग राता। अति अभिमानि जूए मदमाता ।।
तरन देही विष्या भरि डोले। सुष ते सीधे वचन न बोले ।।
वृद्ध भया तवि आलस देही। काज न सरे भए जवि क्षेही ।।
भजिए पूरण श्री भगवान। सांईदास हरि लियो पछान ।।

जिहि प्रसादि होय सुष घनेरा। सारा जगत रहे हो चेरा ।।
जिहि प्रसाद पायो रसभोग। चर्नी लागे तीनों लोक ।।
जिह प्रसादि अंबरि अंग्य लावे। रे मनि ताकों किउ विसरावे ।।
जिह प्रसादि पावे सुष मान। रे मनि राषों तांसो ध्यान ।।
एक निमष हर् नां विसरा। सांईदास दास गुण गा।४।

धनि जोवन का तजए मान। निसि दिन भजए श्री भगिवान ।।
स्वास स्वास गुण गावो मीत। प्रेम भक्त की लीजे रीत ।।
एक पलिक विन भजन न खो। रे मनि अउसरि बीते जो ।।
भजिए पूर्ण पुर्ष निधान। तांके सिमरण कबूं न हान ।।
अयसो भजिए तजिए मान। गोविंद गोविंद गोविंद जानि ।।
अयसे प्रभ ते सद सद वारि। सांईदास दास वलहारि।५।

कुल कुटंबि की ओटि तियाग। राम नाम की सेवा लाग ॥
जिह प्रसादि कारज सभ सरे। धरिमराय धरि पायन परे ॥
करे वेनती दो करि जोरे। पायन लागे कबूं न झूरे ॥
अयसो राम भजिन परितापु। निस वासरि हर्को जप जाप ॥
हरि भजिए तजिए अभिमान। सांईदास दास हरि ध्यान।६।

इह अउसरि पाए वडिभाग। कोऊ अक्षर पूरब जाग ॥
इह औसर जो राम सम्हारे। आवागउनि को संसा टारे ॥
निश्चल रहे चले नहीं कविही। हरि सिमरे गति पावे तविही ॥
कहूं तोह हरि लीजे कान। दृढ़ प्रतीत निश्चे जी जानि ॥
इह अउसर भज लय रघनाथ। सांईदास दास सुष साथ।७।

हर्की कथा करो मनि ला। सदा सदा हर्के गुण गा ॥
साध सङ्ग सो धारो प्रीति। तिहि प्रसादि होइ निर्मल चीत ॥
देह रोग कों अउखध एह। साध सङ्ग मिल हर् भज लेह ॥
पल पल गावो गुण गोपाल। तातकाल मय करे उधारि ॥
निरभय पदि मय पायो वास। हरि दर्सन की पूरी आस ॥
आदिअंत हरि होय सहा। सांईदास दास सर्नाइ।८।

सलोकु—तू राजा सभ सयन को तोरो वड परिताप्।
सांईदास जिनि तूं पाया प्रीत कर मेटे सभ संताप् ॥

अष्टपदी—२१

तूं राजा सभ भूम को सभ सयना तेरी।
तुही गरीविनवाज हय कटि वेडी मेरी ॥
निसवासरि तुमरे गुण गावो। प्रेम प्रीति चित माहि बढावो ॥
जो जनि तुमरी सर्नी आवे। तातकाल वयकुंठ सिधावे ॥
हर्की सर्न पडो रे भाई। तिहि प्रसादि दुभधा मिटि जाई ॥
जो जनि हर्की सर्नीपआ। सांईदास दास तिह भया।१।

पांच भूत का सुनो विचारि। एक एक कों मनि मय धारि ॥
तिन्न तिन्न तिह घटि मय वास। जो चित उपिजे तिह पर्कास ॥
फुनि सुभावि तिन का सुन ले। प्रेम प्रीत करि आतम दे ॥

एक एक के पांचों भेद। सुनो कान धरि कूकत वेद॥
जो जनि पांच भूत से रह्या। सांईदास दास तिह भया।२।

पांच भूत का भेदि बताऊ। रे मनि तुझि को कह समझाऊ॥
फुन इह पांच कों करो वीचारि। चित अंतर लियो अविनी धारि॥
फुन तत पांच सुनो मेरे भाई। तांको भेद सभ दियों बताई॥
जंउ पिंड निंद्रा वस कीन। षुध्या तृषा सुनो परिवीन॥
पांच तत्त की सिष्ट रचाई। सांईदास प्रभ बनत बनाई।३।

कांनो धरि सुनि लीजै भाई। तिह सुभावि सभ दियो बताई॥
इनि पांचों का भेद वषानो। गुरि मुष होइ सोई जनि जानो॥
वहुडि पांच के भेद वताऊं। गुप्त वाति करि प्रगिटि दिषाऊ॥
माया मोह राग रस भोग। पांच भूत कों हय संजोगि॥
यांको लीजे मनि मय धारि। सांईदास फुनि कीयो विचारि।४।

प्रथिवी को ग्रहि रिदा कहावे। द्वार गतां ते वेद वकावे॥
खान पीनि अहारि पछानि। लालच लोभ विउहारि बषान॥
फुनि बानी को सुनो वीचारि। हरि प्रसादि करि अंतरि धारि॥
तुरिआ माह अहारि करी न। काम क्रोध मनि वस करि लीनि॥
नीकी वानी हर्जस कीजै। सांईदास सोऊ घटि लीजै।५।

तपा तेज तत गृह जांनो। नेत्र माह द्वारि पहिचानों॥
दिष्ट अहारि मोह विउहारि। पंच तत्त कों एही विचारि॥
नाम कविल पायो घरि वास। पंखडी कला भयो परिकास॥
द्वादस द्वारे ताके कही। गंध सुगंध अहारि हय वही॥
नरि इछा विउहारि कहावे। सांईदास को गुरि मुष पावे।६।

ग्रहि वृह्मंडि अकास पछान। फुन ते द्वारे कहो कान्॥
नादि अहार अहं विउहारं। सोहं हंसा जाप विचारं॥
या कुटंम सभ नावक मा। तू षेवट हरि पार तरा॥
गुरि मिल लीजे मंतरि वीरि। तवि भय सागर उतिरे तीरि॥
लष चउरासी भर्म न हो। भजि सांईदास दास गुरि सो।७।

गुरि सेवे हर्की गति जाने। हर्ष शोक मनि महि नही आने।।
निश्चल राज रहै हय वीरि। आविनि जाविन की मिटि पीडि।।
गहरि गंभीरि गुपाल पछान। आठो पहिरि धरो हरि ध्यान।।
एक स्वास विर्था ना खो। हरि हरि सिमर लेय सुष हो।।
या सभ ही को ऊपरि कहो। हरि हरि सिमर सदा सुष लहो।।
चूक गयो सकिलो भ्रम भाई। सांईदास दास हरि ध्याई।८।

दो०—मनि ते छाडो लालसा हर्जी रिदे वसा।
सांईदास हरि दर्सन चित लाइए रहो तिसी अघा।।

अष्टपदी—२२

छाडि लालसा हरि गुण गा। हरि दर्सन की प्रीति बढा।।
सहिज सुभा मिले जो आ। हर्ष मान हो लीजे सा।।
अउर लालसा मूल नि कीजै। प्रेम प्रीति करि हरि रस पीजै।।
जिहि ठाकुरु सो प्रीति अति हो। तिस सो करे वराविर को।।
जो भावे तो प्राप्त दे। सांईदास भावे फिर से।१।

चर्न लागि करि जोरि खलो। जो कछु हरि भावे सो हो।।
ठाकुर हमरो अपरि अपारि। निमसकार् कीने सदवारि।।
जांको निमसकार मनि कीजै। कहु कयसे फिर उत्तर दीजै।।
ताकी लीजै आज्ञा मानि। जो कुछ करे सोई भगिवान।।
या विध लीजै अंतिर धारि। सांईदास दास वीचारि।२।

हर हरि हर हर हर हर हरी। आठ पहरि मनि हरि हरि करी।।
महा नंद अनंदि आनंद। स्वास स्वास सिमरो गोविंद।।
क्षेम कुशल अनिरोगी देह। राम नाम सिमरण कर लेह।।
हरि आज्ञा लय मस्तक धारि। स्वास स्वास हरि करे जुहारि।।
प्रेम भक्त करि हरि दरि सूझे। सांईदास दास यहु बूझे।३।

माति पिता भाई सुषिदाई। विन हरि रे मन कौन सहाई।।
जम को मारग महा दुखार। हरि सिमरण करि होय उधार।।
प्रेम प्रीत का वीजु वो। अनभय क्षेती नीकी हो।।

ए क्षेती नहि कबूं न पूटे। अक्षे अषंडि नहि हरि लव चूटे ॥
हरि हरि हरि हरि रिदे पछानो। सांईदास दास यहु जानो ।४।

निर्धन को धनि हय भगिवान। रे मनि मेरे अयसे जान ॥
जिन कों मान त्रान हरि हो। अयसो अविर न होवे कोइ ॥
अउरि कउन की कीजे कान। जवि ते पाए श्री भगिवान ॥
वेर वेरि हरि परि कुर्बानी। सांईदास दास गति जानी ।५।

जो हरि भावे सोई भला। सो अविचल कविहूं ना चला ॥
अयसी धारि लेय मन माह। हरि प्रसादि होवे सुष ताहि ॥
फूली वेल लगो फल घना। हरि प्रसादि सुष होवे तना ॥
भजिए हरि तजिए अभमान। प्रेम प्रीत घटि अंतर आन ॥
हर्भजिए सुष रहो समा। सांईदास दास सर्ना ।६।

रे मन हरि हरि हर्कोध्या। हर्के सिमरण वहु सुष पा ॥
हरि हर् कहते भागिन रोग। प्रापति होय महा सुष भोगि ॥
महा भोग हरि रस को पावे। नाम हरी यहु वेद वकावे ॥
तिहि समानि दूजा नही कोई। तीनि लोक ढूडो नहि होई ॥
अयसे गुरि मल लीजै ज्ञानि। भजि सांईदास दास भगिवान ।७।

रे मनि तू भजि भगिवान। विन भगिवान न दूजा जान ॥
अयसो अउर समरथ हय को। जिह भजिए आतम सुष हो ॥
एक पलक मय जगत उपा। पलिक माह पर्लय दिखला ॥
हर् दर्गा जो पेखन हो। वहुड लालसो रहे नि कोइ ॥
हरि सिमरणु मनि मह उपिजा। सांईदास दास चित ला ।८।

दो०—विना भजिन भगिवांन के विर्थे सकले काम।
सांईदास जिहवा काटि नकारीए जो उचिरे नही नाम ॥

अष्टपदी—२३

भजिन विना विर्थे सभ काम। रसना काटो कहे न राम ॥
विर्थे नयनि जु हर्विन देषे। विन भगिवान न दूजो पेषे ॥
विर्थे कान परि निंद्या राते। अंम्रत तज विष्या सो माते ॥

विर्थे हाथ टहल नहि धारे। हरि संत्तन सेवा न विचारे।।
विर्थे पगि तीर्थ नहि जाय। सांईदास कयसे सुष पाह।१।

विर्था चित जो चले विकारा। तटि तीरथ गुर मनि नह धारा।।
विर्थी देह विना हर्नामि। विन हरि नाम न कतए काम।।
विर्था राजि माल अभमान। विर्था रंग रूप करि जानि।।
विर्था धनि हरि संत न काज। अंत काल आवे दर्लाज।।
विर्थी अउध बिन हरि होइ। सांईदास विर्थे त्रयलोइ।२।

दानि पुंन्य तपस्या करे। विना कामन दुविकी लय मरे।।
परिदछनि प्रथिवी सभ दे। ऊर्ध पांउ करि भूलरण ले।।
अग्नि विषे जो जारे प्रान। पउन अहार करे धरि ध्यान।।
सिहजा भूमि दान जवि धारे। जो को मेरि एही प्रन तारे।।
विना भजिन विर्था सभ हो। सांईदास दास भज सो।३।

निउली कर्म करे चितु ला। चेतन हो जी दया वसा।।
जङम रूपी लिङ लडिकावै। जोगी होकै कांन पडावै।।
वयरागी वनि षंड सिधारे। कुल कुटंबि तज होय नियारे।।
होइ अपर्सन पर्से काहूं। मानि महत मय डूबे वाहू।।
भेष सकल विर्थो विन नाम। हर्भज लीजै आठो जाम।।
सकल सिष्ट चेरी हो रहे। साईदास दास पदि गहे।४।

पंडितु वेद पडे पडि मूआ। भेदी हर्के भजन न हूआ।।
वेद सार कछु हाथ न आयो। वेद सारि को मर्म नि पायो।।
आपस को पंडित करि जाना। हर्को मार्ग रिदे भुलाना।।
परि निंद्या सो रह्यो समा। प्रान पुर्ष दीउो विसरा।।
हर्जी घटि घट भीतर लहो। सांईदास दास पदि गहो।५।

हरि विन अउध विहानी अयसे। मेघ विना हो क्षेती जयसे।।
हरि सिमरण विन किते न काज। पंख विना हय जयसे वाज।।
जगि मय विर्था आवन भयो। हर्को नाम नि मन मय लयो।।
न चूकी कान न अनभय जी। वह नहि मिलयो अनभय पी।।
काम क्रोध माया मदि तजिए। सांईदास दास हर्भजिए।६।

तजो सग्रानप सकल सरीर। हर्को भजि लय निसि दन वीरि।।
वहुड वारि नहि ग्राविन हो। दर्गा ठाकि नि साके को।।
माया मोह तियागो चीत। हरि सिमरण की लीजै रीत।।
जो ग्रायो क्या संग लियायो। ग्रंत कालि ग्रायो उठ धायो।।
माटी देही जब कब हान्। तिहि ऊपरि क्या करहु गुमान।।
विमल छाडि ग्रउसरि वहि जा। सांईदास दास सर्ना।७।

इह ग्रउसरि फरि हाथ न ग्रावे। मानिस देही क्या फरि पावै।।
ग्रवि कै चूकै ठविर न को। लष चउरासी भर्मत हो।।
ग्रातम हो परिमातम पा। मनि मनिसा नास करा।।
ना मनूंग्रा ना मनिसा को। जवि ते लीनि परम गत हों।।
कयसे विन सिमरण कल्यान। गहु सांईदास दास जी जानि।।

दो०—सविद रूप ग्ररूप हय ग्रंत लषे नहि कोइ।
सांईदास जो हर्भजे जगि ते न्यारा हो।।

ग्रष्टपदी—२४

सविद रूप लषे जनि सो। रूप रेष ते न्यारा हो।।
जगि कीयाह एक न लागे। ब्रह्म ग्रग्नि घटि भीतिर जागे।।
ग्रनाहद धुन सो लागो ध्यान। सो जनि पर्से श्री भगिवान।।
जिह जनि हर्का दर्सन पायो। वहुडि वारि जूंनी नहि ग्रायो।।
जहा बसे हरि चतर प्रवीन। सांईदास दास तहां लीन।१।

संत जना पायो घटि माह। हरि प्रसादि कछु ग्रंतरि नाह।।
देषो तो प्रभ की चतुराई। या जगि कयसी वनित बनाई।।
को कयसा को कयसा कीन। को मूरख को चतिर प्रवीनि।।
को काहूं की जाणे नाह। सभ गलतान ग्राप ही माह।।
ग्रयसे नरि हरि रूप ग्रपार। सांईदास दास वलहार।२।

ग्रयसे प्रभ ते वल वल जाईए। ग्राठ पहर्ता गुनि गाईए।।
ग्रक्षे षंडि ग्रषंडि नहि को। पसर रह्यो हय जल थल सो।।
जो दीसे सोई हय ग्रागे। कविहूं सोवे कविहूं जागे।।
जवि सोवे तबि सुंन्न कहा। जवि जागे तवि चेत नरा।।
सोवित जागृत एको जयसा। सांईदास दास हो ग्रयसा।३।

ना जागे ना सोवे सो। अयसो सुन्न समाधी होइ ।।
आतम कों अयसो विसथार। तिह धरि चीत हरि चेत निहार ।।
कोटि अकास धर्न अरु प्याला। आतम को विसथारि निराला ।।
जो दीसे सो आतिम राम। बिना राम ना दूजो जान ।।
आतम परिमातम इकु माने। सांईदास दास यहु जाने ।४।

अयसो आतम जाने जो। हरि सो मिले नि बिछडा हो ।।
जयसे सलता सिंध मिला। वहुडि प्रवाह नि नकसनया ।।
जवि अयसे आतम जनि जाना। तवि बोले पूरण भगिवाना ।।
तुम निज भक्ता भक्त हमारे। तुम हम ते नहि कबूं निआरे ।।
निसवासरि हम तुमरे माही। हमय तुमय कछु भेद नही ।।
हरि साध कछु भेदि न जाने। सांईदास दास सच माने ।५।

जो जनि तुमरी सेवा करी। तुम वांछति करि मनि मय धरी ।।
साध संत हरि एकोएक। समझ देष चित करो विवेक ।।
हरि साधन मय अंतरि नाही। साध जना पायो घटि माही ।।
जयसे जल तरङ्ग नहि न्यारा। अयसे साधा हरि चित धारा ।।
सो सेवा तुमरी ठहिराई। सांईदास हरि होइ सहाई ।६।

हरि साधा नहि जोत नआरी। आदि पुर्ष होवित ततकारी ।।
हरि सोधो मय भेद को नाह। यातू समझ देष मनि माह ।।
सेवक स्वामी होवत आयो। जिन मनि वच करि सेवि करायो ।।
दृढ मति सो सेवा दृढ कीजै। विन सेवा कछु अवर न लीजै ।।
अयसो पुर्ष भयो मतिकारी। सांईदास तिहि मिलयो मुरारी ।७।

दीना नाथ दया निध स्वामी। करि किरपा प्रभ अंतिर जामी ।।
अपिना नाम दानि मोह दीजै। प्रभि जी मो परि किरपा कीजै ।।
अउगनि हमरे नहि चितारौ। करि किरिपा पतिता को तारो ।।
तुमरे दर्पर करो पुकार। हो दियाल मोह करो उधारि ।।
हरि भावे तो होइ क्रपाल। सांईदास प्रभ भयो दियाल ।८।

दो०—अंम्रत हर्को नामु हय जो अचिवे जन को।
सांईदास अवृत वानी जो पडे मुक्त पराप्त हो ।।

इति रामाय नमः अष्टपदी २४

॥ उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥

अथ भाषा लिखे दश अवतार

कर्त साईंदास के दास नरोत्तमदास क्रित[1]

उों श्री मत्स कर्म्म वाराह नृसिंह वावन पर्शुराम श्रीरामचंद्र श्री कृष्ण बोध निहकलंको श्री दश अवताराय नमः॥

श्री सतगुर देवाय नमः। उों श्री सत्यसरूप वावा सांईंदास जी नमः।

निरंकार निर्वैर अजूनी[2] स्वंभू अकाल मूर्त मुर्ली मनोहरि कर्ता पुर्ष शंष चक्र गदा पीतांवर कौलापति केसर पूर्न पर्मेश्वर साध जना को विस्राम आद अंतु जानों नाही हमिरा तिहि पर्णामु।

सत्य वावा साईंदास दस्म सिकंदह।

नमो नमो प्रभु आदि जुगादं। नमो नमो पावे विस्मादं॥
नमो नमो निरंकार अकल हर। नमो नमो माधो धर्नी धर॥

---

१. प्रस्तुत रचना 'दश-अवतार' बाबा साईंदास जी के भाषा में लिखे भागवत के दशम स्कंद का एक अंश है किन्तु रचना के उपोद्घात की यह पंक्ति "कर्त साईंदास के दास नरोत्तमदास क्रित" संदेह का कारण बन जाती है। गुसाईं संप्रदाय वाले परंपरा से यह मानते आए हैं कि साईंदास जी का ही नाम नरोत्तमदास था। यद्यपि इसका कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है। पर एक बात जो स्पष्ट है वह यह कि इस रचना में स्थान स्थान पर छन्द की समाप्ति पर "साईंदास" नाम की छाप है। वैसे तो साईदास नाम की छाप मात्र रचना के कर्तृत्व को सिद्ध करने में सहायक नहीं है। इतना सब होते हुए भी इस रचना में प्राप्त दोनों पुष्पिकाएं तथा दश अवतारों में से भगवान् श्रीकृष्ण अवतार की महिमा के लिए प्रस्तुत श्रीमद्भागवत के दशम स्कंद के हिन्दी अनुवाद का उपोद्घात बाबा साईंदास के कर्तृत्व को सिद्ध करता है। इसी उद्देश्य से इसे हम बाबा साईंदास की रचना मानकर उनकी शेष रचनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

२. अजूनी <अयोनि।

नमो नमो प्रभ सुंन्न विराजे। नमो नमो जो अनहद वाजे ॥
नमो नमो ईस्वन के ईसा। नमो नमो जग के जगदीसा ॥
नमो नमो पर्मानंद स्वामी। नमो नमो गुरु अंतरजामी ॥
नमो नमो ब्रह्मिंड के नायक। नमो नमो भक्तिनि सुषदायक ॥
नमो नमो प्रभु धुंधूकारा। नमो नमो सभहूं ते न्यारा ॥
नमो नमो रचनि रचाई। नमो नमो धर गगन बनाई ॥
नमो नमो पूर्न अविनासी। नमो नमो तांके सभ वासी ॥
नमो नमो महाराज गुसाईं। नमो नमो त्रिभुवनि के साईं ॥
नमो नमो हरि अंम्रिति वानी। नमो नमो हरि रस्न वषानी ॥
नमो नमो गोविंद सभि मांही। नमो नमो हर सक्ल समाही ॥
नमो नमो वांणी रिसाला। नमो नमो हरि सभि प्रतिपाला ॥
नमो नमो हरि मुक्ति के दाता। नमो नमो पूर्न विधाता ॥
नमो नमो कौलापति केसरि। नमो नमो पूर्न पर्मेश्वरि ॥
नमो नमो निर्मल निर्जोता। नमो नमो तारे सभ स्रोता[1] ॥
नमो नमो ब्रह्मंड के दाता। नमो नमो भक्तिनि संग राता ॥
नमो नमो करहौं कर जोरी। नमो नमो करि गति हर मोरी ॥
प्रथिमे जवि ठाकुर मछि होइ आया। तिस का सभ विर्तंतु सुनाया ॥

मत्स्यावतार

श्री मछ की माता सषावती पिता पूर्व ऋषि गुरु मानधाता।
क्षेत्र द्वारका पुर पटन निर्दलंत संषासर दानो।

प्रिथम मछि रूप हरि होए। तांते भक्ति सकल सुख सोए ॥
करि, द्रिग, सीसु मानस को कीनो। उौर देहि सभ मछ को लीनो ॥
संखासुरु ब्रह्मे पहि आया। करि जोरे मुषि आषि सुणाया ॥
किहि विधि पावो पूर्न रामा। किति विधि हरि मिल हो वहि कामा ॥
क्युं करि मोह मिलै प्रभ पूर्न। क्युं करि गति मेरी होइ मूढनि ॥
ज्युं तुमि कहो तिवैं मैं करिहों। तुमरो कह्या हृदे मैं धरिहों ॥
इहि अभिलाषा मो मन माही। मैं तुमरे पै आषी सोई ॥

---

१. स्रोता<श्रोता।

अैसी बात बतावो मोकों। आषि सुणाई मैं प्रभ तोकों॥
इहि संचरु मम मनहु चुकावो। पूर्न ब्रह्म तुम तवी कहावो॥
को विधि कीए मम मिले गुसांई। किहि विधि राम सर्न चितु साई॥
कैसे करि मै गति कों पावों। कैसे कर बैकुंठ सिधावों॥
कैसे मुक्ति बंधन तें होंवों। कैसे राम चरन मैं धोवों॥
जिसि विधि कीए हरितंत मिलाही। सोई विधि तुम कहो हमांही॥
एहि प्रश्न हमिरा सुण लीजे। गुर प्रसाद मम उत्तर दीजै॥
ब्रह्मा ऐसो मुष ते भाषा। अंतर ध्यान धरे मुष आषा॥
सुनि संखासर वात हमारी। मोहि व्रतंतु लेह मन वीचारी॥
जो मैं कहो सु मनि महि रोषो। सत्त सत्त वचनि करि भाषो॥
तुमि तें भक्ति अराध न होई। भक्ति अराध न पावों सोई॥
भक्ति अराधि कर्नि वहु भारी। तनु होंमों तव मिले मुरारी॥
तनु होंमो तो भी नहीं पावों। तनु होमति अति मनु सुकिचावों॥
विरोध भक्ति तुमि ते क्षिण होवै। तव निर्भौ सुख मंदर सोवै॥
विरोध भक्ति कर्नि चित धारो। जीवधार देषो तिसि मारो॥
संत जनां को दुख वहु देवो। मार कूट वस्त्र षसि लेवो॥
जो हरि जपै तिसी सौ झूझो। तुमि कवहू मुष नामु न बूझो॥
गायत्री जापु कर्ति कोऊ देषो। तांको दंड देहु दगि[1] पेषो॥
संध्या जापु कर्न ना देवो। जो कोऊ करे तिसे हनि लीवो॥
इहि विधि मोह बताइ तुमकी। इहि विधि कर्णि योगु ना हमिकों॥
जो तैं प्रश्न कीआ तवि कह्यो। नहीं त मै निश्चल सुख वह्यो॥
इहि विधि करो ति पावो रांमा। सांईदास प्रभ पूर्न कामा।२।

संखासर चित धरेयो विरोधा। नष सष ते ले अंतर सोधा॥
अवर कवन संग विरोध उठावों। तांके कीए अधिक सुषु पावों॥
अैसो अवर नाहि कोऊ सूझै। जासि वैर करि मुक्ता हूजै॥
सोधि अंतर हीये चित धार्‌यो। ब्रह्म संग विरोध हमारो॥
नेत्र मूंद ब्रह्म ध्यानु धर्‌यो। गोविंद का तव सिमरनु कर्‌यो॥
तवी संखासर वेद उठाए। लीए वेद जा दधि ठहिराए॥

1. यहां 'द्र' होने से शब्द द्रगि = दृक् = नेत्र अर्थ होगा।

ब्रह्मा ध्यानु छाड जव देषै। ना संषासुरु वेद न पेषै ॥
चितवन लागे इहि क्या होया। वेद कवनु मोह ले गयो सोया ॥
अति विस्वास रिदे मोह पर्‍यो। हाथ जोर अंतर ध्यानु धर्‍यो ॥
एही थटु वांध्यो मन आनि। सांईदास दास सो भयो वषानि।३।

वेद मोह संखासर लीने। प्रिथमे वैरु मोहि संग कीनें ॥
मोहि कह्यो मोस्यु उठि लागा। ध्यानु छाडि चितवन इहि लागा ॥
असुर बुद्धि तौंही तें कहीये। सब्द गुरू सो इहि विधि रहीये ॥
अति क्रोधु ब्रह्मे मन कीनो। तव वीचारु अंतर इहि लीनो ॥
हाथ जोर कर विनती करी। हे कौलापति निर्मल हरी ॥
हे प्रभ पूर्न सभ विधि रामा। संत जना के पूर्न कामा ॥
तुमि अविनाशी नासु नि तेरा। तूं प्रभ सदा सहाई मेरा ॥
तूं विअंतु तेरो अंतु न कोई। आदि अंत लगि तूं प्रभ होई ॥
हौ मति हीन हो एहि मति मेरी। कहा कहों प्रभ मै गति मेरी ॥
तुमि अवर्न वर्न नही जानो। कहा लगि उस्तति तोहि वषानो ॥
रस्ना रंच कहैं प्रभ मोरी। किति विधि करों मै उस्तित तोरी
निरंकार निरवैर गुसांई। तीन भवन को है तू सांई ॥
मैं तोहि उस्तति कहा वषानों। किति विधि तोह नामु रिदे आनों
चिन्ह चक्रि कछू द्रिष्ट न आवै। तांको कछु मनि महि ठहिरावै ॥
जो द्रिग दीसै तांको कछु कहीयै। विन देषै क्या मनि उचिरहीयै ॥
तुमरी उस्तति कवनु वषानो। तुमिरी गति मिति प्रभ के जानो ॥
मम विनती प्रभ जी सुण लीजै। सांईदास दास को मुक्ता कीजै।४।

मो पहि संखासरु प्रभ आया। मो सो प्रश्न एहि आषि सुणाया
किहि विधि पावो नामु गुसांई। किहि विधि राम चर्न चितु लाई ॥
क्युं करि मुक्ति मोह गति होवै। क्युं करि मनु मेरो भ्रमु षोवै ॥
इहि मोकों देह बताई। जिहि गति होवै मेरे भाई ॥
तौ मै उसि को एहि वतायो। विरोध भगति कार्नि चितु लायो ॥
तौ तुम पावों पुर्ष अविनासी। जांके सकल जीव है दासी ॥
इहि विधि कहि मै ध्यान महि आया। तौ सषासरु वेद उठाया ॥
वेद दुराइ लीए उसि मेरे। कहा कहों प्रभ आगे तेरे ॥

मोको वलु तासो न वसाई। मारो उसि को दधि महि जाई॥
वेद षसोटन तांते ल्यावों। किति विधि दधि के भीतर जावो
मोहि पै इहि विधि कीई न जाई। सांईदास दास हरि सदा सहाई।५।

वेद मोहि प्रभ आणि कै दीजै। इहि करुना प्रभ मोहि पै कीजै॥
ब्रह्मो को प्रश्न सुनौ प्रभ पूर्न। दूर कर्न संता के विसूर्न॥
प्रगट भए वपु मछ हरि धर्‍यो। संत हेत इहि कारुण कर्‍यो॥
जहां जहां भीर संतन को होवै। तहां तहां प्रभु मेरा षोवै॥
जिनि जिनि दुष भक्तनि को दीउो। तासि सिंहारु मेरे प्रभ कीउो॥
भक्ति हेत प्रभ यहि वपु धार्‍यो। गण गंधर्व तव जै जै कार्‍यो॥
तव ही ब्रह्मे उस्तति करी। जवि देषे सुंदर प्रभु हरी॥
दधि महिं जाइ संखासरु मार्‍यो। पकरि दैत कों प्रभु विडार्‍यो॥
तव संखासरु युं करि बोले। मोहि गत कवन पूर्न प्रभु असोले॥
इसी प्रयोग विरोध मैं कीउो। ब्रह्म तें वेद दुराइ करि लीउो॥
दर्सुनु पावों पुर्ष निधाना। तौ मुक्ता होवों मनि माना॥
तोहि क्रिपा तत्काले करी। हे किर्पा निधि पूर्न हरी॥
क्रिपानिधानि पूर्ण पर्मेश्वरि। सांईदास दास प्रभ सर्वसेश्वरि।६।

तासि मिटी के शंष बनाए। एक दछनि व्यापछमि उपाए॥
मुष्ट भरी लोहि की भगवान। डारी शंख भयो तव जान॥
तव प्रभ संखासर य्युं कह्यो। मुष अपने इह प्रत उचिर्‍यो॥
जो कोई भक्ति मेरी जनु करे। प्रिथम तिल्कु तेरे परि धरे॥
मोहि स्नानु पूर्न तव होई। जब अठसठि तीर्थ जलु आने कोई
जो जलु पर निकसे तुमि माहें। अठि सठि तीर्थ को जलु नाहें॥
इहि वरु तव संखासर पायो। तब ते शंखु जग्त परि आयो॥
शंख की महिमा प्रभु वताई। सांईदास सुनहो चितु लाई।७।

जो कोई भक्ति ठाकुर की करै। प्रथमैं तिल्कु शंख परि धरै॥
जलु तिहि पाइ स्नानु करावे। पाछे तिल्कु ले ताहि चिन्हावे॥
वहुडो चर्णा चर्णाम्रतु ले पीवै। सो जनु सदा सदा सुष थीवै॥
इहि विधि प्रभ मुष आषि वषानी। जो कोई जनु होइ लए पछानी॥
संखासुरु हनि वेद ल्याए। तौ सांईदास दास वल जाए।८।

वेद आणि ब्रह्मे को दीने। हिर्ष मान होइ ब्रह्मे लीने॥
वेद लए संचर मन भागो। संचर सोआ तव ही जागो॥
अति आनंदु मंगल बहु गाए। वेद लीए हरि दर्सन पाए॥
अनक अनक तिहि वहु सुष पाए। अति अनंद मंगल जसु गाए॥
तुही तात भ्रात जग केरा। तूं सभि विधि पूर्न प्रभु मेरा॥
तोहि रूप मै कहा वषानों। तोहि कला को मैं क्या जानों॥
तूं सभि विधि दाता है जन कों। तुमि प्रसाद होया सुष मन को॥
पूर्न ब्रह्म सदा अविनासी। कौलापति पूर्न अघनासी॥
भक्ति हेत प्रभ इहि वपु धार्न। भक्ति हेत प्रभ असुर सिंहार्न॥
भक्ति हेत तुमि इहि बिधि कीने। भक्ति हेत तुमि इहि वपु लीने॥
भक्ति हेत दधि महि प्रभ गयो। भक्ति हेत प्रभ पर्गट भयो॥
भक्ति हेत इहि कीने कामा। भक्ति हेत पर्म प्रभ रामा॥
तुमि भगतनि के सदा सहाई। तुमिरी गति कछु लषी न जाई॥
कहा वषानो कौतकि तेरे। सांईदास जपु नाम सवेरे।९।

प्रभु दे वेद वैकुंठ सिधायो। ब्रह्म त्याग अस्थल महि आयो॥
आदि अदीन है प्रभु मोरा। रवि सुत ते छूटै जो होवे चेरा॥
जो जो मछ रूप जसु गावै। जीवत ही बैकुंठि सिधावै॥
वहुर वार जन्मे नही मरे। जो हरि मछ रूप रिदे धरे॥
जन्म जन्म के वंधनि काटै। दसवें द्वार के छूटहि कपाटे॥
रोम रोम सीतल होइ जाए। तप्ति मिटै सीतल ग्रहि पाए॥
दुषि दरिद्र तांको नहीं लागै। नामु जपति सकला दुष भागे॥
सदा सदा हर को जसु गावो। उौर बात कित्ते चितु न लावों॥
जसु जपै पाय्यै सुष माण। सांईदास सोई परवाण १०

द्वितीये प्रभ कछ रूप हो आया। तांको सकल व्रितातु सुणाया॥

कूर्म (कच्छ) अवतार

मानसरोवर क्षेत्र कमल ऋषुताल है
पद्मावती सुमात सिरजा गुरु साक्षात है।
क्षेत्र मानसरोवर निर्दलंत मधुकैट दानव॥

द्वितीआ कछ रूप प्रभु धारे। कछ रूप होइ असुर संहारे॥
असुर अधिक सुर कों दुष देवहिं। मार कूट वस्त्र षसि लैवहिं॥
जवि असुरों ने वहु दुषु दीआ। तब सभि देवो मन इहि कीआ॥
चलहों प्रभ पहि जाइ पुकारहिं। हमि को असुर काहे कों मारेहिं॥
सभि सुर दधि तटि जा ठहिराए। मुषि ते वचन उचार सुनाए॥
हे प्रभ असुर अधिक दुषु देवहिं। मारकूट वस्त्रि षसि लेवहिं॥
तुमि विनु हमरो कौन सहाई। जासि पासि भागहि हमि जाई॥
अवर कवन सों आष सुनावहिं। कहों उौर कवन पहि जावहिं॥
हमिरो वलु तिहि संग न वसाई। हे प्रभ पूर्न भक्ति सहाई॥
जव सभ देवो विनती ठांनी। तांको प्रभु दीयो शार्ङ्ग पानी॥
तुमि जावो उनि की सर्नाई। मैं तुमि को इहि बात वताई॥
जवि देवों इहि विधि गुण पाई। तव सांईदास हृदय ठहिराई।१।

तव ते सुर सभि ही चलि आए। असुरो सर्नं आइ ठहिराए॥
जो कछु असुर कहे सोई मानें। तांके कहें अंतरु नहीं आनें॥
तव ते असुर इनि दुःख न देवहि। डंड डाड इनिको न करेवहिं॥
श्री कौलापति संत सहाई। असुरो मनि इहि विधि ठहिराई॥
मथहिं समुद्र रत्न निकारहिं। कौलापति अपर अपारहिं॥
असुरो के मनि महि इह आई। कह्यो सुरों सो सुनहो मेरे भाई॥
चलहो दधि मथन रत्न निकारहि। अवर वात कछु रिदे न धारहिं॥
जो उनि कह्यो सुरों मनि लीनी। सांईदास उौर वात न कीनी।२।

असुर चले दधि मथने ताईं। सुर सभ संग लीए अधिकाई॥
जाइ दधि तटि परि ठांढे भए। मनि अंतरि इहि मनिसा लए॥
मेरु पर्वतु माधाना कीना। वासुकु उर्ग नेत्रा करि लीना॥
सुरो को कह्यो कवन उोर लेवो। हमि को कवन उोर तुमि देवो॥

तव सभि देवो मनि महिं धारा। इही वात तिन्हां हृदे वीचारा॥
जो हमि कहहि सीस उोर लेवहिं। तव हमि कों पूछ उोर देवहिं॥
जो हमि पूछ लेह सुष होई। हमि को विघ्न न लागै कोई॥
येही वात सुरों मनि धारी। सांईदास सों कहति पुकारी।३।

तव असुरों को येहि प्रतु दीना। सीस उोर हमि कर महि कीना॥
पूछ उोर तुम कर महि लेवहु। तात्काल दध मथनु करेवहु॥
असुर मत विधि उर्ध पछानहि। जो सीस गही पूछ करि जानहि॥
पूछ उोर सभ सुर को दीना। सीस उोर अपने करि लीना॥
तव ही दधि कों मथने लागे। उोर्वात सक्ली उनि त्यागे॥
जतन कति दध मथ्यौ न जाई। महा अधिक वलु थाके लाई॥
कहु कैसे दध मथिउो जाई। गरै धर्नि परि जा थरिहराई॥
तव असुरों सुरों मनि महि धारी। महा कठनि जु वनी अति भारी॥
हाथ जोर सभ विनती ठांनी। हे प्रभ पूर्न शार्ङ्ग पानी॥
तुमि विनु हर दधि मथ्यो न जाई। हमिरो कछु प्रभ नाह वसाई॥
जव सभहूं यहि विनती ठानी। कौलापति वेनती मति मानी॥
तात्काल कछू को वपु लीनो। वेग विलम तवि ना किछु कीनों॥
गिर कौ जाइ पिठ परि लीउो। तवि उनि सभ दध मथना कीउो॥
चतुर्दश रत्न दध मथ निकारे। तवि असुरो ने एहि मनि धारे॥
नीको होइ सो सभि हमि लेवहिं। वुरो होइ सो इनि को देवहिं॥
अंम्रति चाहति है इहि लीआ। विषु चाहति असुरों को दीआ॥
तव सभि देवनि मनि महि धारा। हे कौलापति प्रांन अधारा॥
इहि अंम्रतु पीवहि नही मरहिं। तोहि जनि दुख देवनि चितु धरहिं
हमि तुम सो प्रभु कहो पुकारे। तुमि प्रभ सभि विधि जाननिहारे
हमिरो कह्यो प्रभ जी सुण लीजे। उोर वाति कछु रिदै न दीजे॥
पाछे सें तुम प्रभ पछुतावों। जो तुमि इति उौसर नही आवों
जब सभि देवन विनती ठानी। सांईदास सुनी सार्ङ्ग पानी।४।

मोहनी रूप कीउो हर आयो। असुरो निर्ष्या चितु लुभायो॥
जाइ दुहूं महि ठांढा भयो। कौलापति इहि वपु करि लयो॥
तिन कह्यों काहे झगिरावों। किहि प्रयोग विरोध चलावों॥

तव देवन विर्ततु सुनाया। हमि दधि मथिने को चितु लाया
दधि मथ चतुर्दश रतन निकारे। इहि असुरों मन महिं इह धारे॥
सभि ही रत्न आप इहि लेवहिं। हमि कौ इहि कछु नाही देवहिं॥
असुर सभ प्रभ रूप लुभाए। प्रभ ने असुर सवही बौराए॥
सभ असुरों ने येही पुकारा। सुनहो देवो कहा हमारा॥
हमि तुमि झगिरा एह चुकाई। जो इहि कहे मनो मेरे भाई॥
तव देवो एहि विधि सुरण लीनी। मनि अंतरि विनती उनि कीनी॥
जो इहि कहे सोई मनि लेवों। उौर वाति कछु नाहि करेवों॥
प्रभ एन[1] उौर असुर ठहिराए। एक उौर सभ अमर वहाए॥
तव प्रभ ने येही मनि धारा। सांईदास सो कहति प्रकारा।५।

प्रिथमे अंम्रतु वंडिने लागा। उौर वात प्रभ सक्ल त्यागा॥
अंम्रति भरि देवत सुरों ताई। मधु देवत असुरों अधिकाई॥
तव मधु क्रित असुर क्या कीआ। असुर छाडि उोर करि दीआ॥
अमरो उोर आइ ठहिराया। प्रभि के करि मे अम्रतु पाया॥
प्रभु जी सुर जान्यों उसि दीआ। ए कारण मधि केती कीआ॥
तव ही पुकार उठै अधिकाई। पुकार कीउो सभ असुरो ताई॥
हमि को अंम्रतु नाहीं देवै। द्वितीया भाउ एहिहमहिकरेवै॥
जव मधु कीट इहि वात पुकारी। तव ही क्रोधु कीउो गिरिधारी॥
सुदर्शन चक्र प्रभ लीयो बुलाई। तास कह्यो सुनहो मेरे भाई॥
मधुकेती को सीस उतारो। ज्युं जानों त्युं तिसे प्रहारो॥
जवि प्रभ की आज्ञा उनि पाई। वेग विल्म तिनि मूल नि लाई॥
मधु केती को सीस उतार्यो। करि क्रोध तांको प्रहार्यो॥
अंम्रति पीया कैसे मरई। निश्चल आसन जग महि करई॥
राहु केतु तव ही ते थीउो। जव प्रभ ताहि संहारण कीयो॥
सीसु राहु केतु तन होयो। तव उनि भ्रमु सकला ही षोयो॥
तव सभ असुर युद्ध कों धाए। मानो घट वादल उमिडाए॥
प्रभ ने सभ ही असुर सिंहारे। एकु एक करि सभ ही मारे॥

---

१. यहां शब्द "एक" होना चाहिए।

जिनि सक्लो ही जगत उपाया। तिहि स्मसर और कौनु कहाया ॥
जहां जहां भीर परी तहां आए। सांईदास सदा जसु गाए।६।

प्रभ चौंदह रतिन लीए कर मांही। तांको भेद जाने कोऊ नाही ॥
तव ही सुर प्रभ लीए बुलाई। रतिन वंडिने लागे भाई ॥
लक्ष्मी कौस्तक मरण शंष प्रभ आप लीओ। इहि कार्न प्रभ मेरे कीओ ॥
कांमधैनि सुरपति कौ दीनी। अरंभा पात्र किर्पा कीनी ॥
ऐरापति गज भी तिहि दीआ। कल्प व्रिछ तिहि किर्पा कीआ ॥
अंम्रति धनुष ताहू को दीनां। एहि किर्पा प्रभ तांपरि कीना ॥
चंदु ले प्रभ गगनि पठायो। तांते उजीआरा पायो ॥
धनंतर जगति ऊपरि प्रगटायो। रोगु को क्षय कर्नि चितु लायो ॥
अस्वु प्रभि जी रवि को दीनो। एहि किर्पा प्रभ रवि परि कीनो ॥
मदु दीनो प्रभि असुरों ताई। विषु दीनी शिव को अधिकाई ॥
जव विषु शिव जी ले करि षाई। कीयो जोर विषु अपना लाई ॥
तव प्रभ चंद सीस ठहिराना। सीतल भयो विषु वल हिर्वाना ॥
चतुर्दश रत्न प्रभ जी वंडि दीए। जिस जिस क्रिपा करी तिस लीए ॥
सभ रत्न केरा पतिकार सुनावों। सांईदास गोविंद जसु गावो।७।

जिस पै लछमी को प्रकासा। सकल जगत तां की करे आसा ॥
कौसक मण जो तिमर महि होई। सकल तिमर उह षिन महि षोई ॥
तिमर मेटि उह करे उजीआरा। इहि कौस्तक मरण की पर्कारा ॥
तीनो तव आपि हरि लीने। ताह प्रकार वताहर दींने ॥
षष्ट वस्तु सुरपति को दीनी। हिर्षमान होइ सुरपति लीनी ॥
अवि तिस को सुरण हो पर्कारा। घटि भीतर तुम लेह वीचारा ॥
कामधेन को प्रिथम सुनावो। एक एक करि सक्ल वतावो ॥
जहावि कक होवे अति भारी। त्रिषा गही या भूषि अधकारी ॥
मुष भोजन तांके उह देवै। वेग विल्म ओह नाह करेवै ॥
जो जलु वांछत सीतल देवै। त्रिषा तोहि छिन महि हिर लेवै ॥
येहि प्रकारु कामधेन मांही। सांईदास और पहि नाही।८।

अरंभा के परिकार सुनीजै। उौर बात कछु हृदे न दीजै ॥
हरि की भक्ति कीयो हरषिवारी। सील चित ते टार्नहारी ॥
ताहि देषि काम वहु व्यापै। अधिक सुंदर काम अत धरा पै ॥
निर्त वहुत भांति वहु करही। निर्त करी कर मन को हिरही ॥
येह प्रकार अरंभा मांही। जो इसि जीतहि सो भक्ति कहांही
महा कठानु जीतनि इसि भाई। सांईदास समिभि मनि मांही।६।

ऐरापति तिहि वलु परिकाना। तांको वलु यै कहा वषाना ॥
जो तिस चढि रण माहे जावे। हारे नहीं जीत घरि आवे ॥
ताको मन भौ सकल षोवै। जो सवार ऐरापति होवै ॥
सदा अजीत तिहि जीत न कोई। जांके गृह ऐरापति होई ॥
तांके शत्र को परिहारे। सांईदास इहि वात वीचारे १०

कल्प बृछ परिकार वषानो। सत्य सत्य श्रवन मन मानो ॥
नग्न होइ तिसि वस्त्रि देवै। जहां घाम तहा छांउ करेवै ॥
जिस मेवन की वांछा कीजै। सोई कहै आइ के लीजै ॥
कल्प वृछि ऐसो ही भाई। छाया करे घामु निर्वाई ॥
कल्प विर्छ पर्कार सुनाई। सांईदास को मुनि ठहिराई ११

अंम्रति प्रकार सुनो मेरे भाई। भलीभांति चित लेवहु लाई ॥
मूए कों जो मुष महि परे। सो मूआ उठि वाता करे ॥
जो पीवे सो कबू न मरे। निश्चल आसन जग महि करे
रवि सुत को उहु वासु न पाए। जो कोई अंम्रतु ले पाए ॥
पीवे अंम्रतु मेरे भाई। सांईदास प्रभ सदा सहाई १२

धन्ष प्रकार सभी सुण लीजै। उौर वात कछु हृदै न दीजै ॥
जो तिह धन्ष सो वानु चलावे। अन्यथा वान तासि नही जावै ॥
जिस लागै तिस मार चुकावै। जहा कहै तह ही हनि आवे ॥
इहि प्रकार धन्ष तिस भाषा। सांईदास पुकार इह आषा १३

सस प्रकार सुन हो मेरे भाई। श्रवण धार सुन हो चितु लाई ॥
गगनि चढे वहु होइ उजीआरा। तांका सुणहो सभि वीचारा ॥

ता ससमे जो उत्पति होई। अति मिष्टानु तासि महि होई।।
इहि प्रकार है ससि के माही। सांईदास प्रभ सकल समाही १४

धनंतर प्रकार सुनावो। ताहि प्रकार मै सभी वतावो।।
जो कछु रोग होइ किसे ताई। द्रिष्ट परे सभ दूर कराही।।
जैसे मृगु सिंह ते भागे। तैसे रोग तिस देषै त्यागे।।
तासि निर्ष रोग सभु भागे। सांईदास तिस पलु ना लागे १५

असु जो प्रभ रविताई दीना। ताहि वीचार सोऊ है कीना।।
अति सुंदर सोभा है तांकी। सुंदरता कैसे कहों वांकी।।
नयन अधिक सुंदर है तांके। सुंब अधिक सोभति है वाके।।
तिस परि चढि जो जनु कही जावै। जहां कहै तहा जाइ पहुचावै।।
अश्व प्रकार कह्यो ना जाई। सांईदास सो भाव नि आई १६

मदु जो असुरो ताई दीना। ताहि वीचार सभहू ही कीना।।
जो मदु को ले पीवे सोई। प्रिथमे ताहि बुद्धि वोराई।।
देह की सुध तांको ना रहे। जो भावे सो मुष तें कहे।।
आपवसि ते परिवसि जो जावै। छिनु पल सुधि देही ना पावै।।
इह मद को परकार सुनीजै। सांईदास त्याग एहि दीजै १७

विषु जो हरि शिवताई दीनी। शिव ने ले पान वहु कीनी।।
जो उसि विषु को अवरु कोई षाई। छिन जीवे नाही मरि जाई।।
षावन कहा कहे मेरे भाई। सिंघति ही वहु प्रान तजाई।।
सिंघति कहा हाथ जो लेवे। लेवत हाथ प्रान वहि देवे।।
हाथि कहा द्रिष्टि जो आवे। निर्षित ताह प्रान तजि जावै।।
सोई विषु शिवजी ले षाई। सांईदास सभ वात सुणाई १८

सभि ही रत्न वंडि प्रभ दीए। येहि कार्न मेरे प्रभ कीए।।
रत्नि वंडि वैकुंठि सिधाए। चले चले वैकुंठ महि आए।।
जहां जहां भीर जनहु को होई। तहूं तहुं गोविंद जी षोई।।
सुनिहो संत धरो मनि मांही। राम नाम मुष तै उचिराही।।
सभि कोऊ प्रीत करो मनि मांही। जास कीए सभ दुष मिटि जांही।।
सदा सदा मनि महि ठहिरावो। सदा सदा हर के गुन गावो।।

और बात कछु रिदे नि आनो। सक्ल षाण ठाकुरु करि मानो ॥
उत्पति सक्ली तांते होई। अवर न कर साकति है कोई ॥
मछ रूप भी उनि ही कर्‌यो। कछ रूप उन ही वपु धर्‌यो ॥
जो जो उसि भावै सोई करही। छिन महि धर्न गगन षडि धरही ॥
अवर वात सक्ली तुम त्यागो। पुर्ष निधान की सेवा लागो ॥
कछ रूप वितंतु सुनायो। सांईदास विधि सक्ल बतायो १६

दीन दर्द दुख भंजन स्वामी। सक्ल घटा के अंतरजामी ॥
पुनि राजा शुक जी को कह्यो। स्वामी मम मनि संचर रह्यो ॥
इसि का मोको देह वीचारा। सूकर को वपु क्यु प्रभ धारा ॥
इहि संचरु हमिरे मनि आवै। तोहि किर्पा कर संचर जावे ॥
तव जाने सूकर क्यु होए। संत जना के तिन दुष षोए ॥
सूकर रूप क्या करि कीनो। सुंन्न छाडि क्युं इहि वपु लीनो ॥
हम हि वीचार इसि वा दीजै। एहि किर्पा प्रभ हमि परि कीजै ॥
एहि विनती तुम पहि हमि करी। प्रभ कित प्रयोग सूकर वपु धरी ॥
वार वार हम कहे पुकारे। तुम विनु संचर कौनु उतारे ॥
हमि घरि मै भयो अधिक वसेरा। और त्याग हमि घर कीयो डेरा ॥
ऐहि प्रभ हमिरा तव ही जावै। जो तुमि किर्पा उत्तर पावै ॥
निसवासर हमि गणित विहाई। साईदास को देहु बताई २०

सिद्ध भर्मि महि इहि मनु पर्‌यो। मूल साष भरमति अति हर्‌यो ॥
दिस दिस भ्रमति वक्ति ना पावै। इहि प्रयोग मनु वहु दुष पावै ॥
इहि संचर हमिरो तनु दह्यो। अति भै चक्रितु मनु होइ रह्यो ॥
सांति सिद्ध हमि हृदे न आवै। इहि प्रयोग संचर नही जावै ॥
कहो किर्पा कर पूर्न स्वामी। सक्ल व्रिथा के अंतरजामी ॥
फिरि फिर संचरु येही आवै। सूकर रूप किति विधि हरि पावै ॥
तुमि पहि एह प्रश्न हम कीआ। जव संचरु हमरे मनि लीआ ॥
जैसे जानो संचर निवारो। सांईदास को पार उतारो २१

तव सुकदेव जी वचन उचारी। सुन हो देवो वात हमारी ॥
तुम प्रश्न का मै प्रतु देवों। संचरु तुमरा दूर करेवों ॥

सूकर वपु प्रभ इहि विधि कीनो। हर्निकश्यव मन महि इह लीनो ॥
महापराक्रमी अति बलवंतु। मोह स्मसर कोऊ अवर न जंतु ॥
कहा करे कोऊ रीस हमारी। मै बलिवंतु मोह वल अधिकारी ॥
त्रैलोक को मोह मन त्रासा। मोह त्रास जलु पीव न प्यासा ॥
महा गर्बु मनि अंतर कीनो। अति अभिमानु मान मनि लीनो ॥
मही पलटि जल परिसे लीनी। सिंद्ध[1] माह जाइ अलपतु कीनी ॥
मही गही चलित दिषायो। निप ब्रह्मा मनि महि विस्मायो ॥
हे कौलापति त्रिभुवन राया। जोइ जंतु सभ तुझे बनाया ॥
हर्निकस्यव नही[2] ले कर गया। तांते तोय प्रगट सभि भया ॥
जब ब्रह्मे इहि मनि महि आना। सांईदास सुंन्न मनु माना २२

कीयो वीचारु कैसे करि होवै। कित विधि ब्रह्मा निर्भो सोवै ॥
करि वीचारु येही ठटु वाध्यो। सूकररूप होइ सरु साध्यो ॥
प्रगट भए प्रभ सूकर रूपा। ब्रह्म नासका वछनि सरूपा ॥

वाराह-अवतार

ताहनिकसि दाढऋष प्रभ तास मात लील्हा वती।
दिजराज गुरु षेत्र डुंगर पुर हर्नाकस क्षय आवती ॥

ताह निकस सिद्ध महि पर्यो। अति विस्थारु पूर्न प्रभ कर्यो ॥
हर्निकस्यव तिहि देष भयाना। पूर्न प्रभ करि हृदे पछाना ॥
येह रूप अतिभुत द्रिग आवै। अति अनूप कछु रूप दिषावै ॥
अति दीर्घ तिहि रूप दिषानो। कौलापति पूर्न भगवानो ॥
दंतन उस्तति वर्न न साको। कित विधि उस्तति दंतनि भाषो ॥
ताहि देषि मनि महि भौ आवै। कित विधि तांको वर्नि न पावै ॥
महाराज पूर्न प्रभ स्वामी। आद अनाद हर अंतर जामी ॥
कहा रूप कोऊ ताह वषानें। कित विधि वांकी को गति जानें ॥
अद अनाद संग सर्व समानं। भक्तिन भीर परी तहा धानं ॥

---

१. सिंद्ध <सिंधु=समुद्र।
२. 'नही' यहाँ "मही" होना चाहिए।

भक्ति हेत सूकर वपु धरिअं । भक्ति हेत इहि कारण करिअं ॥
मछि कछि रूप तिहि कीनों । असुर सिंहार भक्तिनि सुष दीनों
तिहि प्रयोग सूकर वपु पायो । जहां जहां भीर तहूं आयो ॥
सदा सदा हरि को जसु गाय्यै । सांईदास काहै अलिसाय्यै २३

हर्निकस्यवु जाइ सिद्ध महि गह्यो । इहि प्रयोग सूकर वपु लह्यो ॥
मही लै ते दसनि परि राषी । सिद्ध त्याग दी ई विधि भाषी ॥
मानो इकु त्रिणु लीयो उठाई । सक्ली प्रिथवी मेरे भाई ॥
त्रिन को भारु अजिहू अति होई । यांके भार न लागो कोई ॥
हर्निकस्यवु तव युद्ध को आयो । शस्त्र ले सन्मुष हर धायो ॥
अति विरोधु असुर तव कीनो । कौलापति पगु वाहिर दीनों ॥
आइ तोयं परि मही विछाई । जैसे प्रिथमे सी ठहिराई ॥
ताह छाडि प्रभ सन्मुख होए । युद्ध कीओ हर असुरन षोए ॥
असुर वुद्ध हरि सो युद्ध कीनों ॥
कई सहस्र वर्ष युद्ध करायो । अंत आनि प्रभि मार चुकायो ॥
तव ही मार वैकुंठ पठायो । वेग विल्म प्रभ मूल न लायो ॥
इहि प्रयोग सूकर वपु धर्‌यो । सुंन्न त्याग इहि कार्णु कर्‌यो ॥
तांकी गति मिति लषी नि जाई । वहु प्रभु रह्यो सर्वि समाई ॥
करो भक्ति हितु अपना लाइ । सांईदास प्रभ सदा सहाइ २४

असुर मार वैकुंठ सिधाए । जहां जहां भीर परी तहां आए ॥
संतन को प्रभ ऐसो राषे । जैसे रसना मुष मै भाषे ॥
भक्ति जना के कार्ज करे । संत हेत करि हर बपु धरे ॥
एक ही द्रिष्ट सर्व कर जानों । कूकर घोरा चक्र इक मानों ॥
तप्त शांत को एक पछानों । निर्धन धनवत एक वषानों ॥
ना काऊ निर्धन ना धनवंता । ना कोवे पति ना पतिवंता ॥
ना कोऊ उत्पति सुंन्न न कोई । थान थनंतर है प्रभु सोई ॥
जो देषो सो हर करि मानो । जो देषो सो स्म कर जानो ॥
सक्ल विस्थार ताह को भाई । जो कछु द्रिग महि देइ दिषाई ॥
नाम अनेक अनंत विस्थारा । कहा करे कोऊ ताहि वीचारा ॥
सूकर रूप जव प्रभ ने कीया । सांईदास हरि अंम्रति पीआ २५

हर्निकश्यव जव मुक्ति सिधाया। दारा सुत तिहि रुदन कराया ।।
अधिक रुदन जव उनि ने कीना। हरिनाकस तव इहि प्रतु दीना ।।
हे भावज पालक मेरे भ्राता। रुदनु न करो इह लिष्यो विधाता
इसि को कालु सूकर ते होवे। जगत त्याग जा सुंन्न महि सोवे ।।
जो विधि लिष्या सो कवन मिटावै। जो कछु होवै जो प्रभ भावै ।।
विधि की कीआ कौनु ही टारै। जो उनि लिष्या होवे तत्कारै ।।
जे ता कहा समझै ना वाही। रुदन करै कूके हा हा ही ।।
देषि ताहि हर्नाकस बोले। ताहि सीस परि हाथु विरोले ।।
हे मेरी भावज रुदन करहो[1]। मन अंतर तुम धीर्ज धरहो ।।
एह पर्तज्ञा हम ने कीनी। एहों वात मनि अंतर लीनी ।।
जिन मोह भ्रात हन्यों तित मार्यो। शस्त्र वाण कर सीस उतारो ।।
तुम अवि धीर्ज मनि महि धरहों। कछु विस्वासु न मन महि करहों
मोह वचनु तुम मनि कर लेवहु ।।
हर्निकश्यव के सुत दारा नें। वचन सुनो श्रवन धरानें ।।
रुदन छाड धीर्ज महि आई। रुदन छाड़ संतोष वसाई ।।
जो तूं एसे कदही कराई। हर्नाकिस कैसे वैरू लहई ।।
जवि नृसिंह को वपु हरि लेवहि। इहि प्रतु हमि तुम को तव देवहि
ताहि कथा महि इहु प्रतु आवै। हरिनाकस कैसे वैरु पावै ।।
इहि प्रतु मैं आषोंगा ताही। सांईदास प्रभ सर्व समाही २६

प्रभ जी वेनती तुम पै करहों। तोह प्रसाद पूर्न प्रभ हरहों ।।
इहि विनती हमिरी सुण लीजै। हमि को उसका उत्तर दीजै ।।
हमि अजान कित विधि करि जानहि। नारसिंह वपु हरजु पछानहि ।।
नारसिंह वपु किति विधि कीनो। किति प्रयोग इहि वपु हरिलीनो ।।
नारसिंह वपु इउ प्रभि धार्यो। भक्ति प्रहलाद को दूष निवार्यो ।।
हे प्रभ सभ विर्तुत सुनावो। हमरी वेनती मनि ठहिरावो ।।
तब शुक जी बोले। अंम्रत वचन सदा निर्मोले ।।
सभ विर्ततु सुनहो मेरे भाई। अवर त्याग सुनहो मेरे भाई ।।
श्रवन धरों मै आष सुणावों। नारिसिंह वपु तुमहि वतावों ।।

१. रुद न करहो—यहां संभवत: न लिपिकार से छूट गया है।

जिहि प्रयोग नृसिंह वपु धार्यो। हरिनाकस नष उदर विडार्यो ।।
एक एक करि आष सुणावों। वेग विलम कछू मूल न लावों ।।
हम श्रवण धरे तिह प्रभ मेरे। कहा कहे हमि आगे तेरे ।।
अवर त्याग करीये एहु प्यासा। ज्युं तिनि कर्के छवि परिआसा ।।
सकल व्रितांतु लेह मेरे भाई। सांईदास सुनहो लिव लाई २७

हर्निकस्यव जवि मार चुकाया। तिहि सुत दारा रुदनु कराया ।।
हरिनाकस तांकउ युं कह्यो। मारो ताहि प्रतज्ञा लह्यो ।।
जिन मेरे भ्रात को आइ सिंहार्यो। करि करोध तांको परिहार्यो ।।
ताह मार पाछे कछु करहो। नाही तिस पाछे मैं मरिहो ।।
एह वात करि कर गृह आया। सकल सैन कों तव ही बुलाया ।।
तिहि कह्यो सुनहो मेरे भाई। वरुदाता सुर देह वताई ।।
ताहि सेवा ले मस्तक धरिहों। और वात कछु नाहीं करहों ।।
सकल सैना विधि एह वताई। ब्रह्मा वर दाता मेरे भाई ।।
तिहि कह्यो ब्रह्मा कहा रहई। आस्रम सेती जहा वहु वहई ।।
कवन भवन तुमि ताहि वतावो। वेग विलम तुम मूल नि लावों ।।
अस्थावर महि तांको बासा। नामु सुमेरु ताहि परिकासा ।।
सभि ते सुणि आयो ग्रह माही। निसि समे चितवन लागो तांही ।।
वासुर होवै भक्ति को जांवउं। ब्रह्म अस्थ जाइ भक्ति कमावउं ।।
इहि वीचार हृदे अंतर लीनों। तव ही दारा का संग कीनों ।।
रितवंती दारा सी तांकी। चितवन पूर्न भई है वांकी ।।
भक्तिन वास ताहि गर्भ लीनों। हरिनाकसि चितु भक्ती कीनों ।।
प्राति भयो हरिनाकसु गया। ब्रह्म भक्ति सेती चितु गह्या ।।
सकल त्याग मार्ग तव लीनों। ध्यानु ब्रह्म का असुर मनि कीनो ।।
जहा ब्रह्म ने अस्तलु छाया। ढूँढति ढूंढति तहां ही आया ।।
अस्थिल को प्रदक्षिणा दीनी। अति दंडौत ताहि कौ कीनी ।।
हरिनाकस कीयो इहि कामा। सांईदास प्रभ पूर्न रामा २८

सुरपति सुनी वाति मनि माही। हरिनाकसु गृहि माहे नाही ।।
केहरि केतकि संग ले आया। आइ नग्र को घेरा पाया ।।
असुर मार कर पर्लो कीने। जो भागे तिन ने मगि लीने ।।

लूटि नगरि सुरपति अधिकाई। तांकी वात कहा परताई॥
दारा हरिनाकस की लीनें। सुरपति मगि अपने पग दीने॥
आण भार्जा ग्रहि महि राषी। तांको अवर नाह कछु आषी॥
छिन तवि ही नार्द चलि आयो। सुरपति को तव आषि सुणायो॥
हे सुरपति तै भलो न कीना। एह विरोध जो तैंनै कीना॥
हरिनांकसि की दारा ल्याया। विनु प्रयोग विरोध उठाया॥
तव सुरपति नै वचन उचारे। सुन नार्द गुरुदेव हमारे॥
इहि प्रयोग दारा मै आनी। मन महि इहि विधि जान पछानी
इहि गर्भु वाहरि आवे मारों। इसि के गर्भि को मै प्रहारो॥
असुरो वीज धर्नि से षोवो। तव पाछे मै निश्चल सोवों॥
उौर प्रयोग कछु नाहि हमारा। तुम पहि इहि विधि कहो पुकारा
वहुरो नार्द वात चलाई। सुण हो सुरपति मेरे भाई॥
इहि वनिता तुमि हमि को देवहु। मेरो कह्यो मन महि धरि लेवहु
जिह समे इह गर्भु वाहरि आई। मैं तुझे आण दिषालो भाई॥
जव नार्द इहि बात बषानी। सांईदास सुरपति मन मानी ३९.

सुरपति दीई नार्दु ले आया। अपुने ग्रह में आइ ठहिराया॥
तव उनि वनता वेनती करी। हे नार्द तुम पूरन हरी॥
हमिरी वेनती सुण करि लीजै। किर्पा करि इह हमि कों दीजै॥
नार्द कहा अैसो ई होई। जो तैं कह्यो होवे फुन सोई॥
जव लगि मै मुष नाह वषानो। हृदे अंतरि एह वात नि आनो॥
मोह गर्भु वाहर ना आवै। जब लगि मेरे मन ना भावै॥
नार्द कह्यो अैसो ही होई। जो तै कह्यौ होवे फुन सोई॥
पाछे नार्द ने क्या कीआ। ताहि प्रवोधिनि कों चितु दीआ॥
भजो गोविंद अवर ना जानो। अवर वात कछु हृदे नि आनो॥
वहि तो असुरु कहा उह जाने। जो नार्दु कहे सो कहा पछानें॥
तांके गर्भि महि भक्ति निवासा। जांकी गोविंद परि ही आसा॥
उोह सुनो उसिउ तार देवे। सांईदास उह हृदे धरि लेवे ४०.

हरिनाकस भक्ती चितु लाया। ऊभनि भुजा करि जतनु कराया
सहस्र वर्ष• जव वीते आई। कठनु महा तव असुर कमाई॥

कंपमान त्रैलोकी होई। ब्रह्म कह्यो कह आतम सोई ।।
जो कुछ मागे इसि को देहो। सुप्रसन्न प्रभ इसे करेहो ।।
अधिक भजन इनि ने ही कीआ। तोह भजनु मन महि करि लीआ
हमि तो कंपमान सभि होए। इहि प्रयोग निश्चल ना सोए ।।
क्या जानो इहि क्या किछु करिही। कहा वीचारु मनि अंतर धरही ।।
जो सभ सुर ने इहि विधि ठानी। सांईदास ब्रह्म मनि मानी ४१

ब्रह्मा प्रगटि भयो तव आया। तव मुषि ते येहि वचन सुणाया ।।
मांगो कष्टु काहि तुम पाहो। मैं देवो जो कछु तुमि चाहों ।।
हरिनाकस तव विनती ठांनी। हे पूर्न प्रभ ब्रह्म ज्ञानी ।।
अमरु होवां मै विनसा नही। छुरी कटारी तीरी षाई ।।
तीरी तुपने हथि नाले। कंपोई जीत जग को डाले ।।
निसिवासर अंतरि अरु वाहरि। ना मै गुप्त मरा ना बाहर ।।
तिरीआ पुर्ष सौ ना मै मरहों। एहि विनती मै तुमि पै करहों ।।
ब्रह्मे तवि इहि मुषो वषाना। दीआ मै जो तै हृदे आंना ।।
जो तैं मांगा दिता सांई। अवि जावौ अपुने ग्रह मांही ।।
काहे को तूं वहु दुख पांही ।।
ब्रह्मे हरिनाकस को वरु दीनां। हरिनाकस दृढ़ मति कर लीना ।।
अवि मोह स्मरसर अवर न कोई। जिन अभिमानु कीओ मुयो सोई ।।
तव ही मार्गु ग्रहि को लीनो। इहि विचार मनि अंतर कीनो ।।
इहि वर ब्रह्मे हमि को दीनां। जग भीतरि हमि को थिरु कीनां।।
तव आयो अपुने ग्रहि मांही। हरिनाकसु अति मनि सुष पांही ।।
तांके ग्रहि अनंदु वहु होया। सांईदास सकल दुष षोया ४२

वंधू सकल तव ही मिल आए। अति अनंद मंगल गुण गाए ।।
जोतकी, पंडित सकल सदाए। तांसो इहि विधि आषि सुणाए ।।
भलो समा मोह देहु वताई। कित समे वहो सिंहासन जाई ।।
जोतकी पंडित ऐसे आषी। ब्रह्म महूर्त्त साइत भाषी ।।
जव हरिनाकसु ग्रहि महि आया। नार्द तिहि वनिता ले आया ।।
ब्रह्म महूर्त्त दीयो वताई। तव तुमि वहों सिंघासन जाई ।।
ले वीचारु ग्रहि अंतर आया। महा वली तिसि वलु अधिकाया ।।

निस वीती वासुरु तव होया। हरिनाकसि सभु संसा षोया ॥
सिंघासन परि जाइ पगु धरिआ। हुकुमु चतुर्दिशा परि उनि करिआ
चतुर्दिशा परि हुकुमु मनाया। है हरिनाकसु जाइ नि जाया ॥
जल हरिनाकसु थल हरनाकसु। है हरिनाकसु होइ हरनाकसु ॥
सकल जगत मंनि जु हुकुमु सवाया।
सांईदास तिह अधिक वलु जिन भजनु कमाया ॥ ४३ ॥

जग्त की वात मै आषा अवि या पुर की आषा।
जो कछु हुकुमु इस परि कीआ सोई मुष भाषो ॥
वसुधा को तत्काल ही तिन लीओ बुलाई।
सभ धनु हमिरी अमानतू कहूं न लाई ॥
अवि ही पकडो पकडि करि तुझे दीयो वहाई।
सभि ही जल सेतकी देउो दिषाई ॥
तव कंपमान पृथवी भई मेरा क्या चारा।
तूं वलवंतु महावली जगका रषिवारा ॥
जो भावै सो तूं करै मै सर्नी तेरी।
जैसे जानो राषहो डूबते वेरी ॥
मोह अवज्ञा ना करी मुजरा तेरा कीआ।
जो सुनआ तेरा ही नामु सो मैं भी लीआ ॥
जव वेनती एती सुनी सुप्रसन्न होए।
मेरी आज्ञा मान के निरभौ हो सोए ॥
समे समे का फलु हरिआ कर्के तूं राषे।
जिह समै मैं तुझ कों कहों आए आगे राषे ॥
अघट मंगो तव अघट मोह तूं आए करि देवे।
मेरी आज्ञा मान करि मस्तकि धरि लेवे ॥
जो कछु मै तुमि ते मंगो सोई तूं आनें।
जो कछु तुमि ते उपजे सो सत्य कर मानें ॥
वसु लीओ मान के हरसाकस[1] कह्या।
सांईदास सदा सदा प्रभ सो रचि रह्या ४४

---

१. यहां "सा" के स्थान पर ना चाहिए।

एहु वाति तुम को कही प्रिथमें समिझाई।
तू एहि विधि को समझि देषु आपने मनि माही ।।
वसुधा वात वीचारीआ, अवि जल की आषों।
जो जल कों आज्ञा करी सोई मुष भाषें।
जल को लीओ बोलाइके ऐसे तिस कह्यो।
क्युं नाही आप तूं पल्ह रेह रह्यो।
अस्थावर सभ षोद के डारो तेरे माही।
सभ वसुधा मैं कर लेउो जानति तू नाही।
मैं तेरे दर कूकरा करि निकट बुलाए।
जो तूं कहे सो मानहों उौरु कछू न करहों।
जो तेरी आज्ञा होवै सो मस्तिकि धर हों।
जल को एही आज्ञा करी घ्रित तेलु वहाई।
पर्जा मोह सुष पावही, दुष मूल न पाई।
जलु इहि विधि सभ मान के अपने ग्रह आया।
घ्रित तेल परिवाह कर उंनि तबही वहाया।
सक्ल जगतु तिह वसि कीआ, जल हुकुमु मनाया
सांईदास जिन हरि भज्यो, तिन वहु सुषु पाया।४५।

जल की बात वताईआ जंगम वषानां।
सुनहो साधो आष हों धरिहो तुम कानां।
जंगम लीए वोलाइ करि तिह आष सुणाया।
रे जडो कवन वात तुम ने चितु लाया।
अवि ही मूल उपारि करि तुम को कटि डारो।
मूल साष तुमरी सभो अव ही उपारो।
तव जंगम वेनती करी हे नर वलवाना।
कित प्रयोग क्रोधु तै मनि अंतर आना।
जो तैने आज्ञा करी सो मस्तिक धरहों।
उौर वात कछू हमि हृदे धरहों[1] ?

---

१. यहाँ "न" लगाना चाहिए अथवा प्रश्नवाचक चिह्न तभी अर्थ स्पष्ट होता है।

तव हरिनाकस य्युं कह्यो सुनहो मेने भाई।
तुम सुष सेती वस्यहो अपने ग्रह जाई।
जो तुमि ते उत्पत्य हो मेवा सो राषो।
रंचिक मेरे हुकुमु विनु तुम नाही चाषो।
जो मांगो सो आए देहो तुम मेरे पांही।
और वाति कछु हृदे महि तुमा आने नाही।
जंगम भी विधि जाए के अपने ग्रह आए।
आयो अपुनी ठौर जाइ आस्रम उनि लाए।
सभि कौहु हुकुम मनाइया तिह वलु अधिकाए।
सांईदास जो हरि भजै वहुता सुष पाए।४६॥

हरिनाकस की भामने मुष वात वषानी।
राम रभि बाहर आवहो सुनहो मनिमानी।
तव गर्भि महि जो जीउ था सो वाहिर आया।
गर्भि तजि वाहरि आयो आनंदु सवाया।
ताहि रूप सुंदर अति अधिकारे।
ससि अरु भान छपि गए जवि किर्नि उजारे।
जोतकी पौधे सदि के तव नामु रखाया।
भक्ति प्रहलादु नामु है विधि आनि कर लाया।
विप सभि ही ससदिके तिह भोजनु दीना।
कहू सुणायो आइ करि दानु वहु कीना।
वंधु सभि मिल आए सभि देह वधाई।
कुंगू केसरु माता कहे भल भयो सहाई।
माता गोदी पाइ करि तव क्षीर पीवाया।
अपुने देव मनाइ करि माथे तिलकु लगाया।
षष्ट सात जवि वर्सि का प्रहिलाद जी होया।
भक्ति अंकरु मस्तकि लिष्यो निरभौ हो सोया।
निसवासर ओह कृष्न कृष्न मनि अपुने आषें।
भक्ति भाउ आधीनता मनि अंतरि राषें।

संडमर्के[1] पाडसाल जा पढिने पाया।
जलि हरिनाकसु थलि भी इहि जाइ न जाया।
पटीआ संढे लिष्य करि प्रहिलादे को दीनी।
प्रहिलाद भक्ति पटीआ लई के करि लीनी।
पटीआ माहें इही वात उनि वेग लिषाया।
जल हरिनाकसु होइसी ना जाइ न जाया।
प्रहलाद भक्ति पटीआ लई लागा तिह भाषण।
अछर राम रसाइणी लगो अंतर राषण।
जव उह पटीआ नैत्र निहारी।
उौर लिष्यौ कछु उनि हंकारी।
जलि ते तिस ले पटीआ धो डारी।
पूर्न भक्ति जो ब्रह्म विचारी।
हरिनाकस नाम दूर कीना।
कृष्न कृष्न नामु लिख लीना।
जव संडेउो नेत्र निहारे।
लागो पकिडिन नैन पसारे।
मै कछु उौर लिष्यो ईहा उरें।
इनि कछु आप लिष लीनो पौरे[2]।
संढे पटीआ षसि लई लेकरि उनि धोई।
जो कछु प्रिथमे लिष्यो लिष्या फुनि सोई।
तव रसना सो य्युं कह्यो, ऐसें जपि लीजे।
जल थल हरिनाकसु हय, कछु अवर न कीजे।
प्रहिलादि भक्ति पटीआ लई ले पढिने लागा।
है भी, कृष्न ही होवसी, जसु अतिभुत वांका।
वहुरो ले करि धायो, हरिनाकस नामा।
अंतरि अपुने राषयो, प्रभ पूर्न रामा।

---

१. संडेमर्के या संडे शब्द गुरु अथवा शिक्षक के लिए आया है। संभवतः मूल शब्द "संदीमणि" हो।

२. पौरे=बालक।

पटीआ परि फिर लिष्यो जो कृष्न सहाई।
तिस कौ किस का त्रासु है, जो तिस जपु लाई।
संडे पटीआ फेरि करि, षसि लीनी ताही।
मैं तुझै कहा पढावहो, तूं कहा पढाही।
सडे पटीआ ले करि, बहुरो उनि धोई।
जो कछु प्रिथमे लिखया, फुनि लिषयो सोई।
वहुरो दीई प्रहलाद को, तूं एही पढिहों।
उौर काहू का नामु तूं मन अंतर ना धरहों।
वेग प्रहलाद पटीआ लई, अछरु उनि देषया।
कहा करे गवारु, एहि कछु द्रिग ना देषया।
पटीआ वहुरो धोइ करि, फिरि लिषयो नामा।
कृष्न सहाई भक्ति को, पूर्न प्रभ रामा।
संडे लीता सद्दिके प्रहिलादे ताई।
उौर काहू को न जपौ हरिनाकसु सांई।
प्रहिलाद भक्ति प्रगटि कह्यो मैं कृष्न पछान्यों।
हरिनाकसु कहु कवन है, तिस को उरि आनों।
संडे करि चावकु लीयो, मारन तव लागा।
अनेक जतन उहु करि रह्यो, उनि कृष्न न त्यागा
संडे कह्यो क्या करो येहि समझै नाही।
अवि जाइ आषो नृप को ऐसी मति मांही।
अपने जेहा करि थका इहु कह्या न माने।
क्रोध मान संडा भयो अति क्रोध मनि आने।
तब ही जाइ पुकारआ हरिनाकस पासे।
तेरा नामु न सिमर ही ना मनि कर त्रासे।
पटीआ लिष्य मै दई ले करि उोह धोवै।
कृष्न कृष्न तिह लिष्या तेरा नामु न षोवै।
सुत तेरा जवि ना जपे होर क्युं करि माने।
सभि ही त्यागहि नाम तोह, वावा तूं जाने।

जितना कितना करि रह्या माने नही कह्या।
मेरे मनि विच एसि तें लोह ही वह्या।
मै तैनू हुण आष ही सुण मेरे भाई।
सांईदास पुकारआ जो सी वो पाई।४७।।

हरिनाकस जव इह सुन्यां संडे दे पासों।
प्रहिलाद लीयो बुलाइ करि सुतु करे विनासा।
तव प्रहिलाद को य्युं कह्यो जपु मेरा नामा।
उौर वाति सभ छाडि करि करिहो इह कामा।
कित कौ करे विरोध तूं सुण मेरे वाले।
मैं विनु उौर न कोई तुमरे रषिवाले।
प्रहिलाद भक्ति उत्तर दीयो सुणहो पिता मेरे।
क्रिष्न सहाई मोह है जांके सभ चेरे।
उसेडके[1] आषु तूं होरु कित मै लागा।
जो सुषदाई आद अंत तिस को क्युं त्यागा।
उौरु नामु सिमरो नही कृष्न कृष्न पछाना।
विना नाम मै क्रिष्न के अवरु नहीं जाना।
जवि हरिनाकस य्युं सुन्यों प्रहिलादि इउ बौले
अति क्रोध मनि होयो धर्नी परि डोले।
तव मुषि ते इउ कहिआ जा करि गिरिवावो।
रंचिक रंचिक इसि करो करि मार चुकावो।
हरिनाकस इउ आषआ लै चल्यै ताही।
मानो वधिक उडीकिदे फडि लीना ताही।
प्रहिलाद भक्ति को लै गए जां करि चडिवाया।
अस्थावर परि चाड के फिरि तले वहाया।
क्रिष्ण क्रिष्ण मुष ऊचरे सभ जग्त हंकारी।
तांकौ भौ व्यापे नही जो सरनि मुरारी।
प्रहिलादि भक्ति को दुष नहीं लागा।
सांईदास जो हरि भजे तिह सभ दुष भागा।४८।।

---

१. यहां 'उसे छडके' शब्द चाहिए "छ" छूट गया है।

संडे जवि इह देष्या प्रहिलादु न मूआ।
पूर्न ब्रह्म गोपाल को अमर इह हुआ।
फिरि ले आयो भक्ति को हरिनाकस पासे।
गिर ते गिराया ना मुआ अति विगसे हासे।
तव हरिनाकस य्युं कह्यो दावा सो जारो।
जैसे जानो तैसे ही तुम इसि प्रहारो।
संडे ओझे[1] भक्ति को दावा महि डारा।
दावा भक्ति अंगु ना दहे गोविंदु रषिवारा।
दावा जल वलि बुझि गई प्रहिलाद न मूया।
भक्ति गोविंद की मनि धरी अमर वह हुआ।
मानो सिंहजा पुहप परि पगु जन ने दीना।
महा अनंदु हृदे महि वाहू ने कीना।
हरिनाकस जव देष्यो इह नाही मरही।
अंतरु अपना सोधि करि वीचार जु करही।
काती लोह की घडो कूप महि खडि पावो।
तिसि महि इसि को डारि कें तुम मार चुकावो।
काती लोहेकी घडी कूप महि गहि पाई।
प्रहिलादि भक्ति को कूप महि फिर जाइ गिराई।
डार कूप महि भक्ति कौ वह उठि घरि आए।
तहा पालनलासां पद दीआ पींतवर छाए।
तहा भक्ति ने सुष कियो दुष कोई न लागो।
जो कछु भौ सा तिस समे अंतर तें भागो।
निसि वाती झालू भआ हरिनाकस कह्या।
जाहो देषो तिस कौ कित गति रह्या।
संडामर्का जाइ करि जव देषरग लागे।
पालनि महि आनंद माहि झूलेवने पागे।
संडे मर के जाइ कहा पालनि महि झूलै।
तांको दुख न लाग ही कैसे करि डोलै।

---

1. ओझा > उपाध्याय = शिक्षक गुरु (पंजाबी में पांधा)।

हरिनाकस तव य्युं कह्यो उसि को ले आवौ।
मैं उसि कौं कछु पूछहों तुम विलम न लावौ।
संडामर्का जाइ करि प्रहिलादु ले आया।
भक्ति हेत भगवान जी सभ रूप दिषाया।
हरिनाकस वहु जतन कराए।
कुंजर बस धरि अधिक बुलाए।
भक्ति को वाधि गजि आगे डारा।
मदि माते गज अति बलु भारा।
निर्षित भक्तु गज पाछे धायो।
प्रहिलाद भक्ति के निकट आयो।
गज सार्थी अंकस तिस मारे।
गज आगे पग मूलि न डोरे।
वहुरो राकस ने क्या कीआ।
ऊर्द्ध मत्त चित महि इ लीआ।
भक्ति कौ वांधि वसुधर उभीए।
महा त्रासु राषस दिषलाए।
वसुधर भक्ति के निकट नि आवहि।
दर्सनु करि पाछें कौ धावहि।
भक्ति गुण ताहि दिसहि मेरे भाई।
राकस देष समिझि ना पाई।
वहुरो भक्ति कों उर महि लीना।
वदनु चूंम मुष ते बचु कीना।
हे सुत जप लेहु मेरो नामा।
उौर सों तेरो न कछु कामा।
मम डरि कुंचरि तोह न मार्यो।
मनि महि डर्प पाछे पगु धार्यो।
मनि मै कह्यो जो मैं इसि मार्यो।
अपने प्रान वेग ही जारो।
हरिनाकसु मोकौ प्रहारे।
सूत वियोग करि मो कौ मारे।

वसुधर भी ऐसे हृदे आनी
प्रिथ्वी निश्चै करि इहि जानी।
एह जो तुझ को नाह डुवायो।
मम डरि करि के तुझे वचायो।
दावा तुझ को जार्‍यो नाही।
मम डरि ते डर्पे मन माही।
मत तूं कहै जो कृष्न छुडायो।
हमिरी रक्षा की तां गायो।
मोह नामु हृदे धरि लीजे।
ए सुत उौर कामु ना कीजै।
भक्ति सुणी जवि इहि विधि काना।
तव ही मुष ते वचनु वषाना।
रे पत कहा तूं रछि करावे।
तुमरो वलु कहु कहा वसावै।
रछया मोह कर्ति भगवाना।
तै हृदे कहा लीयो अभिमाना।
तजि अभिमान सरनि हरि आवो।
अपुने मनि का भ्रांत चुकावो।
कहा तूं भूल पर्‍यो मनि माही।
तुमरे मन कछु आवै नही।
जिन अभिमानु कीयो सो मूयो।
तांको नासु तात क्षिण हूयो।
काहे कौ तूं भर्मि भुलावैं।
राम सर्नि काहे नही आवैं।
विन हरि नाम थिरु नाह न कोई।
जुगां जुगंतर थिरु प्रभ है सोई।
अेसी भक्ति नै वात उचारी।
सांईदास जन को वलु भारी॥ ४६॥

हरिनाकस जव य्युं सुन्यो वहु क्रोधु करायो।
अति क्रोधु मनि महि भयो लोचन ललायो।
राकस ने तव क्या कीआ।
भक्ति कौ थम्ह सहित वधि लीआ।
तव ही भक्ति सौ वचनु उचारा।
कहा कृष्ण तोह राषनहारा।
अवि तुमरी आइ करे सहाई।
सो प्रभु मोकों देह वताई।
भक्ति कह्यो प्रभु मो महि तो महि।
सकल जगति महि अहो इसु घर थंम्ह महि।
थंम्हे नामु जबि भक्ति उचारा।
तव ही उनि ते भयो टंकारा।
नारसिंह को वपु प्रभु कीना।
थंम्ह सो तव पगु दीना।

नृसिंह-अवतार

चंद्रावती देवी है मात।
वन्ह ऋषि तांको है तात।
हिजगुरू गढु मुलतान।

हरिनाकस तव ही उठि भागा।
काल सरूप देष षिस के पागा।
नर हरि पकिडयो राकस तांई।
रात दिवस महि को समा नाही।
संध्या परी रवि अंतर वाहर।
द्वार मध्य पकर्यो श्रीनरहर।
धर्यो जंघ परि उदर विडारा।
कर नष सों श्री प्रान अधारा।
पह्मचि वचु पूर्न करि लीआ।
शस्त्रो का कोऊ घाउ न दीआ।

कर पलो जोर करि रंगायो।
तांकी सोभा अधिक वतायो।
मानो नीबि फलि देत दिषाई।
अनि ताह ललता डरि जाई।
अति सोभा ताहू वनि आई।
तांकी सोभा कही न जाई।
फोर्ति आतिरी उौर नषावत।
राकसि आतिरी सकल फुरावत।
भक्ति प्रहिलाद प्रश्नु तव कीआ।
हे प्रभ कवन धर्म इनि लीआ।
अंतर फोरे जो निर्षावो।
एह किर्पा कर हमिह वतावो।
नरहर प्रतु दीनो जनि ताई।
सुनहो भक्ति तुम हितु चितु लाई।
एहि प्रयोग अंतरी फोर डारो।
तोह सार्षा कोई भक्ति निहारो।
मतु कोई अवरु होवै इस मांही।
इह उपजी घट उौर कछु नाही।
इहि कहि भक्ति को मान वधायो।
अपने जन को भ्रांत चुकायो।
अमरो ने कीनो जै जै कारा।
जै जै नरहर रूप उचारा।
कुसम वर्षा अमरो लाई।
नारिसिंह हरि सदा सहाई।
साधो नाम सदा चित धारो।
सांईदास हरि नाह विसारो॥ ५० ॥

हरिनाकस जब मुक्ति सिधायो।
प्रहिलाद भक्ति इहि हृदे वसायो।

क्रियाकर्मि करने चितु धारा।
ब्रह्म भोजन कीनो ततिकारा।
बेद मृजाद भक्ति सभ कीग्रा।
पिता जान इहि मनि धरि लीग्रा।
धेन ग्रधिक बिपो कों दीनी।
हाथ जोर कर बिनती कीनी।
भक्ति को बिपो तिलकु लगाया।
ग्रशीर वचनु मुषि ते उचिराया।
नरहरि तब ही वचन उचारे।
सुरण प्रहिलाद तूं भक्ति हमारे।
भयो हौं क्रपाल मांगु कछु लेवहु।
मन महि संका कछु न करेवहु।
जो तुम मांगों देवो सोई।
ग्रौर बात मैं करो न कोई।
भक्ति हाथ जोरे उचिरायो।
हे प्रभ करुणा जान करायो।
भक्ति सदा तुमरी मैं पावों।
नाम जपों कबना ग्रलिसावों।
करुणा करि ये ही मोह दीजै।
बिक्षा स्यौ जनि को वच लीजै।
तुमरो नाम बसै घटि माही।
ग्रौर बात कछु जाचों नाही।
नरहरि प्रत प्रहिलाद सुनायो।
मोहि भक्ति तुम हृदे बसायो।
भक्ति सदा होवै तुम पाही।
ग्रवरु मांगु कछु सुकचो नाही।
फिरि भक्ति ने बिनती ठानी।
तुमरी गति प्रभु मैं ना जानी।
मम परि क्रिपा करी ग्रधिकाई।
तांकी विधि कछु कही न जाई।

जो कृपाल भए प्रभ मेरे।
तौ विनती करो आगे तेरे।
जगत दुषी तिस मुक्ति पठावो।
वेग विल्म हर मूल नि लावो।
जव प्रहिलाद येह वचुनु उचारा।
नर हर मन कीनो वीचारा।
भक्ति कउन वरु जाचनु कीना।
पीर अधिक भयो तिहि लीनो।
जो न करौ बच भक्ति पुराइण।
मानु भक्ति होवे किह नराइण।
भक्ति वचन प्रतिपाल करेवों।
मांनु भंगतिहि कर्नि न देवों।
वहुरो भक्ति स्युं वचनु उचारा।
सुणु हो भक्ति तुम वचन हमारा।
जगत दुषी को ले तुम आवो।
मोको कोई आण दिषावो।
तांको मै बैकुंठ पठावो।
वेग बिल्म छिन मूल न लावो।
भक्तु सुनत हर वचन उठि धायो।
तजि ग्रहि अपुनो वाहरि आयो।
चड्यो षडावन थान तजि दीए।
सिष अंगोछा कटि धोती कीए।
जगत दुषी कौ लेने धायो।
क्रपाल भयो प्रभ वचन उचरायो।
चलित चलित अंभ के तटि आयो।
तहा विष्ट मूत्र अधिकायो।
एक सूकरी तहू ठौर निहारी।
सहित कुटंब प्रोजन धारी।
एस ते अवरु दुखी कोऊ नाही।
महा दुर्गंधता महि उर्भाई।

प्रिथमहि इसि कौ मुक्ति पठावों।
नर हरि पै इसि ही लै जावों।
भक्ति तव ही मुष वचनु उचारा।
हो आतम रूपी सुण चितुधारा।
नर हरि मोह भए किर्पाला।
सुप्रसंन्न होए दीन दियाला।
कहति दुषी जो जग्त ल्यावों।
वेग विलम कछु मूल न लावों।
तांको मै वैकुंठ पठावों।
ततषिन महि तिहि दुख मिटावों।
आवो मोह संग तुम ले जाई।
तुम को प्रिथमे मुक्ति पठाई।
सूकरी तव ही कछु न भाषा।
भक्ति वचनु तिन हृदे न राषा।
वहुडो भक्ति ऐसे उचिरायो।
आतम रूपी सब्द सुनायो।
सूकरी के हृदे एक न आई।
अति अनंद महि वहु उर्भाई।
तीसरो वचनु जव भक्ति उचारा।
तव सूकरी मन लीयो वीचारा।
भक्ति को प्रतु दीयो ततकारे।
हे प्रहिलाद क्या षडा पुकारे।
मैं अनंदहि अति उर्भाई।
मोको दुख ग्रासे नही काई।
सकल कुटंब सहित मेरे भाई।
मनि महि विघ्न उपजे नही आई।
छत्री प्रकार को भोजनुं पर्या।
सुत वंधू उरि घेरा कर्या।
मम सर सुखी जग महि कोई नही।
तौर सर दुखी कोई द्रिष्ट न पाही।

संग अगोछा कटि धोती तेरे।
पगि षडावां दुष तुझ को नेरे।
अंबर ना जो अंग हडावै।
पन्हों आना जो पग महि पावै।
पिता तोह नर हर हति कीना।
तैने सुष कवनु चिन लीना।
जवि इहि भक्ति सुनी विधि काना।
अति भै चक्रति भयो हैराना।
औरु कवनु दुखी मै जोह न जावौं।
जग मह दुखी कोऊ नाही पावौं।
जो मेरे प्रभ उत्पत करी।
मग्नि भई जाहू महि जरी।
इहि हृदे धारि भक्ति फिरि आयो।
नरहरि का डंडौत करायो।
तव प्रभ भक्ति सौ कह्यो सुनाई।
भक्ति प्रहलादि सुनो चितु लाई।
कौनु दुखी जग से ले आयौ।
क्युं नहीं तै मोह आण दिषायो।
मोह दिषाइ तिह मुक्ति पठावों।
तुमरो वचु मै पूर करावों।
तवही भक्ति मुषि वात उचारी।
तुमरी गति कछु पार नि वारी।
तुमरी गति कौ तुम ही जानौ।
तुमरी कथा अगाध पछानौ।
हमि मति हीन थोरी मत मेरी।
तुमे बात प्रभ तुम पै तेरी।
जग महि दुखी कोऊ प्रभ नाही।
सकले आनंद महि उर्भाई।
जो तुम कीआ पूर्न कीआ स्वामी।
सकल विर्था प्रभू अंतरजामी।

भक्ति कों नर हर समझायो।
सुन हो भक्ति तुम हृदे वसायो।
जग महि दुखीआ नाही कोई।
सभ कल्याण हाल महि होई।
भक्ति को मान अधिक वढायो।
अपनो जान करि सुख दिवायो।
जो जो नर हरि सर्नी आवै।
सांईदास प्रभु सुष दिषावै।५१।।

सकल ऋषीश्वर ने सुण पाया।
हरिनाकसु प्रभ मुक्त पठाया।
सकल ऋषीश्वर मिल कर आए।
ताहि नाम कछुकहे न जाए।
एक एक जो नाम कछु कहे न जाए।
एक एक जो नाम वषानो।
का गति कहा जु लिख करानो।
हरि उस्तित करि के उठि धाए।
आपौ अपने आश्रय आए।
एक ऋषीश्वर दर्सनु नां कीआ।
ताहि हृदे वहु भ्रांत है लीआ।
वन माही उकिलावत फिरही।
करि सौ करि पटिकारत करही।
वंधिकि दाम रषी तिहि ठौरा।
नर हर दर्सन विनु ऋषु भयो वौरा।
षग मृग जो फाही निकट आवै।
ऋषु बोलै फासनि नही पावै।
वंधकु निर्ष रह्यो विसमाई।
ऋषि सों कहा सुनों मेरे भाई।
इति उति कहा फिर्त उकिलावत।
कहा दुख तोह क्युं न सुनावत।

तोह दु:ख कों करो उपचारा।
सुनहो ऋषि तूं कहा हमारा।
तोह डरि षग मृग फासे नाही।
हमिरे मन महि भौ उपजाही।
जवि लगि षग मृग हाथ नि आवैं।
सुत वंधू वनिता दु:ख पावैं।
भूष ग्रसे तिह को उकिलावहि।
कहा करो जवि वहु ना पावहि।
वंधिनि को ऋषि कह्यो सुनाई।
रे फंधिक सुन हो मेरे भाई।
मोह मृग भाग्यो ताहि हिरावौ।
जो हित हों ताहू कौं पावौ।
उौर रोगु हमि कौ नही कोई।
इहि प्रयोग आत्म दु:ख होई।
वंधिकि जो सुनी इहि विधि काना।
फिरि करि ऋषि सो वचन वषाना।
मिरग चिहन हमि देहु वताई।
करो प्रतिज्ञा येहि मेरे भाई।
प्रथम मिर्गु तोह फंधि देवो।
पाछे षग मृग मैं फंधि लेवो।
ऋषि वंधिक कौ रूपु वतायो।
वंधक ने सुनयो चित लायो।
कट ऊपरि सिंहु है मेरे भाई।
नारि तले कौ देत दिषाई।
नारसिंह ताहूं है नाम।
सकल जग्त को वहु विश्रामा।
वंधिकि सुण प्रतु ऋषि कौ दीना।
भलो रूप मो कौ दस लीना।
शांत रूप होइ तुम ठहिरावो।
शांत कियो छिन ना उकिलावो।

प्रिथम मिर्गु फंधो मै तेरा।
तौ पाछे उौरहि ग्रानो नेरा।
वंधिक ने परितज्ञा कीनी।
एहि प्रतज्ञा द्रिढ करि लीनी।
ऋषु अपुने आश्रम ठहिरायो।
वंधिकि मृगु फाहनि चितु लायो।
जो षग मृग होरु फाही फांसे।
ताह देषि बंधकु ताह हांसे।
ततक्षिण मुक्ति करो तिस ताई।
तांको बंधकु बांधे नाही।
हृदे माह येही ठहिराई।
प्रिथम ऋषि मृगु लियो फहाई।
पाछे अवर मिर्ग निकट आवो।
नाहि तमरों प्रानि तजि जावो।
कठिन प्रतज्ञ मनि महि धारी।
सच्च प्रीत मन लई वीचारी।
नारसिंह प्रभ अंतरिजामी।
सव विधि पूर्न पूर्न नामी।
नारसिंह को फिर वपु कीआ।
आइ वधिकि पाही पगु दीआ।
वंधिक तव ही कह्यो पुकारे।
आवो रे ऋषि तुम ततकारे।
सुनति ऋषीश्वर वेग ही आया।
निर्ष्यो प्रभु आनंदु वहु पाया।
दंदन सौ फांही कटि डारी।
वंधिक को प्रभ लीयो उधारी।
उस्तति हर की ऋषि उचिराई।
जो विधि सी सो कह्यो सुनाई।
मछि रूप प्रभ तुमही कीआ।
संखासर वेद दुराइ जवि लीआ।

कछ रूप प्रभ तुम ही होए।
सुरों सुष दीए असुर तें षोंए।
वैराह रूप प्रभ तुम ही कीना।
हर्निकश्यवि मार पृथवी सुषु दीना।
वसुध्यीआ तिह ते ले आए।
तांके पाछे जगत वनाए।
तेरो रूपु क्या वर्नि सुनावो।
अति सरूप कछु कहिति नि पावों।
कुदरति रूप सभ कुदरति कीनी।
कुदरति धार सकल लीनी।
तेरो अंतु न पावै कोई।
कवन अंतु कछु अंतु न होए।
सभ उस्तित करि कर के चाले।
धर्नि आकास को कीयो प्याले।
अंतु न किनहू तांको पायो।
मनि विचार शांति धरि आयो।
तांको अंतु कहा कोई जाणे।
तांकी लील्हा कहा वषाणे।
पारावार तांके कोऊ पावै।
रूप होइ ध्यान कोऊ पावै।
विनु व्यान कहा नेत्र चलाए।
नारसिंह औतार सुणायो।
सांईदास सुनो सुष पायो॥ ५२॥

सत्य सत्य रूप सभ सत्य।
सत्य सत्य सरूप सभ सत्य।
सत्य सत्य कीनो ओं अकार।
सत्य सत्य कीनो विस्थार।
सत्य सत्य करुणा निधि स्वामी।
सत्य सत्य प्रभ अंतरिजामी।

सत्य सत्य गोबिंद गोपाला।
सत्य सत्य संतनि रषि वाला।
सत्य सत्य मुकंद मुरारी।
सत्य सत्य संतन हित कारी।
सत्य सत्य माधो धर्नीधर।
सत्य सत्य हर सभ कारुण कर।
सत्य सत्य पूर्ण पर्मेश्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल विश्वेश्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल वसेरा।
सत्य सत्य संतनि सुख चेरा।
सत्य सत्य गोबिंद गुसांई।
सत्य सत्य पूर्न सभ थाई।
सत्य सत्य सत्य हर रूपा।
सांईदास प्रभ सत्य सरूपा ॥ ५३ ॥

वावन रूप कहों क्युं कीना।
कित प्रयोग बावन वपु लीना।
एहि वीचार करुणा कर देवो।
हमिरे मन संचरु हरि लेवो।
जो संचरु हमिरे मनि आवै।
तुमि करुणां ते वहि मिटि जावै।
तुम प्रवीन विर्था को पावो।
हमिरा संचरु तुमहि चुकावो।
तुम प्रसाद भर्मु हरि भागे।
तुम करुणा ते दूषन लागे।
करि किर्पा हमि देहु वताई।
तुम किर्पा करि संचरु जाई।
श्रवन धरौं देवो वीचारा।
सांईदास वावन वपु धारा।५४॥

राजे वल ने इह मन धारा।
एक लाष जग्य करो करितारा।
तौ पाछे इंद्र आसन लेवो।
जो मन भावै सोई करेवों।
इहि वांछा उनि मन महि कीनी।
नृप प्रतज्ञा इहि मन कीनी।
भोजन सहस विपों को देवों।
सुप्रसन चित ताह करेवों।
तिलक ले करि मस्तक लावै।
अति मिष्टानु भोजन षलावै।
क्षीर षंडि घ्रित वहु डारे।
अपुने कर कर मषी उडारे।
पगि धोवै चर्णाम्रतु लेवै।
इहि विधि तांकी सेव करेवै।
निता परित येही उसि कामा।
दधि घ्रित अंमृति ब्राह्मण धामा।
सुक्रतु नितापर्ति वहु करई।
अपुना सीस ब्रह्मण पगि धरई।
ओह औसुरु बुद्धि सुरों की लीनी।
नेम धर्म्म ब्रतु एहों कीनी।
एक सहस्र घट लषु यज्ञु कीना।
एहि विधि भोजनु ब्राह्मणो दीना।
कंपमान तव सुरपति होया।
आंसू नीर मुष अपुना धोया।
अति विस्वासु मनि अंतर कीना।
सांईदास मनि संचरु लीना॥ ५५॥

दारा सुरपति की युं बोले।
हे सुरपति तू काहे डोले।

कित कार्न संचरु मन पर्‍यो।
किन तुमरे मरिजोरा कर्‍यो।
तूं भूपति सुरपति अधिकारा।
तुमरा किने न पायो पारा।
तुमिरा चितु कित विधि कंप गया।
कित प्रयोग विस्माद होइ रहा।
इसि का उत्तर हमि को देवौ।
संचरु त्याग सुख मनि लेवौ।
तव सुरपति ऐसे करि बोले।
इह प्रयोग मेरा मनि डोले।
वलराजे निश्चा येह कीनी।
उौर त्याग मन महि यहि लीनी।
लखु यज्ञ कर इंद्रासनु लेवों।
जो मन भावै सोई करेवों।
ब्राह्मण को मिष्टानु पौलावै।
अपुने कर कर तिलकु लगावै।
चरन पषार चर्णाम्रितु लेवै।
ह्रिषमान होइ दछिना देवै।
एक सहस्त्र यज्ञु अवरु जो करिही।
तौ इंद्रासनु परि पगु धरिही।
एक सहस्त्र घट लषु यज्ञु कीआ।
अति मिष्टानु भोजन विप दीआ।
कित प्रयोग हमिरा थिरु राजा।
कित प्रयोग पूर्न होवहि काजा।
इहि प्रयोग मन करो वीचारा।
सांईदास हर अपर अपारा॥ ५६ ॥

तव दारा सुरपति य्युं कह्यो।
इहि प्रयोग मै चक्रिति होइ रह्यो।

तुम देषो मैं क्या कछु करहो।
आसनु तोह निश्चल मै धरहों।
मेरे कह्यो मान करि लेवों।
अवरु वाति कछु मन ना देवों।
सुर सभ ले ब्रह्मे पेहि जावों।
अपुनी विरथा आष सुणावो।
ब्रह्मा करसी तिस उपिचारा।
एही है मोह मन वीचारा।
सुरपति सुर ले करि संग धाया।
चला चला ब्रह्मे पहि आया।
विर्था अपुनी आष सुणाई।
ब्रह्मे ने तव ही सुण पाई।
वेद पढ्यो बेनती तिह ठांनी।
हे कौलापति सारंग पानी।
वलु यज्ञ करि इंद्रासनु लेवै।
सुगरु मनि विस्वासु करेवै।
सुरपति की विनती सुण लीजै।
अपुने जन परि किर्पा कीजै।
सुरपति ने जव अधिक कनतायो।
महा अधिक मन महि विस्मायो।
तवि अकास से वाणी होई।
रे सुरपति जाइ रहो सुष सोई।
कश्यप के ग्रहि मै लेउो अवतारा।
ऐसी विधि प्रभ कह्यो प्रकारा।
तोह इंद्रासन कोऊ न लेवै।
सांईदास परि क्रिपा करेवै ॥ ५७ ॥

श्री गोपाल भक्तिन सुषदाई।
सदा सदा जन भीर मिटाई।

तज वैकुंठ वेग प्रभु आयो।
दित्य भूमि महि आइ ठहिरायो।
दित्य केत वही जात प्रकासी।
भयो उजीआरा तिमर विनासी।
मानो रवि ने कीयो प्रकासा।
कश्यप हृदे महि भयो हुलासा।
पञ्च शंकरु सुगुरु आयो।
और वर्न सभ सहित सिधायो।
दित्त दर्सु देषन को आए।
ब्रह्म उस्तित अधिक सुनाए।
ते उस्तित सुण हो मेरे भाई।
प्रीत वधै सुष उपिजै आई।
निरंकार हर नामु तिहारा।
अकाल मूर्ति सभ तोह सिर भारा।
पै समुद्र महि वेद उचारे।
विनती कीनी कह्यो पुकारे।
तव तुम कह्यों कश्यपि गृह आवों।
सुरपति का संतापु चुकावों।
तव ही हमि मन माहि विचारी।
मनि संचरु लीनों भौ धारी।
कहा जानें क्या भई है वांनी।
हे प्रभ हमि ऐसे मनि आनी।
आद अनादी हर तेरो नामा।
गर्भियोन तुमिरा क्या कामा।
भक्ति हेत प्रभ ऐसे कीनो।
भक्ति हेत ऐसे मन धरि लीनो।
पञ्च चि आइ उस्तित करि धाए।
आपो अपने पुर महि आए।
भाद्रो मास तिथ द्वादसी भाई।
कपल मुनि जन्म लीयो मेरे भाई।

जन्म लियो प्रगटो उजीआरा।
कपल मुन ने लियो अवतारा।
त्र्योदश दिन जव भए व्रतीता।
कश्यप नामकर्नि तिहि कीता।
पंडित जोतकी अधिक सदाए।
भले महूर्त्त ताह सुछाए।
कपल मुन ठाकुर नामु रषायो।
जो कछु वेद माहे प्रगटायो।
दस्न कढे मुख बहु विधि कायनि।
पग सो षेलति कुंज के मोहनि।
वडो भयो सभ सुरति सभारी।
प्रान पुर्ष जिन रचिनाधारी।
सांधो चितु लावो गुण गावो।
सांईदास लिव हर सौ लावो।५८॥

इकि दिन बलि राजे क्या कीआ।
येही धार लीयो उनि जीआ।
मघिवापुर ताई उठि धायो।
अधिक सैन ले संग सिधायो।
जाइ घेरा पुर माहे कीना।
वलि ने गर्भ अधिक मनि लीना।
मघिवा सुर लेकर संग आयो।
वलि ने तास्यूं युद्ध मचायो।
बलि अपुने रथि को आज्ञा कोई।
मघवा रौरापति को दीई।
वल अरु मघिवा युद्ध करावहि।
सैना सैना सों भूझावहि।
उह उस मारे वहु उसि मारे।
दोनों बलि कोऊ नाही हारे।

महां अधिक युद्ध ताहि करायो।
दोनों महिं किने नाहि हरायो।
मघिवा को भी वलु अधिकाई।
वलु राजा भी अत बल काई।
सैना दोनों के संग भारी।
एक एक सुरु वहु वलिकारी।
तांको नामु कहा वीचारो।
रसिना रंचक नाहि उचारों।
कहा बुद्धि तिहि नामु सुनावों।
कहा बुद्धि जो सकल वतावों।
सूक्ष्म वाति मै ले वीचारी।
गुर सांईदास क्रिपा जव धारी।५६॥

वलु मघिवापुर कौ तजि आयो।
मघवा अपुने पुर ठहिरायो।
कश्यपि भार्या दित्य हे नामा।
गोविंद भजनु कीयो तेहि भामा।
महा कठनि तपु ताह करायो।
तव प्रभ प्रगटि दित्त पहि आयो।
कह्यो मांग लेवो मेरे भाई।
जो कछु तुमरे मन महि आई।
तव ही दित्त ने वचन उचारे।
हे पूर्न प्रभ प्रान हमारे।
तोह सार्षा इकु वालुकु पावो।
अपुना मनु तनु तासो लावो।
अवरु नाहि कछु हमरी प्यासा।
येही है हमरे मन आसा।
तव प्रभ तिह को दीआ वताई।
मैं आवा तुमरे गृह मांही।

अति सुगंधि अंग कौ तूं लाई।
तिस समे अपुने पति पै जाई।
मै तुम गृहि आई लियो अवतारा।
ये ही वचन तुम संग हमारा।
जो कह्यो प्रभ दित्त करायो।
पद्मचि बच प्रभ हृदे वसायो।
मघवा कार्ज कर्ने ताई।
जन्म लीयो आइ त्रिभुवन सांई।
तव समुद्र त्याग करि आए।
आपो अपुनो गृह जाइ ठहिराए।
सुरपति निश्चलु आसनु कीनो।
संचरु मन का हरि हिर लीनो।
पूर्ण ब्रह्म भक्ति सदा सुषदाई।
संकटि काटन भयो सहाई।

वामन अवतार

पिता कश्यपि ऋषु प्रभ जी होए।
मात लजावती सभ दुष षोए।
विलोचन ऋषि गुरू दीर्घ त्याग वावन वपु लीनों।
कर माला तिलक मस्तक परि दीनो।

जिहि नगरी वलु राजा रहे। छपरु छाइ तहां आस्रमु लहे॥
राजा वलु यज्ञु कर्नि तिताही। तहां भोजनु ब्राह्मण वहु पाही॥
वल के द्वार ठांढा जाइ भया। अशीर्बचनु चिरंजीव कया॥
तिह समे जलु ब्राह्मणा नृपु देवै। पूजा कर कर तिह पगि सेवै॥
जव ही अशीरवचनु इनि कीना। वलि राजे श्रवण सुनि लीना॥
द्वारे परि ठांढा है कोई। मुंहि कह्यो अंतरि ल्यावो सोई॥
अंतर लीयो वुलाइ गोसांई। अति सरूप सुंदर अधिकाई॥
चतुरबेद मुष पाठ सुणावै। राजा वलु भै चकित होइ जावै॥
अनिक भांति रस्ना नही डोलै। चतुर बेद मुख पाठै बोलै॥
राजे वल कह्या कछु लेवौ। सांईदास परि क्रिपा करेवौ॥६०

हे प्रभ करुणा कर कछु लेवो। क्षीर घ्रित भोजन अघेवो ॥
लेहो जलु मैं तुम कौं देवों। जो तुम भाषो सोई करेवों ॥
तव प्रभ इहि विधि मुखों वषानी। मै तेरी गति अजहू न जानी ॥
मैं जलु तव करि परि धरि लेवों। चतुर वेद मुख पाठ सुणावों ॥
तव राजा निश्चल हो बह्या। चतुर वेद सेती चितु गह्या ॥
चतुर वेद मुख पाठ सुनाए। तांकी महिमा कही न जाए ॥
हर्षिमान वलु राजा होया। सांईदास भर्म सभ षोया ॥६१

हे विप तै चतुर बेद सुनायो। मैं सुणयो मन वहु सुषु पायो ॥
जो कछु मांगे सोई देवौ। वेग विलम कछु नाह करेवौ ॥
तव प्रभ जी मुख वचन उचारी। सुनहो बल नृप वात हमारी ॥
अढाई करू वसुधा हमि देवौ। सुप्रसन्न मम मनु करि लेवौ ॥
तहा छपरि छाइ सुख करहों। हृदये संतोषहरि गुण उचरहों ॥
बलि कह्यो विपि जलु करि लेवौ। कहां मांग्यो हमि कौ देवौ ॥
अढाई करो क्या धर्नि कहावै। और मांगो जौ तुम मन भावै ॥
तव प्रभ कह्यो अवरु ना लेवौ। और जाचना नाह करेवौ ॥
तव कह्यो अढाई करो धरि दीई। इहि प्रतज्ञा मै मनि कीई ॥
वलु चाहत संकल्प करेवै। सांईदास हर वसुधा देवै ॥६२

कुल प्रोहतु शुक्रजती तांका। छलनु वलनु देष्यो कह्यो वांका ॥
रे नृप वल पाछें पछुतावै। पाछे से कछु हाथ नि आवै ॥
बावन वपु मतु देष भुलावै। त्रिहु लोकनि महि एह न भावै ॥
मछ रूप जो है भगवाना। कछ रूप प्रभ पुर्ष निधाना ॥
वैराह रूप एहो ही होया। नारसिंह हरिनाकसु षोया ॥
सोई आण वावन वपु धरिया। परि प्रयोग कार्ण इहि करिया ॥
तोहि छले तूं जाणे भाई। पूर्न प्रभ मुझे देहि दिषाई ॥
नृपु वलराजा य्युं करि वोलै। हे गुर मेरे कहा तूं डोलै ॥
इसि ते भला अवरु क्या चहिए। पूर्न प्रभ जो दर्सनु लहीए ॥
जांका दीआ सो मांगे दाना। तांको दीजहि अपुनें प्राना ॥
शुक्र जती कहि तूं जाने। सांईदास कहयो नहीं माने ॥६३

लै करि वा जलु देवरण लागा। वल सकल भौ मन ते त्यागा ॥
तव शुक्र जती ने क्या कीआ। कर्वे का मुख जाकर लीआ ॥
जलु ना गिरे जत्नि वहु कीने। त्रिणु ले तिहि कर्वे मुष दीनें ॥
उहि त्रिण द्रिग शुक्र जती आयो। ताह त्याग मन वहु पछुतायो ॥
तव मुष ते इह वचनु उचारा। हे वल नृप तुझे वल अधिकारा ॥
मैंने जतन करे बहुतेरे। तूं परिओ है घुंमरि घेरे ॥
मेरे कह्यो न मन करि लेवै। अढाई करू वसुधा तू देवै ॥
तो का कह्या मनि करि लीना। जलते ताह संकल्पु जु कीना ॥
अढाई करू तै धर्नी दीनी। तौ प्रभ जल ले स्वस्ति है कीनी ॥
तव प्रभ दीर्घ प्रभ वपु धारा। तांका कोऊ न पावै पारा ॥
एक पगु ब्रह्म लोक जाइ धर्‌यो। दूजा पगु सभ पृथ्वी कर्‌यो ॥
वलु राजा भै चक्रति हों रह्यो। तो शुक्र जती ऐसे कह्यो ॥
तव मेरा कह्यो माने नाही। अविकितकरिमनिमहिपछुताही
दोवे करो सभ पृथवी भई। सांईदास आधा पाछे रही ॥६४

तव प्रभ कह्यो सुनो वल राजा। तूं ना कहू को मोहताजा ॥
आधु करों वसुधा हमि देवहु। नाहि ति जलु अपना फिरि लेवहु
कठिनि बनी क्या करीये भाई। धर्म्मु न छाडो राम सहाई ॥
तव वल कहा प्रभ जी सुरण लीजै। जलु दीआ फिरि कैसे लीजै ॥
जो तुमि कहो मनि करि लेवों। उौर वाति कछु नाह करेवों ॥
तब प्रभि तांकौ दीयो वताई। वल राजा सुरण हो मेरे भाई ॥
आधु करों तनु तेरा होई। हमि को देवो हो तुमि सोई ॥
जब इहि विधि प्रभ मुषो वषानी। तव दारा बल की भई स्यांनी ॥
तव कह्यो उनि हम तन लेवौ। जिसे जानों प्रभ तिसे को देवौ ॥
तव प्रभि कह्यो एहि नही कामा। तोह सरीर अपवित्र भामा ॥
तव वल कह्यो लेहु तनु मेरा। अवि मैं वंधिवा भयों हो तेरा ॥
तव प्रभि बल को लंबा पाया। पगु धरि प्रिष्ट पताल पठाया ॥
बल करि सो यगि मुह किम कीने। मुह किम करि पग कर महि लीने
पग करते त्याग नही देवै। सांईदास पूर्न गुरु सेवै ॥६५

तव वलि मुष ते वचनु उचारा। महा वली तिह बलु अधिकारा ॥
हे पूर्न प्रभ मुक्ति के दाता। तूं ही है पूर्न पुरुष विधाता ॥
मध्य छडाइ प्याल मोह आना। तुझै न छाडो मम मनु माना ॥
जतन कीबे वलु छाडै नाही। तव प्रभ बल सो वचन कराही ॥
हमि होवे तुमरे अगवाना। ब्रह्म विष्णु महेसु समाना ॥
तुमरे द्वार पालक हमि होवहि। तुमरे द्वारे आगे सोवहि ॥
चतुर मास ब्रह्म इंहा रहे। चतुर मास शंकर ईहा बहे ॥
चतुरमास पाछे हमि वारी। सांईदास विधि कही मुरारी ॥६६

वचन कीयो तव बल ने त्यागा। तव प्रभु मग अपने उठि लागा ॥
छलिन गयो आप ही छलाया। द्वारपाल कों तिलकु चढाया ॥
इहि प्रयोग वावन वपु धरया। सुरपति को इंद्रासनु थिरु करया ॥
तांका अंतु कौण काऊ पावै। वह प्रभ घटि घटि आप समावै ॥
पूर्न पुरुष निधान विहारी। तांकी गति मिति अपर अपारी ॥
जो उसि भावै सोई करही। जल ऊपरि वसुधा वहु धरही ॥
तव सुरपति निश्चल कीयो राजा। वांके पूर्न कीने काजा ॥
भक्ति हेत करि इहि वपु धार्यो। वलु छल सुरपति को निस्तार्यो
जो जो तिह चरनी चितु धारे। तातकाल प्रभु तिसे उचारे ॥
प्रेम भक्ति को हरि मोहताजा। जिहि घटि प्रेम सो सर्व को राजा
ना वहु विनसे आवे नही जाइ। थान थनंतर रह्या समाइ ॥
इहि विधि देष दया चित धरहों। नेमु धर्मु अपने चित करहों ॥
जो जो हर की भक्ति कमावे। दुःख नही व्यापे वहु सुषु पावे ॥
तीन भवनि तां के है दासा। तांके दर्सन की करहि प्यासा ॥
सुर नर मुनि जन सर्नी आवै। तिस की जो हरि भजनु कमावै ॥
सदा सदा आनंद समावै। सदा सदा जो हरि गुण गावै ॥
सदा सदा जन मुक्ता होवै। जो जनु भ्रमि की जेवरी षोए ॥
सदा सदा मुक्ता जग माही। हरि भजि तिहि दुख लागे नाही
वावन विपु प्रतापु सुनायो। सांईदास प्रभ सर्व समायो ॥६७

सच्च नामु करतारु गुसांई। सच्च नामु त्रिभुवन के साईं ॥
सच्च नामु निरंकार अकाल हर। सच्च नाम माधो- धर्नी धर ॥

सच्च नाम संतन रषिबारा। सच्च नाम सभ जगत उजारा ॥
सच्च नाम त्रिभुवन के राया। सच्च नाम सभ माहि समाया ॥
सच्च नाम निरंकार न्यारा। सच्च नाम सभ ताह पसारा ॥
सच्च नाम कौलापति केसर। सच्च नाम पूर्न पर्मेश्वर ॥
सच्च नाम मुकंद मुदारी। सच्च नाम संतन हित कारी ॥
सच्च नाम प्रभ सकल समानं। सच्च नाम तन सुष दानं ॥
सच्च नाम महाराज के राजा। सच्चा नाम को सभ मुहिताजा ॥
सच्चि नाम सांईदास को दासा। सच्च नाम हरि को अभ्यासा ॥६८

गुण निधान भक्तिनि सुषदाई। गुण निधान सदा संत सहाई ॥
गुण निधान सर्व सुषदाता। गुण निधान सर्व संग राता ॥
गुण निधान करुनानिधि स्वामी। गुण निधान हरि अंतरजामी ॥
गुण निधान दु:ख को नासा। गुण निधान संतन की आसा ॥
गुण निधान प्रेमु अधिकाई। गुण निधान सदा लुलाई ॥
गुण निधान तूं जाण अजानं। गुण निधान हृदय माह ज्ञानं ॥
गुण निधान दु:ख सुख ते न्यारं। गुण निधान प्रभ अपर अपारं ॥
गुण निधान रंग सभ राचं। गुण निधान सर्व संग साचं ॥
गुण निधान पूर्न भगवानं। गुण निधान सभ माह समानं ॥
गुण निधान सदा सदा संगं। गुण निधान अनेक तरंगं ॥
गुण निधान तप्ति मन हिरीअं। गुण निधान सप्त मुन करीअं ॥
गुण निधान सांईदास जु दासं। गुण निधान सर्वसंग दासं ॥६९

तुही तुही प्रभ सर्वसमानं। तुही तुही कौलापति रानं ॥
तुही तुही गोविंद गोपालं। तुही तुही संतन रषिवालं ॥
तुही तुही पूर्नधर ध्यानं। तुही तुही पूर्न हरि ज्ञानं ॥
तुही तुही मोह गति को जानं। तुही तुही इस्थिर करि मानं ॥
तुही तुही प्रभ अपरि अपारं। तुही तुही पूर्न करतारं ॥
तुही तुही प्रभ गगन वसेरं। तुही तुही सभ तोही चेरं ॥
तुही तुही धर्नीधर गोविंद। तुही तुही पूर्न पर्मानंद ॥
तुही तुही विर्था सभ पावं। तुही तुही संताप मिटावं ॥
तुही तुही बील्हा प्रभ धारं। तुही तुही हरि पतति उधारं ॥

तुही तुही सचु तोह प्रवानं। तुही तुही सभ तोह धिग्रानं ॥
तुही तुही कछु दुःख नि व्यापं। तुही तुही सभु तुझ कौ जापं ॥
तुही तुही सांईदास को दासं। तुही तुही हरि वोहत महि वासं ॥७०

उत्तम तुम उत्तम तुम नामा। उत्तम तुम उत्तम तुम कामा ॥
उत्तम ध्यानु आत्म तुम कीना। उत्तम प्रेम भक्ति परिवीना ॥
उत्तम भक्ति तुम भक्ति कमावहि। तुमरो नामु उत्तम करि गावहि ॥
उत्तम नामु निधान तुम्हारा। उत्तम ज्ञान ध्यान हृदय धारा ॥
उत्तम कीर्त्ति नाम तिहारी। उत्तम रसिना वचन उचारी ॥
उत्तम निरंकार निरधारं। उत्तम ज्ञान ध्यान वीचारं ॥
उत्तम रसिना वात उचारे। उत्तम श्रवण हृदे सम्हारे ॥
उत्तम द्रिग निर्षित हरि रूपं। उत्तम धर्म तिहं सरूपं ॥
उत्तम तीर्थ को इस्नानं। उत्तम पूर्न पुर्ष निधानं ॥
उत्तम बन तिन को है वासा। उत्तम तुमरो नाम प्रकासा ॥
उत्तम शब्द अनाहद झुणिकारा। उत्तम यदु उत्तम विस्थारा ॥
सांईदास उत्तम नारायण। निसिवासरि हर के गुण गायण ७१

सुण हो साधो हितु चितु लाई। पर्शुराम जना सदा सहाई ॥
सहस्रार्जन भूपति अधिकारा। यमदिग्न्य ऋषीश्वर जगत उजीआरा
भार्जा ताहि ताहि दोइ भैणा। तांको कहो विचारो बैणा ॥
सहस्रार्जन भार्जा सो कह्या। अंतर सोच वीचारु इह लह्या ॥
तोह वहिण वनता यमि दग्ना। वहु ऋषु गोविंद सो अति मग्ना ॥
हमरे गृह सुत सुता न कोई। जब हमि विनसे नासु कुल होई
अपुणी वहिण सों य्युं उ जाइ कहो। ताह द्वारे परि जाइ वहो ॥
हे वहिणा मम गृहि सुतु नाही। यहि प्रयोग हमि वहु दुःख पाही ॥
तोह पति पूर्न है सव वाती। करे भजनु जागे दिन राती ॥
तां परि हमिरी विनती कहो। मोह कहा मनि अंतर धर्यो ॥
इहि मम वहिण आई तुम पाहे। सहस्रार्जन वनिता आहे ॥
इसि कौ सुत सुता नहीं होवे। इहि प्रयोग मन अंतरि रोवे ॥
तुम पहि ये ही याचन आई। तुम किर्पा कर सुत इह पाई ॥
ये ही बेनती जाइ करि कीजै। सांईदास को वहु सुख दीजै ॥७२

सुनी बात श्रवणो उठि दौरी। सुधन सम्हारी अपनी षोरी ।।
चली चली तहा इह आई। जहा कुटीआ यमदिग्न बनाई ।।
निर्षी भैण उठि कै उर लाई। कुसल पूछ कुटीआ ले आई ।।
कहो किर्पा किस करि तुम कीने। कित प्रयोग कुटीआ पग दीने ।।
तब उसने मुख वचन उचारे। सुनहो बहिनीआ बात हमारे ।।
हमिरे गृह सुत सुता न कोई। इहि प्रयोग अंतर दुषु होई ।।
तुम पति कर्नि कार्नि भगवाना। मै अपुने अंतर करि जाना ।।
मम विनती अपुने पति करहो। भेट मोह ले आगे धरहो ।।
तोह क्रिपा कर मैं सुत पावों। तो क्रिपा ते अफुलु न जावो ।।
एहि बात तुम आप सुणाई। सांईदास सुणहों लिव लाई ।।७३

तब यमिदग्नि बनता य्युं बोली। मम मनु भी इह कारण डोली ।।
मम गृह भी सुत सुता न कोई। जो प्रभ भावै सोई होई ।।
यमदिग्न पहि भार्जा चलि आई। जहा यमदिग्न राम लिवलाई ।।
हाथ जोर याम दिग्न सौ कह्यो। वहि तो ध्यान माह रचि रह्यो ।।
चर्न मले मल नेत्र निधारे। हे प्रभ पूर्न प्रान हमारे ।।
मोह भैण तुमरे पहि आई। सहस्रार्जन बनिता साई ।।
ना इसि पूतु न मम गृह कोई। जो वर्ते जाने तूं सोई ।।
क्रिपा करो करि इहि कछु देवौ। इह मम ऊपरि क्रिपा करेवौ ।।
आस कीन तेरे पहि आई। तोह क्रिपा कर अफलु न जाई ।।
तब यमदिग्न कह्यो करो इहि कामा। पान पत्र ल्यावो तुम भामा ।।
इष्टि करों कर्के मै देवों। तुम उसि को दो सुत मै देवो ।।
जो मै कह्या करो तुम सोई। सांईदास कहे सोई होई ।।७४

हर्ष मान पान पत्र ल्याई। दीए ऋषीश्वर अति हिर्षाई ।।
यमदिग्न ले पत्र इष्ट जु कीना। इष्टु कीयो फिरि कर तिह दीना ।।
इहु तुम षावो इह उस देवो। अधिक सुषु मन महि करि लेवो ।।
ले आग्या यमदिग्न ते आई। पान पत्र रंगु लागो भाई ।।
अपुनी बनिती कौ इहि कीनो। अति मज्जनु भक्ति करि लीनो ।।
ताहि दारा को इहि करि दीनो। अति भूपति हंकारी दीनो ।।
दोऊ पान पत्र ले आई। हिर्ष मान होइ मंगलि आई ।।

ले मम वहिण ऋषीश्वरि दीने। हिर्ष मान होइ किर्पा कीने॥
इहि तुम देवो इहि मम कौ कह्या। ओंकार सभ जग रचि रह्या॥
इहि तुम षावों इहि मै षावों। ना तूं अफल न मै भी जावों॥
जो उसि कह्यो सो कह्यो भैणा। औरु नाइ कछु जानो बैणा॥
अबि मै इहि तुमरे पहि ल्याई। सांईदास सुण हो लिवलाई॥७५॥

तव वनिता मन महि इहि धारा। तांका सकला कहो विचारा॥
अपनो नीको तिह कह्यो होई। मोह मनि आषे लेवो सोई॥
तव उसि वहिन सों वचन उचारा। मनि हो वचिन तूं वचनु हमारा॥
अपनो मोह मोह तुम लेवो। एहि तुम लेहु ओहु हमि देवो॥
उनि उसि का उनि उसि का पाया। भूल परा फलु विर्था जाया॥
पान पत्र षाए गृह आई। नृप सों तव आइ कह्यो सुणाई॥
हे पति मोह क्रिपा ऋषि कीने। हिर्षमान पान पत्र दीने॥
एकु अपनी वनिता को दीनो। एकु हमिरे परि किर्पा कीनो॥
मेरो उसि उसि का मै लेयो। सांईदास यहि कार्न कीयो॥७६॥

जब वनिता यमि दग्न पहि आई। तव यमिदिग्न ने कह्यो सुनाई॥
उसि का पान पत्र उसि दीना। हिर्षमान होइ करि उनि लीना॥
तव वनिता यमिदिग्न की बोली। है प्रभ पूर्न श्रवण षोल्ही॥
सुण हो विनती मोह जु करहो। तुमरे पगि परि मैं सिरु धरहो॥
जो तुम मोह क्रिपा कर दीनां। हिर्षमान होइ सो उसि लीनां॥
जो उसि दीआ सो हमि कौ दीनां। इहि कार्ण उसि ने प्रभि कीनां॥
तव यमिदिग्न ने वचन उचारे। वुरा कीयो तुमि ने ततकारे॥
ओह भी अफल तूं भी संग ताही। जो उनि कह्यो होवे नही वाही॥
उसि के गृहि ऋषु मुन अबि आवे। तुमरे ग्रह भूपति प्रगटावे॥
एहि विधि कही शांत घरि याआ[1]। सांईदास सो प्रगटि सुणाया॥७७॥

गर्भ भये इनि दोनों ताई। अति अनंदु अंग नाह समाई॥
भए व्रतीत मांस दस तांकौ। प्रगटि भए गर्भ वाहर वांकौ॥
प्रथिमे भूपति वात सुणावो। एक एक करि सकल वतावो॥

---

१. "आया" होना चाहिए।

भूपति ग्रह ऋषीश्वर आए। ले करि मंडल वन को धाए।।
भूपति को माया मोह होया। तांके पाछे वहु मनु रोया।।
पाछे उसि के उठि करि दौरा। सुत हित मोह भयो होयो वैरा।।
हे सुत कहो कहा तुम जावो। हिर्षमान होइ यहि वचुन्पावो।।
तोह कार्ण वहुते दुःख लीने। कौन उपाउ हमरे सुत कीने।।
जो तूं आयो हमि कौ छंडि जावें। ठाकुरुभक्ति तोह वर नही ल्यावे।।
तव ही ऋषीश्वर असे बोलै। हे पित काहे मन मंहि डोलै।।
जाहो राजु करो गृह मांही। हमिरे क्षाल परो तुम नाही।।
हमि तो भक्ति करो गोपाला। आद अंत जो है रषिवाला।।
एहि विधि कहि के वनि को धाए। सांईदास नृप पाछे जाए।।७८

फिरि आगे जाइ वहु उषलोवै। सुन्न समाध मांह जाइ सोवै।।
छाडि समाधि वहुडि य्युं कह्यो। मै तो प्रेम भक्ति रचि रह्यो।।
तुमि काहे पाछे मोह आवो। क्रिपा करो अपने गृह जावो।।
जाहो राज करो वहु भांति। रष देवो अपनी तुम क्रांती।।
तव नृप मुख ते वचन उचारे। हे सुत निकसित प्रान हमारे।।
तुझे त्याग कैसे ग्रहि जावौ। तुझि विनु कहु कैसे सुख पावौ।।
मै जावो पग मोह न जावहि। जो जावो फिरि करिईहा आवहि
तवही ऋषि सुण करि प्रीत जाती। सांईदास गति कौन हमि ताती।।७६

चलित-चलित फिरि ठांढे भए। तव नृप नें जाइ भुजि ते गहे।।
हे सुत तुझ विनु क्युं सुष पांवों। तुझे त्याग किति विधि ग्रहि जावों।।
तवै ऋषीश्वर ऐसै कह्यो। कहा पूत पूत उचिरह्यो।।
नां तू पित ना मै सुत तेरो। आइ संजोग चढे इकि वेरो।।
केती वेर तू मै सुत होयो। अवि कहा पूत हेत करि रोये।।
त्याग ऋषीश्वर तांको चाले। राच रहे प्रभ जी के क्षाले।।
तव नृपि को सभु भ्रमु है भागा। ताहि त्याग गृहि मग हितु लागा।।
उसे त्याग अपुने गृह आया। सांईदास सोई आषि सुणाया।।८०

अवि यमदिग्न की बात सुणावों। एक एक करि तोहि वतावों।।
इसि गृहि उत्पन्न भयो ततकारे। पर्षुराम तिह वलु अधिकारे।।

पाछे सात बर्स का होया। वालक ऋषि षेलनि मनु पोया ॥
वालक सेति षेलन जावै। मुष्ट प्रहार तिहि सीसु फुरावै ॥
तिह पिता मात उलहिना देवहि। तुम सुतु मम सुत को दुःख देवहि ॥
जब यमदिग्न उलहिना पायो। पर्षुराम को श्राष सुणायो॥
हे सुत तुम ईहा ते जावो। वन माही जा करि ठहिरावो ॥
वन महि जाइ तपस्या करहो। मेरो कह्या हृदे अंतरि धरहों ॥
पर्शुराम तव वचन उचारे। तोह आग्या चाहति हृदे धारे ॥
मेरी वांछा एही आही। सो तैं किर्पा करी मोह पाही ॥
जित समे भीर परे तुम ताही। तुम मोह नामु लेहु मनि माही ॥
तातकाल मैं प्रगटि होवों। सांईदास सकला दुःख षोवों ॥८१

परशुराम अवतार

अगस्तमुन गुरु क्षेत्र कवलापुर

आग्या ले पर्शुराम सिधारे। पूर्न पुर्ष हर प्रान अधारे॥
एक वन महि जाइ करि ठहिराए। पूर्न ब्रह्म मुक्त गति धाए॥
महा अधिक भजनु तिह कीना। एको अंगु वरसर लीना॥
ध्यानु धरे निसवासर जावै। छिन रंजिक मन नाह डुलावै॥
पूर्न नामु नामु पूराइण। निर्भौ कौलापति नाराइण॥
तांकी उस्तिति कहा वषानो। सांईदास उस्तिति नही जानो ॥८२

सहस्रार्जन कीयो अषेरा। वन यमदिग्न कुटीआ नेरा॥
तहा जाइ पीतंवर छाए। अति अनंद मंगल वहु गाए॥
रेनका जलु लेने को जावै। नितापरति जलु वाही ल्यावै॥
लाई महि जलु पोट वंधिआने। येहि वार्ता मोह वेद बषाने॥
अवि जो गई जलु लेने ताई। सैना अधिक निर्षी विस्माई॥
कह्यो कवन ईहा चलि आयो। कवन भूपति समानो छायो॥
इति उतिते येही पूछन कर्‌यो। सांईदास मन अंतर धर्‌यो ॥८३

नृप सहस्रार्जुन ईहा आयो। अखेर कीओ कर्के ठहिरायो॥
तव रेनुका मन महि इहु आना। मम वहनीआपतु एह पछाना॥
चाहित है रानि पहि जाया। वहिणि जाण के चितु लुभाया॥

तव अगिवानु इसि जाण न देवै। अंतर जाण ते मंनहि करेवै ॥
इसि कौ कहे कहा तोह कामा। अंतर काहो जावौ भामा ॥
तव रैणका मुष वचन उचारे। इहि नृप वनिता वहिन हमारे ॥
इहि प्रयोग अंतरि मै जावौ। तांको देषो फिरि मैं आवौ ॥
रेणका चली अंतरि महि गई। सांईदास प्रगटि जाइ भई ॥८४

वहिण देष के वहु हिर्षाई। अति आतर उठि करि अंग लाई ॥
इहि ऋषि वनिता भस्मि उढावै। वहु नृप वनिता अंवर हंढावै ॥
सकल सींगार ताहि ने कीने। पान पत्र मुखि माहे दीने ॥
अति सरूप कहा रूप वषानो। ताहि रूप सोभा क्या जानो ॥
तव रेनका ने बात उचारी। सुण हो वहिण तू बात हमारी ॥
तोह गृह सुतु होया कै नाही। इहि बीचारु देहि हमि ताहि ॥
तव नृप वनिता वचनु उचारा। सुत हमिरो वनि खंडि सिधारा ॥
नृप तिह पाछे उठि करि धाया। नृप का माया मोह चुकाया ॥
तुम अपुनी गृह वात सुणावौ। सांईदास छिनु बिलम न लावौ ॥८५

तव रैनका तिसि दीयो वीचारा। हमि गृह सुतु भयो एह पुकारा ॥
वडा भयो ऋषि सुत दुःख देवै। जो कछु देषै सो षसि लेवै ॥
उनि ऋषि हमहि उलहिना दीना। तव ऋषि सुत को सदि करि लीना
कह्यो पूत वन को तुमि जावौ। तहा जाइ हरि भजनु कमावौ ॥
तव हमि सुत ने बचनु उचारा। मै इहि बांछति सा निरंकारा ॥
अवि मैं जावौ वनि खंडि ताई। जव तुम कष्टु होइ मोह मनि ल्याई
हमि सुत भी वनि खंडि सिधारा। सांईदास कीनो वीचारा ॥८६

रैणका वहिन तजि जल कौ ल्याई। कुटीआ महि आइ करि ठहिराई
अति विसमाद भयो चितु वाका। कहा वीचारु कहो मै ताका ॥
यमदिग्न ऋषीश्वर तिहि ओरि देक्षा। अति विस्माद रूप तिह पेक्षा ॥
कह्यो रैणका क्या विसमाई। कहा दुःख तुम लागो आई ॥
जो तुम दुःख लागा सों आषो। हमि ते तुमि दुराइ न राषो ॥
तव रैणका ने वचनु उचारा। कहा कहो ऋष प्राण अधारा ॥
मै गई जलु लेणे के ताई। तहा अधिक सैना निर्षाई ॥

तिस सैना स्यूं वचनु उचारी। इस वनिता है बहिन हमारी ॥
मै वहिन अपनी को देषों। इहि द्रिग रूप वांका मै पेषों ॥
मै गई चली वहिरा के पाहे। अति सरूप सुंदर है वाहै ॥
मोह अंग भस्मि लागी अधिकायन। उसि अंग अंबर अधिक उढायनि
तांसो विदआ ले जलु आनौ। कुटी महि खडि करि ठहिरानौ॥
मोहि वहिनीआ पतु चलि आयो। अखेर कीयो वन महि ठहिरायो॥
हमिरे गृह माहे कछु नाही। कहा ताह आगे ठहिराही ॥
एहि प्रयोग ऋषि मैं बिसमाई। सांईदास सो कह्यो सुनाई ॥८७

तव ही ऋषि मुख ते इउं बोलै। इति कारन मनि माहे डोलै ॥
हमि निर्धन धन राम हमारो। हमि निर्बल बलु प्रांन अधारो ॥
जाइ करि तिस भोजनु कहि आवों। मेरो कह्यो मन महि ठहिरावों॥
गोविंद सभ कछु भलो करही। अपनी लज्जा आपे धरही ॥
रैणका इहि सुणि करि उठि धाई। चली चली फिरि बहिन पै आई॥
कह्यो आइ सुणु वहिन हमारी। ये ही ऋषि ने कह्यो वीचारी ॥
जाहो नृप भोजन कहि आवो। आजु भोजनु तुम हमिरे पावो ॥
मेरो कह्यो सुण करि लीजै। सांईदास कछु अवर न कीजै ॥८८

तव नृप वनिता कह्यो पुकारी। सुन हो वहिनीआ वाति हमारी ॥
तुम ऋषीश्वर कहा करेवौ। कित विधि भोजनु नृप को देवौ ॥
सभ कछु तुम हमि कौ दीआ। जो करुणा तुम हमि परि कीआ ॥
काहे को एता दुःख पावो। एहि वात मन महि ना ल्यावो ॥
फिरि करि रैणका तिह प्रतु दीना। हे मोह भैण कहा मन महि लीना
मोको ऋषि ने दीयो पठाई। इहि प्रयोग मै तुम पै आई ॥
तव नृप बनिता कह्यो भलो होई। जो तुम मन आवै करो सोई ॥
तब भोजनु कहि करि फिर आई। सांईदास अपने गृह ताई ॥८९

तव ऋषि गयो ब्रह्म पुरी मांही। नंदिनी काम धैन सुता ताही ॥
ब्रह्मे ते नंदिन ले आया। आइ कुटीआ माह ठहिराया ॥
जो मांगे सो तिस ते पावै। नंदिनी काम धेनु सुता कहावै ॥
ऋषि ने मुष ते बचनु उचारा। सुण हो नंदिनी कहा हमारा ॥

चेरी अधिक देहो हमि ताई। जो हमि आगे टहिल कराई ॥
तव ही चेरी वहु प्रगटाई। तांकी वाति कहा उचिराई ॥
पाछे पीतंवर वहु दीने। ऋषि ने लै विछावने कीने ॥
भांजन कनक के अधिक निकारे। तांकी गणती कौणु विचारे ॥
रैणका अधिक वस्त्र जु उढाए। तो संग चेरी अधिक सुहाए ॥
भूपति कों ऋषि भोजनु दीना। छत्री प्रकार को भोजन कीना ॥
जो कछु वांछै कोई सोई देवै। आदर भाउ सभ सैना लेवै ॥
नृप संग आए रहे अघाए। तव ऋषि मुष ते वचन सुनाए ॥
जिह आगे भोजन सो लेवौ। वहुडो भोजन हमिह न देवौ ॥
भोजन सभ तुम लेहु उठाई। सांईदास कह्यो राम दुहाई ॥९०

भूपति भोजनु ले उठि धायो। केतक मग चलि करि वहि आयो
वीच ही मग के ठांढा के भया। अति विस्माय मन अंतर लया ॥
एक कुटीआ ऋषि की दिषलाई। एह अडंबर उनि कहा कोई भाई
वहुडो नृपु मगते चलि आया। तिसी ठौर फिरि आइ ठहिराया
दो नर सैन सो आषि सुनायो। वेग बिल्म तुम मूल न लायो ॥
जावो ऋषी की कुटीआ माहें। तहा जाइ द्रिग सो निर्षाहे ॥
कवन ठौर ते भोजनु दीना। कहा ऋषीश्वर ने इहि कीना ॥
तांको देषि ईहा तुम आवौ। सांईदास तुम आष सुणावौ ॥९१

दो नर सैंन के चलि करि आए। जहा यमदिग्न ने कुटीआ छाए ॥
ना कछु अग्नि जले तिहि माही। अति भै चक्रित होइ मन माही ॥
कामधेन सुता नंदिनी षडी। जो मागो सो आगे धरी ॥
इहि विधि निर्ष के फिरि आए। नृप पाहे आइ करि ठहिराए ॥
जो विधि देष आइ वीचारी। एक एक कर रस्न उचारी ॥
कामधैन सुत नंदिनी तिह माही। जो मांगे तिस ते सो पाही ॥
नृप सहस्रार्जुन ने विधि जानी। तिस प्रत सुण करि मन इहि आनी
नंदिनी कौ कित विधि हमि लेवहु। सांईदास तिस सेव करेवहु ॥९२

फिरि नृप तासो वचन उचारे। वात सुणो श्रवण तुम धारे ॥
ऋषि सों जाइ करि आष सुनावो। मेरो कह्यो मन महि ठहिरावो

प्रिथमे ऐसे आषि सुनावो। जो नही माने य्युं उचिरावो ॥
नाह त मै षसि करि भी लेवौ। मार चुकावौ वहु दु:खु देवौ ॥
चले चले फिरि करि तहां आए। जहा ऋषीश्वर भक्ति कराए ॥
आइ ऋषीश्वर स्युं इउ कह्यो। नृप धैन कारण ठाढा भयो ॥
धेनु देहु राजा ले जावै। जो मांगो आगे ठहिरावै ॥
तव ऋषि कह्यो धेन कैसे देवौ। ब्रह्म उलहिना क्युं करि लेवौ ॥
फिरि दोनों नर बचन उचारे। जो ना देवो नृपु युद्ध मारे ॥
तव ऋषि नंदिनी सो इउं बोले। क्रोधवान होइ श्रवणहि षोल्हे ॥
कहे नंदिनी अबि क्या कीजै। किहि प्रयोग तुम उसि कों दीजै ॥
इहि भूपति मोह बलु दिषलावै। होवे भस्मि वहु घात करावै ॥
नंदिनी ने प्रतु तांको दीना। कहा विश्वासु तै मन महि लीना
आग्या करों सभ को प्रहारो। एक एक को पकिर पछारो ॥
तव ऋष कह्यो सुण लेवहु भाई। एही नृप को तुम कहो सुणाई ॥
मै तौ नंदिनी कौ ना देवौ। ब्रह्म उलहिना नाही लेवौ ॥
हमिरी होइ तौ तुमि कौ देवौ। आन अमान कैसे हिर लेवौ ॥
हमि तुम को इह कह्यौ सुणाई। सांईदास कहो तुम ताई ॥९३

त्याग कुटीआ दोऊ नर आए। जो कछु सुन्यों सो आषि सुणाए ॥
सुनहो भूपति हमिरी वाता। नंदिनी तुमि आवै नही हाथा ॥
प्रिथमै हमि तिस सुणाया। नंदिनी देह नृप चितु लुभाया ॥
नंदिनी कौ नृप ताई देवौ। जो तुम भावै सोई लेवौ ॥
जव विधि उसि कौ इहि विधि ठानी। तव उसि ने इहि वात बषानी ॥
मम नाही नंदिनी जोई मै देवौ। जो बांछो तुम पाहे लेवौ ॥
जव उसि ने इहि वात वषानी। तव हमि उसि को इहि विधि ठांनी
जो तुम हिर्षमान हो देवो। जो मनु मानें सोई लेवो ॥
जो तुम हमि को देवो नाही। नृप आइ मारहि घातु कराही ॥
जव इहि वचनु हमि ताह सुणाया। ऋषु अति क्रोध लोचन ललाया ॥
मुख ते एही वचन उचारा। नृप कहा करेगो कहो हमारा ॥
कामधेनु नंदनं कैसे देवौ। कैसे ब्रह्म उलहिना लेवो ॥
जो कछु तुमरे मन महि होई। सांईदास करो तुम सोई ॥९४

जव भूपति इहि विधि सुनी काना। अति क्रोधु उठियो मन माना ॥
अति क्रोधु करि युद्ध को आयो। यमदिग्न कुटी को उठि धायो ॥
घेरा जाइ कुटी को कीना। अपनो शस्त्र करि महि लीना ॥
यमदिग्न ऋषीश्वर तव ही कह्यो। कामधैन सुता उठि क्या बह्यो ॥
एहि पातकु हम युद्ध को आया। अति अांतर होइ कुटी को धाया ॥
कामधैन सुता कुटीआ तजि आई। सन्मुख सहस्रार्जन धाई ॥
सहस्रार्जन सौं युद्ध कीना। ताह सैन वहु मार के लीना ॥
मार सैन ब्रह्मपुरी धाई। एकु घाउ तिनि लागो भाई ॥
सहस्रार्जन जोरा कीना। यमदिग्न ऋषीश्वर को घाउ कीना
यमदिग्न ऋषीश्वर तजे प्राना। सांईदास नृप अति वलवाना ॥९५

सहस्रार्जन उठि करि धाया। अपने गृह के मग चितु लाया ॥
रैणका ने अवाहन कीना। पर्शुराम सुतु जान प्रबीना ॥
कहा करो तुम पाछे आई। जो तुम अवि ना होहु सहाई ॥
जबि रैणका इहि मन महि धारी। परसुराम आए तत कारी ॥
हे मोह मात कवन दुःख दीनो। कहो मोह जोरा किन कीनो ॥
उसि को मोको देहु बताई। मै संग्रामु करों तिस जाई ॥
कहा वली प्रगट्यो इहि ठौरा। हमि को तुम वतावो भोरा ॥
तांको एक छिन माह प्रहारो। सांईदास उसि धर्न पछारो ॥९६

तव रैणका ने वचन सुनाए। पर्शुराम सो कह्यो समिझाए ॥
सहस्रार्जन वन महि आया। अखेडि कीयो वन महि ठहिराया ॥
मै जलु नितापर्त ले आवा। जलु लेने वन माही जावा ॥
मै जलु लेने को उठि धाई। वन महि मोह सैना दिष्टाई ॥
मै सैना सो वचन सुनायो। कौनु है नामु तुम एहि बतायो ॥
तव सैना मोह दीयो वताई। नृप सहस्रार्जन इह माई ॥
तव मै मन महि लीयो वीचारा। इहि पतु कहीयै वहिन हमारा ॥
मैं जाइ निर्ष वहिन को आवो। सांईदास वहु हेतु बढावो ॥९७

मै गई वहिण के मिलने ताई। तिस सरूप सुंदर अधिकाई ॥
उनि उठि मोको अंग लगाया। महा अधिक उनि हेतु वढाया ॥

मै उसि ते विदश्रा ले आई। इसि कुटीश्र महि आइ ठहिराई ॥
विस्म रही विस्म ठहिराई। तवी ऋषीश्वर ने निर्षाई ॥
मोह कह्यो कित कौ विस्माई। कौन दुःख तुम लागो आई ॥
उोह वात तुम मोहे वतावो। हमि ते कर्न दुरावो ॥
तवि ऋष हमि से वचनु उचारा। हे ऋषि पूर्न प्रान आधारा ॥
मोह वहिन पतु वन महि आया। अखेर कीयो वन महि ठहिराया ॥
हमिरे गृह माहे कछु नाही। ताह षलावा षडि वन माही ॥
तांको आदर भाउ कैसे लेवो। ताह सैन भोजनु कैसे देवौ ॥
जव तोह पिता इहि विधि शुण पाई। सांईदास सो कह्यो सुणाई ॥९८

तव ऋष मुष ते वचन उचारे। इहि प्रजोग विस्मक चित धारे ॥
हमिरे गृह मै सभ कछु भामा। जो हमिरे गृह गोविंद नामा ॥
तुम जाइ करि भोजनु कहि आवो। वेग विल्म तुम मूल न लावो ॥
मै गई ताह भोजनु कहि आई। वेग विल्म मै मूल न लाई ॥
ऋष गयो ब्रह्म पुरी के माही। मै सकल वीचार करो तुम पाही ॥
ब्रह्म पुरी ते नंदिनी ल्याया। ऋषि ने धैन को वचनु सुणाया ॥
हे नंदिनी चेरी हमि देवो। वेग विल्म तुम नाह करेवो ॥
तव नंदिनी चेरो वहु दीनी। वेग विल्म उनि मूल नि कीनी ॥
पाछे से पीतंबर दीने। सो ऋषि लै विछावनि कीने ॥
भोजन कनक के अधिक निकारे। जो बांछहि वे तत्कारे ॥
अनक प्रकार के भोजन दीना। हर्षिमान होइ करि नृप लीना ॥
जो सैना संग सभिहू अघाई। उदर भरे सभ भूष गवाई ॥
नृप भोजनु ले करि उठि धाया। केतक मगु चलि करि वहु आया
वीच ही मग के ठांढा भया। कछु संचरु मन माहे लया ॥
मग ते फिरि करि भी वहु आया। दो नर सैन के तिनहि पठाया ॥
नंदिनी को हमि ताई देवौ। जो चाहो हमि पाहे लेवौ ॥
तव ऋषि कह्यौ हमारी नाही। मैं मंगिश्रानी ब्रह्म पाही ॥
आनि अमाण कैसे तुम देवौ। आनि अमान कैसे हिर लेवौ ॥
जव ऋषि ने यहि वचन सुनाया। दो नर तव सुणि करि उठि धाया
नृप सो जाइ करि वचनु उचारा। हे नृप सुनों श्रवन हम धारा ॥

ऋषु नंदिनी को नाही देवै। हमि सो ऐसे वचन उचरेवै ॥
कहे नंदिनी हमिरी नाही। मै मंगि आनी ब्रह्म पाही ॥
वस्तु पराई कैसे देवौ। ब्रह्म उलहिना क्युं करि लेवौ ॥
जव नृप ने एहि विधि सुरण पाई। क्रोधु कीयो कुटीआ परि आई ॥
एक घाउ नंदिनो को दीना। नंदिनी ब्रह्मपुरी मगु लीना ॥
पाछे तुमरे पित परि आयो। शस्त्र लीए तिस घाउ लगायो ॥
तोह पित के हिर लीए प्राना। कहा मै तोह पहि आष वषाना ॥
इहि प्रयोग तुम को चित कीना। तोह पिता नृप ने हनि लीना ॥
अवि मै तुम कौ कह्यो सुरणाई। सांईदास सुरण हो विध लाई ९९

पर्शुराम जब येहि सुरण पायो। अति क्रोध लोचन ललचायो ॥
अति वलवंतु वल कहा वषाना। तांकै वल का अंतु न जाना ॥
सुंदर रूप सत्य तिह काया। ससी अरु भानु तिस की है छाया ॥
कंपमान सुर नर सभ होए। आंसो नीर सौं तिह मुख धोए ॥
कहा जानै इह क्या कछु करसी। कवन संग संग्राम चितु धरसी ॥
सकल सुरौ ने भौ मन कीआ। सांईदास तिन कौ सुख दीआ १००

पर्शुराम आतर होइ आए। करि कुठार ले करि उठि धायो ॥
सहस्रार्जन कौ जाइ मारा। सकल सैन को तिहि प्रहारा ॥
नृप की रक्त सो तर्पन कीना। इहि संकल्प तहा उनि दीना ॥
इकीस बार निक्षत्राइरण करहो। तौ कछु औरु वात चित धरहो ॥
सभ छत्री इकि बार विडारे। विर्ला भाग छुटा तिहि वारे ॥
वहुरा तिस ते उत्पत होई। वहुडो पशुराम आइ षाई ॥
इकीस वार ऐसे ही कीनो। जिन ने जोरु कीयो दंड दी ओनो ॥
महावली तांको वल भारा। तिति वल का क्या कहो वीचारा ॥
त्रैलोक को दुःख मिटावै। जो निसवासर हरि गुरण गावै ॥
संत जना को वहु सुख देवै। पातक को वहु घातु करेवै ॥
जो जो तिह सर्नी चितु लावै। तांके पूर्न होवै कामा ॥
जो जो क्षेम कुशल को चाहे। औैर भारु सभ सिर ते लाहै ॥
जो जो गोविंद को जसु गावै। महा सुखी दुःख मूल नि पावै ॥
हे साधो सकैला भ्रमु षोवौ। राम नाम स्मिरो सुख सोवौ ॥

तांते तुम कौ दु:ख न लागै । जो दु:ख होवै सभ ही भागै ।।
तिस की उस्तिति कौनु वषाने । प्रान पुर्ष कौ कौनु षछाने ।।
पर्शुराम पूर्ण अवतारा । सांईदास कहियो वीचारा १०१

राम अवतार

रामायनमः

राम नाम नाम हरि रामु । सकल जगति के कर्ते काम ।।
पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म पूरायण । कौलापति पूर्न नारायन ।।
गोविंद संत सहाई रामा । सकल जगत के पूर्न कामा ।।
रघुवंसी पूर्ण भगवाना । भयो मुक्ति जिन अंतर आना ।।
अंतर आन ध्यानु तिहि कीना । मुक्त भयो पर्म पदु लीना ।।
संकट काटन सुष को दाता । पूर्न पुर्ष हरि आप विधाता ।।
जो जो उस्तित तांकी करही । विना नाउ वहु भौजलु तरही ।।
क्रिपा निधान क्रिपा जन करही । अपना जान जन पार उतरही ।।
दीना नाथ अनाथ को दाता । सदा सदा संतन संग राता ।।
जो वांछे हि तिन को देवै । सुप्रसन्न जन को करि लेवे ।।
को कहि सकै उस्तिति हरि केरी । हरि चढ रहे निर्भौ की वेरी ।।
हो गोविंद दु:ख संतन नासा । सर्वि निरन्तर जांको वासा ।।
प्रान अधर्न संत सहाई । कौलापति संतन सुषदाई ।।
महा गंभीर कछु अंतु न तांको । कहा करे कोई उस्तित वांको ।।
तांकी सर्नी मै चितु देवौ । सुप्रसन्न आत्म करि लेवौ ।।
राम नाम माधो गुण गावो । सांईदास छिनु ना अलिसावो ।।१।।

महाराज भक्तिनि सुखदाई । गुण निधान मै ता सर्नाई ।।
ज्युं जानो तैसे प्रभ राषो । त्याग न देवो अपना भाषो ।।
तुम हरि औगुन और न देषौ । प्रभ जी अपनी ओर तुमि पेषो ।।
पतति उधारन नामु तिहारा । सदा सदा जिन विर्दु सम्हारा ।।
जो हमि अघ कीए सभ निवारो । अपनी किर्पा हमि परि धारो ।।
जो जाचकु जाचे हर दाना । दीनै दानु हर विर्द समाना ।।
अपनो विर्द हरि तुमहि समारो । सांईदास परि किर्पा धारो ।।२।।

एक विनती प्रभ तुम पै करही । अपनो सीसु तुम पगि परि धरही ।।
एक बात हमिरे मन आई । सो तुमि हमि कौ देहु वताई ।।
ग्याल पुरुष कहो क्युं करि पाई । ग्याल पुर्ष कैसे ध्यानु लगाई ।
ग्याल पुर्ष कैसे जपीए नामा । ग्याल पुर्ष पूर्न सभ कामा ।।
इहि विधि हमि को देहु वताई । तुमि बिनु हमिरो कोऊ न सहाई ।।
हे माधो मुकंद मुरारी । हे माधो संतन हित कारी ।।
हे माधो क्षिण महि तार्ण हारे । हे माधो संतनि रषवारे ।।
हे माधो पूर्न भगवाना । हे माधो सभ माह समाना ।।
हे माधो धर्नी धर गोविंद । हे माधो पूर्ण पर्मानन्द ।।
हे माधो त्रिभुवन के नायक । हे माधो सुख सहिज समाया ।।
हे माधो विर्था सभ जानौ । हे माधो ओगनि न वषानो ।।
हे माधो धार्न सभ धर्ना । सांईदास सस कार्ण कर्ना ।।३।।

निरंकार सभ माह समाया । निरंकार सभ रचन रचाया ।।
निरंकार सभ हूंते न्यारा । निरंकार सभ माह निहारा ।।
निरंकार पूर्ण रघुराई । निरंकार संतन सुषादाई ।।
निरंकार की गति को जाने । निरंकार को कौणु पछाने ।।
निरंकार पूर्न अविनासी । निरंकार दु:ख को है नासी ।।
निरंकार जनु हृदे पछाने । निरंकार सभ महि करि जाने ।।
निरंकार सो मुक्ता कीना । निरंकार निर्भो पद दीना ।।
निरंकार ब्रह्मंड को दायक । निरंकार त्रिभुवन को दायक ।।
निरंकार घटि घटि समाया । निरंकार सभ जग्तु उपाया ।।
निरंकार निर्लेपु गुसांई । निरंकार सिमरो मन माही ।।
निरंकार त्रिभुवन को सांई । निरंकार सिमरो दु:ख जाई ।।
निरंकार सूक्ष्म अस्थूलं । सांईदास जीवन वहि मूलं ।।४।।

निरभो है निरवैर गुसांई । निर्भो है त्रिभुवन को सांई ।।
निर्भो है मुकंद मुरारी । निर्भो है जिन रचिना धारी ।।
निर्भो है अकाल अकल हर । निर्भो है माधो धर्नीधर ।।
निर्भो है त्रिभुवन को राया । निर्भो है दु:ख सुख को राया ।।
निर्भो है महाराज के राजा । निर्भो है महाराज बेमुहताजा ।।

निर्भौ है जुग जुग अवतारा। निर्भौ है प्रभ राषनहारा ॥
निर्भौ है वावन वपु धारा। निर्भौ है संतनि रषिवारा ॥
निर्भौ है अनाथ को नाथा। निर्भौ है तिसि सभ कछु हाथा ॥
निर्भौ है रघुपति रघुराई। निर्भौ है लक्ष्मण संग भाई ॥
निर्भौ है त्रैलोक को दाता। निर्भौ है घटि घटि महि राता ॥
निर्भौ है भौ ताहि न व्यापै। निर्भौ है सभ को तिस जापै ॥
निर्भौ है सांईदास के दासा। निर्भौ है जिन हर की आसा ॥५॥

रघिपति को अवतारु सुनावों। सभ व्रतांतु मै ताहि वतावो ॥
साधो श्रवण धार सुण लीजै। और बात कछु हृदे न दीजै ॥
जो श्रवण धार एहि सुण लेवै। तांपरि प्रभ जी क्रिपा करेवै ॥
सदा सदा मुक्ता जग माही। तो को दुःख कोऊ लागै नाही ॥
जन्म जन्म के अघ कटि डारे। डूवति वेडी पार उतारे ॥
जैसे पषाण जलहि तरायो। वेग विलम कछु मूल न लायो ॥
जैसे तुम को भौ जल तारे। एक छिन मै षडि पार उतारे ॥
जो वाछेहि सोई कछु पावै। जो रघिपति जसु हृदे वसावै ॥
साधो तुम कौ कहौं पुकारी। तुम मनि माहे लेहो वीचारी ॥
सदा सदा रघुपति जसु गावो। अपने घट महि सदा वसावो ॥
जिहि विधि रघुपति लियो अवतारा। सकला तांका कहो वीचारा ॥
साधो सुण हो हितु चितुलाई। सांईदास मुक्ति जन पाई ॥६॥

रावण देतु महा बलकारी। दस सिर वीस भुजा बलु भारी ॥
एकु लक्षु पूतु सवा लषु नाती। कुंभकर्णु भाई तिहि साती ॥
व्रह्म के आश्रम चलि आया। ब्रह्म भक्ति सों हेतु वढाया ॥
महा कठिन तपु रावण कीना। तव ब्रह्म मन महि इह लीना ॥
जो मांगे सोई इसि देवौ। सुप्रसंन्न मनु इसु कर लेवौ ॥
मोह भजनु इनि अधिक कमायो। मोह भजन सो वहु हितु लायो ॥
वहु अधीन भजनु उनि कीना। रावण अधिक भजनु करि लीना ॥
महा कठन तव भजनु कमायो। सांईदास ब्रह्म लिव लायो।७॥

ब्रह्मा प्रगटि भयो तिह पाही। सोच वीचार करी मन माही ।।
हे रावण तुमि कछु मंग लेवौ। संका कछु न मन महि लेवौ ।।
जो तुम मांगो सोई देवौ। वेग विलम तुम नाह करेवौ ।।
तव रावन ने वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारा ।।
हे प्रभ मोको येही देवौ। जो मांगो सो क्रपा करेवौ ।।
सुरों असुरो ते ना मै मरहो। इह जाचनु प्रभ तुम पै करहो ।।
मानस कपि कहा निकट आवहि। त्रैलोक मोह वल कंपावहि ।।
ब्रह्मे कह्या ऐसे ही होई। जो तै माङ्गा देआ सोई ।।
अवि जाइ सुख वसो गृह माही। उौरु हृदे आनी कछु नाही ।।
ब्रह्मे जव एहि बात वषानी। सांईदास रावण मन मानी।८।।

करि डंडौत रावण उठि धाया। तेह वल ते त्रैलोक कंपाया ।।
कनक पुरी त्रिकूट ग्रह तांका। सागरु षाई है फुन वांका ।।
वस्तु कुमेरु तस के माही। तांके मन मंहि भौ कछु नाही ।।
रावण ने वहु जोरा कीना। लंका गढु तांते हिरि लीना ।।
आप तहा जाइ लीयो निवासा। नित नित कलु तोकौ प्रकासा ।।
कुमेरि कौ तासो दीयो निकारें। अति अभिमान हृदे महि धारे ।।
कनकपुरी को लीनो राजा। महा बली वह बेमुहताजा ।।
जरु जमु पकिड के वंदी पाया। त्रैलोक अपुने वस ल्याया ।।
महावली तिह सरि नही कोई। सांईदास सन्मुख कोऊ होई।९।।

असुर वुलाई लीए सभ तव ही। तांको आग्या दीनी जवही ।।
जो कोई यज्ञु करे भाई। तहा परो जब ही तुम धाई ।।
तिह यज्ञु पूर्ण कर्ण न देवों। मार कूटि वस्त्र षसि लेवौ ।।
येही आग्या तुम को दीनी। एहि बात मन महिं मे लीनी ।।
मेरे कह्यो मन महि ठहिरावो। उौर बात कछु हृदे न ल्यावै ।।
बार बार तुम कहो पुकारी। मानि माहे तुम लेहु वीचारी ।।
एह काम कर्नी चितु लावो। आग्या मम मनि महि ठहिरावो ।।
असुरो येहि आग्या मनि लीनी। तांकी आग्या दृढि मन कीनी ।।
महावली तिस बलु अधिकारी। सांईदास सभ कह्यो वीचारी ।।१०

सकल सुरौ को हुकुमु मनाया। गुरु किर्पा ते आष सुणाया॥
सुरपत कौ तिन लीयो वुलाई। ताह कह्यो सुण ले मेरे भाई॥
पुहप निताप्रति तुम ले आवौ। हमिरे आगे आण टिकावौ॥
सुरपति ने इहि मन महि लीआ। पुहप चुणनि चितु अपनो दीआ॥
वहुर बसंतर लीयो वुलाई। तांसो रावण आष सुणाई॥
सूपकारु हमरो तुम होवो। निश्चल अपने ग्रह मै सोवो॥
विसंतर[1] मन महि धरि लई। जो कछु रावण आग्या कीई॥
ससीअरु लीयो वुलाइ तत्कारा। रावण दैत महावलु भारा॥
ससीअर को तिन आष सुणाया। मन करि प्रीति उनि तिसे बनाया
मोह सिर छत्र तुम कर महि राषो। उौर वाति कछु ना तुम भाषो॥
ससीअर ने मन महि ठहिरानी। जो कछु रावण मुखो वषानी॥
पौण वुलाइ लीयो वलकारी। ताह कह्यो सुण बात हमारी॥
तुम सुहना हमरे ग्रह देवौ। सदा सदा इहि काम करेवौ॥
जो तुम हमिरा कामु न करहों। कोई उौर बात चित धरहों॥
टूक टूक तोह तुझ करि डारो। एकपल माहे तुझहि विडारो॥
पौन कह्यो हे नृप बलिकारी। तुम सुण लेहो बात हमारी॥
जो तैं कह्यो सो मन महि लीआ। अपुने घटि अंतरि मै कीआ॥
सदा सदा सोहना मै देवौ। उौरु कामु कछु नाह करेवौ॥
मार्ति मान[2] लीयो जो कह्या। जोउनि कह्यासो मन महि सह्या
पाछे रावण वर्नु सदाया। तांसो असे भाष सुणाया॥
तुम हमिरे गृह नीर ल्यावो। हमिरे द्वार परि छिनकावो॥
वर्न हृदे महि धरि करि लीना। जो कछु हुकुमु रावण ने कीना॥
वर्न मान गयो अहि माही। तांको वलु कछु लागो नाही॥
रवि को लीनो तवै वुलाई। तांको रावण यही वताई॥
मै पतिहारी तुम कौ कीना। एहि वात मै मन महि लीना॥
रवि ने मन महि लीयो ठहिराई। तांसो वलु न वसावै भाई॥
वहुता दुःख देव को दीआ। सांईदास उनि सभ वस कीआ॥११

१. बिसंतर=अग्नि।
२. मार्ति<मारुति=वायु।

सभ सुर ब्रह्मे पाह पुकारे। तुम हो महावली अधिकारे ॥
हमि को वहु दुःख रावण दीना। अपुने गृह महि वंदी कीना ॥
हमि तुम त्याग अवर किसु आषहि। अपनो दुःख हमि किस पै भाषेहि ॥
जो तुम हमहि न करो उपराला। कौनु होइ कहु हमिरो हाला ॥
हमि वलु ता संग कछु न वसाए। क्षीर समुद्र कौ पग धाए ॥
चला चला दधि के तटि आयो। मुष ते वेद चतुर उचिरायो ॥
इति विधि मुख सें वेद वषाने। तीन लोक महि सभ ही जाने ॥
पाछे से विनती येहि कीनी। सांईदास मुष ते उचिरीनी ॥१२

हे प्रभ सुर वहुता दुःख पावहि। तुझे त्याग औरु कहा जावहि ॥
रावण दैत्य अधिक दुःख देवै। महा कष्ट देवनि कौ देवै ॥
तुम भक्तिन के सदा सहाई। सभ कूकति है तुम पहि आई ॥
ज्युं जानो त्युं दुःख मिटावौ। वेग विल्म तुम मूल न लावो ॥
जव ब्रह्मे येहि वचनु उचारा। त्रिहू लोक महि सुन्यों वीचारा ॥
शब्द आकास ते उत्पति होया। में सां सुन्न मदिर महि सोया ॥
जव ते तैंने इहि करी पुकारा। तव ही मै मन लीयो वीचारा ॥
जाहो चितु अपना ठहि राषो। राम नाम मुष अपुने भाषो ॥
मै दशरथ गृह ल्यों अवतारा। तुम मरिकटि होवो सुर सारा ॥
ब्रह्मे जव वाणी सुण पाई। सकल सुरो सो कह्यो सुनाई ॥
चितु धरि ठौर तुम ना उकिलावो। राम नाम हृदे माह ध्यावो ॥
दशरथ के ग्रहि माह प्रभ आवै। दुःख दर्द तुम सभू मिटावै ॥
तुम सभ ही मर्कटि वपु धारो। राम नाम घटि माह वसांवो ॥
जव सभि ही सुर यह सुण पाई। वेग विल्म उनि मूल न लाई ॥
तातकार सुर कपि वपु लीना। सांईदास यहि कार्ण कीना ॥१३

दशरथ नृप ग्रहि सुतु ना कोई। ताहि उपिचारु न दीसे कोई ॥
त्रैबनिता तिस के गृहि माही। तिस गृह सुतु होवे कोऊ नाही ॥
एकि कौशल्या है तिसु नामा। द्वितीआ कौकेही तिसु भामा ॥
त्रितीया सौमित्रा ही कहीयै। तीनो नाम इस माहे लहीयै ॥
दशरथ ने इकु तालु कढाया। धनष वाण ले तहा ठहिराया ॥
ताहि ताल रषिंवाला रहिही। निसवासर ऊहा वहु वहही ॥

जव लगि ब्राह्मण ना ज्युं लावा। तव लगि इसि ऊपरि ठहिरावा ॥
जो पंषी मृग पाणी ना पीवै। इसि का जलु जूठा ना थीवै ॥
इसि प्रयोग ताल परि रहई। निसवासरि तिसि ऊपरि वहिई ॥
अंधी अंधा काँधे लीए। सुरिवण सुत तिह मग पग दीए ॥
पूर्ण चक्षु पिता को नामा। मांइ सुनेती सभ घटि रामा ॥
चल्यो आवति तिह मग माही। अति अनंदु तिहि दुःख को नाही ॥
अंधी अंधा त्रिषा संतायो। तव उनिने मुष वचन सुनायो ॥
हे सरवण सुत त्रिषा संताए। तौ विनु हमि को त्रिषा बुझाए ॥
त्रिषा गह्यौ हमि को अधिकाई। जलु आण देवो तुम हमि ताई ॥
नाहि ति निकिसित प्रान हमारे। पाछे कछु न होवत पछुतारे ॥
तव सरिवण ने मनि ठहिराई। वहिंगी ले व्रिक्ष सों अटिकाई ॥
गडिवा ले जल कों पग दीए। जाइ ताल भर्ण चितु कीए ॥
तिहि चकचकारु दसरथ कानि पर्यो। कह्यो किसी म्रग जल पगु धर्यो
सरु साध्यो सरवण को मारा। तव सरवण ने एही पुकारा ॥
हे दशरथ पापी क्या कीआ। तैं मुझिको घातु करि लीआ ॥
तव दशरथ वहुता पछुताना। कहा होइ जवि वषतु विहाना ॥
सरवण कह्यो गडिवा ले जावौ। षडि जलु तुमि जाइ तिनहि पीलावौ
मुखो न बोलौ गडिवा छिणकावो। एहु काम तुम जाइ कमावो ॥
जो मुष बोले ओहु न पीवहि। सांईदास वहु म्रितक थीवे ॥१४

गडिवा ले दशरथु जबि धाया। चल्या चल्या दोनों पहि आया ॥
जलु गडिवे माही छिणिकाया। अंधी अंधे कौं सुणवाया ॥
अंधी अंधे वचन उचारे। हे सरवण सुत प्रांन हमारे ॥
काहे ना आवति हमि नेरे। कहु तूं क्या आयो चित तेरे ॥
मुषि ते वचनु काहे नही आषो। मात पिता कौ क्युं ना भाषो ॥
सरवण कहा जो मुषि ते बोलै। सांईदास मन महि वहु डोलै ॥१५

हे पापी तूं कौणु कहावै। भूत प्रेत हमि क्युं न बतावै ॥
तब दसरथ ने वचन उचारा। मैं अपराधी सरवण मारा ॥
मैं ज्यान्यौं मृगु कोई आयो। तिह प्रयोग मै वाणु लगायो ॥
जलु ले आया हों ले पीवे। हमि ऊपरि गुस्से ना थीवो ॥

तब अंधि कह्यो चिषा बणावो। अपुने करि तीनों जलावो ।।
तब दसरथ कह्यो एहु न करहों। ऐसी बात परि चितु न धरहों ।।
होवन होइ सोई कछु होई। सांईदास उौरु करे न कोई ।।१६

अंधे अंधे कह्यो कैसे जीवहि। विनु सुत सरवण किउ सुख थीवहि
सरवण सुत को वेग ल्यावो। हे दसरथ हमि आण दिषायो ।।
दसरथु सरवण को ले आया। अंधे अंधी को आण दिषाया ।।
तिनहि द्रिष्ट आवै कछु नाही। हाथ लाइ वहु रुदन कराही ।।
रुदन कीयो करि वचन उचारे। हे दसरथ पातक वहु मारे ।।
चिषा बनाई करि हमहि जलावौ। वेग विलम तुम मूल नि लावौ ।।
तब दसरथ ने चिषा बनाई। ले लकिडी वन की अधिकाई ।।
तीनों चिषा ऊपरि ले पाए। सांईदास चाहति अग्नि लाए ।।१७

ताहि चिषा को अग्नि लगाए। तब अंधी अंधे वचन सुणाए ।।
जिहि वियोग हमि तजै प्राना। इहि वियोग निकसिहि तुम जाना
जब उनि ने इहि बचनु उचारा। तब दसरथ मनि लीयो वीचारा ।।
भलो सरापु दीयो हमि ताई। इहि सरापु सुतु हमि गृहि आई ।।
प्रिथमे तो सुतु मोह ग्रहि आवै। पाछे मोह वियोग लगावै ।।
अनंद मान होइ ताहि जलायो। तिनहि जलाइ करै गृहि आयो ।।
आइ सिंहासन ऊपरि चढयो। मन अंतर इहि कार्ण करयो ।।
तब वशिष्ठ को लीयो बुलाई। तांसो विनती आष सुनाई ।।
हे गुरदेव कछु करु उपिचारा। नाहति कुल होइ नासु हमारा ।।
जो मोह ग्रहि संतत ना होवै। तव कुल नास हमारा होवै ।।
ऐसे करो मोह संतत होई। तुम विनु अवर न कर्सी कोई ।।
तब वशिष्ट ने आष सुणाया। सांईदास येहि वचनु बताया ।।१८

सिङी ऋषु वनि माहे रहई। महा ऋषीश्वर पूर्न इहई ।।
किसी बात करि तिसे ल्यावो। उसि कौ आण ईहा ठहिरावो ।।
उोहु ईहा आण करि यज्ञ करावे। तुमको उोहु कछु भलो बतावै ।।
तव तुमरे गृह संतत होई। इह वीचार उौर नही कोई ।।
जब दसरथ इहि विधि सुणपाई। फिरि वशिष्ट सौ बात चलाई ।।

कहु सिङी ऋषु कैसे आवै। नगर माह आइ करि ठहिरावै ॥
तव वशिष्ट ने दीयो बताई। हे दशरथ नृप सुण मेरे भाई ॥
सुंदर बनता अधिक पठावो। मेरो कह्यो मन ठहिरावो ॥
अति मिष्टान जा ताहि षलावनि। लोभ मान करि ताह ल्याइनि ॥
दसरथ बनता अधिक बुलाई। तिह मिष्टानु देवनहि पठाई ॥
दसरथ तांको कह्यो सुनाई। तुमि सुण लेवो मेरे भाई ॥
इहि मिष्टानु खडि ऋषहि षवाग्रो। सिङी ऋष कों ईहा ल्यावो ॥
इहि मिष्ठानु सिङी ऋषि देवौ। एहि बात तुम मोह करेवौ ॥
ज्युं जानो त्युं तिसे चषावो। ज्युंउ जानो उसि कों ईहा ल्यावो
वनता सभि तव ही उठि धाई। चली चली ऋषि पाहे आई ॥
सिङी ऋषि प्रभ सो लिउ जोरी। वनता सभ आगे असु होंरी ॥
वनिपत से मिष्टानु लगाया। जहा सिङी ऋषि आसणु छाया ॥
ध्यान छूटो तिह पुध्या व्यापी। तोड लीए वनिपति तिह आपी ॥
पात तोड मुख माहे दीने। रस्ना स्वाद अधिक चषि लीने ॥
भूल पर्यो रस्ना स्वाद लीए। नेत्र षोल्ह इति उति उनि कीए ॥
वनिता तिहि निर्षी उठि आयो। उनि वनिता मिष्टानु षलायो ॥
एक वनिता आगे उठि धाई। दसरथ कों आइ षबर सुणाई ॥
हे भूपति ऋषि को ले आई। सांईदास जो तुझै पठाई ॥१६

सुण दसरथ आगे कौ धायो। सिङी ऋषि पै जाइ ठहिरायो ॥
अति डंडौत ताहि को कीनी। हे प्रभ हम पै किर्पा कीनी ॥
चलि सो गृह सेवक के माही। क्रिपा करी प्रभ तुम अधिकाही ॥
सिङी ऋषि को गृह ले आया। प्रजंग ऊपरि आण वैठाया ॥
आदर भाउ अधिक तिहि कीनो। करि जौरे विनती उचिरीनो ॥
हे प्रभ मोको यग्य करावौ। मोह गृह संतत तुम उपजावौ ॥
तुमि विनु ओटि हमि को नाही। तोह क्रिपा ते संतति पाही ॥
सिङी ऋषि कहो वहु नीका। भलो कह्यो मुख चाहो जी का ॥
आन भूपति ने सुण करि पाया। दसरथ ने वहु यज्ञु मचाआ ॥
आन आन नग्र के भूपति आए। आइ अयोध्या महि ठहिराए ॥

ऋषु तिहि यज्ञ करावन लागा। दसरथ और बात सभ त्यागा ।।
चितु धरो तुम यज्ञ करावहि। सांईदास संतत उपिजावहि ।।२०

कुंडि कीयो तहा अग्नि जलाई। घ्रित तिल अक्षत लीयो बुलाई ।।
ताह अग्नि महि होमु जु कीना। घ्रित तिल अक्षत डार तिह दीना ।।
अग्नि से प्रगटयो इकु रूपा। अति भुज गात तिह अधिक सरूपा ।।
कनक थार क्षीर कर लीआ। कौशल्या कौकेही को दीआ ।।
तव ही सुमित्रा मुखों पुकारा। हे प्रभ वांटा कछू हमारा ।।
मो को भी प्रभ जी कछू देवो। हमि परि भी तुम क्रिपा करेवौ ।।
कछु उस ते कछु उसते लीआ। ले सुमित्रा को उनि दीआ ।।
दसरथ की तिहूं वनिता पाया। यज्ञ करि सिंङी ऋषु वन धाया ।।
केतक दिन जव भए वितीता। जां दिन ते दसरथ यज्ञु कीता ।।
कौलापति पूर्न गोसांई। धर्नीधर सुंदर अधिकाई ।।
तजि वैकुंठ गर्भि महि आयो। कौशल्या गर्भ आइ ठहिरायो ।।
कौशल्या रूप भयो उजीआरा। रवि चढियो मिटि ग्यो अंध्यारा ।।
मानो पुतली कनठ बनाई। तिह उस्तित कछु कही नि जाई ।।
ब्रह्मा शिव दर्सन को आए। दर्सन कर उस्तित उचिराए ।।
हे प्रभ हमि दधि के तटि गए। तहा जाइ करि ठांढे भए ।।
तव हमि करी विनती त्रिभवनराया। तव तुम गगनि सौ वचनु सुणाया
मै आवौ दसरथ ग्रहि माही। दूष मिटावौ तुमरो ताही ।।
तव हमि लीने हृदे सम्हारा। हे कौलापति अपर अपारा ।।
क्या जानौ क्या नाही होई। तव हमि विस्म भए अधिकोई ।।
तूं भक्तन को सदा सहाई। तुमरी उस्तिति तुम वनि आई ।।
तुमरी उस्तित कहु को जाने। सांईदास सभ सत्त वषाने ।।२१

जहा जहा संतनि भीर होई। तहां तहां प्रभ जी तुम षोई ।।
तुझि विनु संतन को सुष देवे। तुझि विनु को जनु क्रिपा करेवै ।।
तुमरी उस्तित कहा वषाने। तुमिरी उस्तित हमि नही जाने ।।
तूं अविनासी नासु न तेरा। अकाल मूल सूक्ष्म अधिकेरा ।।
तीन लोक महि ताह प्रकासा। जीय जंत सभ तेरी आसा ।।
तेरो अंतु न पावै कोई। जो तुझि भावै सोई होई ।।

जन कौ तूं सुख देवन हारा। सकल लोक महि तुही उजारा॥
घटि घटि जोत हर तोहि समाई। तुमरी उस्तित कही नि जाई॥
कहा कहो उस्तित मै तेरी। रसना थोरी है प्रभ मोरी॥
सदा सदा तूं राषरिग हारा। आपे एकु आपे विस्तारा॥
जीइ जंत्र सभ तुम्हहि बनाए। तुमरि गत को को हर पाए॥
सदा सदा हम सर्न तिहारी। तूं दाता हमि दीन भिषारी॥
निर्भौ निरंकार पूर्न भगवाना। घटि घटि की विर्था तुम जाना॥
रूप रेष कछु वर्नि न साको। मै फिरि उस्तित कैसे भाषो॥
मोहि पै उस्तित कही नि जाइ। सांईदास प्रभ सकल समाई॥२२

ब्रह्म शिव दर्सनु करि आए। अपनो अपने ग्रहि जाइ ठहिराए॥
कौकेही सुमित्रा को गर्भु होया। दसरथ संसा मन ते षोया॥
जब ते भए संपूर्ण भासा। कौलापति हरि जग्त की आसा॥
चैत्र स्वेत नौमी तिथि आई। तिह दिन जन्मु लीयो रघुराई॥
जन्म लीयौ दसरथ के नंदनि। तीन लोक ठाकुर मकरंदनि॥
भयो उजीआरा तिमर विनासा। दसरथ की पूर्न भई आसा॥
निर्ष्या सुखु अनंद वहु होया। दसरथ संसा मनि तै षोया॥
ज्यो दस दिन भए वितीता। नामु कर्न दसरथ तिहि कीता॥
बशिष्ट प्रोहतु लीयो बुलाई। भूपति तिह समे लियो सदाई॥
हिर्षमान भोजनु तिहि दीना। चर्न पषार चरणाम्रतु लीना॥
रामचंद्रि जी नामु रषायो। दसरथ अंग अंग हिर्षायो॥
गऊ अधिक विपो की दीनी। विपो ले स्वस्ति मुष कीनी॥
वहुरो कौकेही गर्भु जायो। तिहि गर्भ ते सुत वाहिर आयो॥
तांको नामु भरत तिहि राषा। बशिष्ट प्रोहति ने जो आषा॥
वहुरो सुमित्रा ने जाए। दो सुत तिहि गर्भ वाहरि आए॥
दसरथ तिन्ह को नामु रषाया। लक्ष्मणु और शत्रघनु ठहिराया॥
वडे भए मुष दसन निकारे। दसरथ कौ अति भए प्यारे॥
रुढति फिर्त षेलति ग्रहि माही। अत अनंदु सोक कछु नाही॥
वहुरो पग सो मग महि चालहि। अधिक सोभति जो गडिमुडि हालहि
धनष लीए कर षेलन जाही। धर नीशाना बाण चलाही॥

धन्षि विद्या उनि ने सिष लीनी । धन्ष विद्या वहु मन महि कीनी ।।
श्री रघुपति सुंदर अधिकाई । सांईदास दर्सन वल जाई ।।२३

महावली तिहि वलु अधिकारा । जिह वल कछू न पारावारा ।।
धरि नीशाना वाण चलावहि । नितापर्त इहि वात कमावहि ।।
दसरथु देष तिन को हिर्षाए । अंग अंग महि नाह समाए ।।
चतुर सुत दसरथ गृहि होए । दसरथ सकले संसे षोए ।।
तिन को देष अधिक सुख पाए । ले तिन गोदी माह वहाए ।।
रोम रोम सीतलु तिह होवै । शीत तप्त हृदे ते षोवै ।।
जैसे भौर पुहप निर्षाहै । अति अनंद होवत मन माहे ।।
जैसे मृगु वनु हरिआ देषै । अति अनंदु व्यापति त्रिण पेषै ।।
जैसे पंक्षी फलु द्रिग धारे । हिर्षमान होवत तत्कारे ।।
जैसे वृक्ष देन जलधारा । हर्‌यो होत संग ले परिवारा ।।
तैसे नृपु दसरथ हिर्षाए । सांईदास प्रभ दर्स दिषाए ।।२४

रावण दैत्य महा अधिकारा । ताहि भुजा वलु है वहु भारा ।।
जो विच जज्ञ तिन्ह को दुःख दीना । अति अभिमान हृदे महि कीना ।।
विपो कौ कह्यो हमै कछु देवौ । मोह आन मान तुम लेवौ ।।
तव विपो कह्‌यो कहु क्या देवहु । तोह आन मान करि लेवहु ।।
रावण कह्यो जो कछु तुम पाई । सोई देवौ तुम हमि ताई ।।
विपो तन ते रक्ति निकारी । कुंभ लीयो तिन्हो तिसि महि डारी ।।
कह्यो लेहु नृप इहु हम माही । अवर कछू हमिरे पहि नाही ।।
रावण कुंभ लीयो ग्रह आयो । जोतकी पंडित तव ही वुलायो ।।
तांसो कुंभ नृप आण दिषारा । हमि को इसि का देहु वीचारा ।।
जोतकी निर्ष करि कह्यो वीचारी । हे नृप इनि का लेह वीचारी ।।
इसी रक्त ते कंन्या होवै । सांईदास रावण जीउ षोवै ।।२५

जव रावण इहि विधि सुण लीई । चिंता अधिक हृदे महि कीई ।।
कुंभ रक्त सौं दधि महि डारा । तहा निरंकार रचिना इह धारा ।।
एक मीन कुंभु उदर महि कीआ । रक्त समेत उदर महि लीआ ।।
केतक दिन उदरि महि रह्या । ताहि भारु मीन मन सह्या ।।

वाही मीन फंधकि फहाई। जलु ततिउो वाहिरि वहु आई॥
मीन अधिक वपु ताह खहेरा। वंधकु निर्ष भयो विस्मेरा॥
जन्क विदेही तिह कछु दीना। वाहै मीन जनक ने लीना॥
ताह मीन को उदिर विडारा। तिस महि इकु कुंभ निहारा॥
जव नृप द्रिष्ट कुंभ महि कीई। कंन्या सुंदर द्रिग देषि लीई॥
जनकि तवहि पंडित वुलाए। कुंभु लीयो ले तिसहि दिषाए॥
हे प्रभ मोको उत्तर देवहु। येह अचर्ज देषि द्रिग लेवहु॥
तव शुभ पंडित उत्तर दीना। जन्क विदेही सुण करि लीना॥
एहि कन्या जो पर्गटि होई। रावण को लीउ एहि षोई॥
रावण मारन को इह आई। सभ पंडित इह वात सुनाई॥
जव पंडित इहि वात उचारी। सांईदास तव जन्क वीचारी॥२६

तव कह्यो जन्क सुण हो प्रभ स्वामी। तुम सभ विर्था[1] अंतरजामी॥
इसि की उत्पति कहा ते होई। सभ विर्था सुणावो मोही॥
तव पंडित ने बचन उचारा। सुण हो नृप तुमि वात हमारा॥
रावण दैत्यु महा बलिकारी। तांको वलु भुज है अति भारी॥
तिसि ब्राह्मण को वहु दुःख दीनो। सभ ब्राह्मण अपने वस कीनो॥
तिन को कह्यो हमि कौ कछु देवौ। मोहि आन-मान करि लेवौ॥
तव उनि कह्यो कहा हमि देवहि। तोह आन मान करि लेवहि॥
तव रावण कह्या कछु तुम देवहु। मेरो कह्यो मान तुमि लेवहु॥
तव उन्हों तन के रक्त निकारी। कुंभ लीयो ले तिसि महि डारी॥
रावण कुंभ लीयो ग्रह आया। जोतकी पंडित तिसे वुलाया॥
ताह कह्यो सुण हो मेरे भाई। इसि की विधि मोह देहु बताई॥
पंडित निर्ष रावण सो आषा। तोह कालु है इहि विधि भाषा॥
तव रावण भै चक्रित हों रह्या। ताकी गति कछु जाइ नि कह्या॥
कुंभ रक्त सों दधि महि डारा। दधि महि गोविंद रचना धारा॥
सो सभ वात मै तोह वीचारो। सांईदास सभ संसा टारो॥२७

एक मीन निकल करि लीआ। कुंभ रक्ति सों उदर महि कीआ॥
केतकि दिन तिहि उदर महि रह्या। कुंभ को भारु मीन मन सह्या॥

१. यहां विर्था शब्द व्यथा के लिए आया है,

वाही मीन फंधकि ने फांही। सोई मीन इहि हम पै आई॥
तिसि रक्त से कन्या होई। हे नृप और नाह इहु कोई॥
जन्कि पंडित सभ विदआ कीने। कनक गऊ कछु तिन कछु दीने॥
कन्या षडि राषी गृह माही। दुहिता जान करि ताह पलाही॥
तव ओझै[1] सीता नामु तिह राषा। और जानकी मुख ते भाषा॥
दस्न कढे होइ अधिकायन। अपुनें कर कर भोजन षायनी॥
अधिक भई पग चलिरग लागी। वाल अवस्ता उनि ने त्यागी॥
सुंदर रूपु क्या रूप वषाना। ताह रूप उस्तित क्या जाना॥
ससी अरु भानु देषत छपि जाई। देषि निसा कहि मन सुकचाई॥
फिर्त फिर्त सषी संग लीए। भरि जोवरग चाहति रस कीए॥
अंवर अधिक जो अंग उढावै। तांकी महिमा कही नि जावै॥
अति सरूप सुंदर अधिकाहनि। सांईदास तिहि वल वल जायनि॥२८

शिव को धनुष दरि आगे परिआ। जन्कु ताह पूजा नित करिआ॥
महा अधिक जोधे जो आवहि। तौ उसि धन्षि कौ ठौरउठावहि॥
चौंका देह ठवर तहा राषहि। जन्कु ताह पूजा चितु राषहि॥
निता पर्त एही उसि कामा। जन्क विदेही नृपु तिह नामा॥
जान्की द्वादश वर्ष की होई। तिहि समसर औरु रूप न कोई॥
सखिआ ले संग वाहिर आई। आई धन्ष पाहे ठहिराई॥
सखीअन सों उनि एहि भाषा। गोवरु तुम ल्यावो एहि भाषा॥
धन्ष ठौर चौका मै देवौं। इसि की सेवा मै कर लेवौ॥
मेरो कह्या मन महि ठहिरावौ। सांईदास छिनु विलम न लावौ॥२९

तव सखीआ सीता स्युं भाषा। हे जान्की तैने क्या आषा॥
जो केतक जोधे ईहा आवहि। तौ इसि धन्ष कोमसा उठावहि॥
कहु तूं कैसे इसे उठावहि। क्युं करि तूं ईहा चौंका पावहि॥
तव सीत कह्यो तुम भई हयानी। मोरी विधि तुमि अजहूं न जानी॥
मैं यकि कर सो इसे उठावौ। छिनपल वेग विलम नही लावौ॥
सखीआ कह्यो प्रतीत नि आवै। किति विधि तूं इसि धन्षि उठावै॥

---

१. ओझा < उपाध्याय = पुरोहित।

प्रिथमे तूं इसि लेहु उठाई। तव हमि गोवरु ल्यावहु जाई॥
तव श्री जानकी ने इह कीआ। करि सो धन्षि उठाइ करि लीआ॥
तव सभ सखीआ भै चक्रिति भई। अति भै चक्रति मन महि हो गई॥
दौरी जाइ गोवरु ले आई। जानकी जी पै आइ ठहिराई॥
जानकी गोवरु तिहि सै लीआ। एक करि धन्षि ले चौंका कीआ॥
वहुरो धन्षु तहा ही राष्या। जान्की कछु मुष ते ना भाष्या॥
धन्षि राष ग्रहि को उठि धाई। चली चली ग्रहि माहे आई॥
पाछे जनकु विदेही आयो। चौंका पाया तिन निर्षायो॥
रह्यो भै चक्रित मनि के माहे। सांईदास पूछति सीताहे॥३०

कहो किने इहि चौंका दीआ। एहि कामु कवन ने कीआ॥
तिहि सषीआ तव भाष सुणाआ। जान्की ने एहि लेपु कराया॥
तव ही नृप ने बचनु उचारा। इहि तौ धन्षु महा वलु भारा॥
क्युं करि जानको धनषु उठाया। ईहा लेपनु कैसे कराया॥
तव सषीआ नृप सों इउ भाषा। एक कर धनषु उठाया राषा॥
एक कर ईहा लेपनु कीआ। जानकी ने विधि करि के लीआ॥
जन्कि विदेही मन महि लीनी। अचर्ज की विधि सीता कीनी॥
बहु भार इहु धन्षु उठायो। एक करि सौ ईहा लेपु करायो॥
जो इसि धन्ष को तोड चुकाई। कंन्या एह ताहूं देवहु भाई॥
जन्क विदेही ईही हृदेधारा। मन अंतरि इह बाति वीचारा॥
स्वंवर सीता का हौं कीना। एहि प्रतज्ञा दृढि करि लीना॥
जो इसि धन्षि को दों करि डारे। ताह भुजा बलु हो अधिकारे॥
जान्की कौ ताहूं कौ देवौ। सेवक होइ करि सेव करेवौ॥
देस देस कों पती पठाई। ताह वीचारु मै सकल सुणाई॥
आनि भूपति कौ लिष्यौ पठायो। जनकविदेही काजु रचायो॥
तुम आवो छबि मेरे भाई। सांईदास हरि सदा सहाई॥३१

विश्वामित्र ऋषु अधिकाई। भजनु कीयो तिन त्रिभुवन सांई॥
यज्ञु करै दैत्य जाहि विडारी। तांको कठनि बनी अति भारी॥
यज्ञु पवित्र होन ना देही। पापी असुर विरोधु करेही॥
तव विश्वामित्र मन महि इह कीना। कौलापति उौतारु है लीना॥

किर्पा करि दशरथ ग्रहि आए। रामचंदि जी नामु रषाए।।
तांको जाइ ईहा मै ल्यावौ। पाछे से मै यग्य रचावौ।।
असुर आइ जो मोह संतावहि। श्री रामचंदि तिहि मार चुकावहि
विश्वमित्र मन महि इहु धारा। मन माहे उनि सोच वीचारा।।
चल्यो नग्र अयोध्या आया। दसरथ के ग्रहि आइ ठहिराया।।
दशिरथ कह्यो क्रिपा प्रभ कीने। किह प्रयोग ईहा पगि दीने।।
जो आज्ञा होइ वहुडि ले आवो। वेग विलम मै मूल नि लावौ।।
तव विश्वामित्र मुष ते इउ भाषा। इसि विधि तुम पहि आया आषा।।
असुर यज्ञ मोह कर्नि न देही। हमिरो यज्ञ विटार[1] करेही।।
दोनों सुत अपुणे मोह देवहु। मोह आज्ञा मान करि लेवहु।।
इहि जाइ यज्ञ संपूर्ण करही। तिहि असुरो सेती इहि लरही।।
तव दसरथु दोऊ सुत ल्याया। भरत शत्रुघ्नु आए दिषाया।।
हे प्रभ इनि कौ तुम ले जावौ। जो भावे सो टहिल करावौ।।
भला कीआ प्रभ तुम जो आए। सांईदास बहुते सुष पाए।।३२

विश्वामित्र ले तिहि उठि धाया। नगर त्याग बाहर वहु आया।।
अपुने नग्रि कौ उनि पग दीने। त्याग अयोध्या गृह मगु लीने।।
चलित चलित दो मग परि आयो। तहू ठौर आइ करि ठहिरायो।।
तव भरत शत्रुघन वचन उचारे। हे पूर्न ऋष कहा वीचारे।।
आगे को पगु क्युं न धरहो। आगे को काहे ना करहो।।
हमहि वीचारु इसि का तुम देवहु। हमिरो संचरु हिरि करि लेवहु।।
विश्वामित्र तिहि प्रतु दीना। इहि कार्ण मै गवनु न कीना।।
मोह नग्र दोइ मार्ग जावै। एकि अनंद इकु त्रासु दिषावै।।
जो अनंदि मार्ग हमि जावहि। सप्त दिनसि मग माहे लावहि।।
तव जाइ नग्रि परापति होवहि। मग की चिंता सभही षोवहि।।
जो इसि त्रास के मार्ग जावहि। तीन दिवस को जाइ टहिरावहि।।
अधिक त्रासु है इसि मग माही। जो तुम वलु होइ इसु मार्ग जाही
जो तारिका सो युद्ध करावो। युद्ध करी जो तिहि हिरि आवो।।
तव हमि इसि मार्ग पगु धरही। अपुने नग्र गवनु हमि करही।।

---

१. विटार=अपवित्र।

भरत शत्रुघन इहि विधि पाई। बिस्म भए कछु कह्यो न जाई।।
बिस्म होइ येह वचनु उचारा। आनंद मार्ग चलु प्रान अधारा।।
हमि असुरो सों युद्ध न करही। युद्ध कर्न कौ चितु न धरही।।
विश्वामित्र हृदे इह आनी। सांईदास सो सकल वषानी।।३३

इनि से कार्ज पूर्न ना होइ। इनि महि सूर्मा नाही कोई।।
तिन कौ संग ले करि फिरि आया। आइ अयोध्या महि ठहिराया।।
कहियो दसरथ को सुत लेवो। रामचंद्र लक्ष्मण हमि देवो।।
इनि से हमिरो कासु न होइ। इनि मनि त्रासु उठित अधिकोई
इनि को तुम अपुने गृहि राषो। जो जानो सो इनि संग भाषो।।
रामचंद्रि लक्ष्मण को देवो। मोह कार्य पूर्ण करि लेवो।।
तव दशरथ कह्यो इनहि न देवो। एहि वाति मैं नाह करेवो।।
तव ऋषि कह्यो जु लेहु सरापा। अपुने मुष मांगो तुम आपा।।
तव दशरथु भै चक्रित हो रह्या। हे ऋषि जी तैंने क्या कह्या।।
कोन पापु तेरा मैं कीआ। जो तैंने चित्त धारि लीआ।।
कित कार्ण श्रापु देवो मोही। कवन बात मन लीनी तोही।।
सुण हो दशरथ मैं तुंह आषा। एहि वाति मैं तुझ सों भाषा।।
देहो राम लक्ष्मण ले जावा। नाहि त तुम कों श्रापु लगावा।।
रामचंद्र लक्ष्मण कौ देवौ। सांईदास यहि काम करेवौ।।३४

दसरथ मन महि लीओ वीचारी। अवि मोह आइ वनी अति भारी।।
देवो राम लक्ष्मण दुःख पावो। जो न देवो तौ श्रापु उरिझावो।।

एह महा ऋषु भजनु कमाई हे प्रभु श्रापु न देवो।
सुत को लेवौ जो चाहो सो जाइ करेवौ।।

विश्वामित्र तव क्या कीया। रामचंद्र लक्ष्मण को लीआ।।
अपुने नग्र कौं तिस पग दीने। त्याग अयोध्या ऋष गवनु कीने।।
चल्यो चल्यो दो मग परि आयो। आइ दुहू मग परि ठहिरायो।।
श्री रामचंद्रि जी वचनु उचारा। सुण हो प्रभ जी वात हमारा।।
ऐह दो मार्ग कैसे आए। इसि की विर्था[1] देहु वताए।।

१. विर्था शब्द का अर्थ सम्भवतः कथा है।

इहि मार्ग कहा इहु कहा जाई। इहि कैसो इहि कैसो भाई॥
तव ऋषि सुण तांको प्रतु दीना। श्री रघुपति मनि महि धरि लीना॥
त्रासु मार्ग इह है रघुराई। दूसरो अनंद को मेरे भाई॥
रघुपति कह्यो त्रासु क्या कहीयै। हे प्रभ विर्था मोह वतय्यै॥
वहुरो ऋषि ने आष सुणाया। हे प्रभ पूर्न रघुपति राया॥
दोनों मग मम देस को जाही। तिन की विर्था सभहू वताई॥
जो हमि त्रास मार्ग पग धारहि। तीनदिनसि हमि पंथु निहारहि॥
जो अनंद के मग महि जाही। सप्त दिवसि लागै हमि ताही॥
तव रघुपति फिरि वचनु सुनाया। हे ऋष त्रासु नामु वताया॥
कवन त्रासु इसि मार्ग माही। इहि संचरु उपज्यो मन माही॥
क्रिपा करो करि मोह वतावो। वेग विलम तुम मूल नि लावो॥
तोह क्रिपा करि संचरु भागे। संचरु त्याग मन महि सुख लागे॥
क्रिपा करि करि मोह वतावो। सांईदास तुम विलम न लावो॥३४

विश्वामित्र ताह सुनायो। वेग विलम तिन मूल न लायो॥
तारका राषसी युद्ध कौ आवै। हमि तुम वहुता दुःख दिषावै॥
सूक्ष्म वाति तीन दिन करी। इसि महि त्रासु प्रभ है अधिकारी॥
जो तुम आज्ञा होइ सु करहों। तिस मगि माहे मै पगु धरिहों॥
सुण रघुपति इहि वचनु उचारा। त्रास मार्ग चलि हो ततकारा॥
जो हमि त्रासु करहि मन माही। इसि कार्ज कैसे सिद्ध कराही॥
हे प्रभ हमि इहि त्रासु दिषावै। इहि संचरु क्या मन महि ल्यावै॥
चलहो निकटि मार्ग हमि जांवहि। तारका सों वहु युद्ध मचावहि॥
इहि कार्ण मन कीयो विस्वासा। कहा भयो मन माहे त्रासा॥
चल हो प्रभ इस ही मग माही। भजौ राम त्रासु कछु नाही॥
तारिका राक्षसी कहा बलु होई। हरि स्मसर कहा होवै कोई॥
हे प्रभ चलिहो इसि मग माही। सांईदास दुःख लागे नाही॥३५

तव ऋषि ने इहि मन महि धारा। मनि माहे अति सोच वीचारा॥
इहि वाल्कु मोह कार्जु करिही। असुर अधिक को एही हिरही॥
त्रास के मग माहे पगु दीना। तिहि कछु त्रासु मन महि कीना॥
ऋषु आगे रघु पाछे जाही। तिहि को भौ उपिजै कछु नाही॥

जब केतकि मग ताई गए। कछु उनि त्रासु मन महि लए ॥
जव इनि पग आगे कौ धारे। महा अधिक उठिओ गटिकारे ॥
तारिका प्रगटि भई मग माही। तव गटिकारु भयो अधिकाही ॥
रघिपति वाण गह्यो कर माहें। ताह बाणु षाली पवे नाहें ॥
वाण गह्यो राकसी कौं मारा। श्री रघुपति तांकों प्रहारा ॥
तिसे मार आगे पगु दीना। श्री रघुपति मनिहि चित कीना ॥
बनिता गोत्तम की मग मांहे। सिला परी वहु मग मंझाहें ॥
तांकौ क्रितार्थ कर लेवौ। साँईदास तिह सब्द पुरेवौं ॥३६

सकल ब्रितांतु मै ताहि सुणावौ। सकल वात मै तुझे बतावौ ॥
किहि प्रयोग श्रापु तिह पायो। गुर किर्पा ते सकल सुणायो ॥
गोत्तम भार्जा नामु अहल्या। तिहि सत अंग अधक परिफुलिआ
एक नृप के कंन्या वहि होई। महा सुंदर तिह रूप अधिकाई ॥
तिसि नृप ने पर्तज्ञा कीनी। इहि पर्तज्ञा मन महि लीनी ॥
तीन घडी महि इह करि लेई। वसुधा सकल प्रदक्षणा देई ॥
इहि कंन्या मै तांकौ देवौ। चर्न लाग तिह सेव करेवौ ॥
कंन्या रूप महा अधिकाई। तिह उस्तित कछु बर्नि न जाई ॥
सुरपतु माइलु तिह ऊपरि आही। तिसि देषनि को मनु लोचाही ॥
इहि विधि जब सुरपति सुण पाई। पौन रूपु तव लीयो बुलाई ॥
चला चला नृप पाहे आया। नृप सौ सुरपति भाष सुणाया ॥
सकल प्रिथवी प्रदक्षिणा देवौ। सांईदास एहि कामु करेवौ ॥३७

पौन रूप परि सुरपति चढ़िआ। प्रदक्षिणा प्रिथवी की चितु धरिआ
गौत्तम तवै बेदु करि लीना। ताह माह सोधनु उनि कीना ॥
वेद सें इहि विधि निकसाई। सो भी नर की भाष सुणाई ॥
जो शाल ग्राम प्रदक्षिणा देवै। प्रिथवी परिदक्षिणा कर लेवै ॥
काढि पत्रु नृप के करि दीना। तव नृप पत्रु पढि के लीना ॥
इहि निकस्यो पत्रि के माही। दूसरी वात अवरु कोऊ नाही ॥
जिन शाल ग्राम प्रदक्षिणा कीनी। तिन सकल प्रथ्वी प्रदक्षिणा कीनी
गोत्तम शाल ग्राम निकारा। करी प्रदक्षिणा तिस ततकारा ॥
नृप कंन्या काजु करि दीनी। गोत्तम ऋषि काजु करि लीनी ॥

कीओ काजु गृहि महि ले आया । सुरपति नृप आइ आपि सुणाया ॥
मै पृथ्वी प्रदक्षिणा दीई । सांईदास सुरपति इह कीई ॥३८

तब नृप इंद्रि सौ वचन सुनाए । सुण सुरपति तुम वलि अधिकाए ॥
कंन्या गौत्तम ऋषि ने लीनी । तात काल परिदक्षिणा दीनी ॥
तव सुरपति भै चक्रित हो रह्या । मुष ते वचनु उचारा कह्या ॥
किउ करि उनि पर्दक्षिरणा दीनी । किउ करि कंन्या उसि ने लीनी ॥
तव नृप ने मुख वचनु उचारा । सुण हो सुरपति बात हमारा ॥
वेदु कढचो तांसों निकसायो । जिनि शाल ग्राम प्रदक्षिरणा पाया
तिन प्रथिवी सकल प्रदक्षिरणा दीई । जिन शालग्राम प्रदक्षिरणा कीई ॥
तव सुरपति गृह अपुने आया । अति विस्माद महि ध्यानु लगाया
केतकि दिन ऐसे ही रह्या । तांहि व्योग वांका चितु दह्या ॥
करि वीचार ग्रहि बाहिर आया । गोत्तम के गृह सो हितु लाया ॥
तिस कंन्या भी हेतु वढायो । सुरपति सेती तनु मनु लायो ॥
सुरपति कह्यो कहो कवि आई । जो हमि तुम दोऊ कामु कमावौ ॥
तव कंन्या तिहि दीयो वताई । जिहि समे गोत्तमु वाहिर जाई ॥
अवि तुम अपने गृहि महि जावो । सांईदास मन नाह डुलावो ॥३९.

सुरपति कह्यो मै क्या जानो । कित विधि मै वहु समा पछानो ॥
तूं मौ को येहु देहु बताई । किह समे गौत्तमु वाहिर जाई ॥
तिह ना चितु जो ताह वतावै । प्रीत बढ़ी फुन रह्यो न जावै ॥
तव ही अहल्या वचन उचारा । सुरपति को तव दीयो वीचारा ॥
जव पिछलो पहिर रात को रहे । तव गोत्तम ऋषु उठि करि वहे ॥
जव चतुर घटी निस औरु विहावै । तव संध्या कर्ने को जावै ॥
सुरपति वाति हृदे ठहिराई । ग्रहि अपने माहि बैठो आई ॥
दिनु वीत्या होई जब रैना । उडिगरण प्रगटि भए प्रगटेना ॥
सुरपतु कहे कवि रैनि विहावै । गोत्तमु संध्या को उठि धावै ॥
मै तहा जाइ करि कामु कमावो । सांईदास मन इछि पुजावो ॥४०.

रजनी घटी समा वहु आया । गोत्तमु ग्रहि तजि के उठि धाया ॥
जैसे चोरु हिर्ति परि धन को । साधू हेर्ति जैसे मन कौ ॥

जैसे माली पुहिप हिराए। जैसे फंधकु मिर्गु फहाए॥
जैसे तपसी वन कौ धावै। जैसे मिर्गा नाद उर्भाए॥
जैसे पावक अग्नि प्यासा। तैसे सुरपतु काम सुवासा॥
विधि को संग लेकरि उठि धायो। तति क्षिण ऋषि के द्वारे आयो॥
विधि ने भूम दिस को वपु लीना। अपुने मुष ते भाष कीना॥
रैन गई जागो रे प्रानी। भजु ले हो तुम सारंग पानी॥
गोत्तमु ऋषि जब ते सुण पायो। सुरतवानि भौ चित महि आयो॥
समा भयो संध्या कौ जावौ। हरि को जाइ करि भजनु कमावौ
गोत्तमि पग बाहिर ग्रहि दीने। सुरपति पग अंतरि तिहि कीनै॥
जाइ प्रजंक ताहि परि परिआ। चाहति है तासों संगु करिआ॥
गोत्तम के हृदे महि कछु आया। संध्या त्याग करे उठि धाया॥
रैन अधिक है मेरे भाई। मोह दगा दीनो किसे आई॥
धौल्ह आई विधि के सरि मारी। ताहि लील लागो तत कारी॥
इनि दोनो ने ताक चढ़ाए। गोतम आइ कपाट हिलाए॥
मुष ते ऋषि ने वचन उचारा। सुरपति सुण लीने ततकारा॥
अहल्या सौं कह्यो मोह छपावो। जहा जानौ तहां मोह वैठावो॥
ऋषि आयो उपज्यो मन त्रासा। सांईदास वुरी काम प्यासा॥४१

तव अहल्या कह्यो ठौर नि कोई। जहा दुराइ रषौ मै तोही॥
इसी प्रजंग तले छपि रहहो। मुखो न बोलो स्वासु घटि वहुहो॥
प्रजंक तले सुरपति को डारा। पाछे आइ कपाटु उघारा॥
गोत्तम ऋषु गृहि महि आयो। आइ प्रजंक ऊपरि ठहिरावो॥
वनिता को ऋषि पूछन कीना। कौन स्युं वचनु उचारे लीना॥
एह वाति मोह देहु वताई। जो अवि मै तुझै आषि सुणाई॥
तां पै मिथ्या कह्यो न जाई। गोत्तम ऋषु पूर्न ब्रह्म ताई॥
तवी अहल्या वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्राण अधारा॥
हमि मंजार सों वात चलाई। हे ऋषि पूर्न मोह सहाई॥
गोत्तम ऋषु विधि जानणि हारा। मुख ते सुणि करि वचनु उचारा॥
हे पातक पातक अधिकाई। प्रगटि होहु क्या देहि छपाई॥
हे पातक मोह आगै आवौ। सांईदास किउ देह छपावौ॥४२

तव सुरपति आगे चलि आया। गोत्तम ऋषि पै आइ ठहिराया॥
गोत्तम ऋषि सुरपति सों भाषा। कौनु कर्मु कीयो पातक आषा॥
भग भोग कार्ण ईहा आया। सहस्र भग मै तुझै लगाया॥
एही श्रापु मै तुझ को दीआ। जो तै औगुण मेरा कीआ॥
तव सुरपति कह्यो कवि मोह होवे। इहि सहस्र भग कवि मोह षौवे॥
ऋषु अगस्तु तोह स्रापु निवारे। हरि किर्पा वहु तुमहि उवारे॥
तत्काल सहस्र भग फिरि होई। सुरपति मन माहे वहु रोए॥
जैसा कीयो तैसा मोह पायो। औगुण कीयो ओगुण हरि लायो॥
सुरपति ग्रहि तजि बाहिर गया। जाइ स्वेत सिंद्ध वास लिया॥
जैसा करै तैसा कोई पावै। विनु कीए कछु निकटि न आवै॥
वेद पुरान सभ भाष सुणाही। रे जन लेहु समझि मन माही॥
कामु त्याग होवो निहकामा। सांईदास पूर्न प्रभ रामा॥४३

अमर सकल प्रभ पाहि पुकारे। हे प्रभ तीन भवन को धारे॥
सुगुरु कहू भोरि उठि धायो। दो दिन वीते पुर न आयो॥
पुर का काजु प्रभ कौनु कराए। इहि प्रयोग पर्जा दुःख पाए॥
तोहि विनु विर्था कौनु मिटावै। हमिरि द्रिष्ट औरु नही पावै॥
प्रभ द्वादस ऋषि लीए बुलाए। ताहि कह्यो सुणि हो मेरे भाई॥
मघिवा गुप्त भयो क्या कीजै। तिह पुर को राजु कवन को दीजै॥
ऐसो द्रिष्ट औरु नही आवै। मघिवापुर को राजु करावै॥
तिह विनु सुर सकले उकिलाने। पर्जा धीर्जु नाही आने॥
गर्ग पराशुर और जदकना। अगस्त धूमि ऋषि गोबिंद गणा॥
गोत्तमु नार्द और बस्वासुर। पीलादिपरु जागे बाछहि निसबासर
कीलादि तुष्ट द्वादस माहे। नाम संपूर्ण भये इताहे॥
आज्ञा ले हरि की उठि धाए। मघिवा जोहनि को चितु लाए॥
प्रिथमि वना महि वहु आए। पात पात तरिवरि निर्षाए॥
तांते मघिवा प्रगटि नि होया। तिह विस्वास हृदे महि होया॥
मतु त्रिण मध्य मघिवा होइ भाई। हमिह न देष्या सुर्ति भुलाई॥
त्रिण त्रिण करि कहा सोधहि भाई। हमि पहि इहि विधि करिनि जाई॥
फूकि नारि वनि सकल जलाए। भस्मि भए वन वहु अधिकाए॥

मघिवा प्रगटि भयो ना वा ते। अति संचरु उपज्यो मन तांते ॥
द्वादस मुनि मन महि बिस्माए। सांईदास हृदे संचरु आए ॥४४

गोमती कहूं कोई कहूं धायो। मघिवा जोहनि चितु लुभायो ॥
अगस्त ऋषीवर ने क्या कीआ। तत्क्षिण सेत के निकटि पगु दीआ ॥
सेत को तत्क्षिण लीयो अचाई। मघिवा प्रगटि भयो तव आई ॥
निर्षि अगस्ति को मनु सुकचायो। सीस तले कीउो द्रिग ना लायो ॥
अमरो प्रह्न कीयो रिषि पाही। वालमीक तुम त्रिभुवन सांई ॥
अगस्त सेतु काहे अचि लीना। इहि कार्ण काहे तिह कीना ॥
हरि किर्पा मह एहु वतावो। हमिरे मन का भर्मु हिरावो ॥
ऋषि कह्यो भलो प्रश्न कियो भाई। भली वात तुमरे मन आई ॥
अगस्त पुरातम देह चितारा। तिहि प्रयोग अचियो दधु सारा ॥
अमरो फिरि कह्यो रिषि ताही। कौनु वैरु पूर्व चित आई ॥
सकल ब्रितंतु प्रभ हमिह सुनावो। किर्पा धार हृदे इहि ल्यावो ॥
वालमीक तिन कौ प्रतु दीनां। मुख ते वचनु तिने इहि कीना ॥
श्रवण धारि सुण हो मेरे भाई। पूर्व जन्म की कथा हीयो वताई ॥
टेटूही षग नाम कहावै। सोई अगस्त ऋषु वेदु वतावै ॥
तांके सुत दधि खडे कढाई। षग के मन माहे बुरी आई ॥
हृदे क्रोधु कीनो अधिकाई। चाहित मन करि सिंध सुकाई ॥
चुंच भरे जलु वाहिर डारे। सिंध सुकावन को चितु धारे ॥
ऐसे वचन नार्द ऋषि आए। नार्द षग सौ वखिन उचिराए ॥
हे टेटूही कहा करावै। जलु भरि चुंच वाहिर क्युं पावै ॥
कहा आई तुमरे मन माही। मोहि कहो तूं कहा कराही ॥
तव षग ने ऋषि को प्रतु दीना। हे नार्द मै इहि मनि लीना ॥
चाहित हो मैं सिंध्य सुकावो। पलु छिन रंचकि मूल नि लावो ॥
नार्द फिर कह्यो षग ताई। किहि प्रयोग तुम मनि इहि आई ॥
टेटूही तिह आष सुणाई। सुण हो नार्द ऋषि अधिकाई ॥
मम सुत सिंध खडे दुराई। तिह प्रयोग मम मनि इहि आई ॥
नार्द फिरि तांको सुनिवायो। हे षग कौन जाति चितु लायो ॥
तुमि से कहा सुकाउो जाई। सिंध प्रवाह चले अधिकाई ॥

जब षग नें इहि विधि सुण पाई। नार्द सों फिरि कह्यो सुणाई ।।
कैसे वैरु लेवौं सुत केरा। करि किर्पा तू सुणु प्रभ मेरा ।।
जित विधि वैरु सुत कौं मै पाई। सोई कहो मै तिसे कराई ।।
सुत वियोग मैं बहु दुःख पायो। मो सो दधि इहि वैरु कमायो ।।
नार्द षग ताई प्रतु दीना। तांसो ऐसो बचनु मुख कीना ।।
षग वपु तजि मानस वपु पायो। राम भजनि तव अधिक करावौ ।।
जो चाहो तुम से तव होई। येहि बाति औरु नाही कोई ।।
नार्द ऋषि षग सो समिझायो। सांईदास विधि प्रगटि सुनायो ।।४५

खग ऋषि वचि मन मांह ठहिरायो। राम भक्ति सो वहु हितु लायो
खग की देह तजी ततकारा। मानस वपु पायो संसारा ।।
उलिट गर्भ से जन्म आइ पायो। अगस्त मुनि तिहि नामु सुनायो ।।
अगस्तु नाम कर्न तिह कीआ। वहु विपो को भोजनु दीआ ।।
अगस्त नामु तांको रषिवायो। पूत हेत करि वडो करायो ।।
भयो अधिक हरि ध्यानु लगायो। पूर्व जन्म ब्रिथा चित आयो ।।
इहि विधि सिंध को अचिवायो। मघिवा कार्य सो चितु लायो ।।
जव देवो ने इहि प्रतु पाया। मन को संचरु सकल हिराया ।।
सत्य सत्य करि के हृदे आना। निश्चय एही विधि कर जाना ।।
कह्यो अगस्ति मघिवा के ताई। रे मति मूढि कहा सुकचाई ।।
तै निहार देष मोह ओरा। हृदे माहि धरि बचु मोरा ।।
मघिवा ने तव कह्यो पुकारे। हे ऋषि पूर्न प्रान अधारे ।।
सहस्र दुःख मोको आइ लागे। कैसे देषौ जाइ न त्यागे ।।
तव अगस्त कह्यो सुण हों भाई। मोह दर्सनु करहो चितु लाई ।।
ओर दुःख सभ तुमि मिटि जाई। पांच दुःख पाछे रहे आई ।।
पांच दुःख तुमि रामु निवारै। इहि करुणा प्रभ तुमि परि धारै ।।
अमिरो प्रश्नु वहुड फिरि कीना। हे ऋषि हमि मन संचरु लीना ।।
पांच दुःख तिह काह नि टारे। अगस्त काह विधि मन धारे ।।
इतिनी शक्ति नाहसी वांकौ। पांच दुःख राषो जो तांकौ ।।
वाल्मीक वहुरो प्रतु दीना। इहि कार्ण ऋषि ऐसे कीना ।।
प्रभु जाने इसि ले दुरायो। दुःख कार्ण सुरपतु ना आयो ।।

इहि प्रयोग ऋषु दुःख ना टारे। इहि विर्था इसु मन महि धारे॥
जव देवौ ने इह प्रतु पायो। मन को संचरु सकल हिरयो॥
निश्चय एहि विधि मन महि धारी। सांईदास सुष सिंधु मुरारी॥४६

ऋषि अगस्ति कह्यो सुरपति ताई। रे सुरपति किउ मन सुकचाई॥
तैं निहारु देषि मोह ओरा। मन महि संचरु आण नि भोरा॥
सुरपति ऋष को ओरि तकायो। पांच दुःख विनु सकल हिरायो॥
ऋषु मघिवा को लेकर धायो। तव मघवे तिह वचु उचिरायो॥
पांच दु.ख रहे हमिरे ताई। कैसे पुर जाइ राजु कराई॥
दुःख सहित पुर जाण न पावौं। तांते भला ईहा ठहिरावौ॥
मै देषौ आनि राजु करावै। वहु भी मौ पहि सह्यो न जावे ;।
ऋषि अगस्ति तांकौ प्रतु दीना। है मघिवा तै क्या मनि लीना॥
तोहि पुर राज शक्त को करई। जो तुमरे पुर महि पगु धरई॥
जव लगि प्रांन हमिरे घटि मांही। तोहि पुर मैं पग औरु न जाही॥
ऋषु वच करि सुरपति ले आयो। पहिले ग्रहि महि आण ठहिरायो॥
जव लगि दुःख निवर्त्तु न होई। कैसे जावै मघिवापुर कोई॥
अमरो फिरि कह्यो प्रभताई। हे कौलापति त्रिभवन सांई॥
अधकि भयो सुरपतु ना आयो। सकल सुरो ने वहु दुःख पायो॥
पुर को राजु प्रभ कौनु कराए। इहि प्रयोग अमरो दुःख पाए॥
वार वार प्रभ कहे सुनाई। सांईदास तुम सदा सहाई॥४७

प्रभ जब अमरो सों सुण पायो। तव ही ऐसे वचनु चरायो॥
नघि राजे कौ जाइ सुणावौ। हमिरो वचु मन महि ठहिरावो॥
मघिवा पुर को राज करावै। सकल सुरो को सुख उपजावै॥
अमरि सुनति प्रभु वचु उठि धाए। तत्क्षिण नघि राजे पहि आए॥
प्रभ वो वचु तिह भाष सुणायो। नघि राजे सुण करि उचिरायो॥
एक सहस्र घटि यज्ञु कीना। एहि प्रतज्ञा मै मनि लीना॥
लखु यज्ञु जव पूर्ण करो भाई। पाछे मघिवा पुरि चलो धाई॥
एक सहस्र यज्ञ अवरु करावौ। तव पाछे मघिवा पुर जावौ॥
अवि तो हमिरो वलु न वसांई। मघिवापुर जावों मेरे भाई॥
एहि बेनती मोहि जाइ सुणावो। दीन वचन कहि करि समिभावो॥

वहुरी सुरि आए प्रभ पाहे। नृप नघि कह्यो सो कहत सुनाहे ।।
लखु यज्ञ मैं प्रतज्ञा धारी। मन अपुने मै लीउो वीचारी ।।
रह्यो सहस्र लख यज्ञ के माही। तुम किर्पा पूर्ण होइ आही ।।
जब पूर्ण होइ मघिवापुर आवो। तोहि आज्ञा प्रभ राजु करावो ।।
जोआज्ञातुमिरी होइसों करिहौ। ले मस्तिक ऊपरि प्रभ धरहो ।।
तव प्रभ अमिरो कौ प्रतु दीना। नगि राजे ने इहु वचु कीना ।।
नृप नघि को तुमि जाइ सुनावौ। मोह वचनु तांसौ समिझावौ ।।
द्वादश मनु को भोजनु देवौ। मानो सहस्र यज्ञ पूर्ण करि लेवौ ।।
रथि अजीत परि चढि पुर आवौ। मघिवा पुर को राजु करेवौ ।।
अमर फेरि फिर नृप पै आए। सभ दिधांत तिहि आष सुनाए ।।
द्वादश मुन को लेहु बुलाई। भोजनु तिहि देवौ चितु लाई ।।
सहस्र यज्ञ तुम पूर्ण होई। तुम बांछा फिरि रहे नि कोई ।।
चढि अजीत रथि पुर को धावो। मघिवा पुर चलि राजु करावो ।।
जव रथि अजीत कोसुणआ नामा। भयो भै चक्रित तजि विस्रामा ।।
रथु अजीत कहा सें ल्यावों। तां परि चढि मघिवापुर जावों ।।
अमरो कौ नघि ने प्रतु दीना। हे अमरो तुम क्या वचु कीना ।।
रथ अजीत कहो कहा ल्यावो। कौन ठौर ऐसो रथु पावो ।।
तुमि वहुरो जावहो प्रभ पाही। मम वेनती कर होवे गजाई ।।
रथ अजीत प्रभ देहु वताई। ताहि चढो पुर को चलो धाई ।।
अमर सुनत इहि प्रतु उठि धाए। सांईदास प्रभ पहि बेग आए ।।४८

नघि नृप यग्य अरंभ कीयो भाई। द्वादश मुनि को लीउो बुलाई ।।
कह्यो क्रिपा करि भोजनु पावो। मम यज्ञ पूर्ण तुमहि करावो ।।
तुम प्रसाद मघिवापुर पावो। तुमि प्रसाद जस हर को गावो ।।
हरि आज्ञा मै इहि उचिरायो। तुमि सो ऐसौ सब्द सुनायो ।।
एकादस मुनि मन महि आनी। जो नघि नृप ने मुषो वषानी ।।
अगस्त हृदे कीनो वीचारा। मै मघिवा ग्रहि आए बहारा ।।
जो तिह पुर को इहु नृपु होई। मघिवा की फिरि गति ना कोई ।।
मैं तासौ वचनु कर्के आना। अपुने ग्रहि माहे ठहिराना ।।
मै कैसो वचु अपना हारो। क्या मुख ले जगि मांहि निकारो ।।

मोको स्रापु इसि देव न होई। जिति विधि श्रापु होवै करो सोई ॥
जो इसि के ग्रहि भोजनु पावौ। वहुरो स्रापु कैसे इसि लावौ ॥
हृदे बीचार इहि नृप प्रतु दीना। मन हृदे इही मान करि लीना ॥
मैं भोजनु तुमि ग्रहि ना पावौ। इहि विधि मन माहे ठहिरावौ ॥
अैसे हमिरे मन महि आई। नृप वहुरो फिरि प्रश्न चलायो ॥
कवन अवज्ञा हमहि करायो ॥
मम ग्रहि भोजनु किउ ना पावो। कवन दोसु प्रभ हमहि लगावो ॥
जव नृप ऐसे वेनती ठांनी। अगस्त दीयो प्रतु ब्रह्म ग्यानी ॥
तुमि को दोसु नाह है काई। हमिरे मन ऐसी ही आई ॥
जिहि किए आत्म सुष पाए। सांईदास जन सोई कराए ॥४६

नृप नघि ने नीको यज्ञ कीनो। एकादस मुनि को भोजनु दीना ॥
अगस्त ताहि ग्रहि कछू न पायो। कैसे मिटै विधि वनति वनायो ॥
अमरौ जाइ प्रभ पाइ सुणाया। जो नघि नृप ने ताहि वताया ॥
रथु अजीत प्रभ देहु वताई। जासि परि चढ़ि आवौ वेग धाई ॥
प्रभ इहि अमरो को प्रतु दीना। हे अमरो इहि वचु नृप कीना ॥
द्वादस मुनि रथि के संग जोरे। ता परि चढि आवो हौरे हौरे ॥
वही अजीत रथु अवर न काई। सकल व्रितांतु प्रभ दीयो वताई ॥
अमर सुनति इहि नृप पहि आए। प्रभ वच सकले आइ सुणाए।
नघि नृप ने तव ही क्या कीआ। द्वादस मुनि ताई सदि लीआ ॥
करि जोरे तिहि कह्यो सुणाई। इहि आज्ञा प्रभ को मोह आई ॥
द्वादस मुनि रथ साथ जुडावो। तापरि चढि मघवापुर आवो ॥
जो आज्ञा तुम होइ सो करहो। तुमरो वचु मस्तक परि धरहो ॥
एकादश मुनि सुण करि ठहिरावो। भलो भयो प्रभ आज्ञा आयो ॥
हमि को रथि के सहित जुडावो। अति अनंद मघवापुर जावो ॥
अगस्त मन महि लीउो वीचारी। भली भई अति वात हमारी ॥
अवि मैं स्रापु देवौ इसि ताई। मघवा काजु मन करि पूजाई ॥
विनु ौगण श्रापु दीयो न जाई। सोच लीयो मन विधि ठहराई ॥
एक प्रतज्ञा इसे करावौं। जो न करे तव श्रापु लगावो ॥
जव लगि तुम मघिवापुर जावो। तव लगि मुष कछु न उचिरावो ॥

जो उचिरे कछु स्रापु लगावौं। एही प्रतज्ञा ताहि करावो ।।
मनि ठटु बांधि कह्यो नृप ताई। सुणि हो नृप नघि तुम मन माही ।।
प्रभ आज्ञा हमि मन ठहिराई। रथि को जोड लेहु हमि भाई ।।
एक प्रतज्ञा तुमहि करावो। वाही निश्चे मन ठहिरावो ।।
जव लगि पहुचति तूं पुर माही। तव लगि मुखि वचु ना उचिराही ।।
जो वोले मुखों स्रापु लगावौ। एहि प्रतज्ञा तुमहि करावौ ।।
नृप इहि सुण प्रतज्ञा कीनी। सांईदास निश्चय मनि लीनी ।।५०

रथि सौ द्वादश मुनी जुडाए। अति अनंदु मन महि उपजाए ।।
मघिवापुर को चल्यो धाई सुपु। उपज्यो भउ गियो हताई ।।
जव मघवापुर के निकटि आए। वजति वजंत्र अति अधिकाए ।।
नीको पुरु अमरो वणवायो। निर्षिति द्रिग सुख भयो अधिकायो ।।
नृप नघि सब्द वजंत्र सुण पाए। आतुर हौ पुर को चल्यो धाए ।।
तिहि मन महि वहु भयो हुलासा। अधिक भई पुर देषनि प्यासा ।।
पर्तज्ञा तिनि दीई विसारे। मुख ते वचन कह्यो तत्कारे ।।
सर्पि सर्पि चले हो मेरे भाई। वेग माहि देषों पुर जाई ।।
जव नृप ने इहि वचनु उचारा। अगस्त ताहि ले धर्न परि मारा ।।
तव ही स्रापु दीयो नृप ताई। रे पातक सर्पि की योन पाई ।।
हमिरो वचु तैने भंग कीआ। तौ मै स्रापु इही तुझै दीआ ।।
नृप नघि तव ही कह्यो पुकारा। हे अगस्त ऋषि प्रान अधारा ।।
तुमरो स्रापु अन्यथा न जाई। जो तुम वचनु करो होइ साई ।।
कवि गति होइ हमारी भाई। एह किर्पा कर देहु वताई ।।
तव अगस्त मुष वचन उचारे। नृप नघि कौं न देउो वीचारे ।।
जव पांडो सुत वन महि आवै। कैरव तिह वनवासु दिवावै ।।
युधिष्ठुरु तुम दर्सनु देवै। तुमरो स्रापु वही हिर लेवै ।।
तव तुमरी हौवै कल्याना। ऐसे वचन अगस्त वषाना ।।
नृप वसुधरि को देहु वनाया। एक देहि महि आइ करि ठहिरायो
वन भीतर वाही दिहि भाई। वसुधर को वपु कीयो अधिकाई ।।
ऋषि को वचु अन्यथा ना जावै। भजनु करै हरि नामु ध्यावै ।।
साधो जन आग्या जो होई। सांईदास तुम करहो सोई ।।५१

अमर गए मिल सभ हरि पाही। मुख ते वचनु उचार सुणाही ॥
नघि को स्रापु अगस्त ने दीना। ताहि स्रापु वसुधर वहु कीना ॥
सुगुरु गुप्ति भयो ना आयो। अमरो ने वहुता दुःख पायो ॥
मघवा पुर को राजु करावै। पर्जा को सो सुष दिवावै ॥
अमर कौ प्रभ ने प्रतु दीनां। नघ नृप वसु धरि को वपु लीना ॥
अगस्त ऋषीश्वर लेहो वुलाई। मोह कह्यो सुणहो मेरे भाई ॥
अमर सुनति इहि ऋषि पै आए। छिन मात्र तिन मूल नि लाए ॥
ऋषि कौ कह्यो चलो हरि पाही। तुमको हरि जी आप वुलाही ॥
ऋषु तत छिन तांके संग धाया। श्री कौलापति पाहे आया ॥
प्रभ ऋषि सों तव कह्यो सुणाई। सुण हो ऋषि पूर्ण रिषि नाई ॥
नघि को स्रापु देइ वसुधरु कीनो। भली वाति तै मन महि लीना ॥
मघिवा गुप्त भयो कहू ठौरा। ताहि बियोग अमर भए वौरा ॥
मघिवा पुर को राजु कराए। तास प्रयोग सुर उकिलाए ॥
कह्यो अगस्ति सुनो प्रभ मेरे। विनती भाषो आगे तेरो ॥
मघिवा को मै हुण ले आयो। तासि आण ग्रहि महि ठहिरायो ॥
प्रभ कह्या तांको ले आयो। अपुने ग्रहि महि काह वहावो ॥
तव अगस्त फिरि वचन उचारे। हे पूर्न प्रभ प्रान अधारे ॥
पांच दुःख मघवा के ताई। लागे है दूर न जाई ॥
सुकचित मघिवा आवै नाही। दुःख सहित पुर जाण न पाही ॥
ताहि दुःख हिरहो वहु आवै। मघिवा सुर को राजु करावै ॥
प्रभ कह्यो तिह दुःख निवारे। मुख अपने ते कह्यो पुकारे ॥
पांच दुःख पांच को दीए। मघिवा के तनि से दूरि कीए ॥
कह्यो अगस्त पांच को कोई। मोह वताइ देवो प्रभ सोई ॥
एक एक को नामु वतावो। हमिरे मन ते भ्राति चुकावो ॥
प्रभ ऋषि को कह्यो सुण लीजै। उौर ठौरि कहू चितु न दीजै ॥
एक दुःख दारा को लायो। एक बनासती को उर्भायो ॥
एक अंभ ताई मैं दीना। एकु वसंतर प्राप्त कीना ॥
एकु वसुधा को दीना भाई। पांचो नाम सुनो मन लाई ॥
ऋषि फिर प्रश्नु कीयो हरि पाहे। संचरु उपज्यो मोह मनि माहे ॥
दाराको को दुःख लगायो। वनासपती को कौनु उर्भायौ ॥

अंभि को कौनु दु:ख प्रभ लागै । बसंत दु:ख जारे सभु भागै ।।
वसुधा को कौनु उर्भायो । इहि प्रयोग संचरु मन आयो ।।
इहु कर्णाकर देहु बताई । मोह मन भ्रांत हिरि लेह हरि राई
प्रभ फिरि प्रतु दीनो ऋषताई । सुगाहु अगस्त हितु चितु वहु लाई ।।
रितवंती दारा कौं कीना । छड्दि वनासपति कौ मै दीना ।।
अंभ उपर सिबाल वनायो । धूम बसंतर को उपिजायो ।।
वसुधाको [१] कीना । इहि दु:ख वसुधा कौ दीना ।।
मघिवा के हरि दु:ख हिराए । इनि पांचो ताई हरि लाए ।।
मघिवा कौ आगस्तु ल्यायो । प्रभ के आगे आण पलायो ।।
मघवा ने डंडौत कराई । करि डंडौत पुर कौं चल्यौ धाई ।।
महा अधिक सुख मघवा पायौ । दु:ख दर्द सभि ही विसारायो ।।
इहि पांचो जवि दु:ख गिरिसाए । ततक्षिण प्रभ पाहे इहि आए ।।
हे प्रभ कौरण दुख हमि कीना । जो तैं हमि ताई इहि दीना ।।
कवन वेद इहि बात बनाई । विन औगरण कीए लागे आई ।।
प्रभ इहि सुण रह्यो विस्माई । विस्म होइ मुख वचन सुनाई ।।
तुमरे दु:ख दूर मै करहौं । मनकर ठौर सकल के हिरहौं ।।
प्रिथमे दारा कौ प्रतु दीना । तोह दु:खि मै तांकौ दीना ।।
रितवंती होवे जबि नारी । नरु आवै परि सेज तुमारी ।।
तास समै तुमरो संगु करही । तोह दु:ख हरि वांको चढिही ।।
वहुरो वनासपती प्रतु दीआ । तोहि दु:ख दूर मै कीआ ।।
यजधर ले लकड़ी जु कटावै । दांतनु लेकरि मुख हि करावै ।।
तुमरो दु:ख तास को लायो । तुमरो दु:ख हमि दूरि करायौ ।।
करि करोरी तुमरे महि डारे । तोहि दु:खु मिट जाइ तत्कारे ।।
तांको जाइ ग्रसे मेरे भाई । अंभ को इहि विधि दीई बताई ।।
पावक कौं प्रभ कह्यो सुणाई । तुमरो दु:ख भी विनसे भाई ।।
विनु अहूती दे भोजनु पावै । तोह दु:ख तांको ग्रसावै ।।
इहि आज्ञा पावक को दीना । पावक ले मस्तिक पर कीनी ।।

---

१. मूल ग्रंथ में इसी प्रकार [रिक्त स्थान छूटा है। प्रसंग से भी जाना नहीं जा सकता क्या शब्द हो सकता है।

वहुरो वसुधा निकटि बुलाई । तांहि कह्यो प्रभ जी समिझाई ।।
बिंदु मथन करि तुम परि डारे । तांकौं दु:ख लागै तत्कारै ।।
तोह दु:ख छिन महि मिटि जाई । तासि पुर्ब को ग्रासे ग्राई ।।
ग्रैसे प्रभ सभ थिर थिर ग्रायो । सभ के मन को भ्राति हिरायो ।।
सुगर निश्चल ग्रासुन कीग्रा । महा ग्रधिक सुष मन महि लीग्रा ।।
ताल मृदंग वजै ग्रधिकाई । मोहिनीग्रा मिलि निर्त कराई ।।
सभ ग्रमरो कीनो जैकार । जै जै राम पूर्ण निरंकारा ।।
ग्रहि ग्रहि ग्रमरौं भई बधाई । सुरपतु ग्रायो बहु सुपु पाई ।।
धन्य साध जो हर गुण गावहि । धन्य साथ जो नाम ध्यावहि ।।
धन्य साध निर्मों पद पाया । धन्य साध जिन्हा हरि गुण गाया ।।
धन्य साध निर्भो पद वासा । धन्य साध जिन्हा हरि की प्यासा ।।
धन्य साध जिन्हा ग्रल्प धियाया । धन्य साध पूर्न पद पाया ।।
मघिवा कौ हरि श्रापु मिटायो । सांईदास कौ नामु जपायो ।।५२

पाछे ऋषि वनता सो भाषा । इहि कर्नु काह कीयो ग्राषा ।।
तब ग्रहल्या कह्यो क्या मै ग्राषौ । कवन दु:ख ग्रवगुण मै भाषो ।।
मोसे ग्रवगुण कछू न होयो । कामु बीजु तिह संग न बोयो ।।
तब गौतम ऋषि वचनु उचारा । हे वनिता क्या कहे पुकारा ।।
एही श्रापु दीयो तुझि ताई । सिला होइ परु मग मंझाई ।।
तब ऋषि वनिता वचन उचारा । हे प्रभ कवि गति होइ हमारा ।।
तब ऋषि कह्यो राम ग्रवतारा । होवै तुमरो तब निस्तारा ।।
सिला भई ऋषि दीनों स्रांपा । इनि ने ग्रौगुण कीनो ग्रापा ।।
सोई शिला है रघुराई । ग्रबि इसि ग्रौध निकटि प्रभ ग्राई ।।
तव रघुपति मन महि ठहिराई । गुप्त वाति मै प्रगटि सुनाई ।।
इसि कौ मैं क्रितार्थ करहों । भक्ति को वचनु हृदे महि धरहों ।।
पग रजि प्रभ जी ताहि लगाई । सुर रूप होइ गगन सिधाई ।।
तिहि समे प्रभ की उस्तित ग्राषी । ग्रनेक रंग रस्ना ने भाषी ।।
जो तिहि उस्तित करो वीचारा । एती रस्ना कहा हमारा ।।
तिसे क्रितार्थ करि हरि धाए । चले चले सलिता तटि ग्राए ।।
झीवर को रघुराइ पुकारा । रे झीवर सुण कहा हमारा ।।

नौका ल्यावौ हमिह चढावौ । इहि सलिता तें हमहि लंघावौ ।।
जव वनिता ऋषिकौ धूडि छुहाई । धूरि छुहित वैकुंठ सिधाई ।।
भीवरि एहि विधि नैन निहारी । उही वाति हृदे महि धारी ।।
मतु मोहि नौका भी उडि जावै । मोकौ अपुने सहित उडावै ।।
मम कुटंब सभ पाछे रहिई । महा अधिक दु:षु मन महि सहई ।।
भीवर प्रभ सों वचन उचारा । सुणु वल जावां प्रान अधारा ।।
तुम पग रज वज्र उडायो । उड्यो वज्र गग कों धायो ।।
मतु मोह नौका भी उडि जाई । मोहि कुटंबु विलापु कराई ।।
नौका कौ मैं निकटि न ल्यावौ । मन माहे इहि विधि सुकिचावौ ।।
रघिपति भीवर सो तव आषा । हे भीवर क्या मन महि राषा ।।
उह बज्रि जो तुम द्रिष्ट आया । मोहपग रजि छुहि गगनि सिधाया
गोत्तम ऋषि की भार्जा वाही । स्रापु पाइ वज्र तन पाही ।।
तांको स्रापु निवार्ण कीना । वज्र ते सुर को बपु लीना ।।
इहि प्रयोग वहु गगनि सिधाया । तुभ्कि चिंता क्या मन महि ल्याया
चिंता त्याग नौका ले आवौ । सांईदास को पार लंघावो ।।५३

तव भीवर कह्यो हे प्रभ स्वामी । सकल वाति तुम अंतरजामी ।।
पूर्व जन्म मोह वेडी काहू । भार्या होइ स्रापु पायो ताहू ।।
जो इहि उडि जावे क्या करिहों । कौन ठौर प्रभ मै चितु धरहों ।।
वहुरो रघिपति ताहि सुनायो । हे भीवर क्या भर्म भुलायो ।।
तोह नौका कहू उडि न जावै । तूं काहे मन महि विस्मावै ।।
तव भीवर कह्यो सुणु रघुनाथ । सकल कुटंब ल्यावो साथ ।।
तांकौं इसि महि आण वहावौ । पाछे नौका तुम पै ल्यावो ।।
तुम अपुने पग धोइ कराही । चर्णाम्रतु देवौं हमि ताई ।।
जो उडि जावै सभ संग होई । तव हमि दु:ख व्यापे नही कोई ।।
रघिपति कह्या जावो ले आवो । नौका परि तुमि आण चढावो ।।
भीवर जाइ कुटंबु ल्यायो । नौका महि तिन आइ बहायो ।।
तिहि संग ले रघुपति ओर धायो । नौका आण करि तीर लगायो ।।
श्री रघुपति के चर्न पषारे । चर्णाम्रतु मस्तिक ले धारे ।।
पाछे नौका पुरि आण चढायो । तव भीवर ने पार लंघायो ।।

तीर उतार दोऊ करि जोरे। इहि विधि सुणु पूर्न प्रभ मोरे॥
सदा सहाई प्रभ तुम हमि होई। तुमि विनु अवरु न हमिरो कोई॥
तब रघुपति भीवर सो भाषा। सांईदास चितु ठवर हि राषा॥५४

तव रघुपति जी आगे धाए। चले चले नगरी महि आए॥
विश्वमित्र ग्रहे माहे गए। अति अनंद मंगल वहु भए॥
ऋषि गृहि जा करि यग्य रचाया। असुर अधिक यज्ञ कर्न्या आया॥
चाहित हैं यज्ञ कर्न न देवहि। अति विरोधु तव असुर करेवहि॥
राम धनष स्यों वाण संभारे। युद्ध कीयो सभ दानव मारे॥
लक्ष्मण वीरु सहित प्रभ लीए। सकले असुर संघार्ण कीए॥
वहुते असुर हने रघुराई। मरीच आदि सर संग उडाई॥
ऋषिको यज्ञ प्रभ पूर्ण कीना। सकल असुर प्रभ ने हनि लीना॥
तव कह्यो ऋषि आज्ञा देवौ। अवि तुमि किर्पा हमिहि करेवौ॥
जावौ नगर अजोध्या माही। दशरथ पिता हमारो चाही॥
तव ही ऋषि ने वाति चलाई। सुण हो राम लक्ष्मण दोऊ भाई॥
एकि वात मै तुमहि सुनावौ। अति अनंद मंगल वहु गावौ॥
तुम श्रवण धरि सुण करि लेवहु। और ओर कहूं चितु न देवहु॥
मेरो कह्यो मन धरि लीजै। सांईदास कछु अवर न कीजै॥५५

रघुपति कह्यो कहो पुकारे। हे ऋषि पूर्न प्रान हमारे॥
हमि श्रवण धर कर सुण लेवहि। और ओर कहू चित्तु न देवहि॥
तव ऋषि नें मुख बचन सुनायो। राम लक्षण सुनने चितु लायो॥
जन्क स्वुअंवर अधिक रचायो। नगर नगर के नृप सदायो॥
मम संग चलो तुमि ले जावौं। चलो तमासा तुमें दिषावौ॥
तव ही ऋषु उठियो उठि धाया। राम लषन को संग चलाया॥
मिथुला नगरी निकट तव आए। जहा जन्क आस्रम सुख छाए॥
तह अधिक फूली फुलवारी। श्री रघुपति वहु नैन निहारी॥
हे ऋषि जी आजु ईहा रहे। इसि फुलवारी महि सुख वहे॥
मेरो कह्यो मन धरि लेवौ। सांईदास फुनि सोई करेवौ॥५६

विश्वामित्र मन धरि इहि लीआ। जो रघुपति मुख ते वचु कीआ॥
भूपति अधिक आगे से आए। तहूं ठौर वहि भी ठहिराए॥

जानकी सहित सखीअनि ले धाई। तिस फलवारी महि चलि आई ॥
पट्ट करि सभ भूपति निर्खाए। ताहि चित्तु किसे नाहि लुभाए ॥
वहुरो राम लक्षन तिह देषै। नैन निहार रूप तिह पेषै ॥
लुब्ध परी हरि रूप पराहे। कीओ विचारु अपने मन माहे ॥
ऐसे होइ इहु वरु मै पावो। अपनो मनु चित्तु इसि संग लावो ॥
तिनहि निर्ष वहुरो उठि धाई। चली चली पिता ग्रह महि आई ॥
जन्क विदेही गृहि तजि आया। तिन भूपति महि आइ ठहिराया ॥
जन्क विदेही नेत्र निहारे। निर्षे रवि सस वीर प्यारे ॥
तिहि अति भूपति ऐसे दिष्टाए। जैसे रवि प्रकास तिमरु मिट जाए ॥
जव रवि गगन करे प्रकासा। दीपक जोत होइ जात विनासा ॥
जैसे दीपक जोत तिमरु मिट जाई। जैसे दिन समाहि ससि देइ दिषाई
तैसे दोऊ वीर आगे दिषलावहि। आनि भूपति ऐसे द्रिष्ट आवैहि ॥
जन्क कीयो हरि को नमस्कारा। करि नमिस्कार हृदे इह धारा ॥
कहा प्रतज्ञा मै मनि कीनी। कौनु वाति मन महि धरि लीनी ॥
जो मै पर्तज्ञा न कर्ता। जानकी ले इसि आगे धर्ता ॥
अवि प्रतज्ञा तजी न जाई। महा कठनि मोह वनी है आई ॥
इहि वालक कहा विडारे। तोरि धन्षु धर्नी परि डारे ॥
सांईदास संचरु क्या देवे। जिसे प्राप्ति होइ सो लेवे ॥५७

भूपति सभ सो जन्क पुकारा। सुनहो भूपति वात हमारा ॥
मोह प्रतज्ञा इह है कीनी। इहि प्रतज्ञा मन धरि लीनी ॥
जो भूपति इसि धन्षि को तोरे। वलु करि अपुना इसि को फोरे ॥
अपुनी दुहिता तांको देवो। आद्र भाव तिहि अधिक करेवो ॥
भूपति वात सुनी उठि धाए। चलति चलति धन्ष निकट आए ॥
एकु आइ कर धन्षु हलाए। वलु न लगे जो धन्षु उठाए ॥
एकु त्याग जाइ दूजा आवै। वलु करि अपुना धन्षु उठावै ॥
तांको भी वलु कछु न वसाए। लज्जा मान होइ त्यागे जाए ॥
एकु पगु पीछे दे इकु आगे। इक सन्मुख होवै इकि भागे ॥
ऐसी भांत भूपति सभ आए। वलु ना लागो सभी लजाए ॥

इहि वलु किस जो धनषु उठावै । ता संग वलु कहु कौन वसावै ।।
सभ नृप धन्षु त्याग करि दीग्रा । सांईदास रघुपति सुख लीग्रा ।।५८

रामचंद्र लक्ष्मण उठि धाए । दोऊ वीर धनष पै ग्राए ।।
तव ही जानकी नैन निहारे । मन ग्रंतर उनि एह वीचारे ।।
हे किर्पाल क्रिपा निधि स्वामी । सकल विर्था के ग्रंतरि जामी ।।
क्रिपा करो इह धन्षु उठावै । वेग विलम कछु मूल न लावै ।।
मोहि परापति इहि पतु होई । ग्रौरु न चाहिती हौं मै कोई ।।
सभ सषीग्रा ने इहि पुकारा । हे कौलापति प्रान ग्रधारा ।।
जानकी को पतु एही देवौ । हमिरो कह्यो चित्त धरि लेवौ ।।
जनकि भार्जा भी चितु धारा । हे धर्नी धर सकल भतारा ।।
तुम करुणा ग्रपुनी प्रभ करहो । ग्रपनो वलु इसि भुज महि धरहो ।।
तोह वल कर इसि धन्षु विडारे । तोह क्रिपा करि वलु को ग्रधिकारे ।।
जानकी को पतु एही होई । जानकी ग्रौरु चाहित नही कोई ।।
जब सभनो एहि वचन उचारे । सांईदास प्रभ ने हृदे धारे ।।५९

रामचंद मनि लीयो वीचारी । चिंता मग्न सकल है नारी ।।
ग्रपुनो रूपु कछु ग्रौरु दिषायो । जिन निर्ष्यो सोई विस्मायो ।।
तिमरु ही उजीग्रारा होया । श्री रघुपति जव प्रगटि षलोया ।।
जन्कि निर्ष मन चितवन कीनी । एहि वाति हृदे धरि लीनी ।।
इहि कछु रूपु ग्राछा देषावै । ग्रपुने वल करि इहि धन्षु उठावै ।।
कौन रूप मै इसहि वषानो । इसि का ग्रंतु कहा मै जानो ।।
रवि इहि ग्राप के रवि इसि छाया । पर्म पुर्ष कछु रूप दिषाया ।।
कहा वषानो सुंदरिताई । मम पै इहि विधि वर्न न जाई ।।
लोक कहे इह कहा उठावै । वलु इसि वालक कहा वसावै ।।
मिल मिल सभु मनि महि मुस्कावहि । एहि वालक कहा धन्षु उठावहि ।।
सभु देषनि कार्ण उठि धाए । निकटि धन्षि के ग्राइ ठहिराए ।।
लक्ष्मण सों हरि वचनु उचारा । सुण हो लक्ष्मण वीर हमारा ।।
तुमि जा धन्षि कों लेहु उठाई । मै ग्राज्ञा तुझि दीनी भाई ।।
तव लक्ष्मण प्रभ सौ इहि ग्राषा । करि जोरे मुष से इहि भाषा ।।

तुम किर्पा ते लेयो उठाई। क्या प्रभ एहि जो तुमहि सहाई॥
इहि मोह कामु नही तुम कामा। सांईदास पूर्न प्रभ रामा॥६०

तव रघुपति कह्यो भल आषा। इहि विधि तै जो मुष तै भाषा॥
अंतर ध्यान होइ तुम जावो। त्रैलोक को जाइ सुनावो॥
ओ रघुपति बल कर धन्षु तोरे। वल कर धन्षु ताई वहु फोरे॥
तांते शब्द होवै अधिकारा। र्डपिमान होवै संसारा॥
त्रैलोक कंप करि जावै। धन्षु तूटै जव शब्द उठावै॥
लक्ष्मण अंतर गति होइ धाए। त्रैलोक को जाइ सुनाए॥
श्री रामचंद जी धन्षु विडारे। तांते शब्द उठित तत्कारे॥
तुम मन माहे त्रासु न ल्यावो। हिर्षमान हो मंगल गावो॥
तव त्रैलोक देषनि को आए। ठौर ठौर परि आई ठहिराए॥
श्री रामचंद जी धन्षु उठायो। मानो त्रिण करि महि ठहिरायो॥
करि सों खिच्यो धन्षु विडार्यो। तांते शब्द उठयो अधिकार्यो॥
तव सभ लोक भै चक्रि रहयो। सांईदास तव वहु सुषु लहयो॥६१

जानकी केसुरु सिरि परि डारा। अति अनंदु मन माहि बीचारा॥
दसरथ को लिष पतीआ पठाई। करो काजु रघुपति को आई॥
जव पतीआ दसरथ ने देषी। अपुने द्रिग सौ पतीआ पेषी॥
भर्थ शत्रुघन लीयो बुलाई। वशिष्ट प्रोहतु तांको भाई॥
तिस को संग लेइ उठि धायो। मिथुला नगरी को हितु लायो॥
मिथुला नग्री के निकटि आए। अंग अंग तिह वहु सुष पाए॥
जन्कु देवि तिहि ठांढा भया। दसरथि को अंग माहे लया॥
भले नक्षत्र कार्जु कीनो। रघपति कार्जु कर्के लीनो॥
धूप दीप आर्ती ले आई। मिल नारी वहु मंगल गाई[1]॥
जन्क भ्रात कुश धुज लघु नामा। दो कन्या तांके अस्रामा॥
लक्ष्मण भर्थ शत्रघन भाई। तिह कार्जु कीनो अधिकाई॥
दसरथ सभ सुत कार्ज कीना। जन्क विदेही वहु कछु दीना॥

---

१. मूलग्रंथ में इसके अनंतर "जन्क सुता सं ता" लिखकर आगे रिक्त स्थान है। संभवतः लिपिकार से कोई पंक्ति छूट गई है।

कनक अश्व मोती वहु दीने। चेरे हस्ति वहु संग कीने ॥
एक क्षूहिणी सेना दीनी। जन्क विदेही एहि विधि कीनी ॥
पाछे से विद्या सभु कीए। सांईदास सर्व सुधि लीए ॥६२

दशरथ नृपु संग ले करि धाया। केतक मगु मिथुला ते आया ॥
पर्शुराम आगे प्रगटि आयो। दसरथ निर्षे अति विस्मायो ॥
कह्यो पुकार तुम कौन हो भाई। हमि को इहि विधि देहु वताई ॥
पर्शुराम जव बचनु उचारा। दशरथि विस्म रह्यो अधिकारा ॥
बुरी भई अवि क्या मै करहो। कौन ठौर अपना चितु धरहो ॥
मै सक्ल कुटुंब घातु करि लीआ। ईही धार्यो अपुने जीआ ॥
दशरथ रंगु अवर कछु भया। अति भै चक्रिति मन महि हो रह्या ॥
पर्शुराम फिरि वचनु वषाना। काज वीच मै तुझै पछाना ॥
जिह समे मै निछत्राइणु कीना। नारी तुझै दुराइ करि लीना ॥
अवि कहु कहा भाग करि जावे। अवि कहु कहा तूं आप दुरावै ॥
दसरथ को रंगु अवरे भया। अति विस्मादु हृदै हो गया ॥
सुधि तजि दशरथ भयो हैराना। सांईदास मै कहा वषाना ॥६३

श्री रघुपति विधि जाननिहारा। पर्शुराम सों वचन उचारा ॥
हमि छत्री है प्रभ वलजावा। कहो किरुणा करि किर्पा पावा ॥
पर्शुराम तव वचनु उचारयो। धन्षु शंकर को तुझै विडारर्यो ॥
जनक के ग्रहि तुझै काजु कीना। शिव को धन्षु विडारे लीना ॥
श्री रघुपति तव कहयो पुकारे। सुन हो प्रभ पूर्न पर धारे ॥
धन्षु पुराना पूदा भया। मै उठाइ करि माहे लया ॥
जवि मै षिच्यो वहु तुटि गयो। दोनो टूक धन्षु होइ गयो ॥
तव अति क्रोध लोचन ललाए। रक्त चुइनि कछु कह्यो न जाए ॥
महा वली तिहि वलु अधिकारा। कहा कहो मै ताह वीचारा ॥
कंप क्रोधु हृदे ठहिरायो। मुष ते वचनु उचार सुनाओ ॥
अग्नि रूप क्रोध अति भारी। तांको वलु भुज महि अधिकारी ॥
कह्यो लेहि मोह धन्षु विडारो। हमिरे धन्षि को तुम प्रहारो ॥
नाहि त अवि सभ ही को मारो। सांईदास मै सभै प्रहारो ॥६४॥

पर्शुराम क्रोधु वहु कीना । अति अभिमानु हृदे महि लीना ॥
दसरथ निर्ष अधिक विस्मायो । रघिपति निर्ष्या संचर पायो ॥
हे तात काहे को सुकचावौ । संचरु किह कार्ण मन ल्यावौ ॥
हमि संग वलु कहु किसे वसाई । ऐसो कवनु जमयो है भाई ॥
चित्तु रषु ठौर काहे विललावै । कित प्रयोग मन महि दुःख पावै ॥
जो किसु पै ब्रह्मण हन्या जाई । सोई हमि है सुणु मेरे भाई ॥
अवर कोई हमि निकटि न आवै । काहे तू मन महि सुकचावै ॥
ताह प्रबोधन वहुता कीना । सांईदास दसरथ सुषु लीना ॥६५

रघुपति धन्षु ताह ते लीना । धन्षु वाण ले कर महि कीना ॥
षैच्यो धन्षु वाण करि माही । किस मारो कोऊ आगे नाही ॥
तव वशिष्ट सों वचनु उचारा । सुण हो प्रभ गुरदेउ हमारा ॥
साध्यो वाणु अन्यथा ना जाई । किस को मारो देहु वताई ॥
तव वशिष्ट रघुपति सौं भाषा । स्वर्गपुर काटे इहु आषा ॥
रघिपति वाणु करि ते छडि दीआ । स्वर्ग पुर काट करि लीआ ॥
स्वर्गपुर काट्यो इहि कार्न । कौलापति प्रभ आप अपार्न ॥
मात लोक कोई स्वर्ग न जावहि । स्वर्ग लोक मार्ग ना पावहि ॥
धन्षु फिरि पर्शुराम कौ दीना । पर्शुराम कौ अंग महि लीना ॥
तांको वलु सभु लीयो हिराई । पूर्न प्रभ मेरे रघुराई ॥
पर्शुराम तिहि मति हिर लीनी । महा कठनि विधि तिन ने कीनी ॥
पर्शुराम फिरि वचनु उचारा । श्रीरामचंद ने लीयो अवतारा ॥
चर्न लाग स्थावर धायो । जाइ तपस्या सों चितु लायो ॥
तव दसरथ सहित हिर्षाए । अंग अंग महि नाह समाए ॥
तव ही आगे को पग दीने । नगर अयोध्या का मग लीने ॥
जव केतक मगु आगे आए । तव आन भूपति षडे पाए ॥
जो जनकि स्ववर माहे आए । तहा बलु ना लागो ठांढे भए ॥
सोई अवि आगे चलि आए । चाहति हरि सों युद्ध कराए ॥
तव रघुपति ने वान सम्हारे । केतक भूपति प्रभ ने मारे ॥
केतक भाग गए वचे सोई । रघुपति सर काहा होवै सोई ॥
नृप मार आगे को धाए । नगर अयोध्या माहें आए ॥

कौशल्या को आष पठाए। रघुपति जी कार्जु कर ल्याए ॥
जो कछु वेद मिर्जादा होई। हमहि ले चलों करो तुम सोई ॥
अवि हमि तुमि कौ कह्यो पठाई। सांईदास विधि प्रगटि सुनाई ॥६६

कौशल्या वनिता संग लीए। श्री रघुपति और तिन पग दीए ॥
ताल मृदंग वजावति आई। श्री रघुपति पै आई ठहिराई ॥
वजति मृदंग उठिति झुनिकारा। तव सभही ग्रहि को पगु धारा ॥
सीता को ग्रहि महि ले आए। अनंद मान होइ मंगल गाए ॥
जो कछु वेद मृजाद वताई। कौशल्या ने कीनी साई ॥
भयो अनंदु तांके ग्रहि मांही। अंग माहि भावति वहु नाही ॥
केतकि दिन जवि भए वितीता। दसरथि नृप अतिभारु दिष्टेता ॥
कर पल्लव तांके कछु होया। तिस दिन दु:ख सुष ना सोया ॥
पीक पडी तिहि पल्लव माही। अनकि उपाउ कीस छुटे नाही ॥
दु:ख भयो सुषु निकटि नि आवै। जैसे मीन जल विनु तडिफावै ॥
कौकेही सुंदर अधिकाई। दसरथ निकटि रहे सदाई ॥
ताहि रूप मै कहां वषानो। सांईदास उस्तिति कहा जानो ॥६७

कोकेही कर पल्लव कर लीना। ले अंगुष्ट मुष माहे कीना ॥
पीक सकल तांकी चुस लीनी। मुष से तव ही डार न दीनी ॥
पीक चूसी दसरथ सुष पायो। सुख उपिज्यौ दु:ख मूल गवायो ॥
जैसे कंदरा होति अंधारा। दीपक जाल कर्ति उजीआरा ॥
जैसे विर्छसू कहरिया होइ। जलु तिहि मिले सुष पावै सोई ॥
जैसे भूषा भोजनु पावै। भोजनु लेइ भूष तजि देवै ॥
तैसे दु:ख दशरथ तजि भागा। अति अनंदु तांके मन लागा ॥
नैन मूंद सुष के ग्रहि आया। सक्ल दु:खु तन मनहु हिराया ॥
दसरथ सुष कीनो अधिकाई। कौकीही कर पल्लौ मुष माही ॥
जाग पर्यो निष्यां तिह डोरा। हे कौकेही सुण कहा मोरा ॥
कछु मांगौ तुम कौं वरु देवौ। जो तूं कहै मान मै लेवौ ॥
औरु वाति मै ना कछु करियो। सांईदास सोई मनि धरहो ॥६८

कौकेही मुषि पीक अधिकाही। तव उनि डारी धर्नि पराही ॥
डारि धर्नि परि वचनु उचारा। तुम पै इहु वरु रहो हमारा ॥

मांग लेयो जवि इछया होई। जो इछया होइ लेवहु सोई ॥
दसरथ तव मन महि धरि लीना। ताहि कहा मनि माहे कीना ॥
कर पल्लव छूटी वहु सुणु पायौ। सुख भयौ सभ दुःख विसरायौ ॥
देव इकत्र होइ करि आए। दसरथ को तिह आष सुणाए ॥
गंधर्व हमि को वहु दुःख देवै। निसबासर हमि युद्ध करेवै ॥
हमि वलु नाहि जो सन्मुख होवहि। युद्ध करहि करि तांकौ षोवहि ॥
हे नृप हमिरी करो सहाई। अवि हमि तुमलौ कह्यो सुनाई ॥
दसरथु सुनि इहि विधि उठि धाया। कौकेही को संग चलाया ॥
जहां जाइ तहां संग जाई। विनु कौकेई कहू नि जाई ॥
इहि प्रयोग संग वहु लीनी। सांईदास विधि पर्गटि कीनी ॥६९

दसरथ वहिरागी पिछे जावै। दसरथ इहि विधि नामु कहावै ॥
जव दसरथु युद्ध को उठि धाया। वेग विल्म तिन मूलि न आया ॥
मिलि गंधर्व आए अधिकाई। जो दसरथ सों करहि लराई ॥
दसरथ धन्षु वाण करि लीना। गंध्रपसों तिह वहु युद्ध कीना ॥
रथि लठि टूटि गई वीचाही। कौकेई निर्षी वहु ताही ॥
कैकेही तांमहि भुजि दीनी। उनि मन अंतरि येहि विधि कीनी
मतु रथु झडे धर्नि उपिराहें। दसरथ को गंधर्व जीता जाहें ॥
इहि प्रयोग तिहि महि भुजि दीई। इहि विधि कोकेई मनि कीई ॥
जो ओरि दसरथ रथु ले जावै। कौकेही तहू ओरि धावै ॥
अधिक युद्ध दशरथ करि लीआ। गंधर्व को प्रहारणु कीआ ॥
केतक गंधर्व भागे जाही। पाछे मुडि तांकै वहु नाही ॥
भागे गंधर्व रणु तिहि हारा। सांईदास रथ नृपु भारा ॥७०

दसरथ ने जवि रथि ओर देषा। कौकेई कौ ऐसे पेषा ॥
हा हा कौकेई क्या कीआ। काहे भुजि तै इसि महि दीआ ॥
तव कौकेई वचन उचारा। सुण हो प्रभ जी प्रान अधारा ॥
रथि लठि टूट गई वीचाही। निर्ष्यो रथु गिरे धर्नि पराही ॥
रथु गिरे धर्नि हार हामि आवै। गंधर्व हमि कौ सभै हिरावै ॥
तव मै भुज इसि माहे दीनी। एहि वाति मै कर्के लीनी ॥
दसरथ कह्यो- मांगु कछु रानी। मैं वरु देवौ इहि वाति वषानी ॥

जो कछु मांगे सो कछु देवौ। सुप्रसन्न तुझ कौ करि लेवौ ।।
कौकेई तव ऐसे भाषा। एकु वरु तुम पै आगे आषा ।।
एकु वरु इहि हमिरो तुम पाहे। रहो भूपति मै लोवो कदाहे ।।
दसरथ जब अयोध्या को आया। वजत वजंत्र अनंदु सवाया ।।
महा अनंदु तांके ग्रहि होया। सांईदास सकला दुःख षोया ।।७१

एक दिन दसरथ के मनि आई। राजु देवौ मै रघुपति ताई ।।
अवि मै वृद्धि भयो अधिकाई। मो पै राजु कीयो ना जाई ।।
लोक नगर के सभे बुलाए। तांसों इहि विधि आष सुणाए ।।
चाहित हो रघुपति राजु देवौ। मै हरि स्मरनु हृदे करेवौ ।।
वृद्धि भयो सुधि बुधि वौरानी। इहि विधि दसरथ मुषो वषानी ।।
सभ लोको मिल एही भाषा। हे नृप दसरथ वहु भलो आषा ।।
केसरु रगर भाजन भरि लीना। माला छत्रु वहु विधि कीना ।।
कह्यो प्रात समे दीयो राजा। दसरथ कह्यो करो इहि काजा ।।
तव रघुपति मनि माह वीचारा। मोह सिर कार्जु है अति भारा ।।
मै लेवौ राजु कार्जु को करही। कार्ज कर्तन को चितु धरही ।।
तव चेरी प्रभ लई वुलाई। तांसौ इहि विधि राम सिषाई ।।
जा कहु तू कौकेई ताई। दसरथ रघुपति राजु वहाई ।।
जवि ते रघुपति राजा होई। भर्थ को नामु न लेवै कोई ।।
कौसल्या को कहिउो होई। तेरो कह्यो माने नाही कोई ।।
जानकी होइ वहैगी रानी। सांईदास मै वाति वषानी ।।७२

चेरी कौकेई पै आई। तांको आइ करि वाति सुणाई ।।
दसरथु राजु रघिपति कौ देवै। रामचंद राज कौ लेवै ।।
कौकेई सुण विधि हिर्षाई। तांकौ कथा वीचार सुणाई ।।
मंथरा सौं तव वचनु उचारा। हे मंथरा क्या भलो पुकारा ।।
एहि बात तुझै मोह सुनाई। सुनति वात सुखु भयो अधिकाई
ऐसो क्या जो तुझ कौ देवौ। सुप्रसन्न मै तोहि करेवौ ।।
अंग अंग मैं वहु हिर्षाई। तांकी वाति न कहिणी जाई ।।
जैसे जल मिल फूलै फूला। विर्छ हरिआ होइ सण मूला ।।
ऐसे कौकेई हिर्षाई। सांईदास सो प्रगटि सुनाई ।।७३

तब श्री रघुपति अंतरजामी। सकल घटा माहे विस्रामी ॥
कह्यो बुरी भई अवि क्या कीजै। उसि को मनु क्युं करि भर्मीजै ॥
वहु विधि सुरा के वहु हिर्षाई। अंग अंग महि नाह स्माई ॥
श्री देवा जग की वहु माई। श्री रघुपति ने तव ही बुलाई ॥
तिहि आग्या रघिपति ने दीनी। एही आज्ञा वांको कीनी ॥
कौकेई को लेहु भुलाई। वांकी मति कौ लेई वौराई ॥
श्री देवा तव ही उठि धाई। कौकेई पाहे वहु आई ॥
आवति मति तिहि ने वौराई। वहु मति भूलि उौरे आई ॥
वहुरो चेरी वचनु उचारा। हे राणी क्या मन सुष धारा ॥
जव श्री रघुपति जी राजु पाए। तव पाछे तूं कहा कराए ॥
भर्थ को राजु नाह को देवै। वह दुःख तव तू मन महि लेवै ॥
अवि मै तुम सो आई वतायो। सांईदास मै प्रगटि सुनायो ॥७४

तव कौकेई वात चलाई। हे मंथरा भली वात सुणाई ॥
कहा करों कैसे करि भाषो। दसरथ को मैं क्या करि आषो ॥
जो तूं मो को देह वताई। सोई मै नृप पै कहो जाई ॥
तव ही मंथरा वचनु उचारा। सुण कौकेई कहा हमारा ॥
तुमरे दो वर नृप पै आवहि। जो तूं मांगहि सोई पावहि ॥
जो नृप निसि आवै तोह पाही। तूं कहु दोनों वर मै पाही ॥
जो उहु कहे मांग करि लेवौ। तौ तूं कहे हमौ कौ देवहु ॥
प्रथम भर्थ को राज वहावौ। द्वितीया राम उद्यान पठावौ ॥
एही दोवे वर मै पावो। उौर वात कछु हृदे नि ल्यावौ ॥
कौकेई कह्यो वहु भला कह्या। मन माहे विधि ढूढति लह्या ॥
दिनु वीत्यो निस आवन होयो। कौकेई मन दुःख स्यों पेयो ॥
मंदर महि दीपकु न जलायो। वन्हि उपरि तिन केस छुडायो ॥
दिन वीत्यो दशरथु तव आयो। मंदर अधिक तिमर निर्षायो ॥
दसरथ तवी पुकार सुनायो। हे कौकेई कित मनु लायो ॥
कवन दुःख तुम को है लागा। किह प्रयोग उजीआरा भागा ॥
इहि विधि मोको देहु वताई। तैने इहि विधि काह कराई ॥
महा सुंदरी सुंदरताई। ताह ताह रूप वर्न्या ना जाई ॥

दसरथ सों उनि वचन उचारा। सुण हो नृप जी प्रश्नु हमारा।।
दोई वर मेरे अवि देवौ। आप वचन पूर्न करि लेवौ।।
तव दसरथ ने वात चलाई। इहि प्रयोग इहि रूपु दिषाई।।
जो तुम बांछा होइ सो लेवौ। मुष अपुने से कछु उचिरेवौ।।
तव कौकेई ऐसे भाषा। भर्थ राजु देवौ इहि आषा।।
दूजा वरु मो कौं इहि देवौ। रामचंद कों वनवासु पठेवौ।।
नाहि त अवि तजों प्राना। सांईदास तिहि मन इहि आना।।७५

तव दसरथ ने वचन उचारा। हे कौकेई क्या मन धारा।।
जैसो तुमरो रूपु उचारा। तैसा तुम घटि माह अंधारा।।
वाहर रूप सुंदर दिषाई। अंतर महि विषु कहा छपाई।।
ध्रिग ध्रिग बुद्धि तुमारी भामा। मो सो दुजा कीयो तै रामा।।
इहि विधि कहि दसरथु मुर्छायो। सकली सुधि बुधि ताहि भुलायो।।
निस वीती भालू तव होया। दसरथ संसा मनो न षोया।।
मंत्री दसरथ को तव आया। हे नृप कहा तै ढील लगाया।।
रघुपति को आवौ देहो राजा। हे दसरथ करि ले इहि काजा।।
दसरथ कहा जो विधि सुण लेवै। तां विधि प्रतु तांको देवौ।।
रुदन कर्ति द्रिग नीर ढुराना। तव मंत्री मन महि हैराना।।
विघ्न भयो कछु रुदनु कराए। मुषि ते वचनु जु ना उचिराए।।
मंत्री ने तव वचन उचारा। सांईदास सभ कह्यो वीचारा।।७६

हे कौकेई इहि क्या होया। दसरथ नृप कवन दुःख रोया।।
तव कौकेई वचनु सुनायो। तव मंत्री को तिनहि वतायो।।
राजु दीयो नृप भर्थ के ताई। रघुपति सों वनवास पठाई।।
सुनि मंत्री एहि विधि उठि धाया। चला चला रघिपति पहि आया।।
कह्यो पुकार राम जी ताई। तुम वनवास भयो अधिकाई।।
कौकेई इहि वचनु उचारा। हे पूर्न प्रभ प्रान अधारा।।
दसरथ रुदन कर्ति अधिकाई। ताहि वात मै कहा उचिराई।।
कौलापति प्रभ प्रान अधारा। सभ ही विधि हो जानण हारा।।
चलति चलति दसरथ पहि आयो दसरथ को तव आष सुणायो।।
हे पति किहि विधि राजु कराहे। किउ रोवत है तूं मन माहे।।

इहि विधि को प्रतु मो कौ दीजै। इहि करुणा प्रभ मो परि कीजै ।।
कवन प्रयोग दुःख तै पायो। सांईदास सो मोह वतायो ।।७७

कौकेई तव वचनु सुनायो। रुदन कर्नि इहि विधि चितु लायो ।।
तुम को कहति जाहो वन माहे। चतुर्दश वर्ष रहो तुम ताहे ।।
हमि ने राजू भर्थ को दीना। इहि कार्णु हमि ने है कीना ।।
जो मोह सुतु मेरो कह्या माने। और वाति कछु हृदे ना आने ।।
जव रघुपति इहि विधि सुण पाई। मुषि अपुने ते वाति सुणाई ।।
हे पति[1] तुमि आज्ञा जो होई। हृदे धार करि हौं मै सोई ।।
हे पति तुमि प्रणु छाडो नाही। मै जावति हो वन के माही ।।
रुदनु न करु कछु हृदे न आनो। हमि को निकटि सदा तुम जानो ।।
सुतु सोई पति कह्या करावै। द्वितीआ भाई कछु हृदे न ल्यावे ।।
तव दसरथ ने वचनु उचारा। सैना सहित लेहो अधिकारा ।।
तवे कौकेई कह्यो पुकारा। जव दसरथ इहि वचनु उचारा ।।
जवि सैना रघुपति ले जावै। भर्थु राजु कहु कहा करावै ।।
तव श्री रघुपति वात चलाई। काहे तप्ति है मेरी भाई ।।
मोहि सैना काम नहीं आवै। इहि सैना मोकौ नहीं भावै ।।
जो प्रथमे प्रभ वचन उचारा। ओही वचन हृदे मै धारा ।।
ले आग्या दसरथ ते धाया। सांईदास रघपत गृह आया ।।७८

जनक सुता सो वात सुनाई। एक एक करि ताह वताई ।।
कौकेई वनवासु दिवायो। हमि पति आग्या मनि ठहिरायो ।।
मौ को आज्ञा पति की होई। जो आग्या होइ कर हो सौई ।।
मौह कह्यौ तुम वन को जावो। मेरो कह्या हृदे नहि लावो ।।
अवि मै जावति हो वन माही। औरु वाति करहो कछु नाही ।।
तुम सुप वसो अयोध्या माही। मानु महतु करवो कछु नाही ।।
भर्थ कह्या सिरि ऊपरि राषौ। औरु वाति कछु नाह नि आषो ।।
जनक सुता जवि विधि सुण पाई। मूर्छा होइ करि धर्नि गिराई ।।
श्री रघपति भुजा पकरि उठाई। मूर्छा ते फिरि सुद्धि महि आई ।।

---

१. पति > पित = पिता—स्वर परिवर्तन।

तव सीता कह्या मोह संग लेवो। पाछे पग तुम वन महि देवो ॥
तव श्री रघपति ताह सुनायो। हे जानकी क्या मनि ठहिरायो ॥
तुमि हमिरे संग काहे आवो। तुम अपुने ग्रहि महि ठहिरावो ॥
महा भै मान है वहु अधिकाई। वन महि कहा करौ तुम जाई ॥
हमि तो पत की आज्ञा पाई। आग्या पाइ चले वन धाई ॥
वादर उमड उमड के आवहि। महा अधिक उह वर्षा लावहि ॥
कवहू पवन चले अधिकाई। कवहूं सिंघ सन्मुप हमि धाई ॥
व्याघ्र अधिक फिर्त तिहि ठौरा। दु:ख घरणो सुषु नहि हे भोरा ॥
वन महि जाहि अधिक दु:ख पावहि। तव वन महि वहुता पछुतावहि ॥
काहे नगर त्याग वन आई। इसि के संग काहै मै धाई ॥
तांते एहि भलो है भामा। रहै अयोध्या इहि भलो कामा ॥
तुम रहो नगर अयोध्या माही। हमिरे संग चलो तुम नाही ॥
तव ही जानकी वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारा ॥
तुझै त्याग कैसे सुष पावौ। तुझि विनु मनु कहु किस सौ लावौ ॥
पवन मेघ ते हमहि डरावौ। सिंघ त्रासु प्रभ हमहि वतावौ ॥
जो ईहा रहो सिंघ दिष्ट आवै। जो ईहा रहो दु:ख मनु पावै ॥
श्री रघुपति फिरि वचनु उचारा। जानकी कहा हृदे ते धारा ॥
मै कछु त्रासु तोहि न दिषायो। नीकी वाति मै तोहि वतायो ॥
हमि संग काहे वन तुम जाई। तू भामा हम नर अधिकाई ॥
हमि दसि कोस चले क्षिरण माही। तूं हमिरे संग पहुचे नाही ॥
हमि तो सिंघ सौ करहि लराई। तुम को सिंह पकरि छिन षाई ॥
मोह कहा मन नहि ठहिरावौ। और वाति कछू नाह चलावो ॥
जानकी फिरि ताको प्रतु दीना। हे प्रभ कहा उचारे लीना ॥
जो तुम किर्पा मो परि होई। दु:ख दर्दु व्यापे नही कोई ॥
तुझि विनु दु:ख दर्दु सताही। तुझ विनु प्रान निकसि करि जाही ॥
जो तुम मोह त्यागे जावो। विरह अग्नि तन हमिरे लावों ॥

तुम विनु प्रान निकस करि जाही।
छूटति रघुराई तुझि विनु मोपै रह्यो न जाई ॥

किर्पा करि हमि को संग लेवो। दु:ख दर्द हमि को ना देवो ॥
औरु वाति कछू नाहि चलावौ। हमि कौ संग लेइ करि प्रभ धावौ ॥

रघुपति फिरि कह्या जानकी ताई। हे जानकी चलहो वन माही॥
ग्रहु अरु भूषन अंग लुटावो। छिन पलु विलम नाहि तुम लावो॥
जानकी तत्काल इहि कीना। ग्रहु अंग भूषन सभ तजि दीना॥
मालु धनु दीयो लुटाइ क्षिण माही। पाछे कुछु राषो उनि नाही॥
रघपति जानकी कौ संग लीना। चाहति गवन उद्याने कीना॥
जो नृप कह्या सो मनि ठहिरायो। सांईदास चित्त उनि लायो॥७९

जव रघपति पग आगे दीने। लक्ष्मण वीर तवी सुण लीने॥
लक्ष्मण वीर तवै सुण आया। श्री रघपति सौ भाष सुणाया॥
हे प्रभ मै तुमरे संग जावौ। पलु छिनु तुम विनु ना ठहिरावौ॥
तुम विनु निकसि जाति मोह प्राना। हे पूर्न प्रभ मैं इहि जाना॥
श्री रघपति कह्यो सुणु वीरा। हमि संग किउ चल चंचल धीरा॥
मोह आग्यापत कीसे जावौ। पति आग्या मन माहे ल्यावौ॥
इहि विधि वंधू बेद बताई। पिता समान वडो है भाई॥
मोह कह्यो मन महि ठहिरावो। वन जावन चितु नाहि ल्यावो॥
तुम कों किसै बनवासु न दीआ। तुम हृदि महि किउ इहि धरि लीआ
तुम वसो नगर अयोध्या माही। हमिरे संग चलो तुम नाही॥
वन महि चलो कष्टु वहु पावो। सांईदास इहि मनि ठहिरावो॥८०

तव लछमन तांको प्रतु दीना। हाथ जोर विनती मुष कीना॥
हे प्रभ तुम जाव वन माही। हमि तुम विनु किउ रहो इथाही॥
मै तुम त्याग ईहा ना रहो। नग्र माह आस्रमु ना लहों॥
तुझि विनु कहु कित काम हमि आवहि। तुझ विनु कहु कैसे सुष पावहि
तुझि विनु हमि पै रह्यो न जाई। हे प्रभ पूर्न रघपति राई॥
किर्पा कर हमि सहित चलावो। वेग विलम प्रभ मूल न लावो॥
विनु जल ब्रिक्ष हरया नही हो। विनु नावक जलु तरे न कोई॥
हे प्रभ तुमि विनु रह्यो न जाई। सांईदास मन वहु दुःख पाई॥८१

रघपति लछमन को समझाई। सुण हो विधि तुम मेरे भाई॥
महा विकटि वनु रह्यो न जाई। सिघ असुर वहु त्रासु दिषाई॥
भूष व्यापे क्या तूं षावहि। सुनहो वंधू वहु दुःख पावहि॥

तप्त सीत तहा वहु सताई। तुम पै वहु दु:ख सह्यो न जाई ।।
मेरो कह्यो मन धरि लेवो। ऊौरु वाति कछु हृदे न देवो ।।
वहुरो लक्षमन तिह प्रतु दीना। हे रघपति तुम जान प्रवीना ।।
हमि को भूष का त्रासु दिषावै। ऊौरु घाम प्रभ हमहि वतावै ।।
सिंघ असुर प्रभ कहा कहावै। तुम किर्पा कछू निकटि न आवै ।।
मै तुमि संग चलो वनि माही। सांईदास ईहा रहो नाही ।।८२

वहुरो रघपति ताहि सुनायो। ऊौरु वाति प्रभ प्रश्नु वतायो ।।
वन महि पाट पीतंवर नाही। इहि विधि समझि देषु मन माही ।।
कां परिशैनु करो मेरे भाई। तुम को दु:ख उपजै अधिकाई ।।
कहा सिहांने धरि करि सोवौ। हे मोह वीर महा दु:ख होवै ।।
कित प्रयोग तुम वन महि जावो। हमिरे संग काहे को आवो ।।
तुमि दु:ख लागे हमि दु:ख होई। वन महि सुषु वंधू नही कोई ।।
कांटे अधिक पडे पग नाही। सांईदास काहे दु:ख पाही ।।८३

लछमन कह्यो सुनो रघुराई। दु:ख कहा लागे तुम ही सहाई ।।
पाट पीतंवर मोह तेरो नामा। ऊौरु वात सों मोह नही कामा ।।
तुम को त्याग रहों कहा ठौरा। तुझि विनु होवति हों मै वौरा ।।
तुम विनु सुधि बुधि सकली जाई। तुमि विनु मनु रंच न पाई ।।
तुमि विनु मो को भौ अधिकाई। तुमि विनु मो पहि रह्यो न जाई
जहा तुमि चलो तहा मै जावों। तुमि बिनु नगर मै किउ ठहिरावों ।।
तुम विनु दग्ध होत मोह प्राना। हे प्रभ तुम विनु कहा वषाना ।।
तुम विनु जीउ निकसि मोहि जाई। जैसे जल विनु मीन तडफाई ।।
तुमि विनु हमि किते काम नि आवहि।
तुमि विनु दु:ख अधिक हमि पावहि ।।
तुमि विनु द्रगि मोहि कछू न सूझै।
तुमि विनु इहि मनि वाति न बूझै ।।
तुमि विनु राति दिवस अंधारा।
तुमि विनु कहू न होत उजारा ।।
तुमि विनु सुफलो काजु न होई।
तुमि विनु महा दु:ख प्रभ होई ।।

तुमि विनु त्रासु ग्रहे प्रभ आई।
तुमि विनु हमिरो कौन सहाई॥
तुमि विनु कवन दु:ख हमि टारे।
तुमि विनु दु:ख हमि कौनु उधारे॥
तुमि विनु नगरी नाह सुहावै।
तुमि विनु सभ जगु भर्म भुलावै॥
तुमि विनु शांत कहु कैसे होई।
तुमि विनु विप्त कवन हमि षोई॥
तुमि बिनु वहु दु:ख लागे आई।
तुम विनु तीन ताप संताई॥
कैसे त्याग रहो तुम ताई।
तुम को त्यागो वहु दु:ख पाई॥
हे प्रभ तुम्हि विनु रह्यो न जाई।
इहि बिधि कहि मै तुझे सुणाई॥
अवरु वाति तुमि नांह चलावो।
सांईदास को साथ ले जावौ॥८४

श्री रघुपति मन माह वीचारा। इनि निश्चै कीना मन धारा॥
मै इसे ऊभ पताल दिषायो। अधिक त्रासु मै इसे वतायो॥
इनि धर्यो ले सीस पराइण। औरु वात मै कहा बताइण॥
कह्यो भलो भाई तुम आवो। हमिरे संग तुमि वन कौ धावौ॥
जव इहि तीनों उठि करि धाए। रव सस तिह रूपु देष लजाए॥
महा सरूपु रूप उजीआरा। तां कहु कहु को करे वीचारा॥
रव सस दोनों जाहि लजाई। ताहि रूप देषे मेरे भाई॥
मधुरि मूर्त्ति रघुपति राई। तांकी उस्तित कौणु वताई॥
लछमन तांसो बचन उचारा। हे रघपति क्या मन महि धारा॥
चलु इनि भूपति को हनि लेवहि। ताहि नग्र को राजु करेवहि॥
श्री रघुपति तांको प्रतु दीना। हे मोह वीर कहा मनि लीना॥
इहि केतक विधि जो ना होई। जो पति आज्ञा होइ करो सोई॥
पिता हमि कौ दीना वनवासा। हमि किउ नगरी लेवहि वासा॥

तव लछमन कहो वहु भलो होई। जो तुम कहो करहि हमि सोई ॥
रघुपति कह्यो सुणु मेरे भाई। जो तेरे मन अैसी आई ॥
इहि भूपति हनि लेवहि राजा। पूर्न हमिरे होवहि काजा ॥
तुमि रहो ईहा किउ वनि जावो। कित कार्नि वंधू दुःख पावो ॥
तव लछमन द्रिग नीरु ढुराना। हे रघिपति जी क्या मनि जाना ॥
जाहा तुमि जाइ के आश्रमु लेवो। आसनु करि वन को तुम सेवो ॥
मै लकरि ले कुटी वनाग्रौ। तुम आगे प्रभ टहिल कमावौ ॥
मै इहि तुम सुष कार्ण भाषा। उौरु वाति कछु हृदे न राषा ॥
जो तुमि मो सों अैसी भाषो। जान बूझि अैसी विधि आषो ॥
अवि ही प्रान तजौ मेरे भाई। मो पहि इहि विधि सही न जाई ॥
मै सेवकु तुमिरो रघुराई। सांईदास तुमि सदा सहाई ॥८५

तव श्री रघुपति वचनु सुनाया। हे मोह वीर कहा मन ल्याया ॥
इहि विधि तुमि पै इहि बतायो। पित को वचनु हृदे में ल्यायो ॥
तुमि सुष वसो अपुने ग्रहि माही। कित कार्नि वन कौ तू जाही ॥
तूं ही जीउ प्रान है मेरा। मै सुषी जीउ चाहित हो तेरा ॥
तव ही लछमणु शांत घरि आया। तव रघुपति इहि वचनु सुनाया ॥
तीनो कौशल्या पहि आए। करि जोरे मुख आषि सुणाए ॥
रघुपति कौशल्या सो आषा। मै बन जावो इह मुष भाषा ॥
पित हमि को दीना वनवासा। हमि ने त्यागी सकली आसा ॥
जानकीलछमन मोहि संग जाहो। मेरे कहे समझै इहि नाही ॥
मै कह्यो वन महि दुःख पावौ। काहे को हमिरे संग जावौ ॥
अनकि अनकि विधि कहि समझायो। मेरो कह्‌यो इन्हा मनि ना भायो
तुम आज्ञा देवो हमि जावहि। सांई दास छिन विलम न लावहि ॥८६

कौशल्या तिहि आष सुणायो। हे रघपति किहि विधि मनु लायो ॥
लछमन जानकी संग चलाए। तुमि विनु मोपहि रह्यो न जाए ॥
निकसि जाहि प्रान सुत मेरे। कहा कहो मै आगे तेरे ॥
मो को अपुने संग वलावो। मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावो ॥
श्री रघपति तव वाति चलाई। सुणु कौशल्या हमिरी माई ॥
वनिवासा पिता हमि को दीना। चतुर्दस वर्ष हृदे धरि लीना ॥

चतुर्दश वर्ष पाछे फिरि आवहि । काहे को तूं हमि संग धावहि ॥
हे मय्या चितु ठउरे राषो । औरु वाति कछु मुषो न भाषो ॥
हमि सदा सदा रहै तुमि पाहै । कहूं तुमि से दूरि न जाहै ॥
हे सुत कहा तै वात वताई । मै रहो मन पहि रह्यो न जाई ॥
तव श्री रघुपति ताह वतायो । हे माता काहे चितु लायो ॥
तुमि सुष वसो मात इहि ठौरा । संचरु मन ल्यावो नही भोरा ॥
कौशल्या कह्यो जो तुम जावो । जानकी लछमन को छडि जावो ॥
जनक सुता वनु कबहूं न देष्या । इनि वनु कबहूं न नेत्री पेष्या ॥
कैसे करि वन को इहि जावै । कैसे वन महि पग ठहिरावै ॥
इन हि छोड जावौ रघुराई । कहा करहि इहि बन महि जाई ॥
तव रघुपति तांको प्रतु दीना । हे मय्या मैने क्या कीना ॥
मै इनि कों वहु कहि कहि रह्या । इनि मेरो कह्यो मनि महि ना लह्या
किर्पा करि मोह लेहु छडाई । इहि विनती सुणहो मेरी माई ॥
कौशल्या कहो जानकी ताई । हे जानकी वनि वहु दुःख पाही ॥
कित प्रयोग इनि के संग जावो । कित प्रयोग वन को चितु लावो ॥
तुम सुष वसो अयोध्या माही । काहे को तूँ वन महि जाही ॥
तव ही जानकी वचन उचारा । विनु रघुपति क्या कामु हमारा ॥
हमि जु रहो नग्रि के माही । रामचंद्रजी वन को जाही ॥
रघिपति विनु वहुता दुःख पावौ । रघुपति विनु चितु कांसो लावौ ॥
मो पहि नग्रि महि रह्यो न जाई । विनु प्रभ पूर्न रघुपति राई ॥
तुमि किर्पा कर वहु सुषु पावौ । सांईदास जो हरि संग जावौ ॥८७

कौशल्या फिरि तिहि समझावै । अनेक वाति वहु ताहि वतावै ॥
हे जानकी वन सुषु नही कोई । दूख भूख वन महि वहु होई ॥
पग महि कांटे अधिक पुडाही । तव दुःख पावै वहु मनि माही ॥
चंदनु त्याग भस्म अंग लावै । अंवर त्याग मृगानु उढावै ॥
छत्री भोजन कहा प्रकारा । ऊहा कंदमूल आहारा ॥
महा विकट वनु सिंध को त्रासा । निसबासरि बन माहे वासा ॥
मेरो कह्यो मनि महि धरि लीजै । जानकी औरु न मन महि दीजै ॥

मैं तुमि पाहे कहो पुकारा। तुमि मन लेहि वीचारा ॥
हे जानकी जो सुख को चाहे। सांईदास इहि संग न जाहे ॥८८

जानकी फिरि तांको प्रतु दीना। हे माता कहा मनि लीना ॥
वन महि सुख होइ अधिकाई। जवि मोहि रघुपति होइ सहाइ ॥
कांटे हमिरे निकटि न आवहि। जवि हमि रघुपति पाछे धावहि ॥
चंदन हमिरे काम न आवै। मिर्ग मृगानु हमा को भावै ॥
छत्री भोजनु कहा करावहि। हमि कंद मूल लै ले करि षावहि ॥
सिंघ कहा वलु मोह निकटि आवै। हमि को अपुना आसु दिषावै ॥
निसबासरि जो वन महि वासा। सदा सदा तहा भोग विलासा ॥
हमि छिनु हरि विनु रहिणु न पाही। हमि जावहि रघपति संग ताही ॥
तुमि फिरि वाति न कोइ चलावो। हे मोह मात हमि काह संतावो ॥
जव कौशल्या इहि सुरण पायो। तांसो फिरि नाह वचनु सुनावो ॥
वहुरो लछमरण कौ ग्रैसे आष्यो। लछमन भी ऐसे ही भाष्यो ॥
पग धरि सीस गवनु हरि कीआ। लछमन जानकी को संग लीआ ॥
रघुपति चल्यो उद्यान के ताईं। सांईदास सोच मन माही ॥८९

श्री रघुपति वन खंडि सिधारे। दशरथु मंदर परो निहारे ॥
मंदर चढयो रामु निहारे। जानकी लछमन सहित संभारे ॥
जवि लगि द्रिष्ट परे रघुराई। दशरथ दूषू न लागो काई ॥
भई भीरण जवि द्रिष्ट न आई। दशरथ द्रिग महि कछु न सुहाई
मंदर ते गिर पर्यो धरायरण। पर्मि जोति जाइ मिल्यो नरायरण
छूटै प्राण कालु तिस होया। रघुपतिको मन संसा षोया ॥
इहि विधि श्री रघुपति सुरण पाई। दशरथु कालु कीयो मेरे भाई ॥
दसरथ नृपु देवलोक सिधारे। तव श्री रघुपति मनि वीचारे ॥
कर्मि क्रतूत श्री रघुपति कीना। वेद म्रिजादा मनि धरि लीना ॥
कर्मि क्रतूत करि आगे धाए। महा विकटि वनु भौ दिषलाए ॥
कांटे पुडहि घामु वहु होई। मनि महि सुख नाहि है कोई ॥
चले अगस्त के आश्रम आए। छिन पलु इकु दिनु तहू ठहिराए ॥
सारंग धन्षु अगस्त ने दीना। श्री रघुपति ले करि महि कीना ॥
फिरि वाल्मीक के आस्रम आए। वाल्मीक ने दर्सन पाए ॥

ऐसे आस्रम अधिक फिराए। श्री कौलापति त्रिभुवन राए ।।
मिर्ग निर्षि हर को उठि भागै। रघिपति ऋषि सों भाषन लागै ।।
हमि को देषि काहे डरि जाही। किर्पा करि कहो हमि ताई ।।
हे प्रभ तुमि को नाहि पछाने। इहि प्रजोग भागनि चितु ठानें ।।
जा वन महि रघुपति ठहिराए। सांईदास तिहि सद बल जाए ।।६०

मात पिता गहि दोनो भाई। भर्थ शत्रुघनु वहु सुख दाई ।।
जहा भर्थु रहे तहू शत्रुघनु। देह दोई तांके है इकु मनु ।।
मात पिता के ग्रहि ठहिराए। विद्या पढिने कौ चितु लाए ।।
जव दशरथ नृप तजे प्राना। तव कौकेई मनि इहु आना ।।
दशरथ मुष लिष पती पठाई। सभ व्रतंतु मै ताहि सुनाई ।।
भर्थु शत्रुघनु वेगही आवो। पतीआ निर्षिति तुमि उठि धावो ।।
एकु कार्जु सुत क्षिनु वनि आयो। तुमि पतीआ देषि विल्मु न लायो ।।
पतीआ क्षिन महि भर्थि पहि आई। शत्रघरिण कौ तिन दिषलाई ।।
भर्थ कह्यो सुरण हो मेरे भाई। पतीआ आई रह्यो नि जाई ।।
चलहो चले अयोध्या जावहि। वेग विल्म कछु मूल नि लावहि ।।
दशरथ पित हमि पती पठाई। ईहा रहि क्या कीजै भाई ।।
भर्थु शत्रुवनु तव उठि धाए। नगर अयोध्या माहे आए ।।
नग्रि को लोकु सभे शोकवाना। तिन के मन आनंदु ना भाना ।।
दशरथ नृप देवलोक सिधारे। श्री रघुपति पगि वन को धारे ।।
इहि प्रयोग प्रजा सोकवाना। कहा करे कोई ताहि वषाना ।।
भर्थु निर्ष विस्मादि होइ रह्या। तात समे मुषि ते उनि कह्या ।।
किहि प्रयोग प्रजा शोक लेवो। कौन वियोग माहि चितु देवौ ।।
तव काहू ने कह्यो पुकारी। हे प्रभ तुमि लेहो हृदे धारी ।।
रघिपति को वनवासु दिवायो। कौकेई इहि कामु कमायो ।।
तिहि वियोग तजे दशरथ प्राना। हे नृप भर्थ हमि कहा वषाना ।।
सर्घि सभी विधि ठहिराई। कहा होइ जवि समा सिधाई ।।
दशरथ कों षडि तिनहि जलायो। कर्मि क्रतूति फुनि तिनहि करायो ।।
कर्मि कीए आयो ग्रहि माही। कौकेई को कह्यो ताही ।।
हे मोहि मात कहा ते कीना। रघुपति को बनवासा दीना ।।

विनु रघुपति कैसे सुख होई। विनु रघुपति हमि सुष ना कोई॥
रघुपति विनु हमि तजहि प्राना। रघुपति विनु जीवनु ध्रिगु जाना॥
हमि कैसे रहे नग्रि के माही। कहु सुषु कैसे करि हमि पाही॥
तव कौकेई वचनु उचारा। हे मोंहि सुत तैं क्या मनि धारा॥
जव मै इहि विधि सुरा के पाई। दसरथ रघुपति राजु वहाई॥
मै अनंदु लीयो मन माहे। अति अनंदु हृदे नाहि स्माहे॥
मो सो मंथरा एहि सिषायो। अति अनंदु काहे मनि लायो॥
जबि ते रघुपति राजा होई। भर्थु नाम लेवे नही कोई॥
राजु तुम्हारे ग्रहि ते जाई। तव तूं पाछे कहा कराए॥
हे सुत मोको इनि ही भुलायो। मैं इसि कहे इहि कामु करायो॥
हे सुत जो तै मन इहि धारा। सांईदास मोहि कहा वीचारा॥९१

भर्थि कह्यो सुण हो मेरे भाई। मो पहि राजु कीयो ना जाई॥
श्री रघुपतु मिर्गानु उढावै। भर्थु कहा ले वस्त्र हंढावै॥
श्री रामचंदु फिरे वन माहे। भर्थु कैसे कहु राजु कराहे॥
श्री रामचंदु कंदमूल षावै। भर्थु स्वाद कैसे भोजन पावै॥
रामचंद वसुधा पे सोवै। भर्थु कैसे सिंघासन हौवै॥
श्री रामचंद घाम तन सहे। भर्थु कहु किउ सुष गृहि वहै॥
इहि विधि कहो भर्थ उठि धाए। भर्थु शत्रघन बाहरि आए॥
मंथरा कौ तिन हि ले वहु मारा। रोम रोम से रक्ति निकारा॥
तेने कहु इहु किउ कर्मु कीआ। एहि सिष्य कौकेई दीआ॥
मार कूट करि फिरि तजि दीई। उोरु वाति कछु हृदे न कीई॥
कौकेई अति मन पछुताई। तव सुत को इहु आषि सुणाई॥
कहा होइ जवि समा विहाना। सांईदास समा पर्धाना॥९२

भर्थु शत्रघनु सैना लीने। त्याग अयोध्या वन पग दीने॥
जिहि मग रघपति वनहि सिधारे। सोई मगु तिह हृदे वीचारे॥
जहां जहां रघपति जी ठहिराए। सभ ही ठौर देषत वहु आए॥
भर्थु शत्रघनु जव निकटि आए। लक्ष्मरा ने नैनो निर्षाए॥
कह्यो सुणो श्री रघुपति राई। भर्थु आयो हमि करहि लराई॥
जो आग्या होइ तां सन्मुख जावो। भर्थु सो जाइ युद्ध मचावो॥

तव श्री रघपत ताहि सुनायो। हे लक्ष्मरण क्या मन ठहिरायो ॥
प्रिथमे तुम तो युद्ध न करहो। ले संतोष हृदे महि धरहो ॥
देषो भर्थु काहे को आयो। भर्थु क्या मनि महि ठहिराया ॥
जवि श्री रघपति एहि सुरणायो। लछमनि वात सुरणी ठहिरायो ॥
भर्थ शत्रघनु नेत्र पसारे। श्री रघपत तिन्हा द्रिष्ट निहारे ॥
सभ सैना को तहूं षलायो। रथु तजि पग अपने चलि आयो ॥
रघपति कों प्रदक्षिरणा कीनी। हाथ जोरि मुष विनती कीनी ॥
हे प्रभ पर्जा वहु दुःख पायो। तोहि व्योग सभ ही वौरायो ॥
हे प्रभ सभ ही भए हैराना। मै तुमि पाहे कहा वषाना ॥
जवि ते भर्थ इहि वचन सुनाए। श्री कौलापति मनि ठहिराए ॥
हे मोहि भ्रात कहा कहु कीजै। पिता वचन कैसे तजि दीजै ॥
जो पित वचन तजे भलो नाही। निंद्या होइ हमिरी जग माही ॥
कहा पूतु पित वचन न माने। कहा पूति पति कह्यो न माने ॥
ध्रिगु ध्रिगु होइ हमहि जग माही। हे मौहि भ्रात सह्यो न जाही ॥
कैसे करि मोहि राजु करावौ। कैसे नग्र मांहि ठहिरावौ ॥
तुमि करो राजु कह्या मोह मानो। उौरु वाति कछु हृदे न आनों ॥
रघुपति भर्थ कौ आष सुनायो। सांईदास विधि प्रगटि वतायो ॥९३

भर्थ फेरि करि वचनु उचारा। हे पूर्न प्रभ प्रान अधारा ॥
मै कैसे करि राजु करावौ। राज कर्नि चितु कैसे लावौ ॥
तुमि फिरो डोलत वन के माही। हमि सुष कैसे राजु कराही ॥
इहि कवहू हमि से ना होई। तुमि विनु राजु करे ना कोई ॥
श्री रघुपति प्रभ अंतरजामी। घटि घटि मै प्रभु है विस्रामी ॥
पग षडांउ प्रभ भर्थ को दीई। इहि करुणा पूर्ण प्रभ कीई ॥
कह्यो भर्थ कों तुमि वहु ले जावो। सिंघासन परि इसे वहावो ॥
इसि से पूछ करो तुम कामा। तुमि जानो एही है रामा ॥
सभु आइ इसि पर्नाम सुनायो। इसि के तुमि मंत्री कहावो ॥
भर्थि षडाउ लीनी उठि धायो। चलति चलति सैना पहि आयो ॥
सैना को व्रितांत सुनाए। सहति लीई सैना उठि धाए ॥
आरिण सिंघासन परि ठहिराए। पग षडांउ श्री रघुपति राए ॥

आप तले वहि राजु कमावे। इहि विधि करि भर्थु काम चलावे
सकल प्रजा को वहु सुषु दीना। अनीत दंड काहू ना कीना।।
जो कछु रघुपति ताहि वतायो। तिसी काम कर्ने चितु लायो।।
भर्थु भलीभांति राजु करावै। सांईदास प्रभ सुख पावै।।६४

रावण वहिन सूपनकि तिहि नामा। इहि वीचार गह्यो मन भामा
चली चली वन माहे आई। जानकी पहि आइ करि ठहिराई।।
जानकी सों तिन बचन उचारा। सुण हो जानकी कहा हमारा।।
अः तूं अति सुंदर सुंदरताई। तोहि रूप गति कौन वताई।।
इनहि डिगंवर सों किउ रहै। संन्यासी संग काहे वहै।।
मोहि वीरु रावण तिहि नामा। महा वली वलु वहु तिहि भामा।।
लंका गढि को राजु करावै। तहा वसै तूं बहु सुष पावै।।
त्रैलोकि तिहि वंदी माही। हे जानकी समझु मनि माही।।
मोहि संग चलै तुझै ले जावौ। कनकपुरी मै तोहि दिषावौ।।
महा अधिक सुष तांके पावो। जो तुमि वेग सहित हमि आवो।।
इहि औसरु काहे तूं षोवहि। औसरु वीते पाछे रोवहि।।
कनकपुरी महि वहु सुषु पावहि। हे जानकी किउ बनि चितु डुलावहि
वेग विल्म तुम मूल न करहों। कनक पुरी चलने चित्तु धरिहों।।
अति सुगंध अंवर अधिकाए। भूषनि षचति मणी पहिराए।।
भोजनु मन वाछहि सो पावहि। नाना अंबर अंग हंढावहि।।
कहा भस्म सो कीयो प्यारा। कहा तै मन महि लीयो वीचारा।।
म्रिगानु काहे ऊपर लेवै। इहि वन महि कहु कहा करेवै।।
औरु वाति तुमि सकली त्यागो। हे जानकी हमिरे कहे लागो।।
चलहो मै तुम को ले जावो। नृप रावण पहि खडि पहुचावौ।।
त्याग देह तूं इनि को संगा। कहा भस्म लगावें अंगा।।
इने त्यागु मेरे संग आवो। सांईदास अधिक सुष पावो।।६५

जानकी सौ जबि एहि सुणायो। जानकी क्रोध लोचन ललायो।।
लछमन को तब लीओ बुलाई। हे लछमण सुण आगे आई।।
सूपनक मोसों ऐसे आषहि। ऐसे वचन इहि मो सौ भाषहि।।
मोह वीरु तिहि वलु अधिकाई। कनक पुरी को राजु कराई।।

त्रैलोक तासि वंदि माही। हे जानकी उहु रहे सदाही ।।
तूं चलु मो संग तुझै ले जावौ। कनकपुरी षडि तुझे दिषाववौ ।।
तहां महा अधिक अंवर हंढावै। भूषन अधिक वहु तोहि पहिरावै ।।
जो कछु तूं मुष ते उचिराही। मोहि वीरु वहु करे तदाही ।।
इहि संन्यासी संग किउ रहे। वन माहे काहे तूं वहे ।।
मो को ऐसे वचन सुनावै। अति क्रोधु मोहि मन उपिजावै ।।
अधिक दुःख मोको इनि दीना। एहि वचनु जो मोसौ कीना ।।
अबि मै तुम सौ कह्यो सुनाई। सांईदास लछमन सुण पाई ।।६६

लक्ष्मण जवि सुणी इहि विधि काना। अति क्रोधु उठ्यो मन माना
उनिहि सूपनकि ताई कह्यो। हे सूपनकि कहु क्या तै कह्यो ।।
जानकी को चाहित हिरि लीआ। हे सूपनकि तै क्या मनि कीआ ।।
नाकु कान दोऊ कटि डारे। लछमन चाहति तिहि प्रहारे ।।
जानकी कह्या त्याग इसि देवो। आवो प्रभ की सेव करेवो ।।
लछमन सूपनक को छाडि दीआ। इहि कार्णु लछमन ने कीआ ।।
सदा अनंदु वसे वन माही। नग्र माहि कवहूं ना जाही ।।
वन फल ले करि उदर भरायण। निसिवासर तिहि ऐसे भायण ।।
कुटीआ छाइ रहे बन माहे। कंदमूल वन से ले षाहे ।।
जैसे तपसी भजनु कमावहि। सांईदास प्रभ के गुन गावहि ।।६७

सूपनक षरदूषनि पहि गई। तांसौ जाइ करि सभ विधि कही ।।
दोनो वीर एकि संग नारी। नाकु कान उनि हमि कटि डारी ।।
तुमि होवति हमि इहि विधि होई। तुमि विनु नाह सहाई कोई ।।
तुमि वल करि उनि को प्रहारो। जिउ जानो त्युं तिन को मारो ।।
फिरि सुवाह सौ आषि सुणायो। हे मोहि वीर सुणो चितु लायो ।।
श्रवण नाकु हमिरा कटि लीआ। मो सिरि इहि विधि तिन कीआ ।।
संन्यासी रहे वनि के माही। एकि त्रीआ सुंदर संग ताही ।।
मो सों उनि ने ऐसा कीआ। कानि नाकु हमिरा कटि लीआ ।।
अवि मै तुमि सौ आषि सुणायौ। वेग विलम्ब मै मूल नि लायो ।।
तुमि जाइ करि तिन को हनि लेवौ। मोहि उपराला तुमहि करेवौ ।।
जो तुमि हमिरौ वैरु न पाही। कैसे तुमि जीवो जगि माही ।।

तुमहि त्याग कौन पहि जाई। अपुनी विर्था किसै सुणाई॥
जो मोहि विर्था को करो उपराला। नाहि त हमिरो को नही हाला॥
मोहि कह्यो मन महि टहिरावो। सांईदास वेग उठि धावो॥९८

खर दूषन तिहि वलु अधिकाई। औरु सुबाहु सुणो मेरे भाई॥
खर नी अर तीनो वलिवाना। ताहि कह्यो इनि मनि महि माना॥
रघपत सौं युद्ध कर्ने धाए। अधिक सैना वहु संग ल्याए॥
तिन को नामु कहा वीचारा। चिर परि को नामु सम्हारा॥
ज्युं ज्युं धर्नी परि पगु धरही। युद्ध कर्नि को गवनु जु करही॥
मानो स्थावर गिरि पर्‍या। धर्नी धरि चितु डोलनि धर्‍या॥
धौल्हु कंपमान होइ रह्यो। दो पति द्रिष्ट कछू ना कह्यो॥
मो परि भारु सह्यो ना जाई। हे कौलापति संत सहाई॥
इहि विधि धौल मन महि वीचारे। कौलापाति विधि जाणनहारे॥
चले दैति वन माहे आए। महा वली तिहि वलु अधिकाए॥
चहू और आइ घेरा पाया। चाहित हर सौं युद्ध कराया॥
रघुपति लछमन कुटीआ माही। जानकी सहित ठांढे है ताही॥
जानकी जवि वनु द्रिष्टी आया। दैति अधिक द्रिग सौ निर्षाया॥
तव ही कह्यो सुण रघुराई। असुरो सैना अति उमिडाई॥
कैसे इनि सौ सन्मुष होई। कैस वीजु असुर का षोई॥
हमि थोड़े इहि है अधिकाई। इनि संग वलु हमि कछु न वसाई॥
तव ही रघपति नैन पसारे। असुर अधिक वनि माह निहारे॥
धन्ष वाण ले सन्मुख धाए। मारि वाण सभ असुर हिताए॥
काहू सीसु काहू कर काटा। काहू भुज काहू नकु काटा॥
काहू को प्रभ ने जीउ षोया। कोई दुःख पाइ मन महि रोया॥
काहू के पगि प्रभ कटि डारे। इहि विधि कर्के सभ ही मारे॥
छूटे सो जिनि द्रिष्टि दिषाई। औरु न छूटे को मेरे भाई॥
हरि समसर कहा कोई होई। हरि समसर दूजा नही कोई॥
तिन को हति फिर कुटीआ आये। सांईदास वहुता सुष पाये॥९९

जवि प्रभ इहि सभ असुर सिंघारे। धन्ष बाण कर्के हरि मारे॥
तव सूपनकि इहि मनि वीचारा। मोहि वीर वडे बली इनि मारा॥

इसि भुज महि वलु है अति भारी। एही विधि तनि मनि वीचारी ।।
अवि जावौ मै रावण ताई। उसि विनु वेरु लए कोई नाही ।।
चली चली रावण पहि आई। सभ विर्था तिहि आषि सुनाई ।।
दो तपसी वैठे वन माहे। तिन संग नारी एक सीता है ।।
अति सुंदर मंदर उजीआरा। जहां वसे मिटि जाइ अंधारा ।।
रव सस रूप तिहि देष लजावै। ताहि रूपु कछु कह्यो न जावै ।।
मेरे मनि महि एही आई। जवि मैं देषी सुंदर ताई ।।
इसि स्मसर मोहि वीर धराही। वनिता सुंदर तां कोई नाही ।।
किसी भांति करि इसे ले जावौ। रावण को षडि के दिषलावौ ।।
ताहि नारी सौ प्रश्नु चलाया। तांसौ इहि विधि आषि सुणाया ।।
काहे ईहा रूपु गवावै। भस्म अंग काहे को लावै ।।
इनि तपसी सों कहा प्यारा। मेरो कहा लेहु वीचारा ।।
काहे इसि वन महि दुःख पावै। काहे को मिर्गानु उढावै ।।
रावण नृपु तिहि बलु अधिकाई। कनक पुरी तांकी सुखदाई ।।
कनक पुरी महि राजु कराए। उहि तुम सुष देवै अधिकाए ।।
मोहि संग चले तुझै ले जावौ। कनक पुरी क्षिणमहि दिषावो ।।
तुमहि वस्त्र उहु अधिक उढावै। नाना रंग भूषन पहिरावै ।।
चोआ चंदन अधिक लगावहि। महा सुषी सुष वहुता पावहि ।।
जवि मै उसि कौ एहि सुनायो। एक तपसी को तव ही वुलायो ।।
एही विधि उनि उसि सौ भाषी। इहि वनिता मोहि इहि विधि आषी
तव मोकौ उनि भुज ते गहचा। मो कौ इहि विधि उनि ने कहचा
हे वनिता कहां इसे सुनायो। चाहिए इसि का चितु वौरायो ।।
इहि कहि नाकु कानि कटि डारा। चाहिति था वहु मो कौ मारा ।।
तव उनि वनिता उसे सुनायो। तपसी से तव मोहि छडायो ।।
मै खर दूषन पाहे आई। सकल वाति मैं ताहि सुनाई ।।
औरु सुवाहि पाहे भी भाषा। षरनीअर कौ भी आषा ।।
वहु सैना ले करि उठि धाए। उनि तपसी सो युद्ध कराए ।।
उनि तपसी उनि को प्रहारा। काहू कर काहू सीसु विडारा ।।
उनि को वलु तिहि नाह वसायो। उनि तपसी ने ओहु हिरायो ।।
तो विनु वैरु मोहि कौण लेवै। तो विनु सुषु मोकौ कौण देवै ।।

मोहि नाकु कानि कटि दीग्रा । इहि कर्णु तिहि तपसी कीग्रा ।।
कहा करो कां पहि जाइ ग्राषो । तुमि विनु विर्था कां पहि भाषो ।।
ग्रधिक दु:ख मै तासौ पायौ । हे वंधू ग्रवि ताहि सुनायौ ।।
हे वंधू हमिरो वैरु लीजै । सांईदास कछु ग्रवर न कीजै ।।१००

जव रावरा सुनी इहि विधि काना । ग्रति क्रोधु लीनो मन माना ।।
मानो सिंधु क्रोध पलोयो । मानो नैन रक्ति चुवोयो ।।
क्रोधु कीयो लोचन ललाए । कंप कंप करि फिरि ठहिराए ।।
घौलु ग्रधिक मन महि भौ माना । रावण क्रोधु मनि माहे ग्राना ।।
ताहि तेजु का रहि सह्यो न जाई । महा सूर्मा ग्रति वलि काई ।।
तिहि वल ने त्रैलोक कंपाए । थर हर थर हर मनु डोलाए ।।
क्रोधमान हो वचनु उचारा । तांका सकला कहों वीचारा ।।
कह्यो मरीच वुल्याइ ल्यावो । वेग विल्म तुम मूल नि लावो ।।
तव ही मरीच वुलाइ ल्याए । पलु छिनु रंचकि ढिल नि लाए ।।
तव ही मरीच सो कह्यो सुनाई । सुराहो मरीच हमारे भाई ।।
दो तपसी एक त्रीग्रा रहे । इसि वन माहे ग्रास्रमु लहे ।।
उनि तपसी ने इहि कर्मु कीना । कानि नाकु सूपनकि कटि लीना ।।
तव ही मरीच कह्यो सुणु राया । तपसी किंउ इहि कामु कमाया ।।
इहि वीचारु नृपि मोहि सुनावो । छिनु पल रंचक विल्मु न लावो ।।
तव रावरा सभ वाति सुराई । सुराहु मरीच हमहि सुषदाई ।।
सूपनकि चली गई वनि माही । जानकी रामचंदु सो जाही ।।
ग्रौरु लछमणु रघपति को भाई । वन महि तिह नै कुटी बनाई ।।
जानकी रूपु महा उजीग्रारा । तिमर को नासु करे तत्कारा ।।
रवि तांसौ समसर ना होई । दूजा रूपु समसर ना कोई ।।
ताहि देह कोमल मेरे भाई । तासि देहि वनि भस्म लगाई ।।
ग्रंवर त्याग मृगानु उढायो । ग्रनरस वांछ कंदमूल पायो ।।
तांसौ सूपनकि वचनु सुनाया । हे जानकी क्या रूपु कराया ।।
तव ग्रंगु कोमल पुसपुन होई । तोहि स्ससर दूजा नही कोई ।।
तोहि रूपु देषि भान छपि जावै । ताहि रूप सस वदन दुरावै ।।
किहि प्रयोग इहि भेषु बनायो । किहि प्रयोग ग्रंग भस्म लगायो ।।

अंबर त्याग काहे तै दीए। अंग मृगानु उढाइ किउ लीए ॥
इनि तपसी संग क्या तेरो कामा। मोहि कहा सुरण ले तूं भामा ॥
मोहि वीर लंका को राजा। सकल जगत तांकौ मुहिताजा ॥
सुर नर ऋषि मुनि ताहि ध्यावहि।
ताहि कह्या मनि महि ठहिरावहि।
मोहि संग चलें तुझै ले जावौ।
आप वीर ग्रहि तुझै षडि ठहिरावौ।
महा अधिक सुषु तहा तूं पावहि।
हे जानकी जो माहि संग आवहि।
अंबर नाना तोहि उढावहि।
भूषन अनक तोहि पहिरावहि।
जो मुख मांगै षावरण कौ देई।
तेरो कह्या मनि महि धरि लेई।
हे जानकी काहे दुःख पावहिं।
मो संग किंउ नाही तूं जावहि।
इहि तपसी तुमि को क्या देवहि।
निसि दिन किंउ दुःख मनि महि लेवहि।
जबि सूपनकि इहि बात सुणाई। जानकी लछमन लीओ वुलाई ॥
ताहि कह्यो मोसो ऐसे आषे। इहि विधि सूपनकि मो सो भाषे ॥
तव लछमन सूपनकि सो कह्यो। हे सूपनकि क्या तैने कह्यो ॥
जा हिति जानकी कौ वौराई। कहा वात तै इसे सुनाई ॥
एहि विधि कहि नाकु कानि कटि डारा। सुन हो मरीच एही वीचारा
कित विधि वैरु ताहि सो लेवहि। किंउ जानकी तांसौ हिरेवहि ॥
तव मरीच ने वचनु सुनायो। हे नृप तुमि क्या मनि ठहिरायो ॥
जो कछु तुमरे होइ वीचारा। सोई हमि करहै तत्कारा ॥
तव रावरण ने बचन उचारा। हे मरीच मोहि एहु वीचारा ॥
कनकमिर्गु तुमि होइ करि जावहु। अपनो रूपु तुमि ताहि दिषावो ॥
तुमिरो रूपु वहु देषि लुभाए। रामचंदु तुमि पाछे धाए ॥
जवि रघुपति तुमि पाछे आवै। वानु गहै करि तुमहि चलावै ॥
तूं कहे रामचंदु मै मारा। एहि वाति तुमि कहो गटकारा ॥

लछमनु कर्नि आवै उपिराला । जानकी कोई न होइ रखिवाला ।।
मै जानकी कौ हिर ले आवौ । वेग विल्म तुम मूल न लावौ ।।
तव मरीचि ताकों प्रतु दीना । हे नृप कहा तै मनि महि लीना ।।
विस्वामित्र जवि यज्ञ रचायो । हमहि भृष्टि कर्नि चितु लायो ।।
हमि जाहि यज्ञु भृष्टि करावहि । करि भृष्टि यज्ञ तिहि भर्मावहि ।।
श्री रघपति कौ ऋषु ले आया । यज्ञ समे तिहि आरण वहाया ।।
हमि यज्ञ भृष्ट कर्नि चितु धरचा । रघपति धन्षु बारण हय भरिआ ।।
हमि कौ ऐसे वारण लगाए । हमि वलवान सभे हिरवाए ।।
अवि लगि वलु हमि ठौर न आवै । हमिरो पगु धर्नि ना ठहिरावै ।।
रघपति नाम सुणहि जवि काना । कंपमान होवति हमि प्राना ।।
कैसे करि तिहि सन्मुख जावहि । तिहि आगे किउ करि ठहिरावहि ।।
हे भूपति इहि कामु न मेरा । सांईदास मै तुमिरो चेरा १०१

रावरण नृप फिरि वचनु उचारा । हे मरीच तैं क्या मन धारा ।।
जवि तुमि भृष्टि कर्नि जगु धाए । श्री रघपति तव यग्य परि आए ।।
तिहि समे राज को वलु तिहि पाई । भोजनु कीनो तिहि समे पाई ।।
वस्त्र भले तव अंग हंढावै । मनु माने सोई ले षावै ।।
दुःख सुष तव कोऊ न लागो । सभ विस्वासु हृदे दे भागो ।।
अवि वनि रहै कंद मूल षावै । ले मृगानु वहु अंग उढावै ।।
दुःख घरणो तिह सुष नही कोई । हे मरीच कहो सुरण सोई ।।
मन महि कछू न करो त्रासा । हृदे धरि गोबिंद की आसा ।।
चले चले वनि माहे जावो मिरगु कनक होइ ताहि लुभावो ।।
इहि विधि मैं तुमि दीई वताई । श्रवरण धार सुण ले मेरे भाई ।।
मोह कहे अंतरा उन आनो । हमिरो कह्यो सत् करि जावो ।।
तात्काल जाओ वनि माहि । सांईदास तहा मो कछु नाही १०२

फिरि मरीच तिहि वचन सुनायो हे रावरण नृप कित चितु लायो ।।
जैसे पंडित बाल पडावै । तैसे तूं मोको स्माभावै ।।
मैं नही वाल्लु जो लिख लेवौ । तोहि सिखले जाइ जीउ देवौ ।।
एहि जु तैने कह्यो पुकारा । तव इनि राज को वलु अति भारा ।।
छत्री प्रकार को भोजन पायै । अंवर नाना अंग हंढावै ।।

अवि तो कंद मूल अहारा। अवि को वलु नाहि अधिकारा ॥
हे नृप जिहि वलु होइ सो होई। तांको वलु षसि लए न कोई ॥
महा गम्भीर पर्म पुर्षायिण। जांकी उस्तित कही न जायण ॥
घटि घटि माही इसे प्रकासा। घटि घटि अंतर षेलु तमासा ॥
मैं इसु सन्मुख किउ करि जावौ। सन्मुख जावौ वलु नही पावौ ॥
मोहि पग आगे को नही जावै। डर्पिमान होइ पाछे धावहि ॥
जैसे मृगु निर्ष सिंह ताई। ग्रह तजि भागनि को चितु लाई ॥
वाज को निर्ष जैसे षगु भागे। तेजवानि होइ उडवण लागे ॥
जैसे तंत्र मंत्र के आगे। जिन्न परी सभ ही उठि भागे ॥
जैसे जंपक[1] स्वान निहारे। वनि महि भागनि को चितु धारे ॥
जैसे नर को रव सुत त्रासा। उोषद अध्कि करे सुष प्यासा ॥
जैसे रवि प्रकास तिमरु मिट जाई। तिमरु को वलु रवि नाहि वसाई ॥
तैसो वलु मोहि तिहि नही लागे। हे नृप ताहि देषि मनु भागे ॥
कहु कैसे करि सन्मुख जावौ। कहु कैसे मनि को ठहिरावौ ॥
मोहि पे धीर्जु धर्‍यो न जाई। हे रावण मैं आषि सुनाई ॥
जांसो वलु कछु नाहि वसाई। कहु कैसे तिहि करहि लराई ॥
जो आपसि ते होवे बलवाना। हे नृप तिहि कैसे करहि हाना ॥
सिंह सन्मुख कपि मिर्गु न होई। सांईदास आषै अवि सोई १०३

रावण कहचा सुणहो मेरे भाई। कौनु वाति तुमि मनि ठहिराई ॥
तुमि संग उनि का कछु न वसावै। कंद मूल सौ षुध्या मिटावै ॥
तांका वलु एता कहा आयो। जो तुम को वहु सके हितायो ॥
अवि तुमि जावो विल्म न लावो। मेरो कह्‌यो मन महि ठहिरावो ॥
तव ही मरीच ने कह्यो पुकारा। तहा रावण नही कामु हमारा ॥
मै जावो मनु नाही जावै। विनु आग्या मनि पगि किउ धावै ॥
जवि राजा आज्ञा ना देवै। तन को कौणु उठाइ करि लेवै ॥
सैना ताहि वाहिर नही जावै। जवि राजा आज्ञा करि लेवै ॥
सैना तिसि घटि उठि सेवै ॥
जहा राजा जावै तहा जाही। तिह बिनु नगर महि ना ठहिराही ॥

1. जंपक < ज़ंबूक = गीदड़।

तैसो मनु राजा मेरे भाई। इहि विधि मै तुमि आषा सुणाई।।
बिनु आग्या इस पग किउ जावहि। सांईदास विधि वेग बतावहि १०४

जबि मरीच इहि वाति सुणाई। रावण तवि इहि मनि ठहिराई।।
मोहि कह्यो माने इहि नाही। इनि कछु और लीयो मन माही।।
इसि कौ त्रासु देवौ अधिकाई। त्रासु पाइ तब ही उठि धाई।
रावण तांसौ कह्या पुकारा। हे मरीच तै क्या मन धारा।।
वेग न लावौ उठि करि तुमि धावो। कनक मिर्गु होइ ताहि दिषावो।।
जो जावहि तौ वहु भलो भाई। इहि विधि तुमि दोई बताई।।
नाहि त अवि ही मै तुझो मारो। पकरौं पगो तै धर्नि पछारो।।
अवि ही मार जीउ तेरा लेवौ। वेग विलम कछु नाहि करेवौ।।
जो अपुनो कछु वहु भलो चाहे। कनक मिर्गु होइ तिहि पहि जाहै।।
तंहां तोहि दुख सुषु कछू नाही। जो भलो होइ सो ले मनि माही।।
मतु पाछे कहे मोहि न कह्या। विनु आषे हमिरो तनु दह्या।।
अवि मै तुमि कौ कहों सुनाई। सांईदास सुण ले मेरे भाई।।१०५

तव मरीच मनि माहि वीचारा। नृप रावण मनि महि उर धारा।।
जो नही जावौ मारि चुकावै। जो जावै मनु वहु दुःख पावै।।
दोई कठिन वनी क्या कीजै। कौन वाति मन महि धरि लीजै।।
जो इहि मारै औगति जावौ। वार-वार जूनी भर्मावौ।।
जो रघुपति कर्त हनि प्राना। मुक्ति होवौ मिटै आवण जाना।।
एहि भलो हरि सन्मुख जावौ। इहि बुरो इसि थी मृतु पावौ।।
तब रावण सों कह्या सुणाई। काहे क्रोधु करों मेरे भाई।।
जो तुमि कहो सोई मै करिहौ। और वाति किते चित्तु न धरिहौं।।
जिहि विधि करि तुमि वहु दुःख पावो। सुख त्याग दुःख के घरि आवो।।
सौ विधि हौं काहे कौ करिही। सो विधि कर्ने किउ चितु धरिही।।
काहे नृप तुमि क्रोध धरि आवो। कित प्रयोग तुमि शांति तजावो।।
हमि तुमि सैना तुमि बडे भाई। सांईदास तुमि सदा सहाई।।१०६

जबि रावण इहि विधि सुणी काना। अति अनंद तव ही मनु माना।।
तव ही मरीच सो वचन सुनायो। हे मरीच चितु वहु भलो लायो।।

धंन्न धंन्न है मत्त तुम्हारी। मोहि कहचा घटि लीजो वीचारी ।।
जो तुमि कहो सोई कछु देवौ। तोहि कहो मन महि धरि लेवौ ।।
तूं आगे चलु मै पाछे आवौ। वेग विलम मै ना कछु लावौ ।।
कनक मिर्गु मरीच हो धायो। चलति चलति वनि माहे आयो ।।
जहां राम जी कुटी बनाई। ताहू निकट गयो मेरे भाई ।।
रावरण तांका पाछा कीना। वनि महि आइ दुराइ आप लीना ।।
जानकी जलु लेने को धाई। चली चली जल के तटि आई ।।
जलु ले कुटीआ को पग दीने। कनक मिर्गु निर्ष द्रिग लीने ।।
जानकी मन अभिलाखा होई। सभ ब्रितु कहो मै सोई ।।
जो मृगु इहि को हनि करि ल्यावै। ताहि तुचा मेरे मनि भावै ।।
तिसी तुचा की कुंचकी बनावौ। सोई कुंचकी अंग उढावौ ।।
जलु ले कुटीआ माहे आई। श्री रघपति को कह्यो सुरगाई ।।
हे प्रभ कनक मिर्गु हनि लेवौ। मृग कौ हनि तुच इसि मोहि देवौ ।।
ताहि कुंचली भली सुहावै। हे रघपति इहि मोहि मनि भावै ।।
तव श्री रघिपति ताह सुनायो। हे जानकी क्या चितु लुभायो ।।
अैसो मिर्गु कवनाहि उपायो। कवहू द्रिग सो ना निर्षायो ।।
इहि कछु छलन वलन ईहा आयो। एसो मृगु मै नाहि उपायो ।।
इसि की चिंता मनो त्यागो। इसि चिंतामार्ग ना लागो ।।
कनक मिर्गु एय ही देषाई। हे जानकी स्मभु स्मझाई ।।
मेरो कह्या मन धरि लीजै। इसि मृग देषन चित्तु न दीजै ।।
इहि मृगु हमिरे काम नि आवै। काहे इसि देष चित्तु लुभावै ।।
इसि मृग मारि क्या हमि लेवहि। सांईदास इहि चित्तु न देवहि ।।१०७

जवि श्री रघिपति एहि सुनायो। जानकी प्रतु तवि तासु बतायो ।।
जवि तुमि रच्यो नही मृगु ऐसा। एहि मृगु प्रगटि भयो प्रभ कैसा ।।
जवि तुमि इह मृगु कवहू न देष्या। अवि कैसे प्रभ द्रिग सो पेष्या ।।
जो इहि छलनि वलन हमि आवै। केतक वलु हमि को छलि जावै ।।
तुमि इसि मार्ग ताई हनि लेवहु। कृपा करो तुच इसि हमि देवहु ।।
उौर उौर काहे किछु आषो। अैसी विधि तुमि काहे भाषो ।।
अैसे कहो हमि हन्यो न जाई। हमिरो बलु इसि सो न वसाई ।।

उौर वाति कहि काहे दुरावो। उौह वाति प्रभ काह चलावो ॥
तव श्री रघपत कह्यो पुकारे। इहि वलु क्या जो जाइ न मारे ॥
एक वाण सों इसि हनि लेवौ। द्वितीया घाउ इसि अंग न देवौ ॥
तै जानकी क्या मन महि धारा। कौन वाति मन लई वीचारा ॥
इहि विधि मै तब तोहि वताई। घटि अपुने मै सोझी पाई ॥
अपूर्व मृग द्रिष्ट मोहि आया। इहि विधि मृगु मै नाहि रचाया ॥
तव जानकी कह्यो सुण रघुराई। किउ नही हन्यो जो हन्यो जाई ॥
तव जानकी एहि वाति चलाई। रघपति तव मनि महि ठहिराई ॥
जाण बूझि रघुपति बौराना। कर महि लीआ धन्षु अरु वाना ॥
धन्षु वाण ले तेहि पाछे धायो। लछमन जानकी पाहि वहायो ॥
मृगु लीए लीलीए केतक गयो। एक विर्छ के जाइ उोल्हे भयो ॥
तहा जानकी लछमन दिष्ट न आवहि। कूक करी तव वहि सुण पावहि
श्री रघुपति तव धन्षु संभारा। चाहति कनक मृग कौ मारा ॥
जो रघुपति सरधनि दिषावै। कनक मृगु तव गगनि को धावै ॥
जौ प्रभ गगनि उोर सर ल्यावै। कनक मृगु पताल कौ जावै ॥
जो प्रभु सरु ले पाताल निहारे। वहुरो मृगु मध्य चितु धारे ॥
कनक मृगु तव हन्यो न जाई। सांईदास रघिपति चित आई ॥१०८

पाताल अरु मध्य गगनि चितु राषा।
वाणु लीयो ले कर महि राषा।
कर ते छाडि वानु मृगु मारा।
तिह समे मृग ने एहि पुकारा।
मै तो रामचंद कौ मारा।
करि वलु अपना ताह प्रहारा।
तब ही जानकी ने सुण पाया।
लक्षमन सो तव आष सुणाया।
हे लछमन कछु विधि सुणी काना।
हनि लीए किने मेरे प्राना।
श्री रघिपति के पाछे जावों।
ताहि षवरि मोहि आण सुणावो।

किन ही रघिपति को हनि लीआ।
इहि विस्वासु मेरे मन कीआ।
छिन पल विल्म तुमि मूल नि लावो।
श्री रघिपत के पाछे जावो।
कहा भयो तहा क्या कछु होया।
मोहि मनि अवि विस्वासु है पोया।
अवि ही किनि ही एह पुकारा।
श्री रघिपति कौ मैंने मारा।
हे लछमन जावो तत्कारा।
कहा कर्ति है मनि वीचारा।
मेरो कह्यो हृदे महि ठहिंरावौ।
सांईदास छिनु विल्मु न लावौ।१०६

लछमन फिरि तांको प्रतु दीना। हे जानकी तै क्या मनि लीना।।
अैसो कौरण जो रघिपति मारे। अपुने वलि कर राम प्रहारे।।
अैसो हमि सूझति कोऊ नाही। सोच वीचार रह्यो मन माही।।
प्रानपति को कौणु हताई। वलकरि रघुपति हन्यो न जाई।।
अैसा को मोहि द्रिष्ट न आवै। जो श्री रघपति कौ हति जावै।।
सकल जीइ उतति है ताकी। कौनु बराबरि करे कहु वांकी।।
जो कोई अनल अनीलि कौ मारे। सो भी रघपति नाह प्रहारे।।
आत्मु किसि पहि हन्यो जाई। वह पूर्ण पद रघिपति राई।।
त्रैलोकि मिल करि जो आवहि। सो भी रघपति हन न पावहि।।
ब्रह्म विष्णु महेस जो आवै। दूरो देष नमिस्कारु करावै।।
श्री रघपति तिह सर ना कोई। कहु तिहि हनिनो कैसे होई।।
लछमण ने जवि एहि पुकारा। सांईदास मन महि वीचारा।।११०

जनक सुता कह्यो लछमन ताई।
हे लछमण कछु सुणओ नाही।
मोहि श्रवण इहिं विधि सुणि पाई।
सो मै तुमि सौ आषि सुणाई।

किनही रघिपति को प्रहारा।
मोहि श्रवरण सुनि मनु इहि धारा।
जो तुमि भला करो तब जावौ।
श्री रघिपति को वेग ल्यावौ।
नाहि त निकिस जाहि मोहि प्राना।
ऊौरु वाति मै कहा वषाना।
तिमरु भयौ मोहि नैनो आगे।
विनु रघिपति वहु नाही भागे।
जैसे वादर रवि को छावै।
सकल जगति अंध्यारा पावै।
जवि लगि पवन मंडलु नही आवै।
तव लगि वादर दूरि न जावै।
जवि ते अग्नि मंडल प्रगटावै।
वलि अपुने करि बादल बिघरावै।
मोहि द्रिग आइ आइ बैठो है छाई।
मोहि द्रिग मै कछू नाहि सुझाई।
अ: रघपति अनल आबै मोहि पाहे।
वियोग वादल हमिरे विघराहे।
अवि मै तुमि को आषि सुणायो। सांईदास मै वैठा वतायो ॥१११

लक्ष्मरण जानकी फिरि समिझावै। अनेकि वाति वहु ताहि वतावै॥
हे जानकी तू भई इयानी। कौन वाति मनि अंतरि आनी॥
सिंह को त्रासु कौनु मृगु होई। सिंह समान मृगु नही कोई॥
वाजु कौनु षग ते डरु पावै। तिहि स्मसर को वलु न धरावै॥
श्री गोपाल भक्तिनि सुषदाई। ताह सर कहु जग कौनु कराई॥
फिरि फिरि कहे तुमहि झवि जावो। श्री रघिपत की ओर सिधावो॥
मोहि चितु ना डोलति कैसे जावौ। तुझै त्याग कैसे उठि धावौ॥
जवि लछमनि एहि कहचा पुकारा। ता को जानकी दीयो वीचारा॥
हे लक्ष्मरण तै इहु मनि आना। मनि अपुने सहिज कर जाना॥
रघिपति को हते मै इसि लेवौ। पूर्न वांछा मनहि करेवौ॥

इहि प्रयोग तूं नाही जावै। मनि माहे तूं कपटु कमावै ॥
जो तुमि इछा हो करो सोई। सांईदास होवरण हो सो होई ॥११२

जवि जानकी इहि वाति सुरणाई। लछमन क्रोधु कीयो अधिकाई ॥
करि क्रोधु तिनि वचनु उचारा। हे जानकी तैं इहि मन धारा ॥
एहि विधि कहि मोहि वाणु लगायो। अंतरु वाहर सकल जलायो ॥
लक्ष्मरण कह्यो पुकारे ताही। करी पुकार ताहि रवि पाही ॥
हे रवि जी मोहि साषी होई। एहि साष मैं तैं कहोई ॥
कीई कार अंतर वहिर हे। वाहर पगु धरै तनु मनु दहे ॥
जानकी इहि मोहि वचनु सुनायो। मोहि कर्नि को तुमि चितु लायो ॥
इहि प्रयोग जावो तुमि नाही। श्री रघिपति कौलापति पाही ॥
इहि चानकि इनि मोहि लगाई। मौ पहि चानकि सही न जाई ॥
जो कछु विघ्नु होइ नाही जानो। इहि विधि मैं तुमि पाहि वषानो ॥
मैं जावति हौ रघवीर पाही। अवि इसि ठौर रहो मैं नाही ॥
रवि को लक्ष्मरण साक्षी कीआ। जानकी उौरि कार तिनि दीआ ॥
कुटीआ त्याग तव ही उठि धायो। सांईदास रघुपति पदि आयो ॥११३

रावण जोग भेषि करि लीना। जानकी हिर्ने को पगु दीना ॥
चल्यो चल्यो आयो कुटीआ पाहे। निर्ष्यो तपसी को घरि माहे ॥
नाथ नाथ कर मुखो पुकारा। जागे नाथु सो वे संसारा ॥
हे माई भिक्षा कछु ल्यावो। भिक्षा कछु हमिरे पत्र पावो ॥
जानकी कछु भिक्षा ले आई। रावरण तांकौ कह्यो सुनाई ॥
वांधी भिक्षा काम न आवे। मैं नही लेवौ मनु सुकचावै ॥
जो वाहिर आइ देवै माई। हिर्षि मान होइ लेवौ साई ॥
जानकी कह्यो वाहिर ना आवौ। विनु आज्ञा कैसे पगु पावौ ॥
लछमन मोह गयो कह भाई। वाहरि पगु देवरणा नाही ॥
रावण तव कह्यो स्रापु लगावौ। विनु भिक्षा लीनी उठि जावौ ॥
जव स्रापु को लीनो नामा। जानकी दुःखत भई अंतराना ॥
कार त्याग भिक्षा ले आई। श्रापु न देहि मोहि सह्यो न जाई
चामि षालि महि ले करि डारी। उौरु वाति कछु हृदे न धारी ॥
ताहि लीए पग मग महि दीए। कनक पुरी को तिन पग कीए ॥

श्री रामचन्द्र जवि वीरु निहारा। लक्ष्मण सौ तव कह्यो पुकारा ॥
हे लछमन तैंने क्या कीआ। जानकी उौर त्याग किउ दीआ ॥
असुर फिरति वन महि अधिकाई। जानकी को कोऊ हिरि ले जाई ॥
जानि बूझ तूं भर्म भुलायो। हे लछमन क्या मन ठहिरायो ॥
इसि का मो को देहि वीचारा। सांईदास तै क्या मन धारा ॥११४

लछमन नैं ताको प्रतु दीना। हे रघिपति मै इहि मन लीना ॥
जवि तुमि कनक मिर्गु हनि लीआ। हतनि समे मृग भाषा कीआ ॥
मैं हति लीनो रघिपति ताई। बलु अपुनो कर्के अधिकाई ॥
मिर्ग वचनुं सीता सुण पायो। मौ सौ तिन ने वचनु सुनायो ॥
हे लछमन तूं भी उठि जावो। श्री रघपति की उौरि सिधावो ॥
श्री रघिपति को किन हनि लीआ। इहि कार्णु किन ने हे कीआ ॥
मोहि मन उपज्यौ विस्वासा। मोहि मुख ते निकसति नही हासा ॥
हे प्रभ मैं कह्यो जनक सुता है। रघिपति कह पैं हन्यो न जाहे ॥
अनेकि अनक विधि कहि समझायो।
मोहि कह्यो तिन मनि नही भायो ॥
चानकि वानु ताहि मोहि लायो। मो सों अैसे वचनु सुनायो ॥
तूं चाहित को रघपति मारे। मन माहे तूं एहि वीचारे ॥
पाछे जानकी को मैं लेवौ। ता संग भोग विलास करेवौ ॥
हे प्रभ हमि इहि वचनु सुनायो। रवि कौ साषी तवि करायो ॥
इसि प्रजोग मैं तिहि तजि आया। सांईदास मोहि वाणु लगाया ११५

मृगु मारि कुटीआ को धाए। सस बुढायो तिमर प्रगटाए ॥
क्या निर्षहि जो जानकी नाही। इहि निर्षि वहु मन पछताही ॥
जाण बूझि हमि कीउो कामा। मुखि ते कह्यो पूर्न प्रभ रामा ॥
जैसे फूल जल विनु कुमलावैं। जैसा भूषा भोजनु पावैं ॥
जैसे डारी रूपु गवाए। मन माहे वहुता पछुताए ॥
जैसे पिंगुला कर पग ताई। मनि माहे रोवति अधिकाई ॥
जैसे सीआह गोसे षराना। मन माहे होवति हैराना ॥
तैसे रघिपति रहे विस्माई। कहा वीचारु सुनावौ भाई ॥
विस्म भए विस्मक ठहिरानो। अति वियोग ताहू मन मानो ॥

कहा होइ पाछे पछुताए। कहा होइ जो समा सिधाए॥
महा अधिक दु:ख रघिपति पायो। जवि जानुकी द्रिग ना हिर्षायो॥
अति वियोग भयो मनि माही। सांईंदास कछु कह्यो न जाही ११६

रावण जानकी को ले धाया। केदहि ने इहि विधि निर्षाया॥
केदहि रावण के सन्मुख आया। युद्ध कर्नि को तिह चितु लाया॥
रावण केदहि के दहि नृपु मारे। दोई वलवान कोई न हारे॥
केदहि अनक युद्ध नृप सौ कीना। किन हू तिन से हार न दीना॥
केदहि रावण को जान न देवैं। आगे पग धरि युद्ध करेवैं॥
रावण कह्यो अवि क्या कीजै। किउ करि पगु मग आगे दीजैं॥
केदहि मो कों जाण न देई। मो सौ युद्ध कर्नि चितु लेई॥
युद्ध कीए इसि नाह हिरावौ। कैसे करि आगे कौ धावौ॥
जो रहो ठांढा रघिपतु आवै। क्षिण माहे मोहि मार चुकावै॥
जानकी कह्यो मै तोहि लंघावौ। इहि विघ्न ठौर सों पारि परावौ॥
जो मो सो इकु वचन करावहि। ताहि वचन ऊपरि ठहिरावहि॥
रावण कह्यो कहो जो बाई। जो तुमि कहो करो मै साई ११७

जानकी तव ही वचनु उचारा। सुन हो रावण नृप अति भारा॥
मै तुमि सौ प्रतज्ञा करहो। तिहि प्रतज्ञा महि चितु धरहो॥
मोहि निकटि तूं आवै नाही। अष्ट मास लग सुणु मैने नाही॥
जो अष्ट मास लगि रामु न आवै। करु पाछे जो तोहि मन भावै॥
रावण एहि प्रतज्ञा धारी। जो जानकी मुख आप उचारी॥
मन अंतर जानकी लीउो वीचारा। मोहि वीचारु एहि मन धारा॥
रावण को तिन दीयो वताई। सुण नृप रावण मनि चितु लाई॥
रक्त काढु तनि अपुनै केरी। इहि मति सुण लेवहु तुमि मेरी॥
ताहि रक्त सों वाटि लिवारहु। गेदहि के उदरि वेगही डारहु॥
जवहि वाटहि गेदहि उदर जावहि। गेदहि उदर वहु भारु करावहि॥
गेंदि को वलु तव कछु न वसाई। तव मो को ले चलु तू धाई॥
जवि रावण इहि विधि सुणी काना। हर्षिमान होयो तिहि प्राना॥
अपुने तन सो रक्ति निकारा। वाटि लीयो ले ताहि लिवारा॥
गेदहि ओरि डार्र करि दीआ। गेदहि वाटि ले उदरि महि कीआ॥

केतकि वाटि रावण अैसे डारे। गेदहि उदरि महि वहु भए भारे॥
गेदहि ठौर उठिणु फुनि त्यागा। रावण तव अपुने मग लागा॥
रावण तव आगे पग दीने। गेदहि त्याग गवनु उनि कीने॥
आगे खसांति प्रगटाए। जानकी तांने द्रिग निर्षाए॥
आइ चुंच रावण सिरि मारी। रावण घाउ लगो तन भारी॥
अधिक दुःख रावण को होया। सकल सुषु रावण तव षोया॥
अधिक युद्ध वां संग तिनि कीना। पंष तासि रावण कटि दीना॥
पंष कटे तिहि वलु न वसाए। कैसे कर वहु युद्ध कराए॥
तांको जीत आगे को धाया। कनकपुरी सेती चितु लाया॥
जानकी मग जावति क्या कीआ। कहूं कुछ कहू कुछ डारि के दीआ
मतु श्री रघिपति इहि मग आवै। मोहि वाता मन महि ठहिरावै॥
इसि मग जानकी खडी दुराई। मतु हमिरे पाछे वहु आई॥
इहि प्रजोग वहु डारति जाई। इहि ब्रितांतु सुण हो मेरे भाई॥
रावण चलि लंका महि आए। सकल सैन ने इहि सुण पाए॥
रघिपति भर्जा इनि हिरिआनी। कनकपुर सकली इहि जानी॥
सभु सीता को देषिनि आई। निर्षि रूपु सभि जाहि भुलाई॥
सीता कौ तिन जाइ बहायो। एक फुलिवारी मांहि ठहिरायो॥
निसवासर सीता ऊहा रहे। राम व्योग हृदे महि सहे॥
सुरपति सैना ताही आई। कछु सहाइ तिस भूषि गवाई॥
जानकी भूषि त्रास ना ग्रासे। छिनु पलु जानकी मुषो न हासे॥
सुर फिरि गयो अपुनी ठौरा। हे साधो सुणो कह्यो मोरा॥
जानकी वचनु सुनाई सिधारे। कछु विस्वासु हृदे ना धारे॥
है जानकी रघिपतु छिन आवै। इसु पापी को मारि चुकावै॥
दीयो संतोषु सुरपति उठि धाए। चलति चलति अपने ग्रहि आए॥
रावणु भर्जा असर पठेवै। जानकी बुद्धि फेर्नि चितु देवै॥
जाननी[1] तांको कछु न कहाए। जो फलि तिहि सौ धर्नि गिराए॥
ताहि मत सीता ना लेवै। ताहि कह्यो मनि नाहि धरेवै॥
जो वहु कहे सो चितु न जाने। तांको कह्यो कछु मनु ना माने॥

---

१. यहां शब्द जानकी चाहिए।

निसि वासरि उनि को इहि कामा । मिलि करि आवहि असुर की भामा
जल को कोई मैलु न लागै । सो जनु सदा सुखी जो जागै ॥
साधि भाउ चोरु सिषि लेवै । चोरु भाउ साधू नही लेवै ॥
अग्नि माहि जो कछु तुमि डारो । अपुने मन महि लेहु वीचारो ॥
सभ कौ क्षीण महि अग्नि जलाए । अग्नि दुःख लागै नही आए ॥
त्रिणु लकडी जो जल महि पावै । षिन महि जलु ताहि रुढावै ॥
जैसे त्रिणु लकडी रुढि जावै । कछु जनक सुता मन ना ठहिरावै
जन्क सुता स्मिरे रघुराई । सांईदास प्रभ सदा सहाई ॥११८

कहे मदोदर रावण तांई । सुणु मोहि वाति लंक के सांई ॥
काहे जानकी को ले आया । किहि प्रयोग इहि कामु कमाया ॥
तोहि मत्ति हीण किउ होई । अकल मति तैने सभु षोई ॥
श्री रामचंद्र त्रिभवन के राया । सकल जग्रति हि षेलु रचाया ॥
क्षिण महि उतपति सभ करि लेवै । क्षिन महि सकल संहारु करेवै ॥
तांकी भर्जा तै हिरिआनी । हे मतिहीण क्या मनि ठहिरानी ॥
अवि ही आवै तोहि विडारे । कनक पुरी तुमिरी उभु जारै ॥
मारि जीउ तुमिरो वहु लेवै । महा अधिक दुःख तुमि को देवै ॥
तव पछुतावहिगा मनि माही । किहि प्रजोग विरोधु कमाही ॥
सांईदास जानकी ले जावो । रघिपति आगे षडि ठहिरावो ११६

रावण फिरि करि वचनु सुनायो । हे मद्दोदरि क्या उचिरायो ॥
मोहि सर दूजा कौणु कहावै । इसि धरि परि को द्रिष्टि नि आवै ॥
ते मनि महि कहा लीजो वीचारी । ते विधि जानी नाह हमारी ॥
त्रैलोक मै बंदी पायो । मोहि सम दूजा को नहि प्रगटायो ॥
दस सिरि बीस भुजा वलु भारी । कहु को रीस करि सके हमारी ॥
रघुपति त्रासु तूं मोहि दिषावै । वडो वली तूं मोह वतावै ॥
छिनि महि तांको मैं प्रहारो । केतकि वलु उनि को मै मारो ॥
अवि सीता को कैसे देवौ । कैसे तिस को त्रासु करेवौ ॥
रामचंद मोहि नामु सुनावै । नामु सुनाइ करि मोहि डरावै ॥
मैं काहू कों त्रासु न करिहों । त्रासु काहू का नाम नि धरिहो ॥

कनक पुरी महि हमिरो डेरा। को आइ सके हमारो नेरा॥
वढो त्रासु ते मोहि दिषायो। सांईदास रावण उचिरायो १२०

फिरि मद्दोदरी नृप सौ भाषा। हे रावण तै क्या चित राषा॥
दसि सिर बीस भुजा को जाने। इहि अभिमानु हृदे महि आने॥
मोहि दसि सीस कौनु विडारे। बीस भुजा मोहि कौनु उपारे॥
हे नृप काहे भर्म भुलावै। मेरो कह्यो किउ मनि नही ल्यावै
एकु सरीर संग राम जीत आवै। सकल सैना को एकु हिरावै॥
जैसे मिर्गु होवहि इकि ठौरा। सिंहु जीति ले तिहि इकि भोरा॥
जेवकि अधिक होवहि बनि माही। स्वान एकि तिहि उदर फराही॥
एकु भारु काष्ट जो होवहि। रंचक दावा सभही षोवहि॥
कष्ट अग्नि भस्म करि डारे। ऐसे रघुपति तोहि विडारे॥
दसि सिरि बीस भुजा तुमि षोवहि। तव पाछे रावण तै रोवहि॥
जो तू अपनो भला चाहे। जानकी सहित लेइ तूं जाहे॥
पगि लाइ जाइ राम मनावहि। सांईदास अधिक सुषु पावहि ॥१२१

मदोदरि ने जवि वचन उचारा। अति क्रोधु रावण मनि धारा॥
हे मदोदरी मति वौराई। तुमरे मनि महि क्या है आई॥
ऐसो को दसि सीस विडारे। ऐसो को मोहि भुजा उपारे॥
मोहि नामा त्रैलोक मंझाई। रघिपति त्रासु कहा मै पाई॥
त्रैलोकि मोहि डर डर्पावहि। हे मदोदरी मोहि डरावहि॥
मै तो त्रासु किसै करो नाही। सदा अनंदु हमिरे मन माही॥
मै जानो तोह मत्ति हिराई। जो तै इहि विधि मोहि सुणाई॥
मै काहे सीता ले जावो। चर्नि लाग मै ताहि मनावौ॥
इहि विधि हमसौ कबहू न होई। इहि विधि कबहू करे न कोई॥
ऐसे आपस महि झगिरावहि। वहु उसि इसि इसि आष सुणावहि
झगिरा अधिक कयो अपि माही। किसे कह्यो कीऊ माने नाही॥
गई मदोदरी जानकी पाही। सोच विचार कियो तिन ताही॥
हे जानकी रावण बलकारी। दसि सिर बीस भुजा वलु भारी॥
ताहि संगु काहे ना लेवै। आइ भाउ तिस किउ ना देवै॥
महा वली तुमि कौ इहि ल्याया। मोहि पति कौ वलु है अधिकाया॥

मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावौ। रावण नृप सौ सेगु करावौ ॥
जविही मदोदरी एहि सुनायो। जानकी क्रोधु कीयो उचिरायो ॥
मै इसि कौ क्षय कर्ने आई। तै कहु मनि महि क्या ठहिराई ॥
इसि को वलु मोहि द्रिष्टि नि आवै। श्री रघपति इसि आइ हतावै ॥
फिरि मदोदरी वचनु सुनायो। हे जानकी क्या मुख उचिरायो ॥
जो रघिपति सा बलु अधिकारी। कैसे हिर्नि दीई घरि नारी ॥
किति कार्ण मुख कउ अलावै। झूठि वाति तू मोहि सुनावै ॥
रावण नृप को बलु अधिकारी। मेरो कह्यो मनि लेहु वीचारी ॥
जानकी फिरि तांको प्रतु दीना। जोई प्रश्न मदोदर कीना ॥
कहा रावण को वलु अधिकारी। श्री रघुपति छिन माहु विडारी ॥
मदोदरी जाण बूझि इहि भाषै। मनि महि इहि वीचारु इहि आषै ॥
जो जानकी कहै होवै सोई। उौरु वाति नाहि कछु होई ॥
इहि प्रजोग तांसो झगिरावै। प्रश्नु करे ताकौ प्रतु पावै ॥
जवि जानिकी इहि वचनु सुनाए। मदोदरि मन महि ठहिराए ॥
जो इनि कह्यो सोई कछु होई। उौरु न करि साके कछु कोई ॥
चलति मदोदरि गृहि महि आई। सांईदास सो सकल सुनाई ॥१२२

श्री रामचंद लक्ष्मण दोऊ भाई। फिर्त हेर्ति वन महि अधिकाई ॥
हेर्ति फिर्ति सीता के ताई। मन अंतर वहु ताप छुताई ॥
जनक सुता कहू द्रिष्ट न आवै। तिहि प्रयोग मन वहु दुःख पावै ॥
रघिपति पूछति विर्षो ताई। मतु कहू जानकी मोहि दिषाई ॥
लछमन कौ प्रभ कह्यो सुनाई। लछमन सुण हो मेरे भाई ॥
तीन कुंटि कुटीआ के पेषै। चतुर कुंटि मै नाही देषै ॥
मतु तिह कुंटि महि जानकी होई। चलु देषहि मेले मतु सोई ॥
अैसे रघिपति विहलु भए। एहि संचरु प्रभ मन महि लए ॥
षगि मृग पंक्षी सौ प्रभ पूछहि। ताहि अग्नि किसि ते ना बूझहि ॥
शंकर ध्यान धरयो लिव जोडी। सुधि नही तांको अपनी षौडी ॥
रघिपति चर्नि सौ ध्यानु लगायो। शंकर ध्यानु अधिक ठहिरायो ॥
पार्वती तव वचन उचारा। हे शंभू जी तै किस ध्यानु धारा ॥

सकल जीइ प्रभि तोहि ध्यावहि । तूं प्रभि ध्यानु काहि को लावहि ।।
मम मनि संचरु प्रभ हिरि लेवौ । सांईदास को वहु सुषु देवौ ।।१२३

तव ही संकर वचन उचारा । हे पार्वती सुण हो चितु धारा ।।
मै धरो ध्यानु चर्नि रघुराई । ताहि वाति कछु कही नि जाई ।।
तिहि रजि चर्नि माहि कोऊ पावै ।
जो पावै फिरि जन्म नि आवै ।

आदि अनादि रह्यो समाई ।
घटि घटि माहि तिहि जोति दिषाई ।

ताहि रूपु कोऊ कहा पछाने । ताहि कला कोऊ विर्ला जाने ।।
हमि उतिपति तिसी ते होए । तै संचरु क्या मनि महि पोए ।।
मै तिस चर्ना ध्यानु लगायो । सदा सदा तांको जसु गायो ।।
पार्वती सुण करि विस्माई । वहुरो मुष ते वाति सुणाई ।।
इही रामु जिन जानकी षोई । हे प्रभु इसि ते क्या कछु होई ।।
पूर्ण ब्रह्म इहु कहा कहावै । मोहि मनि इहि विधि नाही जावै
जो पूर्न ब्रह्म प्रभ इहि होता । जानकी को कहु काहे षोइता ।।
जवि देवी इहि वाति चलाई । शंभू फिरि प्रतु दे तिहि समाझाई ।।
इनि से कोई नाह दुराए । इनि से कौणु दुराइ ले जाए ।।
जीइ जंत सभ इसे वनायो । घटि घटि माहि इहि आप समायो
जैसे रवि करे गगन उजीआरा । ग्रहि ग्रहि महि तांको चमिकारा ।।
तैसे प्रभु सभ माहि समाया । एहि भी प्रभ इकु षेलु रचाया ।।
सकली विधि प्रभु जानण हारा । तांके घटि का कहा वीचारा ।।
सकल जग्त की विर्था पावै ।
कथनि माहि प्रभु वाति नि आवै ।

ताहि नामु लीए दुःख सभ भागे ।
वहुरो फिरि फिरि करिआ इनि लागे ।

ताहि नामु अघ भस्म करावै । वेग विलम वहु मूल नि लावै ।।
वनि कटि काष्टु कौ ले आवहि । एक ठौरि सभ को ठहिरावहि ।।
पावक छिन इकि तासौ लाई । छिन माहे सभ भस्म कराई ।।
जैसे मलीन वस्त्र वहु होता । लाइ सबूण ताँकी मैलु षोइता ।।

जैसे त्रिषा गहे जवि आई। पीयो जलु त्रिषा गई हिराई॥
जवि लगि मंदर दीपकु नाही। महा तिमरु तहा तहा देइ दिषाई
जवि दीपकु मंदर महि होया। तात काल तिमरु तिन षोया॥
ऐसे नाम प्रभ अघ को टारै। भागहि अघ मुख नाम सम्हारे॥
ऐसे शंभू देवी समझावै। पार्वती कछु हृदे न ल्यावै॥
अनकि भांति शिव ताहि वतायो। सांईदास विधि सुणायो॥१२४

पार्वती फिरि शिव सौ वोली। हे शिव जी मेरो मनु डोली॥
एहि भरोसा मो मनि नही आवै। इहि रघुपतु जो ब्रह्म कहावै॥
ब्रह्म काहू पै चल्यो न जाई। हे शिव मै इहि तोहि वताई॥
मै जावौ इसि को छलि आवौ। पाछे से मै तोहि सुनावौ॥
जो मै इसि को ना छलि आई। तव मै जानों रघिपति राई॥
पूर्न ब्रह्म तव ही कर जानो। द्वितीआ भाउ फिरि हृदे न आनो॥
जो शंभू मै इसि को छलि आई। तव ब्रह्म शिव जी कहा कहाई॥
पार्वती को शंकर कह्या। कहा संचर तै मन महि लह्या॥

तोहि वलु कहा जो तिसि छलि आवहि।
ताहि छलनि तूं नाहि पावहि॥

पार्वती क्या भर्म भुलावै। कहा वाति तूं मनि ठहिरावै॥
पूर्न ब्रह्म सभि ही कौ जाने। जीउ जन्त वहि सभ हूं पछाने॥
पाछे से तूं मनि पछुतावै। काहे एहि विधि मन ठहिरावै॥
पार्वती कह्यो शिव ताई। इहि उपिजी है मोहि मन माही॥
जवि लगि मै उसि देषिनि आवौ। तव लगि शांत नाह मै पावौ॥
इहि विधि शंकरि सौ झगिराई। साईदास छलनि कौ धाई १२५

पार्वती तव ही क्या किआ। जानकी रूपु तवही करि लीआ॥
आइ करि वन माहे ठहिराई। छलिनि गई श्री रघपति ताई॥
पूछति पूछति रघिपति आए। तहू ओरि प्रभ पग दे धाए॥
पार्वती सों वचनु उचारा। तांको सकला कहों वीचारा॥
माता कहि के ताहि सुनायो। पार्वती मुष ते उचिरायो॥
पार्वती कहू . जानकी देषी। मोहि वतावो जो तुमने पेषी॥
पार्वती संचरु हिरि लीआ। करि डंडौत चर्नि चितु दीआ॥

पार्वती तव वचनु उचारा। हे पूर्न ब्रह्म प्रान अधारा ॥
तोहि दर्सन ते सभ दुःख भागे। तोहि दर्सन कोई दुःख न लागे ॥
त्रैलोक तुमिरो विस्थारा। तूं त्रैलोक ते रहे न्यारा ॥
सकल जग्त महि तुमिरो वासा। तूं प्रभ संत जना की आसा ॥
जहां जहां भीर परी जन ताई। तुमि प्रभ आवति हो छिरण माही
संत हेति करि तूं वपु धारहि। संत हेति करि असुर सिंहारहि ॥
अनल अनिल ध्यानु चित धार्न। तुं कौलापति अपर अपार्न ॥
वेद क्तैब क्या महिम वषानें। तुमिरी महिमा को प्रभ जाने ॥
अनलि अनील अतीत गुसांई। तोह स्मसर दूजा कोई नाई ॥
चिह्न चक्र कछु द्रिष्ट न आवै। तांको कहु कोऊ कहा वतावै ॥
जोति प्रकाश सकल घटि माही। सकल माहि रमि रह्यो सदाही ॥
मैं तोहि उस्तिति कहा वषानो। तोहि उस्तिति प्रभ मैं कहा जानो
रस्ना रंचि कहा कछु कहे। कित विधि उस्तिति तुमि उचिरहे
मोहि अवज्ञा राम मिटावौ। मोहि अवज्ञा हृदे न ल्यावौ ॥
जान किर्पा प्रभ मो परि कीजै। सांईदास छिन विलम न कीजै १२६

पार्वती लगि चर्नि सिधाई। तात्काल शिव पाहे आई ॥
शिव पहि उस्तिति भाष सुनाई। पार्वती मुष ते उचिराई ॥
आदि अनाद रह्यो स्माई। तांकी भक्ति कछु लषी न जाई ॥
अकाल मूर्ति त्रिभुवन के राया। सकल माहि प्रभ आपि स्माई ॥
जौ जो तांको नामु ध्यावै। पर्मि मुक्ति गति को वहु पावै ॥
जो जो तिहि चर्नि चितु धारै। तात्काल वहु ताहि उधारै ॥
जो जो तिहि परे सर्नाई। तांकी छिरण महि तप्ति हिराई ॥
ताहि प्रकार मैं कहा सुणावौ। कहा वुद्धि जो कहिणा पावौ ॥
हे शिव जैसा तोहि वताया। तैसा ही प्रभ मोहि द्रिष्टआया ॥
हे शिव जी ताहू ध्यानु कीजै। सांईदास कछु औरु न कीजै १२७

रघिपति हेति है मनि मांही। मतु कहू षर वरि जानकी पाही ॥
रघिपति चकिवी चकिवे सो भाषा। जानकी कहू तुम देषी आषा ॥
तिहि ने कह्या क्या हमि जानहि। जानि कौपु हमि कहा पछानहि ॥
हमि अपुने ग्रहि आनंद माहे। हमि तो काहू जानति नाहे ॥

तव रघुपति तांको स्रापु दीश्रा । रैनि विछोरा तिन महि कीश्रा ।।
दिन इकि ठौरि होवै निस नाही । रैनि विछोरा दीयो तुमि ताई ।।
ताहि स्रापु विछोरा तिहि पाहो । रघिपति वचु अन्यथा ना जायो ।।
निस इकत्रि इसि विधि ना होवहि। सांईदास निस वहु सुखु होवहि १२८

तिहि स्रापु देह आगे धारे । ताहि कह्यो किउ अन्यथा जाए
अंव व्रिक्ष कोकला ठहिरानी । अति रसालि वोलै वहु वानी ।।
अति भलो शब्द सदा मुख वोलै । विहंगम को शब्द अमोलै ।।
ताहि कह्यो प्रभ रघिपत राई । कहू जानकी तोहि निर्षाई ।।
एहि शब्दु तुमि मोहि सुणावो । हे विहंगम तुमि वेग न लावो ।।
तव ही विहंगम शब्द उचारा । हे रघिपति सुण वाति हमारा ।।
मै सुख वस्ति हौ अपुनौ ठौरा । मोहि व्योग नाही है भोरा ।।
फल देषै मनि महि कुकलावो । महा अधिक सुख मंगल गावौ ।।
उौर कोई मोहि द्रिष्ट न आवै । हे रघिपति कछु उौरु न भावै ।।
मै जानकी द्रिग नाहि निहारी । कैसे तुमि सौ कहों झूठारी ।।
ताहि कह्यो श्री रघिपति राए । मुख कालो तुमिरो हो जाए ।।
स्याम वदनु प्रभ करे तुम्हारे । इहि मम मन महि भयोवीचारो
जो कहे राम सोई फुन होई । ताहि कह्या मेटे नही कोई ।।
पूर्न पुर्ष जो मुखो उचारे । साई होवति है तत्कारे ।।
स्याम वदनु ताहू तव होया । अति अनंदु तांको प्रभ षोया ।।
ताहि स्रापु दियो रघुराए । साईदास विधि आषि सुणाए १२९

सुग्रीम वाल कपि दो भाई । किकंधा नगरी राजु कराई ।।
सुग्रीम वुडो वाल कपि छोटा । वडो सूक्ष्म सूक्ष्म है छोटा ।।
सुग्रीम तहा राजु कराई । बाल कपि छोटो तिहि भाई ।।
वालु महा वली तिहि भारा । तांके वल का कहा वीचारा ।।
त्रैकाल संध्या वहु करही । ताहि व्रितांतु लेह चितु धरही ।।
प्रथमै पूर्व जाइ करावै । मध्यान्ह दक्षिणा इनि आवै ।।
सांकाल पश्चम आइ करई । दधि तटि जाइ असे चितु धरई ।।
निता प्रति एही उसि कामा । सुतवंधू तिहि ग्रहि महि भामा ।।
इकि दिन रावण दधि तटि आया । वाल कपि संध्या कर्नि चितु लाया

निर्ष वाल को मनि लोभाना। एहि वाति हृदे उनि आना॥
इसि कपि को मै पकरि ले जावौ। सुत वंधू कौ षडि दिषिलावौ॥
चलिति चलिति वाल निकटि आआ। पकरिन कौ कर तासि चलाया॥
वाल कपि महा वली वलवाना। उनि प्रभ सेती धरो ध्याना॥
जवि रावण ने हाथ चलाए। वाल ध्यान छाडे पकडाए॥
ले तनूंनी सौ अटिकायो। रावण वलु कछु नाहि वसायो॥
बाल कह्यो सुत षेलनि ताईं। इसि को मै ग्रहि मे ले जाईं॥
रावण जतनु करे नही छूटै। जोरु करे तनूंनी नही टूटै॥
वंधिन गयो वंदन महि पर्यो। आगे आयो जैसा कर्यो॥
वालु कपि संध्या करि आयो। विसर गयो तनूंनी अटिकायौ॥
षष्ट मास तहू रह्यो उर्झाईं। रावण छूटनि मूल न पाईं॥
जत्न कीए तनूनी ग्रंथ षुल्ही। सीस काढि भागा ताहा हउली॥
भाग गिआ लंका के माही। वाल कपि पाछे नाह न जाही॥
कछु प्रजोग तासो उनि नाही। कति प्रजोग तिहि पाछे जाही॥
एकु असुरु संढे वपु लीने कपि गंधा नग्री को पग दीने॥
चला चला नग्री निकटि आया। अति उपाध तहा असुर उठाया
वालि कपि जव इहि सुण पाई। एक संढे वहु धूम रचाई॥
वाल तत्काल नग्री तजि आया। तांसो आइ करि युद्ध रचाया॥
असुर कहा वलु इसि सरि होई। वालि सर जोधा नही कोई॥
सीसु असुर को कर महि लीना। ताहि मरोर मरोडे दीना॥
जव ही वालि असुरे को मारा। अधिक वपु तव असुर पसारा॥
वाल कपि उसि लीयो उठाई। ताहि देहि गिर के तले पाई॥
ताहि गिरि परि जो रषीस्वर रहे। नामु सघहलि तासि को अहे॥
जवि ही वालि असुर को मारा। ताहि मृतुकु गिरि के तले डारा॥
मृत की दुर्गंधिता होई। सघहल रहे तहू अवरु न कोई॥
कह्यो ऋषीश्वर जिन एहि कीना। तांको इहि श्रापु मै दीना॥
जो वहुरो ईहा वहु आवै। गोविंद तांको नासु करावै॥
जो ऋषि मुखि ते वचन उचारे। सांईदास होवै तत्कारे १३०

एक असुर किंकिधा आवै । वालु परे पाछहि नसि जावै ॥
करे प्रवेसु जाइ कंदरा माहे । तिस कंदरा महि वलु ना जाहे ॥
तहू ठौर से वलु फिरि आवै । किंकधा महि आइ आइ ठहिरावै ॥
ओहु असुरु असे ही करही । औरु वाति किति ना चितु धारही
जो उहु असुरु वहुरि फिरि आया । बाल कपि मनि इहि ठहिराया ॥
आजु तो मै इसि असुरु कौ मारो । पकरि असुर को धर्नि पछारो ॥
जवि वहि असुर नग्रि निकिटि आया । वालु ताहि पाछे उठि धाया ॥
सुग्रीव सैना संग लीए । वाल के पाछे तिनि पग दीए ॥
असुर जाइ कंदिरा महि वडिआ । वालु षडे होइ मस्तल करिआ ॥
सुग्रीम सौ भाषि सुणाया । सो सकला सुण हो चितु लाया ॥
हे मोहि वीर सैना संग लीए । तुमि ठांढे रहो ईहा पग दीए ॥
मै कंदरा प्रवेसु करेवौ । जाइ असुर को मै हनि लेवौ ॥
नितापर्ति आवै दुःख देवै । सदा विरोधु हमि संग करेवै ॥
इहि विधि कहि उनि कीया प्रवेसा । सुग्रीम कंदरा मुख वैसा ॥
वाल जाइ तिहि युद्धु करायो । वल करि अपुने असुर हतायो ॥
तहा रक्त प्रवाहु चलायो । उमडि रक्ति कंदरा मुष आयो ॥
सुग्रीम जबि द्रिष्ट निहारी । तब ही मनि महि लीओ बीचारी ॥
बालि वीरु को असुर ने मारा । युद्ध कीयो तांकौ प्रहारा ॥
ताहि कंदिरा मुख ढपि लीना । पाछे गौनु नग्र को कीना ॥
चलति चलति नग्र महि आया । सुग्रीम वहु रुदनु कराया ॥
वीरु व्योग सह्यो ना जाई । सुग्रीम द्रिग नीर वहाई ॥
रुदनु त्याग शांत घरि आया । जो कछु सिम्रत कह्यो बताया ॥
जो हरि भावै होवै सोई । सांईदास होरु करे न कोई ॥१३१

वालु मारि तिहि असुर को आया । कंदरा मुख मूंदा निर्षाया ॥
कंदरा मुखु तिनि दीयो गिराई । सैना कछु तिनि द्रिष्ट न आई ॥
अति क्रोधु तिनि मन महि कीना । एहि वाति तिन मनि धरि लीना ॥
सुग्रीमु एही कछु चाहे । बालु मरे फांसी कटि पाहे ॥
मै उनि को ईहा गियो षलिवाई । तुमि ठाढे रहो ईहा भाई ॥
मै इसि असुर को हनि करि आवौ । वेग विलम मै मूल न लावौ ॥

वहु कंदरा मुख ढंपि सिधाए। एही कर्मु सुग्रीमु कमाए ।।
वाल क्रोधु कीयो उठि धायो। चलिति चलति किकिंधा आयो ।।
सुग्रीम कौ मारि निकारा। राजु आप लीयो तत्कारा ।।
ताहि भर्जा षसि करि लीनी। इहि विधि वालि कपने कीनी ।।
सुग्रीम तांते भजि आया। आइ करि गिरि ऊपरि ठहिराया ।।
चतुर मंत्री तिनि संग लीने। गिरि ऊपरि आइ करि पगि दीने ।।
तिन महि हनूंमानु वलभारी। सुग्रीम संग मंत्री चारी ।।
जहा ऋषीस्वर सध हलु रहे। राम नामु मुख ते उच्चिरहे ।।
तहू आइ इसि वासा लीना। सुग्रीम इहि कार्णु कीना ।।
रहि न सके सुग्रीमु जु जावै। वालु आइ इसि मुष्ट लगावै ।।
षष्ठ मास रक्त इहु वहे। इहि प्रयोग मन अंतर सहे ।।
षष्ट मास जबि पूर्न होही। सुग्रीम मुष्ट दुःख खोही ।।
वहुरो जाइ द्वारे ठहिरावै। कछु अपने मुख ते उच्चिरावै ।।
वालु निकसि के वाहिरि आवै। एक मुष्ठ वहु इसे लगावै ।।
दूसरी मुष्ट जवि मारण लागै। सुग्रीमु तव ही उठि भागै ।।
भाग आइ गिरि ऊपरि चरे। सुग्रीमु इहु कार्णु करे ।।
स्थावर महि तांको वासा। सांईदास प्रभ पूरे आसा ।।१३२

रघिपति ढूढति ढूढति आए। तहू राहि होइ करि प्रभ धाए ।।
सुग्रीम ने द्रिष्ट निहारी। हनूमान सो कह्यो पुकारी ।।
हनूमान इन्ह षवरि ल्यावो। इनि को पूछ हमहि पहि आवो ।।
कौनु है इहि कहा कौ जावहि। अतुर होइ कहा कौ धावहि ।।
हनूमान जवि आज्ञा पाई। तात्काल तिन मनि ठहिराई ।।
चलति चलति रघपति पहि आया। करि जोरे मुष भाषि सुनाया ।।
हे प्रभ अपुनो नामु वतावो। पाछे कहो कहा तुम जावौ ।।
तव रघिपति हनूमान सुनायो। रामु नामु मोहि सुरा चितु लायो ।।
जानकी को किनी षड्यो दुराई। ताहि फिर्ति हो हेर्ति भाई ।।
हनूमान विधि सुरा उठि धाया। सुग्रीम कौ आरा सुणाया ।।
रामचंद इहि नामु अषावै। जानकी को इहि ढूढति जावै ।।
सुग्रीम कह्यो ताहि ल्यावो। हनूमान तुमि वेग न लावो ।।

हनूंमानु तव ही उठि धायो। तत्क्षिण महि रघिपति पहि आयो
कह्यो चलो सुग्रीमु बुलावै। हे प्रभ पूर्न वात सुनावै॥
श्री रघिपति कह्यो वहु भलो भाई। तुमि हमि को भली वाति सुणाई॥
थकित रहे गिरि चरचो न जाई। हार परे वलु कछु न वसाई॥
जबि श्री रघपति वाति वीचारी। हनूमान मन अंतर धारी॥
श्री रामचंद लक्ष्मण कौ लीना। एक इति एक उति कांधे कीना॥
तात्काल सुग्रीम पहि आया। रघपतु लछमणु आण दिषाया॥
जव हनूमान कांधे प्रभ कीए। सांईदास ठौर मत्त लीए॥१३३

सुग्रीम जबि दर्सनु पाया। हाथ जोरि मुख वचन सुनाया॥
हे प्रभ कहो कहा तुमि जावो। एहि वाति प्रभ मोहि वतावो॥
तव श्री रघिपति वात सुणाई। सुणु सुग्रीम हमारे भाई॥
मै जानकी कौ ढूढणि जावौ। मतु काहू ठौर सोझी तिहि पावौ॥
किनही जानकी षडी दुराई। हे सुग्रीम हमारे भाई॥
सुग्रीम इहि सुण विस्मायो। तव रघिपति ने वचनु सुनायो
हे सुग्रीम क्या संचरु लीयो। कवन व्योग मन महि कीयो॥
तव सुग्रीम कह्यो रघुराई। मोहि वनिता षसि लई मोहि भाई
इहि प्रजोग रह्यो विस्माई। मोसौ विधि कछु कीई न जाई॥
रघिपति सुण प्रतु प्रश्न चलायो। सुग्रीम सौ एहि सुणाई॥
तुमि सो कैसे उनि इहु कीआ। वनिता षसि तुमिरो राजु लीआ॥
मै तिहि सुणु करि हो उपिचारा। सांईदास रघिपति बलु मारा॥१३४

सुग्रीम तव कह्यो सुनाई। सुण हो कौलापति रघुराई॥
मै वडो वालु छोटो मोहि भाई। मै करो राजु तिहि वलु अधिकाई
किंकधा नगरी के माही। राजु करहि वहुता सुख पाही॥
एक असुर किंकधा आवै। ताहि प्रयोग सैना दुःख पावै॥
वालु तवि तांके पीछे जावै। असुरु जाइ किंदरा ठहिरावै॥
एकि दिन वालि कह्यो सुणु भाई। प्रजा असुर्ने अधिक दुखाई॥
आजु तो मै इसि असुर कौ मारौ। पकरि असुर कौ धर्नि पछारौ॥
तुमि सभ सहित चलो मेरे भाई। मै इहि तुमि सौ कहो सुनाई॥
तव ही असुर प्रगटि आइ भया। वालु ताहि सन्मुख होइ गया॥

सभि सैना ले मै भी धाया। असुर भाग कंदरा चितु लाया ॥
कंदरा के मुखि परि सभु गए। तहा जाइ करि ठाढे भए ॥
वाल तव ही कह्यो सुनाई। तुमि ईहा ठांढे रहो हे भाई ॥
मै प्रवेसु करो इसि मांही। जाइ प्रहारौ असुर के ताई ॥
असुर मारि फेरि मै आवौ। छिनु पलु विल्मु नाहि मै लावौ ॥
हमि हिटिकाइ गयो तिहि माही। हमि तहा ठाढे मनि विस्माही ॥
क्या जाने हमि क्या कछु होई। इसि कंदरा महि सुख नही कोई ॥
छिनु एकु वीते हे रघुराई। रक्त कंदरा से उमिड आई ॥
हमि जाना किसी बालि कौ मारा। किनी असुर इसि कौ प्रहारो ॥
हमि कंदरा मुषु मूंद केराही। चले आए किकधा माही ॥
पाछे मारि वालि तिहि आया। मुषु मूंदा तिन ने निर्षाया ॥
कंदरा को मुख दीयो गिराई। कंदरा सौ वाहिरि परचो आई ॥
देषनि लागा सैना नाही। अति क्रोधु कीनो मनि माही ॥
तांकी भुज महि वलु अति भारी। तिह वल को क्या करौ वीचारी
तव ही चला किकंधा आया। मो सौ प्रभ तिहि राजु छिनाया ॥
मोहि वनिता भी षसि करि लीई। एहि वाति मो सौ तिनि कीई ॥
तिहि वल से भाग ईहा आया। हे प्रभ आइ ईहा ठहिराया ॥
तिहि प्रयोग मोहि सुषु न भावै। निसवासर हमि गिणत्या जावै ॥
हे प्रभ कहा मै कहो पुकारी। सांईदास वनी अति भारी ॥१३५

सुण रघिपति फिरि वाति चलाई। सुग्रीम सौ कह्यो समिझाई ॥
जो वाल भुजा महि वलु अधिकायो। तुमि ईहा वासा कैसे पायो ॥
सुग्रीम फिरि तिहि प्रतु दीना। सकल वीचारु राम तिहि कीना ॥
हे रघिपति इकु असुर जु आया। केतिगंधा महि धूम रचाया ॥
असुर ने संढे को वपु लीना। युद्ध कर्नि को तिन चितु दीना ॥
वालु निकिस वाहिर को आयो। संढे सो तिनि युद्ध मचाया ॥
वालि ताहि सीसु वरि लीना। दीई मरोरी मरोर तिनि दीना ॥
असुर मारि ईहा उनि डारा। दुर्गंधिता भई तिहि अधिकारा ॥
सदहलि ऋषीश्वरको ईहा वासा। सदा सदा वहु हरि संग रासा ॥
जवि ऋषि को दुर्गंधिता आई। तवी ऋषीश्वर मुषि उचिराई ॥

जिनने एहि दुर्गंधिता उठाई। जोईहा फिरि आवे हन्यो जाई ।।
हे प्रभ तास त्रास नही आवै। इहि वसुधा परि पांव न पावै ।।
इहि प्रजोग हमि वासा पायो। माहि ततासौ वलु न वसायो ।।
रघिपति तव ही अग्नि जलाई। इहि प्रतज्ञा मनि ठहिराई ।।
प्रिथम तोहि कार्जु मै करिहो। पाछे जानकी ढूढनि चढिहो ।।
एहि प्रतज्ञा रघिपति कीनी। औरु वाति सभु तजि करि दीनी ।।
सुग्रीम तव वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारा ।।
जो तुमि एहि वाति प्रभ करहो। वालि हतिन को जो चितु धरिहो ।।
मै भी तुम्हिरो कार्जु करिहो। जो तुमि कह्यो तति चितु धरिहो
करि प्रतज्ञा रघिपति धाए। सुग्रीम औरि सहिति चलाए ।।
जिहि औरि कुरंगु असुर को पर्या। तेहू ओरि प्रभ को इनि षडिआ
जो प्रिथमे इसि कुरग उडावै। तौ जानो मै वालु हतावै ।।
जो इसि को ना सके उठाई। वालि सौ इसि वलु कहा वसाई ।।
चलति चलति आए तिहि पाहे। सुग्रीमु सुकचे मनि माहे ।।
कहों राम सों के ना कहो। इहि प्रतज्ञा लहो कि ना लहों ।।
जो रघिपति विधि जानण हारा। मनि माहे तिनि लीयो वीचारा ।।
जो कछु सुग्रीम मनि आयो। कौलापति सभ विर्था पायो ।।
धन्ष सौ कुरगि कौ लीयो उठाई। श्री कौलापति पूर्ण रघुराई ।।
के सहस्र जौजन डारि दीआ। इह कार्ण कौलापति कीआ ।।
सुग्रीम तव भर्मु निवारा। सांईदास निश्चै मनि धारा १३६

श्री रघुपति आगे तव धाए। किकंधा नग्री निकटि आए ।।
कह्यो सुग्रीम कौ आगो जावो। वालि को गृहि से वाहिरि ल्यावो ।।
जवि वाहिरि आवै तिहि मारो। वानु साध तिहि धर्नि पछारो ।।
तव सुग्रीम ने विनती ठांनी। हे पूरन सभ सारंग पानी ।।
मोहि उसि वपु वनिति एकु दिषावै। हे प्रभ उसि कैसे वाणु लगावै ।।
मतु ओसि त्याग मोह को मारे। हे प्रभ वाण सौ धर्नि पछारे ।।
इहि प्रयोग मनि महि सकुचावौ। डरिता प्रभ आगे नही जावौ ।।
पत्रो की प्रभ माल वनाई। सुग्रीम को उरि महि पाई ।।
इसि देषि तुम्है नाहि भुलावो। वानु सांधि मै ताहि लगावो ।।

एक हीं वाण सो प्राण निकारो । एकि ही वाण सो धर्नि पछारो ॥
तुमि मनि महि काहे सकुचावौ । तुमि संचरु मनि महि ना ल्यावौ ॥
जो मै तुमि सौ कह्यो भाई । सांईदास करौ मै साई १३७

सुग्रीम आगे को धाया । निकटि द्वारि बालि के आया ॥
वालु कर्ति यज्ञु विपि षौलाए । करि अपुने तिहि तिल्कु लगाए ॥
सुग्रीम तव वचनु उचारा । बाल आउ वाहिरि तत्कारा ॥
आइ करि मौ सो युद्ध करावो । अंतरि वहिनि नाहि चितु लावो ॥
जवि सुग्रीम इहि वचन सुनायो । वालि कपि तव ही सुण पायो ॥
चाहति यज्ञ त्याग करि आवै । सुग्रीम सो युद्ध मचावै ॥
ताहि भार्जा तारा नामा । अति वहु स्यानी हे वहु भामा ॥
वालि के ताई कह्यो पुकारे । हे वाली मन लेहि बीचारे ॥
यज्ञ त्याग वाहिरि ना जावो । ईहा वहि करि यज्ञ करावो ॥
जो उनि कह्यो कहा कछु होई । तोहि स्मसर उसि वलु ना होई ॥
वालि कह्यो उसि कों हति आवौ । पाछे आइ करि यज्ञु करावो ॥
फिरि तारा ने वचनु सुनायो । हे पति मोहि कहा चित लायो ॥
विनु सहाइ इहु ईहा न आवै । विनु सहाय इस वलु न वसावै ॥
इसे सहाइ होई हैं भारी । तब तुमि सो इनि वाति उचारी ॥
वाल कह्या तारा ना माना । अति अभिमानु हृदे महि आना ॥
करि अभिमानु वाहि कौ धाया । सुग्रीम तांकौ निर्षाया ॥
सुकचि गयो सुग्रीम तव ही । निर्ष्यो वालु नैन सों जवही ॥
जैसे मृग केहरि निर्षाए । सुकच जाइ द्रिग नीरु ढुराए ॥
जैसे जंपकि निर्षे स्वाना । मनि माहे होवै हैराना ॥
जैसे षग बंधकु द्रिष्ट आए । भागनि को अपुना चितु लाए ॥
जैसे चोरु परिग्रहि मै जाई । वस्तु हिर्ति वहु मनि सकुचाई ॥
मतु ग्रहि को धनी जाग पराए । मोहि पकरि करि घातु कराए ॥
जैसे काल रूपु दिष्ट आए । जीउ धार सभि ही सुकचाए ॥
तैसे सुग्रीम मनि सुकचाना । सांईदास वहु भयो हैराना ॥१३८

वाल कपि तिहि पाछे धाया । सुग्रीमु ताहा क्षिण ठहिराया ॥
जवि ते वालु निकटि तिहि आयो । सुग्रीमु भागनि चितु लायो ॥

वालि दौरि सुग्रीम कौ गह्या। मुख अपुने ते एही कह्या॥
हे सुग्रीम काहे अवि भागो। युद्ध कर्नि काहे नही लागो॥
जोति पोति जवि दोनो होए। रघिपति वाणु सांधि वालु षोए॥
सुग्रीमु तव ही भजि आया। श्री कौलापति आइ ठहिराया॥
बाल तव ही वचनु उचारा। हे प्रभ तै मौकौ किउ मारा॥
जो तूं मोहि कहित रघुराए। लंका कहु मोहि आण दिषाए॥
जैसे एकु भाजनि कोई ल्यावै। आएा कहू आगे ठहिरावै॥
तुमि आगे लंका आणि धर्ता। हे प्रभ इह कार्ण मै कर्ता॥
सुग्रीम सौ करी भलाई। जांके तुमि आइ भए सहाई॥
मैं तेरो नाहि औगुणु कीना। तै मोकौ काहे हनि लीना॥
रघिपति तासौं वचन उचारा। तै औगुणु कीना वहु भारा॥
भावज वडो मात सरि होई। भार्जा तैने कीनी सोई॥
इसि तै औगुणु होरु कहा कहावै। इहि औगुणु हमि नाही भावै॥
वालि कपि फिरि वचनु उचारा।
हे रघुपति जन प्रान अधारा।
हमि पसू हमहि दोषु नाही।
इहि वीचारु लेहु मनि माही।
जवि रघपति इहि विधि सुणी काना।
तव सत्य कर के मनि महि आना।
कह्यो तवै प्रभ वाल के ताई।
इहि वीचारु लेहि मनि माही।
अवि मोहि वाणु अन्यथा ना जाही।
तुमिरो वान देउ मोह आयो।
इहि विधि मै मन महि ठहिरायो।
वालि कह्यो प्रभ कवि मै पावौ।
अवि तो मै देव लोक सिधावौ।
तव कह्यो श्री रघिपति राए।
कृष्ण अवतारु लेवौ जवि जाए।

तवि उधारु तुमिरो मै देवौ।
एहि वाति मै तव ही करेवौ।
श्री रघिपति ने वालि कौ मारा।
सांईदास सभ कह्यो वीचारा।।१३९

लछमन कौ प्रभ कह्यो ताही। लछमन समभ देषु मनि माही।।
चतुर्दश वर्ष होवन मै ताही। पिता वचन हमि को इह आही।।
मै तो नग्रि माहे नही जावौ। जाइ नग्रि इसि राजु वहावौ।।
सुग्रीम कौ तुमि ले जावौ। षडि किकंधाराज वहावौ।।
इसे राजु देइ तुमि उठि आवो। वेग विल्म तुमि मूल नि लावो।।
लंछमन आज्ञा मनि ठहिराई। वहुरो रघिपति वाति चलाई।।
सुग्रीम सौ कह्यो पुकारे। सुणु सुग्रीव तूं वीर हमारे।।
तुमि जाइ नग्री राजु करावो। जवि हमि कहे तव ही तुमि आवो
सुग्रीम पग परि सिरु राषा। मुषि अपने ते इहि कछु भाषा।।
हे रघिपति आज्ञा जो होई। मोहि मस्तक परि करहो सोई।।
लछमनु को प्रभ तिहि संग दीआ। सुग्रीम कौ प्रभ विदआ कीआ।।
लछमनु सुग्रीमु चलि आए। श्री कौलापति तहू ठहिराए।।
दोनों केतगंधा महि आए। लछमनु सुग्रीमु राज वहाए।।
ताहि राजु दे करि उठि धायो। चलत चलति रघुपति पहि आयो
रघुपति कह्यो राजु तिहि दीना। लछमन कह्यो कार्जु इहि कीना।।
हे प्रभ जो आज्ञा तुमि होई। सांईदास ने मानी सोई।।१४०

लछमन हनूमान संग लीना। गवनु तवै रघिपत ने कीना।।
चले चले सलिता परि आए। छीपा वस्त्र धोवति निर्षाए।।
कह्यो कहू तुमि जानकी देषी। मोहि कहो जो तुमि द्रिग पेषी।।
तवि छीपे ने वचनु उचारा। हे रघिपति हरि प्रानि अधारा।।
रावरण दैत्य ने षडी दुराई। हे माधो जन सदा सहाई।।
तव रघिपति छेपे वरु दीना। तोहि सीतु दूरि मै कीना।।
सीतकाल तुमि जलु न सतावै। करो कामु तुमिरे मनि आवै।।
जल सौ सदा होइ तुमि कामा। तौ मै वरु दीनों विस्रामा।।
छीपा वरु देइ आगे धाए। सांईदास रघिपति प्ररि वल जाए १४१

रघिपति पग आगे को दीनें। षग चटाई प्रभ ने देषि लीने ॥
ताहि कह्यो सुरग मेरे भाई। जनक सुता कहू ने निर्षाई ॥
कह्यो चटाई श्री रघपति राई। जानकी जावति मै द्रिष्टआई ॥
रघिपति तांकों अंक महि लीना। फेर करि तांसौ प्रतु दीना ॥
हे चटाई ब्रितांतु सुनावौ। सकल वाति तुमि मोहि वतावौ ॥
तव ही चटाई कह्यो रघिराए। मै सभ विधि तुमि देयो वताए ॥
गराञी त्याग मो सो चितु देवौ। मेरे कह्यो मनि धरि लेवौ ॥
कनक पुरी नृपु रावरग नामा। हे प्रभ पूर्ग सुण हो रामा ॥
जानकी ताहि दुराइ करि आनी। जानकी सो मै लीउो पछानी ॥
मै तासौ वहु युद्ध करायो। हे प्रभ उनि मोहि दगा कमायो ॥
रघिपति कह्यो कहो क्या कीआ। तुमि सौ कौरग दगा उनि दीआ ॥
तव ही चटाई आषि सुनायो। हे प्रभ मोसौ एहि करायो ॥
अपुनी देहि पछ रक्त निकारी। वाटि लीए ले ताहि लिवारी ॥
वाटि लिवारि मोह् ओरि डारि दीए।
हे रघिपति मै उदरि महि कीए।
जवि मोहि वाटि उदर महि डारे।
वलु भयो क्षीण मोहि तत्कारे।
पाछे वलु मोहि कछु न वसायो।
हे प्रभ वहु जानकी ले धायो।
हे प्रभ अवि मोहि निकिसति प्राना।
तुमि सत्ति करि लहो मन माना।
मोहि दागु दे करि तुमि जावो।
अदग्ध ठौर तुमि मोहि जरावो।
इहि विधि कहि चटाई तजे प्राना।
सांईदास ब्रह्म जोत समाना ॥१४२

जव ते चटाई प्रान तजि दीए। श्री रघपति संचरु मन लीए ॥
ब्रह्मपुरी हमि ध्यानु लगायो। तहू अदग्ध ठौरि नही पाए ॥
अदग्ध ठौर कहू द्रिष्ट न आवै। जहा चटा कौ रामु जलावै ॥
सोच वीचार देष्यो मन माही। सो गुर क्रिपा ते आषि सुराई ॥

उौर अदग्ध ठौर कोई नाही। जहा दागु देवौ इसि ताही ॥
कर अदग्ध पावौ मेरे भाई। उौर ठौर कहा द्रिष्ट नि आई ॥
रघिपति करि परि तिसहि जलाया। कर्म क्रतूत प्रभ तिसे कराया ॥
जो कछु वेद कही मेरे भाई। श्री रघिपति ने कीनी साई ॥
जैसे सुत पित को कर्म करही। क्रिया कर्मि सभे चितु धरही ॥
तैसे रघिपति ताके कीने। एहि वाति मन महि धरि लीने ॥
पिता सषा प्रभ जान कराही। एहि वाति लीनी मनि साही ॥
जैसे को पित को कह्या माने। द्वितीया भाउ पिति कहे न आने ॥
चटाई कहा ऐसे माना। पिता सषा करके प्रभ जाना ॥
पर्मि मुक्ति पदु षग ने पायो। सांईदास रघिवर चितु लाया ॥१४३

श्री रवपति तव आगे धाए। जवि केतक मगु चलि करि आए ॥
लछमन सौ तव वचनु उचारा। सुग्रीम क्या मनि महि धारा ॥
तुमि जाइ करि सुग्रीमु ल्यावो। मेरे कह्यो चित महि ठहिरावो ॥
लछमन क्रोधु कीयो उठि धाया। जो आज्ञा होई वही कराया ॥
तांको वलु कैसे सह्यो जाई। लछमन कौ वलु है अधिकाई ॥
निकटि किकंधा नग्री आया। सकल कपो ने द्रिग निर्षाया ॥
लछमन तेजु कपि देषि कराही। ग्रहि ते झडति हे र्धनि पराही ॥
सुग्रीम तव ही सुरण पाया। रघिपति वीर लछमनु है आया ॥
सुग्रीमु तव सन्मुख धाया। लछमन कौ डंडौत कराया ॥
लछमन तांसौ कह्यो सुनाई। हे सुग्रीम सुणो मेरे भाई ॥
श्री रघिपति तुमि को चिति कीना। तुमि ईहा सुष मनि महि लीना ॥
महा क्रोधु कीयो रघुराई। सुग्रीम विल्म वहु लाई ॥
इहि प्रजोग मोहि दीयो पठाई। सुग्रीम सो कहो तुमि जाई ॥
छिनु विल्म न लावो तुमि वुलाया। तुमिरे पाहे मोहि पठाया ॥
दो दिन तुम ईहा विल्मु करावो। क्रिपा करि ईहा ठहिरावो ॥
नग्रि नग्रि के कपह वुलावो। रघिपति कार्ज उठि सिधावौ ॥
दो दिन महि सभ ही कपि आवहि। सहित लीए हमि उठि करि धावहि
लक्ष्मण कह्यो रघपति उकलावहि। मम तुमि परि वहु क्रोधु करावहि

सुग्रीम कह्यो दो दिन कार्नं । क्रोधु न कर्सी अपर अपार्नं ।।
मेरो कह्यो सुरग करि लेवहु । सांईदास सुष जीउ कौ देवहु ।।४४४

लछमन दो दिन तहू ठहिराए । दो दिन पाछे वंतरि आए ।।
कै सहस्त्र वांतरि उमिडाए । तांकी गरिगती गिणी न जाए ।।
सुग्रीमु सैना ले धायो । चलति चलति रघुपति पहि आयो ।।
करी डंडौत आइ प्रभि ताई । तांके संग सैना अधिकाई ।।
वाल को सुतु अंगद वलकारी । जाम वानु तांकौ वलु भारी ।।
नल अरु नील दोऊ वलिवाना । दिवद महें इ सुपेंरग प्रधाना ।।
केसरी कपु उौर्वहु वलिवाना । सैना नाम मै कहा वपाना ।।
जो इकु इकु नामु कहा मेरे भाई । वसुधा ऊपरि लिष्यो न जाई ।।
कपि अठारा पद्म उमिडाए । तांकी गरिगती कौणु कराए ।।
एक एक कपि को वलु सुरग लीजै । उौर वाति कछु चित्त न दीजै ।।
दस सहस्त्र गज कौ वलु भाई । एहि वाति मोहि वेद वताई ।।
सस कपि सुरो उौतारा लीना । जो आज्ञा रघिपति ने कीना ।।
इहि प्रजोग वलु है अधिकाई । हे साधो सुरग हो चित लाई ।।
उौर वाति तजि इहि चित लावो । राम नामु मनि महि ठहिरावो ।।
कोटि जन्म प्रभ मुक्ता कर्सी । सांईदास जो नामु उचर्सी ।।१४५

श्री रघिपति सुग्रीम सौ आषा । हे सुग्रीम कहा चितु राषा ।।
चतुर्दिसा वंतरि पैठावो । तात्काल एहि वाति करावौ ।।
जानकी की कहूं पवरि ल्यावहि । एहि पवरि मोसो पहुचावहि ।।
सुग्रीम कह्यो वहु भलो आषा । हे रघिपति भलो चित राषा ।।
एक एक दिसि वंत्र पठाए । दस सहस्त्र सुरग हो चितु लाए ।।
हनूमान कौ कह्यो सुनाई । श्री रघपति कौलापति राई ।।
हे हनूमान तूं भी चल जावो । दस सहस्त्र कपि संग सिधावो ।।
वन वन नग्रि नग्रि सुधि लेवहु । एहि वाति तुमि चित्त करेवहु ।।
मुद्रा रघिपति तांकौ दीना । एहि संदेसे कार्ण कीना ।।
जानकी देषि आवैं पर्तीता । ठौर हो इनाहूको चीता ।।

---

१. वंतरि=बन्दर ।

इहि प्रजोग मुद्रा तिहि दीना। इहि कार्णु श्री रघपति कीना ॥
हनूमान पगि सीसु ठहिरायो। सांईदास आज्ञा पाइ धायो ॥१४६

हनूमान सैना संग लीए। जानकी ढूढनि को पग दीए ॥
नग्रि नग्रि वनि वनि ढूढाही। मतु कहू ठौर षवरि तिहि पाही ॥
ढूढति एकि कंदरा आए। हनूमान मनि इहि ठहिराए ॥
कह्यो हृदे कछु त्रासु न होई। मेरो कहो क्या कर्सी कोई ॥
दस सहस्र कपि लै वलिवाना। इनि सै कौनु होइ सत्राना ॥
अंगद सुत है बाल को भाई। महावली तिहि वलु अधिकाई ॥
जाम वानु तांको वलु भारा। नल अरु नील तिहि वलु अधिकारा
हमि स्मसर कहा कौनु कहावै। जो हमि सन्मुख युद्ध कौ आवै ॥
ताहि कंदिरा महि पग दीनें। अधिक गवनु ताहू महि कीने ॥
ताहि विच गए सुधि वौरानी। कौन ठौर षरे सारंग पानी ॥
विस्मक होइ आगे कौ धाए। कनकि मंदर निर्ष विस्माए ॥
अनकि ता जल्जल भरे लिल्हाई। फल नाना तिहि व्रक्ष उभाई ॥
तहा त्रिजा ने आस्रमु कीना। दिव्य जोति देवी रूपु लीना ॥
वंतरि निर्ष भई हैराना। तव देवी मुष वचनु वषाना ॥
हे वंतरो कहु कहा ते आए। इहि विधि मौको देह वताए ॥
हनूमान तव वचन सुनाए। सुरा हो देवी देउ वताए ॥
जानकी किनहू षडी दुराई। ताहि ढूढरिग कौ हमि जाई ॥
तव त्रिजना सुन वचनु उचारा। श्री रामचंद्र को भयो अवतारा ॥
रावरग जानकी षडी दुराई। होरगी हो इसौ कौणु मिटाई ॥
हनूमान कह्यो ऐसे होई। रावरग षडी होइगी सोई ॥
तव त्रिजना कह्यो हनूमाना। फल षावो अपना मनु माना ॥
वंतर फलि षाइ रहे अघाई। उदरि भरयो सुधि फिरि पाई ॥
द्रिग मूंदे तिहि नैन उघारे। सकल वार्ता ताहि चितारे ॥
फल पाइ वंतरि ठहिराए। सांईदास त्रिजना सुनाए ॥१४७

हनूमान त्रिजना सौ आषा। करि जोरे मुष ते इहु भाषा ॥
हे मय्या मोह राहु वतावो। अपुनी किर्पा हमहि करावो ॥
जवि हनूमान इहि वचनु सुनायो। त्रिजना तव मुष ते उचिरायो ॥

राहु दसों तौ तुमि ना पावो। जत्नु करो वाहरि नही जावो ॥
द्रिग लेहु मूदि कहा मोहि मानो। उौरु वाति कछु हृदे न आनो ॥
सभ वंतरि ने नैन मूंदाए। फेरि उघारे वाहिरि आए ॥
भए भै चक्रित अधिक मनि माही। हे रघिपति कहा ठौर दिषाही ॥
कहा वहु कनक मंदिर रघराए। कहा व्रक्ष जो फल उर्भाए ॥
कहा रूपु तुमि हमहि दिषायो। हे प्रभ क्या द्रिग सौ निर्षायो ॥
तुमिरी गति रघपति को जाने। तुमिरी गति कहा वेद वषाने ॥
तू प्रभ सदा सहाइ जना केरा। किन हू अंतु न पायो तेरा ॥
हे प्रभ तुम हमि भए सहाई। सांईदास तुमि परि वल जाई ॥१४८

कंदरा त्याग वाहिरि सभ आए। जानकी को ढूढण उठि धाए ॥
वन वन व्रिक्ष व्रिक्षि ढूढाही। एति ओति ओर द्रिग निर्षाही ॥
आगे उौरु कंदरा आई। सभ वंतर ने द्रिग निर्षाई ॥
सभ प्रवेसु कीयो तिन माही। महा तिमरु कछु द्रिष्ट न पाही ॥
चलति चलति सभु आगे आए। कनक मंदिर सुंदर निर्षाए ॥
वनि सुंदर तहा व्रिक्ष अधिकाई। तिहि वन महि फल वहु उर्भाई ॥
मैन सुता बैठी मंदिर माही। ताहि रूप गति कही न जाही ॥
वंतरि निर्ष रहे विस्माई। मैन सुता तिहि कह्यो सुनाई ॥
हे वंतरो तुमि कहा से आए। कौनु ओरि तुमि वंतरो धाए ॥
हनुमान तिहि वचनु उचारी। मैन सुता सुनु वाति हमारी ॥
हमि जानकी कौ ढूढनि आए। श्री रघपति अवतारु है लीना ॥
मैन सुता कहचो लेहि फलु षावो। इहि फल सौ तुमि उदर अघावो ॥
तहा अधिक फल किनहू षाए। षाए फल तिहि उदर भराए ॥
मैन सुता तवि कहचो सुनाई। रावण जानकी षडी दुराई ॥
प्रगटि भयो राम अवतारा। मैन सुता मुख वचन उचारा ॥
हनूमान तांकौ प्रतु दीना। श्री रघपति अवतारु है लीना ॥
मैन सुता सौ वचनु उचारा। हनूमान वलु तांको भारा ॥
मार्गु कोई हमहि वतावौ। है मैन सुता वेरि नही लावो ॥
तवि उनि कह्यो नैन मुंदावौ। वेग विलम कछू मूल नि लावौ ॥
सभ ही कमि नैन मूंदि लीने। मैन सुता सभ वाहरि कीने ॥

पोल्ह दीए द्रिग बाहिरि आए। तजि कंदरा आगे को धाए॥
हेर्ति फिर्ति सभ जानकी ताई। ग्रहि ग्रहि वनि वनि विर्ष मझाई
कहू जानकी द्रिष्ट न आवै। वंतरि इति उति अधिक डूलावै॥
वंतरि ढूढति भए हैराना। सांईदास ढूढति मनु माना॥१४९

ढूढति ढूढति ढूढति आए। निर्ष्या दधि मनि महि विस्माए॥
पृथ्वी सकल ढूढी ना पाई। जानकी किने पडी दुराई॥
चारि जोजन जलु धर्नि ते ऊचा। हमिरी आगे नाह पहूचा॥
जहा लगि वलु हमिरो वसाया। थक्त परे वलु सभ ही लाया॥
आगे कहा जाहि मेरे भाई। हनूमान कहति समझाई॥
षगु मृगु ईहा नाही जावै। कहो कहा वलु हमहि वसावै॥
जो फिरि जाही रघपति पाही। सुग्रीम हमि घातु कराही॥
भलो होइ ईहा तजो प्राना। जोग मार्ग मनि लेहि पछाना॥
जामवंत कह्यो सुण मेरे भाई। जोग साधिना करी न जाई॥
कहा जोग साधना हमि ते होई। जो ना होइ कहो तुमि सोई॥
हनूमान फिरि करि इहि वोले। सुणो वाति तुमि श्रवणहि षोल्हे॥
लकडि मेल करि चिषा वणावहि। सांईदास सभ प्राण तजावहि १५०

सभ हूं इहि विधि मनि ठहिराई। हनूमानि जो दीई वताई॥
सभ लकडी चुण करि ले आवहि। अपो अपुनी चिषा वणावहि॥
सभ हू चिषा जो लीई वनाए। चाहित अपुने प्रान तजाए॥
षग सुनति तब ही प्रगटाया। वंतरि सभु तिनि द्रिग निर्षाया॥
षग हृदे महि इहि विधि धारी। पूर्न भई अवि इछा हमारी॥
वहुति दिवस की भूष जु लागी। वलु अरु मत्ति हृदे ते त्यागी॥
अवि मै इनि सभ भछनि करहों। पाछे और वाति चितु वरहों॥
श्री कौलापति भछन कार्न। आण दीए इहि अपर अपार्न॥
सभ वंतरि षग को निर्षाया। दीर्घ रूप वलु कह्यो न जाया॥
सभ ही निर्ष भए हैराना। एहि वाति उनि मुषहु वषाना॥
धंन्न जटाउ प्रभ कार्ज आया। राम कार्ज करि प्रान तजाया॥
जवि उनि ने इहि वाति वषानी। षग सुनति मनि लई पछानी॥
कह्यो वंचरो क्या उचिरायो। चटाई नामु मोहि कहा सुनायो॥

कह्यो चटाई कवि प्रान तजाए। राम कार्ज तिन कैसे कराए ।।
हनूमान तव वचनु उचारा। सुन हो सनाति हृदे तुमि धारा ।।
रावरण जानकी को हिति ल्यायो। तव ही चटाई ने युद्ध कराया ।।
रावरण तांको वलु हिरि लीना। राम नमित्त प्रान तिन दीना ।।
श्री रघपति कर धरि के जलाया। पग चटाई पर्म गत पाया ।।
जवि सनाति इहि सुरण करि लीए। वहुरि वाति वंचरि सौ कीए ।।
हे वंचर मोहि वलु सा भारा। मो सर अवरु न को संसारा ।।
मै उडि रवि मंडलि महि जावौ। रवि के आगै जा ठहिरावौ ।।
रवि का आगा छाइ करि लेवौ। वल पंपनि करि एहि करेवौ ।।
वाति चटाई की तुमि सुरणाई। वहि चटाई लहुरो मेरे भाई ।।
एकि दिन हमि दोनो जो धाए। हमि रवि मंडल को जाइ छाए ।।
चटाई तले मैं ऊपरि धाया। रवि को मंडल जाइ मैं छाया ।।
रवि के तेज मोहि पंष जलाए। रवि मंडल ने धर्नि गिराए ।।
चटाई की रक्षा मैं करि लीई। तांको अंच न लागरण दीई ।।
मै निहि वलु होइ ईहा गिरायो। चटाई गिर्यो तिहि वन ठहिरायो ।।
आजु पवरि मै तांकी पाई। भला कीआ तुमि मोहि सुणाई ।।
मोहि वलु क्षीरण भयो मेरे भाई। अवि मो पहि कहूं गियो न जाई ।।
जो मोहि वलु प्रिथम सा होता। रावण को मै जाइ करि पोता ।।
मोहि द्रिष्ट दिव्य हे भाई। जानकी अशोक वन महि ठहिराई ।।
इकु सौ जोजनु ईहा वहु ठौरा। जिहि वल लागे जावौ दौरा ।।
लंका गढु त्रगुण भाई। इहि विधि मै तुमि दीई वताई ।।
राकस जानकी ओरि फिराही। जानकी कौ वहु दुःख दिषाई ।।
मै तुमि को इहि प्रगटि सुणायो। सांईदास कछु विलम न लायो १५१

जवि सभ वंचर इहि सुरण पाया। चिषा त्याग सोचन चितु लाया ।।
सभ वनिचर इकत्र आइ भए। मुष ते तव ही वचनु उचिराए ।।
कह्यो कौणु लंका कौ जावै। तहा जाइ वल कौरण वसावै ।।
कनकपुरी सौ षवरि ल्यावै। जानकी कौ द्रिग सों निर्पावै ।।
अंगद कह्यो सुनो मेरे भाई। अवि मै जावो लंका धाई ।।
जावनि जावो फिरि नही आवौ। इहि विधि करि मै मनि सकुचावो

नोल कह्यो मै जावण जावौ। वलु नही लागै फिरि मै आवो ॥
एहि विधि भी अनल वीचारी। हे साधो तुमि केहि वीचारी ॥
जोइ नि इहि विधि कही पुकारे। जामवंत तव वचन उचारे ॥
जव प्रभ ने वावन वपु धारा। वलि को छलिनि गयो नरंकारा ॥
अढाई करौ वसुधा जाचाई। वलि कह्यो मै दीनी सांई ॥
वलि छलने मन संकल्पु जु कीना। कह्या अढाई करौ मै धर्ती दीना ॥
प्रभ छलिते दीर्घ वपु धारा। वलु वहु विस्म हृदे सकुचारा ॥
एती विल्म जु प्रभ ने कीई। मै सप्त वारि प्रदक्षिणा दीई ॥
सकल पृथवी कौ मेरे भाई। अति वृद्धि भयो वलु नाहि वसाई ॥
हनूमान कछु नाहि उचारा। विस्म होइ विस्मकि चितु धारा ॥
जामवान हनूमान सुनायो। हनूमान क्या वलु विसरायो ॥
जवि तेरी वालि अवस्ता साई। तुमि कौ वलु था अति अधिकाई ॥

अवि कहा भयो जो वलु विसिराना।
तूं तां वोलीए अति वलिवाना ॥

हनूमान कछु ना उचिरायो। स्रापु पाइ तिहि वलु विसिरायो ॥
एक समे ऋषि यज्ञु कराही। अग्नि जलाइ वहु होमु कराही ॥
तिहि समे पौन पुत्र क्या कीआ। अग्नि जलति लकडी कढि लीआ ॥
ऋषीश्वर ने तव वचनु उचारा। अति वलु इहि वल षीन तुम्हारा ॥
जवि तुमि राम कार्ज को जावौ। वहुरो वलु अपना तुमि पावौ ॥
जामवानि तव कह्यो सुनाई। सुण हो पवन पुत्र वाति कहाई ॥
जवि तुमि वालक मेरे भाई। तव तुम सौ वलु सा अति अधिकाई ॥
तोहि मात केसरी तिहि नामा। तव केसरी इहि कीनो कामा ॥
तुमि कौ पालनि माहि पायो। अपुनो चितु उनि वन को लायो ॥
फल लेने गई वन के माही। तवि तै सोच लियो मनि याही।
रवि प्रकासु भयो तत्कारा। तव मनि महि तुमि लोयो वीचारा

तव तैं फलु करि रवि कों जान्यो।
तव ही इहि विधि मनि महि आन्यो ॥

त्याग पालिना गगनि सिधाए। अपुने करि जाइ रवि कौ पाए ॥
धर्नि त्याग गगनि को धाया। जाइ रवि को तै हाथ चलाया ॥

रवि कीओ तेजु तुमि दियो गिराई।
तोहि पितु ठटकि रह्यो अधिकाई॥
जव लगि पवनु न होइ सहाई। कहु कैसे कोऊ मग महि धाई॥
सभ हू लोक कष्ठु वहु पाया। ब्रह्म पाहि तिन्हा आष सुणाया॥
हे प्रभ पौनु रह्यो ठटिकाई। कहो कवन पहि आष सुनाई॥
विनु पवन कैसे सुख होई। विना पवन सुखु नाह कोई॥
ब्रह्म पवन को लीओ वुलाई। ताहि कह्यो सुण हौ मेरे भाई॥
काहे तुमि इहि कामु करायो। किह प्रयोग तुमि इहि चित आयो
पवन ब्रह्म पहि कह्यो सुनाई। सुण हो ब्रह्म पूर्ण ब्रह्म ताई॥
मम सुत को रवि धर्नि गिरायो। हमिरे पुत्र वहुति दुःख पायो॥
इहि प्रयोग मै इहि कर्मु कीआ। सभ हूं ते न्यारा कीयो हीआ॥
तव ब्रह्मा कह्यो सुणु मेरे भाई। इहि विधि कीए नाहि भलाई॥
सुत कौ आण रवि पाह वैठावो। विद्या सभ तुमि ताहि सिपावों॥
अपुने आपु न करो न्यारा। मेरो कह्यो मनि लेह वीचारा॥
पवन पुत्र रवि पाहि वहायो। रवि ने विद्या तोहि सिपायो॥
ओह वलु तुमि काहे विसिरायो। हनूमान वलु चित्त ल्यायो॥
जवि इहि विधि पवनु सुत सुन पायो। स्रापु मिटयो वरु प्रगटायो॥
जामवंत जैसा कह्यो सुणाई। सांईदास वलु अति प्रगटाई॥ख[1]॥

हनूमान कंपति करि परिआ। अति दीर्घ अपुनो वपु करिआ॥
कह्यो सुनो भाई मै जावो। जानकी की जाइ षवरि ल्यावो॥
तुमि सुपसेती ईहा रहो। रामु जपौ कछु अवरु न कहो॥
हनूमान स्थावरि परि चढयो। चतुर जोजन स्थावरि षढयो॥
उत्तिमाति देवनि की आई। आगे आइ करिहि ठहिराई॥
कह्यो मै इसि प्रतज्ञा लेवौ। हीरो पर्षिनि चित्तु धरेवौ॥
सोच वीचार लीओ मनि माही। मै हनूमान ताई पतीआही॥
राम कार्जु इसि ते होइ आवै। को कार्जु कर्ना ना पावै॥
दीर्घ रूप कीयौ आगो आई। हनूमान ने द्रिग निर्षाई॥
हनूमान वपु दीर्घ कीआ। ओति उसि ते दुगणा करि लीआ॥
वदन पसार आगे को आई। अति दीर्घ तिहि रूप देपाया॥

१. मूलग्रंथ में १५१ संख्या दो बार आई है।

हनूमान सूष्म वपु पाया। कूदि वदिन होइ वाहरि गया ॥
अस्थावरु घसि गयो तलाही। जैसे धर्नी देह दिषाई ॥
वसुधा सौ तवही रलि गया। हनूमान कूदनि चितु दया ॥
तव उनि ने मुष वचनि उचिराए। धन्न माति जिन तुम से जाए ॥
हे हनूमान मैं ओति सी आई। तोहि पतीआविणि कारनि भाई ॥
तुम रघपति को काजु सवारो। लंका को गढु तुमि ही जारो ॥
श्री रघुनाथु होइ तोहि सहाईं। ओति वचनि मुष ते उचिराईं ॥
हनूमान डंडौत कराए। जवि ओत ने यहि वचन सुनाए ॥
हे पूत माता तुमि होइ सहाई। मो कौ होवति वलु अधिकाई ॥
श्री रघिपति के कार्ज जावो। तोहि क्रिपा सिद्ध करि आवौ ॥
ओति अशीरी वचनू तिहि कीआ। सांईदास सुत पवन के लीआ १५२

जवि हनूमान अकास सिधायो। एक गिरि दधि महि प्रगटायो ॥
पवन पुत्र सौ वचनु उचारा। सुन हो पवन सुत कहा हमारा ॥
तुमि हारे होवोगे भाई। मम परि आस्रमु लेवहु आई ॥
तोहि पिता हमि सौ भला कीना। जासि समे मघिवे दु:ख दीना ॥
हमिरै पंषि मघवे कटि डारे। चाहित था हमि कौ वहु मारे ॥
तोहि पिता हमि करी सहाई। ताहि प्रजोग छूटे हमि भाई ॥
सुरपति से डरि ते ईहा आए। दधि मो अपुना आपु दुराए ॥
अमरो प्रश्नु किया ऋषि पाही। वाल्मीक ऋषि विधि पूराही ॥
अस्थावर को पापु करायो। मघवे तिहि पंष कटिणि चितु लायो ॥
इहि विधि हमि कौ देहु वताई। पूर्ण ऋषि तुमि सदा सहाई ॥
वाल्मीक हि अमरो प्रतु दीना। जो कछु प्रश्न देवहु ने कीना ॥

अस्थावर उडणौ चितु लावहि।
चडि अकास फिरि धरनि परि आवहि ॥

पर्जा को वहुता दु:ख देवहि। नग्र कौ देषि विडारहि लेवहि ॥
प्रजा मघिवा पाहि पुकारी। हमि को दु:ख दीनो अति भारी ॥

इहि अस्थावर हमहि दु:खावहि।
इनि के हाथ हमि वहु दुख पावहि ॥

जवि मघवे इहि विधि सुरण पाई। क्रोधु कीयो मनि महि अधिकाई ॥

इहि प्रजोग पंष कटि डारे। सुण हो देवहु वीर हमारे ॥
सकल देवौ कौ भर्मु कटि डारा। बाल्मीक जब दीयो बीचारा ॥
इस्थावर जवि वचन उचारे। पवन पुत्र तिहि दीयो बीचारे ॥
अवि तो मै कार्ज को जावौ। राम कार्ज कर्ने चितु लावौ ॥
राम कार्जु जवि कर्के आवौ।
तौ तुमि परि आइ करि ठहिरावौ ॥
फेरि कीई इस्थावर बानि। पवन पुत्र सुण हो चित आनी ॥
तोहि पिता को हमि सिर भारा। चाहति हमि तिहि भारु उतारा ॥
पवन पुत्र फिरि ताहि मग आयो। सांईदास फिरि आगे धायो १५३

हनूमान आगे कौ धायो। कनक पुरी सौ तिन चितु लायो ॥
छामा राकसी तव प्रगटाई। छामा राकसी वलु अधिकाई ॥
जो कोऊ गगन के मार्ग जावै। तिह परिवस्त धर्नि परि आवै ॥
ताह परिवस्तु कौ वहि दव लेवै। गगन त्याग वहु धर्नि परेवै ॥
ताहि लेकरि भछन वहु करही। इहि वलु छामा राकसी धरिही ॥
हनूमानु मग गगनि को धायो। तिहि परि वस्तु छामा निर्पायो ॥
जतन करि तवहि दव्यो न जाई। हनूमान तिहि वलु अधिकाई ॥
हार परी विस्मकि ठहिरानी। गगनि ओरि तिहि द्रिष्ट करानी ॥
देष्यो तिहि कपु उडियो जाई। देषि कपि को गगनि को धाई ॥
हनूमान जाइ सन्मुख होए। तांसो युद्ध कीयो अधिकाए ॥
हनूमान राकसी को मारा। ताहि मारि कूदयो अधिकारा ॥
लंका त्याग पलंका माही। जाइ पर्‍यो कपु वलु वहुताही ॥
भयो भै चक्रित कहा मै आयो। कनक पुरी पहुचिन ना पायो ॥
एक वनिता वुढी आसा देषी। नैन निहारि पवन तनु पेषी ॥
वनिता उपले लीए मिलाई। जतन करे वलु नाहि वसाई ॥
जो उपल्यां वेचा लेहु उठाई। उपले ले ग्रहि को वहि जाई ॥
कहयो पूत इहि मोहि उठावो। एति की ओरि मो पहि आवो ॥
पवनपूत तव कहयो पुकारे। हे मय्या हमि भी है हारे ॥
मै जावनि लंका के माही। थक्ति पर्‍यो वलु नाहि वसाही ॥
तव वनिता ने बचनु सुनायो। हे वनिचरि इहि विधि सकुचायो ॥

लंका पाछे रही अधिकाई। तुमि आइ परे पलंका माही ॥
त्रैठे कूदि परो तहा जावो। किहि प्रजोग मन महि सुकचायो ॥
तव हनुमान सुनी इहि विधि काना।
मनि वहु सुख होयो आनंदु माना॥
उपले वनिता को उठिवाए। सांईदास तिहि वलु अधिकाए १५४

त्रेडे ही हनूमान कूदाए। तातकाल लंका महि आए ॥
कह्यो कौन ग्रहि ढूढिनि जावो। जानकी पूछ कहां ते पावो ॥
सूष्म रूपु कीयो हनूमाना। ग्रहि ग्रहि फिर्ति सुजाना ॥
ढूढंति चल्यो शोक वनि आयो। जानकी कौ तहा आइ निर्षायो ॥
राकसी षडी अधिक इहि पाही।
चतुर्दिसा सीता ठहिराही।
मुष करि जानकी के पूछहि टोरहि।
तांको छोड तिना ही भोरहि।
जानको कौ वहु कहै सुनाई। हे जानकी रावणु वलिकाई ॥
रावण नृप को तुम संगु लेवहु। तपसी कौ मनि ते तजि देवहु ॥
जानकी तेह कह्यो हृदे न आनें। तांको कह्यो कछू नि जानें ॥
रंचिक वीते रावणु आयो। जानकी सौ तिनि भाष सुणायो ॥
हे जानकी हमिरे ग्रहि आवो। काहे को एता दुःख पावो ॥
सभ ते नायक तुमें करावौ। पटिराणी तुमि नामु रषावौ ॥
सुरों सभ हू हमि कंन्या दीनी।
सेषनाग दुहति सहिति कीनी।
त्रैलोकि मोहि वल कंपावहि।
डर्पिमानि होइ सर्नी आवहि।
कहा रामु लक्ष्मणु तू भाषहि।
राम लछमनु क्या चित महि राषहि।
मेरो कहयो मनि महि धरि लेवहु।
उौरु कहू चित नाहि डुलेवहु।
जानकी रावण कह्यो सुणाई।
हे मति हीन कहा चित आई।

श्री रामचंद लक्ष्मरण अवि आवहि ।
हे मति हीन वहु तुझे हतावहि ।
तुमिरी औधि निकटि है आई ।
तैं मनि माहे क्या ठहिराई ।
रावणु इहि सुण के उठि धाया ।
चला चला वनिता पहि आया ।
मंदोदरि को तिहि कह्यो सुणाई ।
मै जानकी सौ इहि उचिराई ।
तुमि चलिहो हमिरे ग्रहि माही ।
किह प्रजोग कछु तू पाही ।
जो मै इहि कह्यो प्रतु दीना ।
हे रावरण क्या मनि मह लीना ।
अवि ही राम लछमनु ईहा आवहि ।
सांईदास ओह तोहि हतावहि ।।१५५

मदोदरी रावण सौ आषा । एकु सुप्ना निसि मै भी भाषा ।।
मानो रामचंद जी आया । तुमिरा रघिपति मूडु मूंडाया ।।
मुषु कीओ स्यामु गर्ध परि चारा । लंका लूटी तुमि कौ मारा ।।
हे नृप मै इहि सुप्ना पायो । सोई तुमि कौं आष सुणायो ।।
जो अपुनी चाहे भलिआई । एती त्याग देहि वुरिआई ।।
जानकी सहित लेइ उठिजावहि । चर्न लाग जा रामु मनावहि ।।
नाहि ति तुमिरो होइ विनासा । तुमिरी पूर्ण होइ नि आसा ।।
रावरण सुण इहि वचनु उचारा । हे मदोदरी क्या हृदे धारा ।।
मै रघुपति लछमन कौ मारो । वल करि अपुने तोह प्रिहारो ।।
क्या सुप्ना तूं मोहि सुणावै । काहे इतिना भर्मु भुलावै ।।
तुमि चितु राषो अपुनी ठौरा । मनि विस्वासु सुन लेहो मोरा ।।
तिन को मै पल माहि विडारो । सांईदास तिन कौ मै मारो ।।१५६

मंदोदरी फिरि तासि सुणायो । हे रावरण क्या भर्म भुलानो ।।
तुमि पहि वह दोई हने न जाही । काहे एते भर्म भुलाही ।।
जो कोई आत्मे को प्रहारे । तो रघपति लछमन कौ मारे ।।

रावण वनिता कह्यो सुणाई । कहा वाति तै मुष उचिराई ।।
रघपति लछमन को ब्रह्म कीआ । कौनु वाति तै मनि महि लीआ ।।
ब्रह्मु कहा योनि महि आवै । ब्रह्म कहा दुःख सुप को पावै ।।
ब्रह्म सीता कौ कहा कराए । ब्रह्म सदा आनंदु वहु पाए ।।
मंदोदरी तांकों प्रतु दीना । हे मतिहीन कहा चित लीना ।।
जहा जहा कष्टु संतनि कौ होई । रूप धारि तहू प्रगटि पलोई ।।
भक्ति हेत करि दुःख सुष पावै । भक्ति हेति योनि भर्मावै[1] ।।
मोहि कहा मन महि ठहिरावो । जानकी सहित ले करि उठि धावो ।।
वेनती जाइ करि मुषो उचारो । सांईदास औगण न विचारो ।।१५७

रावण ताहि कहा नही माना । आपु कहा मनि महि ठहिराना ।।
त्रिजटा राकसी सेवक रामा । जानुकी पहि रहे इहि कामा ।।
तिन्ह उनि राकसी आष सुनायो । हे राकसीयो कित चितु लायो ।।
काहे जानुकी कौ दुःख देवौ । कह प्रयोग इहि कामु करेवौ ।।
मै इकु सुप्नो निसि महि पायो । वहि सुनहो कछु कह्यो न जायो ।।
तव सभ राकसी कह्यो पुकारा । सुप्ने को सभु कहो वीचारा ।।
त्रिजटा राकसी कहति सुनाई । सुण हो मै कहो हितु चितु लाई ।।
मानो एकु वनिचर आयो । तिहि अशोक वनु सभ ही उपाड्यो
कनकपुरी लोक तिन दग्धाई[2] ।।
एहि स्वप्ना मैने है पायो । सो मै तुम सौ आषि सुणायो ।।
राकसी सभु जवि इहि सुण पायो । मांसु कटिए तै चितु उठायो ।।
सोइ गई निद्रा वहु आई । सांईदास प्रभ माया छाई ।।१५८

हनूमान वृक्षि परि चरिया । सूक्ष्म रूपु अपुनो तिह करिया ।।
जो रावणु कहि करि उठि धाया ।
पौण पुत्र वहु भी सुण पाया ।

---

१. "ब्रह्मु कहा योनि महि आवै" यहां से "भक्ति हेति योनि भर्मावे" तक निराकार क्यों साकार होता है, यह स्पष्ट किया गया है । वैसे बाबा साईंदास निराकार और साकार ईश्वर के दोनों रूपों को स्वीकृति देते हैं ।

१. इस छन्द की पूर्ति नहीं हुई है ।

जो त्रिजटा सुप्नो वीचारा।
पवन पुत्र एहा चित धारा।
जिहि समे रावण वचन उचारे।
पवन पुत्र क्रोधु मन धारे।
मनि महि कह्यो जो अवि इसि मारो।
अवि ही इसि मति हीन प्रहारो।
फिरि कह्यो आज्ञा नाही पाई।
विनु आज्ञा रघपति हन्यो न जाई।
सुण सुण विधि मनि महि ठहिराई।
तिहि समें वचनु न कोई उचिराई।
जवि रावणु गयो उठि ग्रहि माही।
राकसी रही जानकी पाही।
त्रिजटा सौ फुनि तिनहि सुणाया।
तिहि जानकी तजि सोवनि चितु लाया।
हनूमान रघपति नामु लीआ।
उस्तित अधिक राम की कीआ।
जानकी सिरु ऊपरि करि पेष्या।
वनचरि कौ द्रिग सौ उनि देष्या।
निर्ष्या वनचरु सिरु तले कीआ। मनि अंतर जानकी इहि लीआ।।
असुर रूपु वहु धरिकरिआवहि। नाना रूपु वहु करि दिषलावहि।।
हनूमान फिरि उस्तत कीनी। अधिक उस्तित रस्ना उचिरीनी।।
श्री रामचंद्र दसरथ सुत भाई। लक्ष्मण वीर तांके संग सहाई।।
वालि कपु तिहि वलु अधिकाई। वीर भार्जा सुं लई छिनाई।।
सुग्रीमि सौ मारि निकारा। वाली कपि कौ वलु अति भारा।।
श्री रघुपति जी चलि तहा आए। सुग्रीम सौ वचनु कराए।।
वालि मारि वनिता ले देवौ। इहि मै कार्जु तोहि करेवौ।।
रघुपति वाल को मार विडारा। सुग्रीम परि किर्पा धारा।
केतगंधा नग्री राजु दीआ। एहि कार्णु श्री रघपति कीआ।।
जानकी वचनु लीओ सुण काना। मुख ते वचनु तव ही उचिराना।।
जौ कोई राम को नाम उचारे। प्रगटि होउ आउ आगे हमारे।।

हनूमान ब्रक्षि तजि तले आया। करि जोरे मुष वचनु सुनाया ॥
श्री रामचंद्र लछमन जी आए। तिहि संग सैना है अधिकाए ॥
मम तोहि षवरि लेन पठायो। इहि प्रजोग ईहा मै आयो ॥
जानकी कह्यो संदेसा कोई। रघपति कह्यो तुमि सोई ॥
हनूमान मुद्रा करि लीआ। जानकी कौ तिन ने वहु दीआ ॥
जानकी देष्या अधिक हिर्षाई। अंग अंग महि नाहि समाई ॥
पवन पुत्र तव कह्यो सुनाई। मोहि षुध्या लागी है माई ॥
मोहि षावनि को तुमि कछु दवौ। वेग विलम मय्या कछु न करेवौ ॥
जानकी कह्यो मो पहि कछु नाही। जो मै काढि देवौ तुमि ताही ॥
धर्नि गिर्या फलु ले करि षावौ। उदर पूर्न तुमहि करावौ ॥
पवन पुत्र आग्या जवि पाई। ब्रिक्षमूल से लेहि उठाई ॥
मूल ऊपरि साषा तले करही। फलु तांको गिरि धर्नि जु परिही ॥
जो फलु लेवे अरु षावैं। पवन पुत्र इहि कर्मु करावैं ॥
सभ विर्छ तिनि मूल अपारे। फल सभ उदिर की विर्छ डारे ॥
असोका वनि पवन पुत्र उजारा। हे साधो सुण लेहु वीचारा ॥
दस सहस्र असुर तिहि माहि। सोका वन महि रहनि सदाही ॥
जबि हनूमान इहि कर्मि कराए। सभ ही असुर तवैं उठि धाए ॥
पवन पुत्र सौ युद्ध मचावो। जो वलु था षलां सभ ही लायो ॥
पवन पुत्र वहु सभी विडारे। दस सहस्र असुर तिह मारे ॥
त्रिजटा राकसो तजि दीआ। जास विर्छ तले जानकी थीआ ॥
एक विर्छ कौ हाथन गह्या। सुख आस्रमु उहा वहु लह्या ॥
रावण ने इहि विधि सुण पाई। इकु वंचरु आयो धूमि रचाई ॥
सोका बनि तिहि सकल उपारा। दस सहस्र जोधा उनि मारा ॥
केतकि सुत तिहि दीए पठाई। तांसो युद्ध करो तुमि जाई ॥
वहु सेना तिन के संग दीई। रावण नृप ने इहि विधि कीई ॥
सैना ले वहु युद्ध को धाए। पवन पुत्र जहा तहू ही आए ॥
पवन पुत्र तिहि सन्मुष होए। पवन पुत्र वह सभ ही षोए ॥
रावण सैना अवरु पठाई। हनूमान सभ सैन हताई ॥
अधिक संहारु पवन पुत्र कीना। तव रावण मनि माहे लीना ॥
इहि वंचर वहु सुत मोहि मारे। नर मोहि सैन अधिक प्रहारे ॥

अग्नि लगी रावण तन माही। लोचन तिहि देहि रक्त दिषाई ।।
क्रोधु कीयो सुत वडो वुलायो। इंद्रजीत तिह नामु वतायो ।।
इंद्रजीत कौ तवि स्मझायो। हे सुत कपि वहु घातु करायो ।।
तुमिरे वीर अधिक उनि मारे। असुर सैन के वहु परिहारे ।।
तुमि जाइ करि तिहि वधि ल्यावो। मेरो कह्यो मनि ठहिरावो ।।
इंद्रिजीति जवि आग्या पाई। सैन अधिक तिहि संग चलाई ।।
पवन पुत्र वाधिनि पग दीए। वेग विलम तिन मूल न कीए ।।
इंद्रजीतु शोक वन को धाया। सांईदास तिहि वनि महि आया ।।१५९

इंद्रिजीत आइ युद्ध रचायो। पवन पुत्र तिहि सैन हतायो ।।
इंद्रिजीत ब्रह्म फांसी डारी। इंद्रजीत कौ वलु अधिकारी ।।
पवन पुत्र को लीयो फसाई। वाधि लीयो कछु वलु न वसाई ।।
वाधि ताहि रावण पहि ल्याहा।
रावण कौ तिहि आण दिषाया।
इनि वंचर ने इहि कर्मु कीआ।
अति क्रोधु फिरि मनि महि लीआ।
नृप कह्यो वनचर को मारो। इनि कर्मु एहि कीआ प्रहारो ।।
तवी वभीछन बचनु उचारा। हे नृप मनि माहे क्या धारा ।।
अवि लगि दूत किने ना मारे। इहि तीक्षण वचन कहति अति भारे
तीक्ष्ण वचन जु ना उचिराए। हे नृप तूं वहु कहा कहाए ।।
रावण तव कह्यो सुण भाई। इनि मेरी सैना सकल हताई ।।
तिहि प्रजोग मै इसि कौ मारो। इसि वंचर को धर्नि पछारो ।।
विभीक्ष्ण फिरि तिहि प्रतु दीना।
दूत सौ वैरु किन हू नही कीना।
जो तुमि अवि इसि दूत कौ मारो।
करि विरोधु इसि कौ प्रहारो
जग महि तुमहि कलूषति होई। वहुरो दूत आवे नही कोई ।।
वभीक्ष्णु कह्यो नृपु ना माने। जो इहि कहे क्रोधु हृदे आने ।।
फिरि कह्यो वंचर को मारो। पकरि बंचर को धर्नि पछारो ।।
जबि रावण एहि आज्ञा दीई। सकल सैन ने एही कीई ।।

हनूमान को मार्न लागे। मार थके तिहि बलु सभ त्यागे ॥
पवन पुत्रु कछु जाने नाही। ताको वरु शिव का अधिकाही ॥
ना तूं ब्रह्म शस्त्र ते मरही। ना शिव सस्त्र घाउ तोहि करही ॥
वर प्रजोग करि दु:ख न पावै। तांके मनि महि कछु ना आवै ॥
एक मारि के बलु हिराई। ताहि भुजा महि बलु रहे नाही ॥
मारि मारि करि सभ ही हिराए। सांईदास गोविंद जसु गाए ॥१६०

पवन पुत्र तव वचन सुनायो। तोहि मोहि मार्ण को चितु लायो ॥
जो तूं जत्न करे मरों नाही। सोच बीचारु देषु मन माही ॥
अवि उपिचारु मै तोहि बतावो। तिहि प्रजोग प्रान तजि जावो ॥
जवि लगि ओहु होवे मेरे भाई। तव लगि मोको हन्यो न जाई ॥
तव रावण मुष वचन उचारा। हे वंतर तुमि देहु बीचारा ॥
कौंन कीए तूं प्रांन तजाए। किह विधि करि तूं मृत्यु को पाए
सो विधि मोको देहु वताई। जौ नि कहै तुझै राम दुहाई ॥
तव हनूमान ने कह्यो पुकारा। तोहि प्रतज्ञा मोहि कीनी भारा ॥
श्री रामचंद्र को नामु सुणायो। एहि प्रतिज्ञा मोहि बतायो ॥
अवि मै तुमि सौ कहो सुनाई। सुण हो चितु लगाइ मेरे भाई ॥
रुई आण इकत्रि करहो। तेल संग तांकौ तुमि भरहो ॥
मोहि पूछ सेती लपटावो। पाछे तांकौ अग्नि लगावौ ॥
इहि विधि कीए प्रान तजावौ। और कीए किते दु:खु न पावौ ॥
इहि विधि अवि मै कह्यो सुणाई।
जवि तुमि मम कह्यो राम दुहाई।
इहि उपिचारु कहु कौणु बताई।
सांईदास जो कह्यो सुणाई ॥१६१

रावण श्रवन धार सुन लीनी। पवन पुत्र जो आज्ञा कीनी ॥
रुई अधिक तिहि लीई मगाई। तांते तेलु लीयो अधिकाई ॥
ताहि पूछ सौ रूं लिपिटाया। तेलु अधिक तांसौ उनि पाया ॥
पावक ले करि तासि लगाई। अति भडिकाऊ भयो तवि भाई ॥
सीता को राकसी इकि भाषा। वंतर जलायो नृप इहि आषा ॥
सीता वन्हि अराध के कह्या। कपि राषो लंकी गढु दह्या ॥

पवन पुत्र सूक्ष्म वपु कीआ । फांसी त्याग कूदनि चितु लीआ ।।
कूद चरचो रावण मंद्रायण । मंदरि सकले ताह जलायण ।।
पवन को तव ही लीओ बुलाई । हे मोहि पित अवि होउ सहाई ।।
जिहि जिहि मंदर महि मै जावौ । तासि मंदिर्जा अग्नि लगावौ ।।
तुमि तहा जाइ प्रवेसु करावौ । वह मंदर तुमि वहुतु जलावौ ।।
पवन जाइ तव भयो सहाई । कनक पुरी सकली दग्धाई ।।
भई स्याम कंचन ते वाही । द्रिग सौ वहुतो देष न जाई ।।
बैठकि नृप की कुंभ कर्नि द्वारे । इंद्रजीत गृहु त्रै नही जारे ।।
सुरो जोरि करि वचनु उचारा । वाल्मीकि सुणु प्रान अधारा ।।
कनक निकटि जवि पावक आवै । कंचन रूपु अधिक दिषलावै ।।
स्याम वर्नु नही प्रभ होवै । एहि संचरु मनि महि वहु होवै ।।
वाल्मीक तव कह्यो सुनाई । भलो प्रश्नु कहो मेरे भाई ।।
वृहस्पति सुतु रावण गृह माही । फांसी परा डर्पे अधिकाही ।।
पवन पुत्र तिहि लीओ छडाई । वृहस्पति सुत तव दृष्टि चलाई ।।
ताहि दृष्टि करि स्याम ही होई । हे देवो औरु दु:ख न कोई ।।
जवि देवो ने इहि प्रतु पायो । संचरु मन का सकल हिरायो ।।
पवन पुत्र तिहि लंक जराई । पावक लागी पूछ कौ आई ।।
कूद्यो पर्नि लगा दधि माही । पर्ति पर्ति दधि कह्यो सुनाई ।।
पवन पुत्र तुमि तटि ठहिरावो । जीइ जंत तुमि कीह जलावो ।।
मै तुमरी अग्नि लेओ हिराई । तुमि परि पावौ सीतल ताई ।।
पवन पुत्र दधि तटि ठहिरायो । दधि ने नीरु अधिक उमिडायो ।।
पवन पुत्र अग्नि लीई बुझाई । तांकौ उमिडी सीतलताई ।।
रंचिक मीन सौ भयो प्रवेसा । अग्नि दधो तनु ताको अैसा ।।
तव ही पूछ मीन ललिताई । अग्नि तापु लागो तिहि जाई ।।
रावण तव मनि वहु पछुताना । कहा होइ जवि समा विहाना ।।
अति विस्वासु हृदे महि करचो । सांईदास संचरु चित धर्यो ।।१६२

पवन पुत्र मनि लीयो वीचारी । मतु मै जानकी भी मै जारी ।।
कूदि पर्यो जानकी पहि आयो । सभ व्रितांतु तिहि आष सुणायो ।।
ऐसे करि लंका मै जारी । सकल सैन रावण की मारी ।।

रघिपति की आज्ञा नही पाई। विनु आज्ञा तुमि षर्यो न जाई ।।
मोहि आज्ञा देवौ मै जावौ। रघिपति जाइ षवरि सुणावौ ।।
जानकी तव ही वचनु उचारा। देहु संदेसा राम हमारा ।।
हे प्रभ निसवासरि तोहि ध्याना।
औरु माहि कछु मनि महि आना।
तौ विनु हमिरो कोउ न सहाई।
हे प्रभ पूर्न ब्रह्म ताई।
एक समे प्रभ तुमि मोहि ताई। निकटि आपुने लीया बुलाई ।।
मोकौ अपुनी ओरि वहायो। हे रघुपति इहि कर्मु कमायो ।।
काग महावली एते आयो। मोहि पगि मांझ चुंचि लगायो ।।
रक्त अधिक निकसी पग मेरे। तव वहि द्रिष्ट परी प्रभ तेरे ।।
तव तै मोसों वचनु सुनायो। हे जानकी इहि मोहि वतायो ।।
तुमि पग रक्तु कहां से लाई। इहि विधि मोकौ देह वताई ।।
तव मै तुमि सौ वचनु उचारा। काग चुंच लागी अति भारा ।।
ताहि चुंच करि रक्त चलाई। मै तुमि सौ प्रभ कह्यो सुणाई ।।
तव तुमि धन्षु वाणकरि लीआ। चाहि तित वही काग हतु कीआ ।।
कागु भाग भयो ब्रह्म पाहै। मतु मोहि रक्षा एहु कराहे ।।
ब्रह्म तिहि रक्षा ना कीई। काग कौ प्रभि विदआ दीई ।।
वहुरो शिवपुरी महि चलि आयो। शिव भी तांको नाहि रषायो ।।
त्रैलोक कागु भाग कराही। फिरि आयो प्रभ तुम सर्नाई ।।
जैसे जानो तैसे राषो। हे प्रभ पूर्न अपुने भाषो ।।
तव तुमि कह्यो काग के ताई। मोहि वाणु अन्यथा ना जाई ।।
एकु द्रिग प्रभ तुमि ताहि छिनायो। एकु वाण द्रिग ताहि गवायो ।।
कागकौ एको द्रिगु प्रभु राषा। जीउ दीयो ऐसो उनि भाषा ।।
हे प्रभ ओहु समा चित ल्यावो। पातकी को तुमि ना विसरावौ ।।
एकु वर्ष प्रतज्ञा कीई। रावण सौ प्रभ इहि मनि लीई ।।
तिहि महि अष्टि मास प्रभ गए। चतुर मास प्रभ पाछे रहे ।।
जो चतुर्मास को तुमि नही आवो। जानकी प्राण घातु करावो ।।
हे हनूमान संदेसा दीजै। एहि कामु तुमि हमिरो कीजै ।।
पवन पुत्र कह्यो जानकी ताई। हे जानकी चित्र नाहि डुलाई ।।

श्री रघपति तविही चलि आवै। रावण को प्रभु हतनु करावै॥
सदा जी वोले रघिपति राम। सांईदास पूर्ण होह काम १६३

पवन पुत्र पग सीसु धरायो। जानकी ते आज्ञा तिन पायो॥
कूद पर्यो दधि के तटि आयो। जहा अंगदु कपो सहिति ठहिरायो॥
पवन पुत्र जवि इनो निर्षायो। आनंदमान होइ वचनु सुनायो॥
हे हनूमान षबरि ले आए। कनकपुरी द्रिग सौ निर्षाए॥
सकल वाति तिह ताहि सुणाई। पवन पुत्र छिनु विल्मु न लाई॥
सभ ही वनचरि तव उठि धाए। सुग्रीम के मधिवन महि आए॥
व्रिक्षो सौ फल रहे उर्झाई। नाना फल लागे मेरे भाई॥
हनूमान कह्यो ले षावो। सुग्रीम राजा ते नाहि संकावो॥
सभि वनचरि सुण फल ले षाए। सुग्रीम सैना ने निर्षाए॥
सैना जाइ कह्यो नृप ताई। पवन पुत्र पर्यो वनि माही॥
वंचरि अधिक सहति तिहि लीए। वनि फल षाणे कौ चितु दीए॥
सुग्रीम कह्यो पुन तिन ताई। कछु न कहो समिझो मनि माई॥
जानकी की वह षवरि ल्याए। तव अनिभय होइ तिन फल षाए॥
पवन पुत्र वंचरि संग लीए। श्री रघपति आगे पग दीए॥
आइ डंडौत करी नृप ताई। रघपति तव इस्नानु कराई॥
बचनु कीओ जिहि समे तुमि आवो।
जो महि अंग होइ तुमि पावो॥
कर्ति इस्नानु अंग कछु नाही। वज्र लुंग प्रभ कीयो मंझाही॥
लुंग लाहि हनूमान को दीनी। इहि कार्णु प्रभ तांपरि कीनी॥
लछमन को तव वचन सुनायो। श्री रघपत ने ताहि वतायो॥
तीन परा करी जाइ पकावौ। दोने ते इकि वडी करावौ॥
हनूमान को सहित षलावहि। अपुनो वचु वीर पूर करावहि॥
लछमन ने ऐसे ही कीना। जो आज्ञा रघपति ने दीना॥
पवन सो कह्यो सुनाई। तुम सौ वचनु हमरो भाई॥
आवो भोजनु संग हमि पावो। पवन पुत्र छिन विल्मु न लावो॥
हनूमानु आगे को आया। तीन पिरा करी तिन निर्षाया॥
दोनो पहि इकि है अधिकाई। चंचल वुद्धि हनूमानि चित आई॥

वडी पिराकरी लई उठाई। कह्यो सुरणो प्रभ रघिपति राई ।।
मैं विना रहो इसि कौ षावौ। तुमिरे सहित ता भाजनु ना पावौ
रघपति लछमन भोजनु पायो। पायो भोजनु उदर भरायो ।।
त्याग रसोई वाहिरि आए। सांईदास तिहि परि वलि जाए १६४

पवन पुत्र को लीयो बुलाई। जानकी पवरि देह मेरे भाई ।।
जो कछु जानकी ताहि सुनायो। रघिपति को हनूमान वतायो ।।
रघिपति जवि सभ विधि सुरण पाई। सुग्रीम को लीयो बुलाई ।।
कह्यो चलो लंका को जावहि। रावरण असुर को जाइ हनावहि ।।
सुग्रीम तव वचनु उचारा। हे रघिपति भलो लीयो वीचारा।।
रघिपति हनूमान कांधे चरिआ। लछमन दधिमुख ऊपरि चढिआ ।।
सुग्रीम भी ऐसै कीआ। कनक पुरी को तिहि मगु लीआ ।।
सैना अधिक कछ गरणी न जावै। वेद कतेब तिहि अंत न पावै ।।
चलित चलित दधि के तटि आए। निर्षो जलु दधि वहु अधिकाए ।।
दो दिन रघपति तटि ठहिराए। आगे मग पगु धर्नि न पाए ।।
धनिषु वारण करि माहे लीआ। दधि को चाहिति प्रभु हनि लीआ
दधि मूर्ति होइ आगे आए। थानि मानि करि तिन आगे ठहिराए
हे प्रभ मै तुमिरी सर्नाई। तौ विनु हमिरो कौन सहाई ।।
रघपति कह्यो दो दिन हमि होयो। तुमि तटि परि हमि आइ षलोयो।।
तूं हमि पहि काहे न आयो। तैं मनि महि अभिमानु करायो ।।
तव ही दधि ने विनती ठानी। हे कौलापति सारंग पानी ।।
मै अभिमानु हृदे ना धर्यो। हे प्रभ कछु औगणु ना कर्यो ।।
नृप सगर तात तोहि मोहि कढायो। मो सो ऐसो वचनु सुनायो ।।
तोहि उदरि वो पार कराही।
इसि ओरि ते उसि ओरि न जाही।

इहि प्रजौग मैं रह्यो विस्माई।
हे रघपति कछु कह्यो न जाई।
सगर वचनु कैसे तजि देवौ। तोहि कहा कैसे न करेवौ।
इहि दोइ विधि मोह वनि अति भारी।
कहा कहो तुमि पाहि वीचारी।

रघपति फिरि करि वचनु उचारा। अन्यथा न जाई वानु हमारा॥
फिरि कर दधि रघपति सौ आषा। हे कौलापति तुमि भलो आषा॥
दंसरु दैतु महा वलिकारी। तांकी भुज महि वलु वहु भारी॥
अपुने सिरि परि नग्र वसाए। इहि कर्मु प्रभ ओहु कराए॥
जास ओरि वहु जाइ गिरावै। तिस नग्री कौ नासु कराए॥
हे प्रभ वाणु ताहि कौ मारौ। मो परि प्रभ किर्प इहि धारो॥
तव प्रभ वाण छाडि करि दीआ। तस सर असुर ताई हनि लीआ॥
रघपति वानु अन्यथा न जावै। जिसे कहे तिस मारि चुकावै॥
प्रभ ने कह्यो फिरि दधि के ताई। दस्सौ मार्गु तिहि हमि जाही॥
मोहि सिरि कार्जु है अति भारी। को मगु दस्सै मन वीचारी॥
वेग विलम तुमि मूल नि लावौ। तात्काल कोई राहु वतायो॥
मै अवि कह्यो तुमिरे ताई। सोचि वीचारु देषि मनि माही॥
ऐसो मार्गु हमहि वतावो। तात्काल हमि पारि लंघावो॥
अवि कह्यो मै तोहि पुकारी। सांईदास लेहु मनि धारी १६५

दधिरूप कह्यो सुणो रघुराई। कौनु मार्गु मै देउ वताई॥
एक प्रतज्ञा मै प्रभ करहो। सा प्रतज्ञा मनि महि धरयो॥
श्री रघपति कहा कहो सुणाई। कौनु प्रतज्ञा करहो भाई॥
दधि रूप तव ही वचनु उचारा। हे रघिनंदन प्राण अधारा॥
हे प्रभ गिरि अध्कि अणिवावो। इसि ही ठौरि तुमि सेतु वंधावो॥
मै इनि के तले प्रान लगावो। तिहि गिरि को नाहि रुढावो॥
जल माहे तिहि धसिनि न देवौ। इहि प्रतज्ञा मै करि लेवौ॥
रघपति कह्या वहु भलो आषा। हे दधि रूप नीका तै भाषा॥
वहुरो दधि रूप कह्यो सुनाई। हे रघपति संतति सुषदाई॥
इहि नील नल भलो सेत उसरावै। विस्वुकर्मा के सुत जु कहावै॥
हे प्रभ इसि कौ आज्ञा देवौ। इस ही परि प्रभ क्रिपा करेवौ॥
गिरि कपि औरि ल्याव उठाई। नील नल अध्कि सेतु जु वनाई॥
श्री रघपति हनूमानु वुलाया। तांसो सब ब्रितांतु सुनाया॥
पवन पुत्र कह्यो क्या कीजै। कैसे पग आगे कौ दीजै॥
आगे सूत्र जलु विव दिषावै। किउ करि सैना लांघा पावै॥

पवन पुत्र कह्या सुण रघुराई। जो आज्ञा होइ तो कह्यो सुणाई॥
तोहि क्रिपा सभ सैन लंघावौ। तोहि क्रिपा इहि कर्मु कमावौ॥
जवि हनूमान वचन उचिरावो। रघिपति तांको वहुर्सुणायो॥
कैसे करि तूं पार लंघावहि। सभ सैना को तीर चढावहि॥
पवन पुत्र तव कह्यो पुकारी। हे रघपति मै इहि मनि धारी॥
सिरुइसि तटि पग इसि तटि राषो। तोहि क्रिपा सों इसि विधि भाषो॥
जव रघपति इहि विधि सुण पाई। कहा साचु तुमि से होइ भाई॥
सुण हो वाति कह्यो इकु मेरी। पवन पुत्र चंचल मति तेरी॥
जवि सैना तुमि ऊपरि जावै। मतु उठि कूदै सकल डुवावै॥
इहि प्रजोग संचर मनि करहो। इहि संचरु मै मनि महि धरहो॥
जो मै कहो सोई तुमि करहो। ओही वाति हृदे महि धरहो॥
पवन पुत्र तव विनती ठानी। हे पूर्न पद सारंग पानी॥
जो आज्ञा तुमिरी प्रभ होई। हमि चित धार करहि प्रभ सोई॥
रघिपति कह्यो गिरि ले ले आवो। आण करि तुमि सेतु वंधावो॥
तिहि करि सैना पारि उतारहि। रावण कौ तव जाइ संहारहि॥
पवन पुत्र मन महि धरि लीनी। जो आग्या रघिपति ने कीनी॥
महावली वंचरि ले धाया।
गिरि अधिक तिहि आइ उठाया।
गिरि चुकि करि दधि के तटि आने।
सेत वंधावनि को चितु माने।
गिरि लीए ले दधि ठहिराए।
जलु जोरा करि सकल रुढाए।
श्री रघुपति दधि रूप सौ भाषा॥
हे दधिरूप कहा तै आज्ञा।
गिरि टिके नाही जलु रुढाए।
कैसे गिरि जल परि ठहिराए।
तव दधिरूप कह्यो रघुराए।
मै तुमि पहि को गिरि टिकाए।
मोहि आज्ञा देवो मै जावौ।
करु दे गिरि कौ मै ठहिरावौ।

तां पहि राम नामु लिष लेवौ।
पाछे तुमि जल माहे देवौ।
रघपति तांकौ आज्ञा दीई।
जो दध रूपहि वेनती कीई।
दधि रूपु अपुने आस्रमि आयो।
श्रीराम काज सेती चितु लायो।
वंचरि गिरि अधिक ले आवहि।
राम नाम सत्य ताहि लिषावहि।
पाषाण ले दधि माहे डारहि।
सेतवंधि पुल भयो सवारहि।
नितापर्त एही उसि कामा।
आज्ञा दीनी पूर्न रामा।
जिउ जिउ पषाण आण टिकावहि।
मानो षचित कीए जुड जावहि।
चौदा जोजन प्रथम दिन वाधा।
छत्री जोजन द्विती दिन साधा।
पचवन जोजन तीसरे दिन कीआ।
दस जोजन चीकडु हछा कीआ।
दुहू उोर सूत जिउ राषा।
दस जोजन चकुलाया भाषा।
सभ पुलु जोरि वरावरि कीना।
जो आज्ञा श्री रघपति दीनी।
नील नलु साजनि पुलि कौ लागा।
उौरु वाति सकली तिन त्यागा।
श्री रघपति कार्जु चितु वै धारे।
सांईदास प्रभ ताहि उधारे॥१६६

श्रीरघपतिजविइहिकियो कामा। सुण पाई विधि रावन नामा॥
आयो रघपतु सेतु वंधावै। सेतु वांधि लंका परि आवै॥
सकल कुटंवु तव लीयो वुलाई। तांसौ रावण वाति सुणाई।'

है कोई तिन के सन्मुख जावै। युद्ध करै तांको वंधि ल्यावै॥
महीरावण तब वचन उचारे। हे वंध जावो तत्कारे॥
मै दोनों कौ वंधि ले जावौ। एहि कामु नृप मै करि आवौ॥
रावण कह्यो धंन्न मेरे भाई। भली वाति मुष ते उचिराई॥
एहि कामु मेरो करि आवो॥

मही रावण विधि सुण ग्रहि आया।
रावण को कह्यो मनि ठहिराया।
कह्यो कौण समे मै जावो।
जासि समे मै उनि को पावो।
एही तिनि मनि महि ठहिरायो।
मनि महि सोच समा न सिधायो।
निस समे दोनों सैनु कराही।
सांईदास तहा जाइ फिराही॥१६७॥

निस भई मही रावणु उठि धाया। चला चला दधि के तटि आया॥
वंचर अधिक तहा नैन निहारे। संचरु मन लीओ तत्कारे॥
कवन ठौरि मै उनि कौ पावौ। कित विधि मै तिन कौ ले जावौ॥
हनूमान को नैन निर्षायो। देष्यो उसि मनि महि सुकचायो॥
वंचर अधिक फिर्त रषिवारे। सूक्ष्म रूप अही रावण धारे॥
जो कासू की द्रिष्ट न आवै। हेर्ति हेर्ति आगे जावै॥
हेर्ति हेर्ति तहू ही आयो। रव सस सैनु जिहि ठवर करायो॥
सोए परे तिहि पास न कोई। तिह समे वाको राषा को होई॥
अही रावण दीर्घ वपु धारा। रव सस को वंध्या तत्कारा॥
जव रव सस दोई लीए दुराई। अधिक तिमरु भयो मेरे भाई॥
दोनों को लेकरि उठि धाया। अपुने नग्र को मार्गु पाया॥
मग महि राकस अधिक वहाए। पाषाण राषे अति अधिकाए॥
मतु कोई इति मार्ग पगु धारे। राकस तांकौ उदरि विडारे॥
पाषाण मग महि इउ ठहिराए। जो आवै सोऊ मगु नही पाए॥
इहि विधि करि अपुने ग्रहि आया। अहीरावण इहि कर्मु कमाया॥
रव ससि वनिता कौ देषाए। तिहि वनिता मुष वचन सुनाए

हे निर्दया तोहि दया नि आई। वालक तोहि वंधि आने जाई ॥
अैसे सुंदर कौ दुःख देवहि। एहि कर्मु कहु कौनु करेवहि ॥
वनिता अधिक कीयो धधिकारा। हे निर्दय कहा चित धारा ॥
अही रावण तव वचन उचारे। हे वनिता मै इहि मन धारे ॥
इनि को रूपु तूं देषि लुभाई। तौ मोसो इहि बाति सुनाई ॥
फिरि कह्यो वनिता तिहि ताई। इसि कौ रूपु तूं जानहि नाही ॥
पूर्ण ब्रह्म लीयो अवतारा। भक्ति हेत करि इहि वपु धारा ॥
भला करे कह्यो मोह माने। सांईदास मनि अवरु न आने ॥१६८

महीरावण फिरि वचनु उचारा। हे वनिता मुष कहा पुकारा ॥
पूर्ण ब्रह्म तूं इसि कौ आषहि। अैसी वाति तूं मुष ते भाषेहि ॥
पूर्न ब्रह्म फांसी नही फासे। पूर्ण ब्रह्म को दुःख न ग्रासे ॥
पूर्ण ब्रह्म किसे हत्या न जाई। पूर्न ब्रह्म सभ माहि स्माई ॥
देषो मै इनि कौ हनि लेवौ। पूर्न ब्रह्म तुझै करि दिषलेवौ ॥
फिरि वनिता तिहि वचन उचारे। हे मतिमूढि कहा चित धारे ॥
तोहि कहा बलु इन्हि हति लेवै। काहे अभिमानु तूं हृदे करेवै ॥
इनि स्मसर तूं कहा कहावहि। हे मति हीन क्या चितु डुलावैहि ॥
तुमिरी औध निकटि है आई।
तौ तुमि इहि विधि मन ठहिराई।
मोहि कह्या माने तूं नाही।
अवि ही देषु वहुत दुःख पाही।
अहीरावण तिहि कह्या न माने।
ताहि कह्या हृदे महि नही आने।
दोनों वीर को तिन दुःख दीआ।
सांईदास तिहि लीयो जीआ ॥१६९

पवन पुत्र के मन माहि आई। राम लक्षन कौ देषो जाई ॥
कहा भयो वाहरि नही आए। रवि चढयो सस गयो दुराई ॥
चलति चलति जवि अंतर आयो। रवि सस दोई ना निर्षायो ॥
रवि ससि गयो दुराइ मेरे भाई। तिमरु भयो कछु द्रिष्ट न आई ॥
मन महि अधिकै भयो विस्वासा। भूलि गयो तिहि भोग विलासा ॥

पवन पुत्र वहु रुदनु करायो। थक्ति रह्यो मनि महि विस्मायो ।।
जवि इहि संचर मानु षलोयो। राम व्योग अधिक वहु रोयो ।।
वसुधा गौ रूपु धारि करि आई। पवन पुत्र सौ कह्यो सुनाई ।।
हे हनूमान किउ रुदनु करावै। किति प्रजोग मनि महि विस्मावै ।।
इहि विधि मोसौ कहो सुणाई। पवन पुत्र तुझै राम दुहाई ।।
पवन पुत्र तव वचन उचारे। हे मय्या संचरु अति धारे ।।
राम लषन किने षडे दुराई। तांकी सुधि मै मूल नि पाई ।।
गौ कह्यो इहि विधि सुकचावो। इहि प्रजोग तुमि रुदनु करावो ।।
मै इहि तुमि कौ देयो वताई। रुदनु न करहो मेरे भाई ।।
पवन पुत्र तव विनती ठानी। कहु किन षडे है सारंग पानी ।।
गो कह्यो अहीरावण आयो। महीरावण इहि कर्मु कमायो ।।
लषन राम तिन षडे दुराई। इहि विधि मै तुझै दीई वताई ।।
पवन पुत्र जवि इहि सुण पायो। सांईदास रंचिकि सुषु पायो ।।१७०

पवन पुत्र तिहि वलु अधिकाई। जवि ते इहि विधि सुण करि पाई
सुनति वाति तव ही उठि धाया। महीरावण मारण को आया ।।
हनूमान जवि मग महि आए। राकस अधिक ताहि निर्षाए ।।
राकसो सों वहु युद्ध करायो। सभ ही राकस ताहि हतायो ।।
तव ही गवनु आगै को कीने। अति पषाण निर्ष करि लीने ।।
पषाण उठाई दीए ततकारा। ले पषाण मग से ओडि डारा ।।
एकु पषाणु ताहि पूछ पर्‍यो। ताहि पूछ रंचिक नोक गिर्‍यो ।।
इहि विधि करि आगे को धायो। चला चला नग्री महि आयो ।।
सूक्ष्म रूप तव ही करि लीना। कितहू द्रिग सौ निर्ष न लीना ।।
नग्री महि सभ वाति चलावहि। राम लक्षन को नामु उचराहि ।।
महीरावण दोई वंधि आने। तिहि मार्ण सो चितु ठहिराने ।।
देवी भवनि तिहि रक्त चढावहि। तहू ठौर तिह जाइ हतावहि ।।
हनूमान जबि इहि सुण पायो। देवी भवन महि चलि करि आयो
पगु जाइ तिहि मूर्त्ति परि दीना। देवी मूर्त्त कौ तले कीना ।।
ताहि ठौर आप ठहिरायो। पवन पुत्र इहि कर्मु कमायो ।।
अहीरावण पर्जा वहु आई। मिष्टान पान ले ताहि चढाई ।।

जो कछु कोऊ आगे ठहिरावै। पवन पुत्र सभि हो ले षावै ।।
जो आए सभ ही विस्मावै। अति भै चक्रित होइ चितु डुलाए
आगे देवी कबहू न षायो। आजु कहा भयो अति विस्मायो ।।
अति विस्माद रहे मनि माही। सांईदास कछु कह्यो न जाही ।।१७१

इहि विधि महीरावण सुण पाई। मन महि एही आण लगाई ।।
देवी वलु चाहिति मै देवौ। सुप्रसन्न तिस कौ करि लेवौ ।।
श्री रघपति लछमन संग लीए। देवी भवन कौ तिन पग दीए ।।
अति मिष्टनु तिहि संग चलाए। चलत चलिति देवी भवन आए ।।
मिष्टान आण आगे चढाए। हनूमान वह लेकरि षाए ।।
फिरि रघपति लषमण कौ षडा कीना।
अहीरावण मुष वचनु वषीना।
जो तुमिरो कोई चित्त करावौ।
नाहि ति पाछे ते पछुतावौ।
तुमि कौ वल मै ईहा चढावौ।
छिन पल विल्मु कछु नाह करावौ।
जो कोऊ प्रीत्म तिहि चित आनो।
महीरावण ऐसो वसु ठानो।
श्री रघपति मुष वचनु सुनायो।
हे महीरावण क्या चित ल्यायो।
पवन पुत्र षवरि जो पावै। सकल नग्र को घातु करावै।
अवर कवन को चित्त ल्यावहि। बार बार क्या मुष उचिरावहि ।।
जवि श्री रघपति वचनु उचारा। हनूमान कीनी नमिस्कारा ।।
नमिस्कार कर्के उठि धायो। महीरावण को तव ही गहायो ।।
सभ जान्यो देवीं उठि आई। देवी क्रोधु कीयो अधिकाई ।।
सकली सैना तव उठि भागी। आपो अपुने ग्रहि मग लागी ।।
पवन पुत्र महीरावण गह्यो। अहीरावण को ऐसे कह्यो ।।
हे पातक तै क्या मनि आना। श्री रघिपति को क्या करि जाना।।
तले दीउो दे भुजि उपिडाई। डार दीई परी लंका आई ।।
रावण वनिता सो जु षलाई। भुजा पडी वहुत हूही जाई ।।

रावरण भुजा न द्रिग सौ देषी । खल विनासनु तिह मूल न पेषी ।।
वनिता सौ तिन वचनु उचारयो । जो तूं कहति रघपति है आयो ।।
महीरावरण सोई वंधि आना । हे मंदोदरी तै नही जाना ।।
महीरावरण तिन कौ ले मारा । महीरावरण तिह भुजा उपारा ।।
फिरि मंदोदर तांको प्रतु दीना । हे मतिमूढ कहा चित कीना ।।
एहि भुजा महीरावरण देष लेवौ । पाछे कछु मनि औरु करेवौ ।।
जवि रावरण ले भुजा निहारी । अति विस्वासु लीओ हृदे धारी ।।
मंदोदरी फिरि ताहि सुनायो । हे रावरण अवि क्युं विस्मायो ।।
अवि ही जानकी को ले आओ । मुष महि त्रिरण ले सर्नी धावो ।।
नाहि ति तुमि कौ भी एहि होई । महीरावरण को कीनी सोई ।।
रावरण कह्यो कहा उचिरावै । हे वनिता क्या भर्मि भुलावै ।।
मोह सर तांको बलु कहा होई । मोहि सर अवरु वली नही कोई ।।
मंदोदरी वहुरो कह्यो सुनाई । हे नृप अजहूं प्रतीत न आई ।।
एक वंचरि तोहि लंक जराई । अहीरावरण की भुजा उपिराई ।।
पुनि कहिति मो सर ना कोई । इसि धर्ती परि अवरु न होई ।।
एक वंचर तोह एहि करायो । असे वंचरि केते आयो ।।
जो तूं अपुनो वहु भलो लोडे । तिमर गुमानु हृदे ते तोडे ।।
रावरण कह्यो ताहि नही माने । अति अभिमानु हृदे महि आने ।।
मंदोदरी ताहि जेता समझावै । सांईदास नृप स्मझि न पावै १७२

पवन पुत्र महिरावणु मार्यो ।
तांकी भुजा उनि पकिर उपार्यो ।।

तांकी सैना सकल हताई । पवन पुत्र धंन्न धंन्न ता भाई ।।
रघपत की फांसी कटि डारी । पवन पुत्र को वलु अधिकारी ।।
रव सस को हनूमानु ल्यावो । एहि कामु हनूमान करायो ।।
महीरावरण वनिता चलि आई । चर्नि लगी रघुपति के धाई ।।
मुख ते उस्तिति अनक उचारी । तांकी वात न जाइ वीचारी ।।
चरन लाग गृहि मै ठहिराई । श्री रघपति तिह भए सहाई ।।
पवन पुत्र रघपति संग लीए । लक्ष्मन सहित गवनु तिन कीए ।।
चले चले दधि के तटि आए । आइ सिंघासन परि ठहिराए ।।

सकल सैन तव ही मिल आई। रघपति को डंडौत कराई ॥
महा अधिक सुषु तांकौ होया। अति ब्योग तिन्हा मनि ते षोया ॥
तिमरु गयो उजीआरा आयो। रव सस ने जवि मुषु दिषलायो ॥
वादर मंडल पवनि विचारा। रव निकस्यो होयो उजीआरा ॥
जोति प्रकास भई रव केरी।
तिमरु तव ही हटि गयो अधिकेरी ॥
हे साधो रघपति जसु गावो। जसु गावति छिनु ना अलिसावो ॥
जो सेवा रघपति की कर्सी। तिहि भुज वलु प्रभ वहुता धर्सी ॥
जैसे हनूमान वलु दीआ। वलु अधिक प्रभ किर्पा कीआ ॥
धंन्न धंन्न जो हरि जसु गावहि। नाम जप्त जो ना अलिसावहि ॥
श्री रघपति लछमन दोऊ भाई। सांईदास सेवा चितु लाई १७३

अंगद कह्यो रघपति के ताई। हे प्रभ पूर्न त्रिभवन साई ॥
जो आज्ञा होइ लंका जावौ। कनक पुरी देषे प्रभ आवौ ॥
श्री रघपति तिहि आज्ञा दीनी। अंगदु गवनु लंक पुरी कीनी।
तात्काल लंका महि आयो। कनक पुरी महि धूम रचायो ॥
ईहा कूद करे ऊहा जावै। कनक पुरी को त्रासु दिषावै ॥
अधिक असुर अंगद ने मारे। युद्ध कीनो करि योधि प्रहारे ॥
रावण ने इहि विधि सुण पाई। कह्यो वंचरि को लेहु वुलाई ॥
डर्पिमान होइ करि वहु आए।
अंगद सौ कह्यो नृप तुमहि वुलाए ॥
अंगद तिहि संग उठि करि धायो।
चलति चलति रावन पहि आवो ॥
रावण कह्यो क्या धूम रचाई। हे वंचरि क्या मन ठहिराई ॥
तव अंगद तिस कह्यो सुणाई। हे मतिहीन क्या वाति उचिराई ॥
मम ताई तूं जानति नाही। मैं अंगद सुत वाल पुछाही ॥
वाल महावली कौं नही जाने। ताहि त्रासु मन महि नही आने ॥
जिन तुझि कौ तनूनी अटिकायो। षष्ट मास तुझि छुटण नि पायो ॥
ताहि बली कौ मै सुतु आयो। तै मन महि कहु क्या ठहिरायो ॥
जवि अंगद इह्नि वात उचारी। रावणतव मनि लीओ वीचारी ॥

अंगद सौ तिन आष सुणाया। तूं सुतु वाल भयो प्रगटाया।।
तोहि तात कौ राम सिंहारा। तुमि सौ वैरु कीओ अति भारा।।
ताहि जोरि होइ युद्ध कौ आयो। भलो वैरु ते पित का पायो।।
ऐसो पूतु न होयो भलो है। गर्भि माह वह गल्यो भलो है।।
जो पित केरा वैरु न लेई। पित वैरु लेन चितु न देई।।
हे अंगद सुन हो मेरी वाता। विधवा करी इनि तुमिरी माता।।
तुमि आवो हमिरौ सर्नाई। तोहि पितु वैरु लेवौ मेरे भाई।।
मेरो कह्यो सुण मनि लीजै। सांईदास कछु अवरु न कीजै १७४

जवि रावण इहि वचन सुनाए। अंगद ताह कह्यो समझाए।।
हे मतिमूढ़ कहा चित आना। तै कित रघुपति नाही जाना।।
मोहि पित ने ऐसे की कामा। अहि राषी वंधू की भामा।।
वंधू को तिन मार निकारा। तव श्री रघुपति तां को मारा।।
मो को तुमि इहि वात सुणावो। हमिरी सर्नाई तुमि आवो।।
अवि ही मै तुम ताई मारों। पकरि सीस तोहि भुजा उपारों।।
श्री रामचंद्र आज्ञा नही पाई। इहि प्रजोग मोह कछु न वसाई।।
जो अपुनी भलि आई लौडै। गर्वु गुमानु हृदे ते छोडै।।
जानकी संग ले करि उठि धावो। श्री रघुपत की सर्नी आवो।।
नाहि त रघुपति सेतु वंधावो। हे रावण रघुपतु है आयो।।
किह प्रयोग अपुनो जीउ देवै। किह प्रजोग दुःख मन महि लेवै।।
मैं तुम कौ इहि आष सुणायो। सांईदास रघुपति है आयो १७५

रावण क्रोधु कीयो उचिरायो। हे वंचरि मनि क्या ठहिरायो।।
अवि ही तुमि कौ पकरि संहारों। रामचंद को सहिति ही मारों।।
मो सरि तांको वलु कहा होई। मो सरि दूजा अवर न कोई।।
मैं कैसे जानकी ले जावों। रामचंद की सर्नि धावों।।
सिंहु मृगु सर्नी कहा जावै। स्वानु जंपक ते कहा डरावै।।
वाजु षग ते किउ करे त्रासा। मोह रावण को नाहि विनासा।।
ब्रिछु छाया ते कैसे भागे। सूरा रण कहु कैसे त्यागे।।
हे अंगद क्या वचन सुनावै। महा क्रोधु काहे उपिजावै।।
अंगद फिरि रावण सौं भाषा। हे मतिहीन क्या अंतर राषा।।

तूं रघपति सर कहा कहावै । तुमरो वलु तिह कहा वसावै ॥
एक प्रतज्ञा तुमि सौ करहो । सो प्रतज्ञा निश्चल धरहो ॥
मोह पग को जो तुमहि चलावो । वलु करि अपुना तिसे हलावो ॥
मैं जानो जानकी तुमि नाही देवौ । एहि प्रतज्ञा मनि धरि लेवौ ॥
तोहि उोर युद्ध जाइ करहो । श्री रघपति सेती जाइ लरहो ॥
जो तुमि से इहि होइ न आवै । तौ काहे को भर्म भुलावै ॥
रावण कह्यो भला ते आषा । इहि प्रतज्ञा मैं मनि राषा ॥
अंगद पदु धर्नी ठहिरायो । रावण पगु को टार्न आयो ॥
रघपति मनि महि लीयो वीचारी । महा कठनि बनी अति भारी ॥
मोह सेवक प्रतज्ञा कीई, कठनि प्रतज्ञा मन महि लीई ॥
जो रावण तिस को पगु टारै । तौ मोह सेवकु प्राण को हारै ॥
मोसे इहि विधि सही न जाई । वसुधा तव प्रभ लई वुलाई ॥
धोल्हू वुलाइ लीयो तत्कारे । गुननिधान प्रभु अपर अपारे ॥
वाकु भीत वही उठि आया । जवि श्री रघपति ताहि वुलाया ॥
हे वाकस पगु धौल्हू को गहु तूं । वलु अपुनो को तहा वहु तूं ॥
धौल्ह गयो वसुधा के ताई । वसुधा पग अंगद उर्भाई ॥
वल करि पग को षिसण न देवौ । जो मै कह्या मनि धरि लेवौ ॥
इनि सभ ही ऐसा ही कीना । जो रघपति ने आज्ञा दीना ॥
रावणु आइ पग कौ करु लायौ । अंगद तव तिहि आष सुणायो ॥
हे रावण इहि मति तुमारी । मोहि पगि आइ लगो तत्कारी ॥
मैं सेवकु रघपति को आयो । मोको पकर्यो चर्नि लगायो ॥
मोह सेवक सौं सर्ना आयो । रघपति रीस तूं कहा करायो ॥
रावण वलु अपुनो वहु लायो । हारि पर्यो पगु नाहि हलायो ॥
रघपति तिहि पग परि क्या कीआ । त्रैलोक भारु आण दीआ ॥
रावण वल कहा ताह हलावै । पगु न हलायो मन विसमावै ॥
कह्यो कहा भयो मोह वल ताई । इसि पग को टार्नि न पाई ॥
अति भै चक्रित मन महि बिस्मावो । सांईदास वल नाहि वसायो १७६

अंगद मुकुट सिरि ते षसि लीआ । तजि तांको गवनु उनि कीआ ॥
तात्काल रघपति पहि आयो । मुकटु कनक को आण दिषायो ॥

हे प्रभ रावण को ले आया। तोहि किर्पा करि ताहि हराया।।
तहा प्रतज्ञा मैं कीई भारी। तोहि क्रिपा करि मूल न हारी।।
तूं प्रभ सदा सहाई मेरा। त्रैलोक चेरा है तेरा।।
रावण अति अभिमानु करायो। हे प्रभ मो प्रतज्ञा पायो।।
तुमि किर्पा करि पूर्ण होई। जो प्रतज्ञा मैं कीई सोई।।
तू सेवक को सदा सहाई। भीर परे तहा तुमि ही मीटाई।।
तूं जन को प्रभ दुःख निवार्न। भक्ति हेत तूं रूप पसार्न।।
तोहि कला को प्रभ को जाने। तोहि कला प्रभ कौनु पछानें।।
संकटि काटनि सुख को दाता।
घटि घटि माही आप है राता।
जहा जहा भीर परी रघुराई।
सांईदास तहा तुमहि मिटाई।।१७७

कह्यो मंदोदरी रावण ताई।
हे मतिमूढि समझु मनि माही।
एक वंचरु जो प्रथमे आयो।
कनकपुरी कौ तिन हि जलायो।
अधिक सैन ताहू ने मारी।
तोहि सुत तिन ने लीए विडारी।
अवि दूजे वंचरि इहि कीआ।
छत्र मुकट सिरि तुमि षसि लीआ।
इनि भी सैना पर्लो कीनी।
इहि प्रतज्ञा तुमि कौ दीनी।
तो का पाउं न सक्यो उठाई।
कहा मूढ मति मनि ठहिराई।
तूं तिहि सेवक सरिना होयो।
अति अभिमानु किउ मनि महि पायो।
औरु वाति सकली तजि देवौ।
मोहि कहा मनि महि धरि लेवौ।

जानकी संग लेइ तुमि जावौ।
रघुपति ताई जाइ मनावौ।
तोहि औगरण वहु सकल मिटावै।
हे नृप जो इहि कामु कमावै।
रावण जवि इहि विधि सुणी काना।
अति क्रोधु मनि माहे आना।
हे मंदोदरी तूं कहा जाने।
मोहि गत को तूं कहा पछाने।
भागै पाछे काहे जाय्यै।
जो भागे तिहि क्या डरि पाय्यै।
जो तिहि वनचर बलु सा भारी।
काहे भाग गिया तत्कारी।
तूं इसि विधि को पावै नाही।
काहे फिरि फिरि वाति चलाही।
रावणु अस कहि वाहिर आया।
आइ सभा माहे ठहिराया।
अति अनंदु तिहि भौ नही कोई।
सांईदास होणी होइ सु होई॥१७८
जवि रावरण सभा आइ ठहिरायो।
वभीक्षरण तिहि वचनु सुरणायो।
हे नृप सुणहो वात हमारी।
कौणु वाति तुमि मन महि धारी।
जानकी ले करि अहि ठहिराई।
अति उपाधि नृप तोहि उठाई।
श्री रघुपति ने सेतु वंधायो।
कनकपुरी तोडनि को आयो।
जानकी खडि के सुष जीउ पाहो।
जानकी ले जाहि जे सुष चाहो।
नाहि न नासु कुल तुमिरा होई।
हे वंधू छूटै नहीं कोई।

सभि कौ रघपति मार संघारे।
बीस भुजा दस सीस विडारे।
काहे कुल का नासु करावै।
कहे को इहि कर्मु कमावै।
तव रावण वीभीक्षण प्रति कह्या।
हे वंधू क्या मनि उरि पर्या।
कहा रामु मोहि सरि जो होई।
मो सरि दूजा नाहीं कोई।
मो सौ इहि विधि काहु सुनावै।
मो पहि इहि विधि किउ उचिरावै।
तूं भी जाइ तिहि होउ सहाई। मैं नहीं डर्यो मेरे भाई॥
सकल सैन राम की मारौ। तव पाछे करि तोहि पछारौ॥
भली वाति तूं मोहि सुणावै। मृग वाति करि सिंहु डरावै॥
सिंहु कहा मृग कौ भउ करही। वाजु कहा वगुले ते डरही॥
हमि तिह ते डर्पे नही भाई। हमि पहि इहि विधि कीई न जाई॥
जवि वभीछनि इहि प्रतु लीना। क्रोधुमान होइ मुख उचिरीना॥
अवि मै जावति हो मेरे भाई। जो तुमि मौ सौ इहि उचिराई॥
देषो कैसे सैना मारे। तोको कैसे पकरि पछारे॥
रावण कह्यो वेग न लावो। छिनु पलु ईहा ना ठहिरावो॥
जो कछु तुम से होइ सो करहो। सांईदास कित चित्त न धरहो॥१७९

वभीछनु तव ही उठि धाया। गगन मार्ग तिनि चितु लायो॥
आइ रघपति सौ कीओ प्रनामा। घटि घटि पूर्न जान्यो रामा॥
श्री रघुपति तिहि वचन सुनायो। हे लंकेस भला कीओ आयो॥
जवि लंकेस रघुपति आषा। पवन पुत्र तव ऐसे भाषा॥
रावण ने सिरु शिव परिचारा। लंका राजु भयो अधिकारा॥
वभीछन अवि ही जो आया। प्रभ लंकेसुरु नामु धराया॥
ऐसे रघपति परि वलि जावा। निसवासर ताके गुन गावा॥
हे प्रभ कौण सेवा इनि कीनी। कनकपुरी जो इसि कौ दीनी॥
जवि हनूमान प्रश्नु इहि कीना। रघिपति ताकौ उत्तरु दीना॥

हे हनूमान इनि भजनु कमायो। मोहि चर्ण सिउं वहु चितु लायो ॥
तव मै इसे लंकेसुरु कीना। कनक पुरी मै इसि कौ दीना ॥
पवन पुत्र फिरि ऐसे आषा। कवि प्रभ भजनु इनि ने चितु राषा
तव रघपति फिरि आष सुणायो।
पवन पुत्र ते विधि न पायो।
रावण कुंभकर्ण जवि कीआ।
तव इनि भजनु मोहि मनि लीना।
रावण राजु वांध्यो सो पायो।
कुंभकर्ण निद्रा चितु लायो।
वभीछन ने भक्ति जचाई।
जो इनि वाध्या सोई पाई।
पवन पुत्र इहु भक्त हमारा।
छिनु पलु हमि ते नाह न्यारा।
मोहि ध्यानु इसि के घटि माही।
औरु वाति इहि जानति नाही।
हनूमान तव सत्य करि जाना।
जवि श्री रघपति एहि वषाना।
वभीछनि को वहु भलो भायो।
श्री रघपति तिह मानु वढायो।
श्री रघपति तिह सो जो भाषा।
कनकपुरी विधि सभु तिन आषा।
श्री रामचंद सुण विधि हिर्षाए।
सांईदास तव वहु सुष पाए ॥१८०

सेतुवंधि पुलु मुहकमि कीना। सैना वहु रघपति संग लीना ॥
इहितटत्यागउसितटि तीर आए। पद्म अठारा कपि सर्वाए ॥
वज्र वाली तिहि वलु भारा। युद्ध कर्नि प्रभ सौ चित धारा ॥
सैना अधिक लीए वहु आयो। युद्ध कर्नि कौ सन्मुष धायो ॥
तिहि ने युद्ध कीयो अधिकारी। रघपति सैना तांकी मारी ॥
तांको सीस प्रभ ने कटि लीना। स्वर्ग द्वार पठाइ करि दीना ॥

ग्रौरु ग्रधिक दानव चलि ग्राए। श्री कौलापति सभ ही हताए ॥
जिह प्रभ करि सौ प्रान तजाए। तात्काल बैकुंठि सिधाए ॥
एकि मरे उौरे चलि ग्रावहि। श्री रघपति सौ युद्ध करावहि ॥
प्रभ ने मारे क्षिण के माहे। छिन मात्र महि उौरु उपिजाहे ॥
जो जो दैत ग्राण प्रभ मारे। ग्रसुर बुद्ध प्रभ लीए उधारे ॥
हे साधो हरि नामु ध्यावो। सांईदास प्रभ के गुरा गावो ॥१८१

रावण ने तव ही सुरा पायो। वज्र वाली को राम हतायो ॥
ताहि सैन सकली तिन मारी। तव रावरा मन लीई वीचारी ॥
इंद्रिजीत कौ लीयो बुलाई। हे सुत मेरे वहु सुषदाई ॥
तुमि रघुपति के सण्मुख जावौ। तांसौ जाइ करि युद्ध करावौ ॥
वज्र वाली को तनि ने मारा। हे सुत तिन ने वहु प्रहारा ॥
इंद्रिजीत तव ही उठि धायो। चलित चलित वहु ररा महि ग्रायो
द्रिष्ट न ग्रावै युद्ध कराए। इंद्रिजीत को वलु ग्रधिकाए ॥
ग्रग्नि वसे मध कर परहारे। ग्रद्रिष्ट होइ सैना कौ मारे ॥
इंद्रिजीत ग्रधिक युद्ध कीग्रा। राम सैन को वहु दुख दीग्रा ॥
सकल सैन तिन ने मूर्छाई। को मूर्छे को प्रान तजाई ॥
हनूमानु नल नील मूर्छायो। उोरु सैन सभ प्रान तजायो ॥
इंद्रिजीत जान्या सभु मारे। सांईदास तब लंक सिधारे ॥१८२

सुत ग्रसुनीकुमार को भाई। नील नाम तिहि ग्राष सुनाई ॥
तिहि हनूमान सौ ग्राष सुराया। पवन पुत्र ग्रवि क्या विस्माया ॥
लछमन सहति सैना मूर्छाई। कहा कीजै कहू मेरे भाई ॥
जो उपिचारु कहो सो करहो। तोहि कह्या मनि ग्रंतरि धरहो ॥
नील तव ही वचनु उचारयो। पवन पुत्र सौ ग्राष सुरायो ॥
सुरजीवरगी बूटी पर्वत माही। गंधिमावनु तिहि नामु ग्रषाही ॥
वहु बूटी जो तुमि ले ग्रावो। सकल सैना को तुम जीवावौ ॥
हनूमान कह्यो उसि कैसे पावौ। गंधिमानि पर्वत परि जावौ ॥
ताहि चिहनि कछु देह वताई। मै वूटी को ल्यावो जाई ॥
नील कह्यो सुरा हो मेरे भाई। ग्रग्नि चिणकारु वांको चमिकाई ॥

वाही बूटी को तुमि ल्यावो।
पवन पुत्र छिनु विल्मु न लावो।
सभ विधि मै तुम्है दीई वताई।
सांईदास सुरग हो चितु लाई॥१८३॥

पवन पुत्र तव ही उठि धाया।
गगन मार्ग तिन मनु ठहिराया।
त्याग अयोध्या आगे आया।
भर्थ तव ही इसि कौ निर्षाया।
कह्यो गया वहुरु जु आवै।
मोहि वाणु नीको इहि षावै।
असुर अधिक है तिह मग माही।
ताहि त्रास को जाण न पाही।
पवन पुत्र सभ असुर संघारे। तव पाछे आगे पगु धारे॥
गंधिमावनि पर्वत परि आयो। बूटी तिन ने वहु निर्षायो॥
सकली बूटी वहु चमिकावै। पवन पुत्र मनि महि विस्मावै॥
एहि बूटी सभ एकि दिषावै। मोह मनि बूटी पर्षि न आवै॥
जो इकि तोरि षरों मेरे भाई। वहि ना होई अवरु होइ जाई॥
वहुरो कौणु कहो ईहा आवै। वार वार किसे वलु धावै॥
सभ पर्वतु ले जाउ उठाई। तौ कार्जु पूर्ण होइ भाई॥
गंधिमा वन तिनि मूल उपारा। लेकरि अपुने सीस मझारा॥
कनक पुरी कौ तव उठि धायो। नग्र अयोध्या के निकटि आयो॥
भर्थ जोहति मगु इहि ठहिरायो। इहि आये षिच वाण लगायो॥
पवन पुत्र गिरि सहिति गिरायो। राम राम कहि वसुधा पर्या॥
भर्थ राम को नामु सुण पायो। तात्काल वंचर निकटि आयो॥
कौशल्या कौकेही आई। हनूमान पहि आइ ठहिराई॥
कहचो कवनु तूं राम जु आषा। श्री राम नामु तै मुष ते भाषा॥
इसि का मोको देह वीचारा। हे वंचर तुम करो नवारा॥
तुमि अरु राम कहा वनि आई। तूं वंचर वह त्रिभवन राई॥
तांका संगु कैसे तै लीना। ताहि नामु कैसे उचिरीना॥

छिन पल विल्मु कछु नाहि करावो।
इहि ब्रितांतु तुमि मोहि सुणावो।
मै तुमि सौ इहि भाष सुणायो।
सांईदास तुमि मोहि वतायो॥१८४

पवन पुत्र तव कह्यो सुणाई। सुण हो भर्थि रघपति के भाई॥
रावणु दैतु महा वलकाई। जानकी तिन ने षडी दुराई॥
रघपति जानकी हेरति श्रायो। नृप सुग्रीमु जहा ठहिरायो॥
मै मंत्री ताको सा भाई। सुग्रीम मोह कह्यो सुणाई॥
इहि दो वीर को लेहु वुलाई। इनि पाहे जाहो तुमि धाई॥
मै चलि रघपति पाहे श्राया। लक्ष्मण वीर सहित रघुराया॥
मै इनि दोनों को ले धाया। सुग्रीम पाहे ले धाया॥
वाल कपु सुग्रीम को भाई। महावली तिह वलु श्रधिकाई॥
सुग्रीम को मारि निकारा। राजु श्राप लीयो तत्कारा॥
तांकी वनता भी षसि लीई। इहि विधि वालि कपु ने कीई॥
सुग्रीमु श्राइ वनि महि ठहिरायो।
जहा सदहल ऋषि श्राश्रमु छायो।
श्री रघपति तांको कह्यो भाई।
सुग्रीम मोह देहु वताई।
कहु कैसे वन महि ठहिराए।
वनि माहे श्रासणु किउ छाए।
सुग्रीम तव सकल वीचारी।
हे प्रभ मोह वनी श्रति भारी।
मोहि राजु वल षसि लीश्रा।
मो परि श्रधिक जोरा उनि कीश्रा।
मोह वनिता उनि लीई छिनाई।
मोहि वलु तासौ नाहि वसाई।
इहि प्रजोग ईहा ठहिरायो। हे प्रभ ईहा श्रासुणु छायो॥
रघपति श्रग्नि जलाई कराए। तांसौ प्रतज्ञा कीई श्रधिकाए॥
कह्यो वालि कपि कौ मै मारहो। पाछे उौरु वाति ब्रित धरिहो॥

श्री रघपति जाइ वालु संहार्यो। सांधि वाणु प्रभ तांकौ मार्यो।।
सुग्रीम कौ राजु दिवायो। श्री रघपति इहि काजु करायो।।
सुग्रीम कौ संग प्रभ लीए। कनक पुरी कौ गवनु प्रभ कीए।।
तव ते मैं रघपति सर्न आया। रघपति कार्ज सो चितु लाया।।
इंद्रिजीत सभ को मूर्छायो। सुरजीवन वुटी लेन मै आयो।।
अवि तुमि मोको धर्नि गिरायो। हमिरो वलु तै सकल हिरायो।।
कैसे करि पर्वतु ले जावौ। सुरजीवन वूटी तहा पहुचावौ।।
विनु वूटी सभि तजहि प्राना। हे नृप भर्थ सुणों मनि माना।।
तवि ही भर्थ ने वचनु उचारा। पवन पुत्र वलु घटयो तुम्हारा।।
पर्वतु वाण ऊपरि ठहिरावो। तुमि भी इसि के सहिति ही आवौ
मै तुम्हि रघपति पहु पहुचावौ। छिन पलु विलम नाहि कछु लावौ
पवन पुत्र तव ही मन धारा। भर्थ की भुज माहे वलु भारा।।
फिरि भर्थ सो विनती ठानी। तुमिरी गति मै नाही जानी।।
तुमि कौ वलु ऐसो है भाई। मै सेवकु तुमिरी सर्नाई।।
तुमि किर्पा से मम वलु होया। जाग पर्यो संचरु सा षोया।।
तुमि किर्पा करि मै ले जावो। पल माहे घडि के पहुचावौ।।
भर्थ से आज्ञा लेकरि धाया। सांईदास रघपति पहि आया।।१८५

पर्वतु नील को आण दिषायो। नील सुरजीवनी वूटी पायो।।
सकल सैना कौ ताहि सिंघाई। सैना जाग परी अधिकाई।।
श्री राम नाम सभि मुषो उचारा। राम नामु है प्रान अधारा।।
जाग परे सैना सुष पायो। श्री राम नाम जी को जसु गायो।।
जवि सभ सैना प्रगटि षलोई। मूर्छा होयो रहचो न कोई।।
रघपति पवन पुत्र सौ कहचा। हे हनूमान कहा वहि रहचा।।
गंधमावनि पर्वतु ले जावौ। तहू ठौर षडि करि ठहिरावो।।
नाहि त सुर वहुता दुःख पाही। मूर्छा होई नाहि जीवाही।।
पवन पुत्र पर्वतु ले धायो। वहुर आण करि तहू टिकायो।।
ताहि टिकाइ आयो प्रभ पाही। हरि सिमरति दुःख लागै नाही।।
जो जो हरि सेवा चितु धारे। तात्काल प्रभ तासि उवारे।।
वेद पुरान सिंमृति जसु गावै। सांईदास सर्नी जो आवै १८६

श्री रघपति सभ लीए बुलाई। जिह् कौ वलु सा वहु अधिकाई ॥
वभीखन सुग्रीमु बुलायो। हनूमान अंगद चलि आयो ॥
जामवानु नल नील भी आए। वडे वडे वली सकल सदाए ॥
तिहि कह्यो श्री रघपति राए। ऐसी विधि को देहु वताए ॥
जासु कीए लंका गढु टूटै। रावण कुंभकर्ण सिरु फूटै ॥
तबी विभीक्ष्ण वचनु उचारा। सुण हो बिनती प्रान अधारा ॥
इंद्रजीतु जवि नाहि हतावौ। लंका नामु लेने कहा पावो ॥
हे प्रभ इंद्रिजीतु वलिकारी। तांकी भुज महि वलु अधिकारी ॥
वलि करि वहु हमि हत्यो न जाई। मैं इकि विधि तुमि देवौ वताई ॥
जवि इहि करि तासि कौ मारो। पाछे रावण भुजा उपारो ॥
जवि लगि इंद्रिजीतु ना मारों। लंका नाम प्रभ हृदे न सारो ॥
मैं बिनती प्रभ आष सुणाई। सांईदास सुण ले मेरे भाई १८७।

श्री रघपति तव कह्यो पुकारा। हे वभीक्षण वीरु हमारा ॥
वहि विधि हमि को देहि वताई।
जिह कीए इंद्रिजीतु हन्यो जाई ॥
वभीछन तव आष सुणाया। सुण हो रघिपति त्रिभवन राया ॥
मै सभ विधि तुमि देउ वताई। तुमि सुण लेहो हितु चितु लाई ॥
ब्रह्म महूर्त्त उठि वनि जावै। इंद्रिजीतु जाइ यज्ञु करावै ॥
अग्नि कौ अधिक अहूति देवै। सुप्रसन्न तांकौ करि लेवै ॥
अग्नि रूप दाहन अग आवै। तिहि करि प्रभ वहु हार न पावै ॥
जवि वहु यज्ञ कर्नि कौ जावै। शस्त्र अपुने इसि दे जावै ॥
इहि शस्त्र ताके ले आवै। तुमि सेना संग ले अधिकावै ॥
वांको यज्ञु न कर्न देवौ। एहि करो तवि तिसि हति लेवो ॥
रघिपति कह्यो वहु भला आषा। हे लंकेसरि वहु भलो भापा ॥
जो तुमि कहो करहि हमि सोई। सांईदास विधि लिष्यो सु होई १८८।

ब्रह्म महूर्त्ति जवि ते भया। इंद्रिजीतु यज्ञ कर्ने गया ॥
श्री लछमन सैना संग लीए। इंद्रिजीतु ओरि चित दीए ॥
वभीछन तहूं ठौर ल्याया। इंद्रिजीत जहा यज्ञु रचाया ॥
रघपति सैना वाण चलाए। इंद्रिजीत के अंग लगाए ॥

इंद्रिजीत यज्ञ कर्नि न पायो। विनु यज्ञ कीए युद्ध को आयो ।।
विनु यज्ञ कीए वल न वसावै। कहु कैसे वहु युद्ध करावै ।।
विनु वल युद्ध कहा को करई। विनु भुज कहु कैसे कोऊ लरई ।।
इंद्रिजीत को इनहि हतायो। वलि करि अपुने मारि चुकायो ।।
ताहि मार रघपत पहि आए। श्री रघुपति सुण वहु हिर्षाए ।।
भला कीओ पातकि को मारा। भला कीया पातकु प्रहारा ।।
जीत भई रणु तिहि कर आयो। अति अनंद हो मंगल गायो ।।
श्री रघुपति समसर को होई। सांईदास हरि सरि नही कोई १८६

रावण ने इहि विधि सुण पायो। इंद्रिजीत को तिन्हहि हतायो ।।
क्रोधु कीओ मनि महि अधिकारा। ताहि भुजा माहे वल भारा ।।
सैन संग ले युद्ध कौ आया। श्री रघुपति इहि ओरि ते धाया ।।
अध्कि युद्ध रावण सौ कीना।
वीस भुजा दसि सीस कटि लीना ।।
जवि सिरु कटै औरु प्रगटावै। एकु कटे एकु औरि उपिजावै ।।
दसि ही वार ऐसे प्रभ कीना। रावण के सिर कटि कटि लीना ।।
रावण फेरि गयो गृहि माहे। कुंभकर्ण सुख सोया जाहे ।।
कुंभ अध्कि मदि संग भराए। भैंसिके सुत वहु घातु कराए ।।
जौ जागै तव इसि कौ षाए। त्रिषा गहे इसि पान कराए ।।
कुंभकर्नि औरि आण टिकाए। रावण ने इहि कर्म कमाए ।।
वाजंत्र वहु भांति वजावै। कुंभकर्णु केहूं नीद उघिरावै ।।
कुंभिकर्ण सोया अधिकाई। तांको देहि सुर्ति नही काई ।।
हस्ती सौ वहु ताल वजायो। कुंभकर्न कछु सुर्त न पायो ।।
मदि करि वध्कि ताहि कौ मारे। कुंभकर्न तव नैन उघारे ।।
रावण बहु विलापु करायो।
हे मोहि वीर चितु सौण की लायो ।।
लछमन इंद्रिजीत को मारा। मोहि सीसु वहु तिन कटि डारा ।।
तुमि क्या सोए हो मेरे भाई। उठो युद्ध करो रघराई ।।
कुंभकर्ण तव उठि षलोया। हे मोहि वीर कहा कछु होया ।।
संढे अधिक तव ही उनि षाए। मद कौ तिन ने पान कराए ।।

ताहि षाइ शांत घरि आया। रावण सौ तव वचनु सुणाया ।।
हे मोहि वीर कवन दुःख पायो। कहो कवन तुमि आण सतायो ।।
एहि विधि मोको देहु वताई। किउ विस्मावै मेरे भाई ।।
जो कोई तुम्हि कौ दुःख देवै। सांईदास तिहि हतनु करेवै १९०

रावण तिहि सौ कह्यो सुनाई। सुन हो वंधू मोहि सुषदाई ।।
रामचंदि लक्ष्मण दोऊ आए। इंद्रिजीतु तिहि घातु कराए ।।
सैना मोहि अधिक तिहि मारी। सीस भुजा हमिरी कटि डारी ।।
कुंभकर्ण जवि इहि सुण पाई। सैना वहु मारी रघुराई ।।
रावण सौ तव वचनु सुणायो। हे वंधू तै क्या चित लायो ।।
श्री रामचंद सौ युद्ध करावहि। रघपति सरि कैसे तू आवहि ।।
रघपति सौ मै युद्ध न करहो। युद्ध कर्नि कौ चितु न धरिहो ।।
रावण फिरि करि ताहि सुनायो। हे मोहि वीर कहा उचिरायो ।।
मै तोहि वल करि कर्म कमायो। तोंहि वल परि विरोधु उठायो ।।
किहि प्रकार तूं युद्ध न करही। रघपति सेती किउ ना लरही ।।
इहि विधि मोकौ देहु वताई। है वंधू मोहि वहु सुखदाई ।।
मोह मनि महि संचरु वहु आयो।
हे वंधू तै क्या उचिरायो।
इसि का मोकौ देह विचारा।
सांईदास संचरु मनि धारा ।।१९१

कुंभकर्ण तव वचनु उचारा।
सुण हो रावण वीरु हमारा।
एक दिन गयो मै वनि के माही।
अषेरि कर्नि मृग के हरिताई।
नार्दु वैन वजावति आयो।
नार्दि मोसौ आष सुणायो।
मै गयो ब्रह्मपुरी के माही।
असुरों से सुर वहु दुःख पाही।
असुरों ने वहु धूमि रचाई।
तांसों किसको वलु न वसाई।

तहां वार्ता इहि सुण पाई।
प्रगट भए श्री रघपति राई।
असुरों को रघपति आइ मारे।
सकल सुर को वह संघारे।
काहे को विरोधु चलावो।
श्रवनो कौ तुमि काह दुःखावो।
इहि विधि नार्द मोहि सुनाई।
सोई रामु अवि आयो भाई।
कहु कैसे तिहु युद्ध करावैं।
तिसि सन्मुख कैसे हमि धावैं।
रावण कह्या सुण हो मेरे भाई।
जो तुमि मन महि एहि टिकाई।
कहु मै अवि उौर कौन पहि जावो।
ताहि ताहि सहाई संग ले आवो।
जो तुम डर्पित संग न आवो।
युद्ध कर्नि को नाही धावो।
मै तो युद्ध करो जाइ भाई।
तुमि हमिरे ना होइ सहाई।
रावण जवि इहि वचनु सुणाया।
मुर्षों वचनु करि क्रोधु उपिजाया।
कुंभकर्ण तव ऐसे आषा।
हमि डरु कहूं चित्त न राषा।
जो तुमि ने इहि वचनु सुनायो।
अधिक क्रोधु मोकौ उपिजायो।
अवि मै जाइ करि युद्ध करावो।
श्री रघपति के सन्मुख जावो।
क्रोधु कीउो कुंभकर्नि अधिकाई।
ताह भुजा महि वलु वहु भाई।
उठि षडा भयो युद्ध कौ धायो।
रघपति की सैना निर्षायो।

कंपमान वंचर सभ होए। कुंभकर्णु जवि उठि पलोए॥
लंका त्याग युद्ध कौ धायो। रघुपति की सैना महि आयो॥
वंचरि पकरि पकरि मुख डारे। भछनु करे ताहि कौ मारे॥
वंचरि अधिक ताहि ने षाए। मार्ति कूटिति आगे धाए॥
सुग्रीम को पकरि तिन लीआ। ताहि दाब कांख तले दीआ॥
नृपु जान्यो तिहि को लै धाया। कनकपुरी सौ तिन चितु लाया॥
ले आयो दरवारे माही। सुग्रीमु मनि महि विस्माही॥
हे रघुपति मोहि वाधि चलायो। कुंभकर्ण इहि कर्मु कमायो॥
जवि सुग्रीम हृदे इहि धारी। श्री रघुपति तव लीयो वीचारी॥
श्री रघुपति तव रचना धारी। सुग्रीम देह तव वहु भई भारी॥
कुंभकर्ण पहि चुकी न जाई। तिन ने यत्नु कीउो अधिकाई॥
सुग्रीम सूक्ष्म वपु कीआ। कूदि नाकु तांको कटि लीआ॥
नाकु काटि तांको उठि धाया। कुंभकर्न मनि महि विस्माया॥
कहा मुष ते अंतरि जावौ। कहा मुख मै जाइ दिषावो॥
लज्जावानु होइ करि फिरि धाया। मनि महि क्रोधु कीयो अधिकाया
वंचरि अधिक पुन आइ मारे। श्री रघपति उोरे पग धारे॥
रघुपति धन्षु वाण करि लीआ।
कुंभकर्न के पग कटि दीआ।
जवि रघुपति तिहि पग कटि दीए।
कुंभ कर्नि गोडी गवनु कीए।
फिरि वानि सों कटु कटि डारा।
तव धडि सौ चल्यो तत्कारा।
मुखु पसारे आगे आवे।
रघपति सो वहु युद्ध करावै।
रघुपति उौरु वाणु तिहि मारा।
घटि रहउो धडु ताहि विडारा।
वानु मारि मुषु तिहि फिरि लीआ।
रघुपति तिस को हतना कीआ।

कुंभ कर्नि कौ रघुपति मारा। श्री रघुपति कौ वलु अधिकारा॥
ताहि मार वैकुंठि पठायो। सांईदास विधि प्रगटि सुनायो॥१९२

कुंभकर्ण को जवि प्रभ मारा । रावण तव ही नैन निहारा ॥
लंका त्याग युद्ध कौ आयो । रघुपति सन्मुख आइ ठहिरायो ॥
अधिक युद्ध रावण ने कीआ । वंचरि अधिक ताहि हनि लीआ ॥
श्री लक्ष्मण तिहि सीसु कटि डारे । औरु सीसु आवै तत्कारे ॥
सौ सीसु रावण कटि डारा । श्री रघुपति रावण को मारा ॥
गण गंधर्व कीयो जै कारा । भला कीयो प्रभ प्रान अधारा ॥
असे पातक ताई तै मारा । हमिरी तुमि कौ है नमिस्कारा ॥
अनेक उस्तति मुषो उचिराई । हे प्रभ तुमिरी तुमि वनि आई ॥
कर उस्तित अपुने गृहि आए । अति अनंद मंगल वहु गाए ॥
भक्ति हेति तांकौ हति लीआ । सांईदास इहि कार्णु कीआ १९३

श्री रघुपति लक्ष्मण सौ कीह्या । हे मोहि वीर कहा तू वह्या ॥
भभीछन को संग ले जावो । लंका महि षडि राज वहावो ॥
जानकी कौ अंवर वहु दीए । मो पहि आनो तुमि संग लीए ॥
लछमन विभीछन को ले धाया । लंका महि खडि राजु वहारा ॥
जानकी को अंवर वहु दीए । लंका त्याग गवनु तिन कीए ॥
वभीछन संग ही फिरि आया । जानकी कौ प्रभ आण दिषाया ॥
जानकी जवि निर्षी रघुराई । अंग अंग महि नाहि समाई ॥
अति अनंदु भयो मन तांके । रोम रोम हर्षति भए वांके ॥
सकल कष्टु तिन मनहु विसारा । जव श्री रघपति नैन निहारा ॥
जैसे षग पिंजर मुक्तावै । पिंजर त्याग अध्कि सुष पावै ॥
जैसे मृग फाही तजि भागे । बन महि तांको वहु हितु लागै ॥
अति अनंदु वन माहे पावै । जिहि उौरि चितु होइ तहू धावै ॥
जैसे रोगी रोग तजाए । अति सुष मन माहे वहु पाए ॥
जैसे कमलु रवि को निर्षाए । मुष षोल्हे अनँदु वहु पाए ॥
तैसे जानकी प्रभ निर्षाई । अंग अंग तिहि वहु सुष पाई ॥
जानकी हरि देष्यो सुषु पायो । सांईदास मनि मंगलु गायो १९४

रघुपति जानकी को संग लीआ । दधि तटि त्याग गवनु उसि कीआ
सैना अध्कि ताहूं संग आई । वभीछन भक्ति महा सुषदाई ॥
वंचरि अध्कि दास संग आवहि । जैसे बादर घटि उमिडावहि ॥

चलति चलति वन माहे आए। ताही कुटी महि आइ ठहिराए।।
जासि वाहि वासा प्रभ कीना।
अवि भी ताहू महि आस्रमु लीना।।
सुष वसे आइ प्रभ रघुपतिराई। सांईदास सदा गुण गाई १९५

श्री रघुपति मन लीओ वीचारी। मतु कोई हमिरो करे विचारी।।
रावण जानकी षडी दुराई। षडि लंका माहे ठहिराई।।
तांसो फिरि रघुपति ले आए। अपुने ग्रहि महि आइ ठहिराए।।
मतु कोई जानकी कौ कछु कहई। नामु वुरो कहि तांको लहिई।।
मतु काहू के मनि भ्रमु परई। मतु काहू का चितु डोलनु करई।।
सभि ही का मै भर्मु चुकावो। जानकी दूषनु दूरि करावो।।
रघपति जानकी सों तव आषा। सुन हो जानकी मै इहि चित राषा।।
अग्नि जलाइ इसि महि तुमि डारौ।
तुमरी दूषना सकल निवारौ।
जवि जानकी इहि विधि सुण पाई।
भला कह्यो तुमि रघुपति राई।
अग्नि जलाई मोहि तिह डारो।
तासि अग्नि सौ हमि कौ जारो।
जो मोहि अवगुन भस्म होइ जावै।
नाहि त अग्नि से वाहिरि आवौ।
रघुपति इहि विधि मन ठहिराई।
सकली सैना लीई बुलाई।
रघुपति तिहि सो कह्यो पुकारे।
सुन हो इहि विधि वीर हमारे।
ईधन को तुमि मेल ल्यावो। ईहा आण के अग्नि जलावो।।
मोहि मनि संचरु है पर्यो। मम मन संचरु वहु ही कर्यो।।
तव सैना वचनु उचारा। हे प्रभ क्या संचरु मन धारा।।
किहि प्रजोग ईधनु वुलावो। किहि प्रजोग ईहा अग्नि जलावो।।
एहि वीचार हमि को प्रभ दीजै।
इहि करुणा हमि परि प्रभ कीजै।

एहि विधि सुणु संचरु मन पर्‌यो।
इहि तुमि कौनु वाति प्रभ कर्‌यो।
इहि संचरु प्रभ हमहि चुकावो। सांईदास को भर्मु मिटावो १९६

श्री रघपति तिन को प्रतु दीना। तुमि काहे संचरु मनि लीना॥
मोहि मन संचरु इहि विधि पर्‌यो। जानकी कौ रावण ले षड्यो॥
अधिक दिवस लंका ठहिराई मतु को इहि दूषनु लागे काई॥
इसि कौ अग्नि माहे मैं डारो। मनि को संचरु सभ ही निवारो॥
तव सैना ने मनि महि आनी। हे रघपति क्या वाति वषानी॥
जानकी कौ दूषनु नही लागे। जानकी दूषन सकल त्यागे॥
तांका सीलु किनहू ना टार्‌यो। ताहि धर्मु किने नाहि विडार्‌यो॥
अग्नि माहे तुमि काहे डारो। जानकी को तुमि काहे जारो॥
जवि सैना सभ एहि उचारी।
रघपति तांकौ कह्यो वीचारी।
मोहि मनि माहे य्युं ही आई।
मोहि मन ते एही ठहिराई।
मै मनि को सभ संचरि निवार्‌यो।
इहि प्रजोग इसि अग्नि सौ जारौ।
तुमि जाइ ईधनि कौ ले आवौ।
सांईदास इहि मनि ठहिराई॥१९६

जवि सभ सैना आग्या पाई।
ईधनि लेनै चले वनि धाई।
जाइ ईधनि कौं सभ ही ल्याए।
कुटीआ निकटि आए ठहिराए।
तिहि ईधनि सौ अग्नि जलाई।
भाषति अंगार को पगु ठहिराई।
पगु क्या कहीए निकटि को आवे।
निकटि कहा जो द्रिग निषवि।
द्रिग निर्षनि क्या कहीयै भाई।
तांको तेजु है अति अधिकाई।

द्रिष्ट करे तो प्रान तजावै।
भस्म होइ फिरि द्रिष्ट न आवै।
द्रिष्ट परिति उपजित मन त्रासा।
भूलि जात वहु भोग विलासा।
जानकी सौ प्रभ कह्यो पुकारे।
हे जानकी आवो तत्कारे।
अग्नि माहि प्रवेसु करावो।
इसु पावकि महि पगु ठहिरावो।
जो तुमि महि कोऊ दूषणु होई।
तुम को आणु लागे गी सोई।
जो तुमि को दुषणु नही कोई।
तुम कौ अग्नि न लगेगी ऐ होई।
जो दूषनु हौइ भस्म करावे।
सांईदास एहि वात बतावे ॥१९७

जानकी जवि इहि विधि सुरण पायो। जलु ले करि इस्नानु करायो ॥
वहु भूषण अंग कौ पहिराए। अंबर वहु तिन अंग लगाए ॥
चाहति तिह प्रवेसु कराए। तव ही सुर सकले चलि आए ॥
दसरथु रघुपति पहि आए। विबाण चढयो मुष सब्द सुनायो ॥
जानकी मध्य अग्नि ना देवो ॥
सकल सुरो ने एहि पुकारा। जो कछु दसरथ कह्यो विचारा ॥
जानकी ने तव वचन उचारे। सकल सुरो कौ दीयो वीचारे ॥
तुमि काहे इहि वचन सुनावो। किह प्रजोग तुमि इहि उचिरावो ॥
इहि महि मोह भलो है भाई। मोहि दूषणा सभ मिटि जाई ॥
अैसे ही दसरथ सौ आषा। हे पित काहे इहि तुमि भाषा ॥
तोहि क्रिपा करि को दुःख न लागे। तोहि क्रिपा सकला भ्रमु भागे ॥
मैं प्रवेसु करो इसि माही। सांईदास दुःख नाहि संताही ॥१९८

जानकी तिहि प्रवेसु करायो। अग्नि माहि जा पगु ठहिरायो ॥
अग्नि तव ही सीतलता होई। जानकी दुःख ना लागो कोई ॥
जानकी तिहि महि पगि ठहिराए। मानो सभु ही पुहप विछाए ॥

मानो सलिता माहि ठहिराई। तांके निकटि अग्नि नही आई ॥
सभ सैना की द्रिष्ट न आही। लोक कहित इसि अग्न जलाई ॥
जानकी भस्म भई इसु माही। अति संचरु सेना मनि माही ॥
जानकी का सतु किनहू न टार्यो। इसि पावक तांको क्यु जार्यो ॥
अति भै चक्रित सभु मनि विस्मावै। ताकी विधि कछु कही नि जावै ॥
सभ ही मन महि र्कति वीचारा। हे प्रभ इहि क्या रचना धारा ॥
जानकी कौ दूषना नही काई। जानकी तै प्रभु काह जलाई ॥
हे प्रभु कौनु तपासु तै कीना। कौनु वाति प्रभ मन धरि लीना ॥
तीन दिवसि निस भई वितीता। जानकी रही अग्नि के भीता ॥
हे प्रभ हमि तो सभ वौराए। सांईदास कहा कहो सुनाए ॥१९९

सभ सैना जवि मनि विस्माई। तात्काल सीता निकसि आई ॥
अति सरूपु क्या रूपु वषानो। ताह रूप अस्तुति क्या जानो ॥
त्रैलोक तिहि सरना कोई। ताहि रूप समसरि ना कोई ॥
तव सभ ही रघपति सौ आषा। कहा हमारा तुमि चित राषा ॥
जानकी कौ तैने पतीआयो। अपुने मन का भर्मु चुकायो ॥
जानकी कौ सील ते टारे। जानकी को वात उचारे ॥
जो को वुरा मन महि ल्यावे। तांको प्रभ मोह नर्कि पठावे ॥
हे प्रभ अवि तो सचरु भागा। अवि तो तैने संचरु त्यागा ॥
जानकी कौ प्रभु गृह ले आयो। अति अनंदु सभु भर्मु चुकायो ॥
रघपति भर्मु हृदे तै त्यागा। संचरु सोया तव ही जागा ॥
संचरु त्याग अधिक सुषु पाया। श्री रघपति ने भर्मु गवाया ॥
जो कछु हरि भावे सो होई। सांईदास औरु करे ना कोई ॥२००

ऋषि सौ देवौ कह्यो सुनाई। वाल्मीक पूर्ण ऋषि नाई ॥
हमिरे मन महि संचरु आयो। ताहि चितु वहु भर्मि भुलावो ॥
तुमि किर्पा करि संचरु जावै। तुमि किर्पा मनु हमि सुष पावै ॥
वाल्मीकहि विपो सौ आषा। कवन संचरु मन माहे राषा ॥
मोहि कह्यो तुमि संचरु निवारो। तुमिरे मनि को संसा टारो ॥
तव देवौ ने विनती ठानी। सुरण हो ऋषि जी ब्रह्म ज्ञानी ॥
विनती तुमि पहि आष सुणावहु। सो हमि संचरु सोई वतावहु ॥

जानकी जवि पावक महि डारी। पावक ने तव ही वहु जारी ॥
भस्म भई तिन प्रान तजाई। भस्म ते रूप कहा प्रगटाई ॥
सूकी लकडी हरी न होई। भस्म ते रूपु भयो ना कोई ॥
कहा भस्म ते मानसु होई। भस्म ते मानसु भयो न कोई ॥
क्रिपा करि हमि संचरु निवारो। सांईदास परि किर्पा धारो ॥२०१

वाल्मीक तांको प्रतु दीना। एही संचरु तुमि मनि महि लीनी ॥
सुरण हो संचरु तुमि निवारो। तुमिरे मनि को भर्मु टारो ॥
श्री रघपति जवि वनि को धाए। त्याग अयोध्या वाहिरि आए ॥
जानकी पावक महि ठहिराई। इसे राषु तूं मेरे भाई ॥
माया की जानकी संग लीए। रघपति गवनु आगे को कीए ॥
वन कुटीआ छाइ करि ठहिराए। रावरण दैंत तहा चलि आए ॥
रावण तांकौ षस्यो दुराई। षडि लंका माहे ठहिराई ॥
रघुपति तांको मारि ले आयो। रावरण की तिहि हतनु करायो ॥
विधि ने इहि विधि धुरों बनाई। रावणु जानकी कौ षडे दुराई ॥
श्री रघपतु तिह जाइ विडारे। रावरण दैत को रघुपति मारे ॥
श्री रघपति ने अग्नि जलाई। जानकी माया दी तहा पाई ॥
जानकी माया दी तहा डारी। तात्काल वहु पावक डारी ॥
जानकी जन्क सुता निकसाई। जो रघपति तिहि पाहि टिकाई ॥
जवि देवौ इहि विधि सुनी काना। संचरु त्याग भए अनंद माना ॥
श्री रघुपति कुटीआ ठहिराए। सांईदास मनि वहु सुष पाए ॥२०२

चतुर्दश वर्ष जवि भए वितीता। भर्थ कौ आइ परी इहि चीता ॥
प्रतज्ञा कह्यो पूर्ण अवि होयो। चतुर्दस वर्ष रघुपति वन पोयो ॥
अवि जाइ रघुपति को ले आवहि। आरण अयोध्या राज वहावहिं ॥
सकल प्रजा कों लीयो वुलाई। ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई ॥
मै जावति हो रघपति पाहे। ताहि ल्यावहि नग्रि के माहे ॥
आरण नग्रि महि राज वहावहि। तांके आगे टहिल कमावहि ॥
जवि पर्जा इहि विधि सुरणपायो। सभ ही भर्थ के संग उमिडायो ॥
कह्यो धंन्न धंन्न मत्ति तुम्हारी। हे प्रभ इहि विधि भली वीचारी ॥
हे प्रभ हमि भी तुमि संग जावहि। रघपति को जाइ दर्सुनु पावैहि ॥

हे नृप जी कछु विल्मु न लावहु । श्री रघपति जी की ओरि धावहु ।।
जाइ राम कौ नग्र ल्यावहि । सांईदास वहुता सुष पावहि ।।२०३

भर्थ शत्रघन लीयो वुलाई । ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई ।।
चलहो रघपति कों ले आवहि । आण करि रघुपति राज वहावहि
शत्रघनु कह्यो वहु भलो भाई । भली वाति तुमिरे मनि आई ।।
भर्थु सकल प्रजा संग लीए । श्री रघपति ओरि तिन्हे पग दीए ।।
चलति चलति रघुपति पाहे आए । सभहू आइ डंडौत कराए ।।
रघुपति भर्थ कौ अंग महि लीना । शत्रुघन को वहु हितु कीना ।।
वहुरो लछमनि ने उर लाए । अधिक भयो सुष मंगल गाए ।।
भर्थ को पूछति श्री रघुराई । अधिक अनंद है कुशल है भाई ।।
भर्थ ने तव ही विनती ठानी । तोहि कृपा सुख सारंग पानी ।।
प्रजा सभ प्रनामु सुनायो । सांईदास तिहि राजु सवायो ।।२०४

भर्थ जोरि करि मुषों पुकारा । हे श्री रघपति प्रान अधारा ।।
किर्पा करि चलहो ग्रहि माही । नग्रि अयोध्या त्रिभवन सांही ।।
चलहो चलि करि राजु करावो । हे कौलापति दूष मिटावो ।।
तौ विनु मौं कोऊ सुखु न पायो । तौ विनु हमि दिनु गणति विहायो
सकल प्रजा तव कह्यो पुकारे । हे प्रभ चलिहो किर्पा धारे ।।
चलहो नग्रि अयोध्या माही । तौ विनु हमि प्रभ वहु दुःख पाही ।।
भर्थ अधिक दुःख हमि कौ दीना ।
जोर जुल्मु प्रभ वहुता कीना ।
रघुपति भर्थ की ओरि तकायो ।
भर्थ तव ही मुष ते उचिरायो ।
हे प्रभ तुमि सभि विधि कौ जानौ ।
मै तुमि पाहे कहा बषानौ ।
प्रजा कौ प्रभ आपु दिवायो ।
कूर कूर तुमि कूक सुनायो ।
भर्थु ब्रह्म भक्त अधिकाई ।
काहू को ना त्रासु दिषाई ।

तुम्ह कवहु सुष नाही पावौ।
तुमि कौ कूकति सदा विहावौ।
प्रजा श्रापु तव ही ते पायो।
अवि कछु कूकणि चित्तु न लायो।
श्री रघुपति तिहि दीयो श्रापा।
सांईदास तिहि लीनो आपा ॥२०५

भर्थ ने जबि इहि विधि सुण पाई।
हिर्षमान होओ अधिकाई।
श्री रघुपति मोह श्रापु न दीआ।
इहि करुणा हमिरे परि कीआ।
वहुरौ प्रभ सौ विनती ठानी।
मै वल जावौ सारंग पानी।
किर्पा करि के प्रभ उठि धावो।
नग्रि अयोध्या सौ चितु लावो।
मात कौशल्या वहु दुःख पायो।
तोहि व्योग प्रभ त्रिभवन रायो।
विल्मु न लावो हो रघुराई।
मै तुमि पहि विधि आप सुणाई।
सकल लोक तोह पंथ निहारहि।
पलु छिनु मन महि वाति वीचारहि।
कवि आवेंगे रघपति राए।
जौ सकली विर्था कौ पाए।
वार वार प्रभ विनती करहों।
तोहि चर्न ऊपरि सिरु धरहों।
मोहि विनती होइ प्रवाना।
सांईदास तुमि चर्न ध्याना ॥२०६

भर्थ ने जवि इहि वचनु सुनायो।
श्री रघपति मन महि ठहिरायो।

कह्यो भलो चलि हो मेरे भाई। जो तुमि कह्यो सो मन ठहिराई ॥
श्री रघपति सैना संग लीए। नग्रि अयोध्या को पग दीए ॥
सकल तपसी सौ विदम्रा कीए। नग्रि अयोध्या कौ मगु लीए ॥
नग्रि अयोध्या के निकट आए। कौसल्या तव ही सुरण पाए ॥
अति अनंदु तिन ने सुषु पायो। ग्रहि ग्रहि मंगल सभ हू गायो ॥
नग्र अयोध्या भयो सवायो। सूषे विर्छो ने फलु पायो ॥
पुहप अधिक तिह ते प्रगटायो। कौशल्या जी ले अंग लायो ॥
भर्थ ने तव ही डंडौत करायो ॥
जानकी कौ कौशल्या लीआ। अंग माहि आनंदु वहु कीआ ॥
लक्ष्मण मुखो प्रनामु सुनायो। माता ने ले करि अंग लायो ॥
भयो नासु दुःख को मेरे भाई। आए प्रभ जी रघुपति राई ॥
रोम रोम नग्रि सुष पायो। सांईदास ने हरि जसु गायो ॥२०७

श्री रघुपति सिंघासन चर्‌यो। तिल्कु राम मस्तकि परि धर्‌यो ॥
ताहि राज सैना सुषु पायो।
निकटि काहू के दुःख न आयो।
जानकी कौ गर्भु होयो भाई।
सोई प्रिथम गर्भु है याही।
चतुर्मास को वह गर्भु भया।
जानकी वहु सुषु मनि महि लीआ।
श्री रघुपति निसि सुप्ना पायो।
सकल व्रितांतु तिह आष सुणायो।
जानकी तटि गंगा वनि माही।
फिर्त फिर्त कलोल कराही।
निसि वीती जवि झालू होया।
रघुपति जाग पर्‌यो तवि सोया।
करि स्नानु वशिष्ट पहि आया।
सुप्ना रैन को आषि सुनायो।
तव वशिष्ट तिहि आषि सुनाई।
सुन हो प्रभ तुमि रघपति राई।

जो सभ वनिता लेहु बुलाई।
विपो केरी हे रघराई।
तिहि ताई तुमि भोजनु देवौ।
एहि वाति तुमि मनि धरि लेवौ।
एकु मंत्रु मै जापु करावौ। पाछे होम कर्नि चितु लावौ॥
श्री रघुपति लछमन वुलायो। तांसौ प्रभ ने आप सुनायो॥
तुमि मितुला नग्री महि जावो। जन्कि कौ ईहा वेग ल्यावो॥
जनकु आइ यज्ञ जानकी देषै। अपुने द्रिग आइ विधि पेषै॥
सुर सकले भी आण वुलाई। तुमि जावो हो मेरे भाई॥
लछमनु इहि विधि सुण उठि धाया।
केतकि दिन मै सभु ले आया।
यज्ञ अरंभु कर्नि चितु लायो।
पंडति जोतकी अधिक वुलायो।
पंडति वेद अधिक उचिरावहि।
अति आनंद सदा सुष पावहि।
चतुर कुंभ जल के भरि राषहि।
पंडति वेद पढनि चितु भाषहि।
जलु उमिड्यो दो कुंभ ते भाई।
निकस परा वाहिरि वहु आई।
तव ही वशिष्ट ने मुषो उचारा।
हे रघपति सुणु प्राण अधारा।
तोहि ग्रहि वाल्क दो वलिवाना।
महा पराक्रमी होहि सुजाना।
इहि विधि कह यज्ञु पूर्ण कीना।
साईदास सुषु मनि महि लीना॥२०८

पांच मास गर्भु जानकी होयो। जानकी सभु संसा मनि षोयो॥
एकि दिन रामचंद ग्रहि माही। आस्नमु लीनो मन सुख पाही॥
जानकी पोखा है करि माही। अति अनंद वहि पोण भुलाही॥
श्री रामचंद्रि जी तासौं कहचा। हे जानकी तोहि मन-क्या लहचा॥

जो भूषनि कहे ताहि करावो। नाना वस्त्र तुम्है उढावौ ॥
जानकी तव ही वचनु उचारा। मै वलि जावौ प्रान अधारा ॥
जो तोसौ प्रभ मो सिरि होई। मोहि वाछा अवरु नाही कोई ॥
जो आज्ञा होइ वचन सुनावौ। जो मनु मांगे सो उचिरेवौ ॥
गंगा तटि ऋषि वनिता रहे। तहा तपस्या सौ चितु गहे ॥
तांके अंवर भए पुराने। फाटि गई प्रभ औधि सराने ॥
जो आज्ञा होइ तहा मै जावौ। तिहि कौ अंवरि दे फिरि आवौ ॥
मेरो मनु प्रभ एही चाहे। सांईदास कछु और न चाहे ॥२०६

श्री रघपति तव वचनु उचारा। जानकी तो सौ कहो पुकारा ॥
चतुर्दस वर्ष रह्यो वनिवासा। अवि लगि वन की करे प्यासा ॥
तुमिरो मनि वांछति वनि ताई। कौनु वाति तै मनि ठहिराई ॥
एहि वाति प्रभ दीई वहाई। केतकि दिन भए मेरे भाई ॥
एकु असुरु तांको वलु भारी। शिव त्रिसूलु करि तिहि अधिकारी
जवि लगि तिहि कर होइ त्रिशूला। ताहि कोऊ न उतारे मूला ॥
सकल प्रजा को वहु दुःख देवै। अति विरोधु वहि असुरु करेवै ॥
रघपति कह्यो कोइसि को मारे। अपुने वलि करि इसहि प्रहारे ॥
भर्थ कह्यो प्रभु जी मै जावौ। वही असुर सौ युद्ध मचावौ ॥
श्री रघपति तव वचनु सुनायो। हे मोहि वीर तै वहु दुःख पायो ॥
वहुरो लछमन वचन उचारे। मै जावो प्रभ प्रान अधारे ॥
रघपति कहृचो तुमि भी न जावो। इहि विधि कर्नें चित्तु न लावो ॥
तै ने वन महि वहु दुःख पाया। महा कष्टु है तहा कमाया ॥
शत्रघनु जाइ तिस कौ मारे। ताहि दैत्य को पकरि पछारे ॥
शत्रघनु कहृचो प्रभ मै जावौ। तोहि कृपा वांको हति आवो ॥
रघपति कह्यो सुनो मेरे भाई। मज्जन को जवि असुरु सिधाई ॥
तुमि वाहू के अंतरि जावो। शिव त्रिशूलु ले करि ठहिरावो ॥
जवि मज्जन कर्के वहि आवै। तुमि सेती वहु युद्ध मचावै ॥
मारि त्रिशूलु तिसे प्रहारो। हे मोहि वीर जाइ उसि मारो ॥
शत्रुघनु सुण इहि उठि धाया। ताहि असुर के आश्रम आया ॥
असुरु मज्जनि कर्नि को धायो। शत्रघनु अस्तल तिहि आयो ॥

करि मज्जनु असुरु फिरि आया । शत्रघनु को तिन निर्पाया ॥
तांसौ युद्धु कीनो अधिकाई । विनु शस्त्र किछु वलु न वसाई ॥
शत्रघनु ताहू को मारा । मार त्रिशूल तिहि सीसु विडारा ॥
ताहि मार रघपति पहि आयो । सांईदास प्रनामु सुनायो ॥२१०

इकि दिन एकि ब्राह्मण क्या कीआ ।
भिक्षा मांगन को चितु दीआ ।
मांग भिक्षा कछु हाथ नि आयो ।
ब्राह्मण अधिक क्रोधु करायो ।
दाहनि अंग स्वानु तिहि आयो ।
ताहि निर्ष वहु क्रोधु उपिजायो ।
ले लषोटी तांके सिरि मारी ।
स्वान को पीड भई अति भारी ।
कूकति कूकति प्रभ पहि आयो ।
प्रभ सौ सभ विधि भाष सुनायो ।
मोको इनि ब्राह्मण ने मारा ।
इसि पूछो तुमि प्रान अधारा ।
श्री रघपति विप कौ लीउो वुलाई ।
हे विप इसि किउ चोटि लगाई ।
कौणु औगुण तेरो इनि कीना ।
जो इसि को इहि दुःख तैं दीना ।
विप कह्यो सुण हो रघुराई । इनि अवज्ञा मोह कीई न काई ॥
य्युं ही प्रभ इसि कौ मारा । इहि सचु तुमि पहि आइ पुकारा ॥
तव ही स्वान ने वचनु उचारा । हे प्रभ इसि देहि दंडु हमारा ॥
ठाकुरि को पूजारा होई । औरु दंड देवौ नही कोई ॥
वसिष्ट कह्यो इसि कौ वरु दीना । ठाकुर का पूजारा कीना ॥
ब्राह्मण कौ कह्यो रघुराई । जाहि पूजा ठाकुर करु भाई ॥
तुम को स्वान ने इहि वरु दीना । जो तै ताहि अवज्ञा कीना ॥
ब्राह्मण सेवा को उहि धाया । वशिष्ट स्वान सों फिरि पूछाया ॥
हे स्वान तै इसि वरु दीना । कहा दंड इसि कौ तै कीना ॥

स्वान कह्यो सुरा हो गुर मेरे। मै विधि आषो आगे तेरे॥
मै सेवा हरि जी की कर्ता। हरि चरना सेती चितु धर्ता॥
जो कछु प्रभ कौ आरा चढावै। ठाकुरि आगे आरा टिकावै॥
सो मै ब्राह्मरा ऋषहि षलावौ। तांसो रंचिक मै भी षावौ॥
तिहि रंचिकि ते इहि योन पाई। स्वान भयो हौ जग परि आई॥
इहि लोभी सभ ही आपि लेवै। ब्राह्मण ऋषि कौ कछू न देवै॥
ठाकुरु इसि कौ योन भ्रमावहि।
चौरासी लष महि उर्भावहि।
इहि प्रजोग मै इसि वरु दीना।
हे सतगुर जी मै इहि विधि कीना।
हृदे प्रतीत भई अति भारी।
ठाकुरु इसि वहु योनि दिषारी।
जैसा इनि मोसौ प्रभि कीना।
सांईदास ऐसा करि लीना॥२११

इकि दिन श्री रामचंद जी सोए।
पहिरि रही निसि उठि षलोए।
पुरि के तव रषिवारे आए।
श्री रघपति सौ डंडोंत कराए।
श्री रघपति तिहि वचन उचारे।
सुरा हो अयोध्या के रषिवारे।
तुमि सदा फिर्ते हो पुर के माही।
मम नामु कैसे लोक उचिराही।
तव विनती करी अपुने करि जोरे।
हे श्री रघपति जीवन मोरे।
तुमि को नामु जो मुषि उचिराए।
मुक्ता होइ फिरि योन न पाए।
लोक कहा प्रभ तुमि कौ आषहि।
तुमिरी उस्तति सभु ही भाषहि।

एकनि ता महि आप सुणायो।
हमि इहि ओरि आवन चितु लायो।
एकि ओरि कछु भयो ककरा।
हमि ताहू धाइ परे तत्कारा।
एकि पीछे वनिता क्या कीआ।
आज्ञा पतिकी ना उसि लीआ।
विनु आज्ञा गई पित ग्रहि माही।
तिहि पति रोसु कीयो अधिकाही।
ताहि लेन को वहु ना धाया।
तिहि ससुरा दुहिता ले आयो।
लोक वडे वडे तिहि संग लीए।
दुहिता पति के ग्रहि पग दीए।
वहु ना आयो मै ले जावौ।
ओहु वडो मै छोटो कहावौ।
इहि प्रजोग दुहिता ले आयो।
अधिक दीनता तिने करायो।
तिहि दुहिता पति माने नाही। मुष ते वहु इहि ताहि सुनाही।
मै रघपति नाही इहि करहो। जानकी जिउ इसि कौ ग्रहि वडहो
जानकी असुरो षडी दुराई। षष्ट मास ग्रहि महि ठहिराई॥
रामचंदु तिन को ले आयो। फिरि करि ग्रहि महि आण वहायो
वहु राजा इहि तिहि वनि आवै। राजद्वार इहि वात समावै॥
मै गरीवु मो सौ नही होई। ऐसी वाति करे नही कोई॥
तांको हे प्रभ कछू न आषा। आज्ञा विनु कछु मन ना राषा॥
नाहि त हमि तांकौ प्रहार्त। सांईदास इहि वात उचार्त॥२१२

जवि रघुपति इहि विधि सुण पायो। अति भै चक्रित मनि मनि विसमायो
अपुने मनि महि लीयो वीचारी। मोकौ कठनि वनी अति भारी॥
जानकी कछु औगुणु ना कीयो। कछु औगुणु ना मनि महि लीयो॥
कैसे करि इसि कौ तजि देवो। इसि कौ दूष कैसे मै लेवौ॥
ऐसे मनि महि कर्त वीचारा। श्री कौलापति प्रान अधारा॥

प्राति भई वंधू चलि आए। रघपति कौ डंडौत कराए।।
रवपति कौ विस्मिकि निर्षाया। इनि संचरु मनि माहि लगाया।।
हमि भरि जोवनि है मेरे भाई। प्राति समे हमि उठयो न जाई।।
संध्या जापु हमि पहि ना होई। इहि औगुण हमि औरु ना कोई[1]।।
करि जोरे इनि विनती ठानी। हे प्रभ रघुपति सारंग पानी।।
जो औगुण हमि ते कोऊ होई। हे प्रभ जी तुमि मेटो सोई।।
हमि वाल्क कछु बूझहि नाही। कहा कहे हमि तुमिरे ताही।।
हे प्रभ हमि परि क्रिपा करावो। सांईदास मनि सुष उपिजावो।।२१३

श्री राम चंद्रि वंधू कौ आषा।
हे मोहि वीरो कहा चितु राषा।
हमिरी जान प्रान तुमि माही।
तुमि औगुण कीनो कछु नाही।
मैं तुमि कौ इकि आज्ञा करहो।
मोहि आज्ञा मनि अंतरि धरहों।
जानकी ते निंद्या हमि होई।
एहि संचरु मनि औरु न कोऊ।
इहि निंद्या हमि सुणी न जाई।
तुम सौ कह्यो इहि मेरे भाई।
तुमि जानकी कौ वनि ले जावौ।
षडि करि वनि माही छडि आवौ।
भर्थ शत्रघन इहि सुण पाई।
करि जोरे मुष आषि सुणाई।
तुमि प्रभ हो आषो जो भावैं।
जो काऊ औरु इहि विधि उचिरावैं।
तांको खंड खंड करि डारहि।
पल माहे हमि ताहि विडारहि।
सीता सील कोऊ रीस करावैं।
जानकी सर औरु कौनु कहावैं।

---

१. यहां भक्ति की इच्छा करने वाले नवयुवक हृदयों का चित्रण है।

जबि इनि ने इहि वाति उचारी।
श्री रामचंदि तिहि दीओ वीचारी।
दो कार्ज तुमि देवौ वताई।
जो नीका सो करहो भाई।
कै सीता को वनि ले जावो।
नही तो हमिरो सीसु कटावो।
इनि से औरु वाति कछु नाही।
इहि मै आषी है तुमि ताही।
जबि रघुपति इहि वचनु सुनायो।
तव वहु सभ मन महि विस्मायो।
लक्ष्मण रुदन कर्ति चितु लीओ।
जानकी ओरि गवनु तिन कीओ।
चलति चलति जानकी पहि आयो।
जानकी ने लछमणु निर्षायो।
मनि माहे इहि लीओ वीचारी।
एही हृदे अंतरि उनि धारी।
एक दिन मै रघपति सौ आषा।
सोंई रघपति मन महि राषा।
गंगा के तटि प्रभ मै जावौ।
ऋषि वनिता अंवरि देइ आवौ।
इहि प्रजोग रथु आयो है भाई।
अंतरि जामी रघुपति राई।
एहि सीता मनि महि धारी।
औरु ताह मनि नाह वीचारी।
लछमन सौ तिन वचनु सुनायो।
हे लछमनि वहु भला कीओ आयो।
तुमि षडा होउ मै अंबर ल्यावो।
सांईदास तुमिरे संग धावो।।२१४

जानकी कहि गई ग्रहि के माही। अति अनंदु ताहू मनि माही।।

अंबर आएा रथ ऊपरि डारे। वहुरो मनि महि लीयो वीचारे ॥
लछमनि सौ फिरि वचन उचारे। सुएा हो लछमनि वीर हमारे ॥
कौशल्या पग पर्स कै आवौ। पाछे हमि तुमिरे संग धावौ ॥
जानकी कौशल्या पहि आई। विनती मुष ते आष सुणांई ॥
गंगा तटि आषा हौ जावौ। छिन मात्रि माहे फिरि आवौ ॥
कौशल्या जानकी सौ आषा। हे जानकी तैं क्या चिति राषा ॥
नागे पग कैसे वनि जावहि। वन माहे कैसे पग चलावहि ॥
जानकी तांको इहि प्रतु दीना। मै वन गवनु अधिक है कीना ॥
कौशल्या से आज्ञा पाई। तात्काल रथ परि तब आई ॥
लछमन धौल्ह पूत को मारे। धौल्हु पूत पग आगै न डारे ॥
वसुधा ते उठि षडे न होही। मनि माहे वहुता वहि रोही ॥
जबि लछमन वहु जतन कराए। धौंल्ह पुत्र आगे तव धाए ॥
चलति गंगा तटि परि आए। लछमन रथ कों दीउो तजाए ॥
तः रथु तटि त्याग उौरु उोर धाए। तव जानकी ने वचन सुनाए ॥
वनिता ऋषि की उति ठौर रहे। कर्ति तपस्या ऊहां अहे ॥
तूं मोकौ कहु कहा ले जावैं। मोकौ इहि विधि किउ न वतावे ॥
असगुन वुरे सीता मग होही। जानकी मन माहे वहु जोही ॥
दाहणा द्रिगु सीता कंपावैं। जानकी मन महि सोचु करावैं ॥
एहि असगुन मोको दुःख देवै। कछु चिता मोको उपजेवैं ॥
महा विकटि वनि माहे आए। तव लछमन ने वचन सुनाए ॥
सीसु तले करि मुष ते आषा। श्रीराम वनिवासु दीयौ तुझै भाषा
जानकी सुनति गई मूर्छाई। व्याकल होइ धर्नि गिराई ॥
तांके प्राण गए निकसाई। लछमन निर्षो वहु दुःख पाई ॥
छाया करि सिरि परि ठहिरानो। तांके द्रिग सों नीरु ढुरानो ॥
रुदनु करे अरु पवनु झुलावैं। मन माहे वहुता विस्मावैं ॥
जानकी फिरि आई सुधि नाही। रुदनु कर्ति द्रिग नीर ढुराही ॥
लछमन सौ चित वचनु सुनायो। कौनु अवज्ञा मो तन लायो ॥
रघपति मोह वनवासु किउ दीयो। मो सौ रघपति इहि क्या कीयो ॥
हे लछमन मोहि देहु वताई। सांईदास तुझै राम दुहाई ॥२१५

लछमन तांसौ दीउो वीचारा। जानकी रघपति इहि मन धारा॥
कहचो हमारी निंद्या होई। जानकी ते विधि अउर न कोई॥
इहि प्रजोग बनवासा पठायो। हमिरो कह्यो मनि ना ठहिरायो॥
पगधरिसीसु लछमन उठिआयो। जानकी कौ बन महि छडि धायो॥
बन महि जानकी रुदनु करावैं। इति उति अउरि उठि करि धावैं॥
मृग वनिता सभ ही मिल आई। जानकी पहि आइ करिठहिराई॥
मोरि अधिक ताहू पहि आए। निसि इकि ब्रिक्ष तले ठहिराए॥
तीन दिवसि निसि ऐसै भए। जानकी वन माहे ही रहे॥
चतुर्दिवसि पाछे ऋषु आयो। वाल्मीक तिहि नामु सुनायो॥
कंद मूल वन ते चुण लेवै। उदरि पूर्न जाइ करेवै॥
वाल्मीक जबि नेत्र निहारे। स्त्री निर्खी तिन तलकारे॥
डोलति फिर्ति हे वन के माही। कौनु रूप फिरे वनि मंभाही॥
वाल्मीक चल्यो निकटि आयो। जानकी सौ तिन वचनु सुनायो॥
हे पुत्री तूं कौनु कहावहि। इसि वन माहे काहे धावहि॥
जानकी ने तव वचनु उचारा। हे पिता सुण हो वाति हमारा॥
रघपति वनिता सीता नामा। मै फिरहो वन महि इहि कामा॥
रघपति मोहि वनिवासु दिवायो। एहि कामु तिनि मोहि करायो॥
वाल्मीक जवि इहि सुण पाई। मुष अपुने इहि उचिराई॥
तोहि कार्ज महि मै भी आयो। तोहि कार्जु जवि जन्क रचायो॥
चिंता कछु मन महि ना धरहो। मनु डोलावन मूल न करहो॥
गोबिंदु सभु कछु भलो कराए। सांईदास सभ दुःख मिटाए॥२१६

ऋषु सीता कौ संग ल्याया। ऋषि के सुत तिन अधिक बुलाया
तिन को आज्ञा दीनी। एहि आग्या ताहू सौ कीनी॥
कखु कंडा जाइ वन ते ल्यावो। ईहा तुमि इकि कुटी बनावौ॥
जहां आस्रम सौ सीता रहे। जानकी श्रीराम भर्जा अहे॥
वालक कंखु कंडा ले आए। ताह आइ तिह कुटीआ छाए॥
वाल्मीक कहचो सीता ताईं। हे पुत्री तूं रहु इसि माही॥
जो कछु कंदमूल ले आवहि। प्रिथमहि सीता पहि ठहिरावहि॥
पूर्ण दिवस भए गर्भि ताईं। जानकी गर्भु पूर्न भयाही॥

रोहणी नक्षत्रु निस समे माही। जानकी कौ गर्भु वाहिरि आही॥
जन्म लीयो वाल्कु प्रगटायो। वनिता ऋष की मंगलु गायो॥
बाल्क ऋषो केरे दौरे आए। वाल्मीक सौ आइ सुनाए॥
ऋषि तोहि दुहिता वाल्कु जायो। वाल्मीक तव ही चलि आयो॥
लऊ नामु वाल्क का राषा। वाल्मीक ऐसे ही भाषा॥
जानकी ने वहुता सुष पायो। सांईदास तवि मंगलु गायो॥२१७

वाल्मीकु स्नान को धायो। प्राति समे इहि वचनु उचिरायो॥
हे पुत्र कुंभु जल भरि आने। मेरो कह्यो हृदे मांझि पछाने॥
इहि विधि कहि स्नान को धायो। जानकी इहि विधि मन ठहिरायो॥
जानकी कुंभ कौ लीयो उठाई। जलु लेने ताई वहु धाई॥
मनि माहे तिनि लोडो वीचारी। अवि ही आवनि इसि ने धारी॥
जो वाल्कु पालनि पाइ जावौ। मैं जलु लेने ताई धावौ॥
फिर्त व्याघ्र अधिक इहि ठौरा। मतु उठाइ षडहि सुतु मोरा॥
गोद कीए ले करि मै जावौ। इहि कुंभु जल सौ भरि ले आवौ॥
सीता गोद लीए उठि धाई। चली चली जल के तटि आई॥
वाल्मीकु स्नानु करि आयो। करि स्नानु अपुने ग्रहि आयो॥
पालनि महि वाल्कु ना देषा। वालिक कौ ऋषि ने ना पेषा॥
वाल्मीकि मनि महि वीचारा। महा कठनि वनी अति भारा॥
जानकी कौ पति दीयो निकारा। सुतुं इसि को अवि ही किन मारा॥
जो गोविंद इसि क्रिपा करि दीआ। तासौ जानकी वहु हितु कीआ॥
अवि उसि कौ किने षडयो दुराई। जानकी सुण विधि वहु दुःख पाही
ताहि व्योग उहु प्रान तजावे। इहि मोको ना वणि आवै॥
वाल्मीक मन महि इहि धारी। सांईदास प्रगटि बीचारी॥२१८

बाल्मीक ने कुशा मंगाई। ले कुशा करि माहे ठहिराई॥
ऋषि ने पुतला ताहि बनायो। वहु पुतला पालनि महि पायो॥
अंबर ले तिहि ऊपरि डारा। तांकौ पालन माहि सवारा॥
दौ घरी पीछे सीता आई। जलु भरि कुंभ कौ संग ल्याई॥
वाल्मीक जानकी सो आषा।
पुत्री वाल्कु तोहि कहा भाषा।

जानकी ने तब बचनु उचारा।
हे पिता इहि है बालकु हमारा।
मै इसि कौ संग ले करि धाई।
तव वालमीक विगस्यो अधिकाई।
हिर्षमान हो बचनु उचारा।
हरि किर्पा ते मै इकु धारा।
इहि कुशा ही ते प्रगटायो।
इसि को नामु मै कुसू धरायो।
जानकी सुण विधि बहु हिर्षाई।
भलो भयो पिता बात सुणाई।
इसि वालक ताईं भी पारो।
इसि सो हेतु अविक मै धारो।
जानकी महा अधिक सुषु पायो।
सांईदास कुसू द्रिष्ट आयो॥२१६

वालक चतुर्वर्षि के होए। सीता संसे मन ते षोए॥
वालमीक ने आषि पठायो। सुरपति ताईं एहि सुणायो॥
कामधैनि कौ देहि पठाई। एहि आज्ञा हमिरी तुमि आई॥
सुरपति जवि इहि विधि सुण पाई। कामधैन तिन दीई पठाई॥
वालमीक ऋषि लीओ बुलाए। औरु अधिक विपि ताहि सदाए॥
यज्ञ कीयो ऋष ने अधिकाई। जो कोऊ मांगे सोऊ पलाई॥
कामधैन ते वांछा करै। कामधैनि ले आगे धरै॥
अति मिष्टन भोजन षलायो। जो जो किन्हूं बांछ्यो सोऊ पायो॥
रवि सौ ऋष ने वचनु सुनायो। जानकी के गर्भ ते उपिजायो॥
श्री रामचंद के सुत है भाई। इहि विधि मै तुझै आप सुणाई॥
दो तुमि धन्ष देवौ हमि ताई। एहि बिधि समझि लेहु मनि माई॥
रव अपुने बालक सौ भाषा। द्वितीआ धन्षु ल्यावो आषा॥
जो सभ धन्ष से आछा होई। तुमि आनो मेरे पहि सोई॥
जवि रव की आज्ञा उनि पाई। धन्ष जाइ आने उनि धाई॥
आण दीए उनि वालक ताई। धन्ष भले नीके अधिकाई॥

बाण ऋषीश्वर औरहि दीने। आसर्बादु तव ही उनि कीने।।
तर्गसि ते जेते वाण चलावै। अधिक होहि फिरि घटि ना जावै
इहि अशीर्वादु तिहि कीना। सांईदास तिहि विद्या दीना।।२२०

लक्ष्मण जानकी को ले आया।
वन महि छाडि ताहि उठि धाया।
श्री रामचंद मन महि इहि आनी।
सो गुर किर्पा ते सकल वषानी।
जानकी प्राण तजे होवहिगे भाई।
इकि दिन तिह पाप मोह ग्रासे आई।
गुरि वशिष्ट सौं आष सुणायो।
अस्वमेध मोह यज्ञ करावो।
दु:ख सीता को हमि तेजाई।
नाहि ति इकि दिन आइ ग्रसाई।
बशिष्ट कह्यो रघपति भलो आषा।
मन माहे विधि आछो राषा।
विनु वनिता यज्ञ होवै नाही।
हमि तुमि कौ कैसे यज्ञ कराही।
रामचंद तव वचनु उचारा।
सुण हो गुरु जी वात हमारा।
जानकी पुतली कनक वणावो।
बांवे अंग हमिरे ठहिरावो।
जव रघपति इहि वचनु सुनायो।
गुर वशिष्ट तव ही सुण पायो।
कनक पुतली तव हि वणाई।
श्री रामचंद वांवे अंग ठहिराई।
जो कछु वेद म्रिजाद बताई।
श्री रघपति ने कीना साई।
जो कोई गति अपुनी कीआ लोरहि।
सांईदास सभि हौमै छोरहि।।२२१।।

भले महूर्त्ति अस्वु निकारा । श्री रघुपति प्रान अधारा ॥
छोडि दीयो वसुधा जिण आवै । तिहि पाछै प्रभु यज्ञ करावै ॥
दक्षिण पश्चिम सभु फिरि आयो । कहूं ठौरि तिनि ठाकि नि पायो ॥
शत्रघनु तिहि भयो सहाई । जहा अश्व जावै पाछै जाई ॥
ताहि संग सैना वहु भारी । तां की उस्तति कहा बीचारी ॥
महा बली तांके संग आए । नामु कहा कहौ गिन न आए ॥
मो पहि नामु कहा गिणें जाही । हे साधो समझो मनि माही ॥
पंडिति किनी न मोहि सुणायो । गुर किर्पा थहु आणु बनायो ॥
सिंध अपार कवनु गति पावै । रामग्रंथ कहा उपिजावै ॥
विनु किर्पा कछु होवै नाही । विनु सतगुरु के भए सहाही ॥
जो कहू भूल परी होइ भाई । सांईदास तुमि लेहु वनाई ॥२२२

अश्वु वाल्मीक आश्रम आयो ।
छिनु इकि अश्वु ताहू ठहिरायो ।
कुसू वालि ब्रह्मण संग लीए ।
एकि पुलवारी महि पग दीए ।
अश्वु ताहू के आगे आयो ।
तिहि मस्तक परि पतीआ लिपायो ।
जग महि गर्भु कौशल्या भाई ।
तिन जाए श्री रघिपति राई ।
औरि गर्भ केते काम नि आवहि ।
कौशल्या सरिनाहि कहावहि ।
जबि कुसू इहि लिप्यो पढि लीआ ।
महा क्रोधु हृदे महि कीआ ।
सीता गर्भु कहो क्या भया ।
कौशल्या गर्भु जो लिख लया ।
अश्व पकिरि पट केसौ वांधा ।
जैसे मीन वंधक ने फांधा ।
ब्राह्मण सुत कहे इहि क्या करही ।
काहे इहि विधि मनि महि धरही ।

काहे ते अश्वु कौ पकडायो।
कहा बाति तै मनि ठहिरायो।
अवि ही अश्वु पाछे लोक आवै।
काहे प्रान तूं घातु करावै।
तूं गरीब किउ इहि कर्मु करही।
पर अश्व वांधनि किउ चितु धरही।
कुसू प्रति ब्राह्मण सत्ति दीना।
तुमि मन त्रासु काहे कौ लीना।
हे ब्राह्मण मांगनि विधि जानो।
संग्राम गति तुमि कहा पछानो।
हमि छत्री वहु दानु करावहि।
संग्रामु करहि फुनि ना उकिलावहि।
तुम काहे को त्रासु किरावो।
तुमि अपुने ग्रहि माहे जावो।
जो कोऊ युद्ध करे तिस मारो।
भुजा ताहि क्षिण माहि उपारो।
एक घरी महि सैना आई।
सैना ने तिहि महि वला काई।
दस सहस्र सैना संग तांके।
महा वली वलुभुज वहु वांके।
ताहि कह्यो अश्वु कहु कवन वंधायो।
हमिरो अश्वु कहु कवन वंधायो।
ब्राह्मण सुत ने दीओ वताई।
तोहि अश्वु इनि बाध्यो भाई।
सैना ने मनि महि इहि धारा।
वालकु षेलन कौ इहि प्यारा।
सैना ने तव वचनु उचारा।
अश्व को षोल्ह देहि तत्कारा।
कुसू कह्यो अश्वु षोल्ह न देवौ।
जो इसि नामु ले तिसि हति लेवौ।

सैना ने इकु लोक पठायो।
अश्व षोल्हणि कौ तिन चितु लायो।
कुसू वाणु ले तांसौ मारा।
मारि बाणु तिसि सीसु उतारा।
वहुरो और जु आगे आयो।
कुसू वाणु संधि हाथु कटायो।
दस सहस्र सैना जो आई। सकली कुसू ने मारि चुकाई।।
वहुरो तिस को भाई आयो। तांकी सैना है अधिकायो।।
तिन आइ युद्ध कीवो अति भारी। अंत समे कुसू वहि भी मारी।।
केतक भाग फिरि पीछे आए। शत्रघन पहि आइ ठहिराए।।
शत्रघन को तिनहि सुनायो। एक वाल्क सभ सैन हतायो।।
हे प्रभ सभ सैना उनि मारी। सांईदास कहा कहो वीचारी ।।२२३

शत्रघन जबि ईहि सुण पायो। सैना संग लई उठि धायो।।
आइ कुसू को वाणु लगायो। कुसू बाणु षायो मूर्छायो।।
ताहि मानि रथ ऊपरि डारा। अश्व ले आगे कौ पगु धारा।।
वाल्क आए सीता पाहे। हे जानकी सुण ले मनि माहे।।
कुसू अश्वु काहू वंधि लीआ। हमि वहुता प्रवोधनु कीआ।।
काहे परि अश्व कौ करु लावै। काहे कौ इहि कामु कमावै।।
हमिरो कहा तिन मनि ना कीना। परि अश्व को तिन ने वंधि लीना
पाछे से सैना वहु आई। सकल सैन तिहि मारि चुकाई।।
पाछे से इकु राजा आयो। तिन ने कुसू कौ वांधि चलायो।।
जानकी इहि सुण करि मूर्छाई। मूर्छा होइ करि धर्नि गिराई।।
छिन एकि महि फिरि सुधि महि आई। मन अंतरि वहु वहु विस्माई।।
कहा करौ ऋषि जी ग्रहि नाही। लऊ गियो है वनि के माही।।
ऐसे ही संचरु मनि धारा। लऊ आइ निवस्यो तत्कारा।।
लकडी आण करे ठहिराए। जानकी सौ तिन बचनु सुनाए।।
हे माता काहे विस्मावै। किहि प्रजोग तूं हृदे डुलावै।।
तव जानकी ने वचनु उचारा। हे सुत संचरु इहि विधि धारा।।
तोहि वंधू अश्व किसे वंधायो। पाछे अश्व को सांई आयो।।

तांकी सैना उनि ने मारी। अधिक सैन तांकी प्रहारी।।
तोहि बंधू को उनि मूर्छायो। बांधि करि रथ परि ले धायो।।
हे सुत इहि विधि मैं मूर्छाई। सांईदास क्या कहो सुनाई।।२२४

जबि लऊ इहि विधि सुणी काना।
मात सौ तव बचनु बषाना।
हे माता चितु नाह डुलावो।
अपुना चितु तुमि ठौर रषावो।
जबि लगि मैं जीवति हौ माई।
कुसू कौ को ले जाण नि पाई।
त्रैलोक महि षडि न पावै।
मोहि बल ते त्रैलोक कंपावै।
हे मय्या मोहि धन्षु आण देवौ।
छिनु पलु विलमु तुमि नाह करेवौ।
जानकी सुत सौ वचनु उचारा।
तुमि कौ भूष लगी अधिकारी।
जानकी तीन गरास षलाए।
अपुने करि सुत के मुष पाए।
लऊ आज्ञा ले करि उठ धाया।
तात्काल सैना निकटि आया।
सैना कौ तिन कह्यो सुणाई।
हे जोधा ठांढे रहो भाई।
मोहि वीरु तुमि किउ ले जावौ।
मोहि आयो हों तुमि ठहिरावौ।
मो सौ युद्ध करो मेरे भाई। ऐसे लऊ ने कह्या सुणाई।।
फेंक संष वांकौ इनि मारे। सकल सैन मनि लीओ विचारे।।
शत्रघण कौ आष सुणायो। इहि वालक ते छूटि नि पायो।।
अबि दूजा इहि वीरु जु आवै। संषि फैकि छडि हमहि डरावै।।
इसि ते हमि छूटणि ना पावहि। इसि की फेंकि सौ मन विस्मावहि
शत्रघनु सुणि फेरि षलोयो। लऊ करे वह सन्मुख होयो।।

धजा गिरी रथ ताहि पराई। धर्नि परे आपे ही आई ॥
तूटि गई जो गिरि करि परी। सैना सभ बिस्मक मन धरी ॥
शत्रघणु आगे को धायो। सांईदास लऊ निकटि आयो ॥२२५

लऊ आण करि वांण चलाए। संग्राम ठौरि आइ ठहिराए ॥
इहि सैना तिहि वाण चलाए। लऊ वाण तिहि टूकि कराए ॥
लऊ वाण षिच करि मार्‌यो। सैनापति को रथु कटि डार्‌यो ॥
औरु वाण तिहि श्रवणहि मार्‌यो।
वहुरि मारि तीहि सीसु उतार्‌यो।
सभ सैना तांकी लऊ मारी।
लऊ कौ वलु भुज मैं अति भारी।
ताहि वीरु गज परि चढि आयो।
प्रिथमे तांको गजिंद्र गिरायो।
पाछे से तिहि सीसु उतारा।
वाण संधि ताहूं कौ मारा।
जवि वह गिर्‌यो शत्रघणु आयो।
चतुर वाण तिन आण चलायो।
लऊ के मस्तिकि परि तिन मारे।
तव लऊ तांसौ वचन उचारे।
एही वलु तुमि को सा भाई।
षैच्यो वाणु अधिक वलु लाई।
पुहपु लगो मानो मोहि ताई।
तोहि वाणु जो जोरु करि आई।
जोरु कीऊो तै वाणु चलायो।
मानो पुहपि वर्षा तै लायो।
वहुरो लऊ ने वाणु चलायो। शत्रघन को धर्नि गिरायो ॥
लऊ चल्या रथ पाहे आया। जिसि रथ महि कुसू वंधि पाया ॥
जाइ कुसू को करु पकिडायो। हे मोहि बीरु उठो मैं आयो ॥
लऊ कुसू को लीऊो छडाई। चले चले आए दोऊ भाई ॥
लूट सैन कौ उठि करि धाए। मोती माणक अधिक ल्याए ॥

आण जानकी आगे डारे। जानकी ने लीने तत्कारे।।
जानकी सुत देषि हिर्षाई। सांईदास कछु कह्यो न जाई।।२२६

जो जीवति रहे सैना माही। आए अयोध्या रघपति पाही।।
तिनहि पुकारि कह्यो रघुराई। हमि तुमि कौ कहे सुणाई।।
तोहि अश्व पूर्व दक्षिण धायो। पश्चिम सौ उत्तर फिरि आयो।।
चतुर्दिसा प्रभ जी फिरि आए। कहू ठौर हमि ठाकि न पाए।।
जिन देष्यो तोहि नामु पढायो। नमिस्कारु कीनो हितु लायो।।
जहा जाइ कोऊ निकटि न आवै। दूरि से देषे सीसु निवावैं।।
हे प्रभ प्राग निकटि जबि आए। ईहा प्रभ हमि वहु विस्माए।।
एकु वाल्कु वन महि ठहिरायो। द्वादश वर्ष अवस्ता पायो।।
तिन ने अश्व पकरि वंधि राषा। तांसौ हमि ने वहुता आषा।।
अश्व न दीना युद्ध करायो। सकल सैन तिनि मारि चुकायो।।
पाछे शत्रघन तहा आए। युद्ध कर्नि को तिन चितु दए।।
शत्रघन जबि वाण चलायो। उसि बाल्क ताई मुर्छायो।।
ताहि वांधि के रथ परि डारा। हे प्रभ इति आवन चितु धारा।।
पाछे एक वंधू तिहि आयो। एक वर्षु छोटो के अधिकायो।।
वाण सांधि सैना वहु भारी। तां की भुज महि था वलु भारी।।
शत्रघन कौ उनि मूर्छा कीना। अपुनो वीरु छडाइ करि लीना।।
वीरु लेइ प्रभ गृह को धायो। सांईदास विधि आष सुणायो।।२२७

श्री रघपति जबि इहि सुण पायो। कह्यो झूठ काहे उचिरायो।।
भूत प्रेत तुम देष्यो होई। असा जौरु ऊहा नही कोई।।
शत्रघन के को निकटि आवै। एहि कर्मु कहु कौनु करावैं।।
फेरि तिन्हूं ने वात चलाई। हे कौलापति संत सहाई।।
भूत प्रेत प्रभ कहा ठहिरावैं। तोह दर्सन रहिणा ना पावैं।।
हमि सच्चु कहिते हो रघुराई। झूठ न कहिति हो तुमहि दुराई।।
श्री रामचंद संचरु मन धारा। शत्रघन को वलु वहु भारा।।
महावली तिनि असुर विडार्यो।
तांको मूर्छा किनि करि डार्यो।

लछमण को प्रभ आज्ञा दीनी।
लछमण ने सो मन महि कीनी।
पंजाह सहस्र हस्त ले धायो।
सठ हजार असवारु चलायो।
इकु लखु पैकु लीओ तत्कारे।
लक्ष्मण सहित सेनां अधिकारे।
केतक दिन तिसि माहे आए।
संग्राम ठौर आइ करि ठहिराए।
लऊ पुकार कह्यो कुसू ताई।
हे मोहि वीर अबि कहा कराही।
सैना अधिक आई मेरे भाई।
इहि मै मै तुमि कौ आप सुणाई।
कुसू लऊ ताई प्रतु दीना।
हे मोह वीरु कहा सैना लीना।
कांग अधिक वाजु इकु होई।
तुमि संचरु मनि लहो न कोई।
स्याल अधिक सिंहु इकु होई।
सिंह की रीस वहि कहा करोई।
सूरा एकु काइरि अधिकाई।
सूरे सरि कहा होवहि भाई।
कांग अधिक जो मिलि करि आवहि।
बाजु परे सभ ही भजि जावहि।
स्यालु सिंह पहि कहा ठहिरावै।
काइरु सूरे निकटि न आवै।
मै छोटौ तू मै अधिकाई।
ऐसी वाति तै किउ उचिराई।
जो मै अपुना जीउ डुलावों।
तोहि क्रिपा करि धीर्जु पावों।
जो तुमि ऐसी वार्त्ति सुणावो।
मोहि ताई काहे उकिलावो।

हे वंधू चित को ठौर राषो।
ऊौरु वाति कछु तुमि ना आषो।
हमिरी द्रिष्ट कांग सभ आवहि।
सांईदास काहि हृदा डुलावहि ॥२२८

कुसू लऊ सौ कह्यो पुकारी।
हे वंधू सुण वाति हमारी।
मोहि धन्षु नाही कहा करहो।
कैसे मै इनि सेती लडहो।
लऊ उस्तित रवि केरी कीनी।
मुष ते उस्तति वहु उचिरीनी।
तोहि रथ अस्व सप्त मेरे भाई।
तुमि को हमि डंडौत कराई।
रवि इकु रथु इकु धन्षु पठायो।
अशीर्वादु कुसू करि तिन पायो।
लऊ कुसू शस्त्र संग लीए।
संग्राम ठौर आइ ठहिराए।
अधिक युद्ध ताहूं ने कीना।
सैना लछमण की हति लीना।
रक्ति सिंध प्रवाहु चलायो।
नर गज अश्व तिहि अधिक हतायो।
इकि ओरि लऊ संग्रामु करावै।
इकि ओरि कुसू वहु सैन हतावै।
लऊ ताई तिन्हा घेरा कीना।
घेरा करि तांकौ विच लीना।
इकु घेरा हस्ती को कीना।
वहुरो एकु रथ को करि लीना।
एकु असवार को कीनो भाई।
एकु पैक ऐसो बनि आई।
सप्त घडी तिसि ताई पाया।
लऊ ताहि वचि बाहिरि आया।

अधिक सैन लछमनि की मारी।
को घायल तांके भेद प्रहारी।
लऊ कह्यो कुसू द्रिष्टि न आवै।
इहि प्रजोग मनि महि बिसमावै।
एकु असुरु अकास सौ आयो।
लऊ करि ते तिन धनु छिनायो।
लऊ तर्गसु समसेर निकारी।
तांकौ पहुचि जाइ करि मारी।
कंठ पकरि ले धर्नि गिरायो।
ताहि असुर कौ मारि चुकायो।
वहुरो ताहि असुरि सुतु आयो।
तिसि ताई भी लऊ हतायो।
वहुरो लछमणु आप ही आयो।
लऊ सौ तिनि युद्ध करायो।
केतक वाण लछमण ने मारे। लऊ ताहि वाण कटि डारे॥
वहुरो लऊ जो वाणु चलायो। लछमण कौ तिन ने मूर्छायो॥
सैना वहु तांकी उनि मारी। जो भाग्यो छूटयो तत्कारी॥
लऊ कुसू एहि कर्मु कमाया। सांईदास लछमन मूर्छाया॥२२९

जो नर सैना जीवण पाई। आए नग्रि अयोध्या धाई।
श्री रघपति पाहे चलि आए। सकल ब्रितांतु तिन आप सुणाए
हे प्रभ लछमण कौ मूर्छायो। दुहूं बालक वहु जोरा पायो॥
श्री रामचंद कह्यो झूठि अलावो। एहि वाति जो मोहि सुणावो॥
लछमन रावण ताई मार्‌यो।
तिसि को कहु किनि मूर्छा डार्‌यो।
असुरि अधिक कौ ताहि सिंहार्‌यो।
महावली असुरौ जो मार्‌यो।
को बालकु जो तिनि मूर्छावै।
लछमन वंधू के निकटि न आवै।

सैना के नर वहुते आए।
हाथ कटे वहु रक्त वहाए।
रघपति जवि इनि को निर्षायो।
अति क्रोधु मन महि उपिजायो।
भर्थि को कह्यो श्री रघुराई।
सैना ले संग मेरे भाई।
जाइ करि उनि बालक सौ झूझौ।
मोहि कहा मन अंतर बूझो।
हनूमान सुग्रीम ले जावौ।
सांईदास जाइ युद्ध मचावौ ॥२३०

भर्थि हनूमान सुग्रीम कौ लीआ।
त्याग अयोध्या तिन गवनु कीआ।
चले चले आए छिन माही।
लऊ कुसू ठांढे से जाही।
लऊ कुसू सो वचनु उचारा।
कहा नामु है तात तुम्हारा।
लऊ भर्थ ताई प्रतु दीना।
संग्राम ठौरि तुमि क्या चित कीना।
संग्राम माहि सुण हो मेरे भाई।
मात पिता कहा जाति अषाई।
वाल्मीक हमिरे पित नामा।
जानकी माता को है नामा।
भर्थि पवन सुत सौ इहि आषा।
हे सुत पवन तै कछु भी लाषा।
वाल्क रघपति सुत द्रिष्ट आवहि।
श्री रामचंद्रि को रूप दिषावहि।
हनूमान तव कह्यो सुणाई।
सुण हो भर्थि राम के भाई।

जानकी कछु औगुण नही कीआ।
रघपति तिहि वनिवासा दीआ।
सोई वाति तै आगे आयो।
ताहि पाप तुमि एहि करायो।
जैसा करै तैसा कोऊ पावै।
सांईदास कीओ आगे आवै ॥२३१

पवन पुत्र इहि कह्यो सुणाई। भर्थि वभीछनि मनि ठहिराई ॥
युद्ध कर्नि कौ तिन चितु लायो। अधिक युद्ध तव भर्थि करायो ॥
लऊ कुसू ने जोरा कीना। भर्थु सहिति सैना हति लीना ॥
श्री रघपति जवि इहि सुण पायो। महा अधिक मन महि विस्मायो ॥
ऐसे कौण प्रगटि भए भाई। मोहि सैन जिन सकल हताई ॥
भर्थु शत्रघनु लछमनु मार्यो। सैना तांकी तिहि प्रहार्यो ॥
क्रोधु कीओ रघपति उठि धायो। अधिक सैन प्रभु संग ल्यायो ॥
आइ संग्राम ठौर ठहिरायो। अधिक युद्ध तिनि अग्नि रचाहो ॥
लऊ कुसू को वलु वहु भारी। सकल सैन रघपति की मारी ॥
जवि सभु सैना तिनहि हताई। श्री रामचंद मन महि विस्माई ॥
विस्मकि होइ करि युद्ध को आयो। लऊ कुसू सौ युद्ध करायो ॥
रघुपति को तिन मूर्छा कीना। सांईदास सभ उत्तर दीना ॥२३२

लऊ पुकार कह्यो कुसू ताई। इहि आई हमिरे मनि भाई ॥
वंचरि षेलनि कौ ले जावहि। इनि से षेलनि कौ चितु लावहि ॥
कुसू कह्यो भलो शब्द सुनायो।
भली वाति तुमि मोहि बतायो।
जबि सभ सैना इन्हि प्रहारी।
सुग्रीम पवनसुत इहि मनि धारी।
जो हमि फिरहि हम को मारहि।
सांधि वाणु हमि धर्नि पछारहि।
तांते धर्नि ऊपरि परि रहीए।
कहि वाण हमि इनि के सहीए।

सास घूटि वसुधा लपिटाए।
को जाने इन्हा प्राण तजाए।
माणक मोती रत्नि घनेरे।
लाल जवाहरि मणी वहतेरे।
गज अरु अश्व अधिक तिहि लीए।
लऊ कुसू एहि कार्ण कीए।
हनूमान सुग्रीम कौ लीआ। तव गवनु अपुने ग्रहि कीआ॥
चलति चलति जानकी पहि आ:ए। जानकी सौ तिन्हा वचन सुनाए॥
दो वंचरि षेलनि कौ आने। लऊ कुसू इहि वचन वषाने॥
जानकी वंचर ओरि तकाओ। वंचरि देषि मुष ते उचिराओ॥
हनूमान सुग्रीम पछाने। तव जानकी ने वचन वषाने॥
हे सुत मोहि हनूमानु प्यारा। तुमि से प्यारा वहु अधिकारा॥
मोहि द्रिष्ट आगे ना आनो। मेरो कह्यो सत्त करि जानो॥
अवि मोहि द्रिष्ट परे मरि जाई। हे सुत पाछे कछु न वसाई॥
अवि महा तेज क्रोध द्रिष्ट मेरी। जो करो इसि होइ भस्म की ढेरी॥
छाडि देहु मेरो कह्यो मानो। मोह कहे अंतुर ना आनो॥
जबि जानकी इहि वचन उचारे।
लऊ कुसू मन माहे धारे।
तिन को त्याग दीयो तत्कारा।
हे साधो कह्चो सकल वीचारा।
जानकी माणक मोती लीने।
मणी रतन ले गोदि महि कीने।
जीत भई सुत वहु सुष पायो।
सांईदास विधि प्रगटि सुनायो॥२३३

वालमीक आगे ही धाए। प्याल गए बलि लीए बुलाए॥
वार्नि यज्ञ करावण धाए। वार्नि को जा यज्ञ कराए॥
यज्ञ संपूर्ण ताका कीआ। पाछे ग्रहि आवनि चितु दीआ॥
आवति अंम्रति कौ ले आया। रघपति को मूर्छा निर्षाया॥
सकल सैन सौ द्रिष्ट पसारी। सभहि मूर्छा नैन निहारी॥

अंमृति ले रघपति मुप पायो। वहुरि लछमन मुख चुआयो ॥
भर्थ शत्रघन के मुप डारे। तव इनि सभ ही नैन उचारे ॥
अंम्रतु सभ सैना मुप पायो। वालमीक ऋषि सकल जीवायो ॥
मानो साए से सभ जागे। उस्तति प्रभ की करनि लागे ॥
हे माधो भगतिनि सुपदाईकि। गुणनिधान संतनि सुपदाइकि ॥
सदा सदा प्रभ संति सहाई। सदा सदा संतनि सुपदाई ॥
भक्तिनि को प्रभ ऐसे रापहि। जैसे रसना मुप महि भापहि ॥
दसरथ को नंदन रघुराई। सांईदास जागे सुपदाई ॥२३४

रघिपति ऋषि सौ वचनु उचारा।
ऋष जी सुण हो प्रश्न हमारा।
इहि दो वाल्क कौनु कहावहि।
जो तुमिरे अस्तल ठहिरावहि।
वालमीक इहि सुण मुसिकाना।
मुष अपुने ते प्रतु उचिराना।
रघपति सुत है एहि तुमारे।
जानकी के गर्भ उतिपति धारे।
श्री रघपति एहि विधि सुण पायो।
वालमीक सें फिरि उचिरायो।
जानकी जीवति है अबि ताई।
भली वाति तुमि मोहि वताई।
वालमीक सुण करि प्रतु दीना।
जीवति जानकी आस्रमु लीना।
जवि लछमनि वनि महि छडि धायो।
पाछे से मै वन महि आयो।
कंद मूल लेने के ताई। जानकी वन महि निर्पाई ॥
तांको ले करि संग आयो। तिहि कारण आइ मठ वनायो ॥
ऋषि वनिता ईहा अधिकाई। जानकी रहति तिहि महि रघुराई
ऋषि वाल्क कंदिमूल ल्यावहि। जानकी ताई भी पहुचावहि ॥
जो कछु हमि षावहि रघुराई। जानकी भी सोई ले षाई ॥

जानकी पितु नृप जानक विदेही । वहु सेवकु मेरो भलो स्नेही ।।
जबि जानकी कौ कार्ज् भया । तिह समे मै भी मिथला गया ।।
उसि दिन ते जानकी ईहा रहे । सांईदास आस्रमु ईहा अहे ।।२३५

श्री रघपति फिरि वात चलाई । जानकी जीवति है मेरे भाई ।।
मै अरंभ यज्ञं तौ कीना । एहि वाति मन महि धरि लीना ।।
एहि वात जो मो को होई । अपि दहि जानकी प्रगट पलोई ।।
हे ऋषि चलु जानकी पहि जावहि । जानकी कौ जाइ दर्सनु पावहि ।।
ऋष कह्यो आछा रघुराई । चलहो आस्रम महि सुष पाई ।।
चले चले आस्रम महि आए । बाल्मीक ऋषि अति अधिकाए ।।
जानकी लऊ कुसू कों ल्यायो । श्री रघपति पहि आण पलायो ।।
रघपति जानकी सुत दोऊ लीए । तांते गवनु अयोध्या कीए ।।
आए चले अयोध्या माही । ग्रहि ग्रहि महि सभ मंगलि गाही ।।
नग्र अयोध्या वहु सुषु पायो । अंग अंग महि वहु हिर्षायो ।।
जैसा भूषा भोजनु पावै । दुःख मनि ते सभ ही विसरावै ।।
जैसे वृक्षि मूल जलु जाए । फलु उपिजै साषा उमिडाए ।।
जैसे दीपक मै तेलु पायो । अधिक जोत दीपक प्रगटायो ।।
जैसे अंधिला द्रिग कौ पावै । अंग अंग महि नाह समावै ।।
जैसे निर्धनु धनि कौ पावै । दुःख विलार महा सुष पावै ।।
जैसे बाल्क दूधि पीवाए । महा अधिक सुष मन महि पावै ।।
जैसे संतु राम गुण गाए । मग्नि होइ सभ किछु विसराए ।।
जैसे कमल रवि के प्रकासा । मुख षोल्ह पावति सुषु वासा ।।
औसे लोक अयोध्या होए । सकल बियोग मनो तिनूं षोए ।।
रघपति ग्रहि मांहे चले आए । सांईदास मनि वहु सुष पाए ।।२३६

श्री रघपति ने यज्ञ करायो । जो कछु वेद म्रिजाद बतायो ।।
जानकी बांवे अंग वहाई । कनक पुतली धर्नि समाई ।।
दसरथ सुत यज्ञ पूर्ण कीना । दक्षिणा वहु विपो कौ दीना ।।
वशिष्ट प्रोहति यज्ञ करायो । वेद चतुरि मुष ते उचिरायो ।।
जो कोई अश्व मेध यज्ञु करही । तिहि कुलहत्या सकली टरही ।।
महा कठनि यज्ञ है मेरे भाई । विनु सहाइ हरि कीओ न जाई ।।

जो श्री रघपतु किर्पा धारे। तौ वह यज्ञ होइ तत्कारे॥
जज्ञ न होवैं तो हरि जसु गावौ। साधि संगि सदा लपिटावौ॥
जो इकि साध को भोजनु देई। मानो पूर्ण यज्ञ करेई॥
साधि माहि हरि सदा वसेरा। साध जना का है प्रभु चेरा॥
एकु साध त्रैलोक समाना। श्री रघपति मुप एहि वपाना॥
यज्ञ पूर्ण कीनो रघुराई। सांईदास प्रभ सदा सहाई॥२३७

ब्रह्मा रघपति पाहे आयो। एकि दिना इहि वचनु सुनायो॥
हे प्रभ औधि संपूर्ण होई। अंतरि गति होउ विलम न कोई॥
श्री रघपति ब्रह्मे प्रतु दीना। ब्रह्मा ने मनि महि धरि लीना॥
सहस्र वर्ष जबि औधि विहावहि।
तव हमि अंतरि ध्यानु लगावहि।
ब्रह्मा ने फिरि वाति चलाई।
रघपति कौ ने वाति सुनाई।
किहि प्रजोग इहि वाति वपानी।
कौनु वाति तुम मनि महि आनी।
औधि तुम्हारी पूर्ण होई।
किहि प्रजोग रहो विधि,कहो कोई।
श्री रघुपति फिरि आप सुणायो।
सुण हो ब्रह्मा हितु चितु लायो।
मोहि पिता दशरथ तांको नामा।
एहि विधि आपी पूर्ण रामा।
दश सहस्र औधि थी तांकी। सकली विधि मैं आपो वांकी॥
नौ सहस्र वर्ष भोगाई। मोह व्योग तिहि प्रान तजाई॥
एकि सहस्र औधि तांकी रही। सोई ही मैं मनि धरि लही॥
वाही भोग करि मैं आवौ। अंतरि गति होइ वैकुंठि सिधावौ॥
ब्रह्मा इहि प्रतु सुण करि धायो। सांईदास आस्रम महि आयो॥२३८

सहस्र वर्ष पूर्ण जवि होए। श्री रघपति इहि मन महि पोए॥
अंतरि ध्यान होइ वैकुंठि जावौ। सकल सुरौ को दर्सु दिपावौ॥
राजु दीयो प्रभ जी लऊ ताई। तुमि सुत राजु करो अधिकाई॥

प्रजा कौ वहुता सुष देवौ। जोरु जुल्मु किसे परि न करेवौ।।
इस ही भांत राजु करावो। पर्जा को वहु सुषु दिषलावौ।।
मैं तुझि को सभ दीयो वताई। सुण हो सुत हमिरे सुषदाई।।
वार वारि मै तोहि समझावौ। राजनीत मै तोहि वतावौ।।
श्री कौलापति ने राजु दीआ। तिल्कु राज लऊ मस्तक लीआ।।
लऊ राजु कर्नि चितु लायो। सांईदास पर्जा सुष पायो।।२३९

श्री रघपति अंत्र गति होण लागे।
राजुमालु सभहू तिन त्यागे।
बैकुंठि वेग विवाण जुआए।
तिहि चढि भर्थु शत्रघन धाए।
जानकी धसि गई धर्नि के माही।
तव वंचरि मिलि आए अधिकाही।
श्री रघपति सौ तव विनती ठानी।
हमि वलि जावहि सारंग पानी।
हमिरी गति प्रभ कौनु करावौ।
हमि कौ हमिरे संग चलावौ।
तव श्री रघुपति ताहि सुनायो।
मै तुमि कौ इहि वाति वतायो।
करि स्नानु बैकुंठि सिधावौ।
चढो विवाणीं विल्मु न लावौ।
एक वंचरि स्नानु करावै।
चढ़ि विवाण वैकुंठि सिधाए।
पवन पुत्र तव कह्यो सुणाए।
प्रभ जी मै बैकुंठि न जावौ।
वसुधा परि कूदनि सुष पावौ।
रघपति कह्यो भला ऐसे होई।
जो तै कहा होवैं फुनि सोई।
लछमन सेस नाग होइ धायो।
अपुने आस्रम जा ठहिरायो।

श्री रघपति किवाड चढाए।
अंतरि गति होइ वैकुंठि सिधाए।
गण गंधर्व कीयो जै कारा।
कौलापति वैकुंठि सिधारा।
भक्ति हेति करि वपु हरि पायो। भक्ति हेति इहि कर्मु कमायो॥
गुर सांईदास कृपा जवि धारी। संत दया मनि लीऔ वीचारी॥२४०

मन प्रवोधि ग्रंथु वनायो। भाषा कीयो मनु ठहिरायो॥
महा समुद्र कोऊ पार न पाई। दधि को पारु लिख्यो न जाई॥
दधि को पारु अजहू कोऊ पावै। श्री राम ग्रंथ को हाथ न आवै॥
अति अथाहु हाथ को पावै। कहा बुद्धि जो हाथ ल्यावै॥
जो कहू चूक परी सुधि करहो। मो परि कोऊ दोसु न धरहो॥
श्री रामग्रंथ भयो पूरायण। साधो सदा भजो नारायण॥
श्री राम नामु अघतार्न हारा। एहि वाति सुण वेद वीचारा॥
पूर्ण पुर्ष पुर्ष अविनासी। कौलापति पूर्ण अज्ञासी।
निरंकारु निर्वैरु गुसांई। सदा सदा पेलति वहु ताई॥
त्रैलोकि सभु ताहि पसारा। घटि घटि रचिना राचनिहारा॥
पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म पुरात्तम। निर्मल जोति सदा जीवन आत्म॥
ताहि प्रकास तिमरु मिटि जाई।
दुःख भाग सुष लागे आई।
सुषदायक प्रभ दुःख निवार्ण।
महा विकटि संकटि कौ तार्ण।
निर्मल ज्योति सदा उजीआरा।
संत जना को वहुता प्यारा।
भूत प्रेत सकल डरि जाए।
श्री रामनाम को मुष उच्चिराए।
श्री रघपति को पूर्ण अवतारा।
साधो सुण लेहो चित धारा।
सदा सदा रघिपति जसु गावो।
सांईदास पलु ना अलसावो॥२४१

मैं मति हीन संत निस नाई।
त्याग सकल विधि पर्‌यो पाई।
संत चर्नि रजि जो मै पावौ।
उमिडि उमिडि के टहिल कमावौ।
संत कृपा जो मोहि करावहि।
अपुने दासौ संग रलावहि।
प्रभ जी इहि विधि दासु जचाए।
करुणा होइ तब ही इहि पाए।
सदा सदा हरि को जसु गावौ।
छिन मात्र मनि ना अलिसावौ।
प्राप्ति भक्ति टहिल की होवै।
उौरु टहिल जाचों नहि कोवै।
सदा नाम मतिवारा होवा।
उौरु वाति सकली प्रभ षोवा।
अनहदि शब्द सौ एहि मनु लागै।
तोहि क्रिपा सकला भमु भागै।
करौ निर्त वहु प्रीति लगाई।
सुण हो विनती जन रघुराई।
पायो सुषु जो किर्पा धारी।
श्री कौलापति प्रान अधारी।
जाचे सांईदास गुर ते दया।
अपुनी करुणा दास परि करया।
श्री रघुपति की जबि सर्नि आयो।
सांईदास को भर्मु चुकायो॥२४२

इति श्री रामायण दश अवतार श्री मत्स कूर्म वैराह नृसिह वावन पर्शुराम रामचंद्रि अवतारि चर्ति भाषा सांईदास कृति संपूर्ण समप्तम् शुभमस्तू॥

श्री रामाय नमः

कृष्ण अवतार

॥ ॐ ॥ ओं स्वस्ति श्री सतिगुरि गणेश सरस्वत्यै श्री बाबा साईंदास जी सदाय नमः अथ दस्म स्कंद श्री भागवति श्री सुकदेव परिक्षति संवाद भाषा साईदास क्रित लिक्षते ॥ छं ॥

द्याल पुर्ष पूर्ण अविनासी। सर्व निरंतरि जोति प्रकासी ॥
सदा सदा मुक्ता मुक्तायनि। कौलापति पूर्न मुरायनी ॥
आत्म रूप सदा उजीआरा। आबंध पुर्ण निर्लेपु धारा ॥
प्रान पिता दुःख सुष ते न्यारा। सभि ते न्यारा सभहू पसारा ॥
चिन्हि चक्रित आवर्नै गुसांई। रूप रेष तिन्ह तिहि नाही ॥
घटि घटि माहि तांको प्रकासा। सदा सदा संतन की आसा ॥
सक्ल भूति ते रहति न्यारा। जैसे रवि अति किर्नि उजारा ॥
जो देषै रवि ताहूं पाही। करि पलोलि महि आवै नाही ॥
ऐसो प्रभु सभि माहि समाया। घटि घटि माही ज्योति दिषाया ॥
भीरि परी जन को तहूं आया। इहि प्रजोग आइ वपु पाया ॥
क्रिष्न क्रिष्न साधो उचिरावौ। साईदास ताहूं जसु गावौ ॥१॥

राजा परीक्षतु सुतु इहि वर्ना। नाती अर्ज्जन पांडव वर्ना ॥
एक समे वनि कहु वहु धाया। अक्षेरि वृत्ति कर्नै चितु लाया ॥
महा विकटि वनु अति अंध्यारा। छिनि रंचिक ना पर्ति उजारा ॥
ता महि जीइ जंत वहु रहे। केहरि मृग चीते वहु अहे ॥
परीक्षिति कौ तप्त आइ ग्रासा। उत्पत होई तांको प्यासा ॥
जलु जोहति जलु हाथ नि आवै। नृपु मीना जिउ मनु तडिफावै ॥
सिङी ऋषि तिहि वनि के माही। सहित सदा हरि ध्यानु लगाही ॥
ऋषि के आश्रम नृपु चलि आयो। एहि वाति तिन मनि ठहिरावो ॥
मै ओतीपतु अति वलिवाना। औरु न कोई मोहि समाना ॥
मो को ऋषु प्रनामु तो करई। मोहि आज्ञा मनि माही घरई ॥
सिङी ऋषि प्रभ ध्यानु लगाया। अपुने वपु की सुधि न पाया ॥
ताहि ध्यानु हरि सेती लागा। द्वितीयो भाउ वाहू को भागा ॥

राजे को प्रनामु न कीआ। नृप वहु क्रोधु मन महि लीआ।।
मैं पृथ्वी प्रतु नृपु हौ आयो। ऋषि ने मोहि प्रनामु न सुनायो।।
अति क्रोधु कीनो मनि माही। ताहि क्रोधु किसे सह्यो न जाही।।
तव हि मुख ते वचन सुनायो। अति क्रोध होइ करि उचिरायो।।
मूआ उर्गु[1] ऋषि के गरि डार्यो। मोहि कहा मनि महि वीचार्यो।।
जवि नृप ने मुख वचनु उचारा। सैना सर्पु ऋषि के उरि डारा।।
नृप करि एहि नग्रि महि आए। सांईदास कहति समझाए।।२।।

सिङी ऋषि सुतु अषगि हे नामा। सदा जपे हरि गोबिंद रामा।।
कंदिमूल कारण वनि माही। गयो अषगु वनि वंकि मंझाही।।
कंदि मूल वनि ते ले आया। ऋषि पाहे आइ करि ठहिराया।।
नैन निहार देष्यो ऋषि ताई। मूआ उर्गु निर्ष्यो उरि माही।।
तिहि देषति भै चकित होइ रह्या। मुष ते वचनु उचारे कह्या।।
कौलापति पूर्ण अघनासी। मैं विनती करहो तुमि पासी।।
जिन मोहि पित उरि उर्गु है डारा।
विन औगुण जिन इहि कर्मु धारा।
तोहि आज्ञा प्रभ जी मै पाई।
तांको स्रापु देवौ अधिकाई।
एहि तखकि तांकौ मारे। सप्त दिवसि पाछे प्रहारे।
अषग श्रापु नृप ताई दीना। मनि अंतरि इहि निश्चा कीना।।
सिङी ऋषि तव नैन उघारे। अषग सकल व्रितांतु वीचारे।।
सिङी ऋषि कह्यो सुत बुरा कीनो।
ऐसे नृप को ते श्रापु दीनो।
महा वैष्नव धर्म को पालकु।
दयावानु वहु सदा द्यालकु।
अषग कह्यो सुण हो पिति मोरे। मैं विनती करो आगे तेरे।।
जो यहु धर्नि[2] पख करे सहाई। इहि कर्मु कहु काहे कराई।।

---

१. उर्गु <उरग=सांप। २. धर्नि—संभवतः यह शब्द "धर्मि" है। लिपिकार का दोष है।

एहि वाति मोहि मनि ना आवै। धर्मि परव वहु नृपु ठहिरावै ॥
तोहि उरि उर्गु मूया किउ डारा। जो उनि धर्मि पक्ष मनि धारा ॥
सिङी ऋषि सुत कौ प्रतु दीना।
तैं विधि अजहूं न मनि महि लीना।
सभ ब्रितांतु मैं तोहि सुनावौ।
तुमिरे मन को भर्मु चुकावौ।
अखग कह्यो पिता देह वताई।
नृप इहि विधि किउ मनि ठहिराई।
सुण हो सुत तुमि श्रवण धारी।
तुमि पहि आपो सकल वीचारी।
कल्युग आइ प्रवेसु करायो।
इहि महाधर्मि धर्म दर आयो।
परीक्षति नृपु मंदरि परि आयो।
धर्म्मि पुत्र त्रई पगि निर्पायो।
तात्काल तहू पहि आयो। धर्म्मि पुत्र सौ वचनु सुनायो।
कह्यो चतुरि पग कौ क्या भया। तीन पग परि जो ठांढा भया ॥
धर्म्म पुत्र तांको प्रतु दीना। नृप सुरण करि मन माहे लीना ॥
कलि युग ने प्रवेसु करायो। एकु पगु मेरा तिने उठायो ॥
नृप सुरण करि मन महि अकुलाना। अति क्रोधु मनि माहे आना ॥
मोहि राज महि उनि इहि कीआ। अति क्रोधु मनि अंतरि लीआ ॥
धर्म्मि को वलु तिस कौ अधिकाई। कलि प्रवेसु कहा सके कराई ॥
चाहति कल्युग कौ वह मारा। तव कलियुग तिहि कह्यो पुकारा ॥
नृप तुमि मोको काहे मारो। विनु औगुरण कीए किउ प्रहारो ॥
कोई ठवरि मोहि देहु वताई। ताहू ठौरि रहो मैं जाई ॥
जवि कलियुग इहि कह्यो पुकारे। तव नृप संचरु मन महि धारे ॥
कौनि ठौरि मैं इसि कौ देवौ। जहा रहे इहि वहु दुःख देवौ ॥
सोच विचार लीयो मनि माहे। कंचनि महि इसि को ठहिराहे ॥
कह्यो रहो तुमि कंचन मांही। औरि ठौरि तुमि देवौ नाही ॥
जवि कलयुग इहि विधि सुण पाई। मनि माहे एहि ठहिराई ॥
औरि ठौरि कहू मैं भरमावौ। काहे को औरे मैं जावौ ॥

कनक छत्र नृप के सरि केरा। तहू प्रवेसु वहु मेरो डेरा ।।
कीयो प्रवेसु तासि के माही। कल ताहूं महि रहित सदाही ।।
जवि नृप छत्र कौ सिर धरही। मदलमत उौरु कछु करही ।।
कल्युग ने इहि कर्मु कमायो। इहि कर्म्मि कर्ने चितु लायो ।।
नाह्र ति वहु कहा इहु करावै। इहि विधि कर्ने किउ चितु लावै ।।
अखग सुनति ही भर्मु निवारा। सत्त सत्त मनि महि करि धारा ।।
कह्यो सुणो पित सदा सहाई।
जो विधि लिषी सौ कौणु मिटाई।
जो कछु होवति होइ सो होई।
उौरु न करि साकहि कछु कोई।
सिङी ऋषु सुण करि विसमायो।
सांईदास सभु भाष सुणायो।

नृप परीक्षतु जबि ग्रहि महि आयो।
छत्रु कनक तिनि दूरि करायो।
प्रिथम मत्ति भई प्रकासा। मनि माहे कीनो विस्वासा।
मै कहा कर्मु कीयो वन माही। मत्ति हीन भई ताहि स्माही ।।
ऋषि उर महि जो उर्गु डारयो। एहि कर्मु मैं जाणि करायो ।।
लोक पठाइ दीए ऋषि पाही।
नृपति हि वहु विधि कह्‌यो सुनाई।
मुोहि विनती ऋषि पहि जा कहौं।
मोहि उौगुणु चित परि ना धरहों।
तिहि समे हमिरी मति वौराई। तुम पूर्ण ऋष सदा सहाई ।।
लोक चले आए ऋषि पाही। करि जोरे मुष आष सुनाही ।।
सिङी ऋषि मुष वचनु उचारा। सुण हो नृप मोह अति प्यारा ।।
तुमि नृप कौ जाइ आष सुनावो। होवण होइ सो कब न मिटावौ ।।
मै तुमि ताई स्रापु न दीना। इहि कार्णु हमिरे सुत कीना ।।
लोक सुनति गत नृप पहि आए। सकल त्रितांतु तिहि आष सुणाए ।।
नृप प्रीछति जबि इहि सुण पाया। महा अधिक मन महि विस्माया ।।
तपसी कह्यो होवै फुनि सोई। ताहि स्रापु न मेटै कोई ।।

ताहि श्रापु किउ अन्यथा जाई। मोहि ताई आई तखकु डंसाई ॥
सोच विचार एही मन धारी। गच[1] मंदर कीजे तत्कारी ॥
नृप सैना कौ आज्ञा दीनी। ताहि सैन मनअंतर लीनी ॥
गच मंदिरि जल माहि बनाया। महा सरूप बन्यो अधिकारा ॥
मोरु कीट असगरु जो आवै। नाहि छपै सभु द्रिष्ट दिपावै ॥
इहि प्रजोग गचि मंदरु कीना। नृप प्रक्षनि तहा बासा लीना ॥
तिस मंदरि निसवासर रहै। सांईदास भै तिहि मन अहै ॥४॥

सकला ऋषों इहि विधि सुरण पाई। प्रीछति श्रापु पायो बनि साई ॥
चलहो ताहि देष कै आवहि। ग्यान गोष्ट करि तिह पर्चावहि ॥
व्यास चले शुक सहित चलाए। नृप परीक्षति पाहे बहु आए ॥
सन्क सनंदन अति अपारा। उौर सनातनि सन्त कुमारा ॥
इहि प्रजोग परीछति पहि आए। निग्म बाति मोह एह बताए ॥
ग्रंथु सुनो तुमि नृप बलवाना। नृप पहि तखक विधि सकल सुनाना ॥
तखकु डंसे वहि नर्कि सिधावै। बहुरु बहुरु योनी महि आवै ॥
एहि विधि जारण सकल रिष आए। तिहि दर्सन दु:ख सकल भगाए ॥
नृप परीक्षति नें सीसु निवायो। नमिस्कार कीनो उच्चिरायो ॥
कीयो अनुग्रहि मो परि आए। भलो कीयो प्रभु दर्सु दिपाए ॥
मो कौ श्रापु अखग ने दीआ। मोहि पतिष्टयो जो मै कीआ ॥
अषेरि व्रित कीयो मै बनि माही। सिङी ऋषु रहे सदा तहाही ॥
मोकौ तप्ति गहृयो अति आई। त्रिषावंत भयो सुधि बौराई ॥
तिहि समे मूढि मति होई। मना वीचार न आयो कोई ॥
ऋषि मो कौ प्रनामु न कीना। मै तिहि समै क्रोधु चित लीना ॥
मूया उर्गु तिहि उरि महि डारा। मूढ मति होइ गयो अंधारा ॥
मै ऋष त्याग आयो ग्रहि माही। जो कछु विधि लिप्यो सो पाही ॥
सिङी ऋष सुत अखग है नामा। महा तपीसुरु गोबिंद रामा ॥
कंद मूल वनि से ले आया। इहि विधि तिन ने देपि सुभि पाया ॥
मूया उर्गु किसि इसि उरि डारा। मोहि पित ऋषु पूर्ण निरंकारा ॥
ना उौगुरण कछु इनि ने कीआ। विनु उौगुरण कीए किन दु:ख दीआ ॥

---

१. गच < कच = कांच

विनती करि तिहि आषि सुनाओ। सुन हो प्रभ त्रिभवन के रायो ।।
जिन जन ने इहि कर्मु कमायो। तोहि आग्या तिहि स्रापु लगायो ।।
एही तखकु डंस मरि जाई। सप्त दिवसि पाछे मेरे भाई ।।
ऐसी विधि कछु मोहि वतावो। सांईदास सागर सुख सोई ।।५।।

श्री सुक तुमि कौ कथा सुनावै। जो सेस नागु सहस्र मुष उचिरावे ।।
पताल मध्य शेष नागु जो रहे। तहा वस्त उस्तति हरि कहै ।।
ब्रंह्म के सुत सुणाने जावहि। सुण करि व्रह्म पुरी ठहिरावहि ।।
पताल मांह व्रह्मपुर भाई। तांको मार्गु सकल वताई ।।
एकु करोडि जोजन मेरे भाई। तांको मार्गु देवहु वताई ।।
नृप परीक्षति संसा ना करहो। सुण हो कथा फुनि श्रवन धरहो ।।
सोई कथा सुकदेउ वषाने। सकल वार्ता शुकजी जाने ।।
कथा सुनति वहुता सुषु पावहु। चढि विबाण बैकुंठि सिधावहु ।।
व्रह्मपुरी उो पताल के माही। नेमिषार सन्कादक ताही ।।
सात पुरान कथा तहा होवै। सन्कादक सुण वहु दु:ख खोवै ।।
तव नृप परीछति ऐसौ भाषा। करि जोरे विनती मुष आषा ।।
सुण हो मोहि पूर्ण प्रभु वाता। मुख से कहो सुणो मुष वाता ।।
एहि कथा तुमि मो पहि आषो। कृष्न चंद की उस्तित भाषो ।।
वसुदेव ग्रहि काहे कौ आया। यादव वंस किउ नामु रषाया ।।
नंद के ग्रहि जाइ आस्रम लीना। मथुरा त्याग गोकल पगु दीना ।।
तव शुकदेव जी ऐसे बोले। तूं भाषा तुझे आतम डोले ।।
केतक दिन निस भए वितीता। नृप तुमि कछु भोजनु नही कीता ।।
भूष सकल सुर्ति वौराए। भूषे कछु सुन्यौ ना जाए ।।
जवि इहि विधि सुकदेव वषानी। नृप परीक्षव तव विनती ठानी ।।
हे सुकदेव कहा तुमि कह्यो। कौनु वाति मुष ते उचिरह्यो ।।
एहि कथा अंमृति अति मीठा। ताहि प्रसाद अंम्रतु द्रिग डीठा ।।
जो कोई षाइ सो रहे अघाई। ताकौ भूष गहे नही आई ।।
अति अनंदु मै वहु सुषु पायो। एहि कथा सुण आश्रमु आयो ।।
भूष कहा हमिरे निकटि आवै। सांईदास नृप इहि उचिरावे ।।६।।

तव सुकदेव कह्या नृप ताईं। सुरण हो नृप समझो मन माही ।।
मधपुरी नग्र तहा नृपु रहे। उग्रसैनु यादव सुग्र ग्रहै ।।
ताहि ग्रहि कंन्या देवकी नामा। अतिभुति सुंदर सुंदर रामा ।।
ताहि संयुक्त वसुदेव सौ कीनी। कार्जु करि वहु तांको दीनी ।।
गज अश्व रथ कंचन वहु दीना। चीरी[1] अधिक तांके संग कीना ।।
मानक मोती वहुते दीने। इहि विधि कर्के विदआ कीने ।।
एक अस्वुरु भुंज महि वलु भारी। ऋषि मुनि कौ वहुताहि दुःखारी ।।
सुर नर नाग वहुत दुःख देवै। जो कछु निर्षे सो पगि लेवै ।।
वसुधा रूप गौ का कीना। अति सूक्ष्म ताहू वपु लीना ।।
कंपमानु व्रह्मे पहि आई। मुख ते वसुधा वाति चलाई ।।
एकु असरु हमि को दुःख देवै। हमि परि वहुता जोरु करेवै ।।
मैं इसि भारु उठाइ न सांकौ। तुमि पाहे प्रभ इहि विधि आपों ।।
जवि व्रह्मे इहि विधि सुरण पाई। मघवाकौ तिन लीउो बुलाई ।।
भूपति वर्नि तव ही वहु आए। भए इकत्रि वहि मति ठहिराए ।।
चलहो क्षीर समुद्रि जावहि। तहा जाइ करि भजनु कमावहि ।।
अश्वरु दुःख पृथ्वी वहु दीना। ऋषि मुनि जन को आजजु कीना ।।
क्षीर समुद्रि के तटि सभ आए। वेद पढिन कौ तिनि चितु लाए ।।
एही वेनती मुखो वषानी। श्री कौलापति सारंग पानी ।।
असुरौ अति विरोधु प्रभ कीना। सक्ल प्रजा कौ इनि दुःख दीना ।।
संध्या जापु कर्नि ना देवहि। जो कछु देषहि सो पसि लेवहि ।।
तुझै त्याग उौर किसि आषहि। अपुनी विर्था किस पहि भाषहि ।।
हमिरा वलु तुमि ही परि लागै। तुमि किर्पा करि सभ दुःख भागै ।।
जवि विपिन इहि वचनु उचारा। गरण गंधर्व कीयो जै कारा ।।
होई तव ही अकास ते वानी। धीर्जु धरो मोहि आया जानी ।।
वसुदेव यादव के ग्रहि आवौ। ताहि असुर कौ आइ मिटावौ ।।
वसुधा का तव भारु उतारो। एकही एक असुरु गहि मारो ।।
अपुने भक्ति क्रितार्थु करहौ। वैकुंठ माहे तिन कौ खरहौ ।।
अवि तुमि अपने ग्रहि महि जावौ। हिर्षमान होइ भजनु कमावौ ।।

१. चीरी=चेरी [दासी]

वहूरौ चला ब्रह्मपुरि महि आया । मघवा इंद्रिपुरी सिधाया ।।
भूपतु वर्न पताल को राजा । गयो पताल वजेआन बाजा ।।
आपो अपुने पुरि महि आए । हिर्षमान हरि मंगल गाए ।।
आजु काल प्रगटे वनवारी । असुरौ मारे भारु उतारी ।।
कौलापति पूर्न प्रभ सांई । सांईदास घटि घटि विर्था अंतर जामी ।
सभ ही आनंदु मंगल गावहि । श्री जदुनाथ वसुदेव ग्रहि आवहि ।
असुरो मार करि घातु करेवैं । पर्मि सुखी देवौ करि लेवैं ।।
सभना के मनि एहि वीचारा । प्रगटेगी हमि राषनि हारा ।।
क्रिष्न भजो चिंता न करहो । श्री राम नाम मति अंतरि धरहों ।।
विर्पों कीनी गोबिंद आसा । सांईदास पूर्ण अभ्यासा ।।७।।

एकु दुष्टु खलु तिहि वलु भारा । महा असुरु सुर दंडन हारा ।।
वहु षलु देवनि कौ दु:ख देवैं । जो देषै तिहि पहि हिरि लेवैं ।।
देवौ मन महि कीओ वीचारा । नासु कहा इसि होइ तत्कारा ।।
सोई करहि जिउ इसि हति होई ।
होइ नासु जिउ इसि करहि सोई ।
सकल देव वहु भए इकि आई ।
कीयो विचारु इहि मति ठहिराई ।
नैमिसार धिंगु ऋषु रहे ।
अति मज्जन पूर्ण ऋषु अहे ।
तां पहि जाइ अस्त्र तिस ल्यावहि ।
ताहि अस्त्र ले वाण लगावहि ।
तिस ही वाण करि षल कौ मारहि ।
एहि वाति करि तिस हि प्रहारहि ।
सभ देवहु इहि मति ठहिराइ ।
क्षिण माहे ऋषि धिंग पहि आए ।
ऋषि आगे तिन्है आष सुणायो ।
एक खल ते हमि वहु दु:ख पायो ।
ताहि नासु होइ सुष पावहि ।
नाहि ति महा कष्टु उर्भावहि ।

ऋषि कह्यो कहु कैसे होई। जो तुमि कहो करहि हमि सोई ॥
सक्लहि देवौ कह्यो पुकारा। सुण हो ऋषि तुमि प्रान अधारा ॥
जो तुमि अस्थ देवौ हमि ताई। एहि क्रिपा करहो हमि पराई ॥
तुमिरे अस्थ वाण मुख लावहि। वही दुष्ट को नासु करावहि ॥
धिग ऋषि तव वचन उचारे। मोहि जीउ आवे अथि तुमारे ॥
इसि ते अवरु भला क्या कहीए।
इसि ते अवरु कहो क्या चहीए।
एकि वेनती तुमि परि करहो।
जीउ पिंड तुमि आगे धरहो।
अजहूं मै तीर्थ ना कीए।
अति मलीन हो आत्म हीए।
केतकि दिन मोहि आज्ञा देवौ।
मम विनती तुमि सुण करि लेवौ।
जावौ मै तीर्थ करि आवौ।
अग्नि भाग तुमिरे ठहिरावौ।
तित समे तुमि जानो सौं करहो।
सांईदास इहि विधि मन वरहो ॥८

तव ही देवो तिहि प्रतु दीना।
तुमिरो कहा हमि मनि धरि लीना।
ऋषि धिगि तुमि तीर्थ जावौ।
ढीलि परे जो तुमि फिरि आवौ।
तुम जो कहों करहि इकु कामा।
पूर्ण मुक्ति सदा हरि नासा।
सुर सकले जाइ जल कौ ल्यावहि।
भिन्न भिन्न तीर्थ जलु आवहि।
दिन थोरे महि कार्जु सरही।
वहु षलु दुष्टु कालु भवि करही।
तव फिरि धिग कह्यो तुमि जानौ।
जिन जानो तीर्थ जलु आनौ।

ले करिमंडलु सभ सुर धाए। तीर्थ जलु भिन्न भिन्न करि ल्याए ।।
मसरवताल माही जलु डारा। भर्यो तालु जवि वहु उजीआरा।
धिंगि ऋषि कीनो इस्नाना। संध्या जापु कीओ भगवाना ।।
सक्ल देवौ सो तिन ने कहा। लेहो तुमि जो कछु तुम चाहा ।।
जिउ जानौ सुरो करहो तैसे। आग्र तुमारे ठांढा ऐसे ।।
सक्ल सुरो मन भयो विस्वासा। एकु ब्रह्म महां भग्तु प्रकासा ।।
कैसे धिग ऋषि कौ हमि मारहि। कैसे हमि ब्रह्मण प्रहारहि ।।
सकल देवौ इहि मनि आना। तव धिङ ऋषि वचनु वषाना ।।
काम धैनि सुरि को सदि लेवो। जवि आवै तव आज्ञा देवो ।।
तुचा मांसु वहु हिरे हमारा। अस्ति रहे होइ काजु तुम्हारा ।।
अस्ति लेइ जाइ कार्जु करहो। वाण मुखि करि दानो मरहो ।।
कामधैनि सुर आण वुलाई। कामधेनि क्षिण माहे आई ।।
तुचा मांसु ऋषि को हिरि लीना। काम धैनि सुरि ने इहि कीना ।।
अस्ति आणि लाए मुख वाना। तव वहु दुष्टु हन्यो वलिवाना ।।
जवि कार्जु देवकी का कीना। वसुदेव तव मार्गु ग्रहि लीना ।।
रथि की डोरि कंसु करि लीने। चले जाति मग वाते कीने ।।
तव ही वाणी भई अकासा। मूढि मति कंस क्या हासा ।।
कहा डोरि लीने रथ केरी। इहि देवकी वैरनि है तेरी ।।
अष्टमु गर्भु जो इसि को होई। तुमिरो नासु करे फुनि सोई ।।
काहे डोरि लीए रथि जावै। इहि विधि कौना हृदे वसावै ।।
जवि ते कंस सुनी इहि वानी। डोरि त्याग दीई अभिमानी ।।
देवकी केस कंस करि लीने। किरिमानी सूती करि कीने ।।
चाहति दुष्टु देवकी मारे। केस गहे करि धर्नि पसारे ।।
वसुदेव तांसौ कह्यो सुणाई। सुणु नृप कंस महाबलकाई ।।
तू नृपु तुमिपे सरि नही कोई। जो तूं करहि होवै फुनि सोई ।।
तोहि पित दुहिता है मेरे भाई। छाडो इसि तुमि राम दुहाई ।।
गोविंद अर्थि करि इसे न मारो। मोहि कह्यो मनि अंतरि धारो ।।
महा क्रोधी कह्या न माने। वसुदेव को कह्यो हृदे न आने ।।
वहुरि वार वसिदेउ पुकारे। सुण हो कंस भूपति अति भारे ।।
इसि ताई मारौ तुमि नाही। मोहि कह्या लेवौ मन माही ।।

मैं प्रतज्ञा तुमि सौ करहो। जो इसि ते होइ आगे धरहो॥
जो तुमि भावै तिसे करावौ। मोहि कहा घटि महि ठहिरावौ॥
जवि वसुदेव इहि वात वषानी। सांईदास नृप सुण करि मानी॥६॥

वसुदेव देवकी को ग्रहि ले आया। ग्रहि आए मंगल वहु गाया॥
जवि केतक दिन भए वितीता। जन्मु ताहि ग्रहि वाल्क लीता॥
वसुदेव वाल्कु गोदि महि लीआ। कंस दुष्ट ताई इनि दीआ॥
कंस वाल्कु ले मारि चुकाया। रंचक त्रासु न मनि महि आया॥
भयो वितीत समा वहु ताही। वाल्कु मार्‌यो रोसु कराही॥
इकि दिन नार्द ऋषि चलि आए। वैन हाथ ले शव्द सुनाए॥
दुष्ट कंस कौ कह्यो सुनाई।
सुण हो नृप तुमि वलु अधिकाई।
सभ यादव शत्र है तेरे।
श्रवण धारि सुण हो वचि मेरे।
एहि विधि तुमि निश्चै करि जानौ।
इहि महि द्वितीया भाउ न आनौ।
देवकी अष्टम गर्भु जो आवै।
वाही तुमिरे प्राण हतावै।
जवि ऋषि ते नृप इहि सुण पाई।
मन अंतर एही ठहिराई।
सक्ल असुर तिन निकटि बुलाए।
मुषि ते वचनु उचार सुनाए।
जहा जहा जादवि कौ पावौ।
ताहि हनो तिहि वंसु गवावौ।
एहि आग्या असुरौ कौ दीना।
सांईदास नृप इहि मनि लीना॥१०॥

इति श्री भगवते महापुराणे दस्म स्कंदहि श्री शुकदेव परीक्षति संवादे प्रिथमो ध्यायः॥ १॥

कंस दुष्ट इहि मनि ठहिरायो। उग्रि सैन तै राजु हिरायो॥
देवकी सहिति वसुदेव बुलायो। तिहि कौ वंदी माहि डलायो॥

तिहि पग महि वेरी ले डारी। अति क्रोधु चितवनि उनि धारी ।।
षष्ट गर्भ देवकी के मारे। करि विरोधु मनि महि प्रहारे ।।
सप्तम गर्भु देवकी जो आयो। शेषनाग तिहि नामु अषायो ।।
आपि अश्रमु देवकी गर्भ लीना। वलिभद्र इसि को नामु कीना ।।
प्रिथमे देवी को उपिजायो। तिहि आज्ञा करी त्रिभवन रायो ।।
राम कौ तुमि गोकल ले जावौ। रोहणी गर्भ माहि ठहिरावौ ।।
रोहणी भर्जा वसुदेव केरी। सुण हो देवी इहि विधि मेरी ।।
तू गर्भि जसमति लेहि निवासा। देवकी के गर्भि मे लेउो वासा ।।
दुष्ट कंस विरोधु चलाया। सुरि ऋषि मुनि जन वहु दुःख पाया
इसि को दूरि करो तत्कारे। एही उपिजी हृदे हमारे ।।
देवी कौ प्रभ इहि वरु दीना। तोहि आसुन स्थिर मैं कीना ।।
प्रथम तोहि दुर्गा सभ भाषहि। इहि प्रयोग मन अंतरि राषहि ।।
जो जो तेरी सेवा कर्सी। तोहि क्रिपा करि भौजलु तर्सी ।।
दुःख दर्दु ताहू ग्रहि नासा। जो कोई तेरी करे आसा ।।
द्वितीया चंडिका नामु तुम्हारा। त्रितीया अंविका जग्त उजारा ।।
चतुर विजीआ तोहि नामु वषानहि। पंचम अवला वली पछानहि ।।
भवानी त्रिपुरसुंदरी माया। अष्टभुजी वहु रूपु दिषाया ।।
इहि वरु प्रभ ताहू कौ दीना। इहि करुणा प्रभ ता परि कीना ।।
देवी ने मन महि ठहिरायो। स्याम सुंदरि जो कछु उचिरायो
वलिदेउ खडि रोहिणी गर्भि डारा। एहि कर्मु की तत्कारा ।।
आपि जसौदा गर्भि निवासा। लीउो जाइ वहु ज्योत प्रवासा ।।
श्री देवी ने इहि कर्मु कीआ। सांईदास सुष आश्रमु लीआ ।।११

कंस भर्जा सभ मिल आवहि। नितापर्ति देवकी देषि जावहि ।।
इकि दिन देवकी कौ निर्षिआई। दुष्ट कंस सो आषि सुणाई ।।
देवकी गर्भु छेद है कीआ। द्रिष्ट नि आवै तिहि कछु थीआ ।।
दुष्ट सुनति विधि हिर्षु जु कीना। अति अनंदु मंगल मन लीना ।।
केतक दिन जवि भए वितीता। इहि विधि होई निर्मल रीता ।।
कौलापति पूर्ण भगवाना। त्रिभवन नायक पदु निर्वाना ।।
मुर्लीधरि प्रभु ,यादव राइ। अकाल मूर्त्ति हरि संत सहाइ ।।

अजूनी स्वंभू श्री ब्रिजनाथ। सदा सदा संतन के साथ ॥
त्याग वैकुंठि गर्भ दैवकी आए।
लीयो निवासु तहू ठहिराए।
तिहि समे अति प्रगटयो उजीआरा।
मानो रवि की किर्न पसारा।
देवकी रूपु सुंदर अधिकाई।
कनक पुतरी देत दिषाई।
जो दुहिता तीय देषि जो जावे।
कंस दुष्ट सौ जाइ सुनावे।
इहि गर्भु देवकी वहु उजीआरा।
हुट्यो तिमरु रवि ज्योति पसारा।
कहा उस्तति तिह रूप बषाने।
हमि उस्तति की कहा न जाने।
कंस वाति श्रवरण सुरण पाई।
मन महि भौ उपज्यो अधिकाई।
नृप मन महि भौ भयो वसेरा।
सांईदास त्रिभवन कीयो डेरा ॥१२

दुष्टु देवकी देषणि धाया। तात्काल देवकी पहि आया ॥
देषि रूपु महा विस्मायो। काल सरूपु तासि द्रिष्टायो ॥
रखिवारनि सौ कह्यो सुणाई। सुणहो रे तुमि मेरे भाई ॥
मोहहतनि कर्निहारु गर्भ आयो। मोहि तन आगे जतन करायो ॥
तुमि मोहि वीर सखा हो मेरे। मै बसो दूरि तुमि वसहो नेरे ॥
जाग्रति रहो नाहि तुमि सोवो। छिनु पलु तुमि गाफल ना होवो ॥
जो प्रथमे मोहि आरण सुनावै। वाल्कु जन्म्यो एहि बतावै ॥
मै ताहू कौ वहु कछु देवौ। सुप्रसन्न आतम करि लेवौ ॥
इहि विधि रषिवार्नि कहि चाले। कपटु हृदे उपज्यो भौ नाले ॥
जवि ग्रहि माहे जाइ ठहिराया। मनि महि त्रासु अधिक उपिजाया
जो भोजनु करे तिहि महि देषै। मतु इसि महि आया होइ पेषै ॥
जौ करि सोवैं शैनु न आवै। मतु इहि वस्नु शैन महि आवै ॥

अैसा भर्मु भयो चित ताके। निसि दिन भर्म न चूके वांके ॥
विधि[1] मघावा[2] सौर्वनि जी आए। देवकी पहि आइ ठहिराए ॥
कर्नि लगे उस्तति हरि केरी। कहा कहे हमि गति मिति तेरी ॥
महाराज पूर्ण भगवाना। गहरि गंभीर अरु चतुर सुजाना ॥
गर्भि जून तुमिरा क्या कामा। जन्म लीओ पूर्न प्रभ रामा ॥
भक्ति हेति करि कार्नु कीना। कंसु दुष्ट वहु दुःख सुर दीना ॥
इहि प्रजोग औतारु तैं लीआ। भक्ति हेति करि इहि विधि कीआ ॥
उस्तति प्रभ की एहि विधि भाषी। बहुरो सुगर[3] शंकरि इहि आषी ॥
उस्तति अनकि करी हरि केरी। सांईदास सर्नी प्रभ तेरी ॥१३

विधि अरु सुगर शंभू देवा। प्रवोधनु कीनो है वसु देवा ॥
पारब्रह्म तुमिरे ग्रहि आया। सदा तुमारी होइ सहाया ॥
भक्ति वछल प्रभ असुर सिंहार्नि। सुर सुख देवनि दुष्टनिवार्नि ॥
दुःख दर्दु सभ तुमिरे टारे। सकल वंधना तुमि कटि डारे ॥
मन महि कछु न करो विस्वासा। तुमरी भक्ति पूर्न करे आसा ॥
वहुरो वहुरहो प्रभ आषि सुणायो। दीनानाथ त्रिभवन के राया ॥
क्षीर समुद्रि तुमि प्रतु कह्या। तहा वेद पढिने मै नि वह्या ॥
वसुदेव यादव के ग्रहि आवा। असुर सिहार्ण पलु ना लावा ॥
हमि अपुने हृदे एहि विधि आनी। कहा लषहि कैसे भई वानी ॥
तूं प्रभु दीनानाथ गुसांई। तेरे चरति लषे ना जाई ॥
भक्ति उधार्नि तेरो नामा। हरि प्रान पके इकि कामा ॥
पारब्रह्म है रूपु तिहारा। घटि घटि माहे तोह पसारा ॥
ले तोय परि धर्नि टिकाई। तोहि गति कछु प्रभु लषी न जाई
माटी कैसे जल ठहिरावै।
तुमि किर्पा करि इहि वनि आवैं।
तुमि विनु प्रभ इहि करे नही कोई।
जो तूं करहि सोई प्रभ होई।

---

१. बिधि=ब्रह्मा।
२. मघवा=इन्द्र।
३. सुगुरु=बृहस्पति। कहीं कहीं "सुगुरु" इन्द्र के लिए आया है।

इहि विधि प्रभ की उस्तति कीनी।
उस्तिति प्रभ की मन धरि लीनी।
वहुरो सुगर शंकर नृप वर्नी।
नमिस्कार हरि पग सिरु धर्नी।
करि उस्तति वैकुंठ सिधाए।
ताहि उस्तति को पारु न पाए।
जो कोऊ गर्भि उस्तति सुण लेवै।
सांईदास तिहि वहु सुप देवै।।१४

इति श्री भगवते महापुराणे दस्म स्कंदे श्री सुकदेव परीक्षत संवादे द्वितीयोध्यायः ।। २ ।।

मास भाद्रो प्रगटे वनवारी। थित अष्टमी कुंज विहारी।।
मध्य रैंण प्रभ जोत दिपाई। श्री गुपाल सुंदर सुपदाई।।
रोहणी नक्षत्र जन्म हरि लीना। वसुदेव हर्षि हर्षि मन कीना।।
चतुर भुजा करि पीत पीतांवरु। कमल नैन अति वहुतु है सुंदरु।।
कौस्तक[1] मणि मस्तक परि लीने। मोर पंष सिरि ऊपरि कीने।।
शंक चक्र करि तांके माही। लक्ष्मी वांवे[2] अंग है वाही।।
वसुदेव कह्यो क्या उस्तति भाषा। किहि रस्ना उस्तति हरि आषा।।
अकाल मूर्ति लोक सभ आषहि। पारब्रह्म तुमरा नामु भाषहि।।
मो पहि कही न गति मति जाई। इहि प्रभ पूर्न सर्व समाई।।
वहुरो प्रभ देवकी द्रिग देषै। अति सरूप कछु अति भुज पेषै।।
वचन उचारु कह्यो वलि जावां। मैं शंका प्रभ मनि महि ल्यावा।।
स्रिष्ट सकल मुषि एहि पुकारे। पारिब्रह्म त्रिभवन निरंकारे।।
गर्भ योन देवकी आए। तहा आइ जन्मु जग पाए।।
मैं शंका एही मन आनो। किहि विधि सुत मैं तोहि वषानो।।
षष्ट बाल्क हमिरे नृप मारे। त्रासु होवत अति चित हमारे।।
पारब्रह्म निर्भो निरंकारा। दीनानाथ हरि अपर अपारा।।
देवकी सौ तव वचनु उचारी। सुण हो माता वात हमारी।।

---

१. शब्द कौस्तुभ होना चाहिए।
२. वांवे > वामे।

सुण हो मात तुमि कछु चित आवै । पूर्व जन्म तुमि भक्ति कमावै ।।
वहुरो तुम वसुदेव को कह्या । स्रिष्ट करौ उतपत क्या वह्या ।।
तव तुमि भए भै चक्रि दोई । हमि से उतपति कैसे होई ।।
तव तीर्थ तटि तुमि दोई आए । सिृष्ट तपस्या सौ चित लाए ।।
सीत काल सीतलु जलु लीना । तीन काल स्नानु जु कीना ।।
तप्ति काल ऐसे तुमि कीआ । चतुर्दिशा दावा तुमि दीआ ।।
तुमि सिरि परि रवि कर्ता घामा[1] । तुमि तपस्या करी पूर्ण रामा ।।
तव मै तुमि पहि प्रगटि षलोया । तुमिरे मनि अंतरि मै पोया ।।
तुमि इहि वचन उचारे ताही । तोहि सार्षा इकु वाल्क पाही ।।
वाही समा तुमि वात सम्हारो । अपुने घटि अंतरि वीचारो ।।
वाही वचनु मै चित करि आया । तुमि मेरा वहु भजनु कमाया ।।
तुमि मनि महि कछु ना सुकचावौ । सांईदास निरभौ सुष पावौ ।।१५

कौलापति पूर्न अघनासी । गज अनंद कीजो काटी जिन फांसी
सो वसुदेव सो वचनु सुनावै । सुण हो पित किउ हृदा डुलावै ।।
मोकौ तुमि अवि लोह उठाई । गोकल वेग चलो तुमि धाई ।।
मोको तुमि गोकल पहुंचावो । नंदि महिरि ग्रहि जा ठहिरावो ।।
नंदिर महिर ग्रहि दुहिता होई । पित तुमि बेग ल्यावो सोई ।।
वसुदेव सुकच रह्यो मन माही । मन महि अति विस्वासु कराही ।।
पचास द्वार कैसे ले जावा । गोकल महि किउ करि पहुचावा ।।
ताहि कपाट लगे अधिकाई । दो मरणा के जंद्राला भाई ।।
कै सहस्र रषिवारे तां परि । रहित सदा जाग्रति हमि घरि परि
किति विधि मै वाहिरि ले जावौ । षडि गोकल माहे पहुचावौ ।।
तव माधव दो भुज तन धारी । संत जना की प्राण अधारी ।।
इहि विधि सुकचि गोदि महि लीना । वसुदेव गवनु गोकल कौ कीना ।।
जवि निर्षे षूल्हे सभ द्वारा । सभ रषिवार्नि सुद्धि विसारा ।।
माया मोह वीच सभ सोए । मानो मृति भए प्राण षोए ।।
वसुदेव प्रभ ले बाहिर आए । कालिंद्री तटि आई ठहिराए ।।
रवि दुहिता जलु है अधिकाई । तिहि उस्तति कहु कहा वताई ।।

---

१. घाम=धूप या पसीना ।

वसुदेव तिहि निर्षित विस्माना। ताहि प्रवाहु देपि सुकचाना ॥
सुकचि सुकचि मन वहु विस्मायो। कहा होइ जवि प्रभ इहि भायो ॥
जो फिरि जावौ वालकु मारे। मो कौ सहित वालकु प्रहारे ॥
जो जमुना पवौ तौ डुवि जावौ। कठनि वनी प्रभ कहा करावौ ॥
वहुरो मनि माहे इहि धारा। डूंवो इसि महि होइ निस्तारा[1] ॥
इहि विधि कहि यमुना पगु दीश्रा। हृदे भरोसा हरि का कीश्रा ॥
रवि दुहिता[2] चर्नी प्रभ लागी। सूक्ष्म भई अहंमत्ति त्यागी ॥
वसुदेव तीर चढ्यो भौ त्यागा। गोविंद उस्तित कर्नें लागा ॥
तुमि ही यमुना तीर चढायो। महा अधिक जलु तुमि लंघायो ॥
करि उस्तति गोकल महि आयो। नंदि महिर ग्रहि जाइ निर्पायो ॥
सुन्न गयो सभ ही सुष माही। गोकल महि जाग्रति को नाही ॥
जसुमति सुन्न गयो अधिकाई। कन्या जाई सुर्ति न पाई ॥
वसुदेव कंन्या कौ हिरि लीश्रा। ताहि ले उनि गोदि महि कीश्रा ॥
कृष्नचंदु तिहि आगे डारा। जो सकल सृष्टि को रापनहारा ॥
कंन्या ले देवकी पहि आया। सकल द्वार कपाट चढाया ॥
सकल कपाट दीए जंद्राले। अजहू जाग्रति ना रषिवाले ॥
वेडी ले अपुने पग डारी। कंन्या रुदनु कीयो ततकारी ॥
कंन्या अधिक रुदन जवि कीश्रा। सांईदास सभ ही सुरग लीश्रा ॥ १६

इति श्री भगवते महापुराणे दशम स्कंदे
श्री शुक परीक्षति संवादे तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

जवि कंन्या वहु रुदनु करोयो। सभ रषिवार्नि ले सुण पायो ॥
तात्काल दुष्ट पहि आए। हाथ जोरि करि आष सुणाए ॥
जन्मु लीयो गर्भु वाहिरि आयो। दुष्टु सुनति विधि वहु हर्षायो ॥
किर्मानी ले करि करि धाया। तातकाल देवकी पहि आया ॥
देवकी निर्षति उठि षलोई। तांके वल न वसावै कोई ॥

---

१. यहां वसुदेव के हृदय का द्वंद्व दर्शनीय है। "डूंबो इसि महि होइ निस्तारा" इन शब्दों में दुःखी हृदय के भावों का चरमोत्कर्ष है।

२. रविदुहिता=यमुना।

वचनु कह्यो सुरण हो मेरे भाई। तूं नृपु तुमि कौ वलु अधिकाई ॥
षष्ट वालक तैं मेरे मारे। मन विरोध करि तैं हारे॥
अवि इसि कंन्या को त्यागो। मोहि कहे नृप जी तुम लागो॥
इसि के हाथ कहा कछु आवै। इसि कंन्या वलु कहा वसावै॥
मोकौ जग्त न लाई कलंका। दूरि करो मनि ते इहि शंका॥
इहि दुहिता वालकु कोऊ नाही। जग्त तोहि वहु निंद कराही॥
देवकी विनती वहु विधि कीनी। दुष्ट कंस कंन्या पसि लीनी॥
तांकौ तजि वाहिरि ले आया। पाहन पर्‌यो जहा अधिकाया॥
हृदे कीयो पाहन सौ मारौ। कंन्या कौ इसि संग पछारौ॥
कंन्या तिहि करि ते छुटिकायो। गगनि चढनि कौ तिन चितु लायो
रूप चंडिका तव ही दिषारा। अष्ट भुजी तिन मूल सवारा॥
औरु सहस्र चक्र करि लीने। गगनि मंडल कौ तिन पगु दीने॥
देवौ सकल कीयो जैकारा। जै जै देवा रूप तिहारा॥
चढी गगनि तव ऐसे भाष्यो। दुष्ट कंस तै क्या चित राष्यो॥
प्रगटि भयो जो तोहि प्रहारे। कंस दुष्ट मोकौ तूं मारे॥
सुर सभ त्याग स्वर्गि को आए। कुस्म माल देवी गल पाए॥
ताहि सहित ले स्वर्ग सिधाए।
कंस भै चक्रित मनि विस्माए।
विस्म भयो मन इहि विधि ठानी।
सांईदास घटि महि एहि आनी॥१७॥

दुष्टि वीचारु कीओ मनि माही।
मै तो घातु कीयो अधिकाही।
वसुदेव देवकी को वंदी कीना।
मै पापी इन वहु दुःख दीना।
षष्ट बालक इनि के मै मारे।
घाति कीए मै आपि विडारे।
अवि देवी मोहि एहि सुरणायो।
ध्रिगु मोहि एहि विधि कर्मु कमायो।

वसुदेव देवकी को तजि दीग्रा।
तिसे समे मुक्ते वहि कीग्रा।
मम सरि उौरु पातकु नही होई।
इहि वसुधा परि दूजा कोई।
ग्रपने जीय कार्ण इहि कीना।
षष्ट सुत वहिण के हनि लीना।
वहुरो देवकी सो य्यु कह्यो।
मुखो पुकार्यो तिह कर गह्यो।
एही ग्रायु गन्तक ले ग्राए।
किउ ठहिरावन जत्न कराए।
ग्रवि तुमि जाग्रो हो ग्रहि माही।
होवण होइ सो कवन मिटाही।
वसुदेव देवकी कौ ले ग्राए।
श्री गोपाल हृदे महि ठहिराए।
दुष्ट ग्रसुर सभ लीए वुलाई।
तांको कहित सुनो मेरे भाई।
ग्रवि क्या कीजे इसि उपिचारा।
प्रगटि भयो मोहि मारन हारा।
सकल षलो नृप सौ इउं कह्यो।
कित कार्न भै चक्रित होइ रह्यो।
दसि दिन का जहा वालकु पावै।
बेग जाइ तिस को हनि ग्रावै।
जो सभि बालक कों हमि मारहि।
तांकौ कौनु इनि माहि प्रहारहि।
एहि वाति हमि ते सुरण लीजैं।
कछु विसवासु न मनि महि कीजै।
नारायरण इहि वही कहावै। मछ रूप जो ग्राप बनावै॥
कछ रूप ताहूं वपु धारा। वैराह रूप होयो ततकारा॥
नृसिंह रूप ताहूं वपु पायो। वावनि को तिन भेषु वनायो॥
परशुराम वो ही जौ भयो। सहस्रार्जन कौ क्रौ जु हतयो॥

श्री रामचंद्र सोई होइ आयो। नेम धर्म्म सौ वहु चितु लायो।।
प्रथम तोह आज्ञा इहि करही। नेम धर्मु षंडनि चितु धरही।।
होम यज्ञ किसे कर्नि न देवहु। जे कोई करे तिसे हति लेवहु।।
कहु वर हो वलु कहा कहिज्जै। कहु भिक्षकु तिस भिक्षा दिज्जै।।
वहु जाचन ग्रहि ग्रहि महि जाई। तां कहु वलु कहु कहा समाई।।
जो मघवा हमि हाथु अडावै। जो वहु करे सोई छिन पावै।।
प्रथमे सुरग कों प्रहारहि। पाछे से वालक कौ मारहि।।
महादेउ कछु वाति न कहे। वहु अतीत निरभौ पद गहे।।
जो कहू भांति वाति चलावहि। वेग मारि वहि जीउ गवावहि।।
अउरु कोई हमि को ना सूझै। रण महि षडा होइ हमि झूझै।।
इहि मति दुष्टौ सकल ठहिराया। सुण नृप कंसु अधिक हर्षाया।।
साधो श्रवण धार सुण लीजै। सांईदास आलसु ना कीजै।।१८

इति श्री भागवते दस्म स्कंदे महा पुराणे
श्री शुकदेव परीक्षित संवादे चतुर्थोध्याय।। ४ ।।

नंदि महिर ग्रहि मंगल गाए। निर्ष्यो प्रभु वहु आनंद पाए।।
नंदि महिर वालकु करि जाना। अपुना सुतु साचि करि माना।।
पंडति जोतकी अधिक तिन आने। एकि भांति मुख वेद वषाने।।
लग्न महूर्त आछे देषे। कमल नैन सुंदर प्रभु पेषे।।
सहस्र वीस सुरभि नंदि बुलाई। निर्मल ब्राह्मण कौ दीनी साई।।
जैसे वेद मित होइ मेरे भाई। नंदि महिर कीनी विधि साई।।
सुरभीअनि श्रिग कंचनु सभु धारे। पग रूपे के ताहि सवारे।।
पृष्टि ताहि तांब्रन सौ जरी। नंदि महिर ने इहि विधि करी।।
तिल तांके संग वहु कछु दीने। नंदि दान ऐसे तव कीने।।
नंदि महिरु चौंकी परि वह्या। अति जडाउ कीनो सुष लह्या।।
कंचन चौंकी मणी जडाई। ताहि उस्तति कहु कहा वताई।।
सभ जोषता गोपनि मिल आई। अति सिंगारु सुंदर अधिकाई।।
कनक मोती ऊपरि वहु पहराए। अति अनंद होइ मंगल गाए।।
भाजन केसर सौ भरि ल्याई। नंदि महिर ऊपरि छिटकाई।।
जो कछु उनि ताई हे सरिआ। नंदि आगे तिन ने षडि धरिआ।।

ताल मृदंग वजावनि हारे। भए इकत्रि नंदि के द्वारे॥
अति अनंद मंगल वहु गावहि। सुप्रसन्न मृदंग वजावहि॥
नंदि महिर तांकेहु वहु दीना। सुप्रसन्न तांकहु करि लीना॥
वंदी जन ने मंगल गाए। नंदि विदआ पाइ करि ग्रहि आए
असे नंदि सभु विदिआ कीने। वंदी जन कौ वहु कछु दीने॥
नंदि महिर ने वहु सुषु पायो। सांईदास मन महि हिर्षायो॥१९

नंदि गोप सभ लीए वुलाई। तिन सों कह्यो सुनों मेरे भाई॥
हमि परि प्रभु ने किर्पा कीआ। वालकु हमिरे ताई दीआ॥
नृप को भी कछु हमि पहि आवै। आजु काल वहि हमहि वुलावै॥
चलहो हमि उसि पाहे जावहि। जो देवनि हो इसो देकरि आवहि
एही मत्तु सभि हूं ठहिराया। नंदि महिर जो ताहि सुनाया॥
गोप सकल नंदि ने संग लीए। मधुपुरी कों तिन ने पग दीए॥
गोप सहित पुर माहे आए। नृप पाहे सभ जा ठहिराए॥
नृप ताई प्रनामु सुनायो। जो आन्यो आगे ठहिरायो॥
करि प्रनामु नृप कौं तजि आए। एकु ग्रहि ले पुरि महि ठहिराए॥
वसुदेव नंदि महिर पहि आया। अंग अंग मिल आनंदु पाया॥
तांकी उस्तति कहा वषानो। में तो उस्तिति कहा पछानो॥
वहुरो वसुदेव नंदि महिर सुनाया। हिर्षमान होइ करि उचिराया॥
है कल्याण गोकलि के माही। त्रिण तौ अधिक भयौ गौवनि ताही
वलिभद्र कौ है कल्याना। इहि विधि वसुदेव वचनु वषाना
हमि तो वंदि रहे अधिकाई। पूछ नि साकहि मेरे भाई॥
कंसु दुष्टु पातकि वहू भारी। तांकहु नासु करे गिरधारी॥
मतु उसि के मनि औरहि आवै। इहि प्रयोग मन महि सकुचावहि॥
वसुदेव प्रति नंदि सौ राषहि। ऐसे वसुदेव नंदि सौ भाषहि॥
राम को पितु तूं है मेरे भाई। भोजनु देइ कीओ अधिकाई॥
अंवरि पहिरनि को तू देवहि। तूं प्रतिपालकि ताहि करेवहि॥
राम कौं मैं द्रिग ना निर्षायो। ना उनि मोकों देष नि पायो॥
धन्न धन्न नंदि मति तिहारी। कहा कहो मै वाति तिहारी॥
इहि विधि वसुदेव नंदि सुनायो। सांईदास मिलि तिह्नि सुषु पायो॥२०

नंदि महिरु वसुदेव सुणावै। करि करि वचन तिसे परचावै ।।
हे वसुदेव सुनो मेरी वाता। मतु इहि मनि आनो मेरे भ्राता ।।
षष्ट वालक मेरे नृप मारे। करि विरोधु नृपु कंस प्रहारे ।।
जो विधि लिष्यो कहो क्युं टरे। ताहि लेषु सीस को ना धरे ।।
वहि वालक एही आयु ल्याए। तुम को अपने सहिम दिषाए ।।
मतु तू कछु हृदे अंतरि आने। गुर प्रसाद मेरो कह्यो माने ।।
वहुरो वसुदेव वचनु सुनायो। सुण हो नंदि प्रीतम सुखदायो ।।
तैंने कछु सुणउो मेरे भाई। मै मै तुम कौ कहौं सुणाई ।।
नंदि महिर वसुदेव सौ भाषा।
मै कछु श्रवण सुनो नही आषा।
जो कछु होइ सो मोहि सुणावौ।
वेग विलम तुम मूल नि लावौ।
कंसु दुष्टि इहि मतु ठहिरायो।
वालकु मारण कौ चितु लायो।
दुष्टि खलो कौ आज्ञा दीनी।
पातक कंसि इहि विधि है कीनी।
दसि दिन को जहां वालकु पावो।
तिसि ताई तुमि मारि चुकावौ।
तातकालि तुमि गोकलि जावो।
वालक की जाइ सोझी पावो।
इहि अवस्था प्रभ किर्पा कीनी।
हमिहि आनंदु पायो सुण लीनी।
तातकालि अपुने ग्रहि जावो।
सांईदास जाइ करि सुष पावो ।।२१

इति श्री भगवते महा पुराणे दशम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंचमोध्यायः ।। ५ ।।

पूतना राकसी कंस पठाई। ताहि ब्रितांतु कहौ मेरे भाई ।।
गोकलि जाइ वालकु तुम देषौ। ताहि सिघारो द्रिष्टी पेषौ ।।
वकी उलटि करि इहि वपु कीनो। द्वादश वर्षि कन्या को लीनो ।।

अति पीतांवरि अंग उढाए। भूषन सभ अंग कौ पहिराए।।
ले करि कुस्म केस महि डारे। करि सिंगारु गोकल पग धारे।।
जो देषे भै चक्रित होइ रहे। वहुरो सुर्ति देहि ना लहे।।
इहि विधि होई है मेरे भाई। सुण हो नंदि महिर सुषदाई।।
वसुदेव नंद सौ वहु समिझायो। नाना भांति करि ताहि वतायो।।
वकी गई नंदि महिर द्वारे। अति सुंदरि सुंदरि वपु धारे।।
कहियो जाइ मै कंस पठाई। नंदि के ग्रहि वहु भयो सवाई।।
नंदि महिर प्रभ वालकु दीना। नृप वहु हर्षि मानु मनि लीना।।
इहि प्रयोग ग्रहि मोहि पठायो। देषौ मैं वालकु जसमति मायो।।
तुमि वालकु हमि कहु दिषलावो। कहा सवायो ठौर वतायो।।
जसुमति तिहि को ना दिषलावै। वकी ढीठ आपे चली जावै।।
तातकाल प्रभ पाहे आई। जहा सोए प्रभु यादव राई।।
लीयो उठाइ वकी गोदि माही। कुचु विषु लाइ दीयो मुष माही।।
पारब्रह्म निर्भो निरंकारा। सकल विस्व ताकौ विस्तारा।।
छिन उपिजाए छिनि हि विडारे। तांकहु कहो कवनु कोई मारे।।
संत हेत करि प्रभु वपु धारे। सांईदास सदा रपिवारे।।२२

जवि वकी कुचु दीयो मुष माही। प्रभ अपुनी लील्हा कीनी ताही।।
अैसी रचना तहा रचाई। रगि कुचि षिंची मुक्ति पठाई।।
देहु ताहि दीघ होइ पर्‌यो।
कृपानिधान इहि रचना कर्‌यो।
सभ जोषता ग्रहि मिलि करि आई।
कहति जसौदा सौ समिझाई।
वालकु लेहि तहा तूं देषहि।
भई भै चक्रित क्या कछु पेषहि।
वडो कोई ग्रहु इहि परि आयो।
करुणानिधि प्रभ आप मिटायो।
एहि विधि कहि विप सकल वुलाए।
महा पंडिति जो बेदि सुनाए।

सुरहौ वहु दानु कीई ततकारे।
पंडिति कर्नि बेद वीचारे।
रोहणी इहि विधि सुण करि आई।
रजिसुर पग प्रभ मस्तक लाई।
पूतना राकसी देहु पसारा।
अति दीर्घ वपु जोजन धारा।
नंदि महिरु ब्रषिभानु जु आए।
गोप ताहि संग है अधिकाए।
वकी राकसी कौ निरषावो।
मग माहे इहि वाति चलायो।
इहि कोई असुरु कहा ईहा आयो।
गोकलि महि किति सौ प्रगटायो।
एहि विधि कहि अपुने ग्रहि आए।
गोप सकिल ग्रहि ग्रहि आप धाए।
जसुमति नंदि पहि वाति वीचारी।
नंदि महिर सभ ही मनि धारी।
दस सहस्र सुरि दान कराई। नंदि महिर जबि विधि सुण पाई॥
बहुरो मुष से वचनु उचार्यो। तबि रों काटि वकी कौ जार्यो॥
पूतना तबिरो काटि जराई। अति सुगंधि ताहुं सो आई॥
जवि सुगंध गोपो ने पाई। नर नारी सभि सुधि विसिराई॥
मुषो उचारि बचनु वहु कहे। अति भै चक्रित मनि महि होइ रहे
कवहूं सुगंधि असी ना आई। जो अबि इसि दावा प्रगटाई॥
वंदी जन वहु देई असीसा। बालकु जीवे लाख वरीसा॥
कोई कहे मेरे पूर्ण गोविंद। इसि कल्याण करे पर्मानंद॥
सकल अशीर्वादु प्रभ देवै। सांईदास पूर्ण गुर सेवै॥२३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षष्टमोध्याय॥ ६॥

पातकि कंसि तव् ही सुण पाई। वकी मार वैकुंठि सिधाई॥
त्रिणावर्तु तवि लीयो वुलाई। ताहि कह्यो पातकि समिझाई॥

तुम गोकलि माही पगि धारो। नंदि के तात ताई जाइ मारो॥
तुमि मोहि वीर काम मोहि करहो।
पलु छिनु रंचिक विलमु न करहो।
त्रिणावर्तु इहि सुण करि धाया।
वेग माहि गोकलि महि आया।
जसुमति काजु र्कति ग्रहि माही।
कान्हिरि छाड्यो र्धनि पराई।
त्रिणावर्ति विधि एहि निहारी।
मनि महि ताहि कीओ वीचारी।
प्रथिमे गोकलि पौणु भुलायो।
महा अधिक कछु कह्यो न जायो।
प्रवल वहुतु भई अंधारा। कोई न सकै नैन पसारा॥
महादुष्टु जीउ देवनि आया। पवन सहिति श्री कृष्ण उठावा॥
कांन्हरि कौ ले चड्यो अकासा। दुष्टमति ताहू ताहू प्रकासा॥
जसुमति जोहति कान्हरि ताई। द्रिष्ट नि आवै रुदनु कराई॥
जोहति र्फिति कहूं ना पावै। मुष ते वचनु उचार सुनावै॥
मै वालकु को ईहा वहाया। जोहि थकी कहूं ठौर न पाया॥
रुदनु र्कति सिरु र्धनि पछारे। करि सौ अपुने करि पटिकारे॥
गोप जोषता सभि सुण पाई। रुदनु र्कति है जसुमति माई॥
मूंदे नैन कछु द्रिष्ट न आवै। सकल जोषता मन महि विसमावै॥
करि सौ करि सभि र्फिति पछारहि। हाहा कर्के वचनु उचारहि॥
पारब्रह्म सभि विर्था जाने। हमि तुमि पाहे कहा वषाने॥
नंदि महिर परि किर्पा धारी। विधि अवस्त हे वनिवारी॥
बालकु दीआ किर्पा कीनी। इहि विधि किर्पा कर के लीनी॥
अपुनी पेज राषो प्रभ पूर्न। दूरि कर्नि संतनि के विसूर्न॥
गोप जोषता सभि इहो पुकारा। कांन्हरि तवि इहि लील्हा धारा॥
सकल व्रितांतु कहो मेरे भाई। सांईदास प्रभु सदा सहाई॥२४

त्रिणावर्ति को उरि से लीना। कंठ पकरि अति निहवलु कीना॥
आण दुष्टि षलु र्धनि गिरायो। पाहिनि पर देहु ताहि हतायो॥

थटिक रह्यो मार्त ततकारे। जबि ही कान्हरि खल धरि मारे।।
गोप भार्जा नैन पसार। श्री कौलापति तिन हि निहारे।।
पिंजरि खल के परि ठहिरायो। षेलति है वहु आनंदु पावो।।
वेग आइ तिहि लीओ उठाई। अंग आपुने लीओ लाई।।
सभि जोषता मिलि वचनु उचारे। दुष्टि असुर गौकल पगि धारे।।
कांन्हरि को ले गग्नि चर्‌हाया। ऐसै प्रभु वहु चरति दिषायो।।
जो तेजि सेती ना रहो वलि वाना। रहे भै चक्रित अति हैरांना।।
गाडे सौ तिहि वलु न वसावै। जो बलु कर्के ताहि हलावै।।
भए भै चक्रित सभि नरि नारी। देषि चरित्र श्री गिरधारी।।
जसुमति एक दिनस सुष पायो। चढि प्रजंकि परि शैनु करायो।।
स्याम सुंदरि कौ आगे लीआ। अस्थनु प्रभु के मुष महि दीआ।।
श्री कृष्ण चंद ले पीवरण लागा। चहनि गिडा पीतंरि अति वागा।।
कवहूं ले मुषि बाहरि डारे। कवहूं हिर्षति वदनु उघारे।।
जसुमति प्रभु का वदनु निहारा। जासु समे प्रभु आपि उघारा।।
सकल विश्व तांकौ द्रिष्ट आई। देष रूपु जसुमति विस्माई।।
द्रिग लीए मूंद भै चक्रित हो रही।
तांकी विधि कछु जाइ नि कही।
इहि वालकु अति रूपु दिषावै।
नारायण प्रतक्षि द्रिष्ट आवै।
हमिरे परि किर्पा इनि धारी।
प्रांन पुर्षि श्री कुंज विहारी।
जसुमति देषि विस्मक चितु धारा।
सांईदास प्रभ रूपु अपारा।।२५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तमोध्यायः।। ७।।

नंदि महिर तब बचनु उचारा।
जिहि दिन मै मथुरा पगु धारा।
वसुदेव तब ही मोहि सुणायो।
प्रीति भाउ करि मोहि वतायो।

गोकलि महि अवतिरि ग्रहु होवहि ।
तूं अपुने ग्रहि जाग्रति सोवहि ।
वसुदेव बचनु क्युं अन्यथा होई । जो सब्द कह्यो होइ सोई ।।
चतुर मास को भयो मुरारी । अति सुंदरि बहु रूप उजारी ।।
तांकौ कोइ न सके उठाई । अति सरूप प्रगटि जदुराई ।।
अंबरि नौतनि ताहि उढाए । प्रभु कौ चक्रित अधिक सुहाए ।।
वसुदेव गर्गि कौ कह्यो सुणाई । सुणु स्वामी जन सदा सहाई ।।
गोकलि महि अपुने पगि धारो । मोहि कहा मनि माहि वीचारो ।।
ऐसे प्रभ जौ कोई न जाने । दुष्टि लोक तुझै नाहि पछाने ।।
ऊहा दोइ बालक है प्रभ मोरे । हे गुर जी वहु तुमरे चेरे ।।
गर्गि सुनति गोकलि को धाया । नंदि महिर के ग्रहि महि आया ।।
नंदि महिर दोऊ करि जोरे । क्रिपा करी आवो प्रभु मोरे ।।
चरन पषार चर्नाम्रतु लीना । आदर भाउ नंदि वहु कीना ।।
ह्रदे भउ बहुताहि करायो । पूर्न प्रभु करि ताहि वहायो ।।
गोबिंद हमि परि किर्पा कीने । गर्गि चर्नि हमिरे ग्रहि दीने ।।
नंदि महिर अैसे प्रति बोले । बोजन ले मांति कौ भोले ।।
बेनती कीनी गर्गि सुणाई । सुण हो प्रभ मै तो सर्नाई ।।
इहि दुइ बालक को धरु नामा ।
ताहि प्रसाद पूर्ण पूर्ण होहि कामा ।

गर्गि दीयो प्रति नंदि के ताई ।
सुन हो नंदि महिर मनु लाई ।

जो मै इनि बालक धरो नामा । सुणे कंसु होवे बुरे कामा ।।
देवकी के बालक करि जाने । अति क्रोधु तव मनि महि आने ।।
देवकी हमि ते लए दुराए । नंदि महिर ग्रहि जाइ छपाए ।।
देवकी वसुदेव को दुख देवै । अति उपाधि नृपु कंसु करेवै ।।
नंदि महिर वहुरो विधि ठानी । नाम धरो तुम ब्रह्म ज्ञांनी ।।
हमि इनि बालक कौ ले जावहि । वनि माहे इनि षडि जु छपावहि
गर्गि फेरि वहु बिप बुलाए । तांकौ भोजन अधिक षलाए ।।
नारायण प्रभु नामु रषायो । उग्रसैन मुष ते उचिरायो ।।
स्वेत वर्नि प्रभु वदनु दिषावे । कृष्ण नामु इहिं विधि उचिरावे ।।

उरु नामु गोविंद कहिज्जै। इहि असीर वचनु चिरु जिज्जै ॥
वहुरो वलिभद्र को कह्या। इहि वाल्कु देवकी गर्भि अह्या ॥
ताहि त्याग रोहणी गर्भि आया। आइ जन्मु रोहणी गर्भि पाया ॥
सेस नाग को इहि अवतारा। सुण हो नंदि लेहु मनिधारा ॥
इसि को नामु मै भलो धरावौ। बलभद्र मनि करि उचिरावौ ॥
उौरु नामु इसि राम वषानो। बलिदेव नामु वहु पर्वानो ॥
गर्गि नामु वाल्का को राषा। सांईदास विधि सकली आषा ॥२६

गर्गि नामु प्रभि राष सिधायो। नंदि महिर वहु सेव करायो ॥
सुरि वहु दीनी गर्गि के ताई। उौरु विपो को दीनी अधिकाई ॥
गर्गि नामु रखि करि धाया। मधिपुरी मार्गि चितु लाया ॥
एक वर्षि को कान्हरि होए। नंदि महिर सभि संसे षोए ॥
राम मास दोइ है अधिकाई। कान्हरि ते सुण हो मेरे भाई ॥
दोऊ वीर षेलति नंदि द्वारे।
सोभति रवि ससि जोत पसारे।
चवक माहि करि पगि सो चालहि।
अति अनंदि सोभति सीस वालहि।
वहुरो पगि सो फिर्ते फिरही।
अति कलोल मनि अंतरि करही।
दस्न कढे तिन ने मुषि माही।
पांछ वर्षि पूर्न भए वाही।
वछरे सभि गोकलि के ले जावहि।
वनि माहे षडि ताहि चरावहि।
गोप तात वहुतिहि संग जाही।
फिर्ति फिर्ति सदा वनि माही।
गोपनि के ग्रहि सौ दोरा राही।
माषनि कौ षडिक पहि षलाही।
सभि जोषता गोपनि मिलि आई।
जसुमति को वहु कहिति सुनाई।

इहि दुइ वालकि हमहि दुष ताने।
तुमि पहि जसुमति कहा वषाने।
माषनु हमिरा पडति दुराई।
षड मर्कटि कौ वेग षलाई।
जसुमति ताहि कहा नही मानहि।
वात सकल मिथ्या करि जाने।
गोपि जोषता फिरि घरि आई।
सांईदास प्रभ ताहि पिझाई ॥२७

एक दिन गोप तात मिलि आए।
जसुमति कौ तिहि भाष सुनाए।
तोह पूत ने माटी षाई।
हमि वरजेहि हमि करे लराई।
जसुमति कान्हरि पूछनु कीना।
कर से पकरि अंग महि लीना।
साचु कहो तुमि माटी पाई।
हमि पहि तोहि सषा कह्यो आई।
प्रभु गोप तात कौ नैन निहारे।
सभि भागे जवि निर्ष मुरारे।
मुकरि पर्यो माटी नही षाई।
इहि वालकि मिथया कह्यो आई।
जो तुम हृदे भरोसा ना आवै।
मुषु देषो मोहि क्युं विस्मावै।
मुषारविंद जसु मति जबि देषहि।
धर्नि गगनि सभु मुष महि पेषहि।
सप्त समुद्रि है मुष ही माही।
सप्त दीप फुनि ताहि मझाही।
नौखंड प्रथवी ताहि समाई। निर्षि वदनु जसुमति विस्माई ॥
तव मुष से इहि वचनु उचारा। मै इसि कौ सुत जानि कै मारा ॥
मनि निश्चै करि मै सुतु जाना। भूल परी मनु कूडि लुभाना ॥

इहि तो पारब्रह्म निरंकारा। सकल स्रिष्ट को साजन हारा ।।
इहि सुत कहो कवन को होई। नरंकार निरवैरु है सोई ।।
इसि की गति कौ मैं कहा जानो। इसि की महिमा कहा पछाने ।।
त्रैलोक सभ इसु विस्थारा। त्रिभवन राया जग्ति उजारा ।।
जवि जसुमति इह ज्ञान वीचारा। कांन्हरि तव ही माया धारी ।।
ग्यान सुरति तांकी भुलि डारी। विक्षा सुर्ति भई ततकारी ।।
पूत पूत वहि कर्ने लागी।
इहि कार्णु कान्हरि ने कीआ। संति हेति करि जगि वपु लीआ ।।
साधो जपहो नामु निधाना। सांईदास पूर्न भगवाना ।।२८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्मस्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टमोध्याय: ।। ८ ।।

स्याम सुंदर रामु संग लीए। वनि माहे जावनि पगि दीए ।।
वछे ले बनि को वहु धाए। माषनु गोपनि ग्रहि षडहि दुराए ।।
माषनु षडि मरिकटि कौ देवहि। मर्कटि माषन सहित अघेवहि ।।
गोप जोषता अति उकिलाई। वेग माहि जसु मति पहि आई ।।
नंदि जोषतासों तित ने आषा। हमि माषनि चोरे कान्हर राषा ।।
माषनु क्षीर सहिति ले जावै। षडि करि मर्कटि हाथ षलावै ।।
त्रैलोक नाथ तवि आए। मय्या षुध्या अति संताए ।।
हमि को अस्थनु देहि ले पीवहि। तांते आनंद मनि महि थीवहि ।।
नंदि जोषता गोद महि लीना। अस्थनु ले तांके मुषि दीना ।।
दधि को वेग विलोवनि लागी। और वाति सकली तवि त्यागी ।।
माषनु ले भाजन महि डारे। श्री कृष्णचंदु तिहि ओरि निहारे ।।
क्षीर कढ़िहति चूल्हनि परि भाई।
अग्नि अधिक भई उभर्यो जाई।
श्री कृष्णचंदि को धर्नि वहाई।
नंदि जोषता उठि करि धाई।
निकटि क्षीर के जाइ षलोई।
क्षीर कौ सीति कर्ति है सोई।

श्री कौलापति ने क्या कीश्रा।
दधि मट्ठ गेरि धर्नि परि दीश्रा।
माषनु भाजन सौ ले भागा।
ग्रहि कौ त्याग वाहिरि चितु लागा।
जसुमति जबि ग्रहि श्रंतर श्राई।
निर्षं ताहि श्रति मनि विस्माई।
किन फोर्यो है मट्ठ दधि केरा।
किन माषनु षड्यो है मेरा।
जसुमति लकिरी कर महि लीनी।
श्रति भारी लकरी करि कीनी।
पाछे स्याम सुंदरि के दौरी। दौर दौरि के होई हौरी।।
श्री कृष्णचंदि को पकिर न साका। ठांढी भई मुष ते कछु श्राषा।।
दीनानाथ श्रपार गुसांई। कौलापति सुंदरि श्रधिकाई।।
तांकौ कौणु पकरि कोई लेवै। जांकौ सकल जग्तु मुनि सेवै।।
नंदि जोषता तहू ठांढी भई। थकित रही कछु जाइ न कही।।
श्री कौलापति मनि ठहिरायो। सांईदास जनिनी दु:ख पायो।।२९

ठांढा भया जसुमति गहि लीश्रा। मुष श्रपुने ते इहि प्रतु दीश्रा।।
काहे मट्ठ दधि को फोरि डारा। दधि माषनु तै कहा विडारा।।
गोप जोषता सकल वुलाई।
तांसौ कह्यो सुणो मेरी वाई।
नितापर्ति तुमि मोहि सच्चु श्राषो।
जो तुमि कहो सोई सच्चु भाषो।
दामिनि श्रानो इसि वधि डारो।
पृथिमे वाधि करि तवि फिरि मारो।
दधि माषनु मोहि धर्नि गिरायो।
एहि कर्मु पुत्रि कांन्ह कमायो।
जवि जसुमति इहि वात वषानी।
सकल जोषता मनि महि ठहिरानी।
तां कहु कान्हरि वहु दुख दीश्रा।
तिहि ग्रहि माषनु दधि हरि लीश्रा।

इकि इकि दौरि गई ग्रहि माही।
अति अनंदु उपज्यो मनि माही।
दामिनि हाथ कीई सभ आई।
नंदि जोषता मनि महि मुसकाई।
जसुमति प्रभु बंधिन चितु दीआ।
गांठि न परे जत्नु वहु कीआ।
अजहू दामिनि उह घटि जावहि।
जत्न करे तौ गांठि न पावहि।
कमल नैन तवि इहि हृदे धार्यो।
जसुमति थक्ति भई वलु हार्यो।
मोकों कहा बांधि हो माई।
इहि विधि गोविंदि मनि ठहिराई।
मुष अपुने स्युं कह्यो सुणाई।
मोको बांधो मेरी माई।
जवि प्रभि एहि विधि मुषो वषानी।
जसुमति तवि ते हृदे पछानी।
प्रभ को ऊषलि सहिति बंधायो।
पाछे -सो इहि वचनु सुनायो।
मोह भांजनु तै काहि विडार्यो।
दधि माषनु वसुधा परि डार्यो।
श्री कृष्णचंद तव कह्यो सुणाई।
मै नि विडार्यो मेरी माई।
जसुमति बांधि गई ग्रहि माहे।
सांईदास प्रभु चरित्र कहाहे॥३०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे नवमोध्याय:॥ ९॥

श्री कौलापति के मनि आयो। करो उधारु प्रगटि दिषलायो॥
जुमला अर्ज्जन के तनि केरा। ताहि श्राप को करो नवेरा॥
पाछे नंदि महिर ग्रहि वाही। दीयो स्रापु नार्दि ऋषि ताही॥

नृप परीक्षति शुकदेव सुनायो। मोहि व्रतांतु इहि सकल वतायो ॥
कौन स्राप करि जंगम होए। जडिताई महि क्युं वहि सोए ॥
नार्दि स्रापु ताहि क्युं दीना। जडि देहा काहे कौ कीना ॥
राजे प्रत सुषदेव सुणायो। भलो प्रश्नु नृप ग्राण चलायो ॥
एक दिनि ऋषि सुत मद को पीग्रा।
जोषता अपुनी तिहि संग लीग्रा।
गंगा माहि स्नानु कराही।
नग्नि होइ इहि कर्मु कराही।
नार्दि ऋषि तव ही चलि ग्राए।
अति किन्नरि हरि जसु गाए।
सकल जोषता तजि जलु ग्राई।
गंगा तटि परि वहु ठहिराई।
सुकचि रही कछु कह्यो न जाई।
तिहि निर्लज्ज मनि काइ न ग्राई।
इहि प्रजोग नारद स्रापु दीग्रा।
अति क्रोधु मनि ग्रंतरि कीग्रा।
तुमि दोनों गोकल के माही।
जंगमि देहि धरो तुमि जाही।
जिहि समे कृष्ण जी लए अविताग।
तिस समे तुमरा करे उधारा।
इहि प्रजोग जंगम वपु धर्यो।
नार्दि वचनु तिहि मनि महि कर्यो।
निर्पि परीक्षति को भ्रमु हिरायो।
सांईदास जसु हरि का गायो ॥३१

पारब्रह्म चिति महि ठहिरायो। जुमला अर्जन जड देह पायो ॥
वांको अबि कृतार्थु करहो। अपुने भक्ति वचन मनि धरहो ॥
तातकाल विरछो परि आया। तिन दोई वीच ग्राइ ठहिराया ॥
ऊषलु वांके वीच अडायो। मूल से दोनो व्रिक्ष गिरायो ॥
नारद ऋषि एही वचु कीग्रा। जिह समे स्रापु इनि ताई दीग्रा ॥

ऊषलु जिहि समे तुमि को लागै । इहि स्रापु तुमिरा तवि भागै ।।
जवि प्रभि दोऊ व्रिक्ष गिराए। दो वालकि सुंदरि निकसि आए ।।
उस्तति गोविंद जी की भाषहि । देइ प्रदक्षिणा जय जय आषहि ।।
नृप परीक्षति ऋष वचनु सुनायो । सुक जी एक संचरु मनि आयो ।।
नंदि महिर कौनु तपु करायो ।
जिहि ग्रहि श्री कृष्णचंद जी आयो ।
करि क्रीडा नंदि कौ सुषु दीना । महा सुषी नंदि कौ करि लीना ।
एहि वीचारु प्रभ मोहि बतावो । करि करुणा इहि संचरु गवावो ।।
सुकदेव कह्यो भले उचिरायो। बहु नीको तै प्रष्णु चलायो ।।
सुण हो नृप धरहो तुमि काना । तुमि पहि सकली वाति वषाना ।।
नंदि विपदहि अष्ट ऋषि पाही । महाअनंदु ताकौ दुःख नाही ।।
वरहौ तातु नंदि कौ भाई । ब्रह्मा ताहि कह्यो समिझाई ।।
जावो वरहो तुमि वहु माही । वहु लोक जाइ अधिक सुषु पाही ।।
वरहो कह्यो विधि कौ समिझाई । सुण हो ब्रह्म पूर्ण मेरे भाई ।।
मै वहु लोक माहे ना जावौ । कैसे वहु माहे ठहिरावौ ।।
वहुरि कह्यो विधि तुमि वहु जावो । मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावो ।।
वरहो कह्यो वहुते विधि ताई । मोहि विनती सुण हो मेरे भाई ।।
जौ तुमि एहि करो तवि जावौ । वहु लोक महि जाइ ठहिरावौ ।।
ब्रह्म कह्यो जो तुमि कोई भाई । सुख हो वरहो करो मैं साई ।।
तवि ही वरहो कह्यो पुकारे । मै वलि जावो प्राण अधारे ।।
क्रिष्ण सदा मोहि द्रिष्ट दिषाई । मै तवि वहु विच जावौ भाई ।।
विधि कह्यो असे ही होई । जो तै वरहो कह्यो हो सोई ।।
तव वरहो जन्मु गोकलि विच पायो। नंदि महिरु ईहा नामु रषायो ।।
ब्रह्म वच पूर्ण कर्नि ताई । जन्म लीयो आइ त्रिभुवन सांई ।।
विधि वचु करि नंदि कौ सुषु दीना । इहि कारण कौलापति कीना ।।
सुत करो उस्तति गिरिधाई । ताहि उधारु कीयो जदुराई ।।
जो इहि जनमु हिति करि सुण लेवै । सांईदास प्रभ वहु सुषु देवै ।।३२

इतिश्री भगवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षत संवादे दशमोध्यायः ॥ १० ॥

प्रभ जदि दोऊ ब्रिक्ष गिराए। तवि प्रटिकारु उठ्यो अधिकाए॥
भयो अचर्जु गोकलि के माही। नरि जोषिता मिलि आई ताही॥
गोपनि सुत प्रभ पाहि जु खरे। सकल वीर तिय हूं ने करे॥
नंदि महिर सुत इहि कर्मु कीना। दोई ब्रिक्ष गिराइ करि दीना॥
सकले लोक रहे विसमाई। भए भै चक्रित दिधि निर्षाई॥
तवि मुष ते उन्हा वचनु उचारे। सो गुर क्रिपा ते सकल वीचारे॥
गर्गि प्रोहिति ने य्युं भाषा। नारायण इसि कौ नाउं राषा॥
ताहि कह्यो कहु कौणु मिटावै। ताहि कह्यो मेट्या नही जावै॥
तव ही नंदि महिर जी आए। वाधा हरि देष्यो मुसकाए॥
नंदि महिर तव ही वचु कीआ। किस वालकि वाधा दुख दीआ॥
सकल गोप नंदि कह्यो सुनाई। तोहि जोषिता वांधा मेरे भाई॥
नंदि महिर प्रभि कौ उरि लीना। लेकरि गोदि गवनु ग्रहि कीना॥
नंदि महि लेकरि ग्रहि आया। जसु मति तांकी ओरि तकाया॥
तूं इसि कौ क्युं षोल्ह ल्याया। इनि कांन्हरि इहि कर्मु कमाया॥
दधि भाजन इनि ने फोरि डारा। कांन्हर ने इहि कर्मु सवारा॥
माषनु षडि मर्कटि षवाया। इनि वालकि इहि कर्मु कमाया॥
स्यामसुंदरिजसुमतिओरिदेषहि। मूंदे नैन कर सौ अरु पेषहि॥
नंदि महिर सौं जसुमति लीआ। धूरि झारि अस्थनु मुष दीआ॥
नंदि गोप सभि लीए बुलाई। ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई॥
गोकलि महि अपतिम्रो होई। हमि वालक दुःख देवै सोई॥
अवि तकि गोविंद कीई कल्याना। भए वितीत दिनसि मैं जाना॥
आवो अवि हमि गोकलि त्यागहि। औरु नग्रि के मार्गि लागहि॥
जव हि नंदि इहि वाति वषानी। सकल गोप मनि महि ठहिरानी॥
ईहा त्याग विंद्रावनि जावहि। ऊहां जाइ अधिक सुष पावहि॥
सकल गोप मनि इहि ठहिरायो। सांईदास विधि भली वतायो॥२३

गोप सकल मनि मति ठहिरायो। बिंद्रावनि जावनि चितु लायो॥
गोकलि तजि बिंद्रावनि धाए। सुरिह वछे तिन संग चलाए॥
सुत दारा वंधू पित माता। नंदि महिरु ब्रिषभानु सुहाता॥
सभि बिंद्रावनि माहे आए। आइ तहां ग्रहि सभहू वनाए॥

श्री कौलापति त्रिभवनि राया। नंदि महिर सौ वचनु सुणाया ।।
जो आज्ञा होइ वछे चरावहि। आज्ञा विनु वनि मांझि न जावहि
नंदि महिरि तवि तिन प्रतु दीआ। स्याम सुंदर को गोदी लीआ ।।
पंडिति वहु किन्नरिजु बुलावौ। तांते भला महूर्त्ति पावौ ।।
तवि आज्ञा तुमि ताई देवौ। जो तूं कहे सोई करि लेवौ ।।
नंदि महिर वेदपाठ बुलाए। भले महूर्ति तिनहि वताए ।।
गोपनि के सुत सकल वुलाए। तिन सौ प्रभ ने कह्यो सुणाए ।।
वछिरे ले चलिहो वनि माही। वनि महि षडि करि वछे चराही ।।
गो तात सभि वछे ल्याए। एकि ठौर कर्के वनि धाए ।।
करि सों करि सभि ही नें जोरे। कर्ति क्रीडा वनि कौ सभि दौरे ।।
तवि कह्यो कांन्हरि मुर्ली वाजै। अनकि तरंगि अवि मुर्ली गाजै ।।
मुर्ली अनकि तरंग वजाए। जो श्रवणु सुने सभ सुधि विसराए
श्री कृष्णचंदि तवि द्रिष्ट निहारी। वछासुरु वपु वछा आयो धारी ।।
आइ गउ सुति महि उर्झायो। श्री कौलापति तिन निर्षायो ।।
वलिदेव सौ तव कह्यो पुकारी। सुण हो राम वीर हितकारी ।।
आवौ तुमि इकु चरित्र दिषारौ। तुमि आगे इकि वाति विचारौ ।।
इहि जो वछा तुमि द्रिष्ट आवै। इसि को रूपु तूं भी कछु पावै ।।
इसि कौ पातक कंस पठायो। वछासुर वछे रूप वनायो ।।
जवि मै तुमि कौ कहौ पुकारे। सुण वलिदेव हो वीर हमारे ।।
काहि वारि वछिउो ले आवै। तिहि समे तूं मोहि एह सुनावै ।।
अवि तुमिरी प्रभि वारी आई। उौर कौन मै देउ वताई ।।
वलिदेव एही वचनु सुनावो। सांईदास उौर ना उचिरावौ ।। ३४

कमलि नैन त्रिभवन के राया।
बलिदेव सौ तिन आष सुणाया।
वछे गए दूर कौनु हेरि ल्यावै।
वछुरे हेर्नि कौ कहु को जावै।
जासि वारी होइ सोई जावै।
वछिर्यो कौ जाइ करि फिरि ल्यावै।

वलिदेव तव ही वचन उचारे।
तुमि सभि विधि को जानण हारे।
तुमि वारि तुमि ही हेरि ल्यावो।
वछुरे हेर्नि कौ तुमि जावौ।
श्री कृष्णचंदि सुण करि उठि धाए।
वछरे चर्ति त्रिण तहूं ही आए।
श्री गोपाल वछुरे हेर ल्याया।
लीलहा कर्ति तबि चर्तु दिषाया।
वछासुर असुर ताई प्रभ मारा।
दो पगि ले करि धर्नि पछारा।
पकरि ताहि व्रिक्ष सौ पटि कायो।
श्री गोपाल ने दुष्टु हतायो।
जवि प्रभि व्रिक्ष सौ तिहि पटिकायो।
व्रिक्ष गिर्यो उनि व्रिक्ष परि आयो।
ऐसे वनु सभ धर्नि गिरायो। श्री गोपाल इहि रचनु रचायो ।।
इहि लीलहा गोविद जवि धारी। अमिरो सकल कीयो जयकारी ।।
भला कीयो प्रभि दुष्टु हतायो। करुणा करके मार चुकायो ।।
असुरो आइ के कंस सुनायो। वछासुरु नंदि ताति हतायो ।।
वकासुर कौ दुष्टि सदाया। दुष्ट सकिल विधि कहि समिझाया
वकि रूप वकासुरि कीना। जमना के तटि तिन पगि दीना ।।
श्री गुपाल इसि लीओ पछानी।
इसि के मनि की विधि सभि जानी।
श्री कृष्णचंदि तवि कह्यो पुकारे।
गोप तात सुणो सषा हमारे।
इसि वगि के तुमि निकटि नि जावो।
जो मैं कहौ सो मनि ठहिरावो।
इहि उपाधि है मेरे भाई।
मै तुमि कौ विधि दीई वताई।
इहि विधि हरि सभि वाल सुनावै।
वनि महि ठांढे वछे चरावै।

गोप तात कछु हृदे न आना।
जो कौलापति मुषो वषाना।
चलति चलति वक के निकटि आए।
वग सकले ले उदरि कराए।
श्री ब्रिजराज तवि कीओ वीचारा।
किहि विधि इनि को होइ छुटिकारा।
इन्हि पित मात कहा जाइ आषो।
कहा वचन मै तिन सौ भाषो।
कमलिनैन भक्तिनि सुषदायक।
गुणानिधान त्रिभवनि को नायक।
वगि के मुष माहे चलि गयो।
मुषि के मांझि जाइ ठांढा भयो।
ना आगै ना पाछे जाई।
लीओ स्वास मूंद वगि जदराई।
वगि को स्वासु न निकिसनि देवै।
तांकौ जीउ आपि हरि लेवै।
स्वास न निकसै वहु दुख पाए।
त्रिति लोक वकु वेग सिधाए।
चुंचि पकिरि तिहि दो करि डारे।
तवि वालक सौ कह्यो सुनाई।
इहि न कहो तुमि नंदि पहि जाई।
और दिन वालक वेग घरि आवहि।
वहुरो जावहि गौं चरावहि।
आजु जौ एहि भयो वनि माही।
भयो अवेरि तिनहूं के ताई।
नंदि महिरु व्रषिभान जी आए।
मगु जोहे अति मनि विसमाए।
श्री कृष्णचंद बालक संग लीए।
ग्रहि आवनि ताई पग दीए।

गोप तात विधि आपि सुनाई।
नंदि महिर पहि वेग नि लाई।
हमि वनि महि षडि वछे चराए।
तटि रवि दुहिता जा ठहिराए।
वकासुर असुर तव ही चलि आयो।
वगि रूपु तिनि आइ दिषायो।
हमि कह्यो इसि निकिटि न जावो।
जो जावो तौ वहु दुःखु पावो।
हमि सभि चले निकटि गए तांके। सभि ही उदरि परे हमि वांके ॥
हमिरे पाछे क्रिष्ण भी आया। वांके हति हरि हमहि छडाया ॥
तव ही अवेर भई हमि ताई। इहि वालकौ ने आप सुणाई ॥
नंदि महिर अरु सभ विस्माए। गोकल त्याग ईहा हमि आए ॥
इसे त्याग ऊैरु कहा जावहि। ऊैरु कहा जाइ वासा पावहि ॥
फिरि सकल्यों मनि लीउो वीचारी। मनि माहे सभि ही इहि धारी ॥
गर्गि प्रोहति हमि सो भाषा। नारायण इसि कौ नामु राषा ॥
वडे उपाधों कौ इहि टारे। पृथ्वी कौ वहु सुपु मनि धारे ॥
जो कछु गर्गि कहा सो होई। ता महि भेदु नाहि है कोई ॥
नंदि महिर सभु ग्रहि महि आए। श्री कृष्णचंदि के मंगल गाए ॥
जो इहि जसु सुने वहु सुषु पावै। सांईदास तिहि परि वलि जावै ॥३५

इति श्री भगवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकादशो ध्यायः ॥ ११ ॥

श्री कृष्णचंद ने क्या कछु कीआ। प्राति समे वछे ग्रहि ते लीआ ॥
वछिरे ले करि वनि कौ धाए। तात समे गोपो सुत आए ॥
सकल ग्वारि मिलि एहि पुकारे। आजु आई इहि हृदे हमारे ॥
हमि तो क्रिष्ण सहित न जावहि। हमि न्यारे करि वछे चरावहि ॥
इनि ग्रहि वछे भए अधिकाई। हमिरे वछे थोरे है भाई ॥
कान्हरि हमि पहि कामु करावै। आप ते समसर कामु न आवै ॥
श्री कृष्णचंदि तव कह्यो पुकारे। सुण हो वालक सषा हमारे ॥
जो तुमि कहो सोई मै करहो। तुमिरा कहा मस्तकि परिधरहो ॥

हमिरे वछे न्यारे ना चरही। तुमिरे वछिउों सौ वहु हितु करही
कमलिनैन माधौ सुखदाई। मुख अपुनै सैं वाति सुनाई॥
करि इकत्रि वछे वनि कौ धाए। स्याम सुंदरि सहित सिधाए॥
श्री कृष्णचंदि त्रिभवनि के राया। गोप पूत सों आष सुणाया॥
वैन अधिर धर हो मेरे भाई। भौर पंष सीस लेहु वनाई॥
अंवर पीतंवरि करि लेवहु। कुस्म माल ले उरि महि देवहु॥
सकल ग्वारो ने ऐसा कीआ। वनि को मार्गु तिन ने लीआ॥
दीना नाथ अनाथ मुरारे। तवि वालकि सौं वचन उचारे॥
तुमि महि कौनु निर्ति करि जाने। मोहि कहो सो मनि करि माने॥
वालिक तवि लागे निर्ति करने। गिर्त मुर्ति वनि माहे फिरने॥
क्रीडा कर्ति गए उद्याना। कौलापति माधौ परिधाना॥
अस्थावर मग महि निर्षायो। महा अधिक कछु पार न पायो॥
तांके मुष की वात वषानो। स्थावर हृदे महि करि जानो॥
रस्ना ताहि सुनो मेरे भाई। मानो मगु वहि देति दिषाई॥
ऐसे दुष्ट खलु नामु अघासुर। हेर्ति फिर्ति एही निसि वासर॥
इसि कौ पातकि कंस पठायौ। सकल व्रितांतु सुनो हितु लायौ॥
जाइ करि सुतु नंदि कौ देषि आवौ। वेग जाहो कछु विल्मु न लावौ॥
जिन वालक ने वकी संहारी। रग अस्तन गहि के प्रहारी॥
केतकि वलु तांकी भुज माही। वकी प्राण जिन लीए हिराही॥
अघासर खल इहि हृदे आना। निश्चै करि के तिन मनु माना॥
विनु कहे कंस मारि इसि जावौ। ताँसे जाइ अधिक कछु पावौ॥
तांकौ कामु जो मै करि जावो। सांईदास वहुता सुषु पावो॥३६॥

बिनु कहे कंस कर्नि इहि आया। उर्गि देह इनि दुष्टि वनाया॥
गोप तात ने जवि इहि देष्यो। अति सरूप अचरजु जो पेष्यो॥
ताके उदिर वालकि सभि जाही। श्री कृष्णचंदि तांकौ वरिजाही॥
येहि भी एक उपाधि है आई। इसि के उदिर न जावो भाई॥
कह्यौ कृष्ण को किन्हे न कीनो। ताहि उदिर जाइ वासा लीनौ॥
श्री कृष्णचंदि तवि हृदे वीचारी। घटि अंतरि प्रभ एहि विधि धारी॥
इन्हि पित माति क्या उत्तरि देवौ। वालकि मागहि कहा करेवौ॥

श्री कृष्णचंदि प्रवेसु करायो । ताहि उदिर महि विलम न लायो ।।
कंठु असुरु कौ करि सौ लीना । महा दुखी प्रभ खलि को कीना ।।
सिरु फेर्यौ तौ निकिस्यौ तिहि स्वासा ।
जाइ वैकुंठि महि लीओ निवासा ।
नाराइण निर्भौ सुषदाता ।
घटि घटि माहे आप ही राता ।
सकले वालकि तवही निकारे ।
तांकी लील्हा अपर अपारे ।
आघासुर कौ मुक्ति पठायौ ।
तांकौ हतु कीयौ जदरायौ ।
हस्त षेलति तवि ग्रहि आए ।
वालकि सभि विर्तंत सुनाए ।
असुर अघासुर वनि महि आया ।
हमि सभि तांके उदिर समाया ।
श्री कृष्णचंदि तिहि दुष्ट कौ मार्यो ।
तांकौ मार्यौ हमहि निकार्यौ ।
नंदि महिर जवि इहि विधि पाई ।
सकल गोप तिन लीए वुलाई ।
गोकलि त्याग ईहा हमि आए ।
ईहा सुष कार्ण ठहिराए ।
इसे त्याग और कहा जावहि ।
ईहा अति अपति ग्रहि आवहि ।
महा कठनि हमि कौ वनि आई ।
सकल गोप सुण हो मनि लाई ।
जो जो दुष्ट मत्ति खलु आवै ।
सांईदास प्रभु मुक्ति पठावे ।।३७।।

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे द्वादशोध्यायः ।। १२ ।।

एक दिनस कमल नैन क्या कीआ। वछिरे गोकलि लै वनिपगि दीआ
गोप तात को कह्यो सुनाई। सुण हो इहि विधि हमिरे भाई॥
जो ग्रहि से लेत्रो सहित चलावो। उौर दिनसि ज्युं ईहा न षावो॥
वनि माहे मनि वहु सुख पावहि। सभु इकि ठौर बैठ के षावहि॥
किन ही कछु किन ही कछु लीआ। सभि तेतहू इकत्रि कीआ॥
चलिति चलिति जमुना तटि आए। तहूं ठौर आइ करि ठहिराए॥
पाति अंवि केले के लीए। रवि दुहिता तांपरि डारे दीए॥
तहूं पाति परि तिन पग दीए। तहूं बैठ करि भोजनु कीए॥
एकि ग्रासु लै उसि मुष देवै। एक उौर इसि मुष षसि लेवै॥
इहि विधि करी अधिक चिरु लागा।
आत सुरंग तिह के इकि नागा।
वछिरे चर्ति त्रिण कौ गए दूरि।
द्रिष्टि न आवै तिन मग दूरि।
सकल ग्वारि मिलि एहि पुकारे।
सुणो कृष्णचंदि मीति हमारे।
वछिरे दूरि गए तुमि जावौ।
तुमिरि वारी तुमि हेरि ल्यावौ।
कमल नैन वछुरे हेर्नि धाया।
वैन सव्द प्रभ तव ही सुणाया।
भोजन करि लीए षाता जाई।
तांकी सोभा कौनु वताई।
लेन प्रतज्ञा विधि तहा आयो।
बछरे वाल तिनि सकल दुरायो।
तहा जाइ प्रभ ने निषायो।
द्रिष्ट न आए मनि विस्मायो।
अंतरिध्यानु कीयो सुधि पाई। पद्मजि हमि ताई पतीआई॥
श्री कृष्ण अवतार भयो के नाही। सोच विचार देष्यो मनि माही॥
कमल नैन फिरि तटि परि आए। फुनि ईहा वालिक द्रष्टि नि आए॥
स्याम सुंदरि भै चक्रित हो रह्या। अपुने मुष सेती इहि कह्या॥
असुर कवहू इहि कामु न करही। वछुरे वालकि सौ वैरु न धरही॥

उनि को है हमिरे संग कामा। इहि विधि वोले पूर्ण रामा॥
पदमजि ने इहि कामु करायो। चाहति पदमजि हमि पतीग्रायो॥
श्री गोपाल इहि सोच वीचारा। सांईदास विधि जाणनहारा॥३८

श्री गोपाल मन महि ठहिराई।
सो गुर किर्पा ते कहो सुनाई।
जो ग्रवि चतुराननि पहि जावहि।
वछुरे ग्वार को मांग ल्यावहि।
पदमज मन महि करे गुमाना।
पदमज मन महि परे भुलाना।
क्रिष्ण ग्रवतार प्रतीति न मानहि।
मन महि द्वितीग्रा गति वहु ग्रानहि।
तांते इहि भला मोह भाई।
लील्हा करि इन्हा लेह वनाई।
वहि वछरे ग्वारि रहिनि तिहि पाही।
पदमज पहि मांगनि ना जाही।
ग्रवि लील्हा करि उौरु वनावहि।
चतुरानन ग्रभिमान चुकावहि।
श्री कृष्णचंद लील्हा तवि धारी।
वछुरे ग्वार इनि लीए सवारी।
वैन वजाती चले ग्रहि ताईं। वालकि गए ग्रपुने ग्रहि माही।
तिन को देष जननी हिर्षाईं॥
वछुरे गए सुरहीग्रनि के पासे। सुरहीग्रनि ग्रधिक कीनी इसे प्यासे॥
ऐसे ही एकु वर्षु विहाया। चतुराननि मनि महि इहि ग्राया॥
ग्वार वछरे मतु ले ग्यो होई। मै जावौ जाइ देषो सोई॥
जिहि स्थावर महि दुराए। पदम देषण ताहि सिधाए॥
तिहि कंदिरा माही निर्षाए।
वहुरो ग्वारि सकले द्रिष्टग्राए।
मनि ग्रंतरि विधि एहि वीचारा॥
कौनु हमहि क्या वलु है हमारा॥

पारावार तांके मैं पावो।
इहि विधि कहा जो तिहि गुण गावो।
लज्जामानु होइ पद्मज आया।
श्री कृष्णचंदि चर्नी लपटाया।
करि डंडौत मुष वचन उचारे।
प्रान पुर्ष हमि प्रान अधारे।
मै कहा तुमिरी गति पावो।
मै मतिहीन कहा उचिरावो।
तूं अपार गति तोहि अपारा।
तुमि गति कहा मै कौनु वीचारा।
जो कोई इहि जसु सुणे सुषु पावै।
सांईदास गर्भि योन नि आवै ।।३९

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षिति संवादे त्रयोदशोध्यायः ।।१३।।

श्री गुपालि ने लील्हा धारी। दस सहस्र विधि कीयो तत्कारी ।।
चतुराननि कौ प्रभ निर्षाए। पद्मज निर्ष रह्यो विस्माए ।।
भै चक्रित तवि ब्रह्मा हो रह्या। चतुर्भुजा ब्रह्मे मुष कह्या ।।
एक एक ग्वारि पहि वेद वषानहि। पद्मज सुकदेव ब्रह्म ज्ञानहि ।।
उस्तति कमलापति की भाषहि। स्यामसुंदरि की लील्हा आषहि ।।
तवि इहि पद्मज इहि प्रतु कीना। त्याग अभिमानु नीच ग्रहि लीना ।।
सुण हो कृष्णचंदि विधि मेरी।
कहा करों मैं उस्तिति तेरी।
मै तो किसे गिणति महि नाही।
इहि विधि आषौ हो तुमि पाही।
त्रिण व्रिक्ष विद्रावनि के नीके।
हमि मतिमूढ अंतरि ते फीके।
मै तो पद्मज नाहि कहावौ।
इहि विनती प्रभ तोहि सुणावो।

मोहि त्रिक्षु करो बिंद्रावनि माहि।
जाहि त त्रिभवनि ताहि मझाही।
तुमि तो सदा फिर्ति तिहि माही।
तुमिरो गवनु है सदा तहाही।
तुमिरो पगु मस्तक परि आवै।
हमिरो आवागोंनु मिटावै।
मैं चतुराननि नाहि कहावौ।
इहि विधि निश्चै मनि ठहिरावौ।
तुमिरे दर्सन ते दूर जावा।
ध्रिगु इहि जन्मु जो वरहो कहावा।
मैं इहि विधि प्रभ सर्न महि आनी।
औरु न चतुराइण इहि जानी।
मै काहू गिणत्री महि नाही।
तुमिरी गति कछु लषी न जाही।
जो कोऊ रहति बिंद्रावनि माही।
सदा सदा वैकुंठी मझाही।
सदा सदा दर्सनु तुमि करही।
चर्नि कमल हृदे अंतरि धरही।
मोको माटी करु इहि ठौरा।
इहि विनती सुण हो मोहि भोरा।
इहि विधि पद्‌मज विनती ठानी।
लज्जा मानु होइ मनि इहि आनी।
वछुरे ग्वारि सकल ले आया। जमुना के तटि आण टिकाया॥
श्री करुणा निधि ऐसे कीआ। भोजन सहिति ग्वारी लीआ॥
जैसे प्रिथमे कीओ मुरारी। तैसे अवि कीनी गिरुधारी॥
पद्‌मज ग्वारि षडे दुराई। तास समे लील्हा जो धारी॥
तैसी लील्हा अवि प्रभ कीनी। प्रिथम वाति चिति धरि लीनी॥
लील्हा करि जो ग्वारि वनाए। औरु वछे तवि ही उपिजाए॥
सभ लील्हा करि ताहि वषानें। श्री कृष्णचंदि पूर्न परधानें॥
जो वछे ग्वारि प्रिथमे से भाई। साई संग लीए जदुराई॥

ब्रह्म ब्रह्मत्तु त्यागा। चर्नी कौलापति की लागा॥
प्रभ पद्मज परि किर्पा धारी। ताहि परि करुणा करी मुरारी॥
जो इसि जस को मनि ठहिरावै। सांईदास पर्म गति गति पावै॥४०

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चतुर्दशोध्याय:॥१४॥

एक दिन श्री कृष्ण कह्यो नंदि ताई।
सुण हो पित मैं तोहि सुणाई।
एकादश वर्ष भई आयु मेरी।
श्री कौलापति मुषि इहि टेरी।
जौ आज्ञा करो सुरहों ले जावो।
जाइ वनि माहे ताहि चरावहु।
नंदि महिर कह्यो अति नीका।
पुछ पंडितु भ्रमु त्यागो जीका।
भलो महूर्त देहि वताई।
तुमि सुत सुरहो कौ षडो चराई।
नंदि महिर पंडतिजु वुलाए।
लग्न महूर्ति भले पुछाए।
पंडति भलो महूर्ति कीआ।
वीरवार की आज्ञा कीआ।
कांन्हरि जाइ करि धेन चरावै।
धेन अधिक होहि वहु सुष पावै।
जवि ही वीरवारु दिन आया।
वलिदेव गौआ ले वनि धाया।
तबि ग्वारो मुष वचन उचारे।
सुण हो वलिदेव सषा हमारे।
तालि वनि त्रिण मेवा अति नीका।
तहूं चलो सुष होवै जी का।
सकल ग्वार इहि मति ठहराया।
उमडि सकल तव वनि को धाया।

राम सहित ग्वारो उठि धाए।
षेलति सभ बनि माहे आए।
त्रिषावंति सकली सुरहो हौईं।
इति उति ते वहु जलि को जाई।
एक तालु जलु है तिहि माही।
कालि नागु रहे ताहि मझाही।
सभ पानी विषु काली केरी।
सुण हो साधो एहि विधि मेरी।
नील कुंडि नामु तिहि भापही।
सकल स्रिष्ट ऐसे ही आपहि।
धेन ग्वारि तहा पानी पीआ।
पानी पीय अपुना जीउ दीआ।
वलिदेव तवि ही मनि वीचारा।
निता पति ईहा गवनु हमारा।
लील्हा करि वहु वहुरि जीवाए।
करि महि ले पेलति ग्रहि धाए।
उत्तम ग्राम व्रिक्ष हलाए।
तिन के फल सभ धर्नि गिराए।
सकल ग्वारो ने ले करि पाए। ताहि पाइ करि विश्रामु पाए।
धिङ दैतु तहां चलि आया। गर्धिप रूपु तिहि दुष्ट बनाया॥
गर्धिप रूप कीओ तत्कारे। दो पग दुष्ट राम को मारे॥
तवि ही राम दो पगि सो लीना। फेरि फेरि विक्ष सेती दीना॥
धेन्कि दुष्ट को राम विडारा। सांईदास खल को प्रहारा॥४१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंचमोध्यायः॥१५॥

राम सहित ग्वार्नि फल पाए। सुरिह सकले ले ग्रहि को धाए॥
चले चले आए ग्रहि माहि। राम सहित ग्वारो सुष पाही॥
जसुमति प्रभ अंग तेलु मलाए। ताकी सोभा अधिक वनाए॥
जलु लेंकरि इस्नानु कराया। परिजंगमि परि सैनु कराया॥

सुष आश्रमु लीनो जदुराई।
शैनु कीयो प्रभ कौर कन्हाई।
उौर दिनसि वलि भद्र आषा।
इहि विधि राम कीई मुष भाषा।
आजु न जावौ मैं वनि माही।
मोहि पगि आजु न वनि कौ धाही।
श्री कौलापति राम सुनाया।
वलिदेव तै ने वहु दुःख पाया।
तुमि रहो ग्रहि मैं सुरिह ले जावा।
षडि वनि माहे ताह चरावा।
श्री कृष्णचंद सुरिह ले करि धाया।
तालि वनि के मार्ग चितु लाया।
तात काल गयो वनि के माही।
नीलि कुंडि परि पगि ठहिराई।
एही मनि महि कीओ विचारा।
श्री गोपाल जन प्रान अधारा।
इहि जलु समु विषु मोह दिषावै।
जो पीवे सो प्रान तजावै।
मीठा करो मै इसि जलि ताई।
एही आई मोहि मनि भाई।
काली नाग को ईहा निवासा।
सदा सदा तांको ईहा वासा।
उसि विष के प्रजोग कराही।
एक जोजन परि त्रिण न जमाही।
जोजन प्रजंति पंछी न उडाए।
जो उडे सो भस्म होइ जाए।
कदमि त्रिक्षु कुंडि के तटि माही।
हरियो साथ पत्रि संग नाही।
इहि प्रजोग वहु हर्यो भाई।
सुण हो इहिं विधि देउ वताई।

इकि दिन गर्ड़ु वैकुंठि सिधाए।
अंम्रति फल वैकुंठि से ल्याए।
आइ कदंमि को ऊपरि वह्या।
अंम्रति फलु उनि मुष महि गह्या।
अंम्रति फल से रस जु चुआई।
कदंमि मूल महि जाइ समाई।
इहि प्रजोग करि हरउो वाही।
सांईदास विधि कहिति सुनाई॥ ४१ ॥
श्री गुपाल कदंम परि चढिआ।
तांसौ कूदि कुंडि महि परिआ।
पर्तु लागा तिहि के माही।
अति कलोल करे ताहि मभाई।
ऐसा पर्तु तिहि महि कीआ।
अधु कोसु जलु वाहिर दीआ।
काली नागु मनि महि विस्माया।
होइ विस्माह मुषो उचिराया।
मोहि विषु वलि त्रिणु रह्यो न जाई।
इहि प्रांनी आइ पर्यो कोई।
कालीनागु तवि ही निकसि आयो।
कमलनैन के पग उर्भायो।
नंदि महिरु जसमति व्रिषभानु।
मनि काहे वहि र्कति वषानु।
सभ के द्रिग तवि तपने लागे।
सभि प्राति महि सोए जागे।
राम सो सकले कहित सुनाई। एक एक मुख ते उचिराई॥
कृष्ण सहित तूं आजु न गया। कछु अपित ग्रहु वनि महि भया॥
हमि को कृष्ण पाहे ले जावो। श्री गुपाल हमि दिष्ट दिषावो॥
तवि वलिदेव ऐसो भाष्यो। कांन्हरि उोरहि चितु ठोर राष्यो
कछु मनि महि विस्वासु न करहो। अपुना हृदा ठौर तुमि धरहो॥
कौनु असुरु तांके निकटि आवै। प्रभ सौ तांकौ त्राणु वसावै॥

रामु ताहि कौ वहु समिझावै । नंदि गोप धीर्जु नही पावै ॥
नंदि गोप सभ वचन सुनाए । राम सुनति मनि महि ठहिराए ॥
श्री कृष्ण हमिरे प्रान अधारा ।
तां विनु इहि तनु होई छारा ।
हमि तिहि विनु कछु कामु न आवहि ।
विनु उसि हमि वहुता दु:ख पावहि ।
हमि को कान्हरि पहि ले जावो ।
चलिहो हमि संग हमहि दिषावो ।
वलिदेव पैरु सुर्हो का लीआ ।
गवनु कमलनैन उोर कीआ ।
तातकाल कालीकुंडि आए ।
श्री कृष्णचंदि तिन ने निर्षाए ।
ठाढे कृष्णचंद देषे जल माही ।
काल नागु उर्भौ पगि ताही ।
इहि विधि देषि रुदनु वहु कीआ ।
महा दुषति भयो तिह को जीआ ।
तिन को वलु कछु नाह वसाए । सांईदास वहु रुदनु कराए ॥ ४२

श्री कृष्णचंदि जवि नंदि निहारे । गोपो सहित रुदन चित धारे ॥
काली को सीसु तवि करि लीना । जल से ले वाहिर डारि दीना ॥
जल को तजि करि वाहिर आए । अमिरो तवि जै कार कराए ॥
निर्त करी तवि प्रभ गिर्धारी । काली के सिर परि अधिकारी ॥
चतिरा इकि मुष काली कहीए । इहि विधि तांका रूप वतहीए ॥
चतुर सीस तिहि कृष्ण विडारे । अपुने पगि करि प्रभि प्रहारे ॥
एक सीस पाछे जवि रह्या । वाही सीसु चाहिति प्रभु गह्या ॥
दो वनिता काली की आई । सुत दुहिता सभ संग ल्याई ॥
कुटंवि सहिति विनती तिहि ठानी ।
हमि वलि जावों सारंग पानी ।
महा अपति ग्रहु हमि जवि कीनो ।
तवहि भुजंगमि के वप लीनो ।

इसे त्याग देह त्रिभवनि राया।
इहि विधि हमि तुमि ग्राषि सुणाया।
तवि श्री कृष्ण ताहि प्रतु दीग्रा।
तुमि वेनती करि मुक्ता कीग्रा।
एहि ठौरि तजि करि तुमि जावो।
पलु छिनु भी ईहा ना ठहिरावो।
जाइ रहो तुमि दधि के माही।
ईहा ठौर तुम्हारी नाही।
गंडि के त्रास ईहा जो ग्राया।
जमना के तटि ग्राइ ठहिराया।
ग्रवि कछु गड़ु कहे इसि नाही।
जाइ करि सुख वसो दधि माही।
काली सकल कुटंबु संग कीग्रा।
सागर सिंध को मार्गु लीग्रा।
जो जो हरि सर्नाई ग्राए।
सांईदास तिहि वहु सुष पाए॥४३

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षोडशोध्यायः॥ १६॥

नंद महिरु जसु मति नंद नंदनु। सकल गोप चिर तनि चितु वंदनु॥
सकल रैन रहे कुंडि प्राही। तांकी लील्हा वर्नि न जाही॥
तिहि कुंडि को जलु मीठा कीग्रा। जिन त्रिषा गही तिन ही ले पीग्रा
जसुमति कांन्ह को संग लीग्रा। ग्रंग ग्रंग तांके सुष कीग्रा॥
हर्षिमानु जसुमति वहु होई। हिर्षमान होइ करि वहु रोई॥
रुदनु कर्नि मुप ते इहु ग्रापा। हमि ग्रहि ग्राजु भयो सुतु भाषा॥
नृप परीक्षति सुष देइ सुनाई। स्वामी हमि मनि संचरु ग्रायो॥
जमुना तटि कैसे वासा पायो। जो काली नागु ईहा ठहिराया॥
जवि नृप नें इहि वाति चलाई। तांको प्रतु शुकदेव सुनाई॥
दधि महि रहे उर्गि ग्रधिकाई। गई जाति सागर माही॥
सागर महि जाइ वहु सर्प मारे। कछु षाए कछु ऐसे डारे॥

एकि दिन उर्गि इकत्रि भए। चले चले मघिवा पहि गए ॥
मघि पहि जाइ करी पुकारा। हमि भी उतपति है कर्तारा ॥
गर्ड हमे वहुता दुःख देवै।
सुतवंधू हमि वहु हति लेवै।
जो तुमि हमि सिर करि ठहिरावो।
हमि देवहि तवि जोरु न लावो।
पद्मज सौ मघवा इहि कीग्रा।
गर्डि कौ तिनहि बुलाई करि लीग्रा।
तिन ने एही मत्तु ठहिरायो।
साईदास तिहि विरोधु चुकायो ॥४४

तुमि दस सर्पि गर्ड को देवौ। निता पर्ति एही कामु करेवौ ॥
गर्डि ने पद्मज कौ कहा माना। सत्ति जान सिरि ऊपरि ग्राना ॥
दस सर्पि निता पर्ति वहि लेवै। तांकौ ले करि उदिर भरेवै ॥
इकि दिन वारी काली ग्राई। दस सर्प्पि देहो तुमि मेरे भाई ॥
कारी नाग मनि कीउो वीचारा। मोहि पिति नामु महा ग्रधिकारा ॥
मै नाउं कालीनागु कहावौ। इहि तजि ठौर कहा मै जावौ ॥
ध्रिगु जीवनु गर्डि कछु देवौं। क्या मुष ते जग महि निकिसेवो ॥
गर्डि लोक सर्पि लेने ग्राए। काली नागु को तिन हि सुनाए ॥
काली कह्यौ कछु देवौं नाही। गर्डि के लोक ग्रधिक विसमाही ॥
गर्डि लोक रीते होइ गए। गर्डि ग्रागे जा ठांढे भए ॥
गर्डि के ताई ताहि सुणायो। काली तुम वचु मनि न ठहिरायो ॥
जवि षग ने इहि विध सुण पाई। क्रोधु कीउो कछु कह्यो न जाई ॥
करि क्रोधु युद्धि कौ उठि धाया। कालीनागु सन्मुख होइ ग्राया ॥
जवि काली सन्मुष उठि धाया। गर्डि निर्ष मनि महि विसमाया ॥
इसि कौ विष है ए ग्रधिकारे। मतु एहि मोह डंसे ततकारे ॥
जत्नु कीउो करि सेती गह्यो। करि सो ले करि गगिन पर चढ्यो ॥
काली तिह करि ते छुटि गया। जमिना तटि इहि कुंडि महि पया ॥
काली कुंडि प्रजोग इहि कहीए। काली नागु इस माहे रहीए ॥
रहि तिस पूर्व ऋषु इहि ठौरा। सुण हो परीक्षति नृप कह्यो मोरा ॥

काली अजहू न लीआ निवासा। ऋषि सपूर्वि को जवि ते वासा॥
एक दिन गर्ड़ु इहि कुंडि पर्‌या। जीव जंत सकल उनि मर्‌या॥
तवि ऋषि गडि कौ आप सुरणाया। इसि तटि परि मैं वासा पाया॥
हमि ते लज्जा ना तूं करिही। इहि कुंडि माहे तूं पगु धरही॥
अधिक अवज्ञा तुंम हि कराई। अवि लगि तुमि कौ लीयो वचाई॥
जो वहुरो ईहा पग धारे। भस्म होइ जावे ततकारे॥
मोह कह्यो तुमि जानो भाई। सांई करो जित होइ भलाई॥
तवि ते गर्डि कुंडि इहि त्याग्यौ। तिसि ऋष डर ते गर्ड़ु जु भाग्यो॥
पगु डर्ता ईहा ना आवै। ऋषि के साप ते वहु सुकिचावै॥
इहि प्रजोग काली ईहा रह्या। आश्रम सेती ईहा वह्‌या॥
नृप परीक्षिति जवि इहि प्रतु पायो। सांईदास मन भर्मु चुकायो॥४५॥

गोप ग्वारि नंदि सहि नाइरिण। रहे अंभ तटि सहित नराइरिण॥
रजनी भई शैनु तहू कीना। निश्चय होइ हरि हर भज लीना॥
जवि ते मद्धि भई आइ रैना। ससि और उडगनि ही प्रगटैना॥
सस ने अधिक उजारा पायो। उडगनि तिन संग अधिक सुहायो॥
दावा अग्नि दुष्टि अति भारी। तांको कंस ने कह्यो पुकारी॥
तटि काली कुंडि गोप ग्वाल। शैनु कीओ नंदि के नंदि लाल॥
तूं तहू जाइ हमारे भाई। चतुर और दावा देह लाई॥
तवि वहि सकल अग्नि महि जरही।
इहि प्रजोग करि उहु सभि भरही।
दावा अग्नि सौ दुष्टि समिझायो।
तव वहि खलु वनि महि चलि आयो।
चतुरि औरि दावा उनि दीई।
दुष्ट असुर इहि विधि इनि कीई।
नंदि महिरु जसुमति सभ लोक।
विस्म भए दावा कौ विलोक।
शैनु त्याग हा हा सभु करही।
हा हा प्रभु मुष ते उचरही।
श्री कृष्णचंदि सौ कहे पुकारे। कौलापति हमि दावा जारे।

तवि कौला पति वचु मुष कीना।
मूंदो द्रिग तुमि कौ कहि दीना।
सुनति सकल ने द्रिग मूंदाए।
प्रभु वचु तिन ने मनि ठहिराए।
चतुरति दिस की दावा अचि लीई।
इहि विधि नाराइण तवि कीई।
मानो जल को अचि लेवै।
जलि कौं अचति अजहूं सुकचेवै।
गोविंद दावा कौ अचि लीना।
पलु छिनु विल्मु न गोविंद कीना।
सदा सदा प्रभु सुषु उपिजावै। सांईदास दुःख मूल गवावै ।।४६।।

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तदशोध्यायः ।।१७।।

तवि ही विस्मे गोप ग्वार। लील्हा प्रभ की नेत्र निहार ।।
रजनी घटी रवि कीयो प्रकासा। सुखु उपिज्यो दुष मूल विनासा।।
सुर्हो सकल ले गोकलि आए। हिर्षिमान होइ मंगल गाए।।
श्री कृष्णचंदि सुर्यो को ले भाई। विंद्रावनि महि आइ ठहिराए ।।
तप्ति अध्कि वनि महि सो भाई। विंद्रावनि महि वहु सितलाई ।।
कुस्म अनेक भांति के फूले। तिन संग भ्रिग अधिक है भूले ।।
वादरि उमडि करि आए। तिन वादर वहु वर्षा लाए।।
पवन मंडल आयो ततकारे। वादरि दौर गए अति भारे ।।
वादरि गए रवि दई दिषाई।
ऋषि मुनि सभ वनि को उठ धाई।
श्री गोपाल सुंदरि अधिकारि।
करुणा निधि प्रभु गिरवर धारी ।।
गोप तात सभ लीए वुलाई।
ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
हमि तुमि षेलहि युद्ध करावहि।
मिलि करि सभ उरि-उरि उर्भावहि।

कह्यो ग्वारिनी को जदुराई। जो इहि विधि तुमरे मनि आई॥
दौरि आइ एकहि उरि लागे। मुष्टि मारि पाछे भागे॥
धात्री फल ले युद्ध करायो। अधिक पेलु प्रभु स्याम वनायो॥
जो देषहि सौ वैकुंठ जावै। जन्म-मर्णु प्रभु सकल चुकावै॥
अदि भुति पेलु वन्यो मेरे भाई। तांकि लील्हा कही न जाई॥
इहि विधि पेलु कीओ वनिवारी। तांकि लील्हा अपर अपारी॥
गोप तात सो पेलनु कीना। सखा जाण तांसौ हितु लीना॥
धात्री फल ले करि वहु मारी। ऐसी विधि प्रभ लील्हा धारी॥
एहि विधि पेलु कीनो नंद नंदन। श्री गोपाल ठाकुर मकरंदन।
मुक्ता होइ वंधनु ना पावै। सांईदास जो इहि सुपु गावै॥४७

प्रलंब को नृप दुष्टि पठाया। सकल वाति षलु ताहि वताया॥
विंद्रावनि महि सहित गुआला। धेन चरावत है नंदलाला॥
तुमि जाइ करि तिस को हति आवो।
वेग विलमु कछु मूल न लावो।
प्रलंबि खल वपु ग्वार को कीना।
मार्गु श्री विंद्रावनि को लीना।
आइ ग्वारौ महि ठहिरायो।
सभ ग्वार ले अंग मिलायो।
तांकौ गोविंद लीओ पछानी।
सभि विधि जाने सारंगपानी।
तव ही राम सौ आषि सुणायो।
वार एकि फिरि पेलु रचायो।
जो हारे कांधे परि चारहे।
उसि व्रिक्ष ताई जाइ उतारे।
जुगल सषा मिलि-मिलि कर आवहि।
इहि विधि करि हमि पेलू रचावहि।
राम कृष्ण दोऊ ठहिराए। ओर जुग्ल सषा होइ हो आए॥
एकु लेइ रामु इकु ले गिरधारी। ऐसी लील्हा करी मुरारी॥
प्रलांबु असुरु प्रभ की ओर आयो। और सषा वलिदेव उरि धायो॥

प्रथम राम सषा ने हार्‌यो । कांधे चारिह् व्रिक्ष पाहि उतार्‌यो ॥
वहुरो प्रभ की ओर हरायो ।
वलंवि राम को कांध चरायो ।
इहि विधि असुर ने मनि ठहिराई ।
सकली विधि मैं देउं वताई ।
एहि समा मौको प्रभ दीना ।
वलिदेव मोहि कांधे पग कीना ।
एकि ओर इसि कौ षडि मारो ।
कंदरा महि षडि करि प्रहारो ।
तव प्रकांच तिन ने हे कीआ । इनि षल ले आगे पगु दीआ ।
वलिदेव ने तवि मनि ठहिराई । सकिल व्रितांत सुन हो मेरे भाई ॥
तवि जान्यो एही मनि माही । दुष्ट षेल उपाध उठाई ॥
एक मुष्टि खल के सिर मारी । ताहि कपालु लीयो प्रहारी ॥
टूक-टूक तांको सिरु कीनो । तांका सीसू फुडा करि लीनो ॥
मुख ने रिक्त चली अधिकारी । जीउं दीओ तिन ने ततकारी ॥
प्रलंबु मुक्ति भयो क्षिण माही । सांईदास गोविंद सर्नाही ॥४८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सम्वादे अष्टदशोध्याय: ॥१८॥

एक दिन श्री कृष्ण विंद्रा जनि माही ।
धेन चरावति ताहि मझाही ।
सकल ग्वार सौ षेल मचाई ।
श्री गुपाल भगतनि सुषदाई ।
सुरिह गई दूरि द्रिष्ट न आवहि ।
प्रभु तब मन महि सोझी पावहि ।
गोप तात सौ कृष्ण सुनाया । हमि सभि षेलनि सौ चितुलाया ॥
सुरिह गई दूरि कह्यो क्या कीजै । सुर्‌हो ताई कैसे फिरि लीजै ॥
केतकि तुमि तिन के पुरि जावो । सुर्‌हो ताई तुमि फिर ले आवो ॥
गोप तात तवि कह्यो पुकारे ।
हमि विनती करहि सुणहो मुरारे ।

दुष्ट अधिक बिंद्राबनि माही।
फिर्ति सदा हमि कैसे जाही।
तुम को त्याग कैसे हमि जावहि।
इहि विधि वहु मन महि सुकचावहि।
तवि श्री नंदि नंदनि ग्वार लीए।
केतक पगि वसुधा परि दीए।
महा विकट वनु आगे आयो। ग्वार सहित प्रमार्ग भुलायो॥
तप्ति अधिक प्रगटी तिहि ठौरा। त्रिषावंत भए नंदि किसौरा॥
सकिल ग्वारि को त्रिषा संतायो। अधिर सूके रस्ना ठहिरायो।
श्री कृष्णचंद सौ कह्यो पुकारे। त्रिषा गहे छुटहि प्रान हमारे॥
चल हो जमना के तटि जावहि।
जलु जा अचहि नाही मारि जावहि।
जब ग्वारो मुषि एहि उचारी।
जमुना तटि को चले मुरारी।
दावा अग्नि असुरु तहा आयो।
दुष्ट असुरु मनि एहि वसायो।
सुत नंद महिर ग्वार संग तांके।
त्रिषा गहे निकसहि प्रान वांके।
प्रिथमे तिन ने पौणु भुलायो। पाछे दावा वनि को लायो॥
अग्नि चहू दिस ते निकट आई। ग्वारो पुकार कह्यो जदु राई॥
भक्ति वछल त्रिभवनि के राया। इनि अग्नी हमि अंगु जलाया॥
तुमि विनु ओटि नाहि हमि कोई। ज्युं जानो प्रभ राषो मोई॥
चरनि कमल सौ जो दूरि होवै। ताकौ विकट वने तू षोवै॥
तुमि किर्पा करि दुःख निवारो। अपुनी करुणा हमि परि धारो॥
हमि सभ निकटि चर्नि तुमि रहे। तुमरे चर्णिकमले निज गहे॥
महाराज तुमि अंतरि जामी। सकल घटा माहे विश्रामी॥
पतति उधार्नि तव ही पुकारे। सुण हो वचि मोह सषा हमारे॥
मूंदो द्रिग अपुने तुमि भाई। श्री गोपाल मुषि एहि वताई॥
सकल ग्वारि द्रिग मूंद लीए। अपुने द्रिग ऊपरि करि दीए॥
श्री नंदनंदन गिर्वरधारी। चहूं दिस अग्नि अची ततकारी॥

सकल अग्नि पानी ज्युं पीई। ग्वार सवहू की रक्षा कीई॥
गोप तात फिर नैन उघारे। विस्म भए प्रभ चर्ति निहारे॥
करुणानिधान कौनु गति जाने। तुमिरी लील्हा कौनु वषाने॥
वहुरो जमना के तटि आए। अचि पानी आतम सुख पाए॥
जो इहि लील्हा कौ मनि धारे। सांईदास प्रभ ताहि उधारे॥४६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादेनवदशोध्याय: ॥१६॥

श्री मुरार माधो धर्नी धरि। पर्मानंदि सभी कारुण करि॥
गोप तात सौ वचन सुनाए। सुरिह गई दूरि कह्यौ जदुराए॥
चार पाछ दछन ओर धावो। चतुर पाँच पश्चिम कौ जावौ॥
सकल गोप सुत एहि पुकारे। हमि नही जावे प्रांन अधारे॥
तुमिरे चर्नि कहा तजि जावहि। कहू ठौर हमि जाण न पावहि॥
हमि विनती करहो तुमि पाही। तुमि सुण लेवहु प्रभ मनि माही॥
इसि वटि व्रिक्ष ऊपरि तुमि चढिहो। मुर्ली मधुर अधिर महि धरहो॥
वैन वजावौ प्रभ गिरधारी। एहि विधि नीकी हमहि वीचारी॥
वैन सब्द सुरि सभ सुण पावहि। त्रिणु न चरहि प्रभ वेगही आवहि॥
जवि ग्वारो ने इहि विधि ठानी। श्री कृष्णचंदि मनि अंतर मानी॥
तवि ब्रिक्ष के ऊपरि जाइ चढिआ। वैन सव्दि कांन्हरि ने करिआ॥
दहुरी दहुरी मेरी मुषौ पुकारी।
श्री गोपाल जिन रचिना धारी।
वैन सव्दि सुर्हो ने सुण पाया।
त्रिणु तजि करि तिह ओर निर्षाया।
वैन सव्दि धुनि लै सुर्यो धाई।
कदंम व्रिक्ष के मूल पहि आई।
अपनु अंगु वढि मूल छुहावहि।
चतुरि ओरि तिहि व्रिष उर्भावहि।
चाटति वटि के मूल वहुताई।
ऐसी उपिजी सुर्ह मनि माई।
श्री जदुनाथ कदंमु तजि आए। सोभति सषा संग अधिकाए। ।

जैसे ससि उडगनि के माही।
सोभति है भलो देति दिषाई।
ग्रैसे प्रभ सोभति ग्रधिकाई।
मानो मूर्ति देति दिषाई।
गोप तात सकले संग लीए।
श्री गोपाल ब्रिज को पग दीए।
बेन सव्द मग महि उचिरावहि।
ग्रमरि सकल सुरण करि सुप पावहि।
कर्ति कलोल ग्राए ब्रिज माही।
तिन्ह लील्हा कछु वर्नि न जाही।
जो हित सौ इहि जसु सुरण लेवै।
सांईदास तिहि प्रभु सुषु देवै ॥५०॥

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे वीसमोध्यायः ॥२०॥

गोपि दुहिता वैन सुण पाया। ताहि मात इहि वचनु सुणाया ॥
पारब्रह्म निर्भौ नरंकारा। सकल जगति को राषण हारा ॥
श्री गोपाल भक्तिन सुखदाई। सदा सदा सुख कहु उपजाई ॥
श्री कृष्णचंद सर्नी जो ग्रावै। तांको प्रभु सभु दुःखु मिटावै ॥
करुणा निधि दुःख कर्नि विनासा। संत जना की पूर्ण ग्रासा ॥
सोई नंदि महिर ग्रहि ग्राया। सभ कंन्या मनि धरि सुण पाया ॥
सभ दुहिता होइ करि इकि ठौरा। मन महि सिमरहि नंदि किसोरा
माघ मास व्रतु ही करही। श्री कृष्णचंदि को नामु उचरही ॥
ब्रंह्म महूर्त्ति तटि जावहि। जाइ जमुना स्नानु करावहि ॥
करि स्नानु तटि परि ठहिरावहि। श्री जदुनाथ को नामु ध्यावहि ॥
कातिकी मूर्ति जमुना वही वनावहि। पार्वती कर्के तिस ध्यावहि ॥
धूप दीप तिस ग्रधिक चरावहि। तिहि सेवा सो बहु हितु लावहि ॥
करि दंडौत सभ विनती ठानहि। हे देवी तूं मन विधि जानहि ॥
जो हमि प्रीति कृष्ण संग देवहि। तोहि पूजा नितापर्ति करेवहि ॥
माघ मास सभ सेवा करे। प्रीति ग्रधिक मन माहे धरे ॥

श्री मुरार विधि जाणनहारा। मनि माहे इहि लीओ वीचारा ॥
शिव भार्या सौ ,आष सुणाही। श्री कृष्णचंद संग प्रीति बढाही ॥
वाहि वाछा मै पूर्न करही। तिहि कंन्या चितु सभ ठौर धरहौ ॥
तिहि सेवा अफलु ना जाई। जो उनि हिति करि सेव कमाई ॥
श्री गुपाल मनि महि इहि धारा। सकल लोक तांको विस्तारा ॥
एही विधि मन महि ठहिराई। जान प्रवीन विर्था सभ पाई ॥
साधो भजनु करो चितु लाई। सांईदास अफलु ना जाई ॥५१॥

इकि दिन कंन्या सभु मिलि आई। भई इकत्रि फिरि जमुना धाई ॥
जमुना तटि जाइ वस्त्र उतारे। नग्न होइ पग जलि महि धारे ॥
राम सहित ग्वारो उठि धाए। सुरिह् सभ ले वनि महि पग पाए ॥
श्री गोपाल बलिदेव सुनायो। नीक बानि कहि तिहि समझायौ ॥
तुमि चलि हौ मै पाछे आवो। वेग विलम कछु मूल न लावौ ॥
मौहि इकु कार्जु है मेरे भाई। कार्जु करि आवो तुमि पाही ॥
राम धेनि ले वनि पग धारे। ग्वार सहित लीने ततकारे ॥
श्री कृष्णचंदि जमुना तटि आए। ग्वारिनि वचु प्रभु मनि ठहिराए ॥
ग्वार्नि सभ निर्षिनि अंभ माही। अंवरि तजि इस्नानु कराही ॥
श्री गोपाल अंवरि तिहि लीए। अंवरि ले करि माहे कीए ॥
एक व्रिक्ष ऊपरि जाइ चरि्हआ।
इहि कारुणु गिरधारी करिआ।
ग्वार्नि सभ स्नानु करायो।
तजि जलु तटि अवनि चितु लायो।
जमना तटि तिनि नैन पसारे।
अंवरि ना तिहि नैन निहारे।
अति भै चक्रित मन महि विस्माई।
अंवरि हमि किसे षडे दुराई।
अंभि ठांढे इति उति निर्षायो।
इहि विधि तिहि मनु वहु सुकचायो।
श्री कृष्णचंदु देष्यो मुसकाई।
लज्जामान अंभ महि ठहिराई।

श्री नंदिलाल सों वचन उचारे।
हमि बलि जावो प्रांन अधारे।
अंबरि हमिरे प्रभ तुम देवो।
हमिरी विनती मन धरि लेवो।
श्री गोपाल ग्वारिन समझाए।
वस्त्रि लेहु अंभि बाहिरि आए।
लज्जामान होइ वहु सुकचावहि।
अंभि कौ तजि बाहिरि ना आवहि।
कंपनि है ठांढी अंभि माही।
श्री कृष्णचंदु मनि महि मुसकाही।
तवि इकि ग्वार्नि क्रोधु कराई।
श्री गोपाल सौ वचन सुनाई।
तुमिरो पित भूपति तो नाही।
किउं हमि परि तूं जोरु कराही।
सभ ग्वारिनि ऐसे ही भाषा।
सांईदास प्रभ अंबरि राषा ॥५२

ग्वार्नि मांगेहि प्रभु देवै नाही। ऐसे आपसि महि झगिराही ॥
श्री कृष्ण कह्यो अंवरि लेउो आई। काहे अंभि महि तुमि ठहिराई ॥
जवि कान्हरि ने इहि विधि वांनी। केतकि ग्वार्नि महि जो स्यानी ॥
तिनि सभहूं मिलि मतु ठहिरावो। हमि देवी सो एहि जचायो ॥
हमिरी प्रीति कृष्ण संग देवहु। हमि आतम सुप्रसन्न करि लेवहु ॥
पार्वती हमि किर्पा धारी। दर्सनु आइ दीउो गिर्धारी ॥
इहि कहि जलु तजि वाहरि आई। आइ गोपाल आगे ठहिराई ॥
श्री कृष्णचंदि अंवरि तिहि दीए। सुप्रसन्न आतम तिहि कीए ॥
तांको कह्यो ठौर चितु राष्यौ। श्री नाराइण मुष ते भाष्यो ॥
जवि वहुरो कातिक फिरि आवै। दु:ख दर्दु सभि ही मिटि जावै ॥
इसि जमुना के रे तटि माही। रास लील्हा कर है अधिकाही ॥
हमि तुमि रास लील्हा तवि करही। प्रीति भाउ हृदे अंतरि धरही ॥
ग्वार्नि की वांछा सी एही। श्री कृष्णचंद हमि होइ सनेही ॥

इहि प्रयोग सेवा करी देवी। एही वांछा करि इनि सेवी ।।
जो सेवै सोई फलु पावै। सांईदास दुःखु निकटि न आवै ।।५३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकवीशमोध्यायः ॥ २१ ॥

ग्वार्नि गीति मंगल वहु गाए।
श्री कृष्णचंद मिलि आनंद आए।
षेलति हासति ग्रहि महि आई।
भिन्न भिन्न ग्रहि जाइ ठहिराई।
तहा ग्वार्नि कुस्म विछाई।
अति सुरंग तिहि मालि बनाई।
सक्लि ग्वार्नि मिलि मंगल गाही।
अति सोभति है कुस्म तिन्हाही।
तिन्हो कुस्म ऊपरि पग दीने।
ग्वार्नि ने इहि कार्नि कीने।
चहूं ओरि तिहि कुस्म की माला।
राषी निर्षिति श्री व्रिज वाला।
श्री गोपाल तिहि वचन सुनाए।
करि जोरे मुष ते उचिराए।
हमहि जंगमि सती द्रिष्ट आवहि।
घामु सहे हमि छांइ करावहि।
इनि से अधिक लोकि वरमावहि।
धन्न व्रिक्ष इहि कामु करावहि।
वहुरि कह्यो ग्वार्नि प्रभताई।
सुण हो विनती त्रिभवनि सांई।
हमि कौ भूष अधिक प्रभ लागी।
जतन करहि हम नाहि त्यागी।
आजु न ग्रहि ते हमि कछु आयो।
कहा करेहि हमि भूषि सतायो।

श्री नंद नंदन वचन उचारे।
सुण हो सषा तुमि वचन हमारे।
मौको भी इनि भूषि सतायो।
भूष हाथ से वहु दुःख पायो।
जमुना तटि ब्राह्मण वहु रहिई।
होम यज्ञ कर्ते वहु अहई।
तुमि तिन विपां पाहे जावो।
मोहि नामु तिनि जाइ सुनावो।
एहि कहो तुमि जाइ करि भाई।
जो मै तुमि कह्यो सुनाई।
हमिरे ग्रहि ते ना कछु आयो।
हमि को षुध्या अति संतायो।।
रंचिक भातु देहि हमि ताई।
सांईदास मनि वहु सुषु पाई।। ५४।।
ग्वारि चले विपो पहि आए।
जहा विपों ने यज्ञ रचाए।
जो कह्यो प्रभ सो आषि सुनायो।
विपों सुणि मुष वचनु वतायो।
अवि हमहि होमु यज्ञ न कीआ।
आहूती हमहि नाही दीआ।
ग्वारि तवि हीते फिरि आए। श्री जगदीस सौ आइ सुनाए।।
विपों भोजनु हमहि न दीना।
अति अभिमानु तिनहों मन कीना।
तवि श्री नंद नंदन इउ वोले।
इहि प्रजोग तुमि मनु ना डोले।
दिज पत्नी पाहे तुमि जावो।
तिन पहि जाइ करि भातु ल्यावो।
ग्वारि गए दिज पत्नी पाहे।
वहि वैठी अपुने ग्रहि माहे।

पत्नी को तिनि आषि सुनाया।
श्री गोपाल तुमि पाहि पठाया।
श्री कृष्णचंदि बिंद्रावनि माही।
गो चरावहि ताहि मझाही।
आजु न षाने को कछु आयो।
अधिक मुषि ने ताहि संतायो।
जो कछु तुमि देवौ ले जावहि।
बहुतु भला हरि भोजनु पावहि।
जवि सभ जग पत्नी विधि पाई।
तवि ही इहि विधि आषि सुण हिर्षाई।
हमि सुणति श्री कृष्ण को नामा।
कमल नैन आत्म विस्रामा।
बिंद्रावनि महि धेन चरावति।
सहिति ग्वारा वेन वजावति।
हमि अपुने हृदे माहि इहि ठानी।
दर्सनु पावहि सारंग पानी।
ग्वारो को कह्यो वहु भला आए।
श्री मुरारी ने तुमहि पठाए।
हमि भी सभ तुमिरे संग धावहि।
जाइ कृष्ण को दर्सनु पावहि।
अनकि अनकि तिहि भोजन लीने।
चाहिति गवनु बिंद्रावनि कीने।
तवि ही दिज पत्नी पति आए।
देषि ताहि मनि महि विस्माए।
कहति कहा धावति हो नारी।
मूढि मति कछु भई तिहारी।
जग पत्नी पति इउं उचिराए।
सांईदास प्रभ ऐसे भाए ॥५५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुखदेव परीक्षति संवादे द्वाविसमोध्यायः ॥२२॥

दिज पत्नी पति को समिझावहि । हरि दर्सनु देषनि को जावहि ।।
हरि दर्सनु हमि देषि कराही । फिरि आवति हो तुमिरे पाही ।।
इहि मति ढीठि जावनि दे देवहि । जाणे ते तिनि को हटिकेवहि ।।
एही कहे सभ जोषिता ताई । ग्वारि ढीठि बिंद्रावनि माही ।।
तुमि तिहि ढीठो पहि किउ जावो । कित कौ अपुनी लाज गवावो ।।
केतकि जोषता जुरि के धाई । चली चली बिंद्रावनि आई ।।
केतकि पति भवन महि डार्यो । ताहि वाहरि जंद्राला मार्यो ।।
तिहि ताई पति जाण न देओ । एहि कार्णु विपों ने कीओ ।।
जो गई बिंद्रा बनि के माही । जो कछु सा उनि जोषिता पाही ।।
षडि कौलापति पहि ठहिरायो । मुषि अपुने ते वचनु सुनायो ।।
क्रिपा करो करि भोजनु पावों । मुषि अपुने ते वचनु सुनावों ।।
सुप्रसन्न होइ भोजनु पायो । श्री नंद नंदिन तव ही सुनायो ।।
चतुरि भुजा होइ वैकुंठि जावो ।
वैकुंठि महि तुमि वहु सुषु पावो ।
तवि विप वनिता विनतीं ठानी ।
पति विनु कहा जाहि शारंगपानी ।
श्री गोपाल कह्या पति ले जावो ।
अपुने पति तुमि सहिति चलावो ।
अवि जावो अपुने ग्रहि माही ।
जवि तुमि वांछो पाहो ताही ।
विप जोषिता सभ कह्यो पुकारी ।
तुमि दर्सनु पायो वनिवारी ।
इहि दर्सन की वहुत प्यासी ।
घटि घटि के तुमि अंतरि वासी ।
पद्मज मघवा जत्न कमाए ।
तुमि दर्सनु तिन भूल न पाए ।
जो हमि प्राप्ति भयो मुरारी ।
हमि इसि छवि ऊपरि वलिहारी ।
कहा कामु जो ग्रहि कौ जावहि । चर्नि कमल से दूरि परावहि ।।
सकल जोषिता हरि ध्यानु लगाया । हरि के ध्यान सो प्रानि समाया ।।

इहि जो दर्सन को चलि आई। महा पर्मि गति इनि ने पाई।।
दर्सन करि प्रभि को फिरि आई। अति अनंदि मंगल वहु गाई।।
तिन के पति ने तिन को कह्या। धन्न भाग तुमि हरि पहि गया।।
हमि को भी क्रितार्थि कीना।
तुमि श्री क्रिष्ण को भोजनु दीना।
हमि सभि विप विंद्रावनि माही।
होम यज्ञ करि ताहि मझाही।
ताहि हमि पहि आए ग्वारि।
कह्यो पठाया हमहि मुरारी।
तुमि हमि ताई भोजनु देवौ।
सुप्रसन्नि चितु हमहि करेवौ।
तिहि समे मूढि मत्ति हमिरी होई।
हमि वीच से सुर्ति ना कोई।
वेदि स्मिृंति एह ही भाषहि।
हौम यज्ञ करिहो इहि आवहि।
होम यज्ञ इहि कार्ण करही।
राम नाम को सदा उचरही।
श्री क्रिष्ण को दर्सनु पावहि।
होम यज्ञ इसि वाति करावहि।
सो प्रभ फिर्ते हैं वनि माहि
विंद्रावनि महि धेनि चराही।
हमि मति तिहि समे अहिराई।
हमि पहि तिहि कछु दीआ न जाई।
हमि सभ महि किसे एहि न भाष्यौ।
इहि विधि किने न मनि महि राष्यौ।
भोजनु प्रभु ले मांगनि आए।
इहि विधि तवि किसे नां उचिराए।
तुमि नें हमि कहु वहु सुषु दीआ।
श्री क्रिष्णचंदि को दर्सुनु कीआ।
धन्न धन्न मर्ति तुमिरी भामा। तुमि ने ऐसो कीनो कामा।।

हमि को तुमि ने मुक्ति कराओ।
तुमि प्रजोग हमि ने सुषु पायो।
ऐसे विपो वचनि उचारे। सांईदास सदा वलिहारे।५६।

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री शुकदेव परीक्षति संवादे त्रिविंशतिमोध्यायः ॥२३॥

गोपीनाथ गोविंद मुरारे। कौलापति त्रिभवनि दातारे॥
वैन वजावति ग्रहि को धाए। कर्ति क्रीडा गोकलि महि आए॥
नंदि महिरु वृक्षिभानु तहा ही। गोप सकल गोकलि के माही॥
मघवा की वहु पूजा करही। वर्षि वितीति होए चित धरही॥
सुरपति की पूजा चितु लायो। वालि वृद्धि ईहि कामु कमायो॥
ग्रहि ग्रहि महि मिष्टानु करावहि। करि इकि ठौर सभ विप पलावहि
नंदि महिरि सौ कृष्ण सुनायो। हे पिति किउं मिष्टानु करायो॥
ग्रहि ग्रहि महि जो आनंदु कीआ। मिष्टानु पकिवानि को चितु दीआ
कहा करो इसु मोहि सुणावौ। तौ मैं जानो कहा करावौ॥
नंदि महिर तांकहु प्रतु दीना। इहि प्रजोग हमि ने इहि कीना॥
राजा इंद्र अति वलिकाई। ताहि सेव करि हमरे भाई॥
इकि वर्षि पाछे पूजा करही। तिहि स्मिरनु मनि अंतरि धरही॥
मघवा हमि परि सुप्रसन्न होवै। मेघु वसावै वहु दुःख खोवे॥
मेघ पड़े त्रिणु वहुता होई। भूमि सकल परिफुल्लति होई॥
अधिक अनाजु उपिजावै। सभ ही लोकु महा सुषु पावै॥
तवि नंदिनंदनि एहि वपाना। तांकहु वलु कहा कछु उपिजावै॥
मघिवा कौ जौनु जो वर्षा लावै। तांकहु वलु कहा कछु उपिजावै
सुगुरु[1] विनु आज्ञा क्या करही। सांईदास वां से क्या सरही॥५७॥

अवि ते सुरपति कछू न देवो। मोहि कहा मन महि धरि लेवो॥
हे मोहि पिता गोवर्धन जावो। तहा जाइ मिष्टानु करावो॥
विपो को वहु भोजनु देवौ। सुप्रसन्न तिहि चितु करेवो॥
विप षलावो तुमि धर्मु होई। ब्रह्म भोजु तुमिरो दुःख षोई॥

---

१. यहां अब यह शब्द इन्द्र के अर्थ में आया है।

मेघ अधिक तबि वर्षा लावहि। होइ अनाजु मेवे उपिजावेहि ॥
नंदि महिरि गोप कह्यो पुकारे। सुण हो गोपो वीर हमारे ॥
श्री कृष्णचंदि मोहि एहि सुणायो।
मघवा भोज तुमि काहि करायो।
वर्षि न जाइ ब्रह्म भोजु करावो।
ब्राह्मण के सदि के ताहि षलावो।
मेघ अधिक होवहि सुष पावो।
त्रिण होइ अधिक सो धेन चरावो।
जो इहि कहे होइ फुनि सोई।
इसि वचि मेटि न सकै कोई।
जो इहि कहे सोई हमि करही।
श्री कृष्ण कहा मनि अंतरि धरही।
नंदि महिर व्रिषभान सुनाई।
व्रिषभान इहि विधि मनि ठहिराई।
गोप सहित सभि संग चलाए। श्री गोपाल जवि ताहि वताए ॥
अंम्रितु ले गोवर्धिन धाए। तहा जाइ मिष्टानु कराए ॥
अधिक विपो को भोजनु दीना। सुप्रसन्न आतम तिहि कीना ॥
श्री मुरारि तहा लील्हा धरी। एक रूपु कीनो वनिवारी ॥
ग्वर्धिनि ऊपरि रूपु वैठिलाया। लील्हा कर्के ताहि टिकाया ॥
गोप जोषिता सक्लि पूछाई। प्रीति भई तुमि रूप गुसांई ॥
तवि वहि रूपु प्रतु इहि देवै। प्रीति भई आत्म सुषु होवै ॥
इहि प्रजोग रूपु प्रभ कीना। सकल गोप को भ्राति हिरि लीना
गोप प्रतीति करहि मनि माही। इहि न कहे ईहा कछु नाही ॥
विपो को भोजनु भलो दीना। ग्वर्धनि को प्रदक्षिणा कीना ॥
हाथ जोरि मुषि ते उचिरायो। ताहि रूप कौ आषि सुणायो ॥
हे हरि रूप मेघ वहु होवहि। तांते गोप भ्रात मनि षोवहि ॥
हे साधो मनि दया वसावो। सांईदास अहि निस गुण गावो ॥५८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चतुर्विशमोध्यायः ॥ २४ ॥

गोप सकल ब्रह्म भोजु करी ग्राए।
ब्रह्म भोज करि गोकल धाए।
वैनि शब्द कर्के सुषु दीना।
श्री कृष्णचंदि इहि कार्णु कीना।
एक दिन नार्द ने क्या कीग्रा।
मघिवा पुरि जावनि चितु दीग्रा।
मघिवा सौ तिन कह्यो सुणाई।
सुण हो मघिवा मेरे भाई।
नंद महिरु गोकलि विषे रहे। सकल गोप ताहूं संग ग्रहे।।
तुमिरी पूजा वही करावहि। तुमि यज्ञ कर्न को चितु लावहि।।
कृष्ण नामु सुत नंदि को भाई। तिन ही गोप कौ कह्यो सुनाई।।
मघिवा को यज्ञ तुमि ना करहो। यज्ञ कर्नि गोविंद चित धरहो।।
सुर्गरि नार्दि सौ सुण पायो। ग्रति क्रोधु मनि महि ठहिरायौ।।
उठ सादित मेघ लीओ वुलाई।
तिहि को कह्यो सुरिपति समिझाई।
गोकल परि जाइ वर्षा लावो।
गोकलि को तुमि मूल गवावो।
सुरपति ने तिहि एहि सुणाया।
ग्रदि सादित मेघु तवि ही चलि ग्राया।
वार शनिश्चरि पौणु चलायो।
पाछे ग्रहिणि की वर्षा लायो।
कंकरि की वर्षा फिर लाई। क्रोधु कीयो मघवे ग्रधिकाई।।
गोप जोषता सभ संग ल्याए। श्री कृष्णचंदि पहि ग्राइ ठहिराए।।
करि जोरे मुख विनती ठांनी। हम वलि जावहि सारंग पानी।।
तुमि विन ग्रोटि न होइ हमारी। मघिवा क्रोधु कीओ ग्रति भारो।।
हमि सभ को इहि मारि चुकावै। नीर माहि हमि प्रांन हतावै।।
त्रैलोक को नाइकु स्वामी। सकल घटा के ग्रंतरि जामी।।
मनि महि प्रभ लीओ वीचारी। सुरपति क्रोधु कीयो ग्रधिकारी।।
श्री कौलापति ने क्या कीग्रा। गोप सहाय प्रभ ने करि लीग्रा।।

गवर्धनि को काटि प्रभ लीना।
करि नान्ही अंगुरी परि ठांर्या कीना।
ले करि गोकलि परि ठहिरायो।
गोप सकल सुरिह तले छपाया।
सभि ही ने आश्रमु आइ लीनो।
गवर्धनि तले आइ वासा कीनो।
जलु कंकरि मार्त अरु दावा।
सप्त दिनस मघवा वसावा।
मानो कुसम की वर्षा होई।
गोप सुर्हो दुःख भयो न कोई।
सप्त दिनसि वर्षा उनि लाई।
पाछे से रवि दई दिषाई।
नंदि जसोदा ने क्या कीआ।
श्री कृष्णचंदि को उर महि लीआ।
ले अंग महि मुष परि करि फेरहि।
श्री व्रिजनाथ केरा मुष हेरहि।
नंदि महिर व्रिष भान जवि कह्या।
प्रतक्षि कृष्ण हमिरे ग्रहि अह्या।
केतकि उपाधहि हमि परि आई।
इनि कान्हरि ने दूरा कराई।
जो इहि ना होता तो क्या कर्ते।
कैसे सुख मनि अंतरि धर्ते।
गोविंद इसि की करे कल्याना।
सकल गोप मनि महि इहिआना।
हमि को इनि ने लीओ छडाई। सांईदास प्रभ सदा सहाई॥५६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंचविंशतमोध्यायः॥२५॥

मघवा लज्जामान होइ धायो। श्री कांन्हरि के आगे आयो॥
पीतंव्ररि उरि माहे डारा। चर्नि गहे मुष वचन उचारा॥

मै अपिराधी मति का हीनु। कहा उस्तति करहो मै दीनु॥
तुमिरा अंतु कौणु कोई पावै। तुमिरा अंतु पावना ना आवै॥
हमिरा औगुणु जाणि मिटावौ।
अपुनी करुणा वेग करावौ।
एक दिन गोप नंदि पहि आए।
नंदि महिर सौ आप सुणाए।
हमिरे ग्रहि कछु रूप नराइण।
प्रगटि भयो त्रिभवनि को साइण।
हमि मति हीन गवारि अहीर।
इहि कौलापति गहिर गंभीर।
अनकि अनिकि लीलहा इनि कीने।
अति अपिति ग्रहु मार्के दीने।
प्रथम अष्ट दिनसि क्या होया।
वकी मारि करि हमि दुःख षोया।
वहुरो एक मास का भया।
गाडा करि ल्लो सो डारि दया।
करि पल्लो सो दीओ रुढाई।
तवि हमि को इहि चर्तु दिषाई।
एक वर्षि को पाछे भया।
त्रिणावर्ति को ताहि हति लया।
पांच वर्ष जो अवस्ता पाई।
तव कांन्हरि इहि रचिन रचाई।
माषनु जसुमत का ले धाया।
मर्कटि को षडि आगा षवाया।
जसुमति तव इसि पाछे धाई।
जाह तिन गह्यो कौर कन्हाई।
जसुमति ऊषलि सहिति वंधावो।
श्री गोपाल के मनि महि आयो।
जुमला अर्ज्जुन को निस्तारो। नार्दि ऋषि को श्रापु निवारो॥
तुम करहि वांछहि वहु व्रिष भये। श्री कृष्ण ऊषल सहित तहा गए॥

भूल से ब्रिक्षि काटि निकारे। इहि लीलहा कीनी तत्कारे।।
वहुरो वछिउो को ले धाए। कर्ति कलौल ब्रिंद्रावनि आए।।
दुष्ट अघासुरु वनि महि आयो। तांको प्रभ ने वेग हतायो।।
सुण हो जसु गोप नंदि सुणावहि। सांईदास विधि सकल वतावहि।।६०

पर्षासुरु आयो वनि माही।
ताहि हत्यो धेनिकि सहिताही।
कालीनाग को मारि निकार्यो।
तिहि कुंडि अंभु मीठा करि डार्यो।
ग्वर्धिनि को हरि लीयो उठाई।
गोप लीलहा प्रभ नंदि सुनाई।
जो इहि लीलहा को चित धारे।
श्री गोपाल तिहि अधमि निवारे।
गोप लीलहा सभ आषि सुनाई।
सांईदास सुण करि सुषु पाई।।६१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षर्डविंशमोध्यायः।।२६।।

नंदि महिरु गोपो समझावै।
नीक नीक विधि नाहि वतावै।
तुमि अजहूं इसि विधि ना जानी।
कांन्हरि लीलहा नांहि पछानी।
गर्गि स्वामि मोसो आषा।
कृष्ण चिहनि कांन्हरि के भाषा।
वसुदेव के ग्रहि भी इहु आवा।
जहा आइ देवकी गर्भि पाया।
एकु नामु इसि को नही माई।
मोको गर्गि ने एहि वताई।
प्रतक्षि कृष्ण आयो हमि माही।
हमि इसि लीलहा जानी नाही।

अजहू लील्हा करे अनेका।
पूर्ण ब्रह्म है बुधि ववेका।
हमि मति हीन ग्वार अधीना।
इहि कौलापति ज्ञान प्रवीना।
हमिरे परि करुणा इनि धारी।
पग दीने हमि अहि वनिवारी।
सुरपति ने मनि एहि वीचारा।
मै औगुणु कीनो अति भारा।
सप्त दिनस मै मेघु वसायो।
गोकल पूर्न को चितु लायो।
श्री जदुनाथ सप्ति दिन ताई।
ग्वर्धनु लीओ करि पल्लो पाई।
मोहि सरि किनहूं न औगुणु कीना।
मघवा ने इहि मनि महि लीना।
कामधेन सुगरु संग लीए। श्री विंद्रावनि को पगि दीए।।
श्री कृष्णचंद की सर्नी आवो। अपुने सिरु तिन तले करायो।।
द्रिग हरि सेती जोड नि साके। सुकिचमान होइ प्रभ सों ताके।।
सुकिचमान होइ ठांडा भया। अति अधीन सुकिच मनु रह्या।।
कामधेनि मघवा सौ भाषा। सांईदास आगे होइ आषा।।६२

तव मघवा आगे को आया। काम धेनि जवि तांहि सुनाया।।
सुगरि ने करि जोड कराही। प्रभ सो विनती कीनी ताही।।
मोहि सरि औगुणु औरु न कोई।
दूजा इसि जग ऊपरि होई।
मोहि औगुण हरि चित न दीजै।
इहि करुणा प्रभ जनि परि कीजै।
दीनानाथ कौलापति केसर।
मुषि से कह्यो प्रभ सक्लि विसेस्वर।
सुरपति मतु कछु मनि महि आनो।
मतु तुमि इहि विधि हृदे पछानो।

मोहि यज्ञ प्रभ दूरि करायो।
मो सो इही वेरु कमायो।
मै तोह यज्ञ दूरि ना कीना।
तुमि को क्रितार्थु करि लीना।
इहि प्रजोग आइ दर्सनु कर्‌यो।
हमि चरना सेती चितु धर्‌यो।
जैसे पद्‌मज सभ रिषि आए।
दर्सनु करि फिरि वैकुंठि सिधाए।
तुमि अपुना चितु ठौरहि राषो।
श्री गोपाल की उस्तति भाषो।
कामधेनि सुगरि प्रतु कीना।
मघवा को तिहि इहि कहि दीना।
तुमि परि गोविंद किर्पा धारी।
दर्सनु दीने तोहि मुरारी।
कामधेन प्रभ आष सुणाया।
श्री गोपाल संतनि सुषदाया।
तुमिरी उस्तति कहा वषानो।
मै तोहि उस्तति को कहा जानो।
ऐरापति गंगा जलु ल्याया।
कामधेनि इस्नानु कराया।
कामधेनि फिरि हरि सौ भाषा।
करि जोरे ऐसो ही आषा।
श्री नंदनंदनकौरि कन्हाई।
मोहि उस्तति कछू कही न जाई।
जहा कहा तुमरे संतनि ताई।
नग्नि भूमि हौवै अधिकाई।
तवि तुमि हरि को आज्ञा करहो।
अपुने वचु ऊपरि हमि धरहो।
ता मै सभ कछु आगे ल्यायो।
भोजनु दे अंबरि पहिरावो।

तुमि आज्ञा करि सभ किछु होई।
जो तुमि कहो करहि हमि सोई।
कामधेनि इहि विनती ठानी।
श्री कौलापति मनि महि आनी।
फिरि सुगरु आयो हरि पाई। करी प्रकर्मा सीसु निवाई॥
नमस्कारि करि विदआ पाई। अपुने पुरि को चलियो धाई॥
चला चला अपुने पुरि आयो। सांईदास मघवे सुष पायो॥६३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादें सप्तविंशमोध्याय: ॥ २७ ॥

एकि दिन व्रतु एकादशी आयो।
विंद्रावनि महि मंगलि गायो।
पंडिति वेदि पढिति अधिकाई।
तिहि पंडिति ने एहि वताई।
दो घटी द्वादशी तिहि दिन भाई।
सकल पंडिति एहि वाति सुनाई।
जवि सभि पंडति इहि विधि भाषी।
तव नंदि गोप सकली विधि लाषी।
मध्य रैनि माहे उठि धाए।
तटि रवि दुहिता जा ठहिराए।
तहा जाइ करि जागनु कीना।
जमुना तटि परि वासा लीना।
भई वितीति मध्य जवि रैन।
उडगनि वहु चमिकति प्रगटैन।
यमुना अंभ माहे पगि धारे।
चर्नि पषार पान पषारे।
सकल गोप अंभि पगि दीए।
भली भांति इस्नानु तिहि कीए।
तहा दूति नृप वर्नि के आए।
नंदि मन्दिर को लें उठि धाए।

नंदि महिर कौ वांधि कराही।
ले गए तव नृप वर्नि के पाही।
गोप अंभि तजि वाहिर आए।
तिहि आपसि महि प्रश्न चलाए।
सभ ही गोप नंदि जी नाही।
तव ही पुकारि उठे अधिकाही।
श्री कृष्ण कृष्ण करि वचन उचारे।
सुण हो राम तुमि प्रांन अधारे।
नंदि महिर को को ले धाया।
अंभि से फिरि वाहिरि ना आया।
जवि कौलापति इहि सुण पाया।
तवि मनि महि विस्वासु कराया।
असुरु कहा वलु जो ईहा आवहि।
ईहा आइ करि वलु दिषलावहि।
वर्नि के दूतो षड्यो दुराई।
सभि विधि जाणे कौर कन्हाई।
तात्काल अंभि महि पगि दीना।
वेग विलम कछु मूल न कीन्हा।
गयो पताल प्रभु विलम न कीनी।
उौरु वाति कछु हृदे न लीनी।
निकटि सिंहासन वर्नि के आयो।
नृप वर्नि प्रभ को निर्षायो।
त्याग सिंहासन उठि करि धाया।
सांईदास हरि पग चितु लाया।।६४

वर्नि करी विनती प्रभि पाई।
मै तोहि सर्ना नाथ गोसाई।
मोहि दूति नंदि को नाहि पछाना।
इहि प्रजोग ईहां तकि आना।

तुमि करुणा अपुनी प्रभ धारो।
हमिरे औगुण नाहि विचारो।
राजु मालु प्रभ तुमि ने दीआ।
हमिरे परि आजु करुणा कीआ।
आजु तो हमिरी भई कल्याना।
तुमि पगि हमि मस्तिकि ठहिराना।
विनती करि नृपु वर्नि सिधाया।
ततक्षिण भवन माहे वहु आया।
मोतनि की माला ले आयो।
श्री कृष्ण चर्नि आगे ठहिरायो।
प्रभि की उस्तति अनकि वीचारी।
तूं करुणा निधि कुंज विहारी।
तोहि पग रजि जिहि मुकटि परि आवै।
आवागौना ताहि मिटावै।
इहि विधि कहि नंदि को ले आयो।
श्री मुरारि पहि आण टिकायो।
श्री कृष्णचंदि पित को संग लीआ।
गोकलि के मग तवि पगु दीआ।
ततक्षिण वीच गोकलि महि आया।
नंदि वार्ता गोप सुनाया।
इहि वाल्कु हमिरे भगवाना। पूर्ण ब्रह्म मै हृदे पछाना।।
वर्नि के दूति मोहि पकिडायो। वर्नि पाहे षडि के ठहिरायो।।
जैसे को काहू वंदि भाई। वंदी ज्युं राष्यो हमि ताई।।
हमि वाल्क ऊहा पगि धारे। वर्नी तवी इनि लीओ निहारे।।
तजि सिंहासनु चर्नी लागा। गर्वु गुमानु सकल उनि त्यागा।।
अपुने पग सेती चलि आया। आइ कृष्ण आगे ठहिराया।।
चर्नि वंदिना इसि सों कीनी। अति प्रदक्षिणा प्रभ को दीनी।।
इहि प्रजोग मै प्रभु करि जाना। पूर्ण ब्रह्म करि हृदे पछाना।।
नंदि महिरि विधि गोप सुनाई। सांईदास प्रभ सदा सहाई।।६५

एकि दिन कृष्ण हृदे ठहिराई।
इनि लोको मोहि गति ना पाई।
इनि को दर्सनु वैकुंठि करावो।
नंदि महिर सहिति भर्मु हिरावो।
एहि गोग[1] मति इहि है थोरी।
जानति नाही है गति मोरी।
मै गोवर्धनि सप्त दिन ताई।
राष्यो है पल्लो करि पाई।
मघवा क्रोध ते लीए छडाए।
अपुने रूप मै इनहि दिषाए।
इन्ह अजहूं मोहि नाहि पछाना।
मानसु अपुने मनि करि जाना।
कमल नैन तहा लील्हा धारी।
विंद्रावनि महि लाल विहारी।
प्रतक्ष वैकुंठि विंद्रावनि आना।
तांकी लील्हा सकल वषाना।
जो कोऊ विंद्रावनि माही।
चतुरि भुजा सभ देत दिषाई।
एक एक महि वेद वषाने। पद्‌मज शुक देउ जो विधि जाने॥
सन्क सनंदन सन्त कुमार। निर्ति कर्ति इकि इकि के द्वार॥
नंदि महिर गोप सभि ताई। ग्वारिन सकले ताहि मझाई॥
सभ को दर्सनु वैकुंठि कराया। सकल गोप को भर्मु हिराया॥
वहुरो आए गोकल माही। ताहि अनंदु भयो अधिकाही॥
शुकदेव नृप परीक्षति स्मझावै। हे नृप मतु तूं इहि मनि ल्यावै॥
वैकुंठि से गयो फिरि ना आवै।
इहि मेरो मतु संचर पावै।
जैसे सुपलकि सुत दिषलायो।
तैसे सकल गोप निर्षायो।

---

१. यहां शब्द "गोप" चाहिए।

यमुना अंभि महि ताहि दिपारा।
तैसे प्रभ अवि लील्हा धारा।
श्री कृष्ण चंदि को जसु जो गावै।
सांईदास फिरि योनि न आवै ॥६६

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टाविंशमोध्यायः ॥२८॥

एक दिन श्री कृष्णचंदि क्या कीआ। वछे छाडि तांको पै दीआ ॥
वछडो को सारो पीरु पीवाया। मध्य रजनी वनि को ले धाया ॥
पूर्णमाशी की सी रैना। ससी अर पूर्न चढिओ कीना ॥
जा विंद्रावनि वैन वजाई। जिन वचु सुणयो सुर्ति भुलाई ॥
ग्वानि ने सुणाया व्रिज माही। मग्न भई सभ सुर्ति विसराही ॥
ऐसी मग्नि भई व्रिज नारी। तनि की सभ सुर्ति विसारी ॥
जो कोई षीर सीत सी कर्ती। त्याग चली मुर्ली धुनि सुनती ॥
जो कजिरा द्रिग माहे डारे। एक द्रिग डार्यो दूजा विसारे ॥
जो कोई सुरहो को दोहनि लागे। सुण वंसी धुनि दोहनि त्यागे ॥
जो कोई अंवरि अंग उढाए। अंबरि त्याग नग्नि ही धाए ॥
जो कोई ग्रहि महि पाकु लगाए। पाकु त्याग आतरि होइ धाए ॥
जो संग पुर्ष सेज समाही। सेज वांछहि गई बिंद्रावनि माही ॥
जो जो कामु कर्ति सी कोई। सकल त्याग दौरी फुनि सोई ॥
जोषिता ग्वारि कंन्या सभ आई। जहा कृष्ण जी वैन वजाई ॥
जलु यमुना जो चलया जाई। ठटकि रह्यो हरि वैन वजाई ॥
यमुना जलु सागरि उौर जावै। मगन भयो चलिना नही पावै ॥
ससीअर निर्ष रह्यो विस्माई। हरि लील्हा को पारु न पाई ॥
ग्वानि प्रभ उोरि घेरा पाया। प्रभ सभन के बीच समाया ॥
सकल ग्वानि को प्रभ ने कह्या। तुमि ने त्रासु कवन को लह्या ॥
व्रिज महि तो कोई असुर्न आया। ताहि असुर ने तुमहि संतायाा ॥
श्री गोपाल तिहि कह्यो सुनाई। सांईदास प्रभ वच वलि जाई ॥६७॥

ग्वानि ने तवि प्रभ प्रतु कह्या। हे कौलापति क्या उचिरह्या ॥
असुरो का वलु कहा वसावै। जो विंद्रावनि माही आवै ॥

श्री कृष्ण कहा कहे तुमि आई। मध्य रैनि विषे वनि के माही ॥
तवि सभि ग्वार्नि एहि वषानी। मग्न भई हमि सारंगपानी ॥
तुमि सभ विधि जाननिहारे। काहे पूछति हमि हि पुकारे ॥
हमिरे अंतरि की तुमि जानो। काहे को तुमि वहुरि वषानो ॥
श्री कृष्ण कह्यो ग्वार्नि के ताई। जावो तुमि अपुने ग्रहि माही ॥
ग्वार्नि फिरि कह्यो जदुराई। कहा जाहि हमि कौर कन्हाई ॥
कमल नैन वहुरो इउं भाषहि। ग्वार्नि को विधि एही आषहि ॥
तुमि जावो अपुने ग्रहि माही। भजनु करो हमिरो ग्रहि ताही ॥
अपुने ग्रहि वहि स्मिरनु करीए। हमिरे चर्नि से ती चितु धरीए ॥
मै सभ ते उसि को भला जानो। ताहि कहा मै अंतरि मानो ॥
तुमि पति अरु सुत वहु विविलाही। रुदनु कर्ति है वहु मनि माही ॥
जो कोई सीलु अपना द्रिढ राषहि। सो परि पुर्ष की वात न आषहि ॥
ग्रहि से पगु वाहिरि ना डारे। पति अपुने ठौर स्याम निहारे ॥
जो अपुने पति की करे सेवा। तांकी वांछा पूरै देवा ॥
तां परि मै होवौ सुप्रसन्न। देवो सो जो वांछे मन्न ॥
मै उसि को वैकुंठि पठावौ। मनि वांछे सो कछु पहुचावो ॥
जोषिता पति को हरि करि जाने। हरि पति महि अंतरु नही आने ॥

जिस जोषिता पतु जीवतु होई।
तिस तीर्थ व्रतु वर्न्यो न कोई।
तांको व्रितु नेमु ना आषा।
जो वहुराषे प्रभ इहि आषा।

अपने पति की सेवा करै।
ताहू चर्नि सेती चितु धरै।
श्री कृष्णचंद जवि इहि विधि ठानी।
सांईदास ग्वार्नि विस्मानी ॥६८॥

ग्वार्नि सीसु तले को कीआ।
रुदनु कर्नि को उनि चितु दीआ।
राधिका रुदनु त्याग करि दीआ।
श्री कृष्णचंद को तिन प्रतु दीआ।

तुमि जु कहा प्रभ हमिरे ताई।
पति सुत तुमिरो रुदनु कराही।
कमलापति पूर्ण भगवान।
पति सुत केहा होइ तोहि स्मान।
वहि तो एक दिन छाडहि प्राना।
तुमि पूर्ण हो पुर्ष निधाना।
तुमि पारब्रंह्म निर्भौ नरंकारा।
कर्ता पुर्षु तूं अपर अपारा।
तुमिरी गति मिति कौरण वषाने।
तुमिरी लील्हा कौनु को जाने।
ऐसो विधि काहे को भाषो।
हमि सौ अैसी वाति किउं आषो।
हमि जावे जो पग हमि जावहि।
पति सुत के जाइ दर्सनु पावहि।
केतकि के पति ने क्या कीआ।
जा करि वनि से जुषता लीआ।
आनि डारी भवनि के माही।
तिह को जावनि देवहि नाही।
तिहि हरि चर्ना ध्यानु लगाया।
मग्न भई सभ सुर्ति भुलाया।
तिसी ध्यान महि तजि दीए प्राना।
मुक्ति भई मिटयो आवनि जाना।
चढि विवाण वैकुंठि सिधाई।
महा पर्मि गति तिन ने पाई।

नृप वोल्या सुखदेव सुनाया।

जोषता भवन महि तजे प्राना। तिहि कैसे पाई पर्मि कल्याना।।
शुकदेव प्रतु नृप ताई दीना। एहि प्रश्न भलो तै कीना।।
सस पाल असुर संग विरोधु कमाया। तांकौ प्रभ वैकुंठि सिधाया।।
सतिर गुरण को कीउो पार गिरामी। पूर्ण ब्रंह्म हर अंतर जामी।।
जोही तीय जीउ प्रीति महि दीआ। हरि सेती वहुतां हितु कीआ।।

तिहि कल्याण होवै किउं नाही। इनि ने प्रीति करी मन माही ॥
वहुरो श्री कृष्ण कहा तुमि जावो। अहि अंतरि जाइ भजनु कमावौ ॥
राधिका फिरि कह्यो हरि ताई। तूं हमि को कहा वाति सुनाई ॥
जमुना जलु तीर ठहिराना। मग्न भई तुमिरी गति जाना ॥
मग्न भए मृग विंद्रावनि माही।
त्रिण न चरहि सुरिह सुधि विसराही।
हमि तो मानस है प्रभ तेरे।
कहा कहे हमि आगे तेरे।
जबि राधा जी एहि वषानी। तवि करते गही सारंग पानी ॥
लेइ कि कंदरा माहे वडिआ। ग्वार्नि चतुर्दिस घेरा करआ ॥
ताहि भवन महि फिर्त जदुराई। संग राधा जी अधिक सुहाई ॥
तहा षेलति अति आनंदि माही। अति अनंद मंगल वहु गाही ॥
ग्वार्नि मनि महि गर्वु वसाया। हमि सर दूजा जग ना आया ॥
हमि संग षेलति है वनिवारी। तटि यमुना श्री कुंज विहारी ॥
निर्वति कर्नि गर्वु इनि केरा। राधा संग चल्यो प्रभ मेरा ॥
राधा सहित लई उठि धाया। ग्वार्नि त्यागी सभ यदुराया ॥
मन महि गर्वु करो नही कोई। सांईदास पूर्न सुषु होई ॥६९

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे नर्वविशमोध्यायः ॥२९

ग्वार्नि सकली रुदनु कराही। कृष्ण विछोरे वहु दुःख पाही ॥
तव आपसि महि मतु ठहिरायो। चलिहो जो है यादम राया ॥
ग्वार्नि इहि मतु करि उठि धाई। जोहित प्रभ को वनि के माही ॥
प्रथम ग्वार्नि गगन सुनाया। श्रीकृष्णचंदि विनु वहु दुखु पाया ॥
तुमि तो धर्म स्त्रिष्ट कहावो। इंद्रभान की रष करि आवो ॥
उडगन तुमिरी छाया रहै। मोहि क्रपा करि आश्रमु लहै ॥
श्री कृष्णचंद जो तुमि कहूं देषा। हमिहि वतावो वुद्धि सरीषा ॥
एते जीइ की होइ कल्याना। तुमि तो गग्निपूर्ण निर्वाना ॥
तां कहु प्रतु आकाश न दीआ। तिह का वचु तिन हृदे न कीआ ॥
वहुरौ गवनु तहां सौ कीना। सभ ग्वार्नि आगे पगु दीना।

सभ वनु ढूंडि थकी वौराई। सभ वन त्याग विंद्रावनि आई ॥
कदंम ब्रिक्ष सौ तिन्हहि सुनायो। तुमि सौ हरि वहु हेतु वढायो ॥
तुमि संग हेतु अधिक गिर्धारी। हमि मनि अंतरि एहि वीचारी ॥
जो तुमि ने कहूं हरि निर्पाए। करुणा करि हमि देहु वताए ॥
तुमिरा धर्मु होई अधिकारा। हमि को मिलही प्रान अधारा ॥
नाहति हमिरे निकसति प्राना।
इहि विधि तुमि मनि लेहु पछाना।
कदंम ब्रिक्ष कछु वचनु न कीना।
ग्वार्नि शोकु अधिक मनि लीना।
पग तवि ग्वार्नि आगे दीने। वटि को त्याग गवनु तिहि कीनै ॥
चली-चली पीपल पहि आई। रुदनु कर्ति सभ सुधि वौराई ॥
पीपल को जाइ पूछनि लागी। और वाति सकली उनि त्यागी ॥
हे पीपलि तुमि पतति उधार्न। महा पवित्र प्रान अधार्न ॥
कमल नैन कहूं देष्या होई। हमि को देहि वताई तूं सोई ॥
चाहति अवि सकली जीउ देवहि। प्रान घात अपुने करि लेवहि ॥
पीपल भी कछु नाहि सुनायो। सांईदास ग्वार्नि दुःख पायो ॥७०

ग्वार्नि फिरि आगे कौ धाई। जहा जंगम आहे अधिकाही ॥
तांकौ ग्वार्नि आष सुनायो।
श्री कृष्ण फिर्ति तुम महि अधिकायो।
हमि को कृष्ण जी तुमि वतिलावो।
वेग विलम कछु मूल न लावो।
नाहिति प्रान निकस हमि जाही।
हमि ताई कछु सूझति नाही।
जंगम भी कछु प्रतु ना दीना।
ग्वार्नि का वचु हृदे न कीना।
वहुरो धर्नि से ऐसे आषहि।
अपुने मन की विर्था भाषहि।
तोहि ऊपरि नित प्रति हरि फिरही।
अधिक चर्ति प्रभु तुमि परि करही।

तुमि तो धर्म विषे वहु नीकी।
इहि विधि हमि आषी है जी की।
त्रिणु मेवा अन्नु तुमि ते होई।
तुमि विनु उौरु करे ना कोई।
सकिल स्रिष्ट को तुमि सिरि भारा।
तुमिरो नामु है परि उपिकारा।
तोह ऊपरि सभु जगतु वसावै।
जीव जंत जो कछु द्रिष्ट आवै।
श्री कृष्णचंदि को देहु वताई। हमि वचि सुण ले वसुधा माई।।
वसुधा भी ना दीओ विचारा। हार परी सकला वलु हारा।।
तुलिसी सों फिरि कीओ पुकारा। तुमि कहूं देषे प्रान अधारा।।
तुमि सौ तांको वहु हितु होई। हमि को देह वता करि सोई।।
तूं तो सदा रहे संग तांके। कैसे वछोहो तुमि पायो वाते।।
षग मृग कोकल सकल पुछाए। तिन ने किस ते प्रतु ना पाए।।
वहुरो तिन इहि मतु ठहिरायो। सुण हो साधो हितु चितु लायो।।
रास लील्हा प्रभ जहा कराई। तहूं ठौर वैसे हमि जाई।।
बिंद्रा वनि को तव तजि आई। रवि दुहिता तटि आइ ठहिराई।।
जैसे प्रभ जी वैन वजावति। तैसे ग्वार्नि वचन सुनावति।।
वहुरो ग्वानि[1] वचन उचारे। कहा गए हमि प्रान अधारे।।
तांको दर्सनु कहा ते पावहि। तिस विनु मनु हमि कांसो लावहि।।
निहवलि होइ ग्वानि वौराई। सांईदास ग्वार्नि विसमाई।।७१।।

ग्वार्नि मतु फिरि एहि वनायो। एक पिता नंदु करि ठहिरायो।।
ग्वार्नि महि इकु कृष्ण वनाया। वालि लील्हा कर्नि चितु लाया।।
एकसि को जसुधा करि लीआ। एहि लील्हा कर्नि चितु दीआ।।
एक वकी को रूप वनायो। कुस्म अधिक ले केसि उर्झायो।।
पूतना कृष्ण को अंग महि लीआ। विषु अस्थन लाइ मुष महि दीआ
श्री कृष्ण चंदि ने लील्हा धारी। रग कुचिकी ससु षैंच निकारी।।
वकी के प्रांन आप हिरि लीए। एहि कार्णु ग्वार्नि तवि कीए।।

१. यहां "ग्वार्नि" चाहिए 'ं' छूट गया है।

वहुरो कृष्ण मास इकि होए। जसुमति दुःख सकिल मनि षोए॥
गाडे तले जाइ शैनु करायो। तति प्रभ गाडा वेग रुढ़्हायो॥
पगि पल्लो सेती जदुराई। गाडी को दीउो वेग चलाई॥
वहुरो वर्षि अवस्ता पाई। श्री गोपाल भक्तिन सुषदाई॥
जसुधा भौन आगे वैठिलाया। अपनो हितु अहि काम सो लाया॥
त्रिणावर्ति असुर क्या कीआ। पवन काठि को रूपु करि लीआ॥
कृष्ण को पकरि गगनि ते चर्‌या। महाराज तहा लील्हा कर्‌या॥
त्रिणावर्ति को उरि से लीना। पडि माषनु मर्कटि को दीना॥
जसुमति लकुटी ले करि धाई। आगे भागे जाति कन्हाई॥
थक्ति भई प्रभु करि ना आयो। जसुमति ने वलु सकला हिरायो॥
तव श्री कृष्ण कहा हमि मय्या। हमि पाछे धाई थकि रहीय्या॥
आगे आइ जसु मति ठहिराया। जसुमति ने इहि मतु ठहिराया॥
ऊषलि सहिति वाध्यो तवि आनि। तवि चित आयो इहि भगवान॥
जुमला अर्जुन को निस्तारो। नार्दि ऋषि को स्रापु निवार्‌यो॥
नंदि महिरि अहि पाछे गया। तहा जाइ करि ठांढा भया॥
मूलि से दोनो व्रिक्ष उपारे। सांईदास ऋषि तात उधारे॥७२॥

पांच वर्षि का कांन्हर भया। वछे चरावनि वन महि गया॥
असुरु वसासुरु वन महि आया। वछे को रूपु माया करि पाया॥
वछे सकल महि जा ठहिराना। श्री नंद नंदन ताहि पछाना॥
श्री कृष्ण राम सों कह्यो सुनाई। सुण हो इहि विधि मेरे भाई॥
दुष्ट वसासुरु वछे को वपु कीनो। हमि वछडों केरा संगु लीनो॥
हमिरे मार्नि कार्नि आया। दुष्टि कंस ने एहि पठाया॥
मै तुमि कहो सुनो मेरे भाई। चीति धरो मतु तुमि चुकि जाई॥
मै कहो बछे हेर्नि को जावौ। जिहि वारी होइ हेर ल्यावो॥
तवि तूं कहे प्रभ वारि तुम्हारी। उौह कौनु जावै गिरधारी॥
वछे चर्ति त्रिण दूरि सिधाए। तवि कौलापति वचि उचिराए॥
राम वछे वहु दूरि सिधारे। सुण हो इहि विधि वीर हमारे॥
कौन वारि वछिउो को फेरि आने। श्री गोपाल इहि वाति वषाने
राम कह्‌यो प्रभ वारि तुम्हारी। हमि सो पूछति है वनिवारी॥

श्री कृष्णचंदि सुरा करि उठि धाए । तात्काल वछिउो निकिटि आए
दोई पगि प्रभ खलि के लीने । फेरि फेरि करि वसुधा दीने ।।
वहुरो प्रभ ने व्रिक्ष सौ मारा । मार मारि तिस जीउ निकारा ।।
असुरु वकासुरु फिर नाह आयो । वग को वपु तिन दुष्ट वनायो ।।
ग्वारि वछे सभि उदिरि महि डारे । कांन्ह चुंच पकरि सकल निकारे
एकि दिन सुरिह ले ताल वनि को धाए । धेनकु असुरु तहा प्रगटाए
उसि को भी प्रभि मार चुकाया । ग्वांनि ने एहु कामु कमाया ।।
कुंडि से काली नाग निकारा । तिहि सिर परि प्रभ ने पगु धारा ।।
तां परि निर्त करी वहु भांति । अति वहु सुंदर प्रभ की कांति ।।
काली को दधि माहि पठाया । कुडि को जलु प्रभु मीठ कराया ।।
साधो हरि सिमरो तत्कारा । सांईदास गोविंद रषिवारा ।।७३

ग्वानि लील्हा सकली कह दीनी ।
वहुरो इहि विधि मनि महि लीनी ।
सकले वनि वहि ढूढनि को जावहि ।
मतु कहू ठौर कृष्ण को पावहि ।
उठि चली जोहिति हरि के ताई ।
पग हरि चिह्नि पाए मग माही ।
उौर चिन्ह पगि राधा देषै ।
हिर्षमान होइ वनु द्रिग पेषै ।
तिहि पगि रजि ले मस्तक लाए ।
इहि विधि उनि मनि महि ठहिराए ।
राधा दौर भागे संग लीए । हमि परि हरि किर्पा ना कीए ।।
इहि विधि कहि आगे को धाई । राधा रुदनु कर्ति निर्षाई ।।
रुदनु कर्ति आगे सो आवे । अपुने द्रिग सौ नीरु ढुरावे ।।
राधा को पूंछनि सभ लागी । कहु तूं प्रभ ने किउ करि त्यागी ।।
जौ इनि ग्वानिं ने पूछायो । राधा सों इनि ने प्रतु पायो ।।
मै कहूं प्रभ सों वात सुनाई । हे कौलापति जादवराई ।।
हारि परी प्रभ पग ना धावहि । कैसे चलो पगि जाए नि पावहि ।।
जवि मै इहि विधि मुषो उचारी । मोको प्रतु दीनो गिर्धारी ।।

कह्यो कोध हमिरे परि चरहो।
तवि तुमि गवनु आगे को करहो।
मै पगु कांधे प्रभ के दीआ।
मन अंतरि धरि कर इहि लीआ।
मो सरि जग मै कौनु कहावहि।
औरु कोई जग महि नही आवहि।
मोको प्रभ ने कांधि चर्हाया।
इहि विधि मैंने मनि ठहिराया।
गुप्त भए तवि ही जदुराया।
रुदनु कीयो मै दृष्टि न आया।
ऐसे प्रभ से भई न्यारी। राधा इहि विधि करी पुकारी।
साधो गर्बु हृदे ना आनो। सांईदास जसु सदा वपानो॥७४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिशमोध्यायः॥३०॥

जबि राधा को दर्सनु पायो।
ग्वार्नि मतु फिरि एहि ठहिरायो।
जहा रास लील्हा कीनी वनिवारी।
तहा चलो वसै सभ नारी।
राधा सहिति लीनी उठि धाई।
तहू ठौर आइ करि ठहिराई।
तहा आइ इहि प्रश्नु चलायो।
गोपीनाथु काहे नामु धरायो।
काहे हमहि कलंकु लगावहु।
जवि हमि को बनि महि तजि जावहु।
दूर करो जो विर्दु रखाया।
औरु विर्दु राषो जदुराया।
इहि विधि कहि फिरि एहि पुकारी।
तुमि विधि जानो सकल मुरारी।

जो कोऊ व्रिक्ष अपुने करि लावै।
ताकहु अग्नि सो ताहि जरावै।
हमि सकल कुटंबि की लज्जा त्यागी।
आइ करि तुमरी चरनी लागी।
तुमि हमि को वनि महि तजि दीआ।
हमि सो असा कार्णु कीआ।
अवि हमि ग्रहि क्या मुख ले जावहि।
इहि विधि हमि मनि महि सकुचावहि।
कमल नैन माधो मकरंदन।
तुमि सर्नी हमि नंदि के नंदन।
अपुने करु हमि सिरि परि राषो।
गोपी नाथु नामु तवि भाषो।
पद्म कमल तुमिरे पगि माही।
सो पग आइ धरो हृदे माही।
तांको हमि कर सहिति विलोवहि।
लेइ अंभु तांको हमि धोवहि।
मन महि प्रीति करो सभ कोई।
सांईदास सुषु मन को होई ॥७५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकत्रिशमोध्यायः ॥३१॥

ग्वार्नि सकली आतर होई।
सुधि वुधि अपुनी तिन ने षोई।
तवि ही तिन ने कह्यो पुकारे।
जिन मछ रूपु लीओ तत्कारे।
तांको दया कहा हृदे आवै। तिसे संगु करि को फलु पावै।
जो कोई कछु रूप करि लेवै। सो मन महि कहा दया करेवै॥
जो कोई सूकर को वपु पावै। तांके मनि कहा दया वसावै॥
जो कोऊ नारि सिंह वपु करहि। कहा दया हृदे माहे धरिहि॥
जो कोऊ वावन' देह वनावै। तांके मनि कछु दया न आवै॥

पर्शुराम जिन ने वपु धारा। सहस्त्रार्जिजन को तिन मारा॥
तांके मन भी दया न आई॥
रामचंद्र होइ रावरण मारा।
तिन भी मनि महि दया न धारा।
सकल ग्वार्नि इहि विधि कही।
वहुरो इहि मनि माहे लही।
विरहो अग्नि तनि माहि निकारही। इहि देहा अपुनी को जारहि॥
जो कछु जोति है हमि पति माही।
जाइ मिलेगी त्रिभवनि सांई।
जो हमि को वलु उोरु न रह्या।
प्रभ विछुरनु हमि जाइ न सह्या।
विनु गिरिधरि जीवनु किति कामा।
इहि विधि बोली सकली भामा।
ऊभनि भई इति उति ते देषहि।
श्री कृष्णचंद को द्रिग सौ पेषहि।
वाजति वैनि अधिक तिहि षोरि।
प्रगटि भए आए नंदि कौरि।
ग्वार्नि महि आइ ठांढे भए।
इकि ग्वार्नि जाकटि सो गहे।
मतु वहुरो हमि को तजि जावहि।
इहि प्रजोग कटि हरि करि ल्यावहि।
राधा पान परी कर दैवै।
श्री कृष्णचंदि मुष अंतरि लेवै।
ग्वार्नि प्रभ सों इहि विधि ठांनी।
अपुनी विर्था सकल वषानी।
कुटिल कुटंव सकल तजि आई।
तौ सर्नी गति त्रिभवनि सांई।
तुमि त्याग गए वनि माही।
हमि वौरी भई कछु द्रिग न सुझाही।

कहा कृष्णा इहि धर्मु कहावे।
जो तूं हमि वनि महि तजि जावे।
मदन मोहन फिरि वचन उचारे।
किउ तूं तजि आई ग्रहि वारे।
वुरा कीआ तुमि ग्रहि तजि आई।
जो ग्रहि भजनु करे मै भाई।
तुमि अचावरि कंतु तुमारे।
सभ अंतरि प्रकाश हमारे।
लज्जा वहुतु भली जग माही।
विनु लज्जा किते काज न आही।
जावो तुमि अपुने ग्रहि माही। सांईदास प्रभ ताहि सुनाई।।७६।।

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे द्वात्रिशमोध्यायः ।। ३२ ॥

राधा तवि ही कह्यो सुणाही। दीन द्याल सदा सुषदाई।।
तुमि पदि पद्म कवल जो कहई। ऐसे त्याग कहु कैसे रहिई।।
जवि राधा इहि वाति चलाई। मदन मोहनि के मनि महि भाई।।
आज्ञा अमरो कौ प्रभ दीने। तिन्हो वजंत्र करि महि कीने।।
अमरि अनेक वजंत्र वजावहि। प्रभु संग ग्वार्नि षेलु रचावहि।।
ग्वार्नि सो प्रभ लील्हा कीने। तिन को प्रभ ने वहु सुष दीने।।
कोई पान श्री कृष्ण मुष देवे। श्री कृष्णचंद मुष अंतरि लेवैं।।
रास लील्हा कीनी जदुराई। सकल जगत को आप सहाई।।
षोडस सहस्र ग्वार्नि तिहि ठौर।
अठिसनि रूपु कीनो जदु कौर।
इति उति ओरि ग्वार्नि को रूप।
तिहि महि प्रभु कयो अधिक अनूप।
स्याम वर्नि श्री कृष्ण मुरारी।
दुहू ओरि सेत वर्नि है नारी।
अैसी सोभा ताहि बनाई।
कहा कहो कछु कही न जाई।

जैसे कनकि महि मणी जडावहि।
अधिक लाल तिहि षचति करावहि।
जैसे रजनी होति अंधारे ; चंदि चडिही भवन होति उजारे॥
अति सुंदर हरि वन्यो रूप। अति भुज सुंदर परा अनूप॥
तिहि देषनि को सुर सभि आए। स्वर्गि त्याग विंद्रावनि धाए॥
अद्भुति रूपु बन्यो जदुराई। सांईदास निर्ष सुष पाई॥७७

ग्वानि रूप सुन्यो चितु लाई। एक एक सभ देवो वताई॥
काहू केस वदन छिर परे। काहू सिर ते अंवरि करे॥
काहू मुष परि मुढिह को आयो। काहूं द्रिग से नीरु वहायो॥
कहू तिन की सुधि न सम्हारी। कहू निर्षति ओर वनिवारी॥
कोई धर्नि गिरे वौरानी। तन मनि की सभ सुधि विसरानी
मग्नि भई मनि प्रेमु वसाया। निर्ष्यो हरि दुःख मूल गवाया॥
कमल नैन औरि सकल निहारहि।
अपुनी करुणा सभ परि धारहि।
तिह की सुधि बुधि सक्लि वौरानी।
कौलापति फिरि सभ सुधि आनी।
जो कोई धर्नि गिरे उठि लाए।
मदन मोहनि इहि लील्हा कराए।
ग्वानि सकल रही उर्भाई।
थकित भई कह्यो जदुराई।
त्रिषा गह्यो प्रभ हमि कौ आई।
अंभु चहति जमुना तटि जाई।
श्री कृष्ण चर्नि यमुना तटि धारे।
अंभ दीने तिहि त्रिषा निवारे।
कीओ मज्जनु यमुना अंभ माही।
ग्वानि तव अंभु वाहरि आई।
नंद नंदनि तब कह्यो सुनाई।
सुण हो ग्वानि हितु चितु लाई।

सकली तुमि अपुने ग्रहि जावो।
तहा जाइ हरि भजनु कमावो।
ग्वार्नि सुण इहि मनि मुस्काई।
आप मांझि तव वाति चलाई।
चिह्न चक्रित हरि के देषि लेवो।
सोई चिह्नि चक्रत मनि सेवो।
मनु त्याग भवन रूप विसराए।
निर्ष लेहु हरि जादम राए।
निर्ष रूप हरि आज्ञा लीने। हरि सरूप घटि अंतरि कीने॥
चली-चली आई व्रिज माही। ध्यानु सदा हरि चर्नां माही॥
कुस्म मालि प्रभ तिही उडारी। इहि विधि कीनी कुंज विहारी॥
प्रभ आप रहे व्रिंद्रा वनि माही। धेनि सहिति आनंद कराही॥
जो इहि रास लील्हा चित्त धारे। सांईदास प्रभु करुणा धारे॥७८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे तेतीसमोध्याय: ॥३३

एक दिन श्री कृष्ण नंदि सुत हां इनि।
गोप ग्वारि संग चले नराइन।
दुर्गा के अस्त लियाहि आए।
पूजा करि तहा तिलकु चराए।
कंचनु अधिकि विपो को दीना। धेनिदानु अधिकि तहा कीना॥
रजनी समे आश्रमु तहा पायो। देवी भवन आगे ठहिरायो॥
नंदि महिर लघ कर्न ताई। उठयो मध्यि रैन के माही॥
नंद महिरु लघ कर्ने भया। एक विषुधरि ने तांको गह्या॥
नंदि महिर मुष कृष्ण उचारे। औरु राम जी मुषो पुकारे॥
हमि को विषुधरि गह्यो आई। वेग आवो सुत वहु सुषदाई॥
नंदि महिर जवि एहि सुनाया। लकुटी लेइ सकले गोप धाया॥
अधिक मार्यो तिन्हा विषुधरि ताई।
नंदि मिहिर को त्यागै नाही।

श्री गोपाल देष मुसकावै।
गोप सकल विलापु करावै।
मन मुस्कावति प्रभ जी आयो। गोप सकल सो तब ही सुनायो॥
इसे त्याग देवौ ना मारौ। मोहि कहृचा घटि माहि वीचारो॥
गोप सकल तांको तजि दीआ।
श्री कृष्ण निकिटि जावणि चितु कीआ।
लकुटी ले करि तिहि सिरि मारी।
उर्ग त्याग्यो नंदि तत कारी।
विपुधरि ने मानस वपु लीआ।
विषु धरि तवि इहि कार्णु कीआ।
महा सुंदरि प्रगट्यो उजीआरा।
जबि विपु धरि मानस वपु धारा।
तिहि समसर कोऊ नाहि दिपावै।
दूजा जग परि द्रिष्ट न आवै।
कमलनैन के आगे आया।
सांईदास डंडौत कराया॥७६

श्री नंद नंदन कौर कन्हाई। रूप अधिक छवि जनु बलि जाई॥
तांसो प्रभ ने पूछनु कीना। विपुधरि देहि कहा तैं लीना॥
तिन ने प्रभ सों उत्तर दीना। हाथ जोर मुख विनती कीनी॥
मै मति हीनु सुदर्स नाम। तुमि सभ विधि पूर्न सभ काम॥
सभि सुरो महि मोहि सर ना कोई।
जो मम रूप के समसर होई।
अक्रा सुतु वृहस्पति केरा।
सुण हो प्रभ जी विनती मेरा।
दीका नाग इकि आष ते काना।
एक दिन निर्ष मै तिस हृदे आना।
कहा रूप प्रभ इसि को दीना।
दीका नाग नाम किउं कीना।

उनि मोहि कह्यो जु हमहि षिझावै।
दीऔ श्रापु विषुधरि वपु पावै।
जो उनि श्रापु दियो मोहि ताई।
अधिक भली कीओ त्रिभवनि सांई।
इहि प्रजोग तव दर्सनु पायो। चर्नि कमल मस्तक परि आयो॥
वहुरो सुर्गरि ने ना इहि पायो। जो हमिरे मस्तक परि आयो॥
सेवा करि प्रभ भवन महि आए। अति आनंद नंदि जी पाए॥
एक दिन कमलापति केसर। पूर्ण माधो सकल विशेश्वर॥
राम सहित विंद्रावनि धायो। तहा जाइ प्रभ वेन वजायो॥
असुरु कुरंदी गग्नि से आयो। निर्षि ग्वार्नि चित्तु लुभायो॥
अपुने मन महि कीओ वीचारा। इनि रक्षकि दोऊ राम मुरारा॥
तिन को वलु हमि कहा वसावै। हमि स्मसरि वलु कहा जनावै॥
चतुरि ग्वार्नि लेकरि भागा। त्याग महो आकाशे लागा॥
ग्वार्नि रुदनु कीओ अधिकाई। राम कृष्ण सौ कह्यो सुनाई॥
हमि को एहु असुरु ले जाई। हमिरो वलु कछु नाहि वसाइ॥
श्री कृष्ण शब्द ग्वा न सुण पायो। वलिदेव वीर सहित उठि धायो॥
विंद्रावनि से व्रिक्ष उपारे। एकु वलिदेव एकु प्रांन अधारे॥
पाछे असुर के दोइ धाए। ग्वार्नि सो जाइ बचन सुनाए॥
ठौर राषौ चितु नाहि डुलावौ। हमि आए तुमि ना उतिरावौ॥
श्री कृष्ण ग्वार्नि लइ छडाई। वलिदेव को कह्यो सुणु मेरे भाई॥
इनि ग्वार्नि को होउ सहाई। मैं चूरामण को मारो जाई॥
चूरामण के सिरि मण रहे। श्री कृष्णचंदि जाइ वोही गहे॥
श्री गोपाल वहु असुरु हतायो। ताहि मारि मणको गहि ल्यायो॥
मण आनी वलिदेव को दीनी। राम ऊपरि किर्पा प्रभ कीनी॥
कह्यो रषो मणि वलिदेव भाई। तुमि सीस ऊपरि अध्कि सुहाई॥
धेनि सकल ले करि प्रभ आए। विंद्रावनि माहे ठहिराए॥
तप्ति अधिक सी मेरे भाई। व्रिक्ष छाया वैठे जदुराई॥
साधो हरि हरि नामु ध्यावो। सांईदास गति को तवि पावो॥८०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौतीसमोध्यायः॥३४॥

एक दिनसि माधो धर्नीधर। श्री जदुनाथ सभे करुनाकर॥
ब्रंह्म महूर्ति सुरिह ले धाए। ले सुरिह को विंद्रावनि आए॥
सकल जोपता व्रिज इहि आपहि। अधिक भए दिन एही भाषहि॥
कवि रवि उत्तरे तले को आवै। कमल नैन बनु तजि ग्रहि धावैं॥
श्री कृष्णचंदि को दर्सनु करही। चरनकमल ले मस्तक धरही॥
उनि को सकली कहिति सुनाई। आतरु ब्रह्म भए अधिकाई॥
श्री कृष्णचंदु आवैं व्रिज माही। हमि आतरु तिहि दर्सनु पाही॥
ऐसे कहि सकली बौराई। गोप जोपता सभ सुधि बिसराई॥
बहुरो इहि मतु तिहि ठहिरायो। गोविंद भजनु कीनि चितु लायो॥
होइ इकत्रि सिमरनु कीना। ध्यानु कृष्ण को अंतरि लीना॥
श्री नंद नंदन बिर्था जानी। ता पहि त्रयु कोई कहा बषानी॥
वैन बजावति ग्रहि को आए। धेनि सकल ले करि संग धाए॥
तात काल आए व्रिज माही। गोप जोपता सभ मंगल गाही॥
ग्वानि सभ मिल दर्सनु कीना। तत्त सरूप अंतरि महि लीना॥
तिहि को प्रभ ने संसा टारा। सांईदास प्रभि परि बलिहारा॥८१॥

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पैंतीसमोध्याय: ॥३५॥

कंस प्रपासुरु असुरु बुलाया। ताकौ एही वचनु सुनाया॥
तुमि व्रिज माही चलि करि जावो। नंदि महिर सुति हति करि आवो
प्रषासुरु चलि व्रिज महि आया।
अधिक रूपु तिन आप बनाया।
सेसनागु तांका द्रिष्ट आवै।
रूपु देषि ताहि भौ पावै।
मुष बोले सभ जग्तु डरावै।
जो कोऊ शब्द सुणे भजि जावै।
गौ बनि व्रिज सुण करि बनि धाई।
मन महि त्रासु भयो अधिकाई।
गोप ग्वारि सकले चलि आए।
प्रभि के चहू दिस आइ ठहिराए।

एही वचनु सभ मुषि ते भाषहि।
अभि तुमि विनु कोऊ नाही राषहि।
एहि दुष्टि ईहा जो आया।
इनि षलि ने क्या मनि ठहिराया।
इसि ते छूटहि कि हमि छूटहि नाही।
एही त्रासु भयो मनि माही।
श्री कृष्णचंद कटि सो पट्ट लीना।
वांध्यो कट अति डाढा कीना।
अषासुर के सन्मुख धाया। दोई सिंग तै पकरि कराया॥
डार धर्नि परि अभ हन लीना। श्री नारायण तवि इहि कीना॥
कंस सुन्यो अषासुर मार्यो। नंदि महिर के सुत प्रहार्यो॥
केते असुर महावलि कारी। लीए वौलाइ दुष्टि हंकारी॥
केते को त्रिज माह पठाओ। केतो अश्व रूप करि आयो॥
तांको सीस गगनि जाइ लागो। जो निर्षे सोई उठि भागो॥
साधो हरि चर्नी चितु लावो। सांईदास चितु नाहि डुलावो॥८२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षट्त्रिंशमोध्यायः॥३६॥

नार्दु एक दिन कंस पहि आयो।
दुष्टि कंस सों आष सुणायो।
श्री कृष्ण जो नंदि महिर ग्रहि मांही।
इहि सुतु नंदि महिर को नाही।
देवकी को सुतु है मेरे भाई।
वसुदेव तुम सो षड्यो दुराई।
कंन्या जो वसुदेव ने आनी।
तैं वहि कंन्या नाहि पछानि।
उडि रही वहु गगनि के ताई।
वहि कंन्या देवकी की नाही।
वहि कन्या जसुमति ने जाई।
एहि विधि सुण हो मेरे भाई।

एकु औरु वालकु रोहणी पाही।
वलिदेव नामु वसुदेव सुत वाही।
जवि ते कंसि सुनी विधि कांना।
जरने लागे तांके प्राना।
वसुदेव को मंहि रैनी वुलायो।
किर्मानी लेकरि चंमिकायो।
चाहिति है वसुदेव को मारे। तव नारदि ऋषि एहि पुकारे।।
वसुदेव को काहे तुमि मारो। वाही वाल को प्रहारो।
कंस दुष्टि वसुदेव को त्यागा।
मनि माहे फिरि चितवनि लागा।
गजि स्वार्थी को लीउ बुलाई।
ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
जिहि मग वहि दोई चलि आवहि।
तिहि मग तूं गजि षडा करावहि।
ऐसा होइ जो भाग न जाही।
इहि विधि स्मझि लेहि मनि माही।
मै इहि तुमि कों कह्यो सुनाई।
मतु तुमिरे चित ते हिरि जाई।
तुझि कौ अधिक देउोंगा माया।
जौ तै दोई वीर हताया।
चंडूरि मुष्ट को लीउो वुलाई।
तांको भी सभ विधि समझाई।
मल्ल दौर तुमि जाइ वनावौ।
तहा वजंत्रि अधिक वजावौ।
कृष्ण रामु दोऊ चलि आवहि।
तिसी ठौरि परि आइ ठहिरावहि।
ज्युं जानो तैसे तिन्हा मारो।
मै आज्ञा करी ताहि प्रहारो।
दुष्टि कंसि इन्हि आज्ञा दीनी।
इन्हि मल्ल ठौर वनाइ करि लीनी।

केती जाइ अश्व को वपु लीआ।
महा अधिक वपु षलि ने कीआ।
प्रगटि भयो जाइ करि ब्रिज माही।
जो निर्षे मनि त्रासु उपिजाही।
विनती करि करि कृष्ण सुनावहि।
हमि डर्पित मनि महि विस्माहि।
जो निर्षे षलि को भौ आवै। सांईदास विधि आप सुनावै ॥८३॥

जो केती मुष ते कछु बोलै। व्रिजवासी मनि माहे डोलै ॥
श्री कृष्णचंद कछु डाढा कीना। केती के सन्मुष पगु दीना ॥
दुष्ट को कह्यो आगे आवो। जो कछु वलु लागे सो लावो ॥
जवि जदुनाथ ने कह्यो पुकारे। कैसे आगे को पगु धारे ॥
दो पग कमल नैन के डारे। पिंजर प्रभ जी के महि मारे ॥
श्री कृष्णचंद ने लीए वचाए। एक ओरि होइ गए जदुराए ॥
वहुरो कृष्ण कह्यो फिरि आवो। हे षलि मनि होइ सोई करावो ॥
श्री कृष्ण वस्त्र ले करि पलिटाए। सन्मुख वाही दुष्ट के आए ॥
करि सों कंठु असुर को लीनो। दपटि करो षलि को दु:ख दीना ॥
तवि ही मार्त्ति कीनो जोरा। वैठि गयो कंठु तत्यो जीउ ठौरा ॥
कंसि दुष्टि इहि विधि सुण पाइ। केतो को हत्यो जदुराई ॥
नार्दु चल्यो श्री कृष्ण पहि आए।
उस्तति करि-करि आष सुणाया।
चंडूरि मुष्टिकि को तुमि ही मारो।
गजि के दस्न प्रभ तुमि ही उपारो।
गजि स्वार्थी को तुम हति लेवो। करछहि के तुमि प्रान कढेवो ॥
पाछे कंसि को जाइ विडारो। सकल असुर को तुमि संहारौ ॥
उग्रिसेन को राज वहावौ। असुरों का तुमि वीजु गवावौ ॥
तुमिरी उस्तति कहा वषानो। मैं मतिहीन उस्तति क्या जानो ॥
एक निस कंसि अक्रूरु वुलाया। सुपलिक सुत को आष सुणाया ॥
सुपलकि सुत तुमि हमि सुषदाई।
तौ मैं तुमि॰ कहचो मेरे भाई।

तुम अपुने पग गोकलि धारो।
मोह कहा घटि माहि वीचारो।
नंदि महिरि व्रिषभान सुनावो।
हमिरो कछु तुमि पाहि ले आवो।
ओरु दोऊ वालकि के ताईं।
वेग ल्यावो मेरे पाहीं।
वसुदेव हमि से पडे दुराई।
हमि ते राषे ताहि छपाई।
तुमि विनु ओरु न कोई करे कामा ॥
सांईदास भजु पूर्ण रामा ॥८३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तत्रिशमोध्याय:॥ ३७

एक दिन श्री कृष्ण राम क्या कीआ।
विद्रावनि माहे पग दीआ।
असुर भयासुर ने क्या धारा ॥
पचासि ग्वारि ले वही सिधारा ॥
पडि इकि कंदिरा माहि छपाए। तिहि दरि पपाण अधिक लगाए ॥
वहुरो फिरि आयो हरि पाही। चाहति ओरु दुराइ पराही ॥
मदन मोहनि खलि को निर्पायो। तांके पाछे उडि करि धायो ॥
वहु खलु ताहू ओरि सिधाया। जहा ग्वारि कंदिरा महि छपाया ॥
गोप तात जवि हरि को देषहि। कौलापति पूर्ण प्रभ पेषहि ॥
तव ही सभू पुकार सुनाया। हमि वलि जावहि जादमराया ॥
हमि सभि को एहि खलु ले आयो। तुमि से ईहा आण छपायो ॥
श्री कृष्ण भयासुर खलि को मारा। मुष्टि मारि तिहि सीसु विडारा ॥
मुषि ते रक्ति चली अधिकार। हत्यौ असुर को कौर कन्हाई ॥
तव अमरो वहु कुसम वर्षाए। उस्तति हरि की वहु उचिराए ॥
भला कीआ प्रभ खल को मारा। हमि अमरो परि किर्पा धारा ॥
जहां जहां कठनि वने जनि ताई। तुमि प्रभ प्रगटि होति तहांही ॥
श्री कृष्ण ग्वारि तव सकल निकारे। ईहा प्रभ इहि लील्हा धारे ॥

जहां जहां ऋषि भजनु कराही। हरि की भक्ति सेती चितु लाही ॥
भयासुरु गिर ते गिरु ले धावै। इहि प्रजोग सभ सुर मिल आयो ॥
तांकौ हत प्रभ गोकल आयो। गोप जोषता इहि वचन सुनायो ॥
पूर्ण ब्रंह्म लीयो अवितारा। महा वसुरु वलिवानु सिंहारा ॥
आद अनादी रह्यो समाई। इसि की अस्तति कौनु कराई ॥
सुखदाता दु:ख टार्निहारा। आद नरंजनु प्रान अधारा ॥
गोप जोषता सभ इहि उचिरायो। सांईदास अध्कि सुष पायो ॥८४॥

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टत्रिंश मोध्यायः ॥३८॥

सुपलति सुत गोकल पग धारे। मनि अपुने महि कर्ति वीचारे ॥
मोको कंस कह्यो इहि कामा। मोहि परि करुणा कीन प्रभ रामा ॥
इहि प्रजोग दर्सनु हरि पावौ। रेंनि चर्नि हरि मस्तक लावो ॥
जिहि कार्णु पद्‌मज दुषु पायो। ठौर देवौ हूं जत्न कमायो ॥
ताको इहि प्राप्ति ना होई। जो हमि मस्तकि लावो ठौई ॥
मग महि जाति एही मन धारी। सुपलकि सुत घटि एहि वीचारी ॥
बहुरो हृदा डुलावनि लागा। सुपलकि मन संचरु जागा ॥
हमि को दर्सनु देवे न देवी। जांको सुर नर ऋषि मुन सेवी ॥
जो हृदे करे कंस को कोई। तौ दर्सनु हमि देवे न सोई ॥
ऐसी विधि हरि मनि नही आने। अंतरि की विर्था प्रभु जाने ॥
हमि उसि के उहु सदा सहाई। सकल विर्था को वाही पाई ॥
करुणा कर्सी हमि गिर्धारी। अंतरि जामी आप मुरारी ॥
जिहि समे डंडौत प्रभताई। सीसु आपि तिहि चर्नी लाई ॥
प्रभु अपुने करि सहित उठाए। मोहि सीस को जादम राए ॥
जिहि सरीर परि प्रभ को कर फिरआ। जन्म मर्न ते मुक्ता करिआ ॥
रवि सुत त्रासु ताहि नही व्यापै। जो हरि चर्ना सो चितु राषै ॥
इहि वीचारु कर्के उठि धाया। भक्त हेतु अक्रूरि वढाया ॥
कतिक महि जवि नैन पसारे। तिहि महि हरि पग पूर्न निहारे ॥
रथ को त्याग धर्नि परि आया। माटी धूरि ले मस्तक लाया ॥
तिहि रजि सेती अंगु पषारे। मुष अपुने इहि बाति उचारे ॥

सुरपति जोहिति इहि रजताई । हमिरे मुकटि परि रहे सदाई ॥
उसि को प्राप्ति होनि न पाई । जो हमि को प्राप्ति भई आई ॥
अति अनंदु सुपलकि सुत पायो । सांईदास अंग नाहि समायो ॥८५

सुपलकि सुत रथि परि चरिआ । गोकल के मग वनि चितु धरिआ ॥
आगे राम कृष्ण दोऊ आही । भाजन पीर भर्यो करि माही ॥
अक्रूर निर्ष हरि रथ को त्यागा । डंडौत करी आइ चर्नी लागा ॥
दीनानाथ भक्तिनि सुषदाई । जान प्रवीनि विर्था सभु पाई ॥
प्रभ अक्रूरु लीयो उरि माही । जासु मिले सभ दुःख मिटि जाई ॥
पाछे वलिदेव ने अंग लीना । आदर भाउ अधिक तिहि कीना ॥
रामु ताहि ग्रहि महि ले आया । पाकु पकाइ अधिक जेवाया ॥
प्रजंकि ऊपरि ले शैनु कराया । वीजनु ले करि पवनु भुलायो ॥
एकु पगु वलिदेव ने करि लीना । एकु पगु श्री कृष्णचंद ने करि लीना
दोनो पग को मलने लागे । ग्रहि का काम काजु सभ त्यागे ॥
गोप सहित नंदि महिरु तव आयो । श्री कृष्णचंद तव वचु उचिरायो
सुपुलकि सुत तुमि लेहु वीचारे । तांको पूछति श्री गिरधारे ॥
सकल कुटंवु तोह है कल्याना । मधुपुरी सुष सो रहित सुजाना ॥
सुपलकि सुन प्रभ को प्रतु दीना । हाथ जोरि मुष वचनु तिह कीना
जवि लगि कंसु जीवति पुरि माही । काहि सुख होइ ताहि मझाई ॥
सकल सृष्टि तिहि पर्ले कीने । उलटि पलटि माटी करि दीनी ॥
षष्ट बालक देवकी के मारे । करि विरोध मनि महि पछारे ॥
देवकी रुदनु र्कति वहितेरा । दुष्ट हृदे दया आवे न नेरा ॥
षसि करि ते लेवे जाइ करि मारे । षडि करि ब्रज सहिति पछारे ॥
अक्रूर इहि विधि प्रभ समझाई । सांईदास सुण हो चितु लाई ॥८६

इति श्री भागवते महापुराण दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणितालीसमोध्यायः ॥३९॥

श्री कृष्ण राम दोऊ षीर ल्याए । आण क्षीर अक्रूर पीवाए ॥
मदन मोहन तव वचन उचिराए । सुपलकि सुत कहु किउ आए ॥
अक्रूर कह्यो प्रभ कछु जानो । मै तुमि पाहे कहा वषानो ॥

जो मो परि करुणा तुमि धारी। जो जानो सो कहो पुकारी ॥
कंसि कह्यो तुमि गोकलि जावो। नदि महिरु सभ गोप ल्यावो ॥
दोनो सुत वसुदेव के आनो। कहा कहो सभ तुमि जानो ॥
उौरु भ्रितु दमिरे ले जावो। मैं तुमि कह्यो गोकलि जावो ॥
कौलापति तुमि मार्न ताई। मथिपुरी महि वहु कीए उपाई ॥
मल्ल अषाडा ताहि बनायो। महा अधिक इकु थिङ रषायो ॥
दस सहस्र जोधा वलिवाना। ठांढे कीने है भगवाना ॥
उौरु चंडूर मुष्ट षडे करे। तोहि मार्ण सेती चितु धरे ॥
गजमदमाता ठांढा कीना। गज सहस्र को तिहि वलु लीना ॥
इहि प्रजोग मो सो चलाया। तोहि चर्ना सेती चितु लाया ॥
जो मैं ना आवत जदुराई। कंसु दुष्टु मोहि कर्ति हताई ॥
जवि अक्रूरि इहि वात वषानी। हृदे धरी प्रभ सारंग पानी ॥
ध्रिगु हमि जन्मु लीआ जग माही।
जो हमि कार्ण पित माता दुःख पाही।
श्री गोपाल इहि विधि मनि धरी।
सांईदास सर्नी वनि वारी ॥८७

श्री मुरार माधो सुषदाई।
बलिदेव को तिन लीओ बुलाई।
नंद महिरु गोप सहिति बुलायो।
तिह को प्रभ ने आष सुनायो।
सुपलकि सुत को कंसि पठायो।
हमे इ बुलेने को इहि आयो।
गोकलि ग्रहि ग्रहि आषि सुनावो।
भूपत कंसि को करुजु ले आवो।
जो जो किसी को देवनि आवै। ले करि जाइ मथुरा पहुचावै ॥
रजनी घटि रवि कीओ प्रकासा। जाग परे सभ को परि जासा ॥
नंदि महिरु व्रिखभान ग्वार। गोप सहित चले दीनधार ॥
श्री मथुरा केरे मग धाए। सभ जोषता व्रिज रुदनु कराए ॥
रुदनु कर्ति हरि के संग धाई। केतकि मगु आगे वहु आई ॥

गोपीनाथ वचनु तवि कीआ। सकल ग्वार्नि ने सुण लीया ॥
जाहो तुमि अपुने ग्रहि माही। सुष सो वसो फुनि दुःखु कछु नाही ॥
मैं भी एक दिन वहुरो आवो। अबि तो कार्ज कर्ने जावो ॥
तुमि जाइ ग्रहि महि भजनु कमावो। मोहि चर्ना सेती चितु लावो ॥
ग्वार्नि फिरि आई ग्रहि माही। चर्न कमल सो मनु उर्भाही ॥
एक पहिरु रजनी ले जागहि। तव ही दधि को मथने लागहि ॥
स्मिरनु कमल नैन को करहि। हरि चर्ना सेती चितु धरहि ॥
ग्वार्नि सभ घटि प्रेमु वसाया। सांईदास अधिक सुष पाया ॥८८

श्री कृष्ण सकल सो तवि उठि धाया।
तटि रवि दुहिता को प्रभ आया।
सुपलकि सुत तवि वचन उचारे।
मैं वलि जावो प्रान अधारे।
तुमि सकलि विधि जानणिहारे। कहा कहौ मैं तुमहि पुकारे ॥
तुमि जलु अचो मै मज्जनु करहो। जमुना अंभु माहे पगु धरहो ॥
श्री कृष्णचंद रथु ठांढा कीआ। सुपलकि सुती मज्जनु चितु दीआ ॥
जमुना के अंभि माहे वर्‍या। डुबिकी ले हरि दर्सनु कर्‍या ॥
राम सहिति प्रभ जी निर्षाए। मन अंतरि वह सोच कराए ॥
मै रथ ऊपरि छाडि के आया।
रथ को तजि जल महि कहा आया।
जवि फिरि सिरु ऊपरि करि लीना।
श्री कृष्ण रामु रथ परि देष लीना।
रथ परि वैठे है दोऊ भाई। अचर्जु निर्ष रहयो विस्माई ॥
वहुरो अंभ महि डुविकी मारी। फिरि निर्षे श्री कृष्ण विहारी ॥
वलिदेव को अंभ माहि निहारा। अति सुंदरि वहु रूप उजीआरा ॥
पद्मज मघवा औरु सुकदेव। सकल ऋषीश्वर सुर मुन सेव ॥
श्री गोपाल आगे ठहिराए। उस्तति हरि की कहिति सुनाए ॥
सुपलकि सुत तव करी डंडौति।
कौलापति सभ जग की औटि।

तजि अंभिको रथ पाहे आया।
उस्तति हरि की मुष उचिराया।
मदन मोहनि गिर्वरि हरि धारी।
मोहि मुक्त कीउो तुमि वनिवारी।
वैकुंठि महि मोहि दसु दिषायो।
जग की फांसि से उविरायो।
तोहि उस्तति मै कहा वषानो।
मै तुमि उस्तति को कहा जानो।
जो हिति करि इहि जसु सुण लेवै।
सांईदास प्रभु सभ सुष देवै ॥८९

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चालीसमोध्यायः ॥४०॥

सुपलकि सुत मन माहि वीचारा। उस्तति कर्ने को चितु धारा॥
चंड मुंड तिन को वलु भारी। तोहि वलि काम भए वनिवारी॥
वहुरो तुम सो युद्ध मचायो। पांच सहस्र वर्ष युद्ध करायो॥
तूं वही पारि ब्रंह्मु मेरे स्वामी। घटि घटि विर्था के अंतरि जामी॥
कौन रसिना सो उस्तति करो। तोहि उस्तति कर्ने चितु धरो॥
तुही मछ रूप होइ आयो। संखासुर जवि वेद चुरायो॥
तांको तैंने जाइ विडारा। तासो वेद आने तत कारा॥
वेद आण पद्मज को दीने। इहि कार्ण तैंने प्रभ कीने॥
कछ रूप तूं हे प्रभु हुआ। तुमि विनु अवरु न कोई दूआ॥
कछि रूप इहि विधि तुमि कीना।
दधि मथने को तुम चितु दीना।
दधि मथके प्रभ रतन निकारे।
अंभ तहा उछिले अधिकारे।
सकल पहारि सिरि ऊपरि लीना।
वास्कि नागु तवि नेत्रा कीना।
मेरु पर्वतु मधानी कीने।
इहि विधि तै कौलापति कीने।

वैराह रूप तै ही प्रभु धारा।
हरिनाकसु जवि तै इहि मारा।
वसु ले वड्यो दधि माही।
पद्मज कूक करी तुमि पाही।
हरिनाकसु वसुधा ले धायो।
दधि माहे जाइ करि ठहिरायो।
विनु वसुधा कैसे स्त्रिष्ट वनावों।
प्रभ जी स्त्रिष्ट कर्नि ना पावों।
वैराह रूप कर्के तुमि धाए।
ततक्षिण महि दधि माहे आए।
हरिनाकस सों वसुधा लीए।
दंती धरि वाहिर पग दीए।
आण मही अंभि परि ठहिराई। हर्निकशवु तवि आयो धाई।।
तांसो युद्ध करि ताहि हतायो। हे माधो तै एहि करायो।।
तुमि को नमस्कार है मेरी। सांईदास मै सर्नी तेरी।।९०

हरिनाकसु असुरु महा वलिकारी।
तिहि ग्रहि सुत प्रहिलादु वीचारी।
प्रहिलादु जपे प्रभ तेरो नामा।
श्री कृष्ण कृष्ण कहे इहि उसि कामा।
सदा ध्यानु तोहि चर्नि लगावे।
तुंमिरो जसु निसवासरि गावै।
हरिनाकसु तांको डंडु देवै।
कहे कृष्ण काहे मुष लेवै।
मेरो नामु तुमि लेहु वीचारी। काहे उचिरहि कृष्ण मुरारी।।

भक्ति हेत—

प्रहिलाद भक्ति हरिनामु न त्यागा।
हरिनाकसि के कहे न लागा।
हरिनाकसि मनि क्या वीचारा।
इहि माने नही कहा हमारा।

कृष्ण कृष्ण को नाही त्यागे। हमिरे कहे नाही इहि लागे॥
इसि को मारो कहा न माने।
मोहि कहा कछु करि ना जाने।
ऐसा पूतु मूआ ही चंगा।
जो मन अंतरि डारे भंगा।
एकि दिन भक्ति को वहु दुःख दीआ।
मनि अंतरि तिन नें दुःख कीआ।
तांको थंभि के साथ वंधाया।
प्रहिलादि भक्ति को सहिमु दिषाआ।
तवि प्रहिलादि सो वचनु उचारा।
कहा कृष्ण जिन नामु चितारा।
तब प्रहिलाद कह्यो सभ माही।
सभि षच रह्यो दूरि प्रभु नाही।
सकिल सृष्टि माहे प्रभु मेरा।
जवि कवि मोहि अस्ति है नेगा।
हरिनाकसि कह्यो इसि थंम्ह माहे।
है तेरा प्रभु थंम्ह मझाहे।
तव प्रहिलादि कह्यो रमि रह्या।
इसि ही थम्ह माहे है वह्या।
हरिनाकसि कह्यो लेह वुलाई।
कहा तुम्हारा प्रभु सुषदाई।
तव प्रहिलाद अंत्र कीउो ध्याना।
श्री कौलापति तवि ही जाना।
थंभ से नृसिंह रूप दिषाया। हरिनाकसि देषा विस्माया॥
हरिनाकसि निर्ष हरि भागा। सांईदास जीवन तिन त्यागा॥९१

पारब्रंह्म गिरवरि हरि धारी। संत पैज राषै वनिवारी॥
हरिनाकसि को थंम करि लीना। नषिसो उद्रि विडारे दीना॥
वहुरो प्रभ तैने इहि कीआ। वावनि रूपु कर्के तवि लीआ॥
मघवा चलि तुमरे पहि आया। हाथ जोरि तिन आष सुनाया॥

राजा वलु यज्ञ अधिक करावे। हमिरा पुरु प्रभ वही छिनावै ।।
वावनि रूप तुमि तवि ही धारा। चतुरि वेद मुषि पाठ वीचारा ।।
वलि पाहे जाइ जाचन करी। अढाई करो धर्नी प्रभ हरी ।।
सकल धर्नि दोइ करो होई। तवि भै चक्रित वलु होयो सोई ।।
आधि करो तिहि वपु मिनि लीना। तांको प्याल षडि वासा दीना ।।
उसि को पार ग्रामी कीआ। ताहि कल्याण करी सुष दीआ ।।
नरंकार कर्तारु गुसांई। अज्नीशंभव है सभ माही ।।
पर्शुराम तूं ही होइ आया। सहस्राज्र्जन तुझहि हताया ।।
रघुवंशी तुही वपु धारा। रावण को प्रभ तुझहि विडारा ।।
तुझको नमस्कार मै करहो। वार वार प्रभ वार्नि फिरहो ।।
तुमरी उस्तति कहा वषानो। मै उस्तति तोहि कहा पछानो ।।
वार वार तुझि को नमस्कारा।
तूं पूर्ण प्रभ प्राण प्रान अधारा।
अक्रूरि उस्तति कीनी जदुराई।
सांईदास सुणे सो मुक्ताई।।९२

इति श्री भावगते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकितालीशमोध्याय: ।।४१।।

श्री कृष्णचंद सुपलकि सुत ताई। कह्यो तवि ही त्रिभवनि के सांई ।।
आजु रहे वनि कंस के माही। तुमि आगे जावो नृप पाही ।।
दुष्ट कंस को जाइ सुनावो। वेग विलम तुमि मूल न लावो ।।
नंदि महिरु गोप सहित ल्याया। दोऊ वालक वसुदेव के जाया ।।
औरु तुमरो करु तिहि पाही। सभु आन्यो मथुरा पुर माही ।।
सुपलकि सुत प्रभ को प्रतु दीना। कौलापत सो तिन वचु कीना ।।
चरन कमल तुमि त्याग कराही। श्री गोपाल कहु कहा हमि जाही ।।
आजु हमिहि क्रितार्थु करहो।
मोहि ग्रहि अंतरि पगि धरिहो।
हमि ग्रहि चलि भोजनु प्रभ पावो।
हमि को प्रभ सुष वहु उपिजावो।

प्रान घटा मोहि नामु विचारहि।
पंडित्ति जोतकी सकल उचारहि।
एकि दिन प्रभु अक्रूरि ग्रहि आई।
भोजनु पायो त्रिभवनि सांई।
जवि अक्रूरि इहि वचन उचारे।
कौलापति प्रभ जानरण हारे।
अक्रूरि को करु लीनो करि माही।
श्री नंद नंदनि विधि इहि माही।
सकल लोक ते न्यारा कीना। तव अक्रूर सो इहि प्रतु दीना ।।
अवि तुमि जाइ निर्भो होइ सोवो। सकला भ्रमु हृदे ते षोवो।।
कंसि को हति तुमिरे ग्रहि आवो। सकल गोप संग भोजनु पावो।।
सुण अक्रूरि अधिक हिर्षायो। सांईदास प्रभ वचनु करायो।।९३

सुपलकि सुत वहु आनंद पायो। हरि वचु सुण पुरि को तवि धायो।।
जाइ करि कंसि सो वचनु उचारा। जो कह्यो हरि सो कह्यो पुकारा।।
दोऊ सुत वसुदेव के आने। नंदि महिरु गोप अवर वषाने।।
जो करु तुमिरे तिहि परि आई। सकल आन्यो है नृप वलिकाई।।
मदन मोहन नंदि कह्यो सुनाई। पित मोहि आज्ञा देहु वताई।।
मधिपुरी अव न देष करि आवो। पुरि के भवन को देषन जावो।।
नंदि महिर तवि वचनु उचारा। तूं है मेरो प्रांन अधारा।।
हमिरे प्रान वसेहि तुमि माही। कहा करो कोऊ तुमि ले जाही।।
तवि जदुनाथ कह्यो नंदि ताई। हे पित हमि को कौनु ले जाही।।
मधुपुरी महि केते आवेहि। मधुपुरी त्याग वहुरि उठि जावहि
एहि वचनु कहि आज्ञा लीए। कौलापति पग पुरि को दीए।।
वलिदेव ग्वारि सहिति संग लीआ।
नंदि महिरु तजि मग पगु दीआ।
षेलति षेलति पुर महि आए।
अति सुंदर कछु कह्यो न जाए।
पुरि के लोको ने क्या कीआ।
भवन द्वार आछा करि लीआ।

चोत्रा चंदन कुसम घनेरे। डारे मनु ग्रावे हि प्रभु मेरे ॥
ग्रति सुगंधिता तह। षिडारा। ग्रौरु ग्रधिक कुसम के हारा ॥
श्री कृष्ण रामु ग्रवि ही ईहा ग्रावहि। हमि तिहि को पुनि दर्सनु पावहि
कुस्म वर्षा हमि तापरि करहि। तिहि चर्ना ऊपरि सिरु धरहि ॥
जासि द्वार होइ करि प्रभु धावहि। जोषता ग्रध्कि कुस्म वर्षावहि ॥
निर्ष रूप हरि को उचिराही।
मनि ग्रपुने महि सोचु कराही।
दुष्ट कंस क्या मनि ठहिरायो।
इहि बालक मार्न चितु लायो।
श्री कृष्ण राम ग्वारि संग लीए।
मधिपुरी माहे हटि पगि दीए।
ग्राति ग्राई हरि कौर कन्हाई।
सांईदास दर्सन वलि जाई ॥ ९४

नृप को छीपा वस्न ले ग्राया।
ग्रंवरि ले नृप द्वार सिधाया।
वलिदेव हरि तिहि कह्यो सुनाई।
हमि को देवहु हमिरे भाई।
तवि छीपा ने ऐसा कहिया।
रे मतिहीन तूं ग्रांधा भया।
इहि प्रतापु तुमि कहा वढाया।
नृप ग्रंवरि लेने चितु लाया।
तुमि तो ग्वारि सुरिह चारनिहारे।
कौनु वाति तुमि मन महि धारे।
ग्रवि तुमि नृप के ग्रंवरि लेवो।
तिहि ताई तुमि गाली देवो।
है कोई जो इसि को मारे।
इसि मतिहीन को पकरि पछारे।
ऐसे कहि मुष वुरा कहायो।
तव केस धरि मंन ठहिरायो।

क्रोधु कीओ छीपा को मार्‍यो।
करिनष से तिह सीसु विडारे।
और अंवरि धरि डार के भागे।
आपौ अपुने मग को लागे।
एकु पाइकु तब ही प्रगटायो।
प्रभ को आइ डंडौत कराया।
मुष ते तव ही कह्‍यो सुनाई।
मै वलि जावा जादमराई।
जो मोहि कह्यो अंचरि पहुचावो।
इसि सेवा सो मै चितु लावो।
उपसि तिहि आज्ञा दीनी।
तिस पाइक परि करुणा कीनी।
कह्‍यो तोहि वैकुंठि पठावौ।
चतुर्भुजा करि दु:ख मिटावौ।
तुमिरी मै करहौं कल्याना।
एहि वाति मै मन महि आना।
तव पाइक अंचरि करि लीने।
श्री कृष्णचंद के अंग को दीने।
रामु ग्वारि सकले उठाए।
श्री कमलापति छवि अधिकाए।
पाइकि की कीनी कल्याना।
श्री गोपाल गंभीर सुजाना।
वेग ताहि वैकुंठ पठायो।
चतुर्भुज करि दु:ख मिटायो।
जो सेवा के जादम राई। सांईदास सो वैकुंठि जाई॥९५

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे बेतालीसमोध्याय: ॥४३॥

श्री गोपाल फिरि वचन उचारे। सुण हो वलदेव वीर हमारे॥
अवि दामां माली अहि जावहि। कुस्म माल ताहूं सौ ल्यावहि॥

ले माला उरि माहे डारहि। चलहो दामां ग्रहि पगि धारहि ॥
श्री गोपाल दामा ग्रहि आए। राम सहित ग्वारि सवाए ॥
जवि दामा ने नैन निहारे। श्री कृष्ण राम निर्ष ततकारे ॥
आगे आइ डंडौति कराई। मुषि ते तविही इहि उचिराई ॥
क्रिपा करी हमिरे ग्रहि आए। दामा ने वहु आनंद पाए ॥
कुस्म माल ग्रहि ते ले आया।
श्री कृष्ण माल ले उरि महि पाया।
सकल ग्वारि को प्रभ पहिराई।
कुस्म माल श्री जादम राई।
वहुरो दामा भोजनु दीना।
इहि विधि माली सेवा कीना।
श्री कृष्ण केह्या कछु मांगो दांमा।
दांमा कह्यो पावो तोहि नामा।
तुमिरि कीर्ति मन माहि रहे।
एही जाचना मेरे अहे।
मदन मोहन कह्यो इहि दीआ।
एक करुणा तुमि परि अंतरि कीआ।
तुंमि संतति महि होवे कोई। जन्म-जन्म निर्धन ना होई ॥
श्री मुरार इहि वचु तवि कीआ। श्री दामा को ग्रहु तजि दीआ ॥
कह्यो दुष्ट भवन आगे होई। चलहु चलहि हमि डरु नहीं कोई ॥
दुष्टि के भवन आगे प्रभ आए। इकु पलु छिन तहूं ही ठहिराए ॥
एक वनिता भांजनि हथि लीने। वावनि चंदनु फिरि करि कीने ॥
आवति ही हरि हंसने लागो। अद्‌भुत सुंदर प्रेम के ताकी ॥
तांको कह्यो कौन तूं होवैं। इहि विधि हरसो रत्न परोवैं ॥
तबि कुब्जा कह्यो में वलिहारी। मैं तोहि सर्नी प्रभ वनिवारी ॥
श्री कृष्ण कह्यो करहो मोहि कामा।
अंवरि पहिरे नौतनि रामा।
जो इहि चंदनु हमि को देवहि।
अवि हमि ते इसि का कछु लेवहि।
श्री गोपाल तिहि आष सुणायो। सांईदास अधिक सुष पायो ॥९६

कुब्जा ने तव वचनु उचारा। हे भगवंत तूं प्रांन अधारा ।।
एते दिन चंदनु घसि ल्याई। दुष्ट कंसि कार्ण जदुराई ।।
सकल अफल सेवा तिह करी। एही सुफल जो तुमि परि चरी ।।
कुब्जा करि ले हरि अंग लाया। बहुरो गवार उौर राम चढाया ।।
तव श्री कृष्ण हृदे महि धारा। इहि पुठि सुद्ध करो ततकारा ।।
पगि ऊपरि प्रभ चर्नु टिकाया। ठौढी कर षिची जदु राया ।।
ताहि पृष्टि सुद्धि कर लीनी। सुंदरताई प्रभ को दीनो ।।
द्वादस वर्षि अवस्था पाई। मानो मघिवा पुरि से आई ।।
जवि वहि द्वादश वर्षि को होई। श्री कृष्ण चर्न सौ लपटी सोई ।।

इहि विधि करि मुष वचनु उचारा।
मैं सर्नागति प्रांन अधारा।

मेरे ग्रहि परि किर्पा कीजै। अपुने पग हमिरे ग्रहि दीजै ।।
तवि मै तुमिरि सेवा करो। सेवा करि पग सिरि परि धरो ।।
कवलनैन तव ऐसे भाषहि। कुब्जा को ऐसे करि आषहि ।।
हे कुब्जा चितु ठौर ठहिरावो। उौरु वात कुछ मन ना ल्यावो ।।
जा करि वसो अपुने ग्रहि माही। कृष्ण कृष्ण मुष ते उचिराही ।।
कंसु दुष्ट इति तुमि ग्रहि आवो। तव तुमि को वहु सुख दिवावो ।।
फिरि आाइी हस्त नारी पाई। लोक निर्ष आए अधिकाई ।।
अधिकाई मिष्टान पान प्रभ पाहि ल्यावहि।
श्री कृष्णचंद आगे ठहिरावहि।

श्री कृष्ण कह्यो तिहि लोकनि ताई।
तुमि हमि को विधि एहि वताई।

दुष्टि धन्षि को कहा रषयो। ताहि देषने चितु लुभायो ।।
देषनि को सकले उमिडाए। प्रभ को धन्षि उौरि ले धाए ।।
भक्त वत्सल प्रभ सदा सहाई। असुर संहारनि जादम राई ।।
धन्षि पाहि जाइ ठांढे भए। धर्न से धन्षु करि माहे गहे ।।
वांवे करि हरि धन्ष को कोना। वलि करि तांको चाढहि लीना ।।
षिच धन्षु प्रभ ने मोड डारा। शब्द भयो तिस ते अति भारा ।।
धन्षि के दोई टूकि कराए। करि महि ले कौलापति धाए ।।
धन्षि तोर्यो श्री जदुराए। सांईदास तांको जसु गाए ।।९७

दस सहस्र जौधा रषवारा।
रहिति धन्षि परि राषनि हारा।
सुनति वात पाछे हरि धाए।
महावली जोधे चलि आए।
कहिति कहा भागे तुमि जावो।
एकु पलु हमि आगे ठहिरावो।
नृप को धन्षु तुमि ने ले तोरा।
मन महि त्रासु न कीना भोरा।
ठांढे रहो आगे कहा जावो।
जैसा कीआ तैसा अवि पावौ।
श्री कृष्ण राम तवि फिरि षलोए।
जो आए असुर सकल हरि षोए।
तिन को मारि नंदि पहि आए।
वनि माहे आहे करि ठहिराए।
नंदि महिरु आनि सभ विस्माए।
वस्त्र किस ते इतिने पाए।
हमि ते कमरी पहिर सिधाए।
इहि अंवरि किस ते अंग लाए।
एही वार्ता दुष्ट पहि आई।
धन्षु तोर्‌यो है यादम राई।
मनि तिहि अधिक भयो विस्वासा।
दुष्ट मुषो निकिसे नही हासा।
मनि माहे इहि कर्ति विचारा।
निकटि आयो है कालु हमारा।
मोको मारे छोडे नाही।
इहि विस्वासु भयो मनि माही।
स्वप्न भीतरि ताहू द्रिष्ट आया।
काल सरूप प्रभ ताहि दिषाया।
सीस मूंडि गर्धप परि चर्‌या।
ताता तेलु सीस परि डारा।

ऐसे दुष्ट हृदा भर्मायो।
रब सुत रूप द्रिष्ट तिह आयो।
रजनी गई रवि कीओ प्रकासा।
कंस हृदे महि भौ लीओ वासा।
कह्यो वजंत्र जाइ वजावो।
मल्लि अषाडे स्रिष्ट वुलावौ।
मल्ल अषाडे महि सभा वनाई।
आप कानि सभ ते अधिकाई।
उौर सकल को तले वहाया।
आप ठौर ऊची ठहिराया।
आनि भूपति भी चलि करि आए।
मल्ल अषाडे महि ठहिराए।
जपौ नामु सकला तमु भागे। सांईदास दुष मूल नि लागे ॥९८

दुष्ट कह्यो वसुदेव को ल्यावो। देवकी सहिति ईहा वैठिलावो ॥
जो हमि ते वालक षडे दुराई। गोकलि महि जाइ धरे छाई ॥
वहुदेषहि मै वालक मारो। इहि दुइ वालक को प्रहारो ॥
उौरु अक्रूर को लेह वुलाई। वसुदेव सौ तिन प्रीति अधिकाई ॥
वसुदेव के पाहे वैठ लावो। नंदि गोप सभ ही ले आवो ॥
तिन ने जो कीना अधिकाई। दधि घ्रितु भोजनु अधिक षलाई ॥
आज्ञा करी सभ को ले आए। मल्ल अखाडे आगे वहाए ॥
सकल लोक आइ करि ठहिराए। दुष्टि कंस सभि ही निर्षाए ॥
दुष्ट तवि ही इहि वचनु उचारा। सुण हो सभ तुमि कहा हमारा ॥
दोऊ सुत वसुदेव के ल्यावो। वेग विलम तुमि मूल न लावो ॥
नंदि महिर नृप को प्रतु दीना। हे नृप तै क्या मनि महि लीना ॥
द्वादश वर्षि के वालक भाई। मल्ल विद्या जाने नाही वाई ॥
कैसे मै तिन को ईहा ल्यावो। मल्ल अखाडे माहि वहावो ॥
जो सुण ले जसु मुक्ता होई। सांईदास दु:ख ग्रसे न कोई ॥९९

इति श्री भागवते पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रितालीसमोध्याय: ॥ ४३ ॥

श्री कृष्णचंद ने कहचो सुणाई।
नंदि महिरि पित वहु सुष पाई।
कछु विस्वासु न मनि महि देवो।
मोहि कहा मन महि धरि लेवो।
इहि प्रजोग हमि लेति वुलाई।
देषहि अंभरि नहि इहि आई।
वाल्क है इनि दिसे कछु नाही।
वाहरि ठांढे अति उकलाही।
कौलापति विधि जानणहारा।
राम सहिति लीओ ततकारा।
अंवरि ले कटि ठांढा कीना।
मल्ल अखाडे को पगु दीना।
तिहि मगि गजु ठांढा वलिकारी।
गजि स्वार्थी को कह्यो मुरारी।
हमि को मगु तुमि तजि करि देवौ।
मोहि कहा तुमि मनि धरि लेवौ।
नाहि ति अवि ही तुम को मारो।
तुमि को इसि गजि सहिति प्रहारो।
मृतक लोक महि देउ पठाई।
भला करहि ना करहि वुराई।
श्री कृष्ण चंदि जवि वचनु उचारा।
गजि स्वारथी अंकशु गजि मारा।
श्री कृष्णचंदि की उोरि चलायो।
मदमाता गज सन्मुष आयो।
श्री कृष्ण को गजि ने सुन्न महि लीआ।
र्धनि से पकरि ऊभनि उनि कीआ।
तांसो निकसि गयो जदुराई। फिरि आगे ठांढा भयो आई॥
वहुरो गज उौसे ही कीआ। जैसे प्रथम मे मुष महि लीआ॥
श्री कृष्ण भागा फिरे आगे आगे। अति भुज सुंदरि अंग महि पागे॥
गज प्रभ जी के पाछे दौरे। थकित रह्यो हारचो सभु जोरे॥

श्री कृष्णचंदि पूछ से लीना। फेरि फेरि धर्नि सौ दीना ॥
एक मुष्टि मस्तक परि मारी। दोई दस्न प्रभ लीए उपारी ॥
गजि के सहिति स्वार्थी मारा। दस्न लीए करि ताहि अपारा ॥
श्री गोपाल गजि मुक्ति पठाया। सांईदास महा सुष पाया १००

गजि को दस्न एक हरि लीआ। एक दस्न वलिदेव को दीआ ॥
श्री कृष्ण राम अषाडे महि आए। नंदि पाहि आइ करि ठहिराए ॥
चंडूरमुष्टि तवि वचन उचारे। मनि माहे तिहि सोच विचारे ॥
श्री कृष्णचंदि सों कह्यो सुनाई। कंसनराधपि इहि सुण पाई ॥
तुमि षेलति विंद्रावनि माही। मल्ल विद्या कीनी अधिकाही ॥
वडे वडे वलिवान सिंहारी। तुमिरी भुज महि वलु अति भारी ॥
अपनी मल्ल विद्या तुमि करहो। मल्ल विद्या सेती चितु धरहो ॥
कंस नराधपि देष तै लेवै। हर्षिमान होइ वहु कछु देवै ॥
तव श्री कृष्ण ने वचन उचारे। सुण चंडूरि ते मीत हमारे ॥
हमि सरि होइ तिहि युद्ध करावहि।
तांसो मुष हमि नाहि फिरावहि।
धर्म्म युद्ध मल्ल विद्या माही।
दुही उौरि स्मसरि निर्षाई।
रंगभूम भीतर भगवान।
आए सहिति भय्या वलिराम।
कौतुक करहि भया भगवंत।
अषल अगोचर अमित अनंति।
दस प्रकार का रूप दिषाया।
इउ कहि श्री सुकदेव सुनाया।
सभ सरूप कहि प्रगटि सुनायै।
पढे सुणे हरि भक्ति वढावै।
मल्लहु द्रिष्ट वज्र से आए।
देषि तिनहु के हृदे डराए।
चूर करहिगे हमिरे अंग। मल्लहु के मन हूए भंग ॥
जो ये सृष्टि नीर प्रधान। तेज विदेषहि धरे ध्यान ॥

तिन जान्यो सभ नर सर्वोत्तम।
कृष्ण वलि जाने पुर्षोत्तम।
तिरीआ देषै श्री घनस्याम।
नष छव मोहनि कोटक काम।
मूर्छा होइ होइ गिर परि।
सुधि बुधि हरि सुंदरता हरी।
गोपो जान्या मितु हमारा।
इहि गुपाल नंदिलालु प्यारा।
जोधे राजा अति हंकारी।
तिन्हो करी थी प्रजा दुषारी।
वेद वेद आज्ञा मानति न थे।
तिन के मान महा प्रभ न थे।।
तिन जवि देषै श्री भगवान। मै सिउं तिन के कंपे प्रान।।
ते मन महि मन को समझावहि। सूधे चलहि न प्रजा दुषावहि।।
नाहि ति मारेगै दामोदर। विश्वनाथ वलिराम सहोदर।।
श्री कृष्णचंदि के पित अरु मात। वसुदेव देवकी पर्म सुजात।।
तिन्हो द्रिष्ट वालक के आए। देषि तिनहूं के हृदे डराए।।
मार्नि को हमिरे सुत आने। मात पिता अतही विलषाने।।
कंस म्रित द्रिष्टी महि पर्यो। देष दुष्टि का तनु मनु डर्यो।।
जो पंडिति थे विमल विचारी। जिन की मति पढि वेद उजारी।।
तिन देषै प्रभु पुर्ष विराटु। इस ही जग परि जग को ठाटु।।
योगीश्वरि जव धरहि ध्यान। पर्म ततु है इहि भगवान।।
पर्म तत्तु सभ हू का कार्ण। उतपत्ति प्रतिपालनि संहार्ण।।
पूर्ण पुर्ष पुनीत अकाम। पर्म तत्त इहि कार्णु नाम।।
जदकुल जान्यो रक्षा कर्ता। ए भगवान हमारे भर्ता।।
दस प्रकार कीए भगवंत। रूप दिषाए कमलाकंत।।
जैसे जांको हरि सोभाई। तैसे देषे केशव राई।।
सभ हूं ते निर्लेप अनंत। कृष्ण कृपा निधि कमलाकंत।।
लोकहु हरि का दर्सनु कर्यो। कोट जन्म का पातक हर्यो।।
हरि मूर्त काउो नापर्यो। पर्म प्रेम करि हृदे धर्यो।।

लागे कहनि लोक मिल वाति। इहि दोनो वसुदेवहि ताति ॥
संकर्षण अरु श्री गोपाल। गोकल वचे कंस को काल ॥
तव चंडूरि प्रभ को प्रतु दीना। कौन वाति ते मनि महि लीना ॥
मै तुमि को वहु विधि करि जानो।
ओह भलो वाल्कु हृदे पछानो।
वहि गजि आयुत को वलि रापहि।
ताहि हत्यो अवि वाल्कु आपहि।
लरकिपन महि क्या कछु कीआ।
वडे वडे जो धनि हमि लीआ।
तुमि हमिरे संग युद्ध मचावो। रामु सहिति मुष्ट उर्भावो ॥
धर्मयुद्ध हमि तुमि संग करहि। वैर भाउ कछु मनि ना धरहि ॥
काल निकटि भयो बुधि वौरानी। सांईदास पूर्न विधि जानी १०१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौतालीसमोध्याय: ॥४४॥

कमल नैन ने तब ही वषानी। पूर्न ब्रंह्म प्रभ सारंग पानी ॥
राम सो तवही कह्यो सुनाई। युद्ध करो अवि हमिरे भाई ॥
श्री कृष्ण चंडूरि सो करु अरि कायो।
राम सहित मुष्टि उर्भायो।
लोक सकल निर्ष्यो विसमाए ॥
नर नारी मुषि एहि सुनाए ॥
दुष्टि कंस क्या रनि ठहिरायो।
इनि वालक मार्नि चितु लायो।
कहा वाल्क इहि असुर कहा है। जो वाल्क इनि संग लरा है ॥
एहि नग्र तजीए मेरे भाई। इहा हमि पहि वस्यो न जाई ॥
फेरि कहे अपुने मनि माही। पारब्रह्म तूं त्रिभवनि सांई ॥
तूं सकली विधि जाणन हारा। हमि तुमि सो क्या कहहि पुकारा ॥
दुष्ट कंस वहु जोरु चलाया। हमिरा इसि संगि कछु न वसाया ॥
वाल्कि असुरो संग लराए। मार्नि को इहि कर्म कमाए ॥
तुंही तपासु करी पर्मानंद। आदि आदि जने व्रिज को चंद ॥

इहि वालकि कहु देवो जीत। तुमिरी संग है संतनि प्रीत।।
तीन पहिरि प्रभ ने युद्ध कीना।
चंडूरि मुष्टि को वलु हिरि लीना।
तिहि महि वलु रंचिक ना रहचा।
तव नृप कंस इही मुष कह्या।
छाडि देहु वजंत्रि न वजावो।
थकित भए अवि युद्ध न करावो।
दुष्टि कंसि तिन को मनहि कीना।
सांईदास हमिरों सुणु लीना १०२

अमरो अधिक वजंत्रि वजाए। श्री कृष्णचंदि सुण वहु हर्षाए।।
जै जै अमरि मुष ते उचरावहि। श्री कृष्णचंदि केरा जसुगावहि।।
तव कौलापति ऐसे कीआ। चंडूरि को करु करि सेती लीआ।।
करि से ले करि दीई फिराई। धनि पछार्यो यादमराई।।
बलिभद्र मुष्ठि को लीना। ऐसे ही वलिदेव ने कीना।।
एक मुष्टि मस्तक परि मारी।
मुष्टि मारि सिरु दीजो प्रहारी।
टूक टूकि तिहि सिरु करि डारा।
वलिदेव जी मुष्टि को मारा।
श्री कृष्ण राम जी दोऊ भाई।
कूदनि लागे तवि अधिकाई।
दुष्टि कंसि कह्यो इन्हि दूरि करो।
मोहि द्रिष्ट ते उोल्हे धरो।
वसुदेव उग्रसैण ले आवो।
तिन को वेग षडि थंम्भ दिवावो।
श्री कृष्णचंदि वचु सुण लीआ।
तव वचु राम सहिति प्रभि कीआ।
कंसि दुष्टि की सुर्ति भुलानी।
कालु निकटि आयो मै जानी।

तवि ही वलिदेव को मतु दीआ।
जो कछु प्रभ जीने वचु कीआ।
जो इसि कालु निकटि है आयो।
तुमि काहे हरि विल्मु करायो।
इसि को प्रहारो श्री जदुराई।
विल्म न कर हो मेरे भाई।
श्री कृष्ण कूदि कंसि ओरि धाया।
जहा दुष्टि वैठा तहा आया।
कंसि वली तव करी सम्हार। दो करि लीने दो हथीआर।।
षंडासि पर लीने हाथ। निकटि कंसि के त्रिभवनि नाथ।।
कंसि कृष्ण को चोट चलाइ। हरि मधुसूदनु जात वचाई।।
कंसु कृष्ण को पकरा चाहे। सकल संत स्युं ओरि निवाहे।।
कंस नि केशव गह्या जाई। इति उति फिरे न चर्नि टिकाई।।
तेजु प्रगटि कीना भगवान। प्रभ पर्मानंदि पुर्षपुरान।।
हरि तिहि आगे छाती धरी। एहि लील्हा पुर्षोत्तम करी।।
सूर्य कोटकि तेज समान। छांती ते काढ्यो भगवान।।
जोत भई छाती दिषराई। कांप्यो कंसु न देष जाई।।
नैन मूंदि वहि गिया डराइ। वेग लीआ गहि केशव राइ।।
गर्ड साप को लेत अमान। कंस गह्यो तिउं श्री भगवान।।
झटकि सीस ते प्रान निकारे। छिन महि केशव कंसु संहारे।।
दुष्टि के केस गहे करि लीने। आण धर्नि ऊपरि प्रभ दीने।।
अस्थ कंसि टूक टूक करि डारे। तवि अमरो कीना जै कारे।।
गह्यो चर्नि ते त्रिभवनि नाथ। अति पवित्र करि पंकज साथ।।
षैचि चर्नि ते भूमि उतार्यो। इहि चरित्र भगवान दिषारयो।।
षैंच्यो कंसु जहा घनिस्याम। कंस षाल तिहि ठा हरि नाम।।
मृतकि देह छाड प्रभ दीनी। इहि करुणा प्रभ ने तव कीनी।।
देवहु सकल कीआ जै कारा। भला कीआ प्रभ दुष्ट को मारा।।
वैठे जाइ प्रभू विस्रांत। मृग विडार मृगराजहि भांत।।
वहुरो औरु असुरु चलि आए। नल नील प्रभ सकल हताए।।
वलिदेव ने सकल असुर हताए। किरिमानी सूती करि ल्याए।।

वहुरो दुष्टि के भाई आए। तिहि स्मसर औरु कौनु कराए।।
वलिदेव तिहि सेती युद्ध कीना। मार मूसिल तिह को जीउ लीना।।
अष्टि वंधू प्रभि दुष्ट के मारे। वलदेव ने सभि ही प्रहारे।।
और अधिक जो योवे आए। भाग गए इहि विधि निर्धाए।।
वसुदेव देवकी पहि दोऊ आए। वेरी काटी सुख दिवाए।।
करि डंडौत प्रभ चर्नी लागे। ठांढे मात पिता के आगे।।
देवकी हरि को आइ अंग लीआ। सीस चूंम मुष परि करु कीआ।।
महा अधिक सुष तिन नें पायो। सांईदास मिल मंगलु गायो।।१०३

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पैतासीलमोध्यायः ।। ४५ ।।

कंसि की जोषता सभि मिलि आई।
दुष्टि मृतकि पहि आइ ठहिराई।
मुष सेती वहु वचनु उचारहि।
हाहा कर्के मुषो पुकारहि।
जो काहू ना र्कति वुराई।
अवि काहे तुमि रो देहु रुलाई।
अवि को पुर को राजु करेगो।
पर्जा कौ सुष कौनु धरेगो।
श्री कृष्णचंदि तिहि कह्यो सुनाई।
इति मृतकि जोरो तुमि जाई।
पुरि को राजु उग्रसेनु करही।
पर्जा को सुष सेती धरही।
वसुदेव देवकी को हरि कह्या।
मुष सेती तवि वचु उचिरह्या।
गोप सहिति अवस्ता टारी।
केतकि दिनि इहि कह्यो मुरारी।
जैसे मात पिता कछु करही। सुत को नामु आप वहु धरही।।
हमिरो काहे नाही कीआ। तव वसुदेव हृदे धरि लीआ।।
र्गगि प्रोहतु लीओ वुलाई। वसुदेव तिहि सो कह्यो सुणाई।।

श्री कृष्ण राम को कौन विचारा।
गर्गि महूर्त्ति भलो वीचारा।
वसुदेव मनि अंतरि इहि धारा।
दस सहस्र सुर्हो विपो को देवो।
गोविन्द अर्थ संकल्पु करेवो।
दस सहस्र सुरिह अवि ही दीने। अपुने वचि पूर्न करि लीने।।
श्री गुपाल क्रिपा निधि स्वामी। सकल घटा के अंतरि जामी।।
माता पिता को वहु सुषु देवो। सांईदास सुष धरि करि लेवो।१०४

नार्दि को हरि लीआ वुलाई।
ताहि कह्यो सुष ऋषि अधिकाई।
कंसि को त्रासु यादव मनि लीआ।
मथुरा पुरु तिन नें तजि दीआ।
अवि तुमि जावो उनि के पाहे।
इहि विधि जाइ कहो तुमि ताहे।
दुष्टि कंसि को प्रभ ने मारा। केस से गह्यो धर्नि पछारा।।
उग्र सेन को राज वहायो। तुमि अपनाचितु ठौर करायौ।।
तुमि अवि अपने ग्रहि महि आवो। अपने पुरि आई आनंद पावो।।
नार्दु सुरण वचि हरि उठि धाया। सात कोस यादव पहि आया।।
तिन को नार्द कह्यो सुनाई। प्रभ जो तिस को दीयो बताई।।
दुष्ट कंसि को श्री कृष्ण विडारा।
उग्र सैन को राज वहारा।
तुमि चलहो अपुने पुर माहे।
कति को आनि पुरि माहि वसाहे।
यादमि ने इहि विधि सुणी काना।
हिर्षमान होए सभु प्राना।
तातकाल अपुने पुरि आए।
चीरि मलीनि तिहि अंग उढाए।
फाटे अंवरि तिहि अंग माही।
तहा मलीन सभ रूप दिषाही।

श्री कृष्ण द्रव्यु कंसि को लीना।
सभ यादव को प्रभ ने दीना।
जाहो अंवरि अंग कछु करो।
ग्रहि महि वसो निश्चल चितु धरो।
यादव सभ भिन्न भिन्न ग्रहि आए।
सुत वनिता संग मिल हर्षाए।
श्री कृष्ण अंवरि वहु लीने।
मोती कर महि नीके कीने।
राम को सहिति लीयो जदुराई।
नंदि महिरि पहि आइ ठहिराई।
नंदि महिर सो वचनु उचारा।
सुण हो पित तुमि वाति हमारा।
जो वसुदेव देवकी हम जाए।
तुमि ही ने हमि वडे कराए।
पै दधि माषनु अधिक षवाया।
महा अधिक तुमि लाड लडाया।
एही मोती अंवरि ले जावो।
जसुमति मात को भेटि चरावो।
माता जसुमति सो इहि कहीए।
हे माता आनंदि सो रहीए।
हमि भी तुम पहि इकि दिन आवहि।
सवि ही तुमिरा दर्सनु पावहि।
नंदि सो प्रभ इहि बचनु सुनायो।
सांईदास मनि कठनि करायो।। १०५ ।।

नंदि प्रश्नु सुणयो हरि पाहे। भयो मूर्छा सुधि विसराहे।।
सुर्त विसार धर्नि परि पर्‍या। उनि न कछु सुधि देहि को कर्‍यो।।
उौर गोप सभ मूर्छा होए। महा अधिक मनि अंतरि रोए।।
जवि कौलापति नैन निहारे। तवि ही प्रभ ने लील्हा धारे।।
वहुरो दानवि को लीओ उठाई। सकल उठाए यादवराई।।

नंदि महिरि तबि हरि सो भाषा।
मै वलि जावो एही आषा।
हमि न रहे हृदे को ठहिरावहि।
जसुमति औरु कहु करावहि।
प्रभाते तुमि सुरिह ले जावो।
सुरिह ले तुमि वन कौ उठि धावो।
तब भी तुमिरो दर्सनु करही।
वनि जावो मन महि ध्यानु धरही।
जवि तुमि वनु तजि करि ग्रहि आवो।
तवि भी हरि तुमि दर्सु करावो।
अवि कहु कहा करे वनिवारी।
तुमि हमि से इउ कह्यो पुकारी।
तब श्री कृष्ण कह्यो पित मेरे।
हमि सेवकि है पित जी तेरे।
जसुमति सो तुमि कहो समझाई।
एक दिनसि आवति जदुराई।
अंवरि मोती नंदि को दीआ।
ताहि देइ करि विदआ कीआ।
रुदनु कर्ति नंद जी उठि धाए।
रुदनु कर्ति गोकलि महि आए।
जसौदा नंदसो भाष सुनायो।
कान्हरि मोहि कहा तजि आयो।।
नंदि महिरि जो कछु देषि आयो। जसौदा को तिन आष सुनायो।।
मार्नि दुष्ट और धन्ष विडार्न। चंडूरि अरु मुष्ट को प्रहार्न।।
तूं वांको सुतु अपुना जाने। सुत हेत कर्के मुषहु वषाने।।
वहु महाराज राजनि को राजा। दीनानाथ हरि वेमुहताजा।।
वहि वालक काहू को नाही। वहि राम रम्यो है सभ माही।।
दीनानाथ अपार गुसांई। तीन भवन केरा वहु सांई।।
छिन महि स्रिष्ट उपावनि हारा। छिन महि पर्लो कर्ति पसारा।।
नंदि जसौदा रुदन कराही। सांईदास धीर्जु ना पाही।।१०६

वसुदेव कृष्ण सौ आषहि। ऐसी विधि मुष ते वहि भाषहि ॥
विद्या पढनि वनार्सी जावो। विद्या पढि के फिरि घरि आवो ॥
पित सौ श्री कृष्णचंदि आज्ञा पाई।
संग लीउो तव वलिदेव भाई।
पग वनार्सी पुर को धारे।
श्री गोपाल संग वीर प्यारे।
विपु सुदामा मग चल्यो जाई।
ताहि कह्यो प्रभ यादमराई।
स्वामी कहो कहा को जावो।
इहि ब्रितांतु तुमि हमिहि सुनावो।
तव ही सुदामे वचन उचारायौ। हे राजेश्वर सुणु चित लायो ॥
वनार्सीपुर माहे जावो। विद्या अर्थ तहा मैं धावौ ॥
तहा जाइ विद्या कछु पावौ।
इहि प्रजोग तिहि पुरि हितु लावौ।
भक्ति उधार्न श्री भगवान।
असुर संघार्ण पुर्ष निधान।
तवि ही विप सौ वचनु उचारा।
तुमि विद्या पढिने चितु धारा।
हमि भी विद्या लीए जावहि। वनार्सी महि जा करि ठहिरावहि ॥
तुम ही चलहो संग हमारें। विद्या ले आवहि तत्कारे ॥
कह्यो विप नीको जदुराई। मै तुमि सहित चलो जदुराई ॥
तीनो चले आए पुरि मांही। सदीपन पंडति रहिति जहा ही ॥
तहा जाइ वेद भाषनि लागे। औरु वाति सकली उनि त्यागे ॥
चारे वेद पढे दिनचारी। श्री नंद नंदन कुंज विहारी ॥
वहुरो राजनीत सिषवाई। चितु लायो त्रभवनि के सांई ॥
राजनीत सिषी गिरधारी। विद्या गुर सौ कह्यो पुकारी ॥
चौसठि दिन में राम गोपाल। चौसठि विद्या सिषे गोपाल ॥
हाथ जोर प्रभ ठांढे भए। सदीपने को इहि विधि कहे ॥
कछु मागो गुरु देव हमारे। हमि देवहि तुमि क्षण तत्कारे ॥
हमि विद्या देवो घरि जावहि। सांईदास जा करि सुष पावहि ॥१०७

संदीपनु वनिता पहि आया। जो प्रभ कहा सौ आष सुणाया॥
तवि वनिता तिहि दीओ विचारी।
सुण हो इहि तुमि वाति हमारी॥
जो वालक तुमि एहि सुणावहि। जो मांगे सोई कछु पावहि॥
हमि वालक किसे षडे दुराई। सोई मांगो तिहि पहि जाई॥
कहो हमहि वालक आण देवहु। सुप्रसन्न होइ हमि तिहि सेवहु॥
अवि भई वृद्धि प्रसूत न होई। हमहि बालक आण देहहु सोई॥
संदीपनि पंडित फिरि आया। आइ कृष्ण को वचनु सुनाया॥
हमि स्नान कर्नि को धाए। नग्रि द्वारका के निकटि आए॥
सप्त वर्षि को वालकु मेरा। गुरभाई होवति है तेरा॥
किनही सुत मोहि षड्यो दुराई। हमि जोहनि लागे तिहि जाई॥
ढूढि थके हमि पावहि नाही। रुदनु कीओ हमि ब्रह्मपुर माही॥
रुदन कर्ति ईहा हमि आए। थक्ति भए कछु मन न वसाए॥
जो हमि ओहु वालक आण देवो। हमि परि किर्पा अधिक करेवो॥
मानो क्रोरु द्रव्य हमि दीना। जो कछु ौरु कहो सौ करेवो॥
भक्त वछलि कह्यो आण देवो। जो कछु ौरु कहो सो करेवो॥
तवि संदीपनि ऐसे आषहि। ौरु न चाहिति कछु ऐसे भाषहि॥
श्री कष्ण राम दोऊ ही भाई। गर्ड चढे प्रभ यादविराई॥

चलिति चलिति गए दधि के माही।
दधि रूप आगे सो आही।
आइ डंडौति करी प्रभ ताई।
कछु आज्ञा करो त्रिभवनि सांई।
तुमि ने किउ करि किर्पा कीने।
इहि मग गहि क्युं करि पगि दीने।
तवि कौलापति वचन उचारे।
सुण हो दधि मूर्ति तत्कारे।
हमि विद्या गुर को सुत भाई।
किनही आन्या वही दुराई।
जो किसी ही तुमि महि आण डारा। आन देहि गुरु भाई हमारा॥
हमि तुमि सो इहि कहयो सुणाइ। सांईदास सुण ले मेरे भाई॥१०८

दधि मूर्ति तवि कह्यो सुनाई। मैं वलि जावो कौर कन्हाई ॥
एकु असुरु रहे नेरे माही। कवहु कवहू वाल्क ले आई ॥
श्री क्रिष्ण कह्यो चलो मोहि दिषावो।
वाही असुर को मोह वतावो।

आगे दधि मूर्ति होउो जाई।
तिहि पाछे कौलापति धाई।

तहा जाइ करि ठांढे भए। जहा असुर आश्रम सुष लए ॥
खलु जह सुष सोया पर्या। श्री कृष्ण उदर तिहि कार्नु कर्या ॥
फार्यो उदरि उदर तिहि देषा। वहु वाल्क तिहि उदरि न पेषा ॥
उौर वाल्क है उदर के माही। सदोपनि कौ वाल्कु नाही ॥
तव उसि असुर ने वचनु उचारा। हे भगवंति तूं प्रान हमारा ॥
मै वडभागी सा प्रभ पूर्ण। तौहि कर कालु भयौ मोहि मूढनि ॥
श्री कृष्णचंदि ने तव क्या कीआ। दो ईटिकी कौ शंषु करि लीया ॥
दछनि को दछनि प्रभ कीना। पश्चम को पछम करि लीना ॥
अपने भक्ति को आज्ञा कोनी। इहि आज्ञा प्रभ तिन को दीनी ॥
प्रथम चंदनु शंष परि चडावहि। पाछे मोहि ऊपरि चर्चावहि ॥
अठसठ तीर्थ को जलु ल्यावहि। तवि मोको स्नानु करावहि ॥
जो जलु पडे शंख के माही। अठसठ तीर्थ को जलु ताही ॥
एहि वचनु कर्के दधि को त्यागा। रवि सुत पुरि केरे मग लागा ॥
आइ गिरिवरि धरि शंषु वजाए। पाइकि शंष शव्द सुणि आए ॥
चतुर भुजा होइ वैकुंठि धाए। तहा जाइ करि आश्रमु पाए ॥
धर्म राइ आगे सौ आया। प्रभ की उस्तति मुष उचिराया ॥
हे प्रभ कछु आज्ञा मोहि करहो। किहि प्रजोग इहि मगि पगि धरहो ॥
श्री कृष्णचंद तिहि आष सुणायो। सभ व्रितांतु प्रभ ताहि वतायो ॥
एकु वाल्कु गुरि को सुतु भाई। किनहू आन्यो वही दुराई ॥
सदीपुन पंडिति पित नामा। विद्या गुरु हमरो तिह कामा ॥
वांको तुमि कहूं ते ले आवो। ताहि को आण करि मोह दिषावो ॥
धर्मराज वाल्कु ले आया। आण श्री कृष्ण आगे ठहिराया ॥
श्री कृष्ण गडि परि लीउो चढाई। वनार्सी पुर को चल्यो धाई ॥
वाल्कु आण पंडित को दीना। हाथ जोर करि विनती कीना ॥

जो कछु औरु मांगो सो देवो। जो कछु कहो मै सोई करेवो॥
संदीपनि तवि कह्यो सुनाई। औरु वांछा मोह रही नि काई॥
सुप्रसन्न मोह आतम होया। मनि ते दुःख मै सुत को षोया॥
तुमिरी सदा होइ कल्याना। मै मनि अंतरि एही आना॥
मै आज्ञा दीनी तुमि जावो। जा करि अपुने ग्रहि सुष पावो॥
आज्ञा ले मथुरा पुर आए। सांईदास सहिज सुष पाए॥१०८

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छितालीसमोध्याय: ॥४६॥

सुदामा यादव हरि संग रहै। भक्ति भाउ तांके हृदे अहे॥
निसवासरि हरि के संगि डोलै। भले वचनु मुष ते वहु वोले॥
उचिष्ट रहे हरि की सोऊ खाई। अंवरि हरि के अंग उढाई॥
एक दिन प्रभ ऊधो लीओ बुलाई। तांको प्रभ कह्यो समझाई॥
तुमि गोकलि जावो मेरे भाई। जहा नंदि महिर अरु जसुमति भाई॥
गोप ग्वारि तहा अधिकाई। हमि से तिन को पूछो जाई॥
तिन को वहु विधि जा समझावो। सुप्रसन्न तिहि चितु करावो॥
जीउ प्रान उनि हमिरे माही। जवि हमि सुरहीअनि को ले जाही॥
जो कवहूं हमि आवे अवेरा। धीर्जु तजि हेरहि मगु मेरा॥
अवि न जानो कैसे वहि रहई। मोहि विछोहो कैसे वहि सहई॥
तिन को तुमि अवि जाइ सुनावो। एकि दिन कृष्ण आवहि न डुलावो
ऊधो रथि परि चढि के धाया। तात्काल गोकलि महि आया॥
नंदि महिरि ग्रहि आश्रमु लीना। अपुनो पगु ताहू ग्रहि दीना॥
नंदि महिरि पग ऊधो धोए। ऊधो सहिज मंडलि महि सोए॥
भोजनु नाना ताहि षवायो। ऊधो महा अधिक सुषु पायो॥
जवी सुदामा सोंकरि जागे। नंदि महिरि तिहि पूछनि लागे॥
हे ऊधो जो मोहि सुनावो। हमिरे मनि को भर्मु हिरावो॥
कवहूं श्री कृष्ण कर्ति मोह चीत। तुमिरी है वांके संग प्रीति॥
कवहूं जसुमति को चित करही। कवहूं हमिरो नामु उचरिही॥
जसुमति माषनु दूधि षवाए। दधि वहुता दे अधिक कराए॥
फिरि कह्यो नंदि ऊधो ताई। हमि सुतु कहि भूले अधिकाई॥

हमि ने इहि विधि ज्यान्यों नाही। पारब्रंह्म त्रिभवनि को सांई ॥
सकल स्रिष्ट को है पित माता। इनि सेती किनी जाननि जाता॥
जवि सुर्हो को लेवनि महि जावै। सकल ग्वारिनि दर्सनु पावै॥
वनु तजि जवि ग्रहि को पग धारे। ग्वार्नि सकली तिनहि निहारे॥
इनि के प्रांनि है उसि के माही। सांईदास उौरु जाने नाही १०९

रजनी गई रवि कीयो प्रकासा। ऊधो को नंदि ग्रहि महि वासा॥
ग्वार्नि सकली ने सुण पायो। ऊधो श्री कृष्ण पाहे ईहा आयो॥
चली चली ऊधो पहि आई। मनि वच अपुने ताहि सुणाई॥
श्री कृष्ण वस्त्रि ऊधो उोढि आया। इउही किनही भर्म भुलाया॥
जैसे कपटु हमि सहिति कमाया। ऊधो सो कर्सी अधिकाया॥
एही प्रष्णु ग्वानि जवि कीना। भिंृग प्रगटि आगे पगु दीना॥
ग्वार्नि पगि परि आइ उर्भायो। वोलति शव्द महा सुष पायो॥
ग्वार्नि षट पदि सो इउ भाषहि। दूरि होउ कपटी इहि आषहि॥
तूं हमि पग को पर्सन मौवो। तुमि कारे कपटी मनि षोवो॥
जैसे तुमि वाहिरि द्रिष्ट आवो। ऐसे अंतरि रूप दिषावो॥
तुमिरा हमि संग नाही कामा। ऐसे वोलति सकली भामा॥
जवि लगि त्रिणु हरि आवनि माही। मृग त्रिणु चर्ने को नित जाही॥
जवि लगि कुस्म षिस्यो निर्षाइी। षटि पदि कुस्म ऊपरि उर्भाई॥
धनिवंते पहि सभि कोऊ आवै। तांकी उस्तति अनकि करावै॥
डौ लागे वन मृिग तजि भागे।
फिरि तिहि वनि हितु नाही लागे।
कुस्म कुमलाना भिंृग तजि जावै॥
तांके फिरि को निकटि न आवै।
रे षटि पदि पगि पर्सो नाही। तुमि कांरे हो अंतरि माही॥
षटि पदि सो सभि प्रश्न चलावहि। ऊधो सो वहु भांति सुनावहि॥
ऊधो सुण सिरु तले करायो। जवि ग्वार्नि इहि प्रश्न सुणायो॥
वहुरि ऊधो सो कहिर्णं लागी। ऊधो किउं हरि हमिहि त्यागी॥
प्रथमे प्रेमु हमि सो क्युं कीनां। जो हमि सो विछोहा दीना॥

हरिआदेषि चरति है वाही।
हमि को डार्‌यो विरहि की फाही।
ऊधो जी फिरि हरि कवि आवहि।
हरि अपुनो हमि दर्सु दिषावहि।
ग्वानि सकली रुदनु करावहि।
हे ऊधो कवि हरि ईहा आवहि।
ऊधो प्रतु दीउो ग्वानि ताई।
एक दिन आवहि त्रिभवनि सांई।
ताहि ध्यानु त्यागो तुमि नाही।
ध्यानु धरो तिहि चर्न मझाही।
रुदनु न करहो हरि को गावो।
हरि चर्नां सो ध्यानु लगावो।
ऐसे ऊधो ताहि वतायो।
ग्वानि को शांत घरि ल्यायो।
ऊधो नंदि सो कह्यो सुनाई।
आज्ञा देहू पुरि को चलो धाई।
नंदि जोषता तवि सुग पायो।
ऊधो प्रतु मनि महि ठहिरायो।
माषनु नीको ले करि आई।
जिहि सुरिह पै पीवति जदुराई।
ऊधो को कह्यो इसे ले जावो।
षडि कौलापति पहि पहुचावो।
ऊधो आज्ञा ले उठि धायो।
मधुपुरी मार्ग सो हितु लायो।
चलिति चलिति पुरी माहे आयो।
श्री गोपाल इहि आइ ठहिरायो।
जो कछु जसुमती पाहे आना।
श्री कृष्णचंदि आगे ठहिराना।
श्री कृष्णचंदि सो वचनु उचारा।
गोपी जन कों प्रेम वीचारा।

तुमिरो ध्यानु धरे मनि माही। विनु तुमि ध्यान अविर कछु नाही॥
निस वासरि तुमिरो जसु गावहि। तोहि चर्ना सो मनु उर्भावहि॥
तुझि विनु ध्यानु किसे ना धारहि। तोहि नामु हृदे माहि बीचारहि॥
गोपी जन को प्रेमु सुनायो। सांईदास हरि ने सुण पायो॥

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सैंतालीसमोध्यायः ॥४७॥

सुदामा यादव लीयो वुलाई। ताहि कह्यो प्रभ यादमराई॥
कुब्जा सो मैंने वचु कीआ। तांको वचनु हाथि करि दीआ॥
तोहि ग्रहि माहे भोजनु पावो। एक दिनसि तुमिरे ग्रहि आवो॥
चलहो अवि कुब्जा के जावहि। तहा जाइ भोजनु हमि पावहि॥
सहिति सुदामा प्रभ उठि धाए। कुब्जा के मंदिर महि आए॥
कुब्जा मंदिर भलो वनायो। अति मिष्टान तहा पाक पकायो॥
आजु का हरि हमि ग्रहि आवहि। अपुनो पगु सेवक ग्रहि पावहि॥
कुब्जा हरि निर्षे सुष पायो। भ्रमु त्याग मनु हरि सो लायो॥
तत क्षिण महि जल को ले आई। स्नानु करो है यादम राई॥
वहुरो भोजन भिन्न भिन्न ल्याई। महा अधिक कछु कह्यो न जाई॥
अधिक भाउ करि सेवा कीनी। हरि की सेवा मस्तिकि लीनी॥
तव श्री कृष्ण मुषु वचन उचारे। हितिकारी अक्रूर हमारे॥
तांसो भी मैंने वचु कीआ। तांसो वचनु अधिक करि लीआ॥
चलहो सुदामा तिहि ग्रहि माही। ताहि प्रीति हमिसो अधिकाही॥
कुब्जा को ग्रहि तजि ग्रहि आए। श्री कृष्ण राम सो लीउो वुलाए॥
तीनो सुपलकि सुत के आए। आनंदि सो भोजनु तिहि पाए॥
श्री कृष्ण कह्यो सुपलकि सुत ताई। मनि महि समझि देषु अधिकाई
कंसि तोहि गोकलि जो पठाया। ताहि काजु तूं कर्के आया॥
अवि इकु काजु करा तुमि मेरा। उठि धावो तजि देहा डेरा॥
पांडौपुरि केरे मगि जावो। पांडो सुत की षवरि ल्यावो॥
तवि सुपलिकि सुत ने वचु कीना। हे प्रभ पूर्न ज्ञान प्रवीना॥
माया रूप हमि ते दूरि करहो। हमिरा चितु अपुने पगि धरहो॥
सुत वनिता माया और कूरे। हमि ते दूरि करो प्रभ मोरे॥

जवि अक्रूरि प्रश्न इहि कीना। श्री कौलापति उत्तर दीना॥
हे सुपलकि सुत वौरा भया। कौन वाति तैं मुषि तैं कीआ॥
तूं वडो सभ यादम के माही। कहा वाति तूं मुष उचराही॥
तवि सुपलकि सुत कह्यो जु भावे। हमि मस्तक परि भलौ सुहावे॥
जावति हौं पांडो सुत पाहे। वस्ति हस्तना पुर के माही॥
सुपलकि सुत मनि महि ठहिराई। सांईदास जो हरि उचिराई॥१११

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अढतालीसमोध्यायः॥४८॥

सुपलकि सुत आज्ञा ले धाया।
पांडो सुत के पुरि हितु लाया।
प्रथमे ध्रितराष्टर अहि आयो।
ध्रितराष्टर सो वचनु सुनायो।
जो तुमि द्रव्य इकत्रि कीना।
डंडु डाडु ले करि तुमि लीना।
सकल अकार्थ है मेरे भाई। अंत समे पाछे रहि जाई॥
अप्ने करि देवो विप ताई। धर्म्मु करो हृदे दया वसाई॥
जैसे मार्ग गर्भि माता से आया। वहुरो ऐसे ही उठि जाया॥
थिरु न रहे तूं मेरे भाई। औसर संग न तोहि कछुं जाई॥
सुत वांधव सभ एक निहारो। वंधू सुत वहु भले वीचारो॥
जो इनि मांहे अंतरु आनें। नर्गिगामी होवे तूं जानें॥
तवि ध्रितराष्टरि वचन उचारे। सुपलकि सुत सुण मीत हमारे॥
कहा करो माया सब लाही। इहि माया हमिरे वसि नाही॥
सुपलकि सुतु तिहि को तजि आया। पांडो सुत पहि आइ ठहिराया॥
कुंती तवि ही वचन उचारे। सुपलकिसुत को कहिति पुकारे॥
मोहि सुत सो कैरौ इहि कीआ। डारि मंदिरलाषि आग दीआ॥
हरि क्रिर्पा उवरे सुत मेरे। कहा कहो मै आगे तेरे॥
अवि हमि सेती और कछु करिही।
हमि सो वैरु अधिक अहि धरही।

भला कीआ हमि प्रति तुमि आए।
आनंदु भया तुमि दर्सनु पाए।
अवि हमि इहि विधि सुरा पाई।
सो मै तुमि सो कहा सुनाई।
दो सुत वसु देव के ग्रहि होए।
वसुदेव सभ संसय मनि षोए।
महावली तिन कौ वलु भारा।
पातकि कंसि ताई उनि मारा।
निसबासरि हमि करहि असीसा।
जादव जीवे लाष बरीसा।
महाराज जादव वहु करही।
यादव परि किर्पा हरि धरही।
जवि ते कैरो इहि सुरा पाई। प्रगटे है प्रभ यादवराई।।
तवि ते कछु मनि महि भौ आना। हमि संग कर्ना सकहि धिङाना।।
वदरावरि लोको कछु कह्या। भला कीया इनि की सुधि लह्या।।
अवि इनि को षसि माना कीना। जो तै इनि के ग्रहि पगु दीना।।
सुपलकि सुत तव कह्यो पुकारे। कुंती सिमरहु प्रान अधारे।।
तोहि सुत इहि वहुतु भलो होवहि। तेरो संसा सभि ही षोवहि।।
अपुनो चितु राषो तुमि ठौरा। संचरु मनि लेहु न भोरा।।
पांडो सुत सों आज्ञा पाई। सुपलकि सुतु चल्यो तव धाई।।
ततक्षरा आयो मधुपुरी माही। स्याम सुंदरि तव ही प्रभ चाही।।
जो कछु कुंती विनती ठांनि। सुपलकि सुत सो सकल वषानी।।
साधो निसवासरि गुनि गावो। सांईदास छिनु ना अलिसावो ११२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षतिसंवादे उणिवंझवोध्यायः ।।४६।।

जो हरि कंस को पकरि संहारा।
केस सो गह्यो धर्नि पछारा।
पाछे कंसि जोषता आई।
करि धरि पटिकि वहु रुदनु कराई।

रुदनु कर्ति पित डौरि सिधाई।
जरासिंध पाहे वहि आई।
जरासिंधु सो वचनु उचारा।
सुण हो वाति तुमि तात हमारा।
सुत वसुदेव नृप कंसि को मारा।
तिस की भुज महि वलु वहु मारा।
जवि जरासिंधु सुण इहि वाति।
धर्नि पटिकनि लागे वहु माथ।
तबि ही इहि प्रतज्ञा कीई। मनि अंतरि द्रिढ कर्के लीई।।
दाहरणे करि भोजनु ना पावो। जवि जादव ना मार चुकाओ।।
जरासिंध नृप और वुलाए। तिन सो सभ विधि आष सुणाए।।
मैं वसुदेव के सुत परि जावो। तांसो जाइ करि युद्ध मचावो।।
तुमि अपुनी सेना ले आवो। तुमि सभ हमिरे संग सिधावो।।
मैं प्रतज्ञा मनि महि कीनी। सभ यादव मारो इहि लीनी।।
सभ नृप सुनति सैन ले आए। मधपुरी माहे सकल समाए।।
सभि सैना तांकी इहि होई। नउदस क्षुहिणी होवै सोई।।
मधिपुरी को घेरा जाइ कीना।
श्री कृष्णचंदि तवि मनि महि लीना।
अपुनो रथु मो पहि नही कोई।
तापरि मग धरहो सुख होई।
पातकि कंसि के रथ ना चर्हो।
उसि के रथि परि पगु ना धरहो।
तवि रवि को प्रभ आषि सुणाया।
दोवै रथि वहु अधिकि सवाया।
रवि दोनो रथि दीए पठाई।
अति नीके लीने जदुराई।
वलिदेव सो प्रभ वचनु उचारा।
इहि रथि परि चरहो तत्कारा।
नोदसक्षोहिणी सैना आई।
दंडि लेहि हमि तुमि वहु भाई।

तुमि कहा लेवो हमि क्या देवौ। वहि जलि महि नागभझवि षोवो ।।
एहि वचनु कर्के उठि धाए।
जरासिंध के सन्मुख आए।
श्री गोपाल भक्तिनि सुषदाई।
सांईदास प्रभ रचिन रचाई ११३

पुरि के लोक सकल मन त्रासा।
कंपति मुष निकसति नही वाता।
असुर अध्कि निर्ष विस्माए।
इनि से हमि सो कौणु छडाए।
क्या जाने अवि छूटे के नाही।
फांसे है रवि सुत की फांही।
तवि व्रिजनाथ मुष वचनु उचारा।
लोक न समझिति षेलु हमारा।
मानसि रूप मोहि करि जानहि।
इहि विधि वहु मनि महि नही आनहि।
मैं इहि विधि लीनो अवतारा।
अधिकि भयो धर्नी सिरि भारा।
षलि असुर प्रगटे अधिकाई।
वसुधा भारु न सकिति उठाई।
वसुधा भारु दूरि करि डारो।
पातकि असुरो को प्रहारो।
अपुने संति जना सुख देवो।
पारि ग्रामी कर्के लेवो।
सभ असुरो को मारि चुकावो।
इनि पतितनि को वीजु गवावो।
फिरि धर्नि परि प्रगटि न होही।
वेग मुर्अचित सुन्न महि सोही।
जरासिंध प्रभ सो कही बात।
मैं युद्ध करो न, तुमिरे साथ।

तुमि को दूषनि है अधिकाई।
मात को भ्रात तै लीओ हताई।
जो वलिदेव हमहि युद्ध करावै।
हमि सो युद्ध कर्नि मनु लावै।
तांसो युद्ध करो वहु भांति।
धर्नि गिरावो तांकी क्रांति।
जवि जरासिंध इहि वचनु उचारा।
तवि ही युद्ध भयो तत्कारा।
श्री कृष्ण राम तिहि सैना मारी।
अध्कि रक्ति की सिंध मुरारी।
असुर असलता नामु रषायो।
तिहि उस्तति वहु वेद वतायो।
असुरो की जो भुजा कटाई।
ताहि रक्ति महि सरिह आ जाई।
मानो उर्गि फिर्ति जल माही।
काटि दीए प्रभ कछु न वसाही।
जो पल्लो करि के कटि डारे। मानो मीन फिर्ति जल धारे।।
सिर के केस जो देहि दिषाई। मानो सती नाल है मेरे भाई।।
कुंडलि उौरु छापतिहि माही। मानो सूक्ष्म नषन दिषाई।।
उौरु पागि सिर ते जो झरे। मानो वगि डान है षरे।।
इहि सरूप की नदी वहाई। सांईदास सोभा वनि आई।।११४

सभ सैना नृप की हरि मारी।
अपुनी लील्हा प्रभ ने धारी।
वलिदेव ने जरासिंध सों गह्या।
रथि सों वांधि फिरि रथि परि वह्या।
लीए लीए आए हरि पाहे।
निर्षति वलदेव कृष्ण उो राहे।
जो मुष कहो मारि के डारों।
इसि पातकि को धर्नि पछारो।

दीनानाथ अंतरि विधि जानी।
तवि मुष ते इहि वाति वषानी।
तजि देहि अवरि असुर ले आवै।
करि इकत्रि सभ आण मरावै।
वलिदेव ने नृप को तजि दीना।
जरासिंधि तव इहि मनि कीना।
जरासिंधि है नामु हमारा।
मोहि सैना इनि वाल्क मारा।
अवि क्या मुष ले करि मै जावों।
अपुने नग्रि को मै उठि धायों।
मनि आवत लेउो वनिवासा।
उौरु त्यागो सकली आसा।
तवि सैना नृप को प्रतु दीना।
क्या संचरु तैं मनि महि लीना।
तुमिरे पिंड महि होइ कल्याना।
हे नृप महा वली तूं सुजाना।
सैना फेरि अधिक कर ल्यावहि।
इहि दोई वाल्क मार चुकावहि।
इनि को जीवति रहनि न देवहि।
चलहो उौर सैन करि लेवहि।
दसि सतवार सैन ले आए।
श्री कृष्णचंदि सभ मार चुकाए।
जरासिंध के नार्द आया।
महान महान स्याम मनि भया।
जरासिंध उठि सन्मुख आया।
नार्द जी के पगि लपिटाया।
पग पषार आसन वैसाया।
अति अधीन होइ वैन सुणाया।
वोले राजा नमो महान। तार्नि हमि सें पर्मि अजान॥
पुनि बोले नार्द सुर ज्ञान। सदा रिदे जांके भगवान॥

राजा जी समिझावो मुझै। चिंता सी देषहि कछु तुझै।
निर्भो है क्युं तुमिरा राजु। चिंता स्यूं किउ बैठे आजु॥
जरासिंध पुनि वोले वैन। महावली है पंकज नैन॥
हौ भागा हरि ते वहु वार। मुझि ते भगाहि रण मुरार॥
इहि चिंता है हिर्दे मांहि। किउं ही हमिरा शोक मिटाहि॥
जो जो परे तुमारी सर्न। सभि दुःख मोचन तुमरे चर्न॥
एकि वार भागे भगवांन। पूर्न होहि हमारे काम॥
वोले नार्द महा महान। सुगम वाति है सुनहु सुजान॥
काल यम्न पहि दूत पठाइ। सभि व्रितांतु जा तिसें सुनाइ॥
मथुरा प्रगटे राम मुरार। तिन हौ जीत्यो सत्रहि वार॥
जो तू हमिरा करहि सहाइ। वस कीजै तव यादवराइ॥
कावल ते तुमि आवो धाइ। हौ आवो सभ सैन मिलाइ॥
जीवति पकरे केशव राम। पूर्न होहि तुमारे काम॥
काल यम्न कावल ते आवहि। इहि दिस तुमरी सैन सिधावै॥
घेरि लेहि मथुरा कौ जाइ। कहा जाइ वल अरु हरिराइ॥
गहि लीजहि दोनहु नंदि नंदन। दीनदयानिधि दुष्ट निकंदन॥
जरासिंध एहि मानी वात। नीकी कही हमारे तात॥
नार्द कौ पुनि राजा कही। सर्न तुम्हारी हमि हृदिगही॥
तांपहि तुमि ही जावो देव। कीजै सुफल हमारो सेव॥
तुमि कौ जात न लागे वार। तुमि तौ मनिसापरि असिवार॥
करो क्रिपा इहु कष्टु मिटावहु। कालयम्न पहि आप सिधावहु॥
वहुतु भला नार्द जी कही। तुमिरी पीडा जात न सही॥
उडे गुसांई महा महंत। हरि नारायण जपते मंत॥
कालयम्न षलु वहु वलिकारी। जरासिंध प्रीतम हितकारी॥
पुरा सांन माहे तिहि वासा।
रहिति अनिदिन वहु प्रीत प्यासा।

एक दिनसि नार्द क्या कीया।
कालयम्न के ग्रहि पगु दीया।

कालयम्न सो वचनु उचारा।
कालयम्न सुणु वचनु हमारा।

जरासिंध तोहि सखा कहावै।
ताहि अवस्ता दुःख दिषावै।
वसुदेव सुत तां संग इहि कीना।
सकल सैन तांकी हति लीना।
महा अधिक दुःख तांको दीआ।
तो मैं वचु तुम सो है कीआ।
सषा प्रीतम वही भला कहावै।
जो अपुने प्रीतम काम आवै।
अवि तुमि तांकी करो सहाई।
सांईदास तुमि कह्यो सुहाई ११५

कालयम्न इहि विधि सुण पाई।
नार्द ऋषि तिहि आष सुणाई।
तीन क्षुहिणी सैन ले धाया।
तत्क्षण महि मथुरा निकटि आया।
जरासिंध तिहि सुनति आवति।
इहि विधि कृष्ण हृदे सकुचावति।
जो षल कालयम्न उौर जावो।
तांसो जा करि युद्ध मचावो।
पाछे नृप जरासिंध जु आवै।
पुरि के लोक सभ बांधि ले जावै।
जरासिंध जो सन्मुख ज़ाही। कालयम्न पै से पुरि माही॥
बांधि लेइ हमिरो परिवारु। कछु संकर्षण मंत्र उचार॥
एकु कामु उौरु मै करहो। पुरि के लोक दर्वाजा करहो॥
जा दधि माहे नग्रु वसावो। चित्तु ठौर कर्के फिरि आवो॥
कौलापति त्रिभवनि नरंकारा। नाथ अनाथनि अपर अपार॥
विश्वकर्म्मा को आज्ञा कीनी। इहि आज्ञा प्रभ तांको दीनी॥
दधि माहे ग्रहि भला वनावो। अधिक सुंदरि तांको उपजावो॥
विश्वकर्मे जो आज्ञा पाई। ग्रहि साजन को चल्यो धाई॥
महासुंदरि ग्रहि ताहि वनाया। वज्र सुंदरि, तांको लाया॥

ताहि किंगुरे फटिकि वनाए। मानो वैकुंठ सोभति भाए।।
वाग अधिक द्वारे अहि लाए। अहि द्वार वैकुंठि दिषाए।।
पुनि माया भगवान वुलाई। तात्काल वहु प्रभ पहि आई।।
हरि दासी आई हरि सर्न। पर्से सुष निधि पंकज चर्न।।
करि डंडौत हरि सन्मुष परी। हरि मूर्ति नैनहु मैं परी।।
जोग माया को श्री भगवान। आज्ञा कीनी पुर्ष पुरान।।
मथुरा के जन षडहु उठाइ। सोए रहे न किसी जगाइ।।
पुरी द्वारका महि षडि पाइ। तात्काल कछु वार न लाइ।।
सभ उठाइ माया जन षरे। पुरी द्वारका महि ले धरे।।
अति अचित महिमा कर्तार। जो लील्हा सो अपरि अपार।।
प्रीति भई जागे सभ संत।
देषे सागरि तीर अनंत।
श्री कृष्ण लोक पुरि ताहि वसाए।
वलिदेव को तिहि पहि तजि आए।
आप आए मथुरा पुर माही।
आस्त्रमु आइ लीनो हरि ताही।
हरि संतनि को सदा सहाई।
सांईदास जपो मन लाई।

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंचासमोध्याय: ।।५०।।

वज्र जादम मधिपुरी माही।
सेवकु हरि को डहिले नाही।
पुरि को हुकम ताहि को दीना।
इहि करुणा प्रभ ता परि कीना।
पुरि के द्वार तिहि दीए चढाई।
अंतरि पुरि वैठे जदराई।
कालयम्न युद्ध को उमिडाया।
अहि त्याग नागो उठि धाया।

श्री कृष्णचंदि आगे होयो जाई।
कालयम्न हरि पाछे धाई।
नृप परीक्षति सुकदेव सुनायो।
प्रभु तिहि सन्मुष क्यु नही आयो।
किर्पा करि प्रभ देउ वताई।
मोहि मनि ते संचरु हिरि जाई।
शुक प्रतु नृप प्रीक्षति कौ दीना।
भलो प्रस्नु नृप तैने कीना।
तिहि म्लेछ जाने तजि दीआ।
इहि विधि तिहि पर्सनु ना कीआ।
वहुरो तिसि की आद सुनावौ।
तुमिरा संचरु सकल मिटावौ।
गर्ग प्रोहति था जदुकुल का।
धी जद दई विर्त कीचुल का।
चुलका कहिति कोऊ सुर ज्ञान।
कोऊ कहिति संकल्प महांन।
था विरक्ता इहु व्याहु न करे।
सदा हृदे पग प्रभ के धरे।
यादव लागे कर्नि विचार।
गर्ग प्रोहतु कर्ति न नार।
या बिनु हमिरा प्रोहतु कौनु।
सूना संतत दिज विनु भौनु।
आवहु कोऊ उपाउ वनावहि।
किवे गर्गि को व्याहु कराबहि।
कोईक दिजको चानक लाय्यै।
कछु हांसी करि गर्गु बिझाय्यै।
हांसी सुन मतु व्याहे नार।
वांते उपजहि सुत सुकुमार।
तवै गर्गि जदकुल महि आया। तब जद कौरों वचनु सुनाया।
गर्गि प्रोहतु पुर्षु न होइ। पुर्षु सोऊ जो व्याहे जोइ।

हे नरि पुंसक संसा नाही। कासु न यांके तनि के माहि ॥
कछुक क्रोधु सुन प्रोहति कह्यो। इहि निश्चा घटि भीतरि धर्‍यो ॥
को ऐसा हमि सुत उपजावहि। याते यादव सभ भज जवहि ॥
कावल पर्‍यो रुद्र को थान। तहा गयौ दिज गर्ग महान ॥
लागा शंकर का तपु कर्न। सदा ध्यावे शिव के चर्न ॥
केतकि दिन को दिज वलिवंति। लोहि चूंन की तली महंति ॥
ऐसा दारुण लेत अहारा। उदरि मिलावै घसिआ सारु ॥
अति प्रसन्न तापरि शिव भया। रुद्र गर्गि को दर्सनु दया ॥
नखि सिष लौ अति अद्भुत रूप। सकली अकार है सदा अनूप ॥
नमिस्कार गर्गि तिहि कीनी। अनेक उस्तति मुष ते उचिरीनी ॥
सुन जसु शंकर भए प्रसन्न। सदा रहै जिहि हरि ब्रह्मन्न ॥
विप गर्गि को शंकर वोले। सभ सुषदायक वचन अमोले ॥
कछु वरु मांगो संत सुजान। राषौ सभै तुमारा मान ॥
गर्ग कह्या ऐसा वरु दीजै। करुणा सागर करुणा कीजै ॥
को ऐसा वेटा हमि पावहि। यांके भै यादव भज जावहि ॥
तथा अस्त शंकर जी कह्यो। इहि वर गर्ग प्रोहति लह्यो ॥
वरु दे शंकर महा महान। भए गर्गि ते अंतरि ध्यान ॥
गर्गि प्रोहति इहि वरु पाया। तवै गुसांई कावल आया ॥
कावल का इकु था अधिकारी। यवन म्लेछ वडा वलिकारी ॥
तिनि प्रोहिति को वेटी दई। गर्गि विप की तिरीआ भई ॥
कोई कि दिन तहा रसे गुसांई। ज्यु ससुरार जवाई न्याई ॥
तवै गर्गि के बालकु आया। कालयम्न तिहि नामु रषाया ॥
सुत उपिजाइ गर्गु उठि धाया। कालयम्न इउं उतिपति भया ॥
कालयम्न नाने के धाम। वडा भया सुष सो विस्त्रम ॥
जवि तांका नाना मरि गया। कालयम्न तव राजा भया ॥
संत जना वचु पूर्न कर्न। इसि नमित्त भागै दुःख हर्न ॥
तांसो कैसे अंगु छुहावै। इहि प्रजोग प्रभु तिहि तजि जावै ॥
प्रभ कंदरा प्रवेसु करायो। षल द्रिग से जाइ आप वरायो ॥
कालयम्न पाछे से आया। मुचकंदि पहि आइ ठहिराया ॥
पीतंवरु तिहि नैन निहारा। ज्यान्यो कृष्ण पर्‍यौ मनिधारा ॥

प्रभुजाइअस्थावरिपरि चरिआ। हरि पाछे पगु षल नही धरआ।।
तहा कंदरा अति अंधारी। कीओ प्रवेसु तहा कुंज विहारी।।
मुंचकंदि ऋषि सुत महांधाता। तहा रहित भजन हरि राता।।
तहि समे मुचकंद सुष कर्यौ। शैनु कोओ हरि सो चितु धर्यो।।
श्री कृष्ण पीतांवरि डार्यो। आप कंदिरा महि पगु धार्यो।।
प्रभु कंदिरा प्रवेसु करायो। खल द्रिग से जाइ आप वरायो।।
कालयम्न पाछे से आया। मुचकंदि पहि आइ ठहिराया।।
पीतंवरु तिहि नैन निहारा। ज्यान्यो कृष्ण परे मनि धारा।।
सिषचलाति षल ने तिहि मारी। जाग परा ऋषु कह्यो पुकारी।।
ऋषि अति क्रोधु हृदे उपिजायो। कालयम्न को भस्म करायो।।
नृप परीक्षति इहि सुण विस्माया। ऋषि कैसे षलु भस्म कराया।।
इहि संचरु हमिरे मन पर्यो। भस्म कैसे ऋषि तांको कर्यो।।
हे शुक जी करुणा मोह धारो। इहि विधि को मोह देहि वीचारो।।
नृप परीक्षति इहि सुण विस्माया। ऋषि कैसे षलु भस्म कराया।।
इहि संचरु हमिरे मन पर्यो। भस्म कैसे ऋषि तांको कर्यो।।
हे शुक जी करुणा मोह धारो। इहि विधि को मोह देहि वीचारो।।
शुकदेव कह्यो नृप मनि सुनि लेवो। उौर ठौर कहू चितु न देवो।।
असुर अमर को वहु दुःख देवहि। अमरो वहु को घातु करेवहि।।
गंधर्व सकले मिल कर आए। मुचकंद भक्ति सो वचनु सुनाए।।
हे नृप हमि वहुता दुःख पावहि। असुरअधिक हमि आइसंतावहि।।
तुम सहाइ करो हमि धाई। असुरो सो चलि करो लराई।।
अमरो जवि इहि भूपति सुनायो। इहि प्रतु सुण भूप तत्क्षण धायो।।
असुरो सो वहुता युद्ध कीना। सकल असुर भूपति हनि लीना।।
अमिरो होई कल्याना। भूपति सो तिहि वचनु वषाना।।
वरु मांगो देवहि तुमि ताई। हमि वरु अपनु होहे अतिअधिकाई
मुचकंद तिहि कह्यो सुनाई। सुन वंधू तुमि हमिरे भाई।।
मै जा शैनु करो अधिकाई। सुष उपजे भौ सकल तजाई।।
जो कोऊ मोको आइ जगाई। ततक्षण महि भस्मति होजाई।।
अमरो कह्यो अैसे ही होई। जो तुम कह्यो होइ फुनि सोई।।
मुचकंदु वरु ले कर आया। ईहा आइ कर सैनु कराया।।

अमरो वरु अन्यथा ना जाई। जो वचु कहें सो होई भाई ॥
तिह वचु षलु भस्मतु करायो। मुचकंदु तिन आइ जगायो ॥
प्रीक्षति जव ते इहि प्रतु पायो। सकल भर्मु तिन हृदे चुकायो ॥
श्री कृष्ण कंदिरा जकर आया। मुचंकद दर्सनु हरि पाया ॥
मुचकंद सो वचनु उचारा। तूं निकटी हे भगतु हमारा ॥
कछु मांगो मुष तुमि को देवों। सुप्रसंन्न आतम कर लेवो ॥
मुचकंद तव वात उचारी। प्रांन पुर्ष श्री कुंज विहारी ॥
तुमरी भक्त रहे हृदे माही। जासि रहे सभ दु:ख मिटि जाही ॥
भगत वछल प्रभ सदा सहाई। धन्य धन्य मुष ते उचराही ॥
छत्री होइ भक्त मोहि जाचहि। तजि विष्या हमिरे रंग राचहि ॥
भक्त सदा तुम मस्तक होई। उौरु मांगु देवैं फुनि सोई ॥
तव कह्यो नृप सुन हो जदुराई। उौरु वांछा मन नाही काई ॥
प्रभ कह्यो जाइ राज करावो। मोहि भगत ग्रहि मांहि कमावों ॥
मुचकंद आग्या जव पाई। नग्रि चल्यो वेग उठि धाई ॥
नग्रि माहि जाइ राजु करायो। हरि को भजनु तिहि सहित कमायो
तांको प्रभ कितार्थु कीना। सांईदास अधिक सुष लीना ॥ ११७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकवंजमोध्याय ॥५१॥

श्री गोपाल मध्य पुरी महि आए। पुर माहे आइ कर ठहिराए ॥
राम द्वारका सों तव आया। जां कृष्ण चंद जू वहु चिरु लाया ॥
श्री कृष्ण सहित वल भद्र सहाई। महा अधिक सोभति जदुराई ॥
जरासिंध तव ही फिर आया। पुर को आइ तिन घेरा पाया ॥
श्री कृष्ण रामु तिहि सन्मुख धाए। सैंना देषि वहुरि फिर आए ॥
महा अधिक सैंना तिहि आनी। पारावारु न जाइ वषानी ॥
तव जरासिंध के आगे भागे। महा विकटि वन के मग लागे ॥
जाइ विकट वनि आप दुरायो। जरासिंध तिहि पाछे धायो ॥
जरासिंध वन आग लगाई। श्री कृष्ण कह्यो सुण वलदेव भाई
अग्नि निकटि आई क्या करीए। मार्ग को क्युं करि पगु धरीए ॥
राम कह्यो सुण हो मेरे भाई। मार्गि गगन चल्यो तुम धाई ॥

दोनों वीर गगन पग धारे । कंचन पुर मगु लीयो विचारे ।।
जरा सिंध उलटे पग दीया । मघवापुर को मगु हत लीया ।।
अपुने पुर माहें चलि आए । अति अनंद मन माहि वसाए ।।
श्री गोपाल अैसे ही भाया । संत हेत प्रभ कर्मु कमाया ।।
भक्ति वचनु की पैज रषाया । सांईदास सन्मुष भूझाया ।। ११८

इकि राजा कारेवत नामा । तिह आइ पर्स श्री बलिराम ।।
तांकी कंन्या पर्म उदार । नामु रेवती अति सुकुमार ।।
तन त्रेता का पर्म रिसाल । जीवत भया तिसे चिरकाल ।।
पिता राम के आये धरी । हाथ जोरि अति विनती करी ।।
दीन होइ पर्स हरि चर्न । प्यारी सुता तुम्हारी सर्न ।।
हलधर मन महि कर्‌यो विचार । हम छोटे इहि वड़ी अपार ।।
हलु तांके गलि मेल्यो राम । प्रभ अवनाशी पूर्न काम ।।
षिची तले को पुर्ष पुरान । कर लीनी प्रभ आप समान ।।
भयो विवाह अनंदि साथ । दूलो बने हलाइधि नाथ ।।
हलधरि जी को कह्यो विवाह । जपी अहि अच्युत अलष अथाह ।।
कुंदन पुरु इकु नग्रु कहावै । भीष्म नृप तहा राजु करावै ।।
एक सुता पांच सुत ग्रहि माही ।।
रुक्मन नामु ताहि सुण पायो । निगम वात इहि मोहि सुणायो ।।
लोको सो रुकमण सुन पाई । महावली प्रभ जादवराई ।।
वासुदेव को सुत कृष्ण है नाम । सभ विधि पूर्न मन विश्राम ।।
कंस दुष्ट को तिन ही मारा । सकल असुर कों पकरि संघारा ।।
जो वहु वरु पावो भला होई । अवरु वात करों नहि कोई ।।
शिव वनिता पूजा मन धारों । ताहि ध्यान घटि माहि वीचारो ।।
ताहि दया कर इहि वरु पावों । मन इछा अपुनी सकल पुजावों ।।
शिव वनिता सें वा चितु लाया । भीष्म दुहिता जत्नु कमाया ।।
मात पिता तांके सुण पायो । इहि दुहिता वहु जत्न कमायो ।।
गौरी की सेवा चितु धारा । घटि अपुने इहि लीयो वीचारा ।।
श्री कृष्णचंद हमरो पतु होई । जो वांछो देवो तुम सोई ।।
इहि प्रजोग तिहि भजनु कमायो । गौरांकी भक्ती, चितु लायो ।।

श्री कृष्णचंदि सो इहि संजुक्त करावहि ।
इस विधि कामना सकल पुजावहि ।।
रुक्मनीआ रुक्मन को भाई । तिन मन महि इहि विधि ठहिराई
ससपाल सहित संजुक्त करावों । सांईदास सुष मन उपजावों ।।११९

रुक्मने लिष पती पठाई । नृप ससिपाल आवो तुम धाई ।।
रुक्मन को कार्जु कर देवों । तुमरी सेवा अध्कि करावों ।।
जव रुकमन इहि विधि सुण पाई । रुक्मने पतीआ दुष्ट पठाई ।।
ससिपाल दुष्ट कौ तिने वुलाया । मोहि वीर मोहि वैरु कमाया ।।
रुक्मन इकु दिज लीयो वुलाई । तांको मोती दीए अधिकाई ।।
लिष पतीआ तांको उनि दीनी । हाथ जोरि कर विनती कीनी ।।
हे दिज कंचन पुर पग धारो । हमरो वचनु मन महि वीचारो ।।
इहि पतीआ नारायण दीजै । चंर्न बंदना हितु लाइ कीजै ।।
निसवासर हमि तुमरो ध्याना । तुमरे ध्यान उर्भे हम प्रांना ।।
जो कछु तनु मनु धनु मेरो होई । तोह अर्थ कीनो मै सोई ।।
अव तुम वस्तु देत लै जावों । तिहि पाछे हरि विर्दु लजावें ।।
मेरी सर्नि परी हरि तेरी । ज्युं जानो राषो लाज मेरी ।।
ससपालु असुर वहु संग ल्याया । जरासिंध दंत बकत्र सबाया ।।
महावली तिनहैं दुष्ट आने । कुंदनपुर महि आइ ठहिराने ।।
दिज संदेसे लेकर धाया । द्वारका पुर मार्ग चितु लाया ।।
श्री कृष्ण कह्यो द्वार पालक ताई । सुण ही वात मैं तोहि सुणाई ।।
इकु दिज आजु दूर सो आवै । हमरे द्वार पहि आइ ठहिरावै ।।
मो पहि तुमै वेग ले आवे । मतु तूं मन महि कछु सकुचावहि ।।
क्षिण इक पिछो तव दिज आयो । द्वारपाल ले अंतर धायो ।।
दिज को षडि प्रभ पहि षडा किआ ।
प्रभ ने दिज को उर महि लीआ ।
पूछति प्रभु दिज कह्यो सुणाई ।
कृपा करी क्या मन तुम आई ।
दिज कह्यो प्रभ वाति सुणावो । एक एक मै तोह बतावों ।।
रुक्मन मोह तोहि पाहि पठायो । इहि प्रजोग मै तुझि पहि आयो ।।

पतीआ रुक्मन की कढि दीनी। मुष अपने सें विनती कीनी॥
जो रुक्मन मुष वचन सुनाए। दिज प्रभ ताईं आइ वताए॥
प्रभ पतीआ रुक्मन पढि लीनी। सांईदास विधि मन महि कीनी १२०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे बवंजमोध्यायः॥५२॥

दिज को प्रभ ने कह्यो सुणाई। कार्जु कव हौवे मेरे भाई॥
इहि विधि सुण दिज विनती ठांनी। मै वलि जावौं सारंग पानी॥
कार्जु तीन दिवस पाछे होई। जो विधि सी आषी मैं सोई॥
पार ब्रह्म हरि भक्त उधार्न। श्री गोपाल जी असुर संघार्न॥
तव ही गर्ड को लीओ वुलाई। गर्ड आयो छिन विल्म न लाई॥
श्री कृष्ण गर्ड के ऊपरि चढिआ। दिज के सहित लै गवनु करआ॥
दो दिन भी दिज ने ढिल कीनी।
रुक्मन इहि विधि मन महि लीनी।
हम सार्ष तिह घर वहु नारी।
उनि परवाहि न करी हमारी।
रुक्मन रंगु भयो वदिलाई।
पान पत्र पीरी देत दिषाई।
सूष्म भई चिता मन लीए।
रुक्मन दुषत है अपुने जीए।
लोक कह्यो वसुदेव के नंदन। श्री कृष्णचंद माधो मकरंदन॥
आइ वाग माहे ठहिरायो। रुक्मन इहि सुण कर सुष पायो॥
दिजु तव ही रुक्मन पहि आयो। सभ ब्रितांतु तिहि आष सुणायो॥
रुक्मन निर्ष अनंदु वहु पायो। चिंता जीउ सभ तजायो॥
नग्र माहि सभ लोको सुण पायो। वसुदेव को सुतु श्रीकृष्ण है आयौ॥
वनिता रुक्मन को ले धाई। गोरां के अस्तल ले आई॥
शिव वनता की पूजा कार्नि। धाई चली रामा तत्कार्नि॥
तहा जाइ कर पूजा कीनी। सीसु निवाइ डंडौत वहु कीनी॥
रुक्मन सों तिन्हा वचनु उचारा। वहु ससपाल सो सषा हमारा॥
रुक्मन रंचक मुष ते भाषा। कृष्ण सषा हमरा होइ आषा॥

तव रामा सभ कह्यो पुकारे। हे रुक्मन क्या बात उचारे॥
रुक्मन रामा को प्रतु दीना।
जो तुम कह्यो सो मन धरि लीना।
रुक्मनीआ सुतु भीष्म केरा।
कुंदन पुर महि तांको डेरा।
रषिक वहुतु रुक्मन संग दीए।
श्री कृष्णचंद वास मन अंतर लीए।
श्री कृष्ण आयो मतु लेकर जावै।
जग महि हमहि कलंकु लगावै।
पूजा कर रांमा उठि धाई।
गोरां भवनु तजि मग महि आई।
रुक्मन घटि हौरे हौरे जावो।
मतु आवे हम दर्सनु पावो।
जो ले चले अधिक भलो होई।
नाहित दर्सनु देवै सोई।
रुक्मन इहि मन धावै जावै।
हौरे हौरे पग मग ठहिरावै।
श्री गोपाल दुष्ट टानि हारा।
संत सहाई निर्भौ नरंकारा।
वैंन वजावति तव ही आयो।
गर्ड चढ्यो हरि दर्सु दिषायो।
जो रक्षक रुक्मन संग आए।
दर्सनु देषि सकल वौराए।
ठांढे रहे सुधि वुधि वौरानी।
सांईदास हरि इहि मन मानी १२१

श्री कृष्ण आइ रुक्मन करु लीना।
रथ पर आण आसनु तिह दीना।
द्वारका पुर ताई उठि धाई।
तव वलभद्र वचन सुनाए।

हे प्रभ तुम सुष सों ग्रहि जावों।
तहा जाइ कर आश्रमु पावों।
मैं पाछे युद्ध कर्के आवो।
जो युद्ध करे तिहि मार चुकावो।
रुक्मन सहित लई हरि धाए।
राम तहूं मग महि ठहिराए।
जरासिंध औरु असुर घनेरे।
संग लीए आए वहुतेरे।
रुक्मन जव इहि असुर निहारे।
भई भै चक्रति मन संचरु धारे।
एहि संचरु लीनो मन माहि।
प्रभ सों षस्यि मोको ले जाही।
प्रभ जी रुक्मन औरि निहारा।
संचरु मत ताहूं मन धारा।
रुक्मन को तव वचन उचारे।
सभ निधि प्रभ जी जानरण हारे।
हे रुक्मन मतु नाहि डुलावो।
क्युं संचरु मन माहि ल्यावो।
जरासिंध मुष कह्यो सुणाई।
सुनो लौक तुम हितु चितु लाई।
सभ सभि नृप क्या मुष दिषलावहि।
जो इहि जादव वंस ले जावहि।
हम बडे नृप पति सति से लीए। ठांढे है वलु कछु ना कीए।।
जादव जात कहा कहु कहीए। ताहि नामु क्युं मुष उचिरहीए।।
ध्रिग हमि जन्मु जो इहि ले जावै। हमरो वंसु कुल सकल लजावै।।
जग महि जीवणु क्या मेरे भाई। जव कुल हमरो जाई लजाई।।
थौरे दिन जीआ वहु नीका। जो सोभति को लीजे टीका।।
जरासिंध इहि मन महि धारी। सांईदास जो कहित पुकारी १२२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिवंभिवोध्यायः ।। ५३ ।।

जरासिंध सैना ले धायो।
ततक्षिण महि हरि के निकट आयौ।
जादव तव सन्मुष होइ आए।
जरासिंध सों युद्ध कराए।
थक्ति भए पाछे हरि डारे।
इहि प्रयोग जादव भी हारे।
श्री कृष्ण राम आगे को आए।
जरासिंध को सन्मुष धाए।
वहु सैंना जरासिंध की मारी।
राम कृष्ण को वलु भुज भारी।
केते भाग गए तत्कारा।
ससपाल निकट आइ ताहि पुकारा।
श्री कृष्णचंद को वलु अति भारी।
को समसर नाही वनवारी।
हे नृप तुम सिर होइ कल्याना।
तोहि कल्यान करे पुर्ष निधाना।
रुकमा तवही वचन उचारे। सुण ससपाल तूं वीर हमारे ॥
मैं ताहूं के पाछे जावों। रुक्मन को मैं फेरि ल्यावो ॥
लज्जा मानु होयो जग माही। कहा मुष जग महि निकसाही ॥
मोहि वहिन को वहि ले धाया। हमरे घर जोरा उनि लाया ॥
मैं जाइ तांसो युद्ध मचावो। तांको हति रुक्मनि ले आवो ॥
मै जो रुक्मनि को नही आनो।
इहि निश्चा मन माहे मानो।
वहुरि जीवति ईहा न आवों।
कुंदनपुर महि पगु नां पावों।
एहि प्रतज्ञा कर्के धाया।
दोक्षूहणी सैना संग ल्याया।
वचन उचार कह्यो हरि ताई।
ठांढा रहु कहां भागा जाई।

हम सो युद्ध कर्के तुम जावों।
आन अमान क्युं तुमे हिरावों।
राम कृष्ण सुण इहि ठहिराए।
रुक्मां के वहि सन्मुष धाए।
जो कुछ सैंना इहि संग आनी।
श्री कृष्ण राम भारी मन मानी।
चाहित कृष्ण दुष्ट को मारे।
तव रुक्मनि इहि वचन उचारे।
हे प्रभ इहि तुम गति ना जानें।
तुमरी गति को नाह पछानें।
जव रुक्मनि इहि वात बषानी।
श्री व्रिज राज हृदे महि मानी।
मानि तजि तिहि मूंड मुंडाया।
रथ अपने सों वांधि चलाया।
रुक्मा जव रामहि निहारा।
रथ सों वांधा है तत्कारा।
मुष अपुने ते वचनु सुनाया।
हे प्रभ तै भला नाह कराया।
रुक्मा को काहे वंधि लीया।
इहि कार्णु काहे तुम कीया।
लोक हमारी निंद्या करई।
श्री कृष्ण काम असे चित धरई।
जव वलिदेव ने इहि वचु कीआ।
श्री कृष्णचंद मुक्ता तिस कीआ।
रुक्मा प्रतज्ञा कर आया।
कुंदनपुर से जव ही धाया।
जो रुक्मनि को फेरि न ल्यावों।
जीवति कुंदन पुर ना आवों।
सिरु मुंडा सैंना सभ मारी। अवि कुंदनपुर के पगु धारी।
एक नग्रु तिह अवरु वसायो। सांईदास तिह महि ठहिरायो १२३

द्वारका प्रभु रुक्मनि ले आया। भले महूर्त्त काजु रचाया ।।
अमरो की वनिता सभ आई। हिर्षमान होइ मंगल गाई।।
सुरपति की दारा भी आई। मोतन माल संग ल्याई ।।
तांका मोल मै कहा वषानों। ताहि मोल की गति ना जानो ।।
रुक्मनि के उरि माहे डारी। अशीर्वादु मुष वचन उचारी ।।
तोहि पति सदा सदा ही जीवो। तांते तोहि मनि वहु सुषु थीवे ।।
वदी जन तव वहु मिल आए।
ताल मृदंग अनेक वजाए।
भवन भवन पर मंगल गाही।
मंगल गावहि वहु हिर्षाही।
कामरूप इकि दिन क्या कीआ।
चोआ चंदन अंग को दीआ।
भामनी रूप आपना कीया।
केस महि कुस्म अधिक तिन दीया।
अंवर नाना अंग उढाए।
भूषत अंबर वहु फहिराए।
सुंदर रूपु तिहि वर्नि न जाई।
अर्नि ताहि देष वर जाई।
इंदि कहा स्मसर तिहि होई।
तिहि स्मसर आन रूपु न कोई।
गौरापति के आगे आई।
शिउ जी को तिन दई दिषाई।
चाहित शिव ताई पति आया।
मन महि तिहि इहि वात वसाया।
शिव तिहि देषि हृदे लुभाना।
निश्चे इहि मन महि आना।
इसे गहो गहि कामु कमावों।
मन की वांछा सकल पुंजावों।
शिव वाही की ओर सिधाया।
चाहित तांको उरि ले लाया।

भामनी तजि के आगे धाई।
शिव ताहूं के पाछे जाई।
शिव वलु कर ताहूं निकटि आयो।
वीर्ज शिव को धर्नि गिरायो।
शिव तव निर्ष रह्यो विसमाई।
मन महि इहि विधि आरा टिकाई।
कामरूप मोहि छलने आयो।
मो सो इन ने दगा कमायो।
मस्तकि ते शिव अग्नि निकारी।
भामनी कामरूप की जारी।
ताहि भस्म ले अंग को लाई।
शिव तवि क्रोधु कीयो अधिकाई।
कामरूप तवि विनती ठानी।
मोह गति कवि होइ सारंग पानी।
गौरांपति तव तिन वरु दीना।
इहि वचु अपने मुष ते कीना।
श्री कृष्णाचंदि जव लए अवतारा।
तिह समें तुमरे होइ निस्तारा।
श्री कृष्णाचंद तुम को उपजावै।
मोहि वचु पूर्न वही करावै।
शिव को वचनु धर्‌यो मन माहि।
श्री गुपाल विधि सकल जु ताही।
कामरूप हरि उतपति कीना।
जन्मु गर्भि रुक्मनि के दीना।
हरि प्रदुम्न धर्‌यो इसि नामा।
महासरूप वनिता विश्रामा।
उसि स्मसर जग अवर न कोई।
कामरूप सुंदर है सोई।
जो इसि मुष निर्षे कोई भामा।
वीर्ज ढरे तजै विस्रामा।

कामरूप जबि देए दिषाई। सांईदास धीर्ज न वासाई।।१२४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्मस्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौरंभमोध्यायः ।। ५४ ।।

सांबर असुर तांको बलु भारी। नार्दि तांको कह्यो पुकारी।।
वालकु भयो कृष्ण ग्रहि माही। तोह नासु करसी वहु आई।।
प्रदुम्न को तिह षर्‌यो दुराई। सांबर असुर महा वल काई।।
प्रदुम्न दिन दस को भया। तौ वहि दुष्ट उठाइ ले गया।।
नार्दि वचु तिन मनि वीचार्‌यो।
इहि प्रजोग दधि महि षडि डार्‌यो।
श्री कृष्णचंदि तहा भए सहाई।
मीन उदर महि तिहि लीयो पाई।
तीन वर्षि तक तहूं समाया।
मीन उदर महि वासा पाया।
वंधकि वाही मीन फहाई।
वांधी मीन वाहिर जलि आई।
वंधिक आण सांवर को दीनी।
दुष्ट असुर वहु कर महि लीनी।
छिन महि तांको उदर विडारा।
वालकि निकस्यो रूप उजियारा।
अनिद भानु तिह रूपु दुरावहि।
सुकचमान होइ मुष न दिषावहि।
प्रिथम एक कंन्या निकस आई।
तिह उस्तत कछु कही न जाई।
मायावती है तांको नामा। महा सुंदरी सुंदर रामां
सूपकार असुर के वाही। असुर भरौसो तिहि अधिकाई।।
वालक को तांको षडि दीना। इही वचनु सांवर ने कीना।।
इसि वाल्क कों करो अधिकाई। दधि अरु माषनु अधिक षवाई।।
एक दिनसि नार्द चलि आया। मायावती सो सवदु सुनाया।।
पूर्व जन्म को इहि पतु तेरो। मै तुझे कहो सुनो कह्यो मेरो।।

श्री कृष्ण पूत प्रदुम्न है नामा। पूर्व जन्म को पतु तुम रामां॥
रुक्मन गर्भ सो प्रगट्यो एही। एहि वालकु तुमरो सनेही॥
नार्दि ऋषि इहि वचु कहि गया।
प्रदुम्न द्वादस वर्षि को भया।
मायावती प्रेमु अधिक वधायो।
प्रदुम्न के संग अति उरिझायो।
जव नान्हा तव औरु विधि नारी।
अवि भयो अधिक कछु औरु निहारी।
प्रदुम्न मायावती सो भाषा।
ताहि प्रीत देषि कर आषा।
जव मै नान्हां सां तू पारहि।
अव अधिक भयो कछु औरु निहारहि।
इहि विधि का मोहि देहु विचारा।
तव चितु होवै ठौर हमारा।
मायावती ताको प्रतु दीना।
राज कवर विधि इहि मन लीना।
नार्द इकि दिन मो पहि आया।
मोको नार्द भाष सुनाया।
इहि वालक को जानत नाही।
पूर्व जन्म पतु तुमरो आही।
इहि प्रजोग मै प्रीत वढाई।
जो जन्म जन्म तुम मोह सुषदाई।
पूर्व जन्म विधि मन महि धारी।
तौ मन प्रीत करी अति भारी।
मायावती इहि वचन सुनायो।
सांईदास मिल आनंद पायो॥१२५

एक दिनसि कंन्या क्या कीआ।
अपुने मन महि इहि विधि लीआ।
प्रदुम्न सों तव वचन उचारे।
हे प्रभ पूर्न प्रांन हमारे।

जो तुम इसि षलि ताई मारो।
मेरो कह्यो मन माहि विचारो।
हमि तुम चलहि द्वारका मांही।
रुक्मन कृष्न वस्ति है जाही।
जव मायावती एह सुनायो।
तव प्रदुम्न मन महि ठहिरायो।
ताहि नग्रि महि धूम मचाई।
लोक नग्र के सभ दुष ताई।
सांवर को कछु वुरा कहावै।
मन महि त्रासु तासि नां ल्यावै।
सांवर पहि जाइ लोक पुकारे।
इहि वालकु तौहि नग्र उजारे।
सांवर जवि इहि विधि सुण पाई।
तव प्रदुम्न सों कह्यों सुणाई।
लोको कों काहे दुष देवें। काहूं दुषति काहि कर लेवें।।
तव प्रदुम्न तांको प्रतु दीना। मैं काहूं को दंड न दीना।।
तूं मोको कहु कहा कहावै। हमि सेती काहे झगिरावै।।
तूं क्या चाहति है हमि पाहे। अव ही कहे तोह चर्ति दिषाहे।।
जव सांबर इहि विधि सुण काना। क्रोधु कीयो मन महि अधिकाना।।
दोनों ने संग्राम मचायो। महा अधिक युद्ध तिनहू करायो।।
असुर मायावंत विद्या जानें। सकल वात मन महि पछानें।।
माया रूप कर गज प्रगटायो। गज प्रदुम्न की उौर पठायो।।
तव प्रदुम्न विद्या सिषि लीनी। मायावती सें मन महि कीनी।।
कुंजर सनमुष अग्नि जराई। गज गयो भाग अग्नि दिष्टाई।।
युद्ध कीउोरि निसवासर चारे। दोऊ सूर कोउ नही हारे।।
पंचमदन षल ताई मार्‌यो।
गग्नि चर्‌यो द्वारका चितु धार्‌यो।
मायावती ताई संग लीए।
द्वारका पुर के मग पग दीए।

द्वारका निकट गए जव दोऊ।
धर्नि महि प्रगट भए आइ सोऊ।
रुक्मन अरु सभ नायक रानी।
वैठी दर घर सभ ठकुरानी।

जव प्रदुम्न धर्नि पर आयो।
एही रूपु तिन आप वनायो।
शंख चक्र पितंवर ओढाए।
कृष्ण रूपु सभ लीए वनाए।

रुक्मन निर्ष्यो क्रिष्ण जी आयो।
इक दारा सो संग ल्यायो।
सुकच भई ग्रह महि ठहिराई।
श्री कृष्ण देष के वहु सुकचाई।

जव प्रदुम्न वसुधा ठहिरायो।
रुक्मनि ने तव द्रिग निर्षायो।
श्री कृष्ण नाहि और है कोई।
ग्रहि तजि वाहिरि आई सोई।

तव रुक्मनि ने वचनु उचारा।
असो ही सुतु अहा हमारा।
धंन वहु गर्भु जाससे निकस्या।
जास देषि आतम हमि विगस्या।

रुक्मनि ने असें ही भाषा।
एही वचनु उनि मुष ते आषा।
छिनु इकु वीत्यो कृष्ण जी आयो।
रुक्मनि सो प्रभ आष सुणायो।

जानति है इसि वालक ताई।
जो नही जानत तोहि वताई।
रुक्मनि नें तव कह्यो पुकारे।
मैं नही जानों प्रान अधारे।

तव प्रभ रुक्मन सों प्रितु दीना।
प्रदुम्न सुतु तोहि वचु कीना।

जव रुक्मनि इहि विधि सुण पाया।
दौरि प्रदुम्न अंग लगाया।
तव ही वसुदेव भी आयो।
देवकी सुण वहु आनंदु पायो।
कंचनु वहु विपों को दीना।
सांईदास मंगलु वहु कीनां १२६

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंजिवंझमोध्यायः ॥५५॥

शत्राजितु जादव पुर माही।
रहित सदा पुर महि सुष माही।
नितप्रित दधि के निकट जावै।
रवि को तहा जाइ जापु जपावै।
एक दिनसि षडो जापु जपाए।
रवि किर्पा तव ताहि कराए।
रवि जिह समे आप चलि आयो।
सैंना पति मणको ले आयो।
मणको ले तिह सीस वनायो।
रवि करुणा कर फिर उठि धायो।
रवि जाइ गगन ऊपर ठहिरायो।
मण को अधिक उजिआरा पायो।
सिर पर धरी चला पुर आवे।
मण की किर्ण सिर वहु चमिकावै।
नर नारी जान्यो रवि आयो।
श्री कृष्णचंद सो जाइ सुनायो।
रवि तुमरे मिलने को आवै।
इहि प्रजोग जो दर्सनु पावै।
नर नारी दौरी निकट आई।
देष मण तव मन विसमाई।

हमहि भूल कर कृष्ण सुनायो।
रवि तुमरे दर्सन को आयो।

रवि मरग शत्राजित को दीनी।
अपुनी करुणा इसि पर कीनी।
सैनापति मरग इही विचारा।
जहा रहे सुष होइ अति भारा।
मेघ वसहि अन्न उतपति होवै।
दुष दर्दु सभ ही कौ षोवै।
नग्रि के लोक अधिक सुष वसही।
दुःख दर्दु तिहि तुर्त हि नसही।
दस मरग कंचनु नितप्रित देवै।
अपतिग्रो सकली हिर लेवै।
श्री कृष्ण कहयो शत्राजित ताई।
मण हमि देहि तौ भला कराई।
राज हार इहि भली सुहावै।
हमि देवहिं तुम दुख सभ जावै।
उग्रिसेन राषै ग्रहि माही। तोहि द्वारि सोभा न दिषाही।।
शत्राजित ने प्रितु दीना। श्री कृष्णचंद ने क्या चित लीना।।
जो काहू ग्रहि वहु द्रव्य होई। आन को देवति नाही कोई।।
तव श्री कृष्ण कह्यो भलो भाई। काहि कर्ति हो मोह लराई।।
मैं कछु तोहि बुरा नां कह्यो। साईदास क्युं इउं उचिरह्यो १२७

प्रसैंन शत्राजित को भाई। तांके मन महि इहि विधि आई।।
सैंनापति मरग सिर ठहिराई। अषेरब्रित कर्ने चल्यो धाई।।
महा विकट वनि महि जव गया। तहा जाइ कर ठांढा भया।।
मरग की किर्ण उजीआरा पायो। मृग हेरन कों इनि चितु लायो।।
किर्णो मरग का कीयो उजीआरा। सिंघु निर्ष आयो तत्कारा।।
शत्राजित के वीर को मारा। मरग लई षसि वन को पगु धारा।।
तांको जांबवान ऋषि पेषा। अधिक उजीआरा मरग का पदेषा।।
जाववान केहर को मारा। मरग ले आप ग्रहि को पगु धारा।।
रैन भई वंधू ना आयो। शत्राजित मनु भर्मि भुलायो।।
पुरलोको पहि जाइ पुकारा। श्री कृष्ण मार्यो है वीर हमारा।।
कौन धर्मु जग महि कहावै। पर दूषन को जौ उठि धावै।।

इक दिन कृष्ण कह्यो मोह ताई।
मरण देवौ पुर सुख वसाई।
राषो उग्रिसेन ग्रहि माही।
तुमरे ग्रहि भली सोभत नाही।
मै मणि ताहि न दीनी भाई।
मन धरि रोसु मार्‌यो मोह भाई।
तांको हति कर मण ले आया।
मोह वंधू को मार चुकाया।
अैसे कहित फिर्ति पुर माही।
श्री कृष्ण सुन्यों श्रवण धरि ताही।
सुण हरि इहि मन महि सकुचायो।
शत्राजित दूषनु हमि लायो।
कहा करों इसि का उपिचारा।
जो हमरो होइ दुष निवारा।
एक दिन श्री कृष्ण लोक संग लीए।
ताहि भ्रात ढूंडन पगि दीए।
चलति चलित वन माहे आए। इति उति ते नैनन निर्षाए॥
मृत्यक देह तास की पाई। अश्व सहित मार्‌यो मृग राई॥
तव ही गोविंद वचन उचारे। भला भयो है वीर हमारे॥
ऊहां ते आगे पग धारे। मग महि म्रित्यक सिंह निहारे॥
केहर तजि आगे को धाए। पग पुर जांववान निर्षाए॥
षुर निकस्यों जाइ कंदर माही। सभ रहे विस्म भीतर ना जाही॥
श्री कृष्ण कह्यो मैं भीतर जावौ। तुम को इसि ही ठौर वहावौ॥
द्वादश दिन तकि तुम ठहिरावौ। हमरो मगु द्रिग सौं निर्षावौं॥
जो द्वादस दिन को मैं आया। वहुत भलो नीको अधिकाया॥
जो द्वादस तकि नाही आवौ। इसि ही कंदरा माहि ठहिरावौं॥
तव तुम अपुनें ग्रहि को जाय्यो। अपुने पुर के उठि कर धाय्यो॥
श्री कृष्ण प्रवेसु कीयो तिह माही। मन महि त्रासु कीयो कछु नाही॥
मरण वालक कर माहि निहारी। निर्षी मरण सुंदर गिरिधारी॥
जव श्री कृष्ण गयो तिहि ठौरा। एक वनिता निर्ष्यो हरि ओरा॥

मुष ते तिन नें कह्यौ पुकारे। मानस ईहा कहा पग धारे॥
इहि मानुषु कहा ते आयो। सांईदास जांववान सुणायो॥१२८

जांबवान सुनति उठि धाया। दीनानाथ सौं युद्ध मचाया॥
दिनसि सप्त तिन है युद्ध कीनो।
हरि जांबवान को निह्वलु कर लीनो।
द्वादश दिन प्रभु वचु कर आयो।
सप्त दस दिन तहा युद्ध करायो।
जव द्वादस दिन पूर्ण भए। तव उनि लोकों मन महि लए॥
चल हो अब पुर को उठि जावहि। काहे को ईहा ठहिरावहि॥
द्वादस दिन भए प्रभु नां आयो। सकल लोक एहि मतु ठहिरायो॥
रुदनु कर्तिन पुर को धाए। चलित चलित पुर माहे आए॥
षावन पीवन सकल उंनि त्यागे। हा हा कृष्ण कर्नि सभ लागे॥
शत्राजित को गारी देवहि। तांसो एही वचन उचिरेवहि॥
हम सौं दूर गयो जदुराई। नारायण तोहि नासु कराई॥
हमिरो जीव प्रांनपति षायो। तू अपुने ग्रहि महि सुष सोयो॥
तुमरे ग्रहि को राम जराई। जैसी अग्नि तैं हमि तन लाई॥
जांबवान वलु कृष्ण हिरायौ। जांबवान निश्चै मन आयो॥
इहि नारायण रूपु दिषावै। मानुष हमि कौं दिष्ट न आवै॥
मानस कौं वलु कहां वसावै। जो हमि सेती युद्ध करावै॥
चादर लेकर उर महि डारी। तव वहु सर्नि आयो गिरधारी॥
चर्न गहे कह्यो मैं वलि जावा। इही दानु मैं तुम से पावां॥
मेरो औगुणु लहो मिटाई। मैं युद्ध कीनो सन्मुख धाई॥
मण कन्या के सहित ल्यायो। हाथ जोरि प्रभ आष सुनायो॥
हे प्रभु इहि सेवा तोहि करई। तोहि सेवा कर्न चितु धरही॥
मण अरु जांमवंती प्रभु लीने। अपुने पुर के मग पग दीनैं॥
तजि कंदरा वन आइ ठहिरायो। देवकी कौं तब आष पठायो॥
मैं इकु काजु कीयो ले आयो। वन महि ताह सहित ठहिरायो॥
तुम आवौं हमि को ले जावौं। वेद कहा मन महि ठहिरावों॥
जव देवकी इहि विधि सुण पाई। सकल लोक पुरु ले संग धाई॥

अधिक वजंत्र संग तव लीए। श्री कृष्ण चंदि ओर पग दीए।।
ततक्षिण महि हरि पाहे आई। जांमवंती देव की उरलाई।।
संग लीए तांको ग्रहि आनी। काजु कीयो हरि सारंग पानी।।
श्री कृष्णचंद तव ही क्या कीआ। मरण कढि अपुने कर महि लीआ।।
सकल लोकपुर लीए वुलाई। शत्राजित को मरण दई गुसांई।।
शत्राजित मन वहु सुकचायो। मै दूषन हरि सेती लायो।।
लोक कह्यो मूर्ष अज्ञानी। तै कह्यो मरण लई सांरंग पानी।।
मरण तो अवर ठौर निकस्याई। सांईदास वहु मन सकुचाई।।१२९

शत्राजित मन कीयो विचारा। मैं औगुणु कीनो अति भारा।।
इहि औगुणु कैसे मिट जाई। मन महि सोच विचार वताई।।
अपुनी दुहिता मोहिन देवों। औगुण आप मिटाइ कर लेवों।।
सभ कों वचु कीयो ग्रहि माही। भांजनु केसर कर लीयो ताही।।
वहुरो फिरि आयो सभ मांही। जादव सकल वैठे सें जाही।।
आइ कृष्ण को तिलुक लगाया। मुष अपने सें वचु उचिराया।।
सत भामा नामु कन्या है मोरी। मैं श्री कृष्ण को दीनी चेरी।।
सैंनापति मरण भी मै दीई। श्री कृष्णचंद को भेटा कीई।।
इहि कर्के अपुनें ग्रहि आया। ग्रहि मै आइ के काजु रचाया।।
माघ मास काजु तिहि दीना। जादव कृष्ण वराति वहु लीना।।
श्री कृष्ण आइ कर कार्जु कीयो। शत्राजित ने वहु कछु दीयो।।
कनक मोती चेरी अधिकाई। कुंचरि अधिक कछु कह्यो न जाई।।
सेनापति मण कौं ले आयौ। कह्यो भेटि हमि जदुरायो।।
राषो मरण अपुने ग्रहि माही। जो कछु कनक उपजे इसि पाही।।
उग्रि सैन नृप के ग्रहि डारो। कछु चिंता मन महि ना धारों।।
प्रभ शत्राजित कौं इउ कह्या। सांईदास सुष मन महि लह्या।।१३०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षटपंचासमोध्यायः ॥५६॥

लोको कृष्ण को आष सुनाया। हे पूर्न प्रभ त्रिभुवन राया।।
ध्रितराष्ट्र सुतु अति हंकारी। दरजोधनु छत्र सिर धारी।।
तिन नें लाषा मंदर कीना। पांडो सुत डारि अग्नि तिहि दीना।।

तुम क्रिर्पा छूटै पांडवाइनि। उनि की रक्षा कीई नराइनि ॥
श्री कृष्ण सुनी जव इहि विधि कीना। रथ पर चरचो पुष निधाना ॥
वलिदेव को हरि ने प्रतु दीना। हस्ततापुर को हरि पगु दीना ॥
पांडो सुत को पूछन धाए। उग्र सैनु रक्षकु तजि आए ॥
सुपलकि सुत को पुरु तजि दीआ। कर्ति व्रह्म आज्ञा तहूं कीआ ॥
सुधन्वा तहूं ही ठहिराहो। औैर सैना पुर महि अधिकायो ॥
सुधन्वा शत्राजित को भाई। पुर महि छाडे कौर कन्हाई ॥
आप ततक्षिण हस्तनापुर आए। पांडो सुत व्रह्मन हिर्षाए ॥
अति अनंदु पांडो सुत पायो। श्री कृष्णचंरि जव दर्सु दिर्षायो ॥
सुपलकिसुत पुर कंचन माही। सुधन्वा मिल मंत्र कराही ॥
शत्राजित को मार चुकावहि। इस ते मण षस करि हमि ल्यावहि ॥
हम सो इन नें षवर न कीई। अपुनी कंन्या कृष्ण को दई ॥
अर्न ने गगन कीयो उजीआरा। इनने शत्राजित को मारा ॥
सैंनापति मण को ले आए। भिन्न भिन्न ग्रहि जा ठहिराए ॥
शतधन्वे इहि कर्मु कमायो। सांईदास तिह मार चुकायो ॥१३१

शतिभामा जव इहि सुण पाई। रुदनु कर्ति पित के नग्र आई ॥
रथ पर चरि हस्तनापुर धाई। ततक्षिण महि गोविंद पहि आई ॥
सभ व्रितांतु प्रभ आइ सुनाओ। शतिधन्वे मिल इहि कर्मु कमायो ॥
मम पित भार मण षडी दुराई। अव चाहित औरु कर्मु कमाई ॥
जव इहि विधि पाई गिरिधारी। ततक्षिण गडं को लीयो पुकारी ॥
तिह चरि कंचनपुर को धाए। वेग माहि पुर माहे आए ॥
शतिधन्वा सुण इहि विधि भागा। महा विकट वन के मग लागा ॥
प्रभ ताहूँ के पाछे धाया। शतिधन्वे वन महि आपु हिराया ॥
पकिर शतिधन्वे को हरि मारा। तव ही प्रभि मुष वचनु उचारा ॥
शत्राजित उ.गुण ना कीआ।
तैं काहे तिस को हति लीआ।
मण काहूं सो प्रगट न होई।
श्री कृष्ण कह्यो मण इन कहू सोई।
श्री कृष्ण वहुरि पुर माहे आया।
अपुने ग्रहि जहि आश्रमु पाया।

मरण सुपलकि सुत षडी दुराई।
नग्रि वनार्सी वैठो जाई।
मेघ न वर्षहि अंन्नु नही होवै।
इहि विधि लोक अधिक मन रोवै।
कूकत कूकत हरि पहि आए।
श्री कृष्णचंद सों वचन सुनाए।
जिह दिन से मरण ईहा ते गई।
जरा रोग दूषन वहु भई।
पुर सकला बहुता दुषु पायो।
तौ हम तुम को आइ सुनायो।
एकु दूतु प्रभ लीयो वुलाई।
सुपलकि सुत पहि दीयो पठाई।
दूत को प्रभ ने वहु समझायो।
सुपलकि सुतु को कह्यो सुनायो।
पुर वनार्स तांको वासा।
सुपलकिसुतु हमि दर्स को प्यासा।
जो मम भक्ति शीघ्र तुम आवों।
छिन रंजिक तहा विल्मु न लावो।
दूत आयो अंक्रूर के पाहे।
जो प्रभ कह्यो सो कहित सुनाहे।
जव अंक्रूर सुणी विधि काना।
आनंदु भयो हृदे सुष माना।
पुर वनार्सी कों तजि धाया।
ततक्षिण कौलापति पहि आया।
श्री गोपाल नें तव क्या कीआ।
सुपलकिसुत को अंग महि लीआ।
हसकर मुष तें वचन उचारा।
सुण सुपलकि सुत मीत हमारा।
किह प्रयोग इहि पुरु तजि दीआ।
वानार्स किउ वासा लीआ।

सुपलकि सुत इहि वचनु सुनायो।
लज्जामान सिरु तले करायो।
सैंनापति मरण हरि को दीनी।
लज्जा अधिक हृदे महि कीनी।
मुष ते कछु ना वचन उचार्यो।
प्रभु वचु सुण लज्जा चित धार्यो।
जव ते मरण पुर माहे आई। जरा रोगु भाग्यो सभ भाई।।
भई कल्याण कंचन पुर माही। सांईदास दुष सकल मिटाई १३२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सतवंञ्मोध्यायः ।।५७।।

पांडवसुत बन ते ग्रहि आए। आन पैठ राजु कर्ने लागे।।
दुःख दर्दु गए सभ भागे।।
श्री कृष्णचंदि हृदे लीयो वीचारी।
श्री गोपाल सुंदर अधिकारी।
दुर्जोधनु हमि मिल्यो नाही।
इहि प्रजोग मन महि विसमाही।
हरि पांडो सुत देषन धाए।
ततक्षिण महि हस्तनापुर आए।
अंग अंग सभहूं सोहाए।
तांके दुःख सकल हरिषोए।
तव पांडवाइग विनती ठानी।
कृपा करी प्रभ सांर्गपानी।
सुपलकिसुत प्रभ ताहि पठाया।
जिह समे तें प्रभ जादमराया।
हमि उपराला वहुता कीना।
अपुने जान इहि विधि कर लीना।
तव ही पुर के लोको जांना।
इहि निश्चै मन अंतर आना।

श्री कृष्ण सहाई है इनि केरा।
इनि के दुष आवै नही नेरा।
धर्मपुत्र फिरि वात चलाई।
सुण हो प्रभ भक्तिन सुषदाई।
अव जो वासु निकट है आया।
हम मन महि एहि ठहिराया।
ईहा रहो किर्पा प्रभु धारे।
हमि कह्यो मन लेहु वीचारे।
श्री गोपाल विधि जानण हारा।
ताह भाउ देषि मुषो पुकारा।
धर्म पुत्र जो मै मन आई।
तो पहि सभ ही कह्यो सुनाई।
जो तुम कहा सो मैं मन लीआ।
प्रीत भाउ तुमने जो कीआ।
एइ दिनसि प्रभ वचन उचारे।
सुण हो अर्ज्जन मीत हमारे।
प्रात समें वन महि हमि जावहि।
अषेर करहि मृगु मारि ल्यावहि।
अर्जन कह्यो भलो जदुराई।
जो तुम कह्यो करहि हमि साई।
सुरपति सुनति प्रभ की गल धायो।
प्रात समे वन माहे आयो।
महाबाहो को त्रिषा व्यापी।
जमना तटि चलि आयो आपी।
चाहित है जल कों अचि लेवें।
तप्ति त्यागु शांत मन देवें।
एक कंन्या महा रूप उजीआरा।
फिर्ति फिर्ति जमुना तटि द्वारा।
तेरो नामु कहा पति तेरे।
कहु कंन्या तूं आगे मेरे।

काहे को इसि तटि पर आई।
कौनु प्रयोगु ईहा ठहिराई।
तुमरे मन महि भौ नही आवति। सांईदास अर्जन उचिरावति १३३

तिह कंन्या अर्जन प्रितु दीना। सुण हो अर्जन जान प्रडीना ॥
रवि दुहिता कलिंद्री नामां। रूप की अति ही सुंदर भांमा ॥
जिह समे श्री कृष्ण गोकल के माही।
रहित विंद्रावन धेन चाराही।
तिह समे मै दर्सनु तिहि कीना।
अवि मै अैसे सुण कर लीना।

पुरी द्वारका दधि माहि वसाई।
अवि हेर्ति हो तिस भाई।
तांको प्रतु अपना मै करहो।
ताहि चर्न रज मस्तक धरहो।

महावाहो सुण तिह प्रितु दीना।
हे कन्या तें इहि मन कीना।
श्री कृष्ण द्वारका सो ईहा आयो।
हमि पर कृपा करी ठहिरायो।

मोहि संग चलु तुझे देउो दिषाई।
मम प्रतीत करु राम दुहाई।
रविदुहिता अर्जन संग धाई।
ततक्षिण महि प्रभ पाहे आई।

करी डंडौत अधिक हरि ताई।
तांकी उस्तति कहा वताई।
जमना सों श्री कृष्ण सुनायो।
मै तुझे तव अपने पग लायो।

जिह समे मै लीनो अवतारा।
मथुरा तजि गोकल पगु धारा।
मोह वछोहो तै वहु पायो।
मोहि वछोहै तुझ वंतायो।

अब तुम चितु अपना ठौर राषो।
विना नाम हरि उौरु न भाषो।
रथि पर चार उग्नि महि ल्याया।
कौलापति इहि कामु कमाया।
चतुर मास तहा कीयो गुजराना।
श्री जदुनाथ संतन के प्राना।
पांडो सुत सें आज्ञा पाई।
द्वारका को हरि चल्यो धाई।
ततक्षिण कंचन पुर महि आयो।
ग्रहि माहे आइ कर ठहिरायो।
तव ही श्री गोपाल सुरण पाई।
नग्र अयोध्या भली सुहाई।
भूप तनषजति राज करावै।
तिह पुर महि लोक वहु सुषु पावै।
सत्ता नामु दुहिता ग्रहि माही।
ताहि स्वुअंवर रच्यो चाही।
एही प्रतज्ञा तिन मन धारी।
सांईदास तिस एही वीचारी।।१३४।।

सप्त धौल सुत तिह ग्रहि माही।
दस दस हस्त वलु इकताही।
जो इनको वांधे इकि वारा।
तिन कंन्या देवो ततकारा।
नग्र नग्र के भूपति आवहि।
ताहि सुअंवर महि ठहिरावहि।
एक वार कोऊ वांधि न सांकहि।
थक्ति रहे कछु मुषहु न आषहि।
थकित थकित अपुने पुर धावहि।
वलु नही लागै तव उठि जावहि।
श्री कृष्ण सुनत विधि उठि कर धाया।
द्वारका वांछ अयोध्या आया।

इक वन महि आइ डेरा कीना।
नृप नषजत ने सुरग कर लीना।
श्री कृष्णचंदि आइ वनि ठहिराये।
प्रान पुर्ष सभ विप्र हिराए।
नराधिप भेटा संग लीए।
श्री गोपाल ओरहि पग दीए।
श्री कृष्णचंद की चरनी लागा।
दर्सन देषि सकल भ्रमु भागा।
हाथ जोर आगे ठहिरायो।
वलिहारि जावो मुष तें उचिरायो।
कैसे है करुणा प्रभ धारी।
मोह कीटु हृदे लीयो वीचारी।
श्री कृष्ण कह्यो सुणहो नृप वाता।
तुम सुषदाई हमरे भ्राता।
हमि क्षत्री तुम विर्दु कहावहि।
जाचन काहूं पहि नही जावहि।
एक वस्तु तुम पाहि जचावो।
जाचो तौ जो मै वहि पावो।
नृप कह्यो मांगो प्रभ मेरे।
जो मो ग्रहि आगे प्रभ तेरे।
श्री कृष्ण कह्यो कंन्या हमि देवो।
एही वात मोहि मन धर लेवो।
जव श्री कृष्ण इहि वचनु उचारा।
नषिजति तव ही कीयो विचारा।
कर वीचारु प्रभ को प्रतु दीना।
हाथ जोर दोऊ वेनती कीना।
कन्या कहा प्रभ प्रांन तुहारे।
तुम वच पूर्न करो हमारे।
तव श्री कृष्ण कह्यो वतिलावो।
कौन प्रतज्ञा दीई ठहिरावो।

तांको मै पूरी कर लेवों।
तोहि प्रतज्ञा को फलु देवों।
राजे नषिजति कह्यो पुकारी।
एहि प्रतज्ञा हमहि मुरारी।
सप्तधौल सुत हम ग्रहि माही।
महा अधिक वलु है प्रभताही।
ताह को है इक वार वैठाई। एहि कंन्या लेवे प्रभ साई॥
श्री कृष्ण कह्यो ऐसे मै कर्यों। एहि प्रतज्ञा मै चित धरहो॥
कमल नैन हरि कुंज विहारी। कटि कौ वांधि हरि लील्हा धारी॥
सप्त रूप हरि लीए वनाई। अैसी विधि कीनी जदुराई॥
उौर सभूं को एक दिषावै। दूसरौ कृष्ण तांको दिष्ट न आवै॥
सप्त की एकिवार कोहै वैठीनी। श्री कृष्ण ऐसे विध कीनी॥
नृप ने जव अैसी विधि देषी। प्रतज्ञा पूर्ण भई नृप पेषी॥
कंन्या को कार्जु करि दीना। कंचन मनी मोती वहु दीना॥
कुंचर अश्व दीनी वहु चेरी। कहा गणो वुद्ध गणो न मेरी॥
श्री कृष्ण लई संगि पुर को धाया। आन भूपति सभ द्रिग निर्षाया॥
उनि मन माहे कीयो विचारा।
सांईदास विधि कहित पुकारा॥१३५

भूपति सभ मिलि मनु ठहिरायो।
इनि वालक हमि सीस कटायो।
हमि वडे वडे नराधिप आए।
नृप कंन्या कार्ण ठहिराए।
वसुदेव सुत कंन्या ले जाई।
इहि विधि हमि को नाहि भलाई।
एहि मतु करि सकले उठि धाए।
श्री कृष्ण को मगु इन्हा आइ रोकाए।
महावाहो तव वचनु उचारा।
श्री कृष्णचंदि को कह्यो पुकारा।
तुम किर्पा कर आगे जावो।
कछु विस्वासु न मन महि ल्यावो।

मैं इन सों संग्रामु मचाई। तोहि किर्पा इन मार चुकाई ॥
पाछे से मैं भी प्रभ आवो। वेग विलम कछु नाही लावो ॥
श्री कृष्ण चले द्वारका महि आयो। अर्जन पाछे युद्ध मचायो ॥
सभ भूपति कों अर्जुन हिरायो। ताहि हिराइ पुर आप सिधायो ॥
एक जोषिता हरि उौर ल्याए। भद्रा नाम तिहि वेद वताए ॥
लछमना जानी श्री भगवंत। स्वंवर जीते भूप अनंत ॥
अष्ट नायका वरी मुरार। कौतक करहि अनंत अपार ॥
सतिभावा तवि वितनी ठांनी। हे प्रभ पूर्न सारंग पानी ॥
उौर सकल है द्वारका माहे। इक कल्पव्रिक्ष ईहा नाहे ॥
जो तुम सुरपति आष पठावो। कल्प व्रिक्ष ईहा ले आवो ॥
एहि वात सुगरु करि करही। तोहि कहा मन अंतर धरही ॥
श्री कृष्ण गर्ड को लीयो वुलाई। ताहि सवार भए जदराई ॥
सतिभावा को हरि संग लीना। स्वर्ग को तव ही पगु दीना ॥
एक असुरु नरकासुरु नामा। तिन नें एही कीनों कामा ॥
कुंडिदित्य के लीए छिनाइ। उौर लोक तांते दुष पाइ ॥
रवि सुत त्रास ते कोट वनाइ। सप्त कोटि कछु कह्यो न जाइ ॥
एक स्थावर को कोटु कीनां। एक अग्नि केरा कर लीनां ॥
उौरु एक पाहन को कीयो। एक किर्मानी को कर लीयो ॥
एक तोयं का ग्रह जु वनायो। एक धात को उपजायो ॥
ताहि द्वारे पानी वहायो। इहि विधि कर्के कोटि वनायो ॥
श्री कृष्णचंद ताहू निकट आए। महा विकट मगु तिह निर्षाए ॥
नर का सुरु किवार चराए। श्री कृष्णचंद कहूं मगु ना पाए ॥
श्री कृष्ण स्थावरि कोटु गिराया।
पाछे अग्नि को दूर कराया।
ऐसी ही सभ कोट विदारे।
श्री गोपाल लीन्हा तहा धारे।
नरकासुरु कुंचर चढि आयो।
युद्ध कर्नि को तिन चितु लायो।
श्री कृष्णचंद को वानु चलाया।
दुष्ट को कालु निकट है आया।

श्री कृष्ण सुदर्सनु चक्रु लीनां। तांको सिरु तिन नें दूर कीना ॥
सप्त पुत्र नरकासुर केरे। युद्ध कर्न को आए नेरे।
श्री जदनाथ तिह मार चुकाया। नरकासुर दारा सुण पाया ॥
कुंडिल से वांके ग्रहि माही। जोषता सुरपति केरे वाही ॥
नरकासुरु षसि के तिह ल्याया। अपुने गृह माही ठहिराया ॥
ओरु छत्रु सुरपति सिर केरा। ओ भी आहा वांके डेरा ॥
नरकासुर जोषिता ले आई। श्री कृष्ण आगे आइ ठहिराइ ॥
कह्यो कृष्ण जी इहि तुम लेवो। हमि को तुम अब दुःख न देवो ॥
तव श्री कृष्णचंद क्या कीआ। वहुमासुर को सदि कर लीआ ॥
नरकासुरु को सुत वहुमासुर। हरि सौ प्रीत तांकी निसवासुर॥
श्री कृष्ण तास को कीना राजा। करो कलोल बजावो वाजा ॥
नरकासुर असुर महा वलकारी।
तिह नृप दुहिता आनी अधिकारी।

षोडस सहस्र एक सौ बीस।
षसि आनी ऊंचोतिहि सीस।

भले महूर्ति काजु करायो। इनि सभना कौं आप बिआहौं ॥
जव प्रभ नरकासुर को मारा। पाछे प्रभ इहि वचनु उचारा ॥
बहुमासुर को कह्यो सुणाई। इन सौं डोले डारो भाई ॥
आप सहित द्वारका ले जावौ। पुर माहे इनि को तजि आवो ॥
मै तुम को इहि आज्ञा दीनी। मैं इहि करुणा तै पर कीनी ॥
बहुमासुर तांको ले आया। सांईदास द्वारका ले आया ॥१३६

इति श्री भागवत महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्ट पंचासमोध्यायः॥५८

श्री गोपाल तव सुर्ग सिधारे। तांकी लील्हा अपर अपारे ॥
कुंडिल इंद्राणी को दीना। हिर्षमान होइ कर तिह लीना ॥
सुरपति सौं हरि वचन उचारा। सुण हो सुरपति वचन हमारा ॥
कल्प व्रिक्ष द्वारिका महि नाही। तौं मैं आयो तुमरे पाही ॥
जो कह्यो कल्प वृक्ष ले जावहि। षडि द्वारका महि ठहिरावहि ॥
सुरपति सकल देव तहि वुलायो। तांसों सुगर आष सुणायो ॥

श्री कृष्ण कल्पव्रिक्ष लेनें आयो। मोसो ऐसे वचनु सुनायो॥
कहो क्या कीजै मेरे भाई। कल्प वृक्ष मांग्यो जदराई॥
सकल देव त्यो कह्यो पुकारे।
हमि कल्प वृक्ष देवो न मुरारे।
कहु कैसे हमि तिस को देवहि।
हमि तिह देइ कहा हमि लेवहि।
हमि सौ कैसे वहु ले जावै।
हमि संग तांको कहा वसावै।
जव अमरो इहि वचन उचारे।
सुरपति सुण मन अंतर धारे।
श्री कृष्णचंद को कह्यो सुनाई।
सुण हो पूर्न प्रभ जदुराई।
कल्प वृक्ष तुम अमर न देवहि।
जव लेवहू तवि युद्ध करेवहि।
ईहा ऊहा है तुम वसि माहि।
हमिरे तो वसि कछु प्रभ नाही।
जो कछु मन आवे सौं करहो।
मम ऊपरि प्रभ दोसु न धरहों।
कल्प व्रिक्ष प्रभ जी ले धाए।
अमरो ने इहि विधि सुण पाए।
सकल अमर मिल युद्ध को आए।
प्रभ लील्हा कर सकल हिराए।
कल्प व्रिक्ष पुर माहे आना। अति गंभीर हरि चरित सुजाना॥
सति भामा के द्वार लगायो। श्री गोपाल ने ऐसे लायो॥
पंडित जोतकी लीए वुलाई। तांको कृष्ण कह्यो समझाई॥
भलो महूर्त देहि वताई। इहि कन्या कार्जु करो भाई॥
भलो महूर्त तिन नें पायो। कन्या सौ प्रभ काज रचायो॥
तव ही प्रभ नें लील्हा धारी।
सभ ग्रहि प्रगटि रहित वनवारी।

सभ जानत प्रभु सभ ग्रहि माही।
रजनो समे रहे सभ पाही।
षोडस सहस्त्र एक सौ वीस। अष्ट और दारा जगदीस॥
इहि सभ बनिता जगदीस।
इहि सभ बनता है प्रभ केरी। अष्ट नायका और सभ चेरी॥
प्रिथम नायका रुक्मन रानी। द्वितीया जामवंती वहु स्यानी॥
त्रितीया सत भामा तिह नामा।
चतुर कलिंद्री जमुना नामा।
पंचम भद्रा है मेरे भाई।
षष्टम लछिमी कहित सुनाई।
सप्तम मित्रविदा कहीए।
अष्टम सुतावान उचिरहीए।
सदा सदा प्रभु तिहि सुष देवै।
सांईदास सुष वहु उपिजेवै १३७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणाहठमोध्याय: ॥५९॥

एक दिनसि कौलापति केसर।
प्रजंकपर सैन कीयो पर्मेश्वर।
नायक सभ ठांढी हरि आगे।
कर्त सेवा माया मोहि त्यागे।
श्री कृष्णचंदि मन लीयो वीचारा।
जहां तहां मैं लीनो अवतारा।
रुकमण सदा सदा संग मेरे।
लछमी रूप कहित मोह नेरे।
इस ते पूछो इसि चित होई।
तास समे की वार्ता कोई।
रुक्मनि सों तव वचन सुनायो।
सुण हो रुक्मण हितु चितु लायो।

बडे नराधिप तुम को लोरहि।
चाहित प्रीत तुमहि संग जोरहि।
जरासिंधु दंत वक्रत बलिकारी।
तांमहि दिव्य महा अधिकारी।
सभ वाते वहु हमि ते नीके।
अति वहु भले सदा वहि जीके।
उनि कों त्यागहो हमि हितु लाया।
किह प्रजोग इहि कर्मु कमाया।
जो आप सो नीच सो करे सकाई।
तां वहि भला न होइ बुराई।
जो संग उत्म आपतें कीजै।
तौ भी भला ना विष को पीजै।
जो समसर को करै सकाई।
महा अनंदु दुःषु मूल न पाई।
मैं तुझ कों तांसों ले आया।
द्वारका पुर माहे ठहिराया।
अव तूं जिस को नीका जाने।
नेमधर्म महि भला पछाने।
उसको अपुना पतु कर लेवो।
हिर्षमान होइ तांको सेवो।
जव रुक्मरग प्रभ मुष ते सुन्या।
मूर्छा होइ लटिक तनु धुन्या।
धर्नि गिरि सभ सुध विसरानी।
नैनो सों तव ढर्‍यो पानी।
दीनानाथ विधि जानरा हारा।
अंतर जामि प्रान अधारा।
रुक्मन का करु कर महि लीना।
रुक्मन को ले ठांढा कीना।
तव ही प्रभ ने वचन उचारे।
सुन हो रुक्मनि वचन हमारे।

ठौर राषु चितु नाहि डुलावो।
सुर्ति मंडिल आइ क्युं उकिलावै।
मैं तो तुम ताई पतीआवों।
मैं तो तुमरो अंतरु पावौं।
इनि लोकन सों वैरु हमारा।
मैं मन महि संचरु क्युं धारा।
तव रुक्मन हरि को प्रतु दीना।
कौलापति ने को वचु कीना।
पंचभू आतम वैरु कमावहि।
जो इनि वसि सी वहु दुःख पावहि।
सदा सदा दुःख महि उर्भावहि।
अनिक जोन माहे भर्मावहि।
जो इनको अपुने वस करही।
सदा सदा इनि सेती लरही।
वाही गति तुम प्राप्ति होवहि।
जरा रोग सभ तन ते षोवहि।
हे प्रभ एहि वचनु जो भाषा।
नेम धर्मु उत्यमु जो आषा।
तुम सों उत्तम कोंनु कहावै।
भीष्म सुता इहि वचनु सुनावै।
श्री कृष्णचंदि फिरि कर प्रितु दीना।
मुष अपुने तें इहि वचु कीना।
इहि प्रजोग मैं वात चलाई।
तुम चित आवति के बिसराई।
जिह जिह ठौर मै लीयो अवतारा।
आइ जगत महि कीयो उजीआरा।
तहूं कहूं तूं हमि संग आई। अैसे कर मैं वात चलाई॥
रुक्मन इहि सुरा भर्मु हिरायो। सांईदास सुष वहु नन पायो १३८

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्रीसुकदेव परीक्षिति संवादे सठमोध्यायः॥६०॥

रुक्मनिश्रा रुक्मनि को वीरा। अति सुजान चंचल मन धीरा ॥
कंन्या की तिन करी सकाई। प्रदुम्न सों संजुक्त वनाई ॥
अब चाहित काजु वहि करई। मन अंतर एही विधि धरही ॥
रुक्मनिश्रा रुक्मनि को भाई। रुक्मन कृष्ण को षडो वुलाई ॥
पाछे सेती बराति होइ आए। बलराम प्रदुम्न सहित सिधाए ॥
बहिन को पूतु प्रदुम्न है तांको। अवि कंन्या दीनी तिहि वांको ॥
नृप वहुते तिन लीए वुलाई। तिह नराधिप इहि मतु ठहिराई ॥

वलराम सहित इक वात चलावहि।
ताहि वात सों तिसे षिझावहि ॥

रुक्मनिश्रासो मतु ठहिरावो। चौपडि षेलरण सों चितु लायो ॥
तांसो दाउ राष्यो मेरे भाई।
ताहि षिझावहि अति अधिकाई।

जो वहि जीते हमि झूठ अलाणहि ॥
झूठ कहें तुमको जितवावहि।

हमि काहे रुक्मनीश्रानें जीता।
तैं कछु झूठु हमि मिथ्या कीता।

रुक्मनीश्रा वलिदेव षेलरण लागें ॥
औरु वात उनि सकल त्यागे।

प्रिथमे तिह ने दाउ ठहिरायो।
कंचन वीस तोल तिन्हा लायो।

प्रिथमे रुकमने जिरण लीना ॥
वलिदेव ने तांको वहु दीना।

वहुरो एक सहस्र वहु लागो।
दुहू ओरि राष्यो उनि आगे।

अवि वलिदेव नें तांसों जीता ॥
इन भूपति वचु मुष ते कीता।

रुक्मना ने एभी जिरण लीश्रा।
झूठु वचनु तिन नें इहि कीश्रा।

वलदेव ने तांको प्रतु दीना ॥
काहि झूठु तुम मनू महि कीना।

मैं जीत्या क्युं झूठु अलावो।
रुक्मने को नाम उचिरावो।
रोहणी सुत अव भी तिहि दीआ।
जाण बूझ के इहि विधि कीआ।
दस सहस्र तिन ने फिरि धरे।
दुइ ओरि आगे तिन्हा करे।
अव भी रोहिणी सुत ने जीता।
इनि सभ कहा जो झूठ तुम कीता।
अब भी रुक्मे ने जिण लीनां।
ऐसे वचन तिहि भूपति कीनां।
दुष्ट सभा कहा ईहा आई।
सच्च न को मुषते उचिराही।
मं जीत्यो रुक्मनीआ आषहि।
सकल सभा मिथ्या मुष भाषहि।
वलदेव ने वहु क्रोपु करायो।
अधिक क्रोधु मन माह ल्यायो।
दंत वक्र को दसन उपारे।
महा क्रोध मन माहि सम्हारे।
रुक्मनें को पकिर पछारा।
तांको जीउ लीओ ततकारा।
कस कौ सर्व हता दुष पाया।
सभ ही भागनि को चितु लाया।
श्री कृष्णचंद इहि विधि सुण पाई।
मन महि अधिक भयो विसमाई।
जो कहो भला कीआ मैं मारा।
तिस पापी को पकर पछारा।
तव रुक्मनि मन महि बुरा मानें।
अपुने मुष तें वचन वषानें।
मम वंधू को इनि ने मारा। श्री कृष्णचंद मुषो भला उचारा।।
जो कहो वुरा कीआ तैं भाई। तौ वलदेव दुषत अधिकाई।।

तै पातक को लीयो हताई। कृष्ण कहित वुरा कीनां भाई ॥
ईहा भला कछु नांउ चिरावों। मन कह्यो तव ही सुष पावो ॥
प्रदुम्न को कार्जु कीना। कंचन पुर चलिने चितु दीना ॥
रुक्मनीग्रा के रे पुर माहें। कृष्ण छाड्यो पर कामु चलाहें ॥
आप द्वारका को पग धारे। सांईदास गति अपर अपारे ॥१६६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकाहिठमोध्याय: ॥६१॥

जोषिता श्री कृष्ण सुनो मेरे भाई।
षोडश सहस्र एक सों बीस अधिकाई।
और वीस फुनि अष्ट है रानी।
तास सुत की करो वषानो।
दस दस सुत सभना के ताई।
एक एक कन्या गोदि मंझाई।
इकि लषि इकिसठि सहस्र सैं दोई।
एते सुत इहि सुत सभ होई।
एक एक कंन्या है सभ ताई।
तांकी उपमा कही न जांई।
वाणासुर असुर शिव सेव कीनी।
अधिक सेव मन अंतर लीनी।
गौरापति पहि जाचनु करी।
सहस्र भुजा होइ हमरी हरी।
गौंरावर तांको वरु दीना।
सहस्र भुजा तांको कर लीना।
महा पराक्रमी अति वलिवाना।
और नही कोऊं ताहि समाना।
केतिकि दिन पाछे फिरि आया।
गौरापति पहि आइ ठहिराया।
हरि पहि आइ वचनु उचारा।
अधिक फिर्या ढूढ्या संसारा।

जो कोऊ होइ तांसो युद्धु करहों।
युद्ध कर्नि को मै चितु धरहों।
कोई न प्रगट्या मोहि समाना।
युद्धु करों तांसो मन माना।
आवो हम तुम युद्धु करावहि।
कर सों कर हम तुम अरकावहि।
तव शंकर ने वचनु उचारा।
जिह वरु देउों सो शत्रु हमारा।
हे मत मूढ गर्व मन कीनां।
अति अभिमानु हृदे महि लीना।
जो मोहि सर दूजा नही कोई।
जो मैं करो सोई कछु होई।
जिन गर्वु कीयो सों भयो विनासा।
तांकी पूर्ण भई न आसा।
तोह नैन महि आहु आंधी।
जो है धजा गृहि ऊपरि वांधी।
आजु ते दसि दिन औरु माहें।
तोहि ग्रहि धुजा बसुधा पराहें।
तब ते तूं निश्चे कर जानें।
वडो छोटो तव मन महि आनें।
एक कंन्या वणासुर गृहि माही।
ऊषा नामु सभ जानें ताही।
इक रैन समे ऊषा ग्रहि सोई।
तास द्रिष्ट नरु पर्यो कोई।
कमल नैन पीतंवर अंग।
क्रीडा कीनो ऊषा संग:
रजनी घटी रवि कीयो प्रकासा।
ऊषा जाग परी सुषु नासा।
जो तिस देषा दिष्ट न आवै।
तव ऊषा मन महि विसमावै।

तव ही मन महि कीयो विचारा।
दुषित भई वलु सकला हारा।
कहा भयो निस ईहा आयो।
इहि प्रजोग हित चितु विसरायो।
इक कंन्या मंत्री मन माही।
रहित सदा संग ऊषा पाही।
मंत्री दुहता ने निर्षाई।
विस्मकि ऊषा तिह द्रिष्टाई।
ऊषा सो तिन वचन उचारे।
राज कवर तैं क्या मन धारे।
जो इहि प्रजोग मन महि विसमाई।
चाहित अपुना काजु कराई।
ए ऊषा तूं कहु सषी मेरी।
मोको पीर लागत है तेरी।
मै जाइ अपुनी मात सुनावो।
तोह कार्ज उपचारु करावो।
मोह माति मोहि पित सो आषै।
मम पिता तु पिता सो भाषै।
तव तुमरो कार्जु कर लेवहि। जूं मांगे सो तुझि देवहि।।
जो इहि ते ऊौरहि कछु होई। सांईदास मोसो कहु सोई।।१७०

चित्रलिषा है मेरो नामा।
मै वहु स्यानी हो सभ रामा।
जो त्रिह लोक मै होवहि कोई।
तैं पहि प्रगटि करों मै सोई।
प्रथम ब्रह्म लोक लिष लीआ।
आन ऊषा के आगे कीआ।
इन महि देषु जो इनि महि होई।
मम को देहु वताई कर सोई।
ऊषा निर्ष कह्यो ईहा नाही।
चित्र लिषा सुन्यों मन माही।

पाछे प्याल लोक लिष ल्याए।
सुता वणासुर कों दिषलाए।
कह्यो नैन षोल्ह निर्षावो।
प्याल लोक माहे चितु लावो।
ऊषा निर्ष कह्चो सषी मेरी।
तूं जाने विर्था मन केरी।
इसि महि भी मोह द्रिष्ट न आवहि।
मम मनु वहुता भर्मु भुलावहि।
वहुरो जादव सकल लिषाए।
श्री कृष्ण लिष्यो लिष चक्र वनाए।
पाछे से प्रदुम्न चित्रायो।
इही होइया इसि को भाई।
या इसि सुत ौरु कह्चो ना जाई।
तव वाछे अनरुद्ध सवारा।
राज कंन्या ने नैन निहारा।
तव मुष ते कह्चो है यही।
जो मेरो वहु भयो सनेही।
चित्र लिषा तव शब्द उचारा।
प्रदुम्न सुत है इही पुकारा।
नाती श्री कृष्णचंद को कहीयै।
इसि को नामु अनिरुद्ध जी अहीयै।
द्वारका माहि इसि को वासा।
मैं आनो इसि को तोहि पासा।
अपुनो मनु तूं नाहि डुलाई।
मैं इसि को आनोगी जाई।
चित्र लिषा षग विप कर लीना।
गवन द्वारिका पुर को कीना।
अनरुद्ध ग्रहि ऊपरि चरि सोया।
श्री कृष्ण नामु मन महि परोया।

चित्ररेषा पुर माहे आई।
षग वपु तिह कीनो अधिकाई।
प्रजंकु अनरुद्ध को कर लीना।
गगन मार्गि ताहि पगु दीना।
अवरुद्ध सैन कीए ले आई।
ऊषा निर्ष अधिक हिर्षाई।
दोनों मंदिर रहिने लागे।
नृप कंण्या के दुष सभ भागे।
द्वारपालक तिह रहित द्वारा।
ऊषा को तिन नैन निहारा।
चिन्ह वडे ऊषा निर्षाई।
ताहि चिन्ह निर्ष विसमाई।
ततक्षिण वाणासुर पहि आए।
मुष ते वचन उचार सुनाए।
तोह कंन्या और द्रिष्ट आवै।
वडे रामां के चिन्ह दिषावै।
अव हमि तुम सो आष सुनायो।
हमरे मन महि संचरु आयो।
वाणासुरु तव ही उठि धाया।
सुता मंदिर जाणे चितु लाया।
आ निर्षे दोऊ चौपर षेलहि।
क्रीडा कर अंग अंग सों मेलहि।
वाणासुरु सैंना ले धायो। अनरुद्ध निर्ष सनमुष तिह धायो॥
ध्यानु कीआ तिह अंतर माहे। आष पठायो वलिदेव पाहे॥
जो अवि आवे वहु भलो होई। मैं एकलो दूजा नाही कोई॥
नाहि त अपुना शस्त्र पठावो। वेग विलम तुम मूल न लावो॥
वलदेव शस्त्र दियो पठाई। छिन पलु विलमु नाहि कछु लाई॥
वाणासुर वहु सैन ल्यायो। अनरुद्ध सों तिन युद्ध मचायो॥
अनरुद्ध अधिक सैंना तिह भारी। मन विरोधु करके प्रहारी॥

अनरुद्ध को वाणासुर गह्या।
वांधा वचु मुष ते इहि कह्या।
काहे को इहि कर्मु कमावहि।
परदुहिता सेती चितु लावहि।
अव मै तुम को मारि चुकावों।
तुमरी रक्त की सिंधु वहावों।
वाणासुर इहि वचनु सुनावै।
सांईदास कछु नाहि वसावै १७१

इति श्री भागवतें महापुराणें दस्म स्कंदें
श्री शुकदेव परीक्षति संवादे वाहिठमोध्यायः ॥६२॥

नार्द एक दिनसि क्या कीआ।
उग्रसैंन के ग्रहि पगु दीआ।
उग्रसैंन कों कह्यो सुणाई।
हे नृप सुण हों मेरे भाई।
अनरुद्ध को वाणासुर वांधा।
राषा है अपुने गृहि फांधा।
जव नृप ने इहि विधि सुण पाई।
क्रोधवान होयो अधिकाई।
कह्यो वजंत्र अधिक वजावो।
वाणासुर पर सैनां उमिडावों।
सकल राजकौरों उचिरायो।
उग्र सैंन सो वचनु सुनायो।
जो आज्ञा होवहि हमि जावहि।
इहि कार्जु पूर्नु कर आवहि।
उग्रसैंन कह्यो भला जावों।
इहि कार्जु पूर्न कर आवो।
इक लष इक सठ सहस्र सवार।
दो सैं ऊपर और वीचार।

वाणासुर को पुर कों धाए।
अश्व भले अंवर अधिकाए।
श्री कृष्णचंद से आज्ञा पाई।
बाणासुर को पुर घेरवाई।
द्वादश क्षुहणी सैंना आई।
महा अधिक पग धूर उडाई।
रवि गयो दरि तिहि धूरि छपायो।
गगन दीसै रवि विसमायो।
व्रिक्ष अधिक तांके पुर द्वारे।
इन सैना ने सकल उपारे।
ब्रिक्ष उपार ग्रहि के निकट आए।
चाहित ताहि किवार भनाए।
तव वाणासुर सेना संग लीने।
गृहि सेती वाहिर पग दीने।
शिव वाणासुर कर्नि सहाई।
स्याम कार्त्तक सुत ले धाई।
श्री कृष्णचंद सों युद्ध मचायो।
शिव अरु कृष्णचंद उर्भायो।
शिव सुत प्रदुम्न युद्ध कीना।
महा अध्कि युद्ध कर्के लीना।
वाणासुर करे उौरु भाई।
वलदेव सेती कर्ति लराई।
शिव केरी सैंना सुण लीजै।
उौर ठौर कहूं चितु न दीजै।
भूत प्रेत सैंना संग लीने।
डाकनी राकसी को संग कीने।
युद्ध कर्नि हरि सो चितु लाया।
भूल पर्‌यो चित ताहि भुलाया।
हरि सों युद्ध कर्नि चितु लायो।
सांईदास शिव भर्म भुलायो १७२

अकाल मूर्त कौलापति केसर।
शंष लीयो कर सकल बिसेश्वर।
शंष वजायो त्रिभवन राया।
भूत प्रेत को शब्दु सुनाया।
सभ गए भाग शंष जब बाजा।
श्री गोपाल है सभ को राजा।
शंकर को वलु तव हिर लीना।
शिव सुत प्रदुम्न बिह्वल कीना।
बाणासुर वहुरो युद्ध को आया।
तव तिहि भार्ज ने सुण पाया।
नगन कीए सिर आगे आई।
श्री कृष्ण आगे आइ वचनु सुनाई।
जब प्रभ ऐसी विधि नैन निहार्यो।
सिरु तले कर मन महि वीचार्यो।
बाणासुरु रण तज कर भागा।
ग्रहि के मार्ग तिस चितु लागा।
ग्रहि माहे जाइ कर ठहिराया।
सैंना वहु लेकर फिरि आया।
क्रोधवान होइ वान चलाए।
दोनो बाण एकनर को लाए।
तब श्री कृष्ण दुष्यो अधिकारी।
चक्रसुदर्सन लीयो वनवारी।
भुजा बणासुर की कटि डारी।
दोराषी श्री कुंजविहारी।
तव प्रभ शिव प्रभु के आगे आया।
हरि उस्तत मुष ते उचिराया।
वहुरो शिव ने विनती कीनी।
अति अधीनता मन महि लीनी।
जो मैं वरु देवों किसे ताई।
जो आज्ञा पांवा त्रिभवन सांई।

हम भाषा तुम मूल हमारे।
सकल विश्व तुम साजन हारे।

मैं ओगुणु वहुता प्रभ कीयो।
तोह सन्मुख युद्ध को चितु दीयो।
इहि औगुणु हरि हमि वषिसावौ।
अपुनी किर्पा सहित मिटायो।

सीत को ज्वर शंकर उपजायो।
तप्ति ज्वरा प्रभ ने प्रगटायो।
तप्त ज्वर सीतहि जाइ लागा।
सीत ज्वर जुर्यो उठि भागा।

तव वाणासुर ने क्या कीआ। कंन्या को कार्जु कर दीआ॥
कार्जु कर अनरुद्ध कौ दीई। गोपीनाथ संग कर लीई॥
तव ही द्वारका कों उठि धाए। सांईदास प्रभ सदा सहाई १७३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रे हिंठमोध्यायः॥६३॥

द्वारकाकों जब हरि पग धारे।
मुष अपुने प्रभ वचन उचारे।
सैंना सभि कों कह्यो सुणाई।
दधि के तीर चलो मेरे भाई।

दधि तटि अषेर कर्ति हम आवहि।
राज कौर सभ आगे धावहि।
तिन को त्रिषा गह्यो है भाइ।
सकले इति उति अंभ हिराई।

एक कूप हेर्ति तहा पायो।
इकु किर्ला तिहि महि निर्षायो।
डावरी सुत ले कूप महि डारी।
मन अंतर तिनि एहि विचारी।

इसकों कूप सें बाहिर आनहि।
जोरु कर्ति निकसति वहु नाही।

थकित भए वलु सकल हिराई।
तव श्री कृष्ण पाछे ते आए।
राज कुवर सभ वचि उचिराए।
हे प्रभ हमि थाके वलु लाए।
इहि किर्ला वाहिर ना आए।
श्री कृष्णचंदि जब इहि सुरण पायो।
तासि कूप के नेरे आयौ।
डावरी आइ गही क़र माहे।
डावर डार दीयो तिसु ताहे।
जव वहु कूप सें बाहिर आयो।
मानस को तिन रूप दिषायो।
महा अधिक सुंदर भयो रूपा।
जव बाहिरि तजि आयो कूपा।
श्री कृष्ण तास सों वचनु उचारा।
कौन रूप तूं देहि वीचारा।
किर्ले की योन काहे को आया।
एस कूप महि क्युं ठहिराया।
तव तिन नें हरि क्यो प्रतु दीना।
हाथ जोरि मुष विनती कीना।
नघिराजा मेरो प्रभु नामा। निता पति एही मोह कामा॥
सुरहों सभ विपो को देवौ। नितापर्ति इहि कामु करेवौ॥
कनक रूपा मोती अधिकाई। दान कीए मैं त्रिभवन सांई॥
एक दिन सुरहों सहस्र मै दीनी। एक विप ताई किर्पा कीनी॥
उनि से एक धेन भजि आई।
हमरी सुर्हो पाहे ठहिराई।
मै वहु सुर्ह प्रभ नाहि पछानी।
सांईदास विधि सकल वषानी॥१७४

उौर दिनसि मै ने क्या कीआ।
सहस्र सुरि्ह एक विप को दीआ।

प्रिथम विप नें धैन पछानी।
आजु के विपसो कहचो वषानी।
आजु के विप तांको प्रितु दीना।
रे मति मूढि तैं क्या मन कीना।
नृप आजु सहस्र सुरिह दानु जु कीई।
तिन महि सुरिह् हमि ताई दीई।
दोनो झगिरित मो पहि आए।
मो को तिन ने आइ सुणाए।
आजु के व्रह्मण को मै आषा।
तांसो मैं एही वचु भाषा।
हे स्वामी एहि सुरिह् तुम देवहु।
सौ सुरिह् औरु इसकी तुम लेवहु।
तव विप ने मोको प्रतु दीना।
हे नृप तै मन महि कहा कीना।
मैं अपुनी एही सुरिह् लेवो।
एहि सुरिह काहूं ना देवो।
प्रिथम विप सौं वचन सुनायो।
असे ही तांसो उचिरायो।
अव संकल्प सिर इसि के आई।
सहस्र सुरिह् तुम और ले भाई।
तव विप असे वचन उचारे।
हे नराधिप तै क्या मन धारे।
मम को स्रापु दीयो विप ताही।
तिनहूं कहा अन्यथा परे नाही।
हे नृप किर्ले कीयोन पावहि।
जो मम सो इहि वचन सुनावहि।
जो सरापु उन हमको दीआ।
अधिक भला उनि हमको कीआ।
मैं अधिक भला इसि कूप सों रह्या।
तोहि ओटि प्रभ वहु सुष लह्या।

आजु काल ईहा प्रभु आवै।
पग मोह मस्तक पर ठहिरावे।
जव प्रभि इहि विधि सुरण पाई।
तांपहि हिर्ष भए जदुराई।
तांको पारगिरामी कीनो।
हिर्षमान होइ वहु सुष दीनो।
प्रभ नघि नृप सो कह्यो सुणाई।
राजु करो अपुने पुर जाई।
निर्भौ होइ कर राजु कमावो।
कछु चिंता मन महि ना ल्यावो।
कर डंडौत नृप पुर को धायो।
सांईदास नृप तेजु सवायो।।१७५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौसठिमोध्यायः।।६४।।

एक दिनसि करुणा निधि स्वामी। वचन कीयो प्रभ अंतरजामी।।
वलिदेव सों प्रभ कह्यो सुनाई।
सुनहो वलिदेव हमारे भाई।
गोकल के मग तुम पग धारो।
मोह कह्या घटि महि वीचारो।
नंदि पिता जसुमति हमि भाई।
गोप ग्वार सों पूछहु जाई।
हमि ओर उंनि पाहे जावो।
हे वांधव इहि कर्मु कमावो।
जो हमि वसुदेव देवकी जाए।
तिनहू पार कर वडे कराए।
उनि प्रसाद करहि हमि राजा।
अब नाही किस के मुहताजा।
महा पराक्रमी कंस को मारा।
अधिक जोध्यों को कीजै संहारा।

वलिदेव सुण जाइ रथ पर चरिग्रा।
रथ पर चरि गोकलि पगु धरिया।

नंदि महिर के ग्रहि महि आयो।
जसुमति कौं डंडौत करायो।
जसुमति वलिदेव को उरि लीग्रा।
वदन चूंम वहुता सुष कीग्रा।

पाछे सें ग्वार्नि मिलि ग्राई।
वलिराम के चतुर ग्रोर ठहिराई।
वलदेव सों तिन्ह वचन उचारा।
कहा तजो है प्रांन ग्रधारा।

कवहूं नंद जसुमति चित करही।
गोकल ग्रावन को मनु धरही।
जव इन्ह पार कीयो ग्रधिकाई।
इन्हि तजि मथुरा वैठो जाई।

तहा जाइ नृप पदिवी होया। हमिरा प्रेमु हृदे ते षोया।
कंस कहा मृत लोक सिधारा। जो उसि को सभ चूको भारा।
जो ग्रब लगि कंसु जीवत रहिता। मथुरा महि काहे हरि वहिता।
तव उसि के मन होत है त्रासा।
गोकल माहे कर्ता वासा।
वुरे समे इनि ग्रहि ठहिराया।
वडे भए गोकल विसराया।

ग्रब हम को कित को चित करही।
उौर सुनो वनिता वहु धरही।
वहि रामा मुष देष लुभावहि।
वचन सुने सुन सुधि विसरावहि।

ताहि पिंड महि होइ कल्याना।
सांईदास एहि वचनु वषाना।१७६

वलिराम मास दोह गोकल माहें।
रहिया ग्रध्कि तांमहि उरझाहे।

जैसे श्री कृष्ण धेन ले जावै।
वनि मंझार षडि ताह दरावै।
अैसे वलिदेव वेने ले जाई
सुर्हों विंद्रा वन माहि चराई।
उसी भांति कर वैन बजावहि।
गोप ग्वार सभ षेलु रचावहि।
एक दिन वनि जाइ कर ठहिराए।
सुर्हो त्रिण चर्ति फिर्ति अधिकाए।
वलिदेव ने तव बैन बजाई।
तांकी सोभा कही न जाई।
राजा वर्नु तव ही चलि आया।
बारुणी मदु वलदेव कौ ल्याया।
वलदेव नें मदि को अचिवाया।
अलिमस्तु भयो सुध सभि विसराया।
रवि दुहिता सों वचन उचारा।
आगे आवो सुण कहा हमारा।
जमना वचन सुण मनि विसमाई।
कहा वचनु इहि मुष उचिराई।
जमुना ठटिकि रही ना आई।
वलिदेव हल सो लई अराई।
अंभ ताहू पाछे उठि धाया।
षाल पर्यौ प्रवाहु चलाया।
जो कोऊ तहा जाइ मज्जनु करे।
ताहि अंग पाप वहु झरे।
जो कछु अघ होहि सकल हिराई।
जो तिह षाल इस्नानु कराही।
रवि दुहिता डंडौत कराई।
अधिक वेनती मुष उच्चिराई।
सेस नाग प्रभ रूप निहारा।
सभ धर्ती को तुम सिर भारा।

मोह अवज्ञा हरि वचावो।
मम ताई कोऊ दोसु न लावो।
मैं न पछाना सा प्रभ तोको।
एही अवज्ञा है प्रभ मोको।
वलिदेव तिह पर किर्पा धारी।
ताहि अवज्ञा सकल निवारी।
सकल को राम व्योगु मिटायो।
जो क्रिष्ण विछोहे इनि दुष पायो।
श्री कृष्ण विछाहो सकल भुलाना।
सभ गोकल वहु आनंदु माना।
वलिदेव सभ को दु:ख निवारा।
सकल लोक कौ संसा टारा।
सकल गोकल को सुषु दिषारा।
सांईदास धनु राम हमारा ॥१७७॥

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पैंसठिमोध्याय: ॥ ६५ ॥

वलिदेव आयो जसुमति पाहे। विनती करी सोच मन माहे॥
आज्ञा देहो मथुरा जावो।
जावो तौ जौ आज्ञा पावो।
वलिदेव ने जब आज्ञा पाई।
मधिपुरी को चल्यो धाई।
ततक्षिण महि पुर माहे आया।
आइ कृष्ण को दर्सनु पाया।
जसुमति माषनु सुरिह को दीआ।
तिह सुरिह को ले प्रभ पय पीया।
जौ कछु तिन ने आष पठाया।
इक इक वलदेव कृष्ण सुनाया।
पुंडरपुर बानारसि माहे।
राजकर्ति फुनि रहित तहाहे।

तिन सभ चिन्ह कृष्ण के कीने।
चित्र भुजा पीतंवर लीने।
मोर पंष ऊपरि सिर धारे।
वन माला उरि माहे डारे।
सकल सरूप कृष्ण को कीना।
अति अभिमानु हृदे महि लीना।
एक दूतु प्रभ पाह पठायो।
ताहि दूत को इहि सिषायो।
जाइ सभा जादम की माही।
श्री कृष्ण सों इहि वचु उचिराही।
मैं हो कृष्ण तूं काहि कहावहि।
झूठ लिवास काह को लावहि।
एहि जो भेषु की आदर करहों।
नाहि त मोहि सर्मा चितु धरहो।
जो इहि करहि तौ वहु भल्याई।
ना हित आउ हमि करहि लराई।
वही दूतु प्रभ पहि चलि आया।
जो उनि कहा सो आष सुनाया।
जव श्री कृष्ण वात सुण पाई।
ताहि दूत सों कह्यो सुणाई।
पुंडर को तूं आष सुणाई।
रे मति मूढ तैं क्या चित आई।
जिन किस भेषु झूठ है धारा।
सो खंड खंडउ होसी ततकारा।
हरि सों प्रितु ले दूत उठि धाया।
पुर वनार्सी महि चितु लाया।
श्री कृष्ण गर्डि को लीयो वुलाई।
ताहि पीठ चढे जादमराई।
ततक्षिण तिह पुर के निकट आए।
तहूं ठौर आइ के ठहिराए।

मुष धर शंषु श्री कृष्ण वजाया।
सव्द संष पुंडर सुण पाया।
क्षूहिणी तीन सैंना संग लीए।
पुंडर नृप वाहिर पग दीए।
युद्ध कर्नि कों पुंडिर आया।
तव श्री कृष्ण हृदे ठहिराया।
सैंना इसि औगुण ना कीना।
इन पातकि मन महि गर्वु लीना।
इस पातक मार चुकावौ।
सैंना को कोई दुख न लावो।
प्रिथम प्रभि तिह रथु कटि डारा।
पाछे चक्र कर महि प्रभ धारा।
चक्र सहित तिहि सीसु उतारा।
सांईदास प्रभ को वल भारा ॥१७८

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छिग्राहठमोध्यायः ॥ ६६ ॥

सीसु ताहि हरि पुर ओर डारा।
ताहि पूत वहु सीसु निहारा।
कृष्ण को सीसु पर्यो ईहा आई।
सकल लोक मुष इहि उचिराई।
नीक निर्ष के सीसु पछाना।
निश्चै नराधिप को कर जाना।
पुंडर के वडे सुत नें लीना।
वसुधा सें ले कर महि कीना।
षडि कर सीस को तव ही जलाया।
मुष अपुनें से वचु उचिराया।
हे पित जिन तुम कौ है मारा।
कर विरोध तुझि को प्रहारा।
अब मैं उसि षंड षंड न करहौं।
तव लगि संघासन ना पगु धरहौं।

इहि प्रतज्ञा मन ठहिराई।
पुंडिर सुत निश्चा मन आई।
सकल लोक मिल मतु ठहिराहो।
पुंडिर सुत मुष इहि उचिरायो।
को सुरु वरदाता वतलायो।
वेग विलम कछु मूल न लावो।
लोक कह्यो अैसे शिव होई।
होरु अैसो सुरु उौरु न कोई।
पुंडिर सुतु शिव सर्नी आयो।
शंकर की सेवा चितु लायो।
होम यज्ञ वहु कर्ने लागा।
उौर वात उनि सभ ही त्यागा।
तीन दिनस जव भए वितीता।
इनि कीनी मन निर्मल प्रीता।
अग्नि कुंडि से रूपु निकसाया।
ताकि रूप मुष वचनु उचिराया।
मांग लेहु कछु हमिरे पाहें।
जो इछा होवे मन माहें।
पुंडिर सुत तिह वचु उचिरायो।
अग्नि रूप सों वचनु सुनायो।
द्वारका कों जाइ कर दग्धावो।
हमरो वचु मन महि ठहिरावों॥
पुंडिर सुत की आज्ञा पाई। अग्नि रूप चल्यो पुर धाई॥
श्री कृष्णचंदि के पुर निकट आयो। द्वारका पुर तिहि नामु रषायो॥
चतुर ओरि आइ अग्नि जराई। सभ जादम उठे अकुलाई॥
धीर्जु तजि सकले विललाए। सांईदास धीर्जु ना पाए॥१७९

जादव सकल श्रीकृष्ण पहि आए। ठांढे होइ तिहि वचु उचिराए॥
हे प्रभ अग्नि चहू ओरि आई। चाहित है पुर सकल जराई॥
हे प्रभ अग्नि से लेहु उबारे। हमि सभ सर्नि परे है हारे॥

तिह समे हरि चौपडि चितु लाया। षेलति है सुंदर अधिकाया॥
सुदर्सनु चक्र लीयो वुलाई। तिह आज्ञा दीनी जदुराई॥
आज्ञा ले चक्र तव धाया।
निर्ष चक्र को अग्नि रूपु भगाया।
चक्र ताँको पाछा कीना।
अग्नि रूप डरु मन महि लीना।
चक्र अग्नि रूपु हति आया। प्रभ कौ आइ डंडौत कराया॥
एक मर्कटि तांको बलु भारी। तिन प्रतज्ञा मन महि धारी॥
जिन नरकासुर को है मारा। मोहि सषा को जिन प्रहारा॥
जब लगि मैं तिस मारौं नाही। तव लगि ध्रिग जीवन जग माही॥
दस गज कों वलु वंचरि ताई। महावली वलु कहा सुनाई॥
नरकासुर को सषा कहावै। अपुने वल मन गर्वु वसावै॥
द्वारका पुर के वहि निकट आवै। सुता वडे लोको ले जावै॥
तिन कौ जाइ करे वुरआई। पाछे दधि महि देइ रुढाई॥
उौर लोक पुर द्वारे रहिई। तांपर अधिक जोरु वहु करई॥
तिन लोको को बहु दुःख देवै। तिह सों अधिक विरोधु करेवै॥
सकल लोक आए हरि पाहे। रुदनु करे मुष तें उचिराहें॥
हे प्रभ तो विनु उोटि न काई। हमि मर्कट दुखु देह अधिकाई॥
दुहिता हमि षसि लेकर जावै। दधि माहे षडि ताहि रुढावै॥
प्रभ सुण विधि तांको प्रितु दीना। उौरु करो चितु हमि उचिरीना॥
मैं तुमरो संतापु मिटावो। तुमरो दुख मै सकल हिरावो॥
एक दिनसि वल देव क्या कीना। सभ वनिता अपुने संग लीना॥
ततक्षिण महि बन माहे आया। तौ उनि मर्कट ने सुण पाया॥
वहि मर्कट भी वन महि आया। वलिराम सहित दारा निर्षाया॥
हरि की बनिता की उोरि देषै। कपट द्रिष्ट कर तिहि उोरि पेषै॥
तिन सौ अपुने द्रिग मुसकावै। जिह उोकठनि तिहि सर्व लुभावै॥
रामां बलिदेव मन महि निर्षी। सिर को ऊपरि कर ना निर्षी॥
व्रिक्ष आण तिहि ऊपर डारे। मर्कट अंधु कछु मन न वीचारे॥
उौधि निकट आई सुर्ति भुलानी। एहि वात भली कर जानी॥
जब इनि मर्कट बुरा कमाया। तव बलदेव तिहि युद्ध मचाया॥

मर्कट दिवद को वलुदेव मारा। वुरा कीयो इति विधि प्रहारा ।।
जो पापी वुरो कर्मु कमावै।
सांईदास प्रभु ताहि हतावै १८०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुखदव परीक्षति संबादे सताहिठमोध्यायः ॥६७॥

सुन श्री कृष्ण सुनो मेरे भाई।
सांब नाम सुन हो चितु लाई।
धृतराष्ट्र कैरो सुत कहीए।
दुर्योधन नाम तिसे उचिरहीए।
स्ववर कंन्या को तिहि कीना।
अनेक नराधिप को सदि लीना।
सांब कह्यो मै भी ऊहा जावो।
उकल वाति मैं द्रिग निर्षावो।
जो वहि कंन्या ममं को देवहि।
अधिक भला मोहि सहित करेवहि।
जो मम को वहि देवहि नाही।
तव मैं एही वात करांही।
कंन्या कों रथ लेउो चढाई।
ले भागो मैं इहि ठहिराई।
सांबु भी जाइ तहूं ठहिरायो।
इति उति ते जाइ सोभी पायो।
कंन्या तुम कौ देवहि नाही।
तुमि सो कार्जु नाहि कराही।
जवै सांव इहि विधि सुण पाई।
कंन्या को तव कह्यो पठाई।
मम तुमरी संयुक्त न करही।
इहि कछु औरु वाति हृदे धरिही।
जो आवे तुझि को ले जावो।
द्वारका माहे षडि ठहिरावो।

जव कंन्या इहि विधि सुरा पाई।
ततक्षिरा महि सांब पहि आई।
सांब तासि को रथ बैठायो।
रथ पर चाढि तासि ले धायो।

पाछे दुर्योधन सुण लीना।
सांब कृष्ण सुत इहि कर्मु कीना।
कैरव अध्कि तिहि दीए पठाई।
सांब को बांधि आने है भाई।

कैरव सांब के पाछे धाए।
क्षिरा मात्र सांब के निकट आए।
सांब कृष्ण सुत वहु युद्ध कीना।
हार पर्‍यो कैरो वंधि लीना।

वांध दुर्योधन पहि ल्याए।
दुर्योधन तव वच उचिराए।
हे सांब क्या इहि कर्मु कीआ।
कौन वात तें मन महि लीआ।

वहुरी कह्यो इसि को वंधि राषो।
इसि को उौरु कछु वात न आषो।
सांब को राष्यो ग्रहि माही।
सांईदास भाषहि कछु नाही १८१।

नार्द ऋषि द्वारका महि आए।
जहा श्री कृष्ण उग्रसैंन ठहिराए।
उग्रसैंन सों बचनु उचारा।
हे नृप सुण हो वचन हमारा।

सांब को दुर्योधन बंधायो।
अपुने ग्रहि महि वांधि रषायो।
उग्र सैन नृप इहि सुण पाई।
मन महि क्रोधु कीयो अधिकाई।

मुष ते एही वचु उचिरायो।
र्कात ब्रंह्म को तव ही वुलायो।

कटिक अधिक कैरव परि चारहि।
वही कटिक कैरवि को मारहि।
वलदेव कैरवि सहित तकाई।
सुनत वात इहि आयो धाई।
उग्र सैंन सों बिनती ठानी।
हे नृप महा अधिक बलिदानी।
मोहि आज्ञा देवों मे जावो।
इहि कार्जु मैं कर्के आवों।
जो मम कहा मान उनि लीआ।
अधिक भला ताहूं ने कीआ।
नाहित ज्युं आज्ञा तुम होई।
हे नरपति करहि हमि सोई।
अवि तुम सैंना नाहि चढावो।
किर्पा कर्के मोहि पठावो।
वलिदेव सुपलकिसुत संग लीनें।
अवर ऊधो अपुने संग कीने।
हस्तानापुर के मग पग धारे।
ताहि निकट आए ततकारे।
एक बन महि लीनो विश्रामा।
वलदेव महा वली वीर स्यामा।
सुपलिकसुत को दीयो पठाई।
दुर्योधन कों कहु तूं जाई।
बलिदेव आइ वन महि ठहिरायो।
तुमरी कंन्या कार्नि आयो।
सांव को सुत कार्ज कर देवो।
मोह कहा मन महि धर लेवो।
उग्रसैंन वहु क्रोधु करायो।
चाहित था तुम को मरवाहो।
मै विनती कर करि वषसायो।
कैरो कुल नां नासु करायो।

सुपलकि सुत पुर माहे आया।
दुर्योधन को आइ सुनाया।
जो बलिदेव तासि समझायो।
सो दुर्योधन पहि शव्दु उचिरायो।

ध्रित्राष्ट्र सुत क्रोधु करायो।
जब सुपलकिसुत से विधि सुण पायो।
सुपलकिसुत सों तिन प्रतु दीना।
उग्रसैंनु किस नराधिपु कीना।

अबि महाराजु भयो है वाहि।
हमि आदि अंत ते नृप अधिकाई।
जब हमि तिन से करी सकाई।
तव जादम ने लई वडाई।

दुर्योधन सुपलकिसुत समझायो।
हमि तिन से क्या बुरा कमायो।
हमिरे कीए वडे भए वाही।
अबि हम सो विरोधु उठाई।

हमि पन्हीआ पग वैरु कहा होहै।
जो बोले अपुनी पति षोहै।
सुपलसुत वेग तुम जावो।
वलिदेव को तुम जाइ सुनावो।
अक्रूर तव ही वलिदेव पहि आया।
दुर्योधन वचु आइ सुनाया।

वलिराम क्रोधु मन सुण कर लीआ।
दुर्योधन एता गर्वु कीआ।
उग्रसैन महाराज को राजा।
श्री कृष्णचंदि पूर्न सभ काजा।

एक छिन महि सभ जगतु वनावै।
छिन माहे सभ भस्म करावै।
तिन सों पग पन्हीआ सों लावै।
अैसा गर्वु हृदे महि ल्यावै।

क्रोधु कीयो शस्त्र कर कीआ।
हस्तनापुर तांपर चुक लीआ।
कहो तो अब ही सकल विडारो।
एक एक कैरव कों मारो।
तव सभ कैरव सर्नी आए।
वलिदेव पहि आइ वचि उचिराए।
वलिराम की उस्तति कर्ने लागे।
गर्व गुमान सकल उनि त्यागे।
सेस नाग को रूपु तिहारा।
सकल धर्नि को तुम सिर भारा।
तुमरी उस्तति कहा वषानें।
हमि पातकि उस्तति कहा जानें।
राम ताहि पर करुणा धारे।
राष लीए तव कैरव सारे।
हस्तनापुर त्रेढाप्ना थीआ।
अव लगि त्रेढु न तांका गया।
अव लगि त्रेढा ही द्रिष्ट आवै।
ताहि त्रेढु अव लगि ना जावै।
दुर्योधनि वलिदेव कों संग कीआ।
पुर को मार्गु तिन नें लीआ।
वलिदेव सहित गए पुर माही।
अव कछ त्रासु न तिन मन माही।
कंन्या का तिन कार्जु कीना।
अति अधीनता मन महि लीना।
सांब सहित संजुक्त वनाई।
मोती माणक दीए अधिकाई।
अश्व हस्त दीनें वहुतेरे।
उौरु अधिक दीनें तिहि चेरे।
अंवर अधिक दीने तिह ताई।
लक्षमणा नामु दुर्योधन दुहिताई।

वलिराम कैरो आज्ञा पाई।
सांब सहित द्वार्का चल्यो धाई ॥
कार्जु कर द्वारका ले आए।
ग्रहि द्वारिका मंगलि गाए।
उग्र सैंन निर्ष्यो सांब ताई।
सांईदास हर्ष्यो अधिकाई ॥१८२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठाहठमोध्यायः ॥ ६८ ॥

एक दिनसि नार्द ऋषि मन आनी।
सो कृपा ते सकल वषानी।
षोडस सहस्र एक सौं अधिकाई।
वीस अष्ट रामा हरी भाई।
आप एकु क्युं तिन परचावै।
कित विधि चित वनि ताहि पुजावै।
मै देषो वहु क्या कुछ करई।
क्युं कर भवन भवन महि फिरई।
प्रिथमे नार्द ऋषि उठि धाए।
जांमवान दुहिता गृहि आए।
तीनों ओरि सम्यानें तानें।
ताहि द्वार ते मोती षचानें।
ताहि सहित वहु मणी षचाई।
तिन की महिमा कहा बताई।
श्री कृष्णचंदि चौंकी ठहिराए।
जामवंती कर चौर ढुलाए।
चेरी दस कर जोरे षली।
अति सरूप सुंदर वहु भली।
नार्द ऋषि तहा कीयो प्रवेसा।
निर्ष्यौं हरि चित कीयो अंदेसा।
प्रभ जव नार्द को निर्षायो।
ठांढा भयो मुष वच उचिरायो।

क्रिपा करी प्रभ हम पर आए।
तोहि दर्सन संताप मिटाए॥
जामवंती अंभ को ले आई।
अंभु आण हरि पहि ठहिराई।
श्री क्रिष्ण नार्द के चर्ण पषारे।
बहुरो ले परजंक बहारे।
प्रश्नु कीयो स्वामी कब आए।
कछु आज्ञा हमि देहु वताए।
कित प्रयोग किर्पा तुम धारी।
इसि का हमि को देह वीचारी।
तव नार्द हरि को प्रतु दीना।
हे प्रभ मोह मन महि इहि लीना।
अधिक भयो दर्सनु ना पायो।
तुम दर्सनु देषन को आयो।
एही आग्या है प्रभ मेरी।
गति मोहि होइ भक्त करो तेरी।
तोह भक्त कब नाहि भुलाए।
इहि आज्ञा हमरी जदुराए।
नार्द प्रतु हरि देइ उठि धाया।
उौरु रांमा के ग्रहि महि आया।
तासि भवन महि जाइ निर्षायो।
तिसी भवन महि हरि को पायो।
प्रथम वचन प्रभ तास सुनाया।
हे ऋषि जी कहु कब तूं आया।
वहुरो ऋषि अवरे भवन आए।
भवन द्वार पहि आइ ठहिराए।
श्री क्रिष्णचंदि निर्ष्यो तहा जाई।
कर महि चर तरपनु जो कराई।
सुरहो वहु विपो ताई देवै।
अपुने कर कर दानु करेवै।

वहुर गयो गहि उौरे मांही।
निर्ष्यो हरि नार्द ने ताही।
सुत को हरि लीनो अंग माही।
सुत के संग प्रभ आप षिलाही।
असे उौर भवन पग दीआ।
हरि निषिन कानि चितु दीआ।
देष्या जाइ हरि तिह ग्रहि नाही।
सोच वीचार लीयो मन माही।
चेरी सों तव बचन उचारा।
कहा गयो है प्रांन अधारा।
चेरी सुरग तांको प्रतु दीना। कूप पर है प्रभ ब्रह्म भोज कीना॥
असे चेरी वचु उचिरायो। सांईदास नार्द सुरग पायो॥१८३

नार्द प्रतु लेकर उठि धाया। ततक्षिण कूप ऊपर वहु आया॥
निर्ष्यो श्री कृष्णचंद को ताही। भ्रांत चुकायो तिस मन माही।
वहुरो अवर भवन को धायो। तहा आइ हरि नां निर्षोयो॥
चेरी सो ऋष कह्यो सुनाई।
कहु कहा गए श्री जदुराई।
तव चेरी ने वचन उचारा।
सुण हो ऋषि पूर्न विधि सारा।
प्रभ गज सहित गज गयो लराई।
सुण हो ऋषि विधि कहो सुरगाई।
नार्द ने तहूं जाइ निर्षायो।
कुंजर लरिवावति द्रिष्टायो।
जहा गयो ऋषु तहूं हरि पायो।
ज्ञान समाध गयो विसमायो।
मैं मतिहीन कहा गति पावा।
य्युं ही भवन भवन भर्मावा।
नादि ऋषि या समाध करायो। सांईदास सभ मर्मु हिरायो॥१८४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणहत्तरमोध्यायः॥ ६९॥

हरि ले तेलु मुष आप लगायो ।
अधिक सुंदर हरि रूपु वनायो ।
दर्पन ले कर मुष पर्षावत ।
मन महि अधिक कलोल करावत ।
वहुरो सुरहो को लीयो वुलाई ।
तास मुष देष्यो जदुराई ।
विपो अधिक कों तवी षवायो ।
वहुरो प्रभ ने भोजनु पायो ।
पाछे से रथु लीयो वुलाई ।
एक चरयो श्री कौर कन्हाई ।
एक उौर ऊद्धो को दीना ।
एक सुदामा को दया कीना ।
नृप उग्र सैन पाहे आयो ।
नृप को आइ प्रनामु सुनायो ।
जाइ सभा महि निकट नृप वह्यो ।
अंग सो अंगु जाइ तिन गह्यो ।
जिह जिह वारी सो सो आए ।
अति अनंदु नृप मन महि पाए ।
एक द्वार पालकु तव आयो । आइ कृष्ण सों भाष सुनायो ।
हे प्रभ एक विप दूर से आयो । तिह महि द्वार ऊपर ठहिरायो ।।
अंतरजामी विधि जानण हारा । श्री कृष्णचंदि गति अपर अपारा ।।
कह्यो विप्प को अंतर ल्यावो । वेग विलम कछु मूल न लावो ।।
द्वारपालकु विप्प को ले आयो । विप्प आइ हरि प्रनामु सुनायो ।।
हे प्रभ इकि विनती है मोरी । ईहा कहो आज्ञा होइ तोरी ।।
जो तुम कहो कहो पटि माही । तव श्री कृष्ण वचन उचिराही ।।
है स्वामी हमि जादम माही । निश्चै जानो अंतर माही ।।
जो कछु है हमि आष सुनावो । पलु क्षिन रचक मूल न लावो ।।
तव विप ने मुष वचन उचारा । सुण हो गिर्धिर प्रान अधारा ।।
सभ नराधिप जरासिंध वधाए । अपुने ग्रहि महि वंद दुराए ।।
चाहित राजसी यज्ञ करावै । वहु पातकु मन एहि वसावै ।।

उन नृप निसवासर तोहि ध्याना। स्मिृति तोहि को है भगवाना॥
हे दियाल विधि जानरण हारा। गुण निधान तू अपर अपारा॥
भक्त वछल श्री कुंज विहारी। करुणा निधि गिरधर हरि धारी॥
इहि प्रजोग विनती प्रभ करही। तुम आगे प्रभ इहि उचरही॥
अठदस वार जरासिंध आयो। संग लीए सैना अधिकायो॥
सभ सैंना तैं उसि की मारी। तुम पित मात भक्तिन वनिवारी॥
हे प्रभ तुम जो लीआ अवतारा। भगति हेत निर्भौ निरंकारा॥
संतनि को करो पारगिरामी। असुर संघार्ण अंतरजामी॥
जवहि हमि जरासिंध ल्यायो। आण अपुने ग्रहि बंद करायो॥
तुमरो ध्यानु सदा घटि माही। रहित हमारा दूरि न जाही॥
जव हमि अपुने ग्रहि महि होते। गफ्लति माहे पै कर सोते॥
ना जाने कैसे रैन विहाई। दिनसु कवन हरि उौरि सिधाई॥
जव ते इस की वंदि महि आए। तुम चरना सों ध्यानु लगाए॥
छिन पलु ध्यानु अवर नही जाई। तुमरे स्मिरन संग विहारी॥
हे प्रभ हमि कर हो उपराला। तुमि विनु हमरो को रषवाला॥
दिज ने अैसी विनती ठांनी। सांईदास सुणी सारंग पानी॥
नार्द पुर पांडवा से आयो।
श्री कृष्णचंदि तिहि वचु उचिरायो।

पांडवो सुत की षवर सुणावो।
यथार्थ विधि सभ मोह वतावो।

ऋष कह्यो सकली विधि हरि जानो।
मैं तुम पाहें कहा वषानो।
जो कृपा कर पूछो हमिताई। यथार्थ प्रभ सों आष सुणाई॥
हे प्रभ युधिष्ठिर हृदे आवे। जो प्रभु किर्पा हमहि करावे॥
राजसी यज्ञ करो तत्कारे। पूर्ण कार्ज होहि हमारे॥
हे प्रभ उौहु हृदे महि धारे। कर विस्वास मन माहि वीचारे॥
तांसो यज्ञ पूर्ण ना होई। तोहि कृपा विनु कहा करे कोई॥
जो तुम कृपा करो पंडवायण। तव यज्ञ पूर्ण होइ नराइण॥
तुमरो ध्यानु सदा मन ताँके। घटि माहे वन्नि रह्यो वांके॥
ऊद्धव सों प्रभ वचु उचिराहो। एकी वचु प्रभ ताहि सुनायो॥

तूं वसीठ सभ जादव माही। मै तव वात करी तुम पाही ।।
तूं कछु मोको देहु वताई। कहा करहि इस विधि मेरे भाई ।।
ऊधो प्रितु दीनो हरि ताई। हाथ जोरि कह्यो प्रभ ताई ।।
तुम अंतरजामी विधि जानो। तुम पाहे मै कहा वषानो ।।
जो हमि पर किर्पा प्रभ धारी। वात पूछी अव लेहु विचारी ।।
हे प्रभ इस महि वहु भली आई। सकल वात मै कहो सुनाई ।।
प्रिथमे जरासिंध को मारो। इन नराधिप को वनी उतारो ।।
राजा युधिष्ठिर जो यज्ञ करही। तोहि प्रसाद हृदे सुषु धरही ।।
ऊधो अैसें प्रतु हरि दीना। साँईदास हरि मन धर लीना १८६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सत्तरमोध्यायः ।। ७० ।।

नारिद ऋषि हरि कह्यो सुनाई। हे प्रभ पूर्न भक्त सहाई ।।
हे प्रभ मै ब्रह्मपुर पगु डारा। तास पुरी महि एहि निहारा ।।
तुमरा भजनु करहि गज इंदा। हे प्रभ पूर्न पर्मानंदा ।।
जो उनि फांसी ते लए छडाई। सदा सदा तुम भक्त सहाई ।।
जो नृप जरासिंधि वंदि पाए। तिनहूं देस पग हमि हो आए ।।
एकनिस तिह नराधिप ग्रहि माही।
में रह्यो जाइ हे त्रिभवन साई।
भूपति भार्जा सुत के ताई।
गोदि लीए मुष वचु उचिराई।
जो तिहि सुत वहु रुदनु करावहि।
तव वहु सुत को आष सुणावहि।
ना तुम रुदन करो चुप करहो।
मन अपुने महि इहि विधि धरहो।
प्रगट्यो है वसुदेव को नंदन।
त्रैलोक तांको चित नंदन।
महा अधिक वलु है तिस पाई।
तांके वल समसर कोऊ नाई।
कंसु मार तिन पर्लो कीना।
राजु उग्रसैन को दीना।

आजु काल तुम पित परु आही।
आइ आप हरि कृपा कराही।
जरासिंध को आइ कर मारे।
तुम पित को ततकाल उबारे।
हे सुत रुदन करों तुम नाही।
ले संतोषु धरो मन माही।
श्री कृष्णचंद ने सैंन बुलाई।
ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
चलहो पांडो सुत पहि जावहि।
हस्तनापुर के मग हितु लावहि।
राम वसुदेव नृप पाहे रहई।
सुष सेती इहि षुर महि वहिई।
और सकल सैंना संग आवो।
कछु विस्वासु न मन ठहिरावो।
अष्ट नायका कों संग लीना।
तव प्रभ गवनु हस्तनापुर कीना।
ततक्षिण वन सुरपति महि आए।
वाहि वन माहे ठहिराए।
धर्म पुत्र ने इहि सुण पाया।
श्री कृष्णचंद किर्पा कर आया।
सभ ही वीर सहित तिन लीने।
श्री कृष्णचंदि उरि पग दीनें।
वाहि वन माहे चलि आए।
ततक्षिण हरि ले अंग लगाए।
मग्न भयो कछु कह्यो न जाई।
धर्म पुत्र हिष्यो अधिकाई।
वहुरो भीम अर्जन सहिदेव।
नकुल आइ लागो हरि सेव।
आइ डंडौत करी हरि ताई।
दुख हर्नि हरि त्रिभवन सांई।

हरि को संग लीए उठि धाए।
ततक्षिण महि पुर माहे आए।
कुंति अरु द्रुपद सुता आई।
तिन मन हर्षु भयो अधिकाई।
कुंती कृष्ण को अंग महि लीना।
श्री कृष्ण प्रनामु तास को कीना।
मास तीन प्रभ रहे तहाही। सांईदास दुख तिह कछु नाही १८७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इघत्तरमोध्यायः ॥७१॥

एक दिनसि प्रभ वचु उचिरायो।
धर्मपुत्र सों आषि सुणायो।
धर्मपुत्र तुम यज्ञ करावो।
यज्ञ कर्नि को तुम चितु लावो।
मै भी टहिल करों यज्ञ मांही।
मन महि और करो कछु नाहि।
तव युधिष्ठिर वचन उचारे।
मैं वलि जावो प्रांन अधारे।
हमि ते कछु हौवै प्रभु नाहि।
जब लगि तूं किर्पा न कराही।
जो तुम किर्पा करो तव होई।
जव तुम क्रिपा करो होइ सोई।
श्री कृष्णचंदि तांको प्रितु दीना।
हे धर्मपुत्र तैं क्हा मन कीना।
चतुर भ्रात तुमरे वलिकारी।
महावलि तिन वचु अधिकारी।
चतुर दिशा इनि देहि पठाई।
इन भूपति को एहि हिराई।
जव इनसे कोऊ जोरु न धाई।
ततिक्षिण महि जाइ होउ सहाई।

तांको जामैं आरण वहावो।
तुमरो पूर्न यज्ञ करायौ।
तव युधिष्टर भ्रात पठाए।
षष्ट मास महि सभ जिरण आए।
ऊद्धो ने तव वात चलाई।
सुण हो प्रभ संतन सुषदाई।
जरासिंध को वलु वहु भारी।
सोंक्षुहिण सैंना संग सारी।
जो तुम तांसो युद्ध करायौ।
युद्ध कीए तिह नाहा हतावो।
एक बात मै देउ वताई।
जो भेदुहु करो तव हत्यो जाई।
तुम अर्ज्जनु अरु भीम सिधावो।
तीनो ब्राह्मरण भेष वनावो।
धर्मयुद्ध तांसो मंग लेवो।
एहि वात हरि मन महि लेवो।
वहु क्षत्री तिह वलु अधकाई।
तुमको वचनु देइगा सांई।
एक एक तुम तिस करो लराई।
जव इहि करो हत्यो तव जाई।
ऊधो हरि को इहि सुनायो। सांईदास प्रभ हृदे धरायो १८८

श्री कृष्ण भीम अर्ज्जन क्या कीआ।
भेषु ब्राह्मण कों कर लीआ।
चले द्वार जरासिंध के आए।
मुष ते आइ शब्द उचिराए।
मंत्री जरासिंध निर्षायो।
निर्ष तासि मुष वच उचिरायो।
हे नृप इहि ब्राह्मरण तो नाही।
क्षत्री हमरी द्रिष्ट पराही।

कर पल्लौ तुम इन्हहि निहारौ।
इन्हहि निहार मन महि वीचारो।
दागि परे इन्ह के कर माही।
वाण चलावत कहो समिझाही।
भेषु व्राह्मण को कर लीना।
तुम छलिने को इनि पगु दीना।
अति भलो जाचनु क्षत्री कीना।
नृप हरि सेती वचु उचिरायो।
कहु स्वामी तुम क्या मन भायो।
तव प्रभ तांसो कह्यो सुनाई।
सुण हो नृप तुम वलु अधिकाई।
जो देवो तव कह्यो सुनाई।
नाहि त कहिते नाहि भलाई।
जरासिंध कहियो मैं दीआ।
जो तुम मांगो सो मन द्रिढ कीआ।
मांग लेहु जो तुम हृदे आवै।
देवो सोई जो तुम मनि भावै।
जव नृप ने इहि वचु उचिरायो।
श्री कौलापति तव ही सुनायो।
मै हो कृष्ण अर्ज्जन इहि आयो।
इहि भीम सैंणु तूं सुण चितु लायो।
धर्मयुद्ध हमि सहित करावो।
वेग विलम कछु मूल न लावो।
जरासिंध तव कह्यो पुकारे।
तुम सो युद्धु न करौं मुरारे।
मोह सर वलु अर्ज्जनु कहा धारे।
भार लेउो अंत इहि हारे।
एक भीम वल मोह सर होई।
मो संग युद्धु करो फुन सोई।

जरासिंधि तव वचनु उचारा।
भीम वात मन लेह सम्हारा।
कछु शस्त्र ग्रहि ते ले आया।
जो हमि सौं तूं युद्ध को धाया।
भीम दीयो प्रतु नृप के ताई।
मैं शस्त्र आना कोऊ नाही।
तव नृप जरासिद्ध क्या कीना।
गदा एक भीम को दीना।
एक लीई अपुने कर मांही।
चाहित है वहु युद्ध कराही।
संग्राम ठौर जाइ कर ठहिराए।
मानो मदिमाते गज आए।
उहु उसि को मारे वहु उसि को मारे।
गदा गदा उठहि चिणगारे।
तीन दिनसि निसि तिन युद्ध कीना।
हारि न कसि तिनि माहे दीना।
भीम कृष्ण ओर नैन निहारे।
थकित पर्‌यो मुष एहि उचारे।
श्री कृष्ण भीम को सैन वुझाई।
वीच से चीर डारु मेरे भाई।
भीम ने एक जंघ कर लीनी।
दूसरी जंघ तले पग दीनी।
हरि वलु हिर्‌यौ नृप के ताई।
चीर डार्‌यो है मध्य मंझाई।
चहूं ओर होयो जयकारा।
सांईदास भीम नृपु मारा।
जरासिंध सुत सहिदेव नाम।
सदा वस्ति जिह घटि हरि नाम।
कृपा निधान ताहि राजु दीना।
तिस पर प्रभ ने करुणा कीना।

सहिदेव तव श्री कृष्ण सुनाई।
नीक वाति कहि ताहि समझाई।
जो नृप से वंदी पित तेरी।
तिन्हहु आण काटो तिह वेरी।
सहिदेव नृप सकल ले आए।
श्री कृष्णचंद आण दिषाए।
तिन नृप को सभ रूप वनी।
उौर ठौर कहूं चित्तु न दीजै।
मुष पर केस भए अधिकाई।
फांटे अंवर देति दिषाई।
एक फांटे इक भए मलोना।
अधिक रूप तिहि भयो अधीना।
आइ श्री कृष्ण को कीयो प्रनामा।
हे प्रभ पूर्नि पूर्न कामा।
आदि अंत लगि सर्नि तिहारी। सांईदास करुणा हरि धारी॥१९०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे बहत्तरमोध्यायः॥७२॥

सकल भूपति मिल बचु उचिरायो।
करुणा निधि सों आषि सुनायो।
जब हमि प्रभ होते ग्रहि माही।
तुमरे नाम को जाने जाही।
सुत बनिता माया चितु लावहि।
कुंजर अश्व सेती उर्झावहि।
जव ते आए बंदि इसि माही।
पलि छिनु तुम बिनु ध्यानु न जाई।
हमि पर कृपा करों गिरधारी।
हमि हिर्दे होइ भक्ति तिहारी।
कवहूं हमि ऋदि ते नां जावै।
सदा सदा रिदे महि ठहिरावै।

तब करुणा निधि वचन उचारे।
तिन को प्रतु दीनो ततकारे।
धंन्य तुम मत्त हृदे इहि आई।
हमिरी भक्त तुम हृदे जचाई।
नराधिपु होइ कर भक्त जचावै।
पर्म मुक्त गति औहो पावै।
सकल भूपति नें मज्जन कीना।
अपुने पान भोजनु तिन लीना।
वहुरो पान पत्र ले षाए।
दुष भयो नास अधिक सुष पाए।
श्री कृष्ण कह्यो सहि देव के भाई।
बसन ल्यायौ तुम अधिकाई।
अंवर इनि नरपति पहिरावो।
अश्व कुंचर पर इनहि चढावो।
आयो अपुने पुर को जावहि।
अपुने पुर जाइ कर सुष पावहि।
सहिदेव अश्व कुंचर ले आया।
श्री गोपाल आगे ठहिराया।
श्री कृष्णचंद उनि ताई दीए।
तव ही इहि वचु मुष ते कीए।
सकला मिथ्या कर्क जाना। निश्चै इहि विधि मन महि आनो॥
माटी की एहि देहि वनाई। वहुरो माटी सों रलि जाई॥
अपुनी पर्जा को सुष देवो। जोरु जुलमु किसे नाहि करेवो॥
औसी भाँति तुमि राजु करावो। पर्म मुक्त गति को तुम पावो॥
तव ही तुमरी होइ कल्याना। पर्म पदार्थु लेह पछाना॥
तव ही ते तुम मोको पावो। जो तुम इहि विधि कर्म कमावो॥
अबि जावो अपुने गृहि माही। ग्रहि त्याग तुम भयो चिराही॥
जाइ दर्सनु सुत वधू करहौ। निश्चल आसनु अपनो धरहो॥
जव धर्मपुत्र लिष पती पठावै। अपुने पुर महि तुमहि वुलावै॥
सहित कुटंब लीए तुम आवौ। धर्मपुत्र पुर आइ ठहिरावौ॥

राजसी यज्ञ युधिष्ठर करही। यज कर्नि कों मनिसा धरही॥
यज्ञ माहि नराधिप जो आवो। होइ कल्याण पर्म गति पावो॥
आज्ञा ले भूपति उठि धाए। भिंन्न भिंन्न पुर मग हित लाए॥
तिन की प्रभ ने करी कल्याना। सांईदास प्रगटि भयो नीशाना॥१६१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिहत्तरमोध्याय: ॥७३॥

अर्जन भीम सैंन गिरिधारी। श्री गोपाल भक्तनि हितकारी॥
ततक्षिण अंदर बैठ सिधाए। पुर के निकट आइ शंष वजाए॥
तव ही धर्म पुत्र ने जाना। जीत कर आए पुर्षनिधाना॥
राजा वीर दोनो संग ल्याया। उौर लोक पुर को अधिकाया॥
आइ डंडौत करी हरि ताई। तांकी उस्तति क्या उचिराई॥
श्री कृष्ण को पुर ले आया। अंग मिले आनंदु वहु पाया॥
भए वितीत केते दिन जवही। धर्मपुत्र पतीआ लिषी तव ही॥
लिषि पतीआ चहूं उोर पठाई। इहि लिष्यो है तासि मंझाई॥
यज्ञ निकट आयो है भाई। इहि प्रजोग हम पती पठाई॥
वेग विलम तुम मूल न लावो। पत देष तही उठि आवो॥
सभ नृप पतीआ देषत आए। देषि कृष्ण को अति हर्षाए॥
तव ही तिन मुष वचन उचारे।
जन्मु गवायो परे किनारे।
अब जो दर्सनु प्रभ का पायो।
भई कल्याण सभ दुख हिरायो।
भाग वडे हमरे होइ भाई।
आइयरे हरि की सर्नाई।
धर्मपुत्र तव हरि जी ताई।
कहचो सुण हो त्रिभवन सांई।
जो तुमरी हरि आज्ञा होई।
मोह हृदे आई आषो सोई।
धर्मपुत्र को हरि प्रतु दीना।
कौंन बात तैं मन महि लीना।

धर्मपुत्र तव कह्यो सुनाई।
हे प्रभ पूर्न कौर कन्हाई।
सकल विपो को अश्व देवो।
एहि वात हरि जी कर लेवो।
तव श्री कृष्ण ने वचन उचारे।
धर्मपुत्र को कहित पुकारे।
सकल विपो को अश्व देवो।
सांईदास सुषु मन महि लेवो॥१६२

श्री कृष्ण कह्यो नृप वानि ताई।
नीक वात तांको समझाई।
धर्म राजसी यज्ञ करही।
यज्ञ करने को मनसा धरही।
कंचन की पुतरी ले आवो।
कछु तुम वेग विलम ना लावो।
बर्न तव ही पुतरी ले आया।
कछु वेग विलम तिन नाहि कराया।
श्री कृष्णचंद कटु वांधि के लीआ।
टहिल कर्नि सेती चितु दीआ।
सब ही ऋष नृप आण वहाए।
ताहि नाम सुण हो चितु लाए।
व्यास वालमीक विस्वेस्वर।
वृहस्पति राहु केतुप्रारचर।
धूम ऋिष नार्द चलि आए।
प्रगवछ पिपिलाद अथित वताए।
पंडित किन्नर वेद वीचारे।
हरि की उस्तति मुखो उचारे।
जैसे स्मृित वेद वताई।
तास युक्त यज्ञ कीनो भाई।
अमरो सकल जैकार सुनाए।
सकल लोक मिल आनंद पाए।

जव ही यज्ञ संपूर्ण होया।
धर्म पुत्र मन संसा षोया।
मुष अपुने ते वचन उचारे।
सकली विधि जनु कहित पुकारे।
इन्ह भूपति ताई समझावै।
सकल हृदे को भर्मु हिरावै।
तुम बड़े वडे नराधिप आए।
मै तुम ताई कहित सुनाए।
प्रिथम तिलकु मै किसे लगावो।
किस मस्तक मै तिलकु चढावो।
सहिदेव सुतु जरासिंध केरा।
ऊभनि भया मुष ते इहि टेरा।
मोह पति भूपति सा अधिकाई।
अवि मै तुम सेवकु मेरे भाई।
एक वचनु तुम पाहि वीचारो।
जो मन आई कहो पुकारो।
श्री कृष्ण हरि पुर्ष पुराना।
सकल जगत को देवै दाना।
इकि छिन सकल सृष्टि उपिजावै।
इकि छिन मैं सभ भस्म करावै।
प्रिथम तिलक तुम तास लगावो।
हम सेवक कह्या मन ठहिरावो।
जव सहिदेव इहि वचन उचारे।
इनि भूपति तव कह्यो पुकारे।
धंन्य मति सहिदेव तुम्हारी।
भली वांति तुम हिरदे धारी।
श्री कृष्ण कौ सकल आज्ञा दीनी।
युधिष्ठर तिलक मस्तक पर कीनां।
सकल सभा चरणाम्रतु लीआ।
अपुने वंधू को तिन दीआ।

सकल सभा ने आनंदु पायो।
सांईदास मंगलु मन गायो।। १९३ ।।
ससिपाल असुरु जिह् वलु अतिभारी।
षडा भया मन क्रोधु संभारी।
सकल सभा की मत्ति मूढ होई।
इन महि सिमरत नाही कोई।
कहित कृष्ण को तिलकु लगावो।
उौर वात कछु नां उचिरावो।
कृष्ण जात कहु कहा कहिज्जै।
ग्वार अहीर कहा नाम लिज्जे।
केतकि दिन ग्वानि महि रह्या।
तिन माहे अस्त्रमु सुषु लह्या।
तिन के संग भोजनु इनि षाया।
अब श्री कृष्ण इनि नामु धराया।
जात पात जादम क्या होई।
हमि स्मसर कहा होवे सोई।
सभ जादव पीवहि मदिताई।
तिन के संग भी कोई नाही।
हमि कैरो नराधिप वलिकाई।
कृष्ण कहा करे रीस हमारी।
कहित कृष्ण को तिलकु लगावहि।
अंधि सभा मुष इहि उचिरावहि।
कृष्ण कहा ते उत्तम होई।
हमि एहि वतावो कोई।
गोकल महि जिन धैंन चराई।
अब श्री कृष्ण भए अधिकाई।
ससपाल अैसे वचन उचारे।
अति अभिमान हृदे महि धारे।
सभा लोक ने इहि सुण लीना।
कर अंगुष्ट श्रवण महि दीना।

केतकि त्याग गए सभा ताईं।
हमि इहि विधि सुण साकहि नाही।
भीम सहित वीरों को आयो।
कर किर्मानी सूती धायो।
ससिपाल निकट आइ कर ठहिरायो।
मुष ते तव ही वच उचिरायो।
हे मति मूढ कहा उचिराया।
कौन वात तुम मन ठहिराया।
करुणामय पूर्ण भगबाना।
श्री गोपाल हरि पद निर्वाना।
तांकी निंद्या तूं चित धारहि।
मुष ते अैसी वात उचारहि।
अव ही क्षिपति तोह मुष मारहि।
किर्मानी सो सीस उतारहि।
जब ससिपाल इहि विधि सुण पाई।
किर्मानी सूती ठहिराई।
चतुर वीर को आगे डारा।
उनि के मार्न को चितु धारा।
किस प्रजंत तिहि पाछे धाया।
चतुर वीर को तिनहि भगाया।
तव श्री कृष्ण क्रोधु अति कीना।
चक्र सुदर्सनु कर महि लीना।
तांसो असुर को सीसु कटायो।
कुस्म वर्षा तव अमरो लायो।
कीयो जैं कार मुष वचन उचारा।
अधिक भला कीयो प्रांन अधारा।
अैसे दुष्ट को कीनो नासा।
सभ अमरों की पूरी आसा।
ध्रितराष्ट्र अंधा जो आया।
एक सौ इकु सुतु बलु अधिकाया।

ध्रितराष्ट्र को आज्ञा दीनें।
ध्रितराष्टर गहि को मगु लीनें।
सकल नृपो को विदआ कीआ।
सांईदास मुषु मन महि लीआ ॥१६४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादें चौहत्तरमोध्याय: ॥ ७४ ॥

श्री व्रिजनाथ नें वचु उचिरायो।
धर्मपुत्र सो भाष सुनायो।
अधिक भयो पुर को तजि आए।
उग्रि सैंन नृप ते बिछुराए।
जो आज्ञा देवो हमि ताई।
उग्रसैंण नृप पाहे जाई।
जिह समें युधिष्टर को राजु दीआ।
राजाधिराजु नामु तिह कीआ।
सभ नृप तिह तिलकु लगाया।
उग्रसैंण अरु श्री कृष्ण रहाया।
श्री गोपाल भगतिन सुषदाई।
गुण निधान हरि जादमराई।
यज्ञ समे प्रभ ने इहि कीआ।
द्रव्य दुर्जोधन के कर दीआ।
इहि प्रजोग षर्चु वहु करही।
अधिक षर्चु कर्नि चितु धरही।
पद्म दुर्जोधनि के कर माही।
षचु करे घाटे वहु नाही।
पद्म प्रयोग अधिक वहि होई।
फुन फुनि वधे घटे नहि सोई।
अर्ज्जन को कह्यो पौंण भुलावो।
सहिदेव को कह्यो जलु अचिवावो।
नुकलि को कह्यो बासन धुवावो। एही कामु कर्नि चितु लावो॥

धर्म पुत्र प्रभि सो वचु कीआ। प्रभ तोह कवन काज चितु दीआ।।
श्री कृष्णचंद तांको प्रितु दीना। हमि विपों पग धोवन चितु कीना।।
मैं विपों के चर्न पषारो। इहि कार्ज पर मै चितु धारो।।
भीमसेंन को मिली रसोई। यांते भूषा रहे न कोई।।
सभ विधि कर यज्ञ पूर्ण होया। धर्मपुत्र सभ संसा षोया।।
एक सभा महिअसुर बनाई।
तांकी विधि कछु लषी न जाई।
तहूं सभा महि फटिक षचाए।
तांकी गति कोऊ लषन न पाए।
सकल लोक को जलु द्रिष्ट आवै।
ताहि निर्ष सभ लोक भुलावै।
नृप दुर्जोधन को ऊहा बुलायो।
दुर्जोधिन तिह सभ महि आयो।
जब आवति मग नैन निहारे।
तासि ठौर तिन अंभ निहारे।
अंबर कर सों लीए उठाई।
तव द्रोपती निर्ष मुसकाई।
जलु कहु कहा अंबर जु उठावै।
सांईदास द्रोपती उचिरावै।।१९५

अंधि के सुत क्या द्रिष्ट आवै।
अैसे वच द्रोपती उचिरावै।
तव दुर्जोधनु आगे धाया।
ऊहा अंभु फुन द्रिष्ट न आया।
अंवर सभ कर ते तजि दीए।
अंभ न जान्यो तव इहि कीए।
रिदे माहि एही उनि धारा।
ईहा जलु नाही इही वीचारा।
आगे पगु जब ही उनि डारा।
अंभ माहि गिर्यो ततकारा।

जल सो अंबर सकल भिगाए।
दुर्जोधन चितु अधिक घटाए।
तव द्रोपती वहुरो मुसकानी।
दुर्जोधन मन महि वुरा आनी।
सभ नृप मंद मंद मुसकावहि।
दुर्जोधन को भला न भावहि।
ध्रितराष्टर सुत अति हंकारी।
तांको भुज मै वलु भारी।
नृप मुसकावहि त्यागहिं नाही।
दुर्जोधन क्रोधु कीयो मन माही।
सभ वंधू अपुने संग लीए।
सभा त्याग वाहिर पग दीए।
तव सभ लोको वात वीचारी।
दुजोधन क्रोधु कीयो हंकारी।
कहा अपतिओ उही उठावै।
कौन वात मन महि ठहिरावै।
दुर्जोधन अपुने ग्रहि आयो।
सांईदास हरि औसे भायो॥१९६

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंञत्तरमोध्यायः॥ ९५॥

सकल भूपति को अंबर दीनें। अंबर दे सभ विदया कीनें॥
भिन्न भिन्न नग्र को धाए। अपुने अपुने ग्रहि मै आए॥
धर्मपुत्र तव कह्यो सुनाई। प्रांन अधार्नि सुण जदुराई॥
केत रस्नाकर वात उचारे। इहि विधि कैसे मन महि धारों॥
तुम भी जावो हे गिरधारी। तुम पहि डर्पति कहित पुकारी॥
जो तुम जावो प्रांन अधारा। तुम बिनु पाछे कवन हमारा॥
श्री कृष्णचंद प्रभ अंतरजामी। सकल जगत को हरि विस्रामी॥
धर्मपुत्र यथार्थ वीचारी। तांका मैं करहो उपिचारी॥
मोह भक्त है किउं दुष पावै। मोह भक्ति किस सो चितु लावहि॥

धर्मपुत्र सो कह्यो सुनाई।
सुणो युधिष्ठर हितु चितु लाई।
औरु नराधिप सभ विदआ कीने।
सांईदास जिन हरि पदु चीने ॥१९७

तेरे जीइ कारण ईहा रहो।
केतक दिन मैं ईहा वहो।
असुर विशाल ससिपाल को हेत।
ससिपाल संग इस की वहु प्रीत।
जिह दिन श्री कृष्ण रुक्मन ले आया।
तव विशाल मन इहि ठहिराया।
मम को वलु इस स्मसर नाही।
कित विधि इस संग युद्ध कराही।
मो से वडे जोधे वलिवाना।
उनि के छेद कीए इनि प्रांना।
एक वात और मैं करहों।
रिदे महि वही प्रतज्ञा धरहो।
जो देव वडा है सभ माही।
तास भक्त मैं मन ठहिराही।
शंकर के अस्तल महि आया।
मन महि शिव को जापु जपाया।
एक वर्ष तहा भजनु कमाया।
एक मुष्ट तंदल तिहि षाया।
एक वर्ष जव भयो व्रतीता।
शिव प्रगट्यो निर्मल अतीता।
ताहि असुर को दर्सनु दीना।
इहि करुणा शिव तांपर कीना।
मुष से कह्यो कहा तुम देवो।
सुप्रसन्न तोह चितु कर लेवो।
तव ही शिव सो तिन वचु कीआ।
शंकर पहि जाचन चितु दीआ।

एक नग्र मोहि देहु वनाई।
जिस महि अपुनी वस्तु समाई।
पांच सहस्र रथु ताहि समावै।
सप्त सहस्र कुंचर सुषु पावै।
तिसी ठौर मैं चित कों धारो।
मन माहे इहि वात वीचारों।
तत्क्षिण तिसी ठौर मैं धावै।
उसी ठौर जाइ कर ठहिरावै।
शिव विश्वकर्मे को फरमाया।
जो इहि कहे सो देहि वनाया।
विश्वकर्मे मन महि धर लीनी।
जो कछु शिव ने आज्ञा कीनी।
विश्वकर्मे पुरु दीयो वनाई।
विशाल असुर लीनो हिर्षाई।
गज अरु रथ सभ तिह महि डारे।
नग्र द्वारका को पग धारे।
निकट द्वारका जा ठहिरायो।
सांईदास विरोधु चलायो।।१९८

दुष्ट खल सभ सुर्ति भुलानी।
तव मन माहे इहि विधि आनी।
द्वारका को चहू ओरि बनि नीके।
तहा वस्त सुष होवहि जीके।
प्रिथम वाही बन कटि डारे।
पाछे प्रभ के मंदर विडारे।
बहुरो गृहि तोरन को आया।
महा अधिक विरोधु चलाया।
गगन चर्यो पाथर सर्प डारे।
मार लोक कौ सीस प्रहारे।
लघु विष्टा ऊपर से करही।
महा मूढ इस ते ना टरई।

पुर के लोक अधिक दुषु पायो।
हा हा करति सकले ही आयो।
महा अधिक अंधेरी होई।
किसे पछाणे नाही कोई।

तव ही प्रदुम्न ने सुण पाया।
वीर सहित ले बाहिर आया।
प्रिथमे अंधिकारी ठहिराई।
पाछे असुर सों करी लराई।

तांकी सैंना को सर मारे।
तव तिह सैंना वचन उचारे।
धंन्य धंन्य सभ हूं उचिराया।
प्रदुम्न तवही सुण पाया।

दो दो सर सभ सैंन को लाए।
तव ही विशाल आप चलि आए।
प्रदुम्न को आइ बाण चलावै।
जव प्रदुम्न मारे दडि जावै।

प्रदुम्न की दिष्टी नही आवै।
कहो वाण कहु किसे लगावै।
रुक्मन सुत को वांनु लगायो।
प्रदुम्न वाणु षाइ मूर्छायो।

तव ही स्वार्थी ने क्या कीआ।
रथु गवन फिरि पुर मगु लीआ।
स्वार्थी आइ प्रभ ठहिरायो।
स्वार्थी असे कामु कमायो।

एक घरी वीती जव भाई।
प्रदुम्न को वहुरो सुधि आई।
जैसे सूया नैन निहारे।
तैसे रुक्मन सुत नैन उघारे।

स्वार्थी सों तव कह्यो सुनाई।
सुण हो स्वार्थी मेरे भाई।

मै संग्राम ठौर ठहिराया। मम को ईहा कौणु ल्याया॥
क्रोधु कीयो स्वार्थी सो भाषा।
हे मति मूढ कहा चितु राषा।
तूं मोको कहु कहा ले आयो।
कौन ठौर आनें ठहिरायो।
जो श्री कृष्ण इहि विधि सुण पावै।
हमि को दुष अधिक उपिजावै।
प्रदुम्न नें भागन चितु लाया।
तांते मूआ भला अधिकाया।
तव स्वार्थी तांको प्रतु दीना।
है प्रभ क्रोधु काह मन लीना।
मै श्री कृष्ण तें इहि सुण पाई।
सो तुम पाहे कहित सुनाई।
जो स्वार्थी रण मै मूर्छाई।
स्वामी रक्षा करे अधिकाई।
जो स्वामी रण महि मूर्छावै।
तव स्वार्थी तिह रक्ष करावै।
मैं कछु वुरा नाहि है कीआ।
तुम क्युं क्रोधु हृदे महि लीआ।
प्रदुम्न फिरि युद्ध को उठि धाया।
सांईदास तिह वलु अधिकाया॥१६९

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छिहत्तरमोध्यायः॥७६॥

श्री गोपाल विधि जानिण हारा।
धर्म पुत्र सों वचन वीचारा।
आजु रैन स्वप्नो इकु पायो।
तांते मोह मनु अति विसमायो।
कल्याण नाहि द्वारका के माही।
इहि विधि स्वप्नो ऐसो ताही।

आज्ञा देहु जो मैं तहा जावो।
जाकर पुर की सोझी पावो।
धर्मपुत्र से आज्ञा पाई।
अपुने पुर को चल्यो धाई।
आज्ञा करी स्वार्थी तांई।
दो घट महि मोह जा पहुचाई।
दो घट महि द्वारका निकट आए।
प्रदुम्न युद्ध कर्ति निर्षाए।
श्री कृष्ण जाइ निकट ठहिरायो।
विशाल असुर तव ही निर्षायो।
कह्यो कृष्ण सौ तव ही पुकारा।
तूं है शत्र अधिक हमारा।
कह गया था हमि वतिलावो। अवि भागे कहू ठौर न पावो।।
कृष्ण रोक्यो वाणु लगावे। तास षल को मार चुकावे।।
विशाल असुर सरु कर महि कीआ।
श्री कृष्ण के दाहणे अंग को दीआ।
वहुर पछम ओर भी लायो।
प्रभ के कर से धनुषु गिरायो।
शारंग धनुषु जव धरि पर गिर्या।
तव विसवास सभ अमरो कर्या।
असुरु तव ही अकास को धायो।
सकल अमर मन महि विसमायो।
सारंग धनुष पर्यो धर्नि परांही।
अव हमरी ठौर काहूं नाही।
दुष्ट असुर हम को दुष देवै।
सांईदास क्या मन धर लेवै।२००

विशाल दुष्ट षल ने बपु धारा।
ब्राह्मण भेषु कीयो ततकारा।
तव श्री कृष्णचंदि पहि आया।
श्री गोपाल सों आष सुनाया।

देवकी मम तोहि पाहि पठायो।
तोहि पितु किन्हीं बांधि चलायो।
जब कौलापति इहि सुण पायो। एक घटि लगि विस्वासु करायो॥
मया दैजी जैसे करई। अैसी चिंता मन महि धरई॥
अैसा वलु किसि सों मेरे भाई। वलदेव होते वांध चलाई॥
दुष्ट असुर वहु वपु तजि दीआ। वसुदेव रूप माया दी कर लीआ॥
दामनी तांके उर महि डारी। आण कृष्ण पहि वेग दिषारी॥
कृष्ण देषु पित तोहि ले जावे। पाछे सें वहु मन पछुतावें॥
जो वलु लागे लेहु छडाई। फिरित कहि जो सुधि ना पाई॥
अंतर महि हरि ध्यानु लगायो। सकल विधांत तबही हरि पायो॥
माया रूप असुर ने कीआ।
चाहित है हमि को दगा कीआ।
जिह समे असुरु अकास सिधायो।
सकल अमर के मन भौ आयो।

श्री गोपाल चक्रु कर लीआ।
असुरु को सीसु तव ही कटि दीआ।
उौर अधिक षल हरि जी मारे।
ताहि सीस दधि महि हरि डारे।

रूढहि जात सिर षल अधिकाई।
सप्त प्रवाह अधिक मेरे भाई।
दंत वक्र तब ही चलि आयो।
प्रभ को आइ कर वचनु सुनायो।

मोह वीर तैनै ही मार्यो।
युद्ध कीयो कर ताह प्रहार्यो।
वधू मीत वाही ही नीका।
जौ अपजस को लेइ न टीका।

अपुने वीर वैरु मैं लेवो।
तोहि मार्नि को सरु कर षेवो।
दंतवक्रत सरु कर महि कीआ।
श्री कृष्णचंदि उोरहि डार दीआ।

वहुरो श्री कृष्ण ने वाण चलायो।
दारुण भुज तिह काटि चुकायो।
वहुरो पछ्रम भुज कटि डारी।
वहुरो सीसु तिह लीयो उतारी।
दंतवक्रत तनु धर्नि गिरायो।
जैसा कीयो तैसा उनि पायो।
साधो हरि चर्नी चितु धारो। सांईदास हरि नाहि विसारो ॥२०१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सधत्तरमोध्याय: ॥४८॥

श्री कृष्णचंद सभ असुर हताए।
अति अनंद सो पुर महि आए।
अमरो अधिक कीयो जैकारा।
जवहीं विशाल असुर को मारा।
कैरो पांडो पती पठाई।
ताह विधांत सुणो चितु लाई।
हे प्रभ कुरुक्षेत्र के माही।
अरंभु कीयो है त्रिभवन सांई।
महाभार्थ को अरंभु करायो।
हे प्रभ आवो विलमु न लायो।
श्री कृष्णचंद पतीआ कर कीनी।
ले पतीआ वलदेव को दीनी।
पांडो कैरो की पतीआ आई।
पढहो वलदेव हितु चितु लाई।
महाभार्थ कर्ने चितु लावहि।
हम को इसे प्रजोग वुलावहि।
जो तुम कहो करहि मेरे भाई।
जो तुम मन महि होइ वताई।
वलदेव जव इहि विधि सुण पाई।
मन अंतर इहि विधि ठहराई।

श्री कृष्ण पांडवाइरण होइ सहाई।
हमि तास्युं कैसे करहि लराई।
जो मैं करो ठौरि कहावो।
तौ प्रभ सो कैसे युद्ध करावो।
तांते एही है भला भाई।
एक ओर जावो मै धाई।
तिह युद्ध माहें जावो नाही।
एहो आई है मोह मन माही।
कर विचार हरि को प्रतु दीना।
हे प्रभ इहि विधि मैं मन लीना।
मैं मज्जन तीर्थ ना कीआ।
अति मलीन हो आत्मा हीआ।
आज्ञा होइ तीर्थ मैं जावो।
तीर्थरटन कीए फिर आवो।
श्री गोपाल विधि जानरण हारा।
सकल विस्व ताहूं विस्तारा।
कह्यो भला जावो मेरे भाई। तीर्थरटन करो तुम जाई।।
श्री गोपाल तिहि आज्ञा दीनी। सांईदास वलदेव मन लीनी ।।२०२

वलदेव तीर्थरटन को धाया। प्रिथमे गंगा सागर आया।।
प्रिथम तहूं इस्नान कराया। पाछे से किदार को आयो।।
वहुरो जगननाथ को धायो। जगन्नाथ पर्स सुषु पायो।।
नेमषारसनकाद रहें। अति अनंद सो तहा ही अहें।।
वहुरो वलदेव जी तहा आए। ताहि वात सुण हो चितु लाए।।
तहा श्री भागवत कथा होति नताही। सनकादक सुणे हितु चितु लाई
जव वलदेव तहांही आयो। सकल ऋषीश्वर ने निर्षायो।।
ठांढे भए सकले ततकारा। सोति प्रान कछु हृदे न धारा।।
अर्घासन हलधर को न दीना। वलभद्रि क्रोधु अधिक मन लीना।।
क्रोधु कीयो कर वचु उचिरायो। सोत प्रान सों तवी सुनायो।।
हे स्वामी तूं वेद पढांही। वेद कहया तूं कर्ता नांही।।

मैं आयो सभ ऋषै निहारा। अर्घासन दीनो तत्कारा ॥
तैं कछु मन माहे ना आना। वेद कह्या तैं क्युं नही माना ॥
वेद वात इहि कहति है भाई। आप ते जो आव अधिकाई ॥
तिह ताई अर्घासनु दीजै। छिन पल मात्र विलमु न कीजै ॥
तूं तो शुद्ध ब्राह्मण भी नाही। तोह मात क्षत्राणी आही ॥
पिता ब्राह्मण तेरो है भाई। ऐसी वलभद्र बात सुनाई ॥
वहुरो क्रोधु अधिक मन धारा। कुशा सहित तिह सिरु कटि डारा ॥
तव ही ऋषीश्वर कह्यो सुनाई। हे हलधर तैं क्या चित आई ॥
इसे न हत्यो हमि हत लीया। इहि कार्जु जो तैनें कीया ॥
कल्युगु निकट आयो है भाई। तां महि ठौर कीयो ना जाई ॥
हमि को एही कथा सुनावै। कथा सुणाइ हमि भर्मु हिरावै ॥
इसे न हत्यो हमै हतायो। सांईदास ऐसे सकल सुनायो ॥२०३

हलधर नें तांको प्रतु दीना। जब इहि प्रश्नु सकल ऋषि कीना ॥
इसका कालु ऐसे सा भाई। जो विधि लिषे सो कौणु मिटाई ॥
सन्कादक हलधर सो वचु कीना। कैसे कालु प्रभ इसि इहि लीना ॥
इसि का हम को देहि वीचारा। हमिरो भ्रमु तुम लेहु निवारा ॥
राम कह्यो सुरण हो मेरे भाई। सकल विधांत मैं देउो वताई ॥
एक समै इकि ऋषि क्या कीआ। गीता कथा कर्नि चितु दीआ ॥
एक पंडित तिस को निर्षायो। तास कथा सुरण कर मुक्तायो ॥
उनि पंडित श्रापु दीयो इस ताई। जो वचु कहे सोई मिटै नाही ॥
जव तूं भागवत कथा करावै। अपुनो मनु ताहूं सो आवै ॥
अर्घासन बैठो रहे भाई। तव तेरो सिरु कट्यो जाई ॥
इसका कालु निकट सा आया। इसि प्रयोग मैं इसे हताया ॥
तव ही ऋषीश्वरों वचन उचारे। हे वलभद्र जी प्रांन अधारे ॥
दया करो इस पर अधिकाई। मुक्ता जाइ प्रभ सुख दिषाई ॥
तुमरे कर सें प्रान तजाए। तोह करुणा पूर्न गत पाए ॥
वलदेव ने तांको प्रतु दीना। सकल विचारु ताहि ने कीना ॥
जो इस सुत होइस सो लेहु वुलाई। वेग विलम करहो ना भाई ॥
वलभद्र तांकी करे कल्याना। चिरुजीवै होवै चतुरु सुजाना ॥

जन्म जन्म तुम कथा सुनावै। तुमरे मन को भर्मु हिरावै॥
वहुरो उौरु बिनती तिह ठांनी। हे बलभद्र तुम अति बलवानी॥
इहि स्थावर असुर जो रहे। अलल बलल तिह नामु उचिरहे॥
हमको दु:ख देवै अधिकाई। तिह सों हमरा कछु न बसाई॥
जिह समे मज्जन कर्नि हमि जावहि। ताहि समे हमि आइ संतावहि
अस्ति आण हमि ऊपर डारहि। कंकर लेकर हमको मारहि॥
हमि पर कृपा करी तुम आए। पूर्व जन्म हमि भाग जगाए॥
वलभद्र जी तुम तिनहि हतावो। सांईदास को दु:ख मिटावो॥२०४

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठत्तरमोध्याय: ॥७८॥

हलधर सन्कादक के लीए। नेम षार माह्हे पग दीए॥
अलल वलल के मार्नि कार्न। ताह वसे प्रभ अपर अपार्न॥
केतक दिन तहूं ही ठहिराए। भक्त हेत इहि कर्म कमाए॥
पूर्नमाशी को दिनु आयो। ऋषि सभ मज्जन को उठि धायो॥
अलल वलल षल तव ही धाए। उौध निकट भई सुर्त्ति भुलाए॥
तहा आइ दीर्घ वपु धारा। अस्त आण ऋषि सभ पर डारा॥
लघु विष्टा तव ही कर दीआ। सकल ऋषो दु:खु मन महि लीआ॥
हलधर पहि सभ आइ पुकारे। हे प्रभ दुष पाए अति भारे॥
खलो आइ हम को दुख दीना।
लघु विष्टा हमि पर आइ कीना।
ततक्षिण वलदेव जी उठि धाए।
अलल वलल तिन ने निर्षाए।

गगन चर्हे इहि कामु कमांवहि।
विकट वने जासौं हटि जावहि।
हमि वसुधा पर है ठहिराए।
हल मूसलु कर कीनो ताही।

वहुरो हलु तांके सिर मारा।
मार कर हलु तिह सीसु विडारा।

असुरों को हलिधर हति लीना। सकल ऋषीश्वर कों सुषु दीना ।।
जहा दुष जन आइ संतावै। सांईदास प्रभु आप हिरावै ।।२०५।।

हलिधर तिन सो आज्ञा पाई। गोदावरी को चल्यो धाई ।।
तहा आइ कर मज्जन कीना। महा अधिक सुष मन को दीना ।।
वहुरो हरद्वार को धायो। तहा आइ इस्नानु करायो ।।
दहि सहस्त्र सुरिह् संकल्प कराए। तहा मज्जनु लोक कर्ति अधिकाए
तव उनि लोको वचन उचारे। आप मद्धि वहि कहित पुकारे ।।
पांडो कैरों कुरक्षेत्र माहे। अधिक युद्ध करहि आप मंझाहे ।।
अठदसि क्षूहणी सैना सारी। युद्धि कर्ति सूरे बलिकारी ।।
याराक्षुहणी कैरव सारे। सप्त क्षूहिणी पांडव वारे ।।
बलदेव सुण कर बचन उचारे। मन महि संचरु वहु विधि धारे ।।
वहुरो कह्यो एक वार तो जावो। तहा जाइ कर फुनि निर्षावो ।।
एक वात तिन को कहो जाई। जो समिझै होइ अति भलि आई ।।
जो समझैं नाही वहु जानहि। अैसे वलदेव वचन वषानहि ।।
राम तहू मग फुनही आयो। जहा इनहि संग्रामु मचायो ।।
श्री कृष्णचंदि हरधर निर्षायो।
तव मन महि एही उपजायो।
जो कहो वलदेव युद्ध न करहो।
युद्ध कर्नि को ना चितु धरहो।
तौ भी बुरा होइ मेरे भाई।
ताहि वचन मेट्यो ना जाई।
ऐसो होइ तिह कह्यो पठावो।
द्वारका के मग तास चलावो।
हलधर ने आइ कर निर्षायो।
दुर्जोधनु भीम लर्ति द्रिष्टायो।
हलधर दोनों पाहे आया।
दोनों को आइ शब्द सुनाया।
तुम दोनों कौनु स्मसर होइ भाई।
भला करो न् करो लराई।

तुम महि कोऊ मुख न फिरावै।
भागन को कोऊ चितु न लावै।
मैं तुमरे भले कार्नि भाई।
कहित हो ना तुम करो लराई।
तुमरी औध निकट आई जानो।
मोह कहा तुम नाही मानो।
जो मन आवै करहो भाई।
वलदेव असी ताहि सुनाई।
हलधर क्रोधु कीयो अधिकाई।
सांईदास चल्यो पुर को धाई ॥२०६

राम द्वार्का को पग धारे।
तत्क्षण आयो तास मंझारे।
उग्रसैंन वलदेव जी पहि आयो।
प्रदुम्न सहित तवहि उठि धायो।
राम को षड्यो पुर के माही।
भयो अनंदु दु:ख कछु नाही।
भोजनु विपों ताई दीना।
भली विधांत पूर्ण यज्ञ कीना।
प्रिथम सुर्हे संकल्प जु कीना।
गंगा तटि आप विप को दीनी।
परीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे।
हे शुक जी तुम सुण मन माहे।
मतु तुमरे मन महि इहि आवै।
परीक्षत सुण कथा मन न अघावै।
एहए था अंवृत है भाई।
अंमृत से कहु कौणु अघाई।
द्रिग वही भाई हरि को निर्षावै।
हरि लील्हा देषन चितु लावहि।
सीसु भलो हरि पर उर्झावै।
सदा डंडौत कर्नि चितु लावै।

जहां जहां कथा कीर्तिनु होई।
उठि धावन करे विलम न कोई।
आपस को तहा जाइ पहुचावहि।
तहा जात छिन ना अलसावहि।
सदा सदा तीर्थ तटि जाही।
चर्नो सो इहि कर्मु कमाही।
श्रवरण भले मेरे सोई भाई।
हरि जसु सुनति सदा चितु लाई।
पर निंद्या सो चितु न धरहि।
हरि की कथा सुरग प्रेम वीचारहि।
ग्रैसे नृप शुकदेव सुनायो।
सांईदास हरि को जसु गायो ॥२०७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणासीमोध्यायः ॥ ७९ ॥

जास समे श्री कुंज विहारी।
वलदेव सहित चले तत्कारी।
विद्या अर्थि बनार्सी धाए।
विप सुदामे तव निर्षाए।
तीनो इकि ठौर होइ सिधाए।
जाइ संदीपन पहि ठहिराए।
विद्या भाष करी उठि धाए।
तव हरि विप सों वचन कराए।
मै ग्रहस्तु करों गा नाही।
इहि वचु कहि आयो ग्रहि माही।
तव ही अपुने ग्रहि महि आया।
ततिक्षिरग अपुना काजु कराया।
विपि कन्या सुसीला नामा। अति भुज सुंदर वाही भामा।
तांसो आइ संजुक्त वनाई। प्रिथम वचनु उनि दीयो भुलाई।
त्रिरग लेकर तिन कुटी वनाई। ग्रैसी विप ने वात कराई ॥

सुसीला वढि लोको के जाई। सिला कीए कछु लेकर आई ।।
औरु कछु तांको अंग नाही। कबरी ओढे फिर्ति सदाही ।।
विपु नग्रि ग्रहि महि ठहिरायो। इहि विधी ततिह वेद बतायो ।।
जो कछु सुसीला सिलाकर आना। सकल षायो इकु रह्यो न दाना ।।
जो कछु रहित ताहि गृहि माही। पक पकाइ देत विपताई ।।
आप त्रिप्ति कर षावे नाही। ऐसे कर वहि सभा टलांही ।।
इक दिन विस्मकि महि चितु धारा। तवि सुदामें इसे निहारा ।।
कहु कहा विस्मकि चितु कीना। कौनु संचरु तै मन महि लीना ।।
तवी सुसीला वचन उचारे। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारे ।।
हमि को एता वलु न वसाए। विनु आज्ञा तुम कहो सुनाए ।।
अव जो तुम ने किर्पा धारी। सकल वात मैं कहो विचारो ।।
हे प्रभ हमरे ग्रहि कछु नाही। इहि कार्ण हम चितु विस्माही ।।
तुम जु कहति हरि सषा हमारा। हलधर बीर है अधिक प्यारा ।।
उनि हमि विद्या एक संग भाषी। एक ठौर बहि भोजनु चाषी ।।
त्रैलोक नाथ वहु कृष्ण कहावै। तुमरा दार्दु सकल मिटावे ।।
सकल शृष्टि का वही प्रित पालकु। दयावान प्रभ सदा दयालक ।।
जो तुम को माया नही देवहि। चतुर्भुजा तुमको कर लेवहि ।।
वैकुंठि को तुम दर्सु दिषावै। तुमरो आवागौनु मिटावै ।।
विद्या गुर सों वंधू तेरा। वही कृष्ण है सुण कहा मेरा ।।
लक्ष्मी ताह चर्न चितु लावै। सांईदास ऐसे उचिरावै ।।२०८

जव विप ने इहि विधि सुण पाई। तव सुसीला सों कह्यो सुनाई।।
तोहि कहा मै रिदे वीचार्यो। श्री कृष्ण पाहि जावन चितु धार्यो
भेट नाह जो लेकर जावो। श्री कृष्ण वागे षडि कर ठहिरावो ।।
तव सुसीला तिह कों प्रतु दीना। हे प्रभ तुमने इहि वचु कीना ।।
हमिरे ग्रहि माहें कछु नाही। क्या देवों मै तुमरे ताही ।।
कहो कहू गृहि मांगन जावो। कर्जु वामु किसे सेंती ल्यावों ।।
आग्या पाइ नग्र उठिधाई। एक पड़ोसी के ग्रहि आई ।।
चतुर मुष्ट तंदल के ल्याई। हिरषमान होए अधिकाई ।।
कह्यो लेहु दिज वेग सिधारो। हरि दर्सन को तुम चितु धारो ।।

तवी सुदामे ताहि सुनायो। हे रामां भला शब्द बतायो ॥
किसे माहि इसको वंधि देवौ। मोह कहा घटि अंतर लेवो ॥
नारी हेति अंवर पायो। फाटा अधिक तिन जत्नु करायो ॥
जत्नु कीयो कर गांठ वंन्हाया। ले विप वेग चल्यो उठि धायो ॥
द्वारका पुर कों दिज उठि धायो। मग आवत मन सों भगिरायो ॥
तीन कोटि द्वार्का के भाई। तांके चहूं उौरि दधि षाई ॥
ताहि द्वार कपाट सजाने। असी विधि द्विज हृदे वषानें ॥
षोडस सहस्र रामां हरि केरी। इकु सों वीस अष्ट अधि केरी ॥
क्या जानो कांके गृहि होई। मम को सोधि पति ना कोई ॥
असे दिज मन सौभ गिरावति। मग माहें चल्या वहु जावति ॥
ततक्षिण पुर के निकट ही आयो। आइ द्वार ग्रहि के निर्षायो ॥
तव द्वार ग्रहि आगे धायो। सांईदास पुर माहें आयों ॥२०६

जव विप पुर महि कीयो प्रवेसा। अध्कि भयो मन माहि अंदेसा ॥
कांके ग्रहि माहे पग धारो। तहा जाइ श्री कृष्ण निहारो ॥
मन महि टेक करे हरि केरी। जो काटे अघ की पग बेरी ॥
दिज पग रुक्मन के ग्रहि दीने। एक टेक हरि की मन कीने ॥
प्रभ प्रजंक पर सैंनु करायो। शैन कीये आनंद वहु पायो ॥
रुक्मन कर महि चौरु भुलावै। श्री कृष्ण अधिक सुषु पावे ॥
अंतरजामी स्याम हमारे। जाग परे प्रभ जी ततकारे ॥
निर्ष सुदामे को प्रभ धाए। द्विज ततक्षिण ले अंग लगाए ॥
भुज से गहि ग्रहि अंतर आना। भक्त भाउ हरि हृदे पछाना ॥
प्रयंक रुक्मन के पर वैठ लायो। अधिक मणी तिह षचित करायो ॥
रुक्मन ततक्षिण जलु ले आई। पग धोए तिह कवर कन्हाई ॥
चंर्णामतु ले मस्तक धार्यो। रुक्मनी भी पुन सीस सवार्यो ॥
वहुरो भोजनु वहु विधि ल्याई। ताई षवायो श्री जदुराई ॥
वहुरो प्रभ ने वचन उचारे। वावनु घसि आनो तत्कारे ॥
वावन चंदन घसि कर ल्याई। श्री गोपाल कर लीयो ताई ॥
अपुने कर विप के तन लायो। भक्त हेत प्रभ अधिक वढायो ॥
सुदामे भगत सो कह्यो सुनाई। सुण हो सुदामा हमिरे भाई ॥

हे विपि क्या भयो तुम तांई। सूक्ष्म भयो हमि देहि वताई ॥
तास समे अंग महि ना आवति । अवि क्या भयो क्युं नाहि बतावति
वाहि समा तुम कों चित आवै। हमि तुम वन जावति चितु लावै ॥
विद्या गुर की आज्ञा पाई। लकरी लेन चले वनि धाई॥
सीत काल सा मेरे भाई। मेघ भयो वन महि अधिकाई ॥
निस समे हमि रहे वन के मांही। सीत भयो हमि को अधिकाई ॥
जव ते रवि नें कीयो प्रकासा। तव ही मन महि भयो हुलासा ॥
विद्या गुरु पावक कर लीए। ततक्षिण वन माहे पग दीए ॥
हमरो नामु ले मुखो पुकारा। हमि को आइ मिल्यो तत्कारा ॥
अग्नि जराइ हमि सीतु गवायो। किर्पा कर ग्रहि महि ले आयो ॥
हमि लकरी सिर पर धरि आनो। सांईदास हरि अैसे बषानी ॥२१०

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे असीमोध्यायः ॥८०॥

सति भामा जामवंती चलि आई। औरु नायका सभ अधिकाई ॥
ग्रहि ऊपर आइ कर ठहिराई। आप मध्य वहि वात चलाई ॥
श्री कृष्णचंद को सषा निहारो। कहा सुंदर अति रूप उजारो ॥
कनक प्रयंक ऊपर ठहिराए। जिह प्रयंक वहु मणी षचाए ॥
एक ताहू माहे उचिरायो। अैसे वच तिह आप सुनायो ॥
इन सेती भले सषा इनि चाहो। मै तुम कहो सुननि चितु लाहो ॥
प्रिथमे तौ इनि इनि बछे चारे। पाछे सुर्ही अनि कौ ले धाए॥
भला भया हमि सषा निहारे। उलहिने ते छूटे ततकारे॥
हमिरे पित को नामु धरावै। छिन पल हमको उलहने लावै ॥
अव इसि को सषा हमहि निर्षायो। अधिक रूप हमि कों द्रिष्टायो ॥
प्रभ दिज सों तव वचन उचारे। सुण हो सुदामा मीत हमारे ॥
तास समे तुम हमहि सुनायो। करो न काजु इही उचिरायो ॥
भला कीयो दिज कार्जु कीना। अपने चितु ठौर कर लीना ॥
वडे भांग हमिरे आइ जागे। हमिरे तुमरे पग लागे ॥
विद्या अर्थि तुम सो हितु हूआ। औरु संजोगु वन्यो नां दूआ ॥
तव दिज ने हरि कों प्रतु दीना। हे प्रभ कौन वात मन लीना ॥

मोसें भिछकि कई फिरावहि। कहा वात तूं मोहि सुणावहि ॥
जो तुम कहो सो तुम बनि आवै। तुम कों हरि जी सकल सुहावै ॥
हमि ऊपर किर्पा प्रभु धारी। दया करी तुम कुंज विहारी ॥
अैसे दिज हरि भाष सुनायो। सांईदास तांपर वल जायो ॥२११

रवि ने अपुने आप दुरायो। सत्तरि षिन ऊपर प्रगटायो ॥
मानो रैण भई मेरे भाई। तव श्री कृष्ण कह्यो हितु लाई ॥
षीर करो षावन के ताई। वेग विलम कछु लावो नाही ॥
प्रभ विप को आप सहित वहायो। भोजनु वहु विधि ताहि षवायो ॥
अपुने सहित ही शैन करायो। शैन कर्ति हरि वचु उचिरायो ॥
हे विपि अव सूक्ष्म बपु लीना। कवन संचरु तै मन महि कीना ॥
अपुनो करु तिह अंग फिरायो। अैसे ही वचु ताहि सुनायो ॥
ससीअरु दुरा उदेभानु प्रकासा। कमल षिडे पूर्न भई आसा ॥
श्री कृष्ण कह्यो इहि भक्तु हमारा। विनु हरि भक्त न इसे प्यारा ॥
इसि को रामां दीयो पठाई। माया कार्नि मेरे भाई ॥
अपुनी माया इस को देवौ। दुख दर्दु इसि का हिरि लेवो ॥
एता द्रव्य देउों इसि तांई। जो अब लगि किस कों दीयो नाही
प्रभु विसुकर्मा लीयो वुलाई। ताहि कह्यो श्री जादमराई ॥
जैसे भवन द्वारका के कीए। स्वस्ति चित्त नीके कर लीए ॥
उौर वन चहुं उोर लगाए। भली भांति के वृक्ष बनाए ॥
सुदामा जी के पुर के द्वारे। अहि तुम साज लेहु ततकारे ॥
सकल प्रितमा वैकुंठु वनावो। द्वार्का से वहु भले करावो ॥
कंचन के भवन करे विप केरे। मै तुझे कह्यो सुणो वच मेरे ॥
महा निकट इह भक्तु हमारा। विन भक्ती इस उौरु न प्यारा ॥
विश्वुकर्मे आग्या हरि पाई। विप के पुर को चल्यो धाई ॥
कनक भवन तहा जाइ सवारे। कीए जाइ अहि तिन तत्कारे ॥
व्रिक्ष अधिक तहू आण लगाए। मानो वैकुंठ लीयो वनाए ॥
ताल अधिक जल भरे लीलहाही। जास निर्ष सभ दुःख मिट जाही ॥
वहुत भली विधि रचन रचाई। सांईदास देषत दुष जाई ॥२१२

श्री गोपाल विधि जानण हारा। सुदामे भक्त सों वचनु उचारा ॥

कहा भेट आनी हमि ताई। हमि को देहु तूं क्युं सकुचाई॥
सुदामा मन महि वहु सुकचायो। तव प्रभ ने इहि कामु कमायो॥
श्री कृष्णचंद तंदल कढि लीनें। गांठ षोल्ह कर माहे कीनें॥
श्री कृष्णचंद तव कह्यो पुकारे। हे विप तुम हो भक्त हमारे॥
केतकि दिन भए हमरे ताई। तंदल को हमरो मनु चाही॥
तुमरे हमरे मन की विधि पाई। तंदल आने तैनें भाई॥
मतु तू इहि मन माहे आने। थोडे कानि मतु सकुचाहे॥
जो कर प्रीत इकु कुस्म ल्यावै। हमरे मन महि वहु भलो भावै॥
जो कोऊ महा अधिक द्रव्य आने। मन महि प्रेम भाउ नही जाने॥
हमि को वहि तो भावे नाही। ऐसी विधि है हमि मन माही॥
मतु थोरे कर जाने भाई। हमि को एही है अधिकाई॥
अपुने कर हमरे मुष पावो। मन अंतर कछु ना सुकचावो॥
मुष्ट तंदल की दिज भरि लीनी।
तत्क्षिण हरि के मुष महि दीनी।
वहुरो द्वितीआ मुष्ट भी डारी।
तत्तक्षिण अचि लीनी गिरधारी।
चाहित तीजी मुष्ट को डारै। रुक्मण करु पकर्‌यो तत्कारे॥
मुष अपुने तें वचु उचिरायो। प्रभ को इहि बचु आष सुणायो॥
दो लोक को द्रव्य दिज को दीना। अधिक करुणा तैं इनि पर कीना॥
अबि वैकुंठ रह्यो जदुराई। ऊरु रही मै तो सरुनाई॥
ऐसे बचि रुक्मण उचिरायो। श्री गोपाल मन महि ठहिरायो॥
विप सुदामे विनती ठांनी। हे प्रभ पूर्न सारंग पानी॥
आज्ञा होइ तव ग्रहि को जावो। जो आज्ञा होइ मन ठहिरावो॥
श्री कृष्ण कह्यो जावो मेरे भाई। मै आज्ञा दीनी सुषदाई॥
विपु आज्ञा ले ग्रहि को धाया। मग आवत मन महि विस्माया॥
हमि प्रभ सौ कछु नां जाचायो। ना हरि किर्पा हमिह करायो॥
सुसीला सों मै कहा सुनावो। तांको कित विधि कर समिझावो
मोकों जत्न कीयो पैठायो। सुसीला सों वहु जत्न करायो॥
वहुरो ज्ञान कीयो परकासा। भूली दिज को विषु की प्यासा॥
भला कीया हरि कछु ना दीआ। इहि करुणा प्रभ हमि पर कीआ॥

जांके ग्रहि महि माया होई। तांको सुर्ति रहित नही कोई।।
माया सकली सुर्ति भुलावै। हरि भक्ती सें दूर दुरावै।।
अैसी विधि विपि हृदे वीचारी। सांईदास सर्नी वनिवारी।।२१३

इति श्री भावगते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकासीमोध्यायः ॥ ८१ ॥

विपु चल्यो पुर के निकट आयो। लील्हा अवर तहा निर्षायो।।
कंचन के तहा भवन निहारे। ग्रहि कंचन निर्ष्यो तत्कारे।।
कलस हेम के तहूं पराही। विपि केरे ग्रहि अधिक सुहाही।।
चहूं ओरि व्रिक्ष अधिक सुहावहि। ताल भरे अंभ सो लील्हावहि।।
ताल ओरि वहु माणी षचाई। सोभावान वहु देत दिषाई।।
मानो वैकुंठ प्रतक्ष है भाई। स्वर्गि माहे वहु देत दिषाई।।
तिस वन महि माली अधिकाई। इकु सौ चेरी तां महि भाई।।
मघवा पुर सेती वह आई। वन माहे वहि कुस्म चुणाई।।
सुदामा निर्ष करे विस्मायो। ध्यान विषे चल्यो कहा आयो।।
ऊंहा ते पग पाछे दीने। अति संचरु मन अंतर लीने।।
लोक तास के पुर के आए। तिन हूं विप अैसे निर्षाए।।
विप सेती तिन्हा वचन उचारे। हे विप कहा जु बनि चित धारे।।
सुदामे भक्त तिन सौ प्रतु दीना। एही वचनु उनि मुष से कीना।।
मैं प्रभ दर्सनु कर्ने धायो। द्वारका महि जाइ दर्सु करायो।।
अपुनो पुर मगु दीयो विसारी। ध्यानु कीयो सुध गई हमारी।।
कौन ठौर महि आइ ठहिरायो। इहि कार्ण मैं मन विस्मायो।।
अबि अपुनें पुर के मग जावो। अपुने ग्रहि मग जावन चितु लावो।।
तव उनि लोको विप सुनायो। हे विप कत तूं भर्म भुलायो।।
चलु हमि तुम कों ग्रहि ले जावहि। तुमरे ग्रहि तुम को पहुचावहि।।
विप को वाही लोक ल्याए। विप ताहूं के सहित सिधाए।।
आण द्वार ग्रहि पर ठहिरायो। सुसीला सों तव जाइ सुणायो।।
सुसीला वेग सुनति उठि धाई। विप को जाइ डंडौत कराई।।
कह्यो कृपा कर अंतर आवो। मन का सकला भर्मु हिरावौ।।
अैसे रांमा विप सुनायो। सांईदास विपि सुण सुषु पायो।।२१४

विप को ले आई ग्रहि माही।
सुष उपिज्यो दुख मिट्यो ताही।
आण अर्घासन परि बैठलायो।
तहा अधिक मणी रतनि षचायो।
जल सों विप के चर्न पषारे। चर्नामतु ले मस्तक धारे ॥
एक प्रजंक तास ग्रहि माही। तांसो मणीं षची अधिकाई ॥
सम्यानें दर पर षलिवाए। मोती मणी ताहि उरिझाए ॥
पव सों वहु मणी षचाई। असी लील्हा देति दिषाई ॥
सुसीला ने वहु पाक पकाए। विप के आगे आण टिकाए ॥
सुदामे भक्त मन महि वीचारा। इहि वैरी मिष्टानु हमारा ॥
जो इसि को षावो मेरे भाई। रसना स्वाद अचे अधिकाई ॥
हरि की भक्त सें दूर पराही। इसि षाधे कछु नाह भलाई ॥
लोण अंभु ले तिस महि डारा। पाछे सें षायो ततकारा ॥
सुसीला नें इहि कर्मु कमायो। विपु लेफनिहाली माहि सवायो ॥
विप अंबर सभ दूर कराए। नग्न होइ हरि को जसु गाए ॥
एही मन माहे ठहिरायो। सुषु उपज्यो हरि भक्त भुलायो ॥
मतु हरि की हमि भक्त भुलावै। असे विपु मन महि ठहिरावै ॥
सुसीला प्रात समै उठि आवै। दिज को आइ डंडौत करावै ॥
दिज के अंग को तेलु लगावै। वहुरो नाना पाक ल्यावै ॥
सुदामा भक्ति इकत्र करावै। पाछे से लै कर वहु पावै ॥
पाणी लूण करावै भाई। इहि विधि दिज भोजनु ले षाई ॥
कहरि रस्ना मतु स्वाद अचाए। गोविंद केरी भक्त भुलावै ॥
एक दिन सुसीला क्या कीआ। अंबर विप अंग नीके दीआ ॥
विप ग्रहि तजि के वाहिर आया। वसन अंग सभ दानु कराया ॥
जो हरि केरा भक्त कमावै। सांईदास सभ भर्मु गवावै ॥२१५

एक दिन रवि को केत ग्रसायो।
श्री कृष्णचंदि सभ मतु ठहिरायो।
श्री कृष्ण राम दोऊ उठि धाए।
वसुदेव उग्रसैन सहित चलाए।

देवकी रोहिणी को संग लीआ। कुरक्षेत्र को तिन पगु दीआ ॥
नंदि महिर ब्रषिभान जी आए। सकल कुटंब को सहित ल्याए ॥
गोप सकल जोषता संग लीए। सकलो पग कुरक्षेत्र दीए ॥
कुंती सकल कुटुंब सो आई। एक वन महि आइ कर ठहिराई ॥
नंदि महिर अरु जसुमति रांनी। जो हित आए सारंग पानी ॥
आइ श्री कृष्ण को दर्सनु पायो। श्री गोपाल दूर सें निर्षायो ॥
निर्ष तही प्रभ जी उठि धाए। ततक्षिण नंदि जसुमति पहि आए ॥
आइ डंडौत करी प्रभ तांको। महा अधिक सुषु दीनो तांको ॥
जसुमति प्रभ कों अंग महि लीआ। प्रेमु अधिक घटि अंतर कीआ ॥
आइ कर तहूं ठौर ठहिराए। जहा कृष्णचंद सुष आसणु छाए ॥
जसुमति ने तव ही क्या कीआ। एक अंग कौलापति लीआ ॥
दूसर अंग ले राम वहायो। जसुमति निर्ष अधिक सुषु पायो ॥
आप दोनों के मद्धि समाई। जसुमति सुषु उपिज्यो अधिकाई ॥
देवकी रोहिणी वचन उचारे। जसुमति पाहे कहित पुकारे ॥
तुम किर्पा कर हमि को दीनें। एहि दो वालक किर्पा कीनें ॥
तुम प्रसाद राज लील्ह कराही। हमि को आनंदु अति उपिजाही ॥
जो कछु लर्कपन महि होई। सकल लील्ह कीनी तुम सोई ॥
पालन माहे अधिक झुलायो। ले दधि माषनु अधिक षवायो ॥
तुम प्रसाद अवि भए अधिकाई। वल कर कंस को लीयो हताई ॥
वडो प्रतापु भयो इनि केरा। सांईदास है तुमरो चेरा ॥२१६

ग्वानि सभ मिल कर उचिराही। वडो ढीठु हमि ताते नाही ॥
मानो कवहूं न हमि प्रीत धारी।
अवि हमि को इनि नाहि चितारी।
माषनु दधि अचिवाइ कराहीं।
पय अचिवाइ कीयो अधिकाहीं।
जब ते गोकल को तजि आयो।
हमि को कबहूं न चित करायो।
श्री गोपाल विधि सकली जाने। घटि घट विर्था सकल पछानें ॥
ग्वानि के मन की विधि पाई। तव मन महि इहि विधि ठहिराई ॥

जिह समे मै सुरही ले जावो । वनि जावन कों मै चितु लावो ॥
तव इहि हमरो दर्सु कराही । वाही ध्यानु घट महि ठहिराही ॥
जासि समे बनि ते ग्रहि आवो ।
तव भी इनि को दर्सु दिषावो ।
दर्सनु कर हमि आनंद पाही ।
मन ते सकला दुःख मिटाही ।
पलि छिन ध्यानु न हृदे चुकावहि ।
विनु हमि ध्यान चितु और न लावहि ।
अवि इनि की विधि जानो नाही । कैसे कर धीर्जु इहि पाही ॥
इनि बिधि ने क्या बात बनाई । कबहूं इकत्र कबहूं विछुराई ॥
श्री कृष्णचंद ग्वार्नि समिझावै । तांके मनि का भर्मु हिरावै ॥
जो कोई तुमरे घटि नाही । सदा शब्द मुष ते उचिराही ॥
वाही हमि को सहिजे जानो । इसि विधि महि अंतरु ना आनो ॥
जो ग्रहि विषै प्रीति चितु धारे । सो वैकुंठ जाइ ततकारे ॥
जो कोऊ निकट मोह भक्त कमावै । तास हृदे वहु प्रीत न आवै ॥
दूर होइ भक्ती चितु लावै । तां के घटि वहु प्रेमु समावै ॥
विना प्रेम मोहि भक्त न होई । विना भक्त तर्यो नही कोई ॥
असे ग्वार्नि हरि समझायो । सांईदास तिस भर्मु चुकायो ॥२१७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे व्यासीमोध्याय: ॥ ८२ ॥

कुंती सुत सो जोहत आई । प्रभ पाहे आइ कर ठहिराई ॥
मुष ते एही वचनु उचारा । हे पूर्न प्रभ प्रांन अधारा ॥
जादम सभ की करु कल्याना । हे पर्मानंद पद निर्बाना ॥
इक दिन हमरी करहि सहाई । जादम प्रभ होवहि अधिकाई ॥
कैरो मन तब करहहि त्रासा । जाने कृष्ण हमारे पासा ॥
कुंती वसुदेव सों उचिरायो । वीर जानतिहि आष सुनायो ॥
कैरो हमि सों वैरु करायो । तुमहि हमारी सुर्ति न पावो ॥
मैं तो कहित तूं वीरु हमारा । कह्यो कवन विधि तैं मन धारा ॥
वंधू और काम किस आवहि । जो इस औसर नां उठि पावहि ॥

इक दिन भी हमि पहि नही आयो।
हमि पूछनि को चितु न लायो।
तव वसुदेव दीयो प्रतु तांका।
इहि विधि कर परचायो वांको।
दुष्ट कंस हमि बंदि डलायो।
तांसे महा अधिक दुष पायो।
कृपा करी हमि पर वनवारी।
दुष्टु हत्यो श्री कुंज विहारी।
हमि कों तासि सें लीयो छडाई।
इहि करुणा हरि हमहि कराई।
अवि चाहित था तुम पहि आयो।
तुमरो हरि ईहा दर्सु दिषायो।
कुंती सुण वचि शांत घर आई। मन की विर्था सभ सुण पाई ॥
साधो हर जन सदा सहाई। सांईदास सुष रह्यो समाई ॥२१८

द्रुपद सुता तव वचन उचारे। रुक्मण सों कह्यो तत्कारे ॥
कार्जु कैसे तोहि भयो है। श्री कृष्ण कुंदन पुर कैसे गयो है ॥
इसि का मोहि वीचारु सुनावो। छिन मात्र ना विलम करावो ॥
रुक्मन ने तांको प्रतु दीना। मोहि कार्जु असे कर लीना ॥
मम पिता भीष्म नामु कहावै। तांकी वात कर मनु सुषु पावै ॥
तुलसी है जननी को नामा। अधिक भलो वहु नीकी रामा ॥
मोह पित मात ने मतु ठहि रायो। चाहित कृष्ण संयुक्त करायो ॥
रुक्मना नामु वंधू इकु मेरा। तिह तिन सो उठि कीनो फेरा ॥
ओहु कहे ससपाल को देवो। तांसो एहि संजुक्त करेवो ॥
मैं लोको सों इहि सुरण पाई। महा वली प्रभ जादम राई ॥
कंस दुष्ट को जिने प्रहारा। तांकी भुज महि वलु वहु भारा ॥
मैं मन ध्यानु तास को कीना। चर्न कमल सों मैं चितु दीना ॥
रुक्मे पतीआ वेग पठाई। ससपाल वेग आवो मेरे भाई ॥
कार्जु रुक्मन को कर देवो। आदर भाउ तुमरा मैं लेवो ॥
मैं भी इक विपु लीयो वुलाई। तांसो सकलो वात सुनाई ॥

दीई अंक्रूर तास के तांई। पतीआ ले जाह क्रष्ण के पाही ।।
मो ते जव दिज ने कर लीने। तास समे पग मग महि दीने ।।
ततक्षिण महि आयो हरि पाही। मोह पतीआ तिहि आन दिषाही।।
चर्न वंदिना मोहि सुनायो। प्रभ सकली विधि मन ठहिरायो ।।
रथ पर चढि वेग उठि धायो। ततक्षिण कुंदन पुर महि आयो ।।
ससिपाल अधिक सैंना ले आया। दंत वक्रत जरासिंध सवाया।।
मोको रामां लेकर धाई। गौरांके अस्तल ले आई।।
हमि सें पूजा तहा कराई।
जोषिता सभ मोहि कह्यो सुनाई।

कहु ससिपाल हमि होइ सुषदाई।
अैसे रामां मोहि सुनाई।

मैं कह्यो श्री क्रष्ण मोह होइ सुषदाई।
तव सभ रामां ने सुण पाई।
मोह कह्यो तैं क्या उचिरायो। हे रुक्मण क्या शब्द सुनायो।।
तव मै कह्यो जो तुमने भाषा। सोई है मैं मुष ते आषा।।
मो को फिर ग्रहि को ले धाई। मम संग जोधे थे अधिकाई।।
मोहि रक्षक मोहि वंधू दीने। अधिक उपाउ तासि ने कीनें।।
मैं मग महि हौरे हौरे जावो। मतु श्री क्रष्ण कों दर्सनु पावो ।।
प्रभ नें तव ही बेन वजाई। सुनति शब्द सुधि सकल भुलाई।।
मोको रथ प्रभ लीयो चढाई। गवन कीयो तव जादम राई।।
पाछे से जोधे वहु आए। श्री गोपाल जी सकल हताए।।
रुक्मन सभ विधि ताह सुनायो। सांईदास द्रोपती सुण पायो।।११६

वहुरो द्रोपती ने वचु कीआ। सत भावा सो एहि पुछ लीआ ।।
अपुने कार्ज की वात सुनावो। एहि वचु मोह हृदे ठहिरावो ।।
सतिभावा तांको प्रतु दीना। जो कछु वचु द्रोपती नें कीना ।।
मम पित हरि को दोसु लगायो। भूठु वहु कीयो आगे आयो।।
मन अपुने महि लीयो वीचारी। मैं औगुणु कीनो अति भारी ।।
कैसे औगुणु हमहि मिटावै। कित विधि कीए औगुणु हमि जावै
इक दिन मन महि कीयो वीचारा। कंन्या प्रभ देवो तत्कारा ।।

तव हम को औगुणु मिट जावै। नाहि त हमि नाही वनि आवै ।।
इक दिन सभा जादम महि आया। मुष ते एही वचु उचिराया ।।
मै सतिभामा श्री कृष्ण को दीनी। सैंनापति मरण भेटा कीनी ।।
तव उग्रिसैन जादम संग लीए। हमिरे पित ग्रहि महि पग दीए ।।
मम मंघर मोह काजु करायो। अैसे सति भामा उचिरायो ।।
मम को पित माया वहु दीनी। चेरी अधिक संग मोहे कीनी ।।
द्रोपती पूछ्या जामवंती पाहे। तोह कार्जु कहा भयो देहि वताहे
जांमवंती तव कह्यो सुनाई। मोहि पित जोधा अति वलिकाई
श्री कृष्ण सैनापति मरण के लीए। महा विकट वन महि पग दीए।।
विधि जो कछु कीनो होइ भाई। तांको कोऊ न सकै मिटाई ।।
प्रिथम मोह पित सों युद्ध कीना। मोहि पित को निहवलु कर लीना
मम पित ने मन महि वीचारा। पूर्न है प्रांन अधारा ।।
चर्न गहे मुष विनती ठानी। हे कौलापति सारंग पानी ।।
इहि कंन्या हमिरी ले जावो। अपुनी इनि सों टहिल करावो ।।
सैनापति मरण भी लेवो। हमरो औगुण मेटे देवो ।।
हमि को ले आयो पुर माहें। काजु कीयो हमरो प्रभु ताहें ।।
जामवंती सभ वात वषानी। सांईदास सभ विर्था जानीं ।।२२०

सुता सो फिरि वचन सुनायो। तोह कार्जु कहु कैसे करायो ।।
सुता तव अैसे प्रतु दीना। मोहि कार्जु अैसे कर लीना ।।
सप्त वैल मोह पित ग्रहि माही। दस सहस्र गज वलु इक ताई।।
मोहि पित ने प्रतज्ञा कीनी। महा कठन प्रतज्ञा लीनी ।।
एक वार तिह को है वहावै। सो इहि कंन्या हमिरी पावै ।।
श्री कृष्ण इहि विधि सुण पायो। अपुनो पुरु तजि हमि पुर आयो ।।
सप्त वैल की कुही वहाई। मोह कार्जु कीनो जदुराई ।।
कार्जु कर हमि को ले आया। मोहि कार्जु इहि भांत कराया ।।
बहुरो रवि दुहिता सो भाषा। तो कार्जु कैसे भयो आषा ।।
कालींद्री तव कह्यो पुकारी। सुण हो द्रोपती सषी हमारी ।।
मैं जल तटि फिर्ति अधिकाई। तहा निकसे आइ कवर कन्हाई ।।
अर्जन सहित लीए हरि आयो। अषेर व्रित्त कर्ने चितु लायो ।।

मम को तव ही संग ल्यायो। पुर महि आण मोह काजु करायो॥
वहुरो कह्यो षोडसहस्रो वीस। तुम प्रभु कैसो भयो जगदीस॥
षोडसहस्रो बीस सुनायो। हमि कार्जु असे होइ आयो॥
असुरु वनासुरु हमहि ल्यायो। आग सकल इकि ठौर वहायो॥
श्री जाइ तांको हति लीना। इहि कार्णु कौलापति कीना॥
हमि को द्वारका माहि ले आयो। ईहा आइ कर काजु करायो॥
हमिरे भाग विधि एहि करायो। कृष्णचंद पतु हम ने पायो॥
द्रोपती सुण विधि सभ मन धारी। सांईदास सुष मन अधिकारी॥२२१

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिआसीमोध्यायः॥८३॥

श्री कृष्ण जोषिता कह्यो सुनाई। सुण हो द्रोपती हितु चितु लाई॥
अपनी विर्था तुमहि वतावो। तोहि कार्जु कैसे भयो सुनावो॥
द्रोपती कह्यो सुणो चितु लाई। सकल वृथा मै देउं वताई॥
मो पितु भूपति अति वलिकारी। मन महि लोई प्रतज्ञा भारी॥
मध्य अकास मीन लरिकाई। भांजन जलु भर्यो अधिकाई॥
तास मीन के तले रषायो। धनषुवाण तिह उौरि टिकायो॥
मीन प्रितमा जल माहि निहारे। षिच वांणु मीन को मारे॥
इहि कंन्या मैं तांको देवो। आदर भाउ अध्कि तिहि लेवे॥
पांच वीर पांडो सुत आए। भगवान तिहि दर्सु दिषाए॥
अर्जन प्रितमा देषि मीन को मार्यो।
मध्य अकास तें धर्नि उतार्यो।
मम को मोहि पित इनि ताई दीना।
इन मोह लीए गवन तव कीना।
उौरु नराधिप आगे आए। तिन इहि विधि मन महि ठहिराए॥
मुकट्ट वांधे हमि सकले ले जाई। इहि सैंना सें लेकर धाई॥
आइ पांडो सुति को मगु घेरा। मन महि गर्बु कीयो अधिकेरा॥
इहि बिधि वहि भूपति ना जानहि। पांडो सुत को नाहि पछानहि॥
अज्जुन युद्धु कीयो अधिकाई। सकल भूपति भागे तव आई॥
मोको ले बनि माहे आए। केतकि दिनं तहूं ही ठहिराए॥

अधिक कष्टु हमि वन महि पाया । कहा कह्यो कछु कह्या न जाया ।।
तुम द्वार्का महि वहु सुष पायो । हमि बन महि बहु कष्टु कमायो ।।
द्रोपती सभ व्रितांतु सुनाया । सांईदास सभ सुण सुषु पाया ।।२२२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चउरासीमोध्याय: ।।८४

सकल ऋषीश्वर मुनि सुण पायो । श्री कृष्णचंद कुरुक्षेत्र आयो ।।
कैरो पांडो सुत भी आए । उौरु जादम आए अधिकाए ।।
नंदिर महिर भी तहूं ही आया । सकल ऋषो इहि मतु ठहिराया ।।
चलहो हम भी तहूं ही जावहि । ग्यान गोष्ट स्युं मनु पर्चावहि ।।
ततक्षिण सकल ऋषीश्वर आए । ताहि नाम सुण हो चितु लाए ।।
वृहस्पतु व्यास बशिष्ट गुसांई । विश्वामित्र ऋषि अधिकाई ।।
शुक्र जती तास ही माही । दर्सु कीयो आइ त्रिभवन सांई ।।
उौर अषग धूमरिष आए । प्रविछ कपिला धरि आइ निर्षाए ।।
वसुदेव इनि सो बचन उचारे । सुण हो ऋषीश्वर प्रांन अधारे ।।
हमिरे ताई यज्ञ करावो । हमिरे मन का भर्मु हिरावो ।।
सकल ऋषो नें इहि प्रतु दीना । हे वसुदेव कहा चित लीना ।।
एहि बात बाही भई भाई । सो मैं तुम को कहित सुनाई ।।
प्रवाहु गंगा को चल्यो । तांको मूढ नांही अचिवाई ।।
कहे कूप को पानी पींवहि । तांते सुष अधिक मन थीवहि ।।
तिह समे मज्जन ना करही । मज्जन कूप अंभि चितु धरही ।।
जो कोऊ यज्ञ करे मेरे भाई । इहि प्रयोग हरि होइ सहाई ।।
वही कृष्ण तोहि टहिल करावै । उौर वाति कहा तुम मन आवै ।।
सकल देव इस पग रज लोरहि । तूं कित नाना मार्गि डोरहि ।।
ब्रंह्म लोक अरु प्याल के मांही । इसि के पग की रज सभ चाहीं ।।
जत्न करहि फुनि हाथ नि आवै । ध्यान धरहि तौ भी नही पावै ।।
तूं कहै हमि को यज्ञ करावौ । अैसी विधि मुष ते उचिरावों ।।
सकल ऋषीश्वरो इही विचारा । सांईदास हरि गति अपारा ।।२२३

श्रीकृष्ण सकल ऋषिको समझायो । कहा वात तुमि मुष उचिरायो ।

मोहि पित यज्ञ कर्नि चितु धारा। भली भांति घटि माहि वीचारा ।।
इसि के तांई यज्ञ करावौं। इसि की सर्धा सकल पुरावों ।।
एक मास तहां यज्ञ करायो। वसुदेव महा अधिक सुषु पायो ।।
नंदि महिर तव बचु उचिरायो। श्री कृष्णचंदि सों आष सुनायो ।।
हे प्रभ तुम आगे पग धारों। हमि पाछे आवहि तत्कारों ।।
श्री कृष्ण सहित जादम उठि धायो। तिह समे मुष ते उचिरायो ।।
जो मोती अंबर वहु नीके। ताहि अंग कीए सुष होइ जीके ।।
सकल दीए जसुमति के ताई। कंचन दीनो हरि अधिकाई ।।
कह्यो उौरु हमि जाकर लेवहि। इहि सभ जसुमति ताई देवहि ।।
जसुमति सें आज्ञा ले धाए। द्वार्का के मग सो चितु लाए ।।
जसुमति नंदि उौरु सकल निहारहि। ठांढे होइ हरि रूपु सम्हारहि
मास दोऊ नंदु तहूं ठहिरायो। मन महि अधिक तहा विसमायो ।।
कहित कृष्ण ईहा पग धारे। अधिक सुषु वहु हमहि दिषारे ।।
चौमासा जवही निकट आयो। नंदि सकल सों वचन सुनायो ।।
ईहा ठौर नाहि कोऊ भाई। कष्ट पाहि कित को ठहिराई ।।
रुदनु कर्ति सभ ही उठि धाए। अपुने पुर को इनि हितु लाए ।।
श्री कृष्ण द्वारका माहें आयो। अति अनंदु लोको सभ पायो ।।
जो वार्ता कुरक्षेत्र भई भाई। सकल श्री कृष्ण अनरुद्ध सुनाई ।।
पांडो कैरो सभ ही आए। नंदु जसुमति अरु गोप अधिकाए ।।
अनरुद्ध को श्री कृष्ण सुनाया। सांईदास सभ सुषु पायो ।।२२४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति पंचासीमोध्यायः ।।८५।।

श्री कृष्ण वलभद्र दो भाई। तिन घटि महि प्रेमु अधिकाई ।।
नितापति वसुदेव पहि आवहि। वसुदेव को डंडौत करावहि ।।
एक दिवसि बसुदेव पहि आए। वसुदेव दोनों ही निर्षाए ।।
ठांढा भया हरि को निर्षाई। नमस्कार वसुदेव कराई ।।
श्री कृष्णचंद तव वचन उचारे। सुणहो वसुदेव पिता हमारे ।।
कवन वेद इहि वात वताए। सुत को पित डंडौत कराए ।।
वसुदेव प्रतु दीनो हरि तांई। एही उपजी हमरे मन माही ।।

कुरक्षेत्र विषै सभ ऋषि आए। मैं तिन सों इहि वचन सुनाए ।।
मम अभिलाषा यज्ञ करावों। हमिरे मन की भ्रांत चुकावों।।
सकल ऋषीश्वर मोहि प्रतु दीना। यज्ञ कर्नि तैं क्यु चितु कीना।।
इति विधि सभ लोक यज्ञ कराई। अंत समे होइ कृष्ण सहाई ।।
श्री कृष्ण तोह सेवा ठहिरायो। तैं यज्ञ कर्ने क्यु चितु लायो ।।
जो अैसी विधि होई गिर्धारी। तो मैं अैसी लेउों चित धारी ।।
श्री कृष्ण तवी वसुदेव सुनायो। हे पित किह बाती चितु लायो ।।
हमि प्रजोग तुम वहु दुषु पायो। पातक कंस तुम बंदि डलायो ।।
अब जो अैसी करो पित मेरे। वहुरो वही दुष आवै नेरे।।
हे पित कलियुग के माही। मौसो सुत हैतु कराही ।।
जो कछु तुमरे मन महि आवै। मोहि कहो जो तुम को भावै ।।
मैं तत्काल आन पित देवों। तोहि आज्ञा मस्तक धरि लेवो ।।
जैसे सुत पित रीत चलाई। हे पित अब करहो तुम साई ।।
अैसे वसुदेवहि प्रभू सुनायो। सांईदास जो वेद वतायो ।।२२५

देवकी प्रभ सों वचन उचारे। मैं वलि जावों प्रांन अधारे ।।
विद्या गुरु के सुत ले आयो। अधिक कृपा तुम ताहि करायो ।।
जो हमरे भी सुत आण देवो। हमिरो मनु सुप्रसंन कर लेवो।।
महा अधिक सुषु तो मैं पावों। जौ वही षट सुत फिर निर्षावो ।।
श्री कृष्ण कह्यो वहु नीको भाई। इहि विधि कब तै मोहि सुनाई ।।
अबि षट सुत तुमरे ले आवो। तुम चितु सुप्रसन्न करावों।।
श्री गोपाल दाता सुष जन को। तास प्रसाद भया सुषु मन को ।।
हलिधर को संग ले कर धायो। तत प्याल लोक मध्य आयो ।।
नृप वल निर्ष आगे को आया। हरि को आई डंडौत कराया ।।
मुष ते तव ही वचन उचारे। हे प्रभ कहु कैसे पग धारे ।।
कछु आज्ञा होवे जन ताई। कृपा करो दर्सनु दीयो आई ।।
श्री नंद नंदन कह्यो सुनाई। सुण हो नृप वल हमि सुषदाई ।।
षट सुत माता देवकी केरे। आई धरो तुम आगे मेरे।।
कहो कहा है मेरे भाई। हमि को देवहु तासि वताई ।।
नृप वल ने प्रतु हरि को दीना। हे प्रभ तिह वपु असुर को लीना ।।

इकु दूषु कोई उनि कीश्रा। इहि प्रगोय[1] वपु असुर को लीना ॥
श्री कृष्ण कह्यो उनि को ले आवो।
ममिरे ताई आंण दिषावौ।
प्रभ आज्ञा सों तिनहि ल्यायो।
प्रभ तिह रूप असुर निर्पायो।
श्री कृष्ण तास वालक वपु दीश्रा। वालक वपु कर सभ संग लीश्रा ॥
आन देवकी को हरि दीनें। देवकी वहु सुषु मन महि लीनें ॥
प्रभ जूठाली तिन अचिवायो। पंषी वपु ले वैकुंठ धायो ॥
देवकी अधिक भई हैराना। कहा होइ जव समा विहाना ॥
प्रभ उस्तत कर वैकुंठ धाए। सांईदास सुष सागर पाए ॥२२६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छयासीमोध्याय: ॥८६

नृप परीक्षत नें प्रश्नु चलायो। शुकदेव पहि तिन आष सुनायो ॥
हे प्रभ जी तुम एहि सुनावो। करुणा कर सुष हमि उपिजावो ॥
सुभद्रा को कार्जु कैसे कीना। कैसे तिह कार्जु कर दीना ॥
शुकदेव प्रतु दीनो नृप ताई। सुन हो परीक्षत हितु चितु लाई ॥
श्री कृष्ण वसुदेव मतु एहि ठहिरायो।
उग्रसेन नृप सहित करायो।
अर्ज्जन सों संजुक्त करावहि।
और ठौर काहे भरमावहि।
हलधर कह्यो असे ना करहो। इसि विधि कर्न चितु न धरहों ॥
दुर्योधन सहित संयुक्त वनावों। और ठौर काहूं नाही जावो ॥
अर्जन मन महि लीयो विचारी। भेष वनाइ जावो तत्कारी ॥
क्या जानो मोहि देवहि न देवहि।
कौन ठौर संयुक्त करेवहि।
भगवान रूप अर्ज्जन कर लीना।
द्वार्का पुरी को तिह पगु दीना।

---

१. यहां 'प्रयोग' शब्द चाहिए।

तात्क्षरण निकट द्वार्का आयो। अस्तल सोमनाथ ठहिरायो ।।
पुर के लोक तहू चलि आवहि। भोजन कार्नि इनहि ले जावहि ।।
एक दिवस हलधर क्या कीआ। अर्जन को सहित कर लीआ ।।
भोजन कार्नि ग्रहि ले आया। सुभद्रा ने तव पाकु पकायो ।।
अर्जन को तव ही निर्षायो। मन अंतर एही ठहिरायो ।।
मम को अर्जन देवहि नाही। दुर्योधन सहित संयुक्त कराही ।।
अर्जन कौं मैं लीयो निहारी। महा वली सुर सर बलिकारी ।।
कौलापति प्रभ अंतरजामी। घटि घटि के वाही विस्नामी ।।
अर्ज्जिन को तब कह्यो पुकारी। सुरण हो अर्ज्जन हमरे भाई ।।
हमि सभ ही मिल मतु ठहिरायो। हमिरे मति हलधर ना आयो ।।
हमि तुम सहित संयुक्त वनावहि। सुभद्रा कौं तुमहि देवावहि ।।
हलधर मन माहे ना आनें। इहि विधि वहु मन नाही मानें ।।
चितु अपना तुम ठौर करावो। सांईदास सभ भ्रांत हिरावो ।।२२७

अर्ज्जन को प्रभ फिरि समझायो। हे अर्ज्जन कछु तोहि मन आयो ।।
सोमनाथ के अस्तल मांही। जाइ वसो भौ सकल हिराही ।।
भक्त लोक ऊहा सभ आवहि। पूजा कर्न को चितु लावहि ।।
तिसी ठौर पहि तुमहि हिरावो। उौर वात किते नां चितु लावो ।।
सुभद्रा को तहू से ले जावो। मोह कहा घटि माहि ल्यावो ।।
अर्जन ने तव विनती ठानी। हे परमानंद सारंग पानी ।।
रथु अरु धन्षु नाह मोह पाहे। इनि कार्नि मन महि सुकचाहे ।।
श्री कृप्एा धनुषु रथु अर्जन दीआ। इहि करुणा प्रभ तां पर कीआ ।।
रथु अरु धनुष अर्ज्जन लीआया। सोमनाथ अस्तल ठहिराया ।।
निस वीती रवि कीयो प्रकासा। सकल लोक मन भयो हुलासा ।।
सोमनाथ को पर्सन धाए। अर्ज्जन ठांढा तासि हिराए ।।
वसुदेव सुता तव ही प्रगटाई। अर्ज्जन ने तव ही निर्षाई ।।
भुंज से पकर लीई चारे। तव ही गवनू कीयो तत्कारे ।।
लोको राम को जाइ सुनायो। अर्ज्जन सुभद्रा को ले धायो ।।
हलधर क्रोधु कीयो अधिकाई। मुष ते एही वात सुनाई ।।
मोहि शस्त्र देवों मैं जावों। अर्ज्जन को जाइ मार चुकावौ ।।

श्री कृष्ण चंदि तव ही सुण पायो। राम क्रोधु कीयो अधिकायो ॥
अर्ज्जन सो ज़ाइ युद्ध मचावै। तब लज्जा हमि रहि ना आवै ॥
राम सों तव ही कह्यो सुनाई। हे हलधर सुण हो मेरे भाई ॥
अर्ज्जन कोई पराया नाही। कहा क्रोधु कीयो मन मांही ॥
कहे ते अर्ज्जन को ले आवहि। काहे इतना क्रोधु करावहि ॥
वलदेव प्रतु दीना जदुराई। करो कृष्ण जी जो मन आई ॥
अर्जन को तुम लेओ बुलाई। तुम संग हमिरा कहा वसाई ॥
श्री कृष्णचंद इकु दूतु पठायो। अर्जन को वहु फिरि ले आयो ॥
सुभद्रा को कार्जु कर दीना। कुंचर चेरी वहु संग कीना ॥
अश्व कंचन मोती वहुतेरे। अर्ज्जन को विदया कीयो सवेरे ॥
अर्जन कार्जु कर ले आयो। सांईदास आनंदु सुषु पायो ॥२२८

इक पुर महि इकु भूपतु रहे। एक विपु ताहूं महि अहे ॥
दोई भक्त महा हरि केरे। द्वितीया भाउ न तिन के नेरे ॥
श्री कृष्ण आयो ताहूं पुर माहें। सोच वीचार लीयो घटि माहें ॥
इहि दोनों है भक्त हमारे। विष्यालिप्त ते रहित न्यारे ॥
जो मैं भूपति के ग्रहि जावो। तौं विप मन संचरु उपिजावों ॥
विपु मन माहे करे वीचारा। हमिरे ग्रहि हरि पगु ना धारा ॥
नृप निर्ष्यो हरि किर्पा धारी। मैं अधीन कों दीयो विसारी ॥
जो प्रिथमे ब्राह्मण के जाउ। संत उधार्न मेरो नाउं ॥
राजा विलषे हमिरो संतु। गए त्याग मोहि कमला कंत ॥
दोनों भगत हमारे भाई। ता महि किस दुष दीयो न जाई ॥
ऐसी विधि कर हों मेरे भाई। दोनों को चितु नाहि डुलाई ॥
प्रभ दो रूप माया के धारे। चिन्ह चक्र तिह एक सवारे ॥
एकु गयो भूपति ग्रहि माही। एकु आया विपु भौन मंझाही ॥
नृप के ग्रहि महि सभ किछु भाई। आण धरो आगे जदुराई ॥
भली भांति सेवा तिहि कीनी। द्वितीआ गति घटिमाहि न लीनी
विपु ने एकु कुटीआ पुरानी। करद न कछु संग आनी ॥
दर्भि किडी ले तले विछाई। एक वृक्षि तांके ग्रहि भाई ॥
तास पत्र तोर तले आयो। कर मंडल जल भर ठहिरायो ॥

आप निर्त कर्ने उठि लागा। घटि से द्वितीया भाउ त्यागा॥
श्री कृष्णचंद वहु आनंदु पायो। प्रेम भाउ तांको द्रिष्टायौ॥
विप को चतुर भुजा हरि कीना। वैकुंठ माहि आसनु तिह दीना॥
जन्म मर्ण ते करी कल्याना। सांईदास हरि पद निर्वाना॥२२९

इति श्री भागवते पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सतासीमोध्यायः॥ ८७॥

परीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे। हे शुकदेव मै वलि वलि जाहें॥
जास समे पर्लो सभ होई। इसि धर पर कोई थिरु होई॥
एहि कथा प्रभ मोह सुनावो। मेरे मन का भर्मु हिरावो॥
शुकदेव प्रतु दीनो नृप ताई। हे नृप भली लई मन माही॥
नार्द एही प्रश्न नृप कीना। वद्रीनाथ उतर तिहि दीना॥
चीतु धरो मैं सोई सुनावो। तुमरे मन का भर्मु चुकावो॥
प्रलै काल जव होवै भाई। सभ विनसै रहै कौर कन्हाई॥
चतुर वेद सुर को अवतारा। चरहो पुत्र है ले चित धारा॥
नाम ताहि सुण हो मेरे भाई। सन्कसनंदन सुण हितु लाई॥
औरु सनातन सन्त कुमारा। घटि माहे तुम लेह विचारा॥
तास समे इहि उस्तति करही। अनक भांत मुष ते उच्चरही॥
निरंकार कछु द्रिष्ट न आवै। तुमरो कछु नाहि सुभावै॥
आद अनादी रह्यो समाई। निरवैर अजूनी संत सहाई॥
अकाल मूर्त्त श्री कुंज विहारी। पर्मानंदि गिरवर हरि धारी॥
दुष सुष ते प्रभ तुही न्यारा। सकल विश्व प्रभ तोहि पसारा॥
चिन्ह चक्र कछु द्रिष्ट न आवै। रूप रेष कछु कहा वतावै॥
जल ऊपर धर तोहि बनाई। इहि रचना प्रभ तोह रचाई॥
जैसे जल मै कमल वसेरा। ऐसा प्रकासु सकल घटि मेरा॥
अघनाशी प्रभ तेरो नामा। पतति उधार्न एही कामा॥
तोहि उस्तति को पार न पावै।
तुमरी गति मित तोहि वनि आवै।
हमि तोहि उस्तति कहा वषानहि।
तुमरी उस्तति कर क्या जानहि।

तूं अविनाशी नासु न तेरा।
तूं गुरु सकल जगतु तोह चेरा।
काह रस्ना हमि उस्तति भाषहि।
सांईदास क्या गति मित भाषहि ॥२३०

नृप परीक्षत इकि दिन क्या कीआ।
शुक पहि प्रश्न तिन ने इहि कीआ।
हे शुक जी सुन हो चितु धारे।
तुम निर्मल भक्त विधि जानण हारे।
शंभू सदा कुचील है भाई। तिह सेवा जगु काहि कराई॥
जो उसि पर कोऊ आन चरावै। सकल अपवित्र होइ कर जावै॥
पर्म मुक्त दाता गिरधारी। ताहि त्याग कित पूज जचारी॥
सुकदेव नृप तांई प्रतु दीना। हे नृप भलो प्रश्नु तैं कीना॥
मुक्त दाता श्री कुंज विहारी। और देव वरिदाते सारी॥
मुक्त देवनि के माहें नाही। वरु मांगहि देवहि अधिकाही॥
नर्कासुर असुर नें प्रश्नु चलाया। नार्द को तिह आष सुनाया॥
असो सुरु कोऊ है मेरे भाई। ततक्षिण वरु देवैं विल्म न लाई॥
नार्द नें ताको प्रतु दीना। शिव है असुरु हृदे धरि लीना॥
नर्कासुरु शिव अस्तल आयो। षष्ट मासि तहा भजनु कमायो॥
होम यज्ञ कीनो अधिकाई। तासि अहूती ले कर पाई॥
शंकर तव ही दर्सनु दीना। मुष अपुने सें इहि वचु कीना॥
वरु इनहूं मांगो कछु भाई। जो तुम मांगो देवो तुम सांई॥
नर्कासुरु कह्यो सुन शंभू देवा। मै तुमरी कीनी है सेवा॥
तैंने मो पहि किर्पा धारी। वरु इनहूं होयो तत्कारी॥
एही वरु हमि ताई दीजै। अपुनी किर्पा हमि पर कीजे॥
मै जिह सिर पर करु ठहिरावो। क्षिण माहे तिह भस्म करावो॥
शिव कह्यो असे ही होई। जो तैं मांगा दीआ सोई॥
तव ही नरकासुर मन धारा।
सोध हृदा मन लीयो विचारा।
अवर कौन सिर करु ठहिरावो।
औरु कवन को जो हन जावो।

शंकर को अवि भस्म करावो।
पार्वती को ले मैं जावो।
असुर इही विधि मन ठहिराई।
सांईदास शिव ने सुधि पाई ॥२३१॥

नर्कासुरु शिव ओर सिधाया।
भस्म कर्नि शिव को चितु लाया।
शिव इहि विधि पाई उठि भागा।
नर्कासुरु तिह पाछे लागा।
शिव दौरत दौरत हिरायो। श्री कृष्णचंद को चित्त करायो॥
हे प्रभ षलु मोहि भस्म करावै। तोहि विनु हमको कौनु छुडावै॥
अंतरजामी स्यामु हमारा। ततक्षिणमन महिलीयो विचारा॥
शंकर कष्टु अधिक ही पायो। तव प्रभ देवी रूपु करायो॥
शंकर को प्रभ लीयो दुराए। आप असुर सन्मुष चल्यो धाए॥
असुर रूप प्रभ को निर्षायो। पार्वती देषि सुधि वौरायो॥
श्री व्रिजनाथ तिह कह्यो सुनाई। हे नर्कासुर क्या मन आई॥
कहा जात दौरे ठहिरावो। हमि ताई तुम आषि सुनावो॥
नरकासुर हरि को प्रतु दीना। मै सेवा शंभू की कीना॥
षष्ट मास मै सेवा करायो। तौ शंभू ते इहि वरु पायो॥
जास सीस पर करु ठहिरावो। तांको छिन महि भस्मु करावो॥
मम मन माहे एही आई। औरु ठौर जावो कहा धाई॥
शिव के वरि तांई पतीआवो। पतीआवन और कहा मै जावो॥
शिव ही के सिर पर करु धारो। वरु पतीआइ लेउो तत्कारो॥
महादेव हम से है भागा। मैं तिह जोहन को उठि लागा॥
प्रभ नरकासुर कों समझायो। कौन वात तूं मन महि ल्यायो॥
मोह कार्ण अैसे तूं करही। शंकर मार्नि को चितु धरही॥
जाण देहि शिव कछु ना आषो। मोह कहे ऊपर चितु राषो॥
मैं तुमरी सेवा चित धारो। तोह कहा घटि माहि वीचारो॥
प्रथम हम तुम निर्त कराहि। पाछे एक ठौर ठहिरावै॥
प्रभ ने निर्त कर्न चितु लायो।
असुर कह्यो हमि को सिषवायो।

प्रभ कह्यो तुम भी सिष लेवो।
ज्युं मै करो अैसे कर लेवो।
प्रभ निर्त कर्ति करु सिर पर आना।
अैसे नर्कासुर भी ठहिराना।
भस्म भयो नर्कासुर तांही।
इहि विधि प्रभ तिहि लीयो वैराही।
खलि को प्रभ ने भस्म करायो।
सांईदास शिव को छुटकायो ॥२३२

इति श्री भागवते महापुराण दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठासीमोध्यायः ॥ ८८ ॥

भस्म कीयो खल को जदुराई। तब शंकर को कह्यो सुनाई ॥
हे शिव तुमरी सुर्ति बौरानी। कौनु वात तैं मन महि आनी ॥
अैसे षल कों को वरु देवै। अैसी विधि कोऊ मन महि लेवै ॥
श्री गुपाल भक्तन सुषदाई। शंकर को तिन लीयो छडाई ॥
भक्तन हेत प्रभु अधिक बढावै। अपुनी सेवा तिह को लावै ॥
माया देत तिह जनके तांई। ताहि की द्रिग कछु आवै नाही ॥
माया को कछु कर नही जानहि। एही वात घटि माह पछानहि ॥
जैसे उदर मात से आए। अंत समे अैसे उठि धाए ॥
इहि माया संग जावै नाही। भक्ति दृढ इहि विधि मन माही ॥
इहि प्रयोग तिह हेतु न लावहि। विषु कर जानहि निकट न आवहि
सुत वनिता वंधू के कीए। माया जोरहि मिथ्या कीए ॥
वहि सकले ही संगी नाही। शत्रु है जानति मन माही ॥
सकले ही इहि कहति पुकारे। प्रितपालकु तुम करहि मुरारे ॥
जहा ते जानो तहा से ल्यावो। हमिरी किर्त तुम चलिवावो ॥
माया संतन को ना देवे। एहि वात प्रभ मन धर लेवे ॥
जो इनि को माया देवा भाई। तिह उर्भै मोह देहि भुलाई ॥
भक्तनि को बैकुंठ पठावो। तांको आसनु तहूं करावो ॥
अवर सकल देव साषा भाई। व्रिक्षरूप श्री जदुराई ॥
इसि ही से उतपति है वांकी। इहि सभ गत पावहि नही वांकी ॥

प्रवाहु गंगा को चल्यो जाई। तांसो को कुंभ लेइ भराई ॥
वहि प्रवाहु घटे नही जावै। दधि माहे जो कुंभु भर पावै ॥
अैसे प्रभ है मेरे भाई। सकल विश्व है तासि वनाई ॥
जो सभ विश्व तास है कीनी। तांकी जोत कछू नही भींनी ॥
जो सभ विश्व तिह जाइ समावै। अगवाही ज्योत अधिक होन न पावै
सकल विस्व ताहूं विस्तारा। सांईदास भजु राम प्यारा ॥२३३

चतुर्मास आयो मेरे भाई। चौदिस थिति सुनो चितु लाई ॥
प्रथोदक सकले ऋषि आए। मज्जन कर्नें को चितु लाए ॥
पंडित वेद पुरान विचारहि। ज्ञानु करहि भ्रमु जी का टारहि ॥
तिह पंडित इहि वात वीचारी। तीनो देव समसर अधिकारी ॥
इनि महि कांकी पूजा कीजै। नासे भर्मु मुक्त मंग लीजै ॥
सकल ऋषो भृग कह्यो सुनाई। हे स्वामी तुम सभ सुष दाई ॥
तुम को अधिक परीक्षा होई। तुम विनु अवर न पावै कोई ॥
सोच देहि तुम इहि विधि हमि को। हमि आपहि प्रभ विनती तुम को
पर्म मुक्त दाता किसु कहीए। तांकी सेवा मन चित लहीए ॥
भृग सभ ऋषि की आज्ञा पाई। इहि विधि सोचन चल्यो धाई ॥
प्रिथम ब्रंह्म जी के आया। पद्मज पहि जाइ कर ठहिराया ॥
नमस्कार कीनो तिस नाही। ब्रह्मे क्रोधु कीयो अधिकाही ॥
लोचन अग्नि ज्युं तासि ललाए। क्रोधु कीए भृग ओर तकाए ॥
भृगु निर्षित तांको उठि धाया। वेग ही शिवपुर माहे आया ॥
शंकर ने भृग को निर्षायो। अर्घासनु तजि आगे आयो ॥
आदर भाउ अधिक तिह कीना। भृग ने तांको इहि प्रतु दीना ॥
हे शंभू तुम निकट न आवो। तूं अपित्र नापर्सु करावो ॥
मरघट भूम तुमरा है वासा। मैं नाही तुम दर्स पिआसा ॥
भामनी रहित सदा संग तेरे। तुम आवो नही हमरे नेरे ॥
सोच पवित्र है हमरो कामा। भृगु देव कहीए हमरो नामा ॥
गौरापति तव क्रोधु करायो। ले त्रसूल मार्नि तिह धायो ॥
पार्वती तव ही उठि आई। शिव के चर्ना सों उरझाई ॥
मुष अपुने सें विनती ठांनी। हे शंभू तुम ब्रंह्म ग्यानी ॥

इहि विपु है वैष्णव अधिकाई। हमि सें हतिना नाहि भलाई ॥
जो ब्राह्मण चित क्रोधु ल्यावै। तांको कोऊ नाहि हतावै ॥
तुम शंभू सदा दया द्यालक। सकल जग के तुम प्रित पालक ॥
क्षिमा करो इसि देहू तजाई। असी गौरा बात सुनाई ॥
शंभू क्षिमा करी ग्रहि आयो। सांईदास भृग तिह पतीआयो ॥२३४

वहुरो भृगु वैकुंठ सिधायो। तहा श्री कृष्णचंद को निर्षायो ॥
शैनु कीयो परजंक पराही। महा सुषी दुषु तिह कछु नाही ॥
लक्ष्मी पग कर सो पलिसाई। भृग ने असे ही निर्षाई ॥
भृग ताइ लात पिंजर महि मारी। प्रभ जी जाग परे तत्कारी ॥
भृगु को ले प्रजंक वैठाया। प्रभ ने दीन बचन उचिराया ॥
प्रभु भृग चर्न पलोवन लागा। श्री कृष्णचंद मन गर्बु त्यागा ॥
भृग को प्रभ जी वचन सुनाए। हे भृग क्रपा करी तुम करी तुम आए
वैकुंठ को तुम पावन कीना। जो तुम ने पगु ईहा दीना ॥
तुमरे चर्न कौमल अधिकाई। मोहि पिंजर अति डाढो भाई ॥
तुमरे पग दुःष वहु जो होई। मोको पीर भई नही कोई ॥
इहि प्रजोग मम रिदा डुलावै। तुमरो चर्नु कष्टु अति पावै ॥
द्विज के पगि जिह मंदर जाहि। सो ग्रहु लछमी छाडत नाहि ॥
ममरे[१] रिदे लात की दई। पग प्रसाद श्री निश्चल भई ॥
नौतन भूषन पायो अंग। चर्न चिह्न राजो हमि संग ॥
करी कल्याण हमारी आए। क्रपा करी तुम दर्सु दिषाए ॥
कछु आज्ञा कीजै भृग स्वामी। तुम सभ विर्था अंतर जामी ॥
हे प्रभ मैं क्या कहो सुनाई। सकल विस्व प्रभ तुझै उपाई ॥
तोहि समसर दूजा ओरु न कोई। तोह भक्त करी मुक्ता होई ॥
आद अनादी नामु तिहारा। गर्भ योन ते तुंही न्यारा ॥
गोकलचंद नंद को नंद। सकल जगत मत तूं ही चंद ॥
जो महा कंदरा होत अंधारा। तूं तहूं प्रभ कर्ति उजीआरा ॥
घटि घटि तुमरी जोत प्रकासी। तूं ठाकुरु माया तोह दासी ॥

---

१. 'मम' का अर्थ ही मेरे है यहाँ 'मम' के साथ 'रे' का प्रयोग भाषा विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

पर्मानंदि माधो बनवारी। श्री गोपाल ग्वर्धनधारी ॥
गोपीनाथ अनाथ को नाथा। बिस्मदोहनी भरि काथा ॥
रूप नरायण सुष को दाता। भक्तिन सुषु ताहूं घटि राता ॥
त्रैलोक को नाथ बिहारी। असुर संघार्ण तुमही मुरारी ॥
तुझै त्याग जो अवर ध्यावहि। मानो किर्पति महि ऊर्झावहि ॥
हे प्रभ मुक्त तिहारी दासी। तुम प्रभ द्याल सदा अविनाशी ॥
क्षिमावान क्रोध घर नाही। सदा संतोषु तुमरे घटि माही ॥
उस्तत प्रभ ने अधिक उचारो। सांईदास सुनि सुर्ति संभारी ॥२३५

प्रभ सों भृगु आज्ञा ले धायो। ततक्षिण महि पर्थोदक आयो ॥
जैसी विधि भृगु आयो निहारी। सभ विधि ऋषो पहि आइ पुकारी
सकल ऋषीश्वर मन ठहिराई।
मुक्त को दाता श्री जादमराई।
ताहूं की सेवा चित धारहि।
औरु कोई को नाहि सम्हारहि।
सकल ने हरि सेवा चितु धार्यो।
श्री कृष्णचंद घटि नामु चितार्यो।
दुर्वासा विपु द्वार्का मांही। अपुनो भवनु तिन कीयो तहांही ॥
तांको ताहूं माह निवासा। भक्त कृष्ण को हरि को दासा ॥
तांके ग्रहि जो सुत उपजावहि। मातृ गर्भ निकसति बिस्मावहि ॥
जहा सभा जादम की होई। दुर्वासा सुत ले जावै सोई ॥
जादव को बुरा कहावै। उग्र सैंन को जाइ सुनावै ॥
पाप कर्ति जादम अधिकाई। तिहि प्रजोग हमि सुत विन साई ॥
अष्ट पुत्र हमिरे तजे प्रांना। इनि जादम कछु रिदे न आना ॥
इकि दिन दुर्वास जो आयो। बुरा कहित अर्ज्जन सुन पायो ॥
अर्ज्जन विप सो वचन उचारे। हे प्रभ क्रोध काहि मन धारे ॥
दुर्वासा तांको प्रतु दीना। इहि प्रजोग क्रोधु मन लीना ॥
सकले जादम पाप करावहि। इन प्रजोग मोहि सुत बिनसावहि ॥
अर्ज्जन सुण फिरि तिह प्रतु दीना।
इहि प्रजोग तैने क्रोधु कीना।

जो फिरि तोह ग्रहि सुतु उपिजचि आवे
तोहि वनिता जपन चितु लावे।
तव तुम मो को आइ सुनावो। वेग विलम कछु मूल न लावो।।
तव मैं आइ रक्षा करो भाई। अवि तुम अपुने ग्रहि बहो जाईं।।
दुर्वासा प्रतु पाई उठि धायो।
तत्क्षिण जोषिता पाहें आयो।
जो अर्ज्जन कह्यो आइ सुनाओ।
जोषिता को चितु ठौर करायो।
भई प्रतीत तासि मन भारी। सांईदास सतिगुर वलहारी।।२३६

गर्वु भयो विप वनिता तांई। भयो अनंदु तास मन माही।।
समाप्रसूत निकट जव आयो। दुर्वासे अर्जन जाइ सुनायो।।
अर्जन सुनत आयो तत्कारी। तांकी भुज महि वलु अति भारी।।
पिंजरु सर का तवी वनायो। रक्षा चाहति ताहि करायो।।
बाल्कु उदर सें बाहिर आयो। ताहि समे गनती चितु लायो।।
तांको मुषु किसे नां निर्षायो। विप वनिता तव वचनु सुनायो।।
हे प्रभ उौरु वालकु जो आवै। वहु हमि कों दर्सनु दिखावै।।
इसि वालक का दर्सृ न देषा। ना उनि वालक हमि को पेषा।।
अर्जन सुण लज्जा चित धारा।
धनषु वाणु तिन तव ही सम्हारा।
तिस जोहनि कों वैकुंठ आया।
वैकुंठ महि तिस को नही पाया।
वहुरो ब्रह्म पुरी चितु लाया। तहा आइ पुन दर्सु न पाया।।
ब्रह्म पुरी तज दीई तत्कारे। शिव पुरी माहे तिन पग धारे।।
तहा आइ फुनि ना निर्षायो। त्रैलोक देषि ठहिरायो।।
मन माहे तव लीयो वीचारी। मोको आइ वनी अति भारी।।
मोह वचन मिथ्या भयो भाई। अब मोहि जीवन नाहि भलाई।।
वन सें लकरी ले अधिकाई। तांकी लेकर चिता वनाई।।
चाहित आपस ताहि जलावे। क्षिण माहे वहु प्रांन तजावे।।
प्रदुम्न निर्ष ताहि उठि धायो। ततक्षिण कौलापति पहि आयो।।

श्री कृष्णचंद सों कह्यो सुनाई। हे प्रभ पूर्न जादमराई ॥
अर्जन लकरी अधिक चुनाई। चाहित अपुने प्रांन जलाई ॥
प्रदुम्न अैसे श्री कृष्ण सुनायो। सांईदास हरि जी चितु लायो ॥२३७

श्री कृष्णचंद जब इहि सुण पाई। कहु काष्टु क्यूं लेवो सुघु अधिकाई
अर्जन प्रभ सों विनती ठानी। हे धर्नीधर सारंग पानी ॥
दुर्वासा नित प्रति तुम बुरा आवै। सुत प्रयोग प्रभ अैसे भाषै ॥
जादम पाप करहि मेरे भाई। तिह प्रजोग सुतु हमि विनसाई ॥
मैं परज्ञा[1] तांसि कराई। हे प्रभ पूर्न जादमराई ॥
जो फिरि सुत तुमरे गृहि आवै। तूं मोहि षवर कर्नि चितु लावै ॥
मैं प्रतज्ञा तिह आइ करावो। तोह सुत बहु सुष उपिजावो ॥
तब तिह ग्रहि सुतु होवन लागा। दुर्वासे विधि सकल त्यागा ॥
तिन प्रभ मोसों आइ सुनायो। मैं बच तासि सुने उठि धायो ॥
पिंजर सर को तहा सवारा। बालक जन्म लीयो तत्कारा ॥
लेवत जन्मु अकास सिधायो। तब वनिता बिप मोह सुनायो ॥
जो औरु सुतु जन्म नसायो। ताहि दर्सु देषति चितु लायो ॥
अब जो बाल्कु हमि उपिजायो। तांको दर्सनु मूल न पायो ॥
हे प्रभ मैं सुकच्यो मन मांही। धनषु बाण ले चल्यो धाई ॥
त्रैलोक प्रभु देषि कराया। वहु बाल्कु कहूं सो नही पाया ॥
खंडित वचन हरि भयो हमारा।
तब काष्ट लेवनकों चितु धारा।
अर्ज्जन को हरि कह्यो सुनाई।
सुण हौ अर्ज्जन हमरे भाई।
चितु अपना तुम नाहि डुलावो।
हरि चर्नासों ध्यानु लगावो।
भलके[2] मैं तुम को ले जावो। सुत दुर्वासा के दिषलावो।
अर्जन सुण मन महि वीचारा। कहा कहति श्री प्रांन अधारा ॥
मोहि चित लेइहि उचिरायो। नाहित हमि को कहा रिषायो ॥

१. 'प्रतज्ञा' शब्द चाहिए।
२. 'भलके' पंजाबी शब्द है। अर्थ है—कल (भविष्यार्थी)।

त्रैलोक मैं देषि कराया। मैं कहू उौर नहि निर्षाया ॥
कौन ठौर सो मोहि दिषलावै। कौन ठौर से मोह बतावै ॥
अर्जन मन महि असे धारा। सांईदास हरि गत्त अपारा ॥२३८

निसवीती रवि कीयो प्रकासा। श्री कृष्णचंदि मन भयो हुलासा ॥
श्री कृष्ण गर्ड को लीयो बुलाई। तासि सवारु भयो जदुराई ॥
अर्जन कौ हरि सहित चर्यो। दुर्वासे सुत जोहन धायो ॥
अर्जन संग लीए उठि धायो। सप्त समुद्र के आगे आयो ॥
आगे जावन को चितु लाया ॥
सब ही सभु जलु बिंब दिखावे। अर्जुन निर्ष मन महि विस्मावै ॥
इकु स्थावरु तांहूं माहे। अति दीर्घ कछु कह्यो न जाहे ॥
इकि वसुधरि को तांपर वासा।
एक सीस तिह तिह पर ग्रहु भाई। अर्जन विधि ने दई दिषाई ॥
सेस गोद वैसे भगवान। अष्ट भुजा प्रभ पुर्ष पुरान ॥
नमस्कार जाइ कीयो मुरार। अष्ट भुजा हूं करी जुहार ॥
आवहु कृष्ण हमारे मीत। तुम देषन कीथी वहु प्रीत ॥
इकु शत वर्ष पांच अरु वीस। भए वितीत सुनो जगदीस ॥
तुमरे देषन की मन प्यास। वहुतु वढी थी हमरी आस ॥
इसि निमित्त आनें दिज बाल। सुन हो केशिव सदा कृपाल ॥
तुम देषे अब सभ गया। हर्षि हमारा तनु मनु भया ॥
मंदर के पीछे थे वाल। षेले थे तहा गए कृपाल ॥
नौ सुत दुर्वासा तिह माही। निर्ष्यो अर्ज्जन अति विस्माही ॥
देवकी नंदन ने क्या कीआ। ले आसन तिह गर्ड पर दीआ ॥
वेग माहि द्वार्का ले आए। इहि कार्णु श्री कृष्ण कराए ॥
आण दीए दुर्वासे तांई। दुर्वासा हिर्ष भयो अधिकाई ॥
अर्ज्जन गर्वु हृदे ते त्यागा। नीच मार्ग केरे वह लागा ॥
कर्नि कार्नि श्री कुंज विहारी ! अर्ज्जन इहि विधि मन महि धारी ॥
अर्ज्जन ने अभिमानु तजायो। सांईदास सुष आनंदु पायो ॥२३६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणानमोध्यायः ॥८६॥

पूतनां दंत वक्र से लीए। अधिक असुर संघारण कीए ।।
द्वार्का माहि भई कल्याना। सकल लोक पुर आनंद माना ।।
वैकुंठ वासी मन ठहिरायो। हरि चर्ना सेती चितु लायो ।।
सभ ही मिल मंतरु कीना। हरि दर्सनु देषन चितु दीना ।।
श्री कृष्णचंद वैकुंठ न आवहि। इहि प्रजोग मन महि विस्मावहि ।।
चल हो द्वार्का माहे जाही। तहा जाइ हरि दर्सुनु पाही ।।
सुंदर रूपु हरि दर्सुनि हारहि। चिहन चक्र हरि मन महि धारहि
सदा रहें हमिरे मन माही। हमिरे मन सें भूल न जाई ।।
पद्‌मज शंकर ध्यानु लगायो। मुरार वर्न कुमेर सभायो।।
सोंई दर्सनु हमि जाइ कराही। हरि चर्न सेती चितु धरही ।।
नान्हां अधिक सकल ही आए। द्वार्का पुर महि आइ ठहिराए ।।
प्रभ को आइ कर दर्सु करायो। महा अधिक सुषु सभनो पायो ।।
श्री कृष्णचंद तिह कह्यो सुनाई। वैकुंठि अनंदु हैं मेरे भाई।।
इनि सकल्यो हरि को प्रतु दीना। तोहि दर्सन आनंदु हरि कीना ।।
मघवापुर से अपसरा आई। इहि मतु कर अपुने मन माही ।।
जादम वनिता सुंदर अधिकाई। तिह उस्तति कछु कही न जाई ।।
मोहनीआ तिहि सर्नि दिषावहि।
तिह उस्तति कछु बर्नि न जावहि।
सकल ऋषीश्वर कह्यो सुनाई।
हे कौलापति सदा सहाई।
तुमरा दर्सु देषनि आए। मतु हमिरे मन जाइ भुलाए ।।
चिन्ह चक्र हरि मन ठहिरावहि। हमरे मन ते चूक न पावहि ।।
श्री गोपाल तिह को प्रितु दीना। भली वात तुम मन धर लीना ।।
जो मोह रूप तुम जाइ भुलाई। तीन ठवर मोह पावो भाई ।।
प्रिथमे तौ वैकुंठ मझाही। द्विती कहा[1] श्री भागवत माही ।।
तृतीआ ब्रिंद्रावन महि भाई। ब्रिंद्रावन महि रहो सदाई ।।
माषुन गोपन ग्रहि सें षावो। सदा सदा तिह महि उर्झावो ।।
अैसे प्रभ जी सकल सुनायो। सांईदास पूर्न सुषु पायो ।।२४०

१· कहा<कथा

इकि दिन प्रीक्षति प्रश्नु चलायो । श्री शुकदेव कों ग्राष सुनायो ।।
हे प्रभ सकली विधि तुम जानो । मैं तुम पाहे कहा वषानो ।।
किर्पा कर हमि बतिलावो । हमिरे मन का भर्मु हिरावो ।।
जादम सभ केते मेरे भाई । किर्पा कर मोह देह वाताई ।।
श्री शुकदेव तवी प्रतु दीना । हे नृप भलो प्रश्नु तें कीना ।।
जादम सभ कों जानो नांही । एती विधि ग्रावे हमि ताई ।।
तिन चटिसाल को मै जानो । सो तुम पाहे सकल वषानो ।।
जादम तिह पहि वेद पढाही । तौ मैं तुम कों सकल सुनाई ।।
तीन क्षुहिणी मेरे भाई । षोडसहस्र पांच लक्ष ग्रधिकाई ।।
सप्त सै ग्रौरु तासि ही नाली । इहि चटिसाल तिहि मोहि सम्हाली ।।
एक एक ओझै पहि पढिही । सभ विधांत मै ग्रापे उरही ।।
एक सहस्र एक सौ तिहि पाही । एक एक पहि वेद पढाही ।।
श्री कृष्णचंद भक्तिन सुषदाई । लीयो ग्रौतारु इहि कार्नि भाई ।।
भक्तिन सुष देवौं ग्रधिकाई । दुष्ट खलो को नासु कराई ।।
श्री कृष्णचंद मन महि ठहिरायो । जादम ग्रध्कि भए सुष पायो ।।
तोहि पाछे ग्रान भूपति ग्रावहि । जादव तिन सों वहु दुःख पावहि ।।
इनि पहि द्रव्य ग्रधिक मेरे भाई । ग्रान भूपति इनि दुष दिषाई ।।
कर क्रोधु इनि को प्रहारहि । हमिरो नामु इहि सकल विगारहि ।।
इनि पहि डंड लेन चितु लावहि । तव कलंक महि हमि उर्भावहि ।।
सभ जादम का तेजु गवावों । तव कलंक महि नां उर्भावो ।।
सकल जादम को लीयो वुलाई । तिन सों कह्यो सुणो मेरे भाई ।।
मैं जावति हों वैकुंठ माही । भयो समा पूर्न ग्रब वाही ।।
जादव सभ जव इहि सुण पायो । जगननाथ को तिन चितु लायो ।।
तहा ग्राइ चौपड चितु लायो । षेलति क्रोधु हृदे महि ग्रायो ।।
ग्राप मध्य युद्धु कर्ने लागे । ग्रौर वात सकले उनि त्यागे ।।
ततक्षिरण सभ ही प्रांण तजाए । सकल जादव बैकुंठ सिधाए ।।
प्रभ ऊद्धो सों कह्यो सुणाई । सुण हो उद्धो हमि सुषदाई ।।
ग्रर्ज्जन को तुम जाइ सुणावो । हस्तनापुर केरे मग जावो ।।
कृष्णचंदि वैकुंठ सिधारे । ग्रर्ज्जन सों जा कहो तत्कारे ।।
तुम सों कृष्ण कह्यो मेरे भाई । द्वार्का महि ग्रावह तुम धाई ।।

सकल लोक पुर के ले जावो। अपुने पुर मध्य जाइ वसावो।।
द्वार्का महि पूरों दधि माहें। आज्ञा कृष्ण लेहु मन माहें।।
असी तुम जाइ तासि सुनावो। सांईदास छिन मूल न लावो।।२४१

प्रीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे। मोह मन संचरु है अधिकाहे।।
जादम किउं आप मध्य भूझाए। क्युंकर सभ ही प्रांन तजाए।।
एहि वात तुम मोहि सुनावो। मेरे मन का भर्मु चुकावो।।
शुक देव प्रतु दीनो नृप ताई। सुण हो नृप दृढ होइ मन माही।।
दुर्वासा ऋषु भजनु करावै। श्री गोपाल चर्नी चितु लावै।।
जादव ने इकि दिन क्या कीना। एकु रूप तिन ने कर लीया।।
वहु गुणा आपिका तिह लीना। रूपु उदर के वांधन कीना।।
मानो गुर्बणी है मेरे भाई। वनिता रूपु तिह लीयो वनाई।।
चले चले ऋषि पाहे आए। ऋपि सौ तिन नें वचन सुनाए।।
एहि गर्बि ते क्या वाहिर आवै। हमि मनु अबि तें डुलावै।।
ऋषु सभ विधि जानण हारा। मन माहे तिन लीयो विचारा।।
कह्यो मोह सो कपटु कमावो। हमिरे पतीआवनि चितु लावो।।
इसे उदर ते बाहिर आवै। वही तुम सभ का घातु करावै।।
जबि जादम ने इहि प्रतु पायो। श्री कृष्ण पाह आवन चितु लायो।।
आइ कृष्ण सों बात सुनाई। सुण हो प्रभ पूर्न जदुराई।।
दुर्वासे ऋषि इहि बचु कीना। इही श्रापु हमि ताई दीना।।
इस ही गर्भ तें तुम हि विनासा। अव तुम त्यागो सकली आसा।।
कहा करहि प्रभ देहि बताई। इसि उपिचारु बतावो भाई।।
श्री कृष्णचंदि तिहको प्रतु दीना। सभ जादवनें मन धर लीना।।
इसि आपको तुम जाइ घसावो। ताहि घसाइ दधिमाहि रुढावो।।
जादव सभ असे ही कीआ। ताहि घसावन को चितु दीआ।।
सकल घसायो मेरे भाई। रंच रह्यो फुन घस्यो न जाई।।
ताह के हाथ माहि नही आवै। इहि प्रजोग घस्यो नही जावै।।
आतर होइ दधि माह रुढायो। मीन एक ले उदर करायो।।
वाही मीन वंधक कर आई। बंधक ने वहिजोयो हताई।।
मीन को ले आयो ग्रहि माही। उदर फारयों वंधक ताही।।

वाही त्राप निकस के आयो। बंधक वांण के मुष ले लायो॥
जो घसाइ अंभ दीयो रुढ़्हाई। ताहि कूंदर उपज्यो मेरे भाई॥
कुंदर सहित जादव विनसाए। ऋषि श्रापु पूर्न भयो आए॥
शुकदेव ने नृप को समझायो। सांईदास आनंदु तव पायो॥ २४२

इक दिन श्री कृष्ण बन महि ठहिराए।
जंघ पर जंघ धरि परि अटकाए।
पद्मु श्री कृष्णचंद पग माही।
मानो द्रिग मृग देत दिषाही।
मृग जान इहि वंधक मन धारा।
खिच वाण वंधक तव मारा।
नृप परक्षत इहि सुण उचिरायो।
हे प्रभ मोह मन संचरु आयो।
वंधिक बाणु काह हरि लायो।
हरि तांको सरु कैसे षायो।
एहि वीचारु मोह प्रभ दीजै। इहि करुणा कर सुण कर लीजै॥
शुकदेव कह्यो सुण हो मेरे भाई। सकल वात तुझे देउों बताई॥
श्री रघुपति जव भयो अवतारा।
तव रघुपति सरु वंधक मारा।
सुग्रीमु वालु कपि दोई भाई।
वालु नान्हां सुग्रीमु अधिकाई।
वाल कपि बहु जोरा कीना।
सुग्रीम सौ राजु षसि लीना।
ताहि भार्जा भी षसि लीनी।
महा कष्ट बाल विधि कीनी।
सुग्रीम को कछु बलु न वसायो।
आइ एक स्थावर ठहिरायो।
सद हल ऋषीश्वर को जहा वासा।
तहा आइ इनि कीयो निवासा।
रघुपति जानुकी जोहत आयो।
सुग्रीम नें तव ही निर्षायो।

हनूंमान कों दीयो पठाई। तुम इसि को ले ग्रावो भाई ।।
हनूंमान रघिपति ले ग्रायो। लक्ष्मरण वीर सहित सुषु पायो ।।
कपि पति ने तव कह्यो सुनाई। कहा चले श्री रघुपति राई ।।
श्री रामचंद तांको प्रतु दीना। जानुकी जोहनि को मनु कीना ।।
जब सुग्रीम इहि विधि सुण पाई। विस्मक होइ रह्यो ग्रधिकाई ।।
श्री रघुपति कह्यो कहा विस्मायो। कौन वात तुमरे मन ग्रायो ।।
सुग्रीम तव कह्यो सुनाई। मोह बनिता मोहि वीर हिराई ।।
हमिरा वलु तांसों न वसावै। वहु हमिरे पर जोरु करावै ।।
तव रघुपति तांको प्रतु दीना। इहि कार्णं संचरु मन लीना ।।
ग्रपुनो वीरु मोह देहु बताई। जिन तोहि बनिता लीई हिराई ।।
मैं जाइ तिस ताई हति लेवो। तोहि बनिता तुझि को ले देवो ।।
कपि पति प्रभ प्रीत वढाई। ग्रग्नि जराइ प्रतज्ञा पाई ।।
सुग्रीम के संग रघुपति उठि धाए। ततक्षिरण किंकिंधा निकट ग्राए ।।
साषा हेतु कर्के हरि धाया। सांईदास मन हेतु वधाया ।।२४३

श्री रघुपति कह्यो सुग्रीम के ताई। वाल को जाइ कहो ग्रधिकाई ।।
मुष से जाइ कर गारी देवो। ग्रहि से किवें वाहिर कर लेवो ।।
सुग्रीम सुनत वही उठि धाया। ततक्षिरण द्वार बाल पहि ग्राया ।।
वाह युद्ध दोऊ कर्ने लागे। तव प्रभ बाणु धनष धर्यो ग्रागे ।।
रघुपति सरु सांध्यो तिह मारा। तव ही वालकपि मुषो पुकारा ।।
हे प्रभ मै ग्रौगुणु नही कीना। तैं काहे मोको हति लीना ।।
रघुपति वाल सों इही सुनायो। तोह वारण मैं देरणा ग्रायो ।।
वाल कह्यो प्रभ जी कब पांवा। तत्क्षिरण ग्रबि मै प्रांन तजावा ।।
तव रघुपति तांको प्रतु दीना। एही वचु प्रभ तांसौ कीना ।।
श्री कृष्ण ग्रवतार लीयो जब जाई। तव तोह वाणु देउो मेरे भाई
वाही वालु वधिक होइ ग्रायो। ग्राण बांण हरि चर्न लगायो ।।
शुक प्रीछत को भर्मु हिरायो। इहि प्रतु निर्भौ सुषु पायो ।।
ऊद्धो हस्तनापुर पगु धारा। पांडो सुत पहि ग्राया तत्कारा ।।
ग्रर्ज्जन सों तिन ग्राषि सुनायो। श्री कृष्णचंदि वैकुंठ सिधायो ।।
तोहि कह्यो सुरण हो मेरे भाई। द्वार्का माहि ग्रावो तुम धाई ।।

सकल लोक पुर के ले जावो । हस्तनापुर महि आण वहिसावो ॥
अर्ज्जन इहि विधि सुण उठि धायो । ततक्षिण द्वार्का माहे आयो ॥
जब श्री कृष्ण के दर्सन आवति । विहंगम शव्द अधिक उचिरावति ॥
महा अधिक वनु सोभति भाई । मराल मोर तहा देत दिषाई ॥
अब जो लोक लेन को आयो । वन महि कहूं कहूं निर्षायो ॥
अहि के अहि सकले गिराए । गिर गिर पर्ति सेत महि आए ॥
कांग ताहि ऊपर कुलिलावहि । अपुनी भाषा शव्दु सुनावहि ॥
नायक सकल बैकुंठ सिधाई । अर्जुन आयो पुर मांही ॥
केतकि वनिता नैन निहारे । अर्जन निर्ष तिन कह्यो पुकारे ॥
हे अर्जन तोह कृष्ण सम्हारहि । चौपड षेलन कों चितु धारहि ॥
अर्जनु केतकि दिन ठहिरायो । वहि सभ बनिता लेकर आयो ॥
अपुने पुर महि आण वसाई । जो आज्ञा कीई त्रिभवन राई ॥
तव रचिना नंदि नंदन धारी । द्वार्का पूर दीई तत्कारी ॥
सेत माहि ताहि पूरायो । कौलापति इहि कर्मु कमायो ॥
साधो हरि चर्ना चितु धारो । सांईदास क्षिण नाह विसारो ॥२४४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्मस्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे नबेमोध्यायः ॥ ६० ॥

साधो मोहि विनती सुण लीजै । किर्पा कर्के श्रवणी दीजै ॥
जो कहूं चूक परी होइ भाई । किर्पा कर तुम लेहु बनाई ॥
महा अपार पार को पावै । सिंध अपार हाथ नही आवै ॥
एक समे उपजी मन माही । दश अवांतार ग्रंथु उपिजाही ॥
सांईदास किर्पा प्रभ कीनी । सकल विधांत वीचार के लीनी ॥
सांईदास हरि सर्नि तिहारी । साधो निस दिन कहति पुकारी ॥२४५

मै मतिहीन कहा मति मेरी । उस्तति कर सांको हरि केरी ॥
भाषा मैं जोड जोड कराई । मसा मसा जोड कीई अधिकाई ॥
सांईदास गुर सदा सहाई । तौ मैं ग्रंथु कीयो अधिकाई ॥२४६

जो मै औगुण हार गुसांई । तुम दयावान हों त्रिभवन सांई ॥
हमि जाचक हरि दर्सु जचावहि । तुम दया कर तुमरो नामु पावहि ॥

साधि संग करुणा हरि कीजै। इही दानु हरि जन कौं दीजै ।।
भक्त तुमारी घटि ठहिरावै। छिन पलु हरि जी ना विसरावहि ।।
श्री कृष्णचंद तुम किर्पा धारो। सांईदास को तुम निस्तारो ।।२४७

सदा सदा हमि सर्नि तिहारी। तुम दाते हमि दीन भिषारी ।।
श्री भगवत दस्म स्कंद संपूरण। पढे सुने हरि भक्त वढाइण ।।
जय जय जगननाथ जगदीस। पूर्ण पुर्ष प्रभ जग को ईस ।।
तांकी महिमा कौनु वषानें। गति मित वांकी क्या कोऊ जाने ।।
धर्म्म धरावति लीयो अवतारा। तांका सुण हो सभ विस्तारा ।।
लेकर आदि अंत बीचार्यो। गुर किर्पा ते शव्द उचार्यो ।।
जो चितु धर कर मन सुण लेवै। तांको जीवन मुक्त करेवै ।।
पश्चम दिशा लीयो अवतारा। मिट्यो तिमर भयो उजोआरा ।।
ताकी पूर्व वात वषानति। जो नही जानति सौं सुण जानति ।।
लेष की गति लषी न जाइ। वांकी गति कों पारु न पाइ ।।
महा समुद्र कों गति जानें। जो जानें सो आष वषानें ।।
तांको दर्सनु जो नित करही। जरा रोगु नां तिहि कछु लरही ।।
सुणो हृदा धरि जो तुमहि सुणावो। सांईदास नित हरि जसु गावो ।।

इति श्री भागवते दस्म स्कंदे श्री सुकदेव परीक्षति संवादे
दस्म स्कंद नबेध्याय संपूर्णम् ।।समाप्त।।

संमतु १८३५ वर्ष फालगुण मासे शुक्ल पक्षे १३ रविवासरेण संयुत्तांयं श्लेषानक्षत्र अतिगंडयोगाय कुंभार्क दिन २० तद्दिने वद्दोकी मध्ये लिषत आतमारामु धम्मी ।

पद साहित्य

रागु गूजरी

जगुतु सभु माया के फांस पर्यो।
भक्ति प्रतीति पुकारि सुनाई सूया सुनिति तरचो ।। १ ।।
माया के फंधि आदिअंतिलग निकस्या को दिषरावहु।
अंजनि सलाई नेत्री मेलहु आतम माह समावहु ।। २ ।।
सिंध बूंद ममता मनि मांनियो अचति जालु वहै।
निकटि दिवान गुरु नही बूझे किनी नि पुकारि कहै ।। ३ ।।
कर्म कर्तूति जरा की पूंजी जनिम जनिमि परितापै।
ब्रह्म सिजानि सहिज घरि सिंचै वीजु कीटि का मापै ।। ४ ।।
नामु पुकारि तरै कैई कोटी कजिल ते निकसाए।
भ्रम सागिर ते नाम सांईदास पूजी सचु मुक्ताये ।। ५ ।।

नाम सरि कछु नि लागे वीरि।
धर्न धरायसहति जो अर्पे भुगवे कर्म सरीरि ।। १ ।।
असुरिपति लंक समेत दैताहो सुरिपति सण भंडारि।
एक नाम सिमरनि के आगे इतिने दानि की हारि ।। २ ।।
चौदा रत्न सहत रतिनागिरि मुक्ता सिंधु समेति।
अठसठ तीर्थ घटिही मजिन भी नाह नाम के हेति ।। ३ ।।
है गै गौऊ पीतांबिर वनिता प्राग मकरि वति चीरि।
वेद लिषै फल नाह निरार्थ कर्म षेत्र सुष तीरि ।। ४ ।।
तीर्थ वर्त नेम तपि संजम मतु को निंदे जानि।
कहु सांईदास नाम की महमा होति नि नामा समानि ।। ५ ।।

जनि को नामु भरोसा हूआ।
पूर्ण इर्ण गजेंद्र उधारे वह गनिका वह सूआ ।।
सर्व रसां के ऊपिरि रारा जो पीवे सोऊ जाने।
आधा अधिक होति तहा निपजे अंति काल उरि आने ।।

अति बलिवंत राविण की सैना जोध युध्या पहुंचाए।
काटिनि सीस राम दल पहुंचे ते वैकुंठि पठाए।।
सरि सिहजा[1] परि सांतिल कों सुति नाम भरोसे परिआ।
तजि करि ताति दिष्ट के आगे वेदि स्मृति लै तरिआ।।
इसी नाम ते वेद भडोंहै फुनि वेद नामु प्रगिटायो।
यंत्र अजीति भए सांईदासा इति रसना जसु गायो।।

जिति निरती पहुंचे सो कौन कहे।
हउ भै चकिति भर्मका भूला, हं हं करिती निकटि रहे।।रहाऊ
अकारि मकारि रतिन वच, अनिभै मात्र कीं रूप नि रेषा।
जगिति भगित ते नाम निरारा इति साजनु प्रभु जाय पेषा।।
जिस विर्ष के तैं रस फल चाषे रसिक रसा अधकाई।
अषेउ विर्ष की छाइआ अषे पुहपां फला नि पाई।।
बनि षंडि जाऊ तिधिरि को भागे धरे ध्यानि बनि चाहे।
कदिली उलटि त्रिकुटी मूंदो रहित नहीं बन चाहे।।
मृिगि त्रिए जिउ मुसकाति रहे रह सकी सेज नि आई।
लैन कचु कंचनि तज सांईदासा ही ऊस पास सिमराई।।

दुभदा मनि ते कविहूं नि जाइ।
तोरि नि साके पिंजरी षगिरिपु जो हरिकी सर्नाइ।।रहाऊ
सर्व शास्त्र सुर्त संवृत्त लै दौरचो वेद नि बाति सुणाइ।
नेक रहति सभ बसुधा मापी जितिनी सुर्त बकाइ।।
आनंद दान तीर्थ करि मज्जनि निर्मल जलि इशनाइ।
प्रात मुष प्राहन संजुगिता कर्म सहित कठणाय।।
निविली कर्म भुअंगम भाठी नाम कविलो उलिटी उलिटाइ।
नगिन रहआ वण षंडि मै जटा जूटि उरि भाइ।।
इसुअरि हस अदोष अहन जल इहि गति लषी नि जाइ।
कहु सांईदास दुभिदा की चोटे कर्म सति कीटि भरिमाइ।।

---

१. शरशय्या।

दसि अवितार—

देह जिसौदे तेरो जनिमि सकार्था व्रिजि नाथ को लोरी देह री।
सुंदं[1] अधिक सुहाविणा तुम करी षिलौना लेह ॥
सकिल श्रिष्ट का बीजु था संषासिरि वेद लीए।
कुंदि पसारिन नाम ते तदि प्रभि मीति भए ॥
मधु कैटे कार्न कछि रूप द्रिग जनि चर्न समेत।
पिष्टी धरिती राष के आकासी ध्रू केत ॥
इह लरिका वैराह था मानोर्थ कार्ण छेदि।
सूकरि धरिती उधरी सेत सुमेरि सवेद ॥
नरि सिंघ न पूछति अर्ध नरि देषो चर्त अचर्ज का।
रबि नछत्रां वाझु काल हरिनाकस नाल इह वचनु था ॥
सेसाअर्जुन परिसराम अषेड कर्ण गिआ वस पिआ।
देष धेनि भुला जमदिग्न दी नाल कुठारे दे गति गिआ ॥
कनिक पुरी निज बंद सुरि तारिणणकों सुष हेत।
अधम दसेही कटाइआ इउ रघपति वांधे सेति ॥
बलि पै गए त्रैलोकनाथ गह अरिपी धर्न अचेत।
आध करु मापने इउ बाविन वेद समेत ॥
नौउचारि अठारा सुक वदनि अध्यात्म सकलि समेत।
अजिहूं वर्ण नि साकते कंस दलनि व्रज हेत ॥
वोधि गिआ सुरि चापिआ सुरिती का नौउ नाथ।
अंतु न पाने बोधि का तेरी कथा अगाध ॥
कलि युगि मातंगी घरि आविणा कलि कार्ण निह कलंक।
सांईदास दस अवितारा जो सुने वैकुंठ जाहो निसंगि ॥

दैया करि तारि पतित को तार।
अघमर्दन समरथ तुमु सूझो दीनानाथ मुरार ॥रहाऊ॥
तूं पतित पावन मै वडो पतित हों मेरे औगन गुण न बीचारि।
जो कछु घाटि कीए पतिता सो सो तुम तुम लेहु सम्हारि ॥

---

१. सुन्दर।

हेमटुकनिग्रा[1] तिल पलि रींधे ईधनि चंदन जार।
कदिली काट कंडग्रारी वोई ग्रयसो षेतु सवारि ।।
पांतो दुष्ट कुटल मति मेरी मैपतां सो कह्यो पुकारि।
छाडि चल्यो लय हाथ पछोरा जूए सो धनु हारि ।।
सिंध वीच झकझोरि करित हय ना उरिवारि ना पारि।
सांईदास के तनि ग्रबिरिदास कों ग्रपिना सुष दिषारि ।।

ग्रानंद को परिवाहु जना को दीग्रा।
जिन के भागि चूको ग्रमु तांका ग्रति प्रीतम करि तिनहूं पाग्रा ।।
गंगि प्रवाहु वहे, वसुधा परिगवुनु[2] करे, जाइ तीर्थ डोवे।
नामु प्रवाहु वहे हीयरे मै संत मिले ते परिगट होवे ।।
इह प्रवाहु प्रहलाद वचन हित सुकि नार्द रीझायो।
चारों वेद करें जाकी स्तुति धंनि वदनि जित व्यास सुनायो ।।
गुरि की क्रपा साध की संगति ग्रानंदि की निध ग्रगाध उठीग्रा।
किर्न विहंग नाम रुचि सांईदास चात्रक को चित पावस लीया ।।

रागु भैरों

जागीयों क्रपा निधानि स्यावरे कन्हाई।
उडिगनि ग्रबि भए मलीनि दीनि टेरति द्वारि द्वारि ।।
सुरिभी सभ हूंग करित ग्रौध रजिनी ग्राई।
दिउज उचारि निगम करित प्रातिहूं सिरि सिषा धरित ।।
वार्ज[3] ग्रति विगस भए देषति ग्ररुन्हाई ।।
गाविते गुपाल लाल नंद लाल के दयाल।
व्रजि की व्रज नारि जेती ग्रारिती ले ग्राई ।।
निर्षती मुषारि बिंद बारि देत कोटि इंद।
नरिहरि हरि चर्नन ते ग्रानंदि निध पाई ।।

---

१. संभवतः यहां 'हेम मटुकनिया' शब्द है।
२. परिगवनु <परिगमण = परिक्रमा।
३. वार्ज <वारिजं।

स्वामी हम वारि वारि दासु तिहारो,
तू ठाकुरु हमारो ।।
पीसना करो पांणी भरों असु अ सिथान सोचो अँगना वहारो ।
काग उडारो लोचौ पैं लोचो उ पिले ले आवौ काठी कटावो
औरि लिआवों घासा ।
हम तो ठाकुरु करि जानै तुम करि जानो दासा ।।
चंमेली मलो कांघी करों आसन पैठावो ।
चर्न पषारो धोती पछारो इह औसिर मोह पावो ।।
ले भारी रहो चर्ण गहो ठाढा दिज द्वारे अंवृत जलि लेन कों ।
मों को स्वामी चितारे महाराज तुम कों सभ लाज अपुने करि जानो ।
सांईदास की वेनती फुन गर्भ न आनो ।।

ब्रह्म हस्त, भगिवानि पादके, ईसरि मुकटि वसाई ।
भेद पषांण सगर तै तारै भागीर्थ कों देन्ह वडिआई ।।
भउो रहस सहस्र समुद्र को सुरि नरि कहे गंग वहि आई ।
सांईदास इहि गंगा जलि अैसो निर्मल द्रिष्ट परिआ कोऊ नर्क न जाई ।।

गंगा जी तेरे दर्सन तो बलिहारी ।
इह गंगा जलि अैसो निर्मल जिन सकिल श्रिष्ट तारी ।।
शाम शरीरो उपिजी गंगा मुकिटि वसी महादेवे ।
भूधरा जांकी महिम न जानी सुरि नरि जांकी सेवे ।।
सर्बत गंगा दुर्लभ कहीए तीनि विशेष असथाना ।
दिष्ट परी सभ पाप उतारे पीविति महिम न जाना ।।
जंगम जोग जती संन्यासी पीवितकै अविघाए ।
हरि दुआरि हरि मूर्त पर्सी जनिम जनिम कै लाहे ।।
सागिरि संग रली भागीर्थ कीन्हे अनिक तारंगा ।
सांईदास मनु भजनि होवे वैकुंठ जाउ निसंगा ।।
इह पराग मनिसा कों दाता वेणी संगिम तीरे ।
दिष्ट परी सभ पाप उतारे निर्मल वुद्धि सरीरे ।।

रागु प्रभाती

द्यालि[1] हो क्रपाल माधो सभनि के प्रतिपाला।
आगे आवित पै पठाविति पाछै आवित वाला ।।रहाऊ
बनि कीटि पंष पसु विराजित कछु गांठ ना बंधाइओ।
देन हारि करि संम्हारि विरिद ही वहाइओ ।।
पष्यान मध्य गुफा कीटि मार्गु नहीं कोऊ।
तांकों कित भांति देति सभनि का प्रभू सोऊ ।।
भूम मद्ध षै अकासि जलि मै जों जीआ।
कर्न कार्न प्रभ अपारि जानिआ सो कीया ।।
जैसे जानि तैसे देति आतिमे विसुवासा।
चर्न ओटि रिदे राषु तां सो सांईदासा ।।

हर्ष हर्ष हरि को जसु गाउ।
वारि वारि फिर जन्म नि आउ ।।—रहाऊ
मूल द्वारि की रोंको वाटि। चारी देत है वज्र कपाटि ।।
नाभ कुंडली भओं प्रकासा। रिदे सरोवरि कौल विगास ।।
शिव अरि शक्त समोकरि जानो। पौनि मध्य गुरि ज्ञानि विषानो ।।
जबि लग रसना पीवै पानी। तवि लग भज मनु सारंङ पानी ।।
तुरीआ तत्त तहा अनुरागा। वादर बिनु घनि वर्षनि लागा ।।
फूटा तिमरि जोति प्रकासि। इह विध प्रणवै सांईदास ।।

कैसे मै वर्नो तूं अरिधक उरधं।
वर्न नि साकों द्यायाल बाल कवि रिधं ।। —रहाऊ
विरछो नि पत्रो न मूलो नि डाली।
पुहपो नि गंधो बासो नि माली।
तेरा निरभौउ वाडभन्नानि घडिआ।
वजे निशानु पुरातमु जडिआ।

---

१. दयाल।

सुंन सधा सनातिन साषी।
रंचक एक महादेव न भाषी।
आतम ब्रह्म भया निह्केवल।
सांईदास अर्चा नि पूजा न देवी नि देवलि

सुनि लीजे भगिवानि बिर्था मेरी सुनि लीजे भगिवानि।
मैं अकेली एह पांचि वली है मारि कीऔ हैरान॥रहाऊ
लोभ की लहिर लपेट लीओ है क्रोधु निचावै तानि।
भ्रमती मनिसा टिकनि नि देती जिउ भ्रम तर्फत है स्वानि॥
काम कुचील कर्त हैरानी त्रिशना की संतान।
मोह जंजीरि पर्‌यो अति भारी छूटि गए अविसांन॥
पलिक न न्यारी होइ जीइते कपटि कर्न की बांनि।
तुमरी दैया बिन कैसे छूट दुष्टन के वस प्रांन॥
मोतनि पीर कहा कोऊ जाने प्रभ मेटनि की बांन।
सांईदास निज दुआरि पर्‌यो है, तू विपत निवारनि शाम॥

षगि नगि मृग चात्र धनिष[1] कुंजरि भूधरि भ्रिग।
कविल काम घन चंद्रमा एह कही अति सारंग्य॥

दूरि नि जावहु जनि राघवे षेलो आङनि घर्के[2]।
नैननि सो न्यारो जनि टरो मोरी छतीआ धर्के॥रहाऊ
निस दिन रहत चटापटी राम तोके डर्ते।
धनिष बांन धरि अपिने हाथ तो रोग तर्के॥
एक वाति मै सुनि नीके चितु धर्के।
लंकापति कैसे मरे अभमानी डर्के॥
कौशल्या विसमे भई जीय आनंद भर्के।
मोह अचंभा यगिदीस कहा नान्हो से लर्के॥

---

१. धनिष < धनुष्य।
२. आंगनि घर के।

सषी ए मधबनि विषु भओ है छाड चलै अबि रीत।
वादिर होए नैन दुइ हर बिनु वर्षे नीति॥
असअनि[1] नान्ही वूंद जिउ कुचि ऊपरि ढुर आह।
एह प्रभु है सांईदास कों हम को किउ नि मिलाह॥
एक चात्रक अरि वैन सुनि सुनि धुनि विकल भई।
टूटी जाति नि स्याम सो प्रीति जो अपै भई॥
प्रेम चषाओ पस लीओ जाति न बाति कही।
सांईदास गोपी कृष्ण बिनु चात्रक होइ रही॥

राग विलावल सुधि

ठाकुरि मेरा रंगुला सभ रंगि मै राता।
दीनानाथ दियाल है सभिहूं सुषिदाता॥—रहाऊ
अंतिरि जामी जगि पिता सभ मै जांकी वास।
मतु कों जानै दूरि है घटि घटि ही प्रकास॥
क्रपा होवे गुरि चर्न ते कसक चिन लीजै।
गुपति चिहनि जा पसरया अपिती जिपती जे॥
जहां जहा देषो तहा तुही दूसरा नाही कोइ।
सर्वषंड व्रहमंड मै तत्त जोति की लोइ॥
सहज मिले सुष पाईए दुष दीने डारि।
पूर्ण गुरि मिलाइआ सांईदास वीचारि॥

मुषि बिनु अंवृति मै पीआ मैयों भयो दिवाना।
सुधि वुधि भूलि देह के कछु गुरिमुष जांना॥—रहाऊ
जानि समानि जानि मै ग्याना सो ज्ञाना।
षेल हमारी परासो जहां ग्यान नि ध्याना॥
तीनि तजे तुरीआ तजी पर्से भगिवांना।
सांईदास उ दासमति तहां पदु निर्वाना॥

---

१. असअनि > आंसू*।

राग तिलंगी

जो कहे यारा जौ कहे गमु कोई उो नाही।
महिल फकरि के माह आवे किन्हे शौकहै ।।—रहाऊ
दुनिआ वातिशाही चंद रोज फकरि अटिल वातिशाही।
रोज नौतनि दीवानु सदा दा तहा गमी नि काई ।।
फकिरि के तषित पर वषुतु है कोई जौहरी जांने।
जोरु जुलुमु तहा कछु नही मुलुषु जापता मांने।
तीनि लोक के अंतिरे वडा फकरि का बांणा।
आंनि जगति मांने सकल नही जोरु जुलिमांना ।।
राह मो परी है जेवरी मांनो सापु दिषाई।
मैहर्मी थे निर्भे भए अजानि भै षाई ।।
निर्दुदी निहकामता भूले हाल दिवांन।
सांईदास के दयाल क्रपाल भए लगा चिहन का वांणा ।।

भजु राम राम सुणु नंदि तूं व्रजि को व्रजि तेरो।
आगे भूम भंडारि तिहारो मै आवित नही नेरो ।।
मथुरा जाइ मिलयो वसुदेव कों गहि अंचिर करो मेरो।
तुम तो लोक वडे अनिचारी गहि सुतु राष्यो मेरो ।।
किउ पगि उलिट दीए फुनि तांको ना कुमत लगि तेरो।
सांईदास के नंद के लोइ नि देष्यो तवि जसुदे उठि टेरो ।।

लाडुले जनिम की भूम पछानी देवकी गोदि जाइ जवि वैठे।
नंदि भैया हैरानी थाकी कुल वृजि गोकुलि थाको ।।
कठिनि वृथा मनि मानी उठाई असुर हाथ जब दीओ।
एक घटा विहानी ।।

रागु गौरी

किउ विसरी मनि किउ विसरी राम भगित मनि किउ विसरी ।
उहु ठाकुरु सभना को पूर्ण पर्मानंद गुपाल हरी ।।—रहाऊ
ममिता पटिल पर्त निसिवासरि डाकन डोरी उमिग लरी ।
और सभे ही तुमरे अंतिर कौनि कुमत लगि भगत टरी ।।
लालच लेन देन तनि पहर्न ग्रह अंतरि कछु काजि करी ।
लोभ मोह अभमानु नि विसर्यो काम कला चित नारि धरी ।।
इसि वीर्ज ते विष फल लागे रवि-सुति तलबि दुआरि षरी ।
आजु काल छिन पलक महूर्त गागिर फूटे जरि कजरी ।।
करु हरि भजिनि साध की संगत जो सुक व्यासे मुष उचिरी ।
कहु सांईदास दास के दासा औरि नही कोई गत हमरी ।।

पारिस ढूडनि अनिकति जाये,
कितिहूं नि दूरि अदिष्ट निकटि अति साध संगित ते सहिजे पाये ।।
अष्ट धात जित कंचनि होवे सो पारस पास कुवेरे ।
यंत्रु मुक्त का पारस गुर पहि निगम दिष्ट कोऊ हेरे ।।
जिह पारस प्रहलादि कंचना जरा मर्ण भ्रम मेटियों ।
सोऊ पारिस सुक शंकराचार्य अक्षय द्वादस भेटयो ।।
यंत्र यंत्र मै सकिली सम्या हंस हंस करि गावे ।
तेऊ पारस वैकुंठ निकटि अति परि पीविति सकल अघावे ।।
नषि सिष लौ एका मति उपिजी दूजी नाह वरेहा ।
सूरि किरण वादरि जिउ सांईदास मणि चमक तिवि विदेहा ।।

कहो कोई नाम विनु मुक्ता,
देहा पुरातन ले चल्यो गज इंद्र ध्रुगन सूहटा सुनिता ।। रहाऊ
शिक राज बध कै हाथ थाकै कलिप यंत्र नि पात ।
तेरे नाम लगि मुक्ता भआ कछु वारि नाही लगि जाति ।।
सागिर जसु पठ जवाहरी विच कचु तै पाडो जमणा मर्णा ।
नामे की नावे जो चढे तिन्हा पुछो अजाणा ।।

करि कोटि तीर्थ दान संयम आपहूं षाता।
देह माह तत्व नि विंदही फिर जूंन सभ भ्रमता॥
अपंष पंषी तने माही असरीरि सुर्त निधान।

कहु कोई नामु विनु तरिआ॥
करि लेहु करिणा पहुज रहु तै शर्मु किउ करिआ॥—रहाऊ
जित नाम गनिका ऊधरी प्रहलाद सर्न पैआ।
अटिल पदिवी दई ध्रू को नाम संग गहिआ॥
अपिती जमन मूर्ष निरा कै वारि आवै जाइ।
समिझइ निही समिझआ क्या उठे भर्म भुलाइ॥
महल मंदिरि देष कै मनि मै कीओ अभमांनि।
एह माया थिर कछु नाही हरि चेत लै भगिवानि॥
गोविंद नामु अमोल हीरा करि साध संगि निवासु।
चर्न कविल ऐक वेनती कहियो प्रभ सांईदास॥

रेजनि अनिकति जाये लैन।
दुर्गंध देही जगित की संतनि की कामधैन॥—रहाऊ
संति चर्न पहु वेनती इकु अचरुजु कहा जु आषो।
लष सागिर अरि बूंद एक है सभो दिष्ट करि राषो॥
जोति प्रगिट अरि जात नाह जनिमे ते अंत मरे।
गगिन की निर्त नि जानिही सपत प्याल परे॥
आनि नि सको अगोचरी क्या आनो आनि रही।
सांईदास तेरे ही अंतर बस रहआ मुशकल कर्न सही॥

साधो एह अचिरिज मोह आवे।
इस मंदरि मह कौनि वसेरा कौने दह दिश धावे॥
रकित विंद ते साजि निवाजा किह विध रामु समाया।
कीटु भआ किरयनि मै वसिआ नरिकै कौनु सिधाया॥
लोकु कहत एह मूया प्रानी मूआ कौनु कहीजे।
मूए ते कहू जाइ निल्हाना एह उतिर मोह दीजै॥

सुनी अति निकटि कहनु नही आवे विनु देषे क्या कहीए।
सांईदास भजु गुरि की सर्ना भ्रमु फूटे सचु लहीए ।।

कित विध राषो मोह मुरारी।
तनि अनंग मृग माता इहि वियोग मै भारी।।—रहाऊ
विदआ कर्त जात निसिवासरि नोरि प्रवाह जो वहउो।
सील संतोष दान तप संयम करि लै वेद पुकारत रहिउो।।
दो नेत चीत पांचक आगम पंचे मोहे एन्ही।
अवि मोरी काम कुटल मति वयरी वांधनि धीर्न देन्ही।।
आदि अंत मध कीर्त की निध अषे नि आवे गाथा।
इह जगु पुहप फध प्रीति का अलिवरि जिउ पै फाथा।।
मै तो भील भर्म सपूर्ण जिउ किउ भीत चुकावो।
सांईदास की सकल वंदिना अपिना करि छुटिकावो।।

तत्त्ववेत्ता विर्ला कोई रे।
जै तै ब्रह्म पछान्या उनिमनि तेरी अभे सरीरी होइ रे।।—रहाऊ
थीउ तारु तारु आप ही तेरा तार्नहारि नि कोइ।
भौजलि तुल्हा[1] तनु थीआ जे तत्ववेता होइ रे।।
चारो पढे मुषागरी नित कंचुनु देह तन तोल।
गुरि विनु पारि नि उत्तरे जे तीर्थ पीवे भ्र कोल।।
जटा मुंड तन लेपना करि पात्री करे अहार।
गुफा सरीरे जोगना जे ढूंडे अलिष अपार।।
तीर्थ वेद वरित नेमु गुरि नामु जिन्हा परिधानि।
जगित षलौना जोगना तत्तवेता मनो नि मानि।।
भविन चतुर्दस तीन लोक मै अनिकति ढूढनि जांह।
सांईदास वूंद समानी सागिरे सागिरि वूंदे माह।।

हरि भज भर्म सभ फांसी।
पाषंड छडि निवारि दुर्मत चेत अविनाशी।।—रहाऊ

१. तुल्लहा=छोटी नौका।

इकु जान रहु कोऊ नाह दूजा अकथ कथियो नि जाइ।
चलु अचल मूर्त एकु कहीए सर्व रहउो समाइ॥
करि कोटि तीर्थ दान संजम युगित जोग फिराह।
जटि मुंड लेपनि सभ अविर्था जा दुष्ट वस गति नाह॥
सर्व भूत सरीरि देषे तुही प्रान अधारि।
सभ होइ रहु तहा कोट तीर्थ दआ ब्रह्म विचारि॥
धूप दीप तहा पांनि तुलसी चोए चंदन वासु।
कौंन पूजा करो तेरी सर्व तुही निवासु॥
जहा पुहप तहा विच वासु तूहे तेरी कौन पूजा करो।
सांईदास होरु काई ओटि नाही तेरे नाम ही लगि तरों॥

माधो जी मनु पकर्त नही ठाह।
क्रियाहीन नाउ अति डोलित जलि सागिर अस गाह॥—रहाऊ
अगन तपति प्रतिबिंब भान को मृगु भूल्यो जलु जान।
अैसे ही रघुनाथ चर्न तज कहा कर्त मनु हान॥
कीचि विच वास रहे जल-दादिर[1] कौल प्रीत नही जानी।
लोग विलोक स्वाद सभ लपटउो विसरउो सारंङपानी॥
सूघत फर्त अनेक अर्न त्रिण निकटि नामु रस तेरे।
नर्हरिदास तुछ जगि जीवरण हरि भजु सिमुरु सवेरे॥

अवि मनि चेत लै गुरि ज्ञानं।
जनिम मर्न का संसा चूका पाए पर्म नधानं॥—रहाऊ
अगम गंम जांके कछु नाही अबगति अपर अपारं।
सुंन्न सविद ले रहति निरालम तत पद करि विउहारं॥
गर्जत गगिन मगिन गति उपिजी सहिज भाउ रिद आनं।
पसरी किर्न उजिआरा हूआ अधै उर्ध समानं॥

---

१. जलदादिर >जलदादुर=पानी का मेंढक। संपूर्ण पंक्ति का अर्थ है—जल से उत्पन्न होने वाला मेंढक कीचड़ में रहता है और वहीं कीचड़ में कमल भी है, पर मेंढक की उससे प्रीति नहीं। इसी प्रकार सांसारिक प्राणी की इसी घट भीतर रहने वाले कमल स्वरूप, प्रभु से प्रीति नहीं है।

शविद भेद घटि भीतिर पैठा लैग्रा लीन लिव जानं।
कहु सांईदास विकटि घटि पाए वाजह ग्रनह नीशानं।।

ग्रवि मै सांचो पतित हरी।
ग्रौरि पतत सभ झूठ कहित है कहीओ वाति षरी।।रहाऊ
सूरि कहा दो काम विगार्यो पतित ही नामु धराइयो।
ग्रंतिरि ध्यानि प्रेम लिव लागी सहजे ही गुनि गाइयो।।
ग्रजामल्ल वै गनिका कहीए भक्त पुरातन ग्राही।
ग्रापु दीए ते मैल उतारे प्रगिटि भए जगि माही।।
सुनिने जाह न गिनने ग्रावह जो हम कर्म कमाए।
ग्रागे हूए नि होवे कविहूं नए नए उपिजाए।।
पापु करे सो पापी कहीए ग्रनिकीए किह पापी।
सांईदास सर्न भजु हरि की हरि ही सर्व बिग्रापी।।

जानिकी नाथ सदा सुषदाई।
लीजै भोजनि श्री रघुराई।।
माति कौशल्या करी रसोई भोजनि ग्रानेक प्रकारि।
छपनि भोग छतीसे विंजन षटिरस धरे सवार।।
गंगा जल इंद्र भरि ल्याए चर्न पषाले हरावति वीरि।
ग्रौधपुरी मंदर ग्रति नीको वैकुंठ धाम श्री सर्जू तीरि।।
पनिवाडा सनिकादिक ल्याए जै विजै दोऊ ठाढे द्वारि।
पान सुपारी लौंगलाचे नार्द ल्याए भले वीचारि।।
घंटा तालि मृदंगि झालरि वाजे संष सविद झुनिकार।
पनिवाडा संतनि कों दीना वांकी महमा ग्रपर ग्रपार।।
सनिमुष राम बांवी भुजि सीता पुहप पत्र लीने करि धारि।
सांईदास ध्यानि रिदे पाही दर्सन दीजै नेत्र निहारि।।

शबदि सुर्त दुइ कंनी मुंद्रा पर्मत वाहरि षिंथा।
सुंन गुफा मै ग्रासनु वासनु कलपति विवर्जत पंथा।।
ग्रषंड ब्रह्मंड विभूत को वटुग्रा एह जगु भसमाधारी।
ताडी लागी त्रिपल पलटीए छूटित नाह पसारी।।

मेरे राजनि मै वैरागी योगी मर्तन सोग वियोगी।
जनिममर्ण का संसा चूका फिर आवागविन न होगी॥
मनि पविना दो तूंबा करिहों सार्द जुग जुग साजी।
थिरि भई तंती टूटित नाही तौ अनिहदि किंगुरी वाजी॥
सुन मनि मगुनु भैआ है सिरपरि ता माया डोल नि लागी।
सांईदास तहा पुनरिप जन्मु नही तहा षेलेगा वेरागी॥

रागु आसा

बाबा जी निधानि निध तेरे पास।
देष निग्म दिष्ट निरंतिरी गुरि पूछ के नरिदास॥
जित निधी पसु पंष गनिका मुक्त ठौरि निवासु।
सोई अभे पदि ध्रू नारिदे पीआ वेद रस सुक व्यास॥
सकल भूति व्यापता प्रभ वनिउो घटि घटि स्वास।
सांईदास को प्रभु तिति किते प्याल[1] मध्य अकासि॥

या गति कहे जे कोइ जन जान।
गुरि क्रपा ते भर्म भागे प्रगिटि होत नीशान॥
कहा जे मै कह नि सकों अगिम का व्यवहारि।
अनह धरि परे भाती तहां भूभनिहारि॥
सहिज के मैइदान या मनु सुन धरो ध्यान।
विमल गति ते तिमर फूटा तहा पूर्ण ज्ञानि॥
कोई जनि जान हरि रसु पीवे अंवृति उलिट मज्जनि करे।
सांईदास निवासु ऊहा जहा वहुड नि मरे॥

हरि भजु जनिमु लेह सवारि।
तूं भर्म भूला क्या फरे हरि चर्न हिर्दे धारि॥
वेद स्मृति सकल उचरे वारि वारि पुकारि।
रघुनाथ विनु कोऊनाह समरथ जो उतारे पारि॥

---

१. प्याल=पाताल।

भूपत ति राजे[1] जाह छिन मै नाह थिर संसारि।
अभमानि करि सभ पचे धर्नी देष रिदे वीचारि॥
अोग्रात चंदन अगिर लेपनु सहिज करि सींगारि।
साहुरे तै जाणा सिरपरे पेउके दिन चारि[2]॥
भजु सर्न हरि की छाड दुर्मत दुष्ट सकिल निवार।
सांईदास की इक वेनती करि सर्न सर्न पुकारि॥

पीउो रसना रसु जो मुनि जनि पीता।
जिन पीआ तेऊ नरि सकल अजीता॥
एह रसु अंमृत शकली स्रिष्टी। विरले को प्रगटि औरि अदिष्टी।
वेद पढो तट देहरी अघारी। निर्भोउ पदि जित तेरी निर्तनिहारी॥
खेचर पाषंड भर्म नि भागे। काचे मटि सो समाध नि लागे।
कौनु निर्त जित तेरी पौहच नि पायो।
व्याघरि होवे सांईदास कूक सुणावो।

सही कर्न को मै कित घरि जाई।
नेत्र निहारी बसआ सकिली थांई॥
तीर्थ वेद सकल वैरागे। जित घरि जाई दियाला तितहीं तू आगे।
दू चौ पद षग त्रिकुटी अजेती। प्याल परे रे दयालि गगन समेती॥
रवि सागरि वय सस जो निछत्री। वण फल पेडी दिआल पुहपी सुपत्री
गुरि पुछ सांईदास ढूंड लै आये। कांते की कनिक कुरंग जैसे नापे॥

---

१. भूपत ति राजे—यहां "ति" का भाव अते=और से है।
अर्थ होगा—भूपति और राजा लोग एक क्षण में चले जाते हैं।

२. साहुरे=ससुराल, पेऊके=पीहर, सिरपरे=अवश्य। तैं=तूने। संपूर्ण पंक्ति का अर्थ इस प्रकार है—तूंने ससुराल अवश्य जाना है, पीहर के (यह मौज मैले के) चार ही दिन हैं। इस भाव की जायसी के पद्मावत की इन पंक्तियों से तुलना कीजिए—
ए रानी! देखु विचारी। एह नैहर रहना दिन चारी॥
जो लग अहै पिताकर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम कित यह सरवर पाली।
मानसरोदक खंड

घरि विच वसग्रा तेरी हरि निर्त न जानी।
एह क्या बोले साधो ग्रभै विरानी ।।—रहाऊ

मूलु संभालु घरि कित बिध हूग्रा।
जित विध हूग्रा दिग्राल जाइ वसूग्रा।
इटा बूंद रकत को गारा। धनि धनि राज उसारिण हारा।
इस घरि को नित पोचे परोले। ग्रभे बिरानी साधो एह क्या वोले।।
घरि विच तजि गिया कैई कोटि मुकताहल।
जांदरि षोले सांईदास ग्रनंत गुंजाहल।

सुर्त रही सुर्त कहा गई। चाहत थाके दयाल इह नि भइ।।
कहा ते ग्रावे कहा ते जाइ। तांका मार्गु कोई न बताइ।
पाछे पकरि पकरि रवि किर्णी। नेत्र निहारी दयाल निज घरि फिरनी
कहिना श्रुना सभ तुमरी गाथा। सांईदास का प्रभु दह दिस लाथा।

जसु गाउ छाड़ दुराउ रे जनि जानि हरि जसु गाउ।।
तुछिमित भलि मूलु वांकां तू ग्रादि इस की जानु।
ग्रस्त तुचा का पिंजुरा विच नामु हे परिधानु।।
तै न सुनि ए गाविता ग्रनि पास गावै गीति।
मलि नीजि गाडियों ग्रातमा मिटि गई ज्वाला भीत।।
जे लहै ज्वाला भाग तेरे जरा मर्ण ते रहे।
ग्रगाध ग्रवर्ण ग्रकीत को पर्वाहु विच वहे।

सागिरि ज बूंदे माह था फुनि रंच सागिर पई।
सहिज के घरि मजुरे जित जाय पिछली क्षयी।
मराल सागरि ग्रंतरे चुनि चुनि संघूटे खाह।
ग्रंभ विनु सागिर सुपट सांईदास झोल पीऊ ग्रघाई।

संतो भक्त[1] का यहि स्वादु।
गज इर्ण ध्रू गणका तरी तित्परस तर्यो प्रहलाद।

---

१. भक्त<भक्ति।

कपिलादि सुकि जड भर्थरी तिन अभे पदि रम रह्यो।
जाके पदिम नाभि निधानि नारद निगम दिष्टी लह्यो।
वपरी जु गौतम भार्या शीलवति जतिनी।
लज्जा निवार्ण शर्ण उविरी भोरथे पतनी।
प्रभ डंडयो नघि तिलक भूला उरिग देह निवास।
अपिती जु जगु भौजल वहे तेरी शर्ण सांईदास।

तेरे सिमरण की गति मै नि आवे।
विशु की वेल रही छाइ अंतर विषआ नि छाड सुभावे।
ओहो गर्भ भला जनिमे ते स्मिरी जित उरि ध्याआ।
लिषन ललाटि चोटि मूडिन परि सिमरण गोत्ता आया॥
गुडती दुग्धु जिमूल रसा को आनंदि अनंगि उठाआ।
चित्त चित्तरंग चातुरी उपिजी पढ जन्मा किने न पढाआ॥
जौबिन गिआ करि अपिनी गाथा अभमानियो रूस भहूटा।
दीपक जोति लिलाट चंद्रमा किउ वले जु तेलु निघूठा॥
आदिज भई अंध का पीसो क्या जित मुष मोडे।
कहु सांई दास भजु गुरि अपिने फिर मिले त कबिहूं बहोडे॥

लाहा लेहु रे कोई लेहु
मानिस जनिम दुर्लभु है जिण चल्यो अविसरि एह,
लाहा लेहु रे कोई लेहु

निसि विर्छे पंषी आइ वसयो उठि चलयो प्रभात।
आआ त स्वास नि आइआ कछु वारि नही लगि जाति॥
जैसे धनि जुआरी संचआ वहु षेलन के चाइ।
षेल के धनु हारियो धन हार के पछताइ॥
जैसे नीर भर घरि चली साधनि सिरो उलिटि गागिर परी।
पछुताहगे पानीहारि जिउ, ग्रह जाइ रीती षरी॥
जैसे फूक भरि सीनाह[1], छुटिकी पविन की तेरी देह।

---

१. सीनाह=तैरने का साधन। पानी की मशक के समान बकरे की खाल जो चारों ओर से बंद होती है, एक ओर से मुंह से तैराक हवा भरते हुए उससे तैरते हैं (पंजाबी शब्द)

राम की भजु सर्न नरि हरि अंति एह तनि षेह ।।

रे मनि अपति जप हरि नामु ।
श्री पतित पावन विर्द जांको नाह यम सो कामु ।
मृग चाह विध नरि सिंह बांध्यो बधक कीउो उधारि ।।
अविर सर चरिणन लिगायो भयो मुक्त दुआरि ।
संकटे जलि भीतिवे गजि कौणु विद्या परी ।।
काम भाम जि करित निशपति किह विध तरी ।
दीनि द्विज की पैज राषी कौण कीने दान ।।
करि कृपा प्रभ चारि दीने राषु भक्त को मानु ।
एक छिन्न मै अनिक लील्हा पर्म पूर्ण देव ।
गुण नाह अवगुण अधक है जनि करित नरि हरि सेव ।।

✓ वनि घनि वीचि विराजत मोहन हठ तजि चलि मिलु प्यारी री ।
लता प्रफुलि सुगंध सभे विधि विहरति कुंजि विहारी री ।।
मोरि चंद्र का अति सोम कछु राका चंदु हिराउो री ।
नगि मुक्त गुंजा छबि निर्षत जगि मगि रूपु दिषाउो री ।।
पंकजि नैन भौंहु अति लंपटि वीच तिलक बिध दीने री ।
मीन्कि कुरंग हनि भइ षंजनि कीरि मृग छबि छीने री ।।
कुंडलि लोल कपोलि निकटि अति डोलति किह विध दीनेरी ।
सुष सागिर पूर्न जलि अंतिरि क्रीडित मकरि सुहाए री ।।
दंड विसाल वनी करि पौंची मुष मुरिली कछु सोहे री ।
छुटी समाध अगाध संभू की सुरि किंनिरि मुन मोहे री ।।
उरि वनी माल लाल की आभा तिह मिल अंग सुहाए री ।
गंगि तरंग उलिटि ऊपरि ते नीला गरि छाए री ।।
पीतांबिर पट कटे छुद्र का कछु मध रोरि सुनाए री ।
व्रजि वासी निधनी के धनि जिउ देषत सुत उपिजाए री ।।
पूर्न व्रंह्म भागि जिह मिल दर्सुनु पाउो री ।
करिणा सिंधु क्रिपाल कृपा निध लघ नरि हरि जसु गाउोरी ।।

नाम संमाल निहाल करे जिन जान्या जगि तेऊ तरे।
ब्राह्मण योगी ते संन्यासो। जो जाने तांकी गति नासी।।
साहबु साचा प्रभु अबनाशी।
उोलीये अंवे तेऊ पीरि। शेष मसाइक तेऊ मीरि।
हिर्दे राषो गहर गंभीरि।
काजी मुला तेऊ शेष। लिष लिष राषे एक अलेष।
तेरे नाम विना सभ पाषंड भेष।
सुनिहो हिंदू मुसलमानि। दोनो राह कीए परिवानि।
सांईदास का प्रभु अलष निधानि।

जाचो राम नि जाचो औरी।
आनि जाचिती रसा वौरी।
कहु शिव शक्त कहु शिव देवा।
औरि देव सभ तुमरी सेवा।
थाट घाटि घटि घटि कों दाता।
स्थाविर जंगम मै तूं राता।
कार्ण कर्ण तुही सभ ठौरा।
केऊ स्थित केऊ उठि दौरा।
वण अवर्ण सगलो की लाजि।
अंतिर जामी तूं महाराज।
भ्रम भौजलि गहते सभ कोइ।
तुम विनु औरि निवाहति कोइ।
निपजे षपितेउ व्यवहारी।
नाम पैंज राष लेहु मुरारी।
जलि थलि मध्य लसे रवि माह।
जहा दाता तित्पहुचल जाह।
दीनानाथ अनाथ मुरारि।
संत चर्न नरिहरि बलिहारि।

आजु सषी मै कुंज भविन मै देष्यो कुंजि विहारी री।
नवि नागिर गुण आगिर जांके पीति वसन बनिवारी री।।

आली री उर्भ रहे अलि उपिर तांके मदिन राइ सरि साधे री।
चपिल होति षंजन सुक राजति रहित प्रेम के फांदे री।।
आली री मृग मदि तिलक गुंज के सीस मुक्ता षचत बनाए री।
छूटी झाल लाल की आभा अति सोभा छवि छाए री।।
निर्षत नैन मयन कछु उमडत अवि विसरे ग्रह काजि री।
वारि सुता की वनी अरिराता वंधप उभय विराजे री।।
अलीरी दध सुतिसीउवी विडारि वदत व्यंवि वथुर मुसकाति री।
नषि सिष अंग कहा ले वर्णो लघु नरि हरि वलि जाति री।।

आली मोरा मर्मु नि जाने कोइ री।
विर्हुं विआकल भओ सरीर।।—रहाऊ
विना वैद सुंदिर सुषदाई, कौन निवारे पीर री।
मनि पौना डरि प्रेम गिरासे जीइ की कहा कहीजे री।।
निकसित प्रानि नही होत छुटिकारा लागो भारो रोगु री।
शाम सुंदिर तजि गए इकेली कै संग कीजै भोगु री।।
कुलि की लाजि त्याग हरि सर्ना भाजी मतु सुषु होइ री।
ना हरि मले नि कुलि की लाजा, दोनों बैठी षोइ री।।
नैनन नींद चैन नही मनि कों चटि पटी जैसी लाग री।
दौरी दौरी बनि वन को जावो जरो विर्हो की आगि री।।
घायल प्रेम चैन कहु कयसे चैन निवे हर भेटे री।
तीनि ताप जो उपिज रहे तनि, विनु गिरिधरि को मेटे री।।
सांईदास जिउ हरि भावे भावे करे सो आप री।
कविहूं मेल विछोरे कविहूं रीझे पुंनु न पाप री।।

नामे की छपिरी वांधे राम।
भगित वतसल भगता वस केशव कर्न लागा कामु।। रहाऊ
ब्रह्मादिक जांका अंतु नि पावे सो नामे वस कीआ।
षंड ब्रहमंड त्रयी लोक को धार्न सो छंनि वांधनि लीया।।
कर्न मजूरी लगा मेरा गोविंदु वैठा धनि सवारे।
पर्सो चर्न तिलोचन हरि के एह रघनाथ हमारे।।

सुनि रे नामा इह नही रामा झूठी बाति दिषाई।
मोरो दर्सु तिसी का देषो जिन इह रचना रचाई॥
सुनो तिलोचनि करो रसोई तीर्थ हूं ते जाई।
आछे नीके विंजन बनावो आवेगे रघुराई॥
तुर्त तिलोचन करी रसोई नामा लेन गयो है घीउ।
उलिटि रूप मेरा गोबिंद आयो भोजनु ले गउो जीउ॥
दुरि दुरि करे त्रिलोचन वपुरा ठाकुरि भेषु बनाइआ।
षंड ब्रह्मंडनि को नायक ठाकुर देवनि दर्सन आइआ॥
नामा दौरि पआ हर पाछे मतु रूषा भोजनु षावो।
ठाढे रहो जगित के स्वामी मुड घीउ लैय जावो॥
नामा गोबिंद भए है सनिमुषि वाति कहे विधाता।
नामा हम तो रूप स्वानि को धरिआ तुम हमि किउ करि जाता॥
जहा जहा जाई सकिली थाई सभ ही जोत तिहारी।
तुह समानि औरि बही देषौ दीनानाथ मुरारी॥
धंनि तिलोचनि धंनि रे नामा जिन पूर्ण भगित कमाई।
लबु लोभ सभ मोहु चुकाया हरि संगि डोरी लाई॥
नीचि जाति भी तारी गोबिंद ऊचि जात भी तारी।
नरिहरिदास जाति वलिहारी कछु गति करो हमारी॥

रे मनि सर्न गहु रघराइ।
जो रहे भैय भगिवंत के जम डंड सो नही काइ॥ रहाउ
मनि सुहटा[1] सुनि वाति मेरी मै कहों तो समझाइ।
मंजारि जिउ जम जोहता मतु पलकसे लैजाय॥
करि चर्न प्रभ के पिजरा तूं रटत रहु तिह माह।
अभमानि तजि मिर्तुक कहावे भै नि देषे जाह॥
हरि नाम साधू तरे जिन जानआ मनि माह।
सांईदास नौनिध पाईए जे मिले अंतर ताह॥

---

१. सुहटा > सुभटा = वीर।

आसा—

भूला भूला पुनि रिपु भूला।
भूले गुरु गवाइडो मूला॥—रहाऊ

चित तरंग होइ प्रथम भुलाना।
दुतिऐ मनि बुध निज करि जाना।
तीसरे देह होइ सुध षोई।
चौथे इनि मै आप नि कोई।
उलिटे गुरु उलिट उपिदेसा।
सोहं हंसा दीओ उपिदेसा।
नादिं विंद को संगु वताइयो।
करि अभ्यास इनि अैसा पाओ।
तांकी यांको भई षुमारी।
आपा समझे सभते भारी।
इहि विध जीव भूल सो कहीए।
चिदाभास एह कैसे लहीए।
तुरीआ तजि तव भओ दिवाना।
विसर्यो जगित ज्ञान अरि ध्याना।
मगन तियागति पाई ठौरि।
सांईदास गुंजित तहा भौरि।

एह भूलो भूलो मूलो भूलै जगि सभै।
यह देह षेह निज मानी पावे किउ अभै॥—रहाऊ
एह ठाकुर आप विराजे देषो सुर्त धरि।
एह अलिष पुर्ष को ढूंडे दसिवे द्वारि परि॥
सो हाड चाम कों मंदरि प्रभु नही तहा बसे।
प्रभु अति पवित्र अति निर्मल तिह ठाकुर किउ दिसे॥
जगिमों जीवुनु तबिहूं साधू जानिए।
वडे दानि को दाता प्रभ करि मानीए॥
जो षोल्हे कविहूं औरि तू तूटेस्त तुतवि।
इह सहिजे ही मुरिझाइ नि करिए जतुनु अबि॥

इह बूंद समानी सागरि देषो सुर्त धर।
इह सहिजे गई समाइ नि करीए जतुनु अबि[1] ।।
सांईदास एह अचरुजि कित हूं न भाषीए।
अचेए[2] निज रस सारि रिदे मै राषीए।।

भूलो भूलो सकिल संसारा।
साचु छाड लगो जंजारा।।—रहाऊ
मीठी चाटि जनिम सभ षोइयो।
अंत काल फांसी फस रोइयो।
धनि सुति दारा औरि सरीरा।
जलि तरंग जिउ रहे नि षीरा।
अवि तुम चलो ना इनि की वाटा।
इह रसु करुआ फीका षाटा।
षाते पीते चलिते बाटा।
चेतो आप सीस धरि साटा।
आपा जो वह मनह पसारा।
सांईदास सो मिथ्या आत्म निजि न्यारा

राजा रामु आए आनंदि भए नगिर अजोध्या माहरी।
मंगल चारि भए दसरथ के चलो बधावे[3] जांहरी ।। रहाऊ
पुहप विवानि चढे रघनंदन भगित वभीछनि संगिरी।
लछमनि साथ अजोधआ आए जांनुकी बावे अंगिरी।।
इकन्हा दूध दही करि लीन्हा किन्हा हाथ तंबोलुरी।
इकिन्हा राजु सिंघासनि लीना इक वोलति मीठे बोल री।।
हर्ष्यो भर्थि शत्रघन हरष्यो हर्षी कौशल्या माउ री।
नरि हरि दास सभे जनि हर्षे फूल रही बनिराइरी।।

---

१. यह पंक्ति पुनरावृत्ति नहीं है। दोनों पंक्तियों में शब्द समान होने पर भी अर्थ में सूक्ष्म अंतर है।
२. अचेए=अंचिए—आचमन कीजिए—स्वाद लीजिये।
३. वधावे=वधाई लिए।

जोगुग्रासा—

ऊधो ग्राए सुनित समे ग्रानंद भए व्रजि लोक।
पतिग्रा लीनी हेत सो बाचति निकस्यो जोगु ॥
जोगु लेहु तुम गुग्रारणी विसम भई तजि धीरि।
नरि हरि हरि बिछरुन विथा को जाने परि पीरि ॥
पीरि पराई पावे सो वैदु बषानीए।
जो उपिदेस दिढावे गुरि करि मानीए ॥
मानो कहा कहो मधकरि सो उरि नाही ग्रौरि समावे।
ग्रंगि ग्रंगि पूर रही वह ग्रंतिर ऊधो ज्ञानि बतावे ॥
पतीग्रा पर्सत कंप उठितीहो ग्रनिक विलोकत डरोहो।
जौग लीए कहु वैरस लील्हा इनि बातिन हम मरीहों ॥
जतिन ग्रनेक वसीठ करित है मनि मय एक नि ग्रावे।
श्रीनरिहरि प्रवीन व्रिथा कोई पीर पराई पावे ॥

सो वैदु बषानीए हम तो घाइल विरहु की
तुम तापरि लावित लोनु।
रोम रोम हरि वस रहिउो, ग्रवि जोगु धिग्रावे कौनु ॥
हर दर्सन के दर्स को या घटि उपिजयो प्रेमु।
नरि हरि ग्रौरि नि उरि वसें मनिसा वाचा नेमु ॥
नेमु लीउो मनि मेरे तहा ग्रौरि नि ध्याइीए।
मनुग्रा दह दिस फेरो ता प्रेमु नि पाईए ॥
पाई प्रेम कला जिन हर्की भूलिए नाह भुलाए।
मधुकरि छलवल सो तेरे फुनि बवरत किउ बौराए ॥
मूरा जनि गोली ले ग्राए ते व्रजि मै नृप कैये[1]।
इक चटि सालि पडी मोहन सो ते किउ भर्म भुलै ॥
ये ठगि वाजी वह तेरी षेले कीए उपाउ घनेरे।
जाग्रति सोवित मन मेरे मै नेमु लीउो मनि मेरे ॥

---

१. यहा शब्द गौली है। जिसका ग्रभिप्राय ग्वाले किसी व्यक्ति को पकड़कर ग्रपने राजा के पास ले ग्राये ग्रौर कहा यह कृष्ण है।

ता ओरि नि ध्याईए ऊधो हमरी वेनती कहीओ हरि पह जाइ ।
ओैसी[१] पतिआ तुम मतु पढो हम सुपने नाह सुषाइ ॥—रहाऊ
ज्ञानी शबिद विचारि के ध्यावित पुर्ष अलेष ।
जिह विध पायो प्रेम रस हम लीने सोई भेष ॥
भेष अडंबरि डारो तां किउ करि लीजिए ।
जोग कथा निरवारों ता मनु नही भागिए ॥
भीगे केस रहत साधों संगि कैसे जटा वधावो ।
घुंघा किउ पहरे ते अविला जिह उरि मोतिन माला ।
जिह अंगि पाट पटंविरि ओढे किउ ओढे मृग छाला ॥
कुंडलि कंचन तजि करि कैसे मेषुली मुंद्रा धारे ।
मुर्ली वदले नाद न सुनहो भेष अडंविर डारो ।
ता किउ करि लीजिए डारो ॥
सभ विजोग की सुनत न आवे कानि ।
मधकरि सो कैई वर्स की दूरि करी पैहचानि ॥
पावे प्रेमी प्रेम रसु हमरे याही ध्यानु ।
स्याम निरंतर बस रहआ अवि पाओ पूर्न ज्ञान ॥
होवे परिम ज्ञानि मै तांकी चेरीआ ।
हम विनु मोल विकावे दासी तेरीआ ॥
तेरो मंत्र जपो निसिवासरि तेरो हित रसु पीवो ।
तेरो नामु अधारि हमारे छाडि कहा लगि जीवो ॥
जीउ निरंतरि तैंय हिर लीना ध्यान धरो अबि कांका ।
रीती षौड रही अजि भीतिरि जात ज्ञानु कहां का ॥
हम तुम अंतरि अवि की नाही जागी प्रीति पुरानी ।
सांईदासु नरिहरि गुरि सिमरो होवो पर्म ज्ञानी ॥

मैं तांकी चेरी आं !
छुहे कसाई की छुरी पार्स सहजि सुभाह ।
गुरि क्रपा ते सांईदास अविगन गिने न जाह ॥

---

२. ओैसी (ऐसी) 'अ' के ऊपर मात्रा देना प्राचीन प्रचलि ।

आपा दीने बांध के मनि मंत्री के हाथ।
सांईदास भूल गियो निज ब्रह्म सुष मांनयो आप अनाथ ॥

श्यासुंदरि दे माथे परि
मुकट विराज रहआ, गिरधरि सीस धरिआ ॥—रहाऊ
मोहनि दे सिर मुकुटि विराजे लाल जवाहरि जडिआ।
हीरे बहुति अमोलक लागे प्रेम मगिन हो घडिआ ॥
गऊ मछ मृग पंछी मोहे मोहे सुरि नरि देवा।
महादेव की ताडी छुटकी भूल गई सभ सेवा ॥
व्रिंद्रावनि में रास रचाया मोहनि कौरि कन्हाई।
भुजा पकरि संग गोपी षेले संतनि का सुषदाई ॥
चंद सूर्ज सकले वनि छाए अैसी जोति प्रकासी।
तीन लोक मै भओ उजाला सोहे सिर अविनासी ॥
हरि की लील्हा जाइ नि वर्णी सुमती कहा बषाने।
अविरदास नरिहरि नाराइण अमरा पदि को माने ॥

दो०—तिमुरु गिआ रवि देष के कुमत गई गुर ज्ञान।
सुमति गई अति लोभ ते भगत गई अभमानि ॥

रामकली—

अगिम अगोचरि अनिहद वांनी।
क्या कछु कहो कहन की नाही अनिभै गति हैरानी ॥—रहाऊ
पांचो मारि करे अपुने वस सो एह ज्ञानि विचारे।
दह दिस गविन कर्न ते थाका आप तरे मोह तारे ॥
सहजि समाधा सुनि लिव लागी मनु लै तहा चढावे।
पसरी किर्ण तिमर तवि फूटा सोहं सवद सुनावे ॥
त्रिगुण अतीति रहत गति उपजी तति पद माह विल्हावे।
गंग जमन के भोतिर पैठा अगिमो निगम नि आवे ॥
ससि नही सूर पवन गति तहा पुर्ष को वासा।
जनिम मर्ण की संका नासी तहा वसवो सांईदासा ॥

कल्याण

सोहं सहज रहु मगंन्य ।
अष्ट कर्म देह धर्म जलि गए ब्रह्म अगंन ।।
वासुदेव प्रभू आप बोले अनदह धुन गगंनि ।
जिह कारनि को कोट जप तप जतिन करित नगंन ।।
सांईदास के रिदे राम नाम प्रभू पाए सुभ सगंन ।

है कोई पंडित गुनी ज्ञानी एह पद तत्तु वीचारे ।
जबि देह न धरी सी कहा सा रहता देह धरी कहा जाई ।
इसि संसे मोह आनंदि न व्यापे देउो कोऊ समुझाई ।
वकिता कौणु सुणाता स्वादी, कौण सुदेषणु हारा ।
चंचल चले अचल थिर पावे घटि घटि एही पसारा ।
एह तो ब्रंह्म अशक्त कविन ते ब्रंह्म कर्म वस हूआ ।
कर्म अकर्म भौ सागिर दुभदा जाने दूआ ।
एह तो कीटि कर्म की जाली कर्न हारि कोई औरे ।
सांईदास के पर्म बवेकी जहा आज्ञा तहा दौरे ।

भगित विनु तेरो जनुमु अकारा ।
जो दीसे सभ सुपने सारषा भूले भर्म गवारा ।।—रहाउ
रे मनि तै इसाथिर नही रहणा क्या मनि करे पसारा ।
चलिती वेर कोई संग नि साथी माति पिता सुति दारा ।
उस्तत अपिनी निंदआ औरा की पाषंड पाविन हारा ।
पाषंड नामु नि पाये वविरे सो ततु इनि न्यारा ।
रस रात्यां रतुनु तै षोइआ वांधे कचि के भारा ।
जवि जमु आइ चोट दे पकिडे तवि लागे पछुतारा ।
कीए चलित्र सकल प्रभ तेरे नान्हा रंग अपारा ।
सांईदास अकीत गुन गावे जनि कों पारि उतारा ।

मनि रे हरि सर्ना भज परीए
गुरि पूरे अजर जरीए।
ग्रह मधे कर्म कमावे, कर्म कीए ते गति पावे।
जबि कर्म की हांनि करीजे, मुष लोक पर्लोक नि दीजे।
ता कर्म भेद निहकर्मा, तहा टूटे वंधन भर्मा।
तहां शिव मिल शक्त निवासी, तहा विष्या तांकी दासी।
तहा सविद सुर्त ले मेले, तहा सहज निरंतरि षेले।
तहा आपा मधे जान्या, जवि जान्या तवि मनु मान्या।
जहा वंधनि मुक्त षलासा, तहा वसवो सांईदासा।

रागुमारु

संतित सोई भली हरि ध्यावे।
हरि सिमरन सकिली कुलि तारे माति पिता मनि भावे। रहाउ
कीने जतिन कोटि बिध नान्हा। गुरि किरपा दे धारी।
वडे भाग भागीर्थ वपु के सकिल श्रिष्ट निसतारी।
आज्ञा भंग करी प्रहलादे हरि चर्नी चितु लाओ।
सपत दीप नौषंड प्रथवी राजु इंद्रापुरी पाओ।
नरि नारी को युगलु वन्योहै पूतु जने सभ कोई।
रामचंद्र दसरथ ग्रह उपिज्यो सकल रघां गत होई।
धंनि वह नारि गर्भ जिह उतिरे सिध साध मुन ज्ञानी।
सांईदास ध्रू पद पहुचाइउी भजि मनि सारङ्पानी॥

रागु मदिमांझ

छोडि नि जाई प्रीतमा मैनू छोड़ि नि जाई।
जेतूं मैंनूं जाह छुडेंदा किथो लोड लहां॥ . —रहाउ
मै रक्त-विंदु की तूं पौना सर्व निरंतिर तैरौ ना।
मै जान्या तूं आदि निरोतमु लागी संगि रहां।
मै जजिर तूं सदा निवेलुकु मै तुधज मूआ विछोडे पेलुकु।
मै धरती तूं उडरि चल्यो कांकी सर्न रहां।
मै माटी तूं पर्म पदार्थ मै किर्तिम तूं सदा सकार्थ।
तूं अंतर मै किटा पुठा विटि लागी संग रहां।

साधनथो फरि विश्या कीती तुटिदी पलिक नि लगसु प्रीति ।
छिनि मै नाउ वटाम्रा देही मै कंत विसारी सां ताह ।
प्रीतिम वाझु डराविण होई आहरि कढण दे सभ होई ।
रहणे दी वाति नि आषे कोई षरे पिआरे प्रीतम वाझो
भाही ठेल मिला ।
कुंजि भुअंगम तूं मै तेहा तां जाणा जे जाह सदेहा ।
तांते कंतो तोड विछोडी सांईदास हुण क्या होरु कहा ।

श्री राम राम गह रहग्रा प्रभु किते जुगहणी रहग्रा ।
हंन्याजाइ नि कीता होवे जाइ नि तांका कछु कहग्रा । —रहाउ
सूषम देषां ता एकारचिक अति दीर्घ परे पराही ।
नेत्र निहारि देषु प्रभु अपुना कौनि ठौरि जित नाही ।
अटल अनेक अजूंनी असंभू असरीरि अर्ण अदेहा ।
दू चौपदि षगि त्रिकुटी जेती कौन कहे किस जेहा ।
पिंड षंड ब्रह्मंड भए को धारी सकल समाने ।
रजि, तम, शातक[1] तिन कि उपिजे जो एह रंचक जाने ।
भ्रमत भ्रमत परितीति आतमे अंतर ही पतीआने ।
भविन चतुर्दस तीन लोक मै सांईदास जजिर मांह समाने ।

वार्णे लियो तेरे वार्णे लियों स्याम चतरभुज वार्णे लियो ।
शंकरि सिषर सुमेरि सुमुक्त कैसे चंदि षलौना दियों ।।रहाऊ
शंकरि कंठ मै इन निध तीजा नेत्रु वहन का देह जाइ जित जारी ।
सस पर कुंड मयन भरि राष्या गंग मुकटि ले धारी ।
गोकल षेल वने है गेंदू जतन सकल करों बलिहारी ।।
जंत्र जंत्र की नेत्री रव सस तूं कछु अविरे मांगु मुरारी ।
रिषवकारि दूधु दधि रसवल वैकुंठ के लेहो वाली ।।
मधवनि जाह सुगंध सिला जहा गरी सांकुरी संग लेहु सभ दासी ।
इह अचरुज लेगें मुह मांगो आद अंति सभ धारे ।
रहु रहु कान्हा जाहु बलिहारी मतु कंसु सुने बटुआरे ।।

१. सत्व रजस्तम तीन गुणों का वर्णन

संत वेद सभ मेरे मर्मी मै जु कीग्रा सो गांवो।
हौ परे पुरातन पीतनि से ता संत सुर्त ते पावो।।
वसुदेव देवकी कार्ण जुडे किवारि उपाडे।
जलि निध मै लंका परि-जाली दसे सीस कटि डारे।।
संषासर मधुकेट मनोरिधि हर्नाकस वल छलौना।
संसाग्रर्जुन कंस ग्रादि दे सांईदास मांगे चंद षलौना।।

किउ नाही रामु समाल्हया।
जीविरग दा भरिवासा केहा कचे भांडे जेही देहा।
जिउ घरिग वसदे वुद वुद जेहा इक सपलक नाल उपिज बरिगसे।
एह तनि एसे हाल दा बंदा बंदा करिदा मेरी मेरी।।
एह तनु होगु भसमदी ढेरी जीविरग दी तैं ग्रास घनेरी।
मर्ने दी हरि चिंता नाही साह विस्वास नि हारिदा।।
गौंठीईवटि करे चतुराईग्रा डिगी पगे दीग्रा वुरिग्राईग्रा।
चिति नि घते भैरगा भाईग्रा ग्रापे कर्ते दाथा होइग्रा।।
वादल घटा उठालदा, मै जु कीग्रा किने होरु नि कीग्रा।
मै सलाद्री सिंधु हथग्रा, मेरे मुह धिर तक रहीग्रा।
मेरी भभक गगदड सभे देषो तनि पर्जालदा।
पापी पापों मूल नि संगे ता जाणा जमु लेषा मंगे।
रसिडा पापी दी पिडोसु टंगे उघडि गैग्रा।
सांईदास डिठो साहवि तारिदा।।

रागु मारु

सभु मुईग्रा दावे माही, सभ मुईग्रा दावे मांही।
सभ कोई सेरु सदाइदा, कोई घटि नि पाउ ग्रषाइदा।
दुजा माझ जाइग्रा, कोई मंझ वरावरि नाही।
पंडति ज्ञानी पीर वे सभ इक ते पए वहीरबे।
वैठे ढेरी मल्ल के सभ ग्रायो ग्रापणी रांही।
षटि दर्सन वैरागवे गृह माग्रा चले त्याग।

दे मती देण्ह बि अंन्यसों भुलिया पेअो झडि पाही।
सांईदास दिआलवे हरि सिमरे सोई निहालवे।
जिन्हा दावा छडिआ मैं सोई पुर्ष सलांह।

लील्हा दीनद्याल दी।
गाउ लील्हा दीन दिआल दी ।।—रहाऊ
इकिनाथों भक्त कराइदा, इकनां नूं भर्म भुलाइदा।
जित लगे तिते तित लाडदा, देषु वाति सांई दे ष्याल दी।
प्रभु भरिआ नूं सषिनीरिदा, सषिनीर्यानू फेरि वडीरिदा।
कौणु जाणै अंतु गभीरि दा, कछु सुध नउ घप्पाल दी[1]।
परि नारी दे वांण नि बेध्या, करि उस्तति किने नि षेध्या।
वैकुंठे सिधा सेधआ, छडु ताति विराने माल दी।
उचे महिल उसारि के, सभ बैठे मर्नु विसारि के।
जंमु आउसु लैण वंगार के, ढहि चडिआ करिडे काल दी।
जैदे मनि तो नही वीसरे रोम रोम कन्हया नीसरे।
कौणु जांणे बिनु जगिदीस रे, घटि सांईदास दे हाल दी।

प्रथमे चढत किवाड़ उषाडे, तब व्रज माह वसुदेव सिधारे।
सेस सहस्र फण अंग पसारे, अंवृत घरि वर्साविणा।
घरि नंद के हर।—रहाऊ
कालिंद्री तवि मोहनि आए। अनिक तरंग कालिंद्री भाए।।
चर्न पर्स मगु दीओ कालिंद्री। तवि गोकल-मय आवणा।।घर०
कंन्या ले वसुदेव सिधाए। पगि गृह धरि किवार चढाए।।
रुदनि कर्त देवकी उरिलाए। तवि दरिवानि जगावणाए।।
दरिवाना कंसु जगाइआ। षंडा ले वंदसाले आइआ।।
ऊंचे टेर कह्यों जवि भूपति। क्या वालु भआमेरी भाविणा।।घर०
सुतु राजा तूं अति वडि भागी। देवकी दौरि चर्न संग लागी।।
दीजै दानु मोको रे भाई। नही वालुकु इह भाविना।।घर०
भुजा पकर अपुने वस कीनी। देवकी रुदनु करे अधोनी।।

१. घप्पालदी—गुपालदी—गप्पाल=गप्पी।

छुटक गई जाइ चढी अकासे । क्या क्या वचिन सुणाविणा।।घर०
मर्कट कतिल-सैन ते आए। सेतवंध गड लंक लुटाए।।
काटे दस सिरि सीआ लिआए। अवि कंस को कालु करावणा।।घर०
तवि राजा को लागो झोरा। छुटिक गियों हाथनि सो मोरा।।
अैसा रोगु भओ भूपति कों। औषद कछु नि मिलाविणा।।घर०
वासदेवा प्रीति निहारी। नंद नंदनि अब भए मुरारी।।
भूम को भारि उतारण आए। एह विध निगम सुणाविणा।।घर०
रिष देव मो दर्सन को आए। संत भगित मिल मंगल गाए।।
नौ निध आइ परी गोकल मै। लील्हा वाल षिलाविणा।।घर०
वाजे ताल वजंत्र वधाई। नगिरी यूथ जोटि मिल आई।।
दूध दही षेले व्रजि वासी। नंदे पुत्रु मनाविणा।।घरि०
मछ कछ वैराह है सोई। नारिसिंघ वावन है ओही।।
पर्सराम अरु राम कृष्ण जी। सिमरे सो भक्त करावणा।।घरि०
सांईदास भक्तनि देह धारी। अमरि दास की पैज सवारी।।
तांको पूतु गोविंद जसु गावै। नामसौदा न करावणा।।घरनंद केहर

ऊर्ध जानो रे मना कीर्त किउ नि करों।
आधो निध मुष वंक नाउ, विषु आप अहारी लेंह।।
रास लिआओं जरा मर्ण, हीरा कऊडी के वदले लाइ।
नाम वाझों प्रभ सांईदास किर्त न मेटओ जाइ।।
वटो कटि नि सकिए भीग लिओ हा पाइ।
पुछो कटण हराआ जै घंरि ओह रहे।।
निज घरि वाझु नि तू रही सांईदास कहो।

रे जनि अनिकति दूर करि, चिर जीवन चितु चेतु।।
हीरा हिरयो गुजाहली देषजु कीओ हेत।।
हर रसिना रसु पीउ तूं जिस पीते हांन न होइ।
प्रभ कहओं सांईदास के दुर्मत का वीजु नि वोउ।।
अंतिर औगनि रच गए जिउ घुनि काष्टति षाइ।
हीरा बदिले हांनिओं रतक मोलं विकाइ।।

सांईदास पुकारश्रा वांध्या जमु पुरि जाइ।
बांध्या चित्र गुप्तनि सो पउो दुष्टे नूं एह पुछु।।
उचा पत जांकी वधु पई श्रागित नाही तुछु।
दफतरों झूठा होइश्रा जत पति होई हान।।
प्रभ कहिउों सांईदास कों गुरि का कहिश्रा मांनि।
नाम षजाना मुनि जना लष जांने सुभ उरिझाई।।
इंद्र इंद्रासनि ध्रू कुवेर मुकती यह ते अधक सदेहे।
सांईदास हिर्दे ते किउ वीसरे जो मुक्ती दे चर्न अजेहे।।

जिउ जल सर्दल सम रहयो इउ तसकरि देही माह।
सांईदास वह करि मिलश्रा मेटीए इहि साध संग ठहराह।।
जो ठहरांने निगमदिष्टि तिन को पूरनि दाति।
सांईदास बाजन ही ते रह गए जिनि निज घरि पाई झाति।।
झाती पाईश्राने तित घरि जहा लालनि की ठौरि।
ऊति झमके झाती परे द्रष्ट तन्हा की श्रौरि।।
गगिन पिश्राले गाह रहे बांकी गहन जही।
सांईदास दोनो रहे पुकारिते कहन न श्रायों कहीं।।
इंद्री का भौउ छुटि गश्रा सदा ध्यानि की निरत।
सांईदास का प्रभु रम रहया सदा नाम की किरत।।
भ्रम सागिर मै मनु गलतांना असली षाति झकोरे।
माश्रा मगि मोह मदमाता इह विध अजहू नि छोरे।।
देह वीचार दास प्रभ अपुने जिह मिल मनु ठहरावे।
सांईदास साध की संगति गुरि मिल ठौर वतावे।।
एको एक नाही कोऊ दूजा घटि घटि मह निवासु।
जो मनि वांछति हरि भजे सांईदास तित ही पूर्न श्रास।।

श्रार्ती लीजे दीनि दिश्राल।
भाउ भगित संतन सुषदाइक कविल नैन नंदलाल।।
कंचन धर्त जर्त्त ऊपरि मुक्ता षचति वनाइ।
जोत प्राकांस चंद रवि जांके इंद्रादिक सुरि लिश्राए।।

चोया चंदनि अगिर केवरा पुहप गंध धुप कारी।
चाविर चविर छत्रि सिंघासन अदिभुत मह तिहारी॥
वाजित संष मृदंग झालरी डफि रवाब अरि ताल।
घंटिन की घनिघोर परति है वोलति वचनि रिसाल॥
ऊधो अरि प्रहिलादि विभोछनि सुक नार्द मुन व्यास।
ब्रह्मादिक सनिकादिक ठाढे गुनि गावै निज दास॥
जोग भोग सभ रस को वांधे महमा कही नि जाइ।
कहित सुनित मुक्ता सो नरिहरि हरि जो भए सहाइ॥

जनिम जनिम के पाप हिरे।
जिस हर नामु वसति हीरे मै तांके दुष विन अग्न जरे॥
अंतिर सारि सुधा निध निर्मल ते भौजलि ते पंष तारे।
नाम की नाउ पविन पति संगति इह विध साधू पार तरे।
तासो जमि ले भेटा मिले, कछु भजिन प्रताप ते औसा डरे।
सांईदास मुकंद[1] भगित मिल, आवागौन ते छूट परे।

रामकली

औसो कोऊ ब्रह्म ज्ञानी सुने ज्ञान वांनी।
ब्रह्म की धुन पहि वासना सभ भजे जुगित सभ रूप इउ जाय जानी।
मुकिर प्रतिबिंव ते याह जलि पेषीए कीजए कौणु विध ताह सेवा।
आपिनी भालि परि तिलुकु जो दीजए, पूजिए तत्त निज देव देवा।
अगम की वात परि निगम क्या करि सके संध तिआगे सोई सिंध पावे।
आदि ते अंति लै मध्य मै पेषलै सतिगुरु एह निरनो वातावे।
अटि पटी वाति का अटि कपट षोल्ह के निर्ष के भेद सांईदास हारिउो।
झमक झाती परी वाति पाई षरी जिउ का तिउ पूर्ण निहारिउो।

कल्याण

तेरी गति जांनते कछु नाही वीचारि देषु मनि माही।
जे को कहे मै जानित हों तिसै पूछ होइ दासा।

१. साईंदास के गुरु मुकुन्ददास थे, इस पद से स्पष्ट है।

एह् धरिती केतक मरण माटी केतक वीच अकासा।
जलि परि धर्न धर्न धर्न[1] परिवर्षा, एह् जलु कहा ते आवे।
आपो अपिनी बूंद परित है मेरा सतिगुरु एही वतावै।
एका रकत वूंद फुन एक सुति दुह्ता किन साजी।
करिम कर्तूत कीए सभ उनि के वीचारो एह्वाजी।
क्या मै लिषो तूं अलिष कहावे लिष मै परित भुलाना।
जैसी सूझ फुनि तैंसी जो काहूं मन माना।
ओहु अविगति नाथ अगोचरि कहीए कह्वो सांईदासा।
जवि लगि हंस सुआद सभ तवि लग पाछे भओ विनासा।

रामकली

अनिल अनील अतीति वानी।
तहा मनु रचना आवागौनी भरम चूका, सारि गुरवचना।
कोई जनु जोग का अरंभु साजे, सदा षोजे अनहा वाजे।
अगम सषी सुनि लावे, षोजता अगति पावै।
एडा पिंगुला सुषमननाडी जोग की इक विध सारी।
सविद गुर्के[2] श्रोत्र ताडे पूरिवो पश्चम चाडे।
नादि विंद कला चाई तत्त वस तिमु कटि आई।
अन्हा धरि जब भैओ वासा ता अकथ कथयो सांईदासा।

रामकली

विरिथा नवारणा भजु सरिणा।
तेरी कौण चुकावत चितवति मन ते क्या करना।
जवि लग वूंद परी गर्भ अंतर सहज देहा उरि धाई।
नषि सिष नेत्र विधाता कीने लेषु न मेटओ जाई।
विहु लिषआ दुषु सुष तपु संजम सील सुमति दुष्टाई।
चंद सूर्ज ब्रह्मंड टलेगो लेषु न मेटओ जाई।

---

१. एक धर्न शब्द लिपिकार का दोष।
२. गुर्के=गुरु के।

भ्रमत भ्रमत चतुरादस मनुश्रा श्रादि श्रंतनूं जाण भैश्रा
इति मंदरि जो रास लिश्राओ तित वरितारे वर्त भैश्रा।
सुश्ररग मध पिश्राल[1] सरीरे कर्म भूम एह देहा।
जो कछु वीजे सोई कछु उपिजे सांईदास मत एहा।

श्री गंगा जी तेरे दर्सन तो वलिहारी[2]।
शाम शरीरो उपजी गंगा, मुकटि वसी महादेवे।
श्रूध्रां जांकी मैहम न जानी सुरि नरि जांकी सेवे।
सर्वत गंगा दुर्लभ कहीए तीनि विशेष श्रसथानं।
दिष्ट परिश्रा सभ पाप उतारे पीवति मैहम नि जानं।
जंगिम जोध जती संन्यासी षोजत को श्रविगाहे।
हरि दुश्रारि हरि मूर्त पर्सी कोटि जनिम के लाहे।
एह पराग मनिसा कों दाता वेणी संगम तीरे।
दिष्ट परी सभ पाप उतारे निर्मल वुध सरीरे।
सागर संग रली भागीर्थ कीने श्रनिक तारंगा।
सांईदास मनि मजिनि होवे ता जाहु वैकुंठ निसंगा।

तू दाता यगु मंगता देह दिवाए नित्त।
लष करोडी पाइश्रा जे तू श्रावे चित्त।
चित्तो घडी नि विसरे केही होवे मुष।
सांईदास नामु श्रराधश्रा सभ मिट जांदे दुष्य।

नारि हरि तेरा त्राणु।
सभना जीश्रा सांझवा तेऊ घुले जानु।
जिन्हा पकिडश्रा साध संगु, साध संग भीति नि को।
जिन को पूर्न भाग नरिहरि तेऊ ऊविरे जिन्हा लधी जागि।
सो जागे जिन्हा चेतश्रा हरि का नामु सवेरि।
कैइ जीता कै हारिश्रा नरि हरि एहा वेर।
श्राण सुणाई वेनती प्रभ तेरे श्रगे।

१. पिश्राल=पाताल।
२. इस पद की पुनरावृत्ति हुई है, देखिए पृ० ६३६।

होरीथो की मंगरणा वाझु तेरी पगे।
नामु षजाना दानु देह चरिनी चितु लगे।
आवा गौविरण निवाह दे भौउ मेरा भगे।
नरि हरि याचे संत धूडि, चरिणी चितु लगै।

मै तनि औगन एतने जेते रोम सरीरि।
एदूं सम सिर अगिले गंगा वालू तीरि।
रवि किर्णी ते अधिक हे, उडिगरण जिवे अकास।
औगरण गुरण पह आपरणे, कहि दीने सांईदास।
तूं चंगिआईआं नित करे, बुरिआइआं मै पास।
मै सपूर्ण दुर्मती, मै पह एहा रास।
पलिक प्रीति करि ऊधरा के उोहु रंच लहा।
जे गुरि भेटे प्रभ सांईदास, विरिथा सकल कहा।
भरिम नि जाई भगित विनु, चूके नाही भीति।
उोहु नि टरवे सांईदास, जो कछु कीति आकीति।

अनि कीए कही नि लाग ही, कीए न अनिकति जाह।
कीति अकीत दोऊ मिटे, हरि सर्नी जवि पाह।
काया सागुरु रे मना, तूं विच वणुजु करे।
भरिती भरे गुंजाहला, हथो हीरा देह।
सुति दारा धनि माल ते, पले पिआ विकारि।
सांईदास गिया प्राणी सागर थो सषणा लै कौडी के भारि।

सागुरु एह संसारु है, निधी संपूर्ण एह।
इसी ते ध्रू ले गयो, सिषर सुमेर सहदेव।
प्रहलादि पहूता इसी ते, सक्रा के असथान।
सांईदास महमा तेरे नाम की, इस दे परे निधानु।
गुरि जहाज हम पाहुने, जित मिल पार चडे।
सांईदास जिन गुरु जहाजु नही जानआ, सो रोवे घाटि षडे।
घाटि यगाती धर्मराइ, गुरि मुषु लए पछान।
सांईदास जिन्हा छाप नही यगिदीस की, साषति रहे निदानु।

कंस रावण अरि ससेपाल, इसि तै तनि वडिभाग।
वपरी गनका पूतना, कवि चाहै वैराग।
संता धरि हरि नाम की, अचरुजु नाथ भए।
सांईदास देषो अचरुजु शाम का, वैकुंठ दैत गए।
विनु देहा ध्यावित रहे, विन धुन धरे ध्यान।
सांईदास कित पाईए, ठौरि विना निशानु।
जिन के हाथ निशानु है, तिन अटिकावे कौनु।
सांईदास भरि षजाने नाम के, मिट गए आवागौनु।

जे कुलि वडी ति राम जपु, भाग वडे कछु देह।
वुध वडी उपिकारु करि, सांईदास जीविण का फलु एह।
सुषा नू डुढेदआ, दूणे दुष पाए।
जे सुष छडे सांईदास, तिना ले दुष गए।

जिउ दीपक दीपक मिले, जोते जोत दई।
जो पारस सांईदास को, सो नरि हरि भेट भई।।
रथु कीना प्रति धर्म का, ता परि भए असिवारि।
श्री नरि हरि इछा भई, देषन को हरि दुआर।।
हरि दुआरि नरि हरि चले, संगत कीयो प्रणाम।
दीओ तिलक जसि पूत को, कांशीदास जिह नाम।।
जहा सांईदास नरिहर तहा, ऊहा गोविंद भजिन परिकास।
तिह दर्सन कों पर्सन चले, मुनिवरि कांशीदास।।
वुधि विशिष्ट सुषि धिआनि ज्ञयान, गोरष भैइ चक्र।
इंद्र करिण कुमेर दान, दान नही संव्रति।।
सक्रति सिधो मै वडि सिध्य, मुनी जथार्थ।
कलि कलेश अगआन, आनि कीनी परिमार्थ।।
दस औतार तैही कीउ, संकट काट्यों गजिइन्द्र।
प्रभ नौरंग रिदे ध्याआईए, गुरि कांशीदास पर्दुषहरण।।
गुरि तरिवरि गोविंद जल, सेवक साषा होइ।
फलु लागा डाली रहे, ता पक पूर्ण होइ।।

फलु टूटा जल मै पडा, मिटी निवां की प्यास।
सांईदास गुरि छाड गोविंद भजे, निश्चे नर्क निवास॥
गुरि गोविंद दोनो षडे कांके लागो पाइ।
वलिहारी गुरि आपने जिन गोविंद दीआ वताइ॥
गुरि मूर्त विध चंद्रमा, सेवक नैन चकोर।
सांईदास निर्षत भए, गुरि मूर्त की ओरि॥
सति गुरि की भुजि दोइ हे, ठाकुरि की भुजि चारि।
ओहु चारो ठाढी रहे, दोले उतिरे पारि॥
साध मिटावे भाविनी, करे जु हरि की सेव।
गुरि क्रपा ते प्रभ सांईदास, मिले निरंजन देव॥
नरि हरि नामु नि वीसरे, सदा साध के संगि।
रसना रसीए राम रस, औरि नि-लागे रंग॥
आनंद मंगल सोहला, नित भगतिन के द्वारि।
नरि हरि ते जनि धंनि है, निस दिन जपे मुरारि॥
अनिल पवे जो धर्न मै, अकि अवि जो पाइ।
सांईदास जंद्रा कूंजी वनि लहे, ता गुरि विनु मुकती जाइ॥
जो फलु फूटे अक का, रोम नि पावे टेरि।
सांईदास इउ निगुरे की गति नही, जो करितूती करे अनेक॥
भूषा रोवे मनि के भाइ, नागा कपिडे को विरलाइ।
निरिधनि रोवे धनि वति प्राणी, धंनिवति रोवे आविण जाणी॥
दुषिआ भी रोवे सुषआ भी रोवे, जवि लग मनि का भर्म नि षोवे।
झूठा धंदा जगति तमाशा, हरि हर्दे भजु सांईदासा॥
हरि मिलआ ते गुरि मिलआ, गुरि हरि अंतर नाहु।
सांईदास गुरहरि अंतर जाणदे, ते नरि नरिके जाहु॥
करी उधारियों करीते, करी करी पुकार।
करिणामै करिणा करी, कछु करित न लागी बारि॥
सांईदास पुकारिआ, लोको सभ सुनेहु।
मिठा वोलो निउ चलो, हथो भी कछु देह॥
दर्सन गुरि गोविंद के, मन मै सदा हुलास।
प्यासा आवे नीरि पह, नीरि नि आवे पास॥

सेवक के मनि गुरि वसे, गुरि सेवक के पास।
चात्रक कार्ण सांईदास, टूटे बूंद अकास॥

जिनको उपिजी सति पारितीति।
मोन रहे भावे गीति॥
भावे कुंटा विचरो चारि, भावे बैठे आसुन मारि।
भावे कूदो भावे नाचो, भावे सुंन सविद मैं राचो॥
भावे लंमे कैस वधाइ, भावे बैठे मूंड मुंडाइ।
भावे नागा फरे मलंग, भावे कपिडे अंगि॥
भावे उदिर भरे भरि षाइ, भावे सूषम भोजनि पाइ।
सांईदास सती की निआई, तनि संगार मनु भर्ते माही॥

रागु घनासरी

पहिले पहरे रैण दे,
मनि मेरेआ भाई, सुतिआ गई विहाइ।
परिम पदार्थु षोजि लै भाई, वोइ साध संगत चितु लाइ॥
साध संगत चितु कविहूं न लागे, करिम धरिम सभ हारे।
आगे भौजलि विषडा कहीए, किति चड लंघे पारे॥
पदिम विषम बिष्या रस लंपटि, काटे रतन पराए।
गुरिप्रसाद कहे सांईदास, सुत्या गई विहाइ॥

दुजे पहरे रैण दे,
मनि मेरिआ भाई, तै ज्ञान पदार्थु षोइया।
सिरि तेरे अजिली जमु गरिजे, तूं कित निहचल सोइया॥
निहचलि सोइआ जनिम विगोइआ, तसकरि पंच फरंते।
पै तरिनी राता, जोविन माता औगण किसी नि सुझदे॥
देहरी को तसकरि लूटण लागे, किते जु सौणी सोइया।
गुरि परसादि कहे सांईदासा, तै ज्ञान पदार्थ षोइआ॥

त्रिजे पहरे रैण दे,
मनि मेरआ भाई तेरी पंजा देहा साधी।
ते विष सो राते, जिन्हा हलाहल षाधी ॥
पंजा मिल हलाहल षाधी, भंने हरि पराए।
चरिम दिष्ट विष सागर भरिआ, तिस ते कौणु लंघाए ॥
अंतरि पहरे दुष्टु जु बैठा, थिर न रहे अपिराधी।
गुरि परिसादि कहे सांईदास, पंजा देहा साधी ॥

त्राए पहर वंझाइके भाइी, चौथे रहु उशिआरा।
रामनाम की सरिनी आवे, काटै विष्य विकारा ॥
विष्या विकारि जे काटिया, लोडे को गुणु देहरी नाही।
जाग दिआ तै इवसुतु वंझाईआ, वांधआ जमपुर जाही ॥
भाउ भगित भैइ चक्रत होइयो, सुण सुण हरि का दुआरा।
गुरि परिसाद कहे सांईदासा, चौथे रहु उशिआरा ॥

मनि गोइ लीआ भाई,
गोइ लडा दिन चारे, वोचारि विना तै कोते रंग पसारे।
रंग पसारि कीए वह तेरे, गोइल छाइण छाए ॥
चलुणु तैनूं चित्त नि आवे, रहणु भी नाह भराए।
इस धरितो ते केई गोइल लथे, लह लह अंत सिधाए ॥
सांईदास कहे मनि, गोइ लीआ मेरे भैआ।
रोइखडा दिन चारे, मनि पधाणुआ मेरे भैआ वोइ ॥
राते दी रहु राते,
रैण किवे किवे विहाणीआ, उठि चल्यो परिभाते ॥
उठि चलियो परिभाते भाई, जवि लगि सूर्जु चढआ।
रहु रहै नि कोई रहणु नि होई, करिम पजूता षडआ ॥
नाम निशानु नही सिर ऊपरि, सति गुरि दोन ही दाते।
सांईदास कहे मनि पधाणुआ मेरे भैआ, राते दी रहु राते ॥

मनु पंछी राम मेरा भाई, तरिवरि आइ निवासे।
तित हो वेले उडिणा, हुकुमु पिआ गरिभासे।

हुकुमु पिश्रा गिरभास तिहारे, सो तै पल्ले वधा।
कहु रहे नि कोई रहणु नि होई, कर्म कमाइश्रा लधा।
कसे तोले पाइ श्रमोले गिणगिण रतीश्रा मासे।
सांईदास कहे मनि मेरे भैइश्रा, तरिवरि श्राइ निवासे।

करितूति कुटंवि दी मेरिश्रा भाई, वेडीदा पुराणा।
संजोगी मेला, संजोगी उठि जाणा।
संजोगी मेला तित ही षेला, कोइ नि किसे साथे।
संगि वापु नि माई भैण नि भाई, वेटा नारि निराथे।
विनु नाम नि छूटे भांडा फूटे, घडिश्रा घाटु सत्राणा।
सांईदास कहे करितूति कुटंवि दी भाई, वेडी दा पुराणा।

रषु साष डुवंदी भाई, वंन्ना देह करार।
भरि सरिवरि उछले, किउ तरीए संसारा।
भरि सरिवरि करि उछले, किउ तरीए संसारा।
साउरु तरिसी मनु डुवि मरिसी, जित सरि हाथ नि वेड़ा।
कूक कहाइ पैईश्रा दिल भेंडे, पतुणु नाही नेडा।
करि सति गुरि वेडा, चढ वहु नेढा तारे तारन हारा।
सांईदास कहे रषु साष डुवंदी भाई वंन्ना देह करारा।

तनु षेत्री किरिसाण दी भाई।
लोडिनि दूतउ जाडी, किउ रहे सुहुली वाभु सत्राणी बाडी।
वाडी राषा कोइ नि वैठा, चुणि चुण मिरुश्रा षाधी।
चेते विच नि रही श्राम नि भुष काहे नू तै राधी।
पाप बिकारि कीए वह तेरे, तै श्रपिणी वात विगाड़ी।
सांईदासु कहे तनु षेत्री किरिसाण दी भाई लोड नि दूत उजाडी॥

किउ षेतु उजाडयों श्रापिना भाई, साहुवु मंगी हाला।
मंगी हाला पवीतरि टाला, मंदे कर्म कमाए।
चेते विच नि रहउो मूर्ष, दरिगा कौणु छुडाए।
दरिगा कोइ नि जामुनु थीवे वंध्या कौणु छुडाए।

चित्रगुपत दुइ दफतरि वैठे, करिदे कर्म संभाला ।
साहवु मंगी हाला ।

औगरण करिना छूटे भाई, गुण करि छूटे बीरा ।
राम रसाइरण चेत लै भाई गलिदे झडनि जजीरा ।
गलि दे झडनि जंजीरा भाई तेरे, जे गुरण गाहकु होवे ।
गुरि के वचिन सही करि छूटै, मनि मुष वैठा रोवै ।
तेरी दात तुधे नू सुझे, मेरे साहब गहर गंभीरा ।
सांईदास कहे औगरण करिना छुटै, भाई गुण करि छुटै वीरा ।

गिम्रा जोवनु नौ सोहणा भाई, चादर भई पुराणी ।
चुका रंगु कसुंभेदा मोरे भैग्रा, कली तुटी कुमिलाणी ।
कली तुटी कुमिलाणी भाई, रंगु कुसुंभेदा चुका ।
पाणी वाझो षरा दुहेला, सरिवरि दा नाउ सुका ।
रजि बीरिज ले पुरिषु सिधाइग्रा, पाछे देह निमाणी ।
सांईदास कहे गिया जोवुनु नौउ सोहणा भाई चादरि भई पुराणी ।

सरु सुका कौलु डुम्हणा,
मनि मेरिग्रा भाई, ग्रौध पुंनी कुमलासी ।
ग्रौध पुंनी कुमलासी भाई, विच हंस नि दे झुलारी ।
यह वेला उड़ि जासी भाई, विच हंसुनुदे झुलारी ।
उडि गिग्रा पंषी मीटी ग्रषी, तजी सु ठौरि पिग्रारी ।
काल जाल जम ग्राइ परोता, चुगिदा फाही फासी ।
सांईदास कहे सरि सुका कौलु डुम्हाणा ग्रौध पुंन्न कुमिलासो ।

जापासा छकि ग्राइग्रा भाई, ढुलएह षाधी सारी ।
ढुलि षाधी सारी भाई, जापासा छकि ढुल ग्राइग्रा ।
पिग्रा ग्रपुठा साहवु रुठा, कची षेडे गलग्रा ।
हारी पिंड पई गल फासी, देषहु मनि वीचारी ।
सांईदास कहे जांपासा छक ग्राइग्रा भाई, ढुल षाधी सारो ।

गंढो मिसीओ हथ पिआ,
मनि मेरिआ भाई, कलि मल साहा धरिआ।
पुंना साहा जंज वलाइआ, अनिवरि देही वरिआ।
पुंनु पापु दुइ दाज मिले, जमु ले चलआ परनाई।
सांईदास कहे ऊपर गुलानि भेविही जाभरि पुनी तेरी आई।
चार पहिरे ते बारा अष्टपदिआँ बावेदियां।

भगित माल लिषते

सरिन हरि जो आवे सो आवे।
जाति पात कुल को नही आदरि, भजनि करे सोई भावे।
ताणी उणति औध सभ वीती, जुलहा नामु अधीरा।
भजिन प्रताप नीचि भओ ऊचा, मिलि रह्यो राम कबीरा।
छीपाग्रह की बूंद परति है, बिनु इ ध्यानि रहीए।
नामे के करि दूधू पीओ है, बिधि निषद्ध क्या कहीए।
ढोरि मरित दुरिगंध उठित है, मुषि ढापति लेति खासा।
ताहि तुचा ले पनिआ गांठे, भगित भयो रविदासा।
काटित गाएला पछारित अजिआ, सधिना नामु कसाई।
चढि विबाण वैकुंठ सिधारे, अति उत्यमु गति पाई।
कुलि कुचील ले जूठे वस्त्र, पहरति सैणा नाई।
तांकी ठौरि राजा पह जांके, दरिपण कृष्ण दिषाई।
अजामल्य पतितां को नाइक, कठया हीनि विकारी।
सुति के हेत जपओ नाराइण, दीनीमुक्त मुरारी।
बंस कुबंस नि लाजि भामनी, गनिंका कुले निवासा।
पंछी हेत मनो हरि सिमरिओं, भओं मुक्त मै वासा।
जूठे बेरि षाए भीलनि के, हिति चित प्रीत लगाई।
कौण तपस्या करी बावरी, भगितनि दई मिलाइ।
धंना जटु चरावे गौआ, जिसि चितु दे गोबिंद पाइआ।
बेदपुराण पडिओ नही स्मृति, भगित माल मै गाइआ।
नाचकूद के हरि गुण गावे, आछा भगितन रोला।
दासी का सुतु जगि मै कहोए, सो तो कान्हा गोला।

जो जो सरिण आए तै तारे, असरनि सर्न मुरारि।
सांईदास के प्रभ पूर्ण स्वामी, विर्द की लाजि सवारिन।

विलाविल

नही कोई दाता गुरि की भांति।
त्रिकुटी हंस अनीलि अनाहदि, तिति ही ठौरि बतावे झाकी।
नार्द मिलि मुचकंद पुकारिउो, ता उसिदा जनिमु बिचारिउों।
गुरि प्रतीति परति जो नाही, सिषरि सुमेरि ध्रू अषे निहारिउों।
अैसा दान करे कोई भूपति, लाषि टगा वषसावे।
गुरि की दाति बावे की विचरे, कोटि जनिम मुक्तावे।
मिले मछंद्र अभे भै पदि गोरिष, लोका कारिण वाति ठहराई।
गुरि चेले भै एको सांईदासा, गुरि को मिले वडआई।

राग वसंत

प्रहलादि को सुषु तुझे ही दीन, भगित वछल ध्रू अटल कीनि।
हरिनाकस नषी विडारिना, पसु सूआ पारि उतारिना।
अहनिस गनिका रची काम, अपिराधी उधिरे हरि के नाम।
पूतना के असथनि वदन माह, वांको पारुसु भेटिउों छिने माहि।
छिन माह उधारियों ससेपाल, राजे बलि को दीना तै प्याल।
कंनिआ द्रोपती भूपत वस परी, वहि वस्त्र षेचति लज्जा मरी।
औसरि सिमरियों तित निधानि, तांकी लज्जा राषी गुणा निधानि
तेरी भगित बेमुषु पापी क्या करे, वहु निस दिन भै जमि के डरे।
सकले उधिरे सर्न पाइ, सांईदास को चितु ठौरि माहि।

गुमानिण माणु नि करिऐ,
आगे तेरा को नाहो, किस आष सुणावेगी।
गलि पवीगा जेविडा, ध्रूदी षडिएगी।
दभ सूला, पुढिनी तनु तापे, किस रोई सुणावेगी।
सांईदासकी इकि बिनिती, एह अजुरु जरि नाही।

जौ कहे राजे गमु कोई नही।
महल फकरि के माह आवे, किने शौकु है[1]।
फकिरि के तषित परि वषुतु है, कोई जोहरी जांणे।
जोरु जुलुमुना कछु नाही, मुलुषु जापिता माने।
राह मै पडी है जेविडी, मानो सपु दिषलाई।
महरि मीते निर्भे भई, अजानि भै षाई।
निर्भे दी नाही कामता वोइ, भूले हाल दिवाना।
सांईदास को दियाल क्रपा परी, लागा शेर का बाणा।

पूरिबी—

क्रष्न तेरे चलित्र नि वर्ने जाह।
सभ पंषी जल अधिक पीवित है, चात्रक किउ विलालि।
सभ वनिराई सघन घनि सोभति, कलि अरिकिउ[2] नही पाति।
वैता मल्ल भए रति हीने, न फलि ना कुसमाति।
इकि जगि मूंक पगि द्रगि हीने, दैनी इकि धनि पाति।
गजि को पैआ मैआ नही अस्थनि, सागिरि किउ अपिआति।
वहुतो बंस थीति बलि उपिजति, शाम कलंक लगाति।
दिनि को अंध घोघ होइ बैठति, निस को सभ दिषलाति।
कहु सांईदास पुरातन रेषा, नौ तिन होत नि वाति।

नरिसिंघ माह प्रभू छवी रसि, विंजनि भोगि बानाए।
नाना बिध के रंगि लक्षमी, भोजुनु सवारे।
मनि मे करित अनंद नार्द मुनि पनिवाडा ल्याए।
जलि भरि लिआई गंगि, अंतिरिगति की अंतिरि जाने।

सभि विधि जानिन हारि, माधो हमरे भोजुनु कीजे।
हम तो सेवक जनिम के, नामु अभै पदि दीजे।
माधो छवी रसि विंजन भोगि बनाए, आछे बने पकौडा।
फल पकिवानु आचरु जु मीठा, हछे दषि विजौरा।

---

१. इन पंक्तियों की पुनरावृत्ति हुई है। देखिए पृ०, ६४०।
२. अरिकिउ=आकको।

जिस माता दा माषुनु षाइआ, चार पदार्थ पाए।
सुदामा जी के सतू षाए, कंचिनि भविनि बनाए।
छीन दही जमना तटि षाइओं, बड़ी भगित सग्यारी।
अपिनो विरुदु तुम जानि मनोहरि, केती सिपत तैय धारी।
जूठे बेरि भीलिन के षाए, सो तै अंवृतु करि मानिआ।
बाथू सागि विदरि को षाइओ, सो तै हितु करि मान्या।
दिजि पतिनी निर्भो करि राषी, जांके भोजुनु कीना।
पांडवि सुति बैकुंठ पठाए, जापु सुफलु तै कीना।
षाइ गोरुसु धना तारिओ, नामे दूधु पिलाइओं।
जनि सांईदास के भोजुनु कीजे, अपिनो विरुदु वधाइओं।

रागु सोरठ

भगित बिनु तेरा जनुमु अकारा।
जो दीसे सभि सुफने सारषा, भूले भरम गवारा।
रे मनि तै इस्थिरि नही रहणा, व्रथा मनि करे पसारा।
चलित गिआ संग नि साथी, माति पिता सुति दारा।
उस्थिति[1] अपिनी निंद्या औरा की, पाषंड पाविन हारा।
पषंड नामु नि पाईए वाविरे, सो तत इनि ते न्यारा।
रसि रते रतिन तै षोइओं, बांधे कचि के भारा।
जबि जमि आइ झोटिये पकडे, तव लागे पछुतारा।
कीए चलित्र सकल प्रभ तुमरे, नाना रंग अपारा।
सांईदास अकीति गुन गावो, जनि को पार उतारा।

मैआ तेरा वैकुंठि सारिष भौनु।
जहा सील सुमति सरीरि दिढता, करित मुनि जनि गौन।
तारा सीआ मदोदरी धारोपेती[2], अहल्या नार।
इंद्र सहता मोहनिआ नित निर्त करति दुआरि।

---

१. उस्थिति<स्तुति।
२. धारोपेति<द्रौपदी।

प्रहिलादि ऊधो अर्जना तुही सुसलित रंगि।
नित निर्त नार्द द्रिढ रहउो, सुरितलि सुरि मरंद।
वशिष्ट गरिगा गोतमा, सुषि व्यास वदिन सारूप।
अष्ट सिध्य नौनिध्य द्वारि उतिरी, तहा भौनि अनूपु।
सिध्य साध सकिल मुनि जनि, जहा वसे तीर्थ कोटि।
सांईदास नौउनिध समानी, जगति भौनि की ओटि॥

सहिज मो समाध लागी, ज्ञानु तहा भूला।
प्रेम भगित चित समानी, उनिमनी मै भूला।
पषंडी की कला छूटी, मेरि धुनि समानी।
देह ते विदेह भओं, असौ अज्ञानी।
सेस लोक लगि प्रजंति ब्रह्म लोक तांई।
आपिना सारूपु देष आपे विगसांई।
आपिना ही चिमतकारि जित कित निरषावै।
असो बिज्ञानी बिज्ञानि ही मै लिआवे।
कहिना अनि कहिना सोई कहना।
सांईदास दास मोही रहना।

जम तनि विचो निकले, जाली कर्म भए।
जो तुध वीजे अंधआ, सोई उपिज षडे।
जो तुध कीते छपि के, सो दफतरि जाइ चढे।
दोसु कैनू दिचे सांईदास, कीते उठि लडे।

दो०—चारि वर्ण हरि को भजै, एक वर्ण होइ जाह।
सांईदास अष्टधाति पारस लगे, एकै मोल विकाइ।

रागु षटि

आजु बने नंदलाल दीए तिलक केसर भाल,
मुकिटि की लटिक छब कही नि जाई।
श्री मदनमोहनि ठाढे सघन तरवरि तरे,
मंद मुसकात सुंदरि कन्हाई।

श्रविन कुंडल झलकु छुट रही, अति अलक,
मुरलिक तान रस सो बजाई।
श्रविन सुनि ब्रह्म सनिकाद मुन थक्त भये,
देह की दिसा मनि ते भुलाई।
स्यावरो वर्न अति नैन राजति अर्न,
पीति पट फर्न सुंदरि सुहाई।
हीए बनिमाल संग लीए गोपी ग्वाल,
रास रसम से गोपाल माही।
लीए करि जोरि तत्त उघट ततथैई थैई,
दोऊएक ते एक सुंदिरि सुहाई।
कहत विष्णदास हित कमल नैनाभ सुष,
मुर्ल का पर्न मै सभ रिझाई।

रागु रामकली

एहिउो सुर्त्त मतु षोईउो रे
हरि सा मीत काल सा वैरी, मनो विसार न सोईउो रे।रहाऊ
मनु किर्साण धर्नि करु कांया, बीज अंवृत नित बोईउो रे।
सांत सहिज जल अंवृत वर्षे, हौमे कलिर धोईउो रे।
इहि संसारु अग्नि का भामुडु[1] तांते आपु संगोईउो रे।
गुर का शब्दु रत्न निरमोल, कुसासा के सूत परोईउो रे।
साधू जन भगवान भक्त विनु मुक्तया कबू न होईउो रे।

रागु सोरठ

ममता विचलायो मुन जन को।
तिन ही को भगवान मानता अरि जानत कर मन को।
शिव गृह देषि लुभाने जगपति, मांगत हेम भुवन को।
हाटक मृग देषि राम भुलानो, मानत बनति वचन को।
संच पर संच थक्त भयो प्रांनी, कहति हमारा धन को।
कहु सांईदास पुरातन रेषा नौतन होत न कन को।।

---

१. भामुडु = ज्वाला।

सोठ

लाहा सुर्ति शरीरो पीवणु।
भ्रमु की भीत चुक्कयो नाही, भठ परयो इहि जीवणु।
भ्रमु चूके कछु जान्या, तव दिष्ट न आवे दूआ।
जरा मर्ण ते छूटा संतो, अभौ भया तो मूया।
रवि की कीर्ण सुरसरि विहंग, कर रसना इहि पीवन की भावी।
हं हं करति सुनावै सो हं हं कहा करो जव दिष्ट न आवी।
रवि की कर्ण पकर पौ अंतर इहि उहु एकौ कोई।
रास कचु जिस है सांईदास, कंचन कबहू न होई।

सोठ

जौ लौ राम शर्ण नही जानी।
तौ लौ ढीठ अधम नही को, जूहै हि पसु नामु परानी।
वोयो विषु षोयो सभ अपना, जानु जन्म अभिमानी।
भूल परयो मग ही के जल जिउ सांईदास भजु परु रैन विहानी।

रागु आसा

सही कर्नि को मैं कित घर जाई।
नेत्र निहारी वसिआ सक्ली थाई।
तीर्थ वेद सक्ल वैरागे जित घर जाई।
द्ययाल तिते तूं आगे, दूचो पद षग त्रिगुटी जेती।
प्याल परे द्ययाल गगन समेटी।
रवि सागर वपु ससी जो न क्षत्री।
वण फल फूले दियाल पुहपी पत्री।
गुर पुछु सांईदास ढूढ लै आपे।
कांते की कनक कुरंग जैसे नापे।

आसा

सुर्ति रही सुर्ति कहा गई।
चाहित थाके दियाल एहि न भई।
कहा से आवे कहा ते जावे, तांका मार्गु कोऊ न वताई।

पाछे पकर पकर रवि किरणी,
नेत्र निहारी छायाल निज घर फिरनी ।
कहिना सुनना सभ तुमरी गाथा,
सांईदास का प्रभु दसि दिश लाथा ।।

सोरठ

मन रे इन मै है कोऊ तेरा ।
मूंनिस पंषी जैसे विर्ष बसेरा ।।—रहाऊ
मात पिता ते पत्नी प्यारी, ढूढ ढंढोर तनु षायो ।
तिन तो अंति गवन की विरीया, इति उति वदनु दुरायो ।
सीत घाम दुख सुष कर मान्यो, रच पच धाम वनायो ।
तांते धीस निकाल्यो षिन मै पलिक न रहिणा पायो ।
इष्टि मीत अरु संजुन सहोदर, सदा रहित तुझि घेरे ।
तेऊब उलटि कहै क्या विलमो काढो प्रेत सवेरे ।
तन सुत हेत चर्न तजि के शिव प्रतिपालन मनु जोरयो ।
तिन ही प्रिथमे लूका दीनो, सीस हडाहल फोरयो ।
नरनारी अरु नेह कुटंवी भर्त पोषन प्रति पारयो ।
तेऊ वतोर अडाल चले है पाछे किन न निहारयो ।
मैं जग ढूंढ ढंढोर निहार्यो, सौच सुकच जोय माही ।
सांईदास भगवान भजन विनु अंत काल कोई नाही ।

रागु रामकली

अगम अगोचर अनहदि वाणी[१] ।
क्या कोई कहे कहिन की नाही, अनभय गति हयरानी ।
पांचो मार करे अपुने वश्य तौ इहि ज्ञानु वीचारे ।
दशि दिश गवन करन ते थाको आप तरे औरो को तारे ।
त्रिगुण अतीत रहित तति उपिजै तत पद माह विल्हावे ।
गंग जमुन के भीतर वैठा अगमो निगम लयावे ।
सुंन समाध सहिज लिव लागी मनु ले तहा चढावे ।
पसरी किर्ण तिमर तव फूटा, सोहं शब्द सुनावै ।

---

१. पृ० ६५८ पर यह पद आ चुका है । यहां दो पंक्तियां अधिक हैं ।

शशि नही सूर पवन गति छूटी महापुर्ष के वासा।
जन्म मर्ण की शंका नाशी तहा वसमो सांईदासा।

रागु धनासरी

पहिले पहिरे रैन दे मन मेरआ भाई, रहिता धुंधूकारे।
तदि सूर्जु चंदु न होत आकै जुग गए अंधिआरे।
सूर्य चंदु पौन न पाणी, धर्ति न गगन न गैंणी।
सकल समाइ संपूर्ण रहयो, अबिला संतु वीचारे।
आदि जुगाद जु पहिरे बैठा प्रिथमे धुधूंकारे॥ १॥

रहिता धुंधूकार विच मन मेरआ भाई निर्भो अनल अनीलो।
तद दूजा कोइ न जाणोए, साधिक सिध वकीलो।
साधक सिधि वकील न जापे, निर्भौ ऊहु निर्वाणी।
पार ब्रह्म परपूर्ण कहीए, सहिजे सुर्ति समाणी।
शास्त्र वेद पुराण भी आपे, जंगम जतन असीलो।
आदि जुगाद जु पहिरे बैठा, निर्भौ अनल अनीलो॥ २॥

रहिता धुंधूकार विच मन मेरआ भाई निर्भो ताडी लाइ।
हंसा सोइ समाइआ हरि गति लषी न जाइ।
हंसा सोइ समाया जंची निर्भो उहु निर्वासी।
पार ब्रह्म संपूर्ण कहीए अनूपान अविनाशी।
साधक सिधि रहे लिवलागी, बह्म अंतु न पाइ।
आद जुगाद जु पहिरे बैठा निर्भौ ताडी लाइ॥ ३॥

देषो नेत्र निहार के मन मेरआ भाई तैं विनु दूजा नाही।
सर्व निरंतर रम रहिया निरंजनु जंत्रा माहो।
जंत्रा माहि निरंजनु रमिआ देषो हृदे विचारी।
अकुल नामु जिन्हा भौजुन्ह नरंकार निरहारी।
अलष कोट पद भंकर वैठा वहे जु जुगा जुगाही।
सांईदास प्रभ अकथी मूर्त तिस विनु दूजा नाही॥ ४॥

रागु कल्याण

राम नाम निर्मल जलु, जलि मलन काटि डारे।—रहाऊ
उौरु न कोई ऐसो द्वार भार भय के दूर कार्नि चितवते चित
चारो जामदीन दूषटारे।
एक हूं तेज गत नाथ देव को अनाथ नाथ सांत विघ्न जारे।
राजन कें महाराज काज कार्नि संतना के द्रोपती भय अभै।
कीन लाज को न हारे
गनका गज अजे जान मान लीयो करुणामै हेत प्रीत धारे।
नर हरि चर्नि चीत मीत अंत के सहाइ बधि व्याध मुक्त कीने
काटे अघ भारे।। ५।।

राग कल्यान

रसिना राम नाम जपि लीजे।
तनु मनु धनु हृति हेत अपन मै सकल समर्पनु कीजै।
वेद पुरान वहु विधि व्याकरणा काहे को पढि पच मरीए।
काम क्रोध मद लोभ मोह ते जो मनु सुद्धि न करीए।
जीवनवृत्त उदर के कार्नि जो विद्या गुन गहीए।
सो पंडतु समान धर्मु है अधिकारी ना कहीए।
छाडि कपटु अतिडिंभ चतुराई अति आनंदु वढौ है।
सर्व शास्त्र को सार भूप रसु माधोदास पढोओ है।। ६।।

रागु आसा

राजा राम आए आनंद भए नगर अजुध्या माइरी[1]।
मंगल चार भए दसरथ के चलो बधावे जाइरी।
लछमन साथ अजोध्या आए, जानुकी वाम अंगरी।
इकन्हा दूधि दही कर लीना, इकना हाथ तंबोल री।
इकना राज सिंघासन लीने इकि बोलत मीठे मीठे बोल री।
हर्ष्यो भर्थ शत्रघन हर्ष्यो हर्षी कौशल्या मांइरी।
नर हरदास सभे जन हर्षे फूल रही बनराइ री।। ७।।

---

१. यह पद एकबार पृ० ६५५ आया है। संभवतः राग भेद है।

रागु मल्हार

रषने एक ही हाट के धर आनी त्रयलोक।
नाल उपाया पाप पुन्य नाले सहिज वियोग।
सकल समानी कृत्यमी, जाके रूप अनंत।
सांईदास हृदि रचायो चतुर्दश किरयाण जीय जंत ॥८॥

मुर्ली जहि जहि श्रवण सुनी।
दौर दौर दस दिस ते आए तजि तजि ध्यान मुनी।
धेन न गहे जानु दंतो तनु जमना चलन पायो।
गवन न र्कति ताह रवि को रथ पौन ध्यानु लगायो।
जेती बधू बाल गोकल अहि पर्म प्रीति उपजाइ।
गह कर कलस पहिर अबि लेयन तिह तिह औसर आई।
आनंदेवे व्रिज के लोको आनंदु प्रेमु वढायो।
लील्हाधर करुनामय ठाकुर सांईदास जसु गायो ॥६॥

रागु कल्याण

हरि को नाम मन किउ न जपत रे।
काहे रे भरोसा करो जीवण का निसबासर तेरी अवधि घटात रे।
तन धन जोबन तरवर छैईआ अंजरी को पाणी जैसे जात ढुरात रे
विनु रघुनाथ कोऊ काम न आवे काहे को झूठो गर्वु करात रे।
साधि संगत हरि कथा कीर्त्तिन इनि बतीअन सौ पार परात रे।
तूल रास जैसे अग्न दहति है राम जपति तेरे पाप जलात रे।
राम नाम जपो उर अंतर आद अंत तेरे संग चलात रे।
कहे सांईदास जपो निसवासर मुषो कहति कछु मोलु लगात रे १०

अथ आर्ती लिष्यते

खंड खंड ब्रहमंड सकल मै बिधि बिधि जोत समानी।
थाली गगन दीप रवि चंदा निसपती ए बिधि ठांनी ॥
अटल ध्यान धरयों निज धर्नी मार्ति चवर झुलावै।
गावन हारे सदा द्वारे शव्दु अनाहदि गावै।
तेरी आर्ती मेरे कवलापति पर ध्यान मेरे माधो गुणानिधान।
मैं वार्या जां, संत उधार्न राम तेरी आर्ती ॥१॥

अगम गम्य गम निगम बीचार्या विचर बीचार सुणाश्रा ।
सुण सुण सिद्ध साधि सुरपानो मुक्त पर्मु पदु पाश्रा ।
पार ब्रंह्म अपर पर सोहं हंसा सुर्ति जनाश्रा ।
मुलमा मध्ये हीरा पेष्या सतिगुर निर्ष जनाश्रा । ॥२॥ तेरीआर्ती

अगम गुफा मग गुर दिषलाश्रा तांते सुर्ति लगाई ।
अवघट घाट बाट घर ऊपर बिर्ला को वसिश्रा जाई ।
उति घर बसे सो बहुर नि निकसे ओस घर यहि व्यवहारा ।
सांईदास फिरि वहुरि न धडीए न फिरि पवै पसारा ।
तेरी आर्ती मेरे कवलापति पर ध्यान मेरे माधो गुणानिधान ।
मैं वारे जां संत उधार्नि राम तेरी आर्ती ॥३॥

कैसे कर आर्ती तोह रिझावो ।
मैं मूर्ष मति वुधि मेरी काची कहा तेरे गुण गावो ।
ध्रू नार्द तेरे आगे नाचे क्या मैं नाच दिषावो ।
अनहदि शब्दु बारे द्वारे घंटा कहा बजावो ।
कै त्रैकोट तेरे चर्न मलोवे क्या मैं टहिल कमावो ।
कोट पवन तेरे देह बहारी क्या मैं चवर झुलावै ।
जीय पिंड सभ तुमरा दीश्रा क्या मैं सीस निवावो ।
अषत भवन मै जोत तिहारी क्या मैं फूल चढावो ।
ससी अर भान छाए मन सोभा दीपक कहा जगावो ।
महादास भजु लाल त्रिभंगी कहति सुनति गति पावो ॥१॥

आर्ती लेहो मेरे राजा राम, आर्ती लेहो मेरे श्रीभगवान
अषल भवन के नायक माधो कमलापति परधान ।
दीप धूप लै करो आर्ती चोश्रा चंदन पान ।
कोटक नार्दि बीन बजावे गावे गोपी कांन ।
जो जो सर्नि आए प्रभ तुमरी सेवा कीए निधान ।
क्या लै गुन बर्ने मेरी रसना निगम रहे हैरान ।
स्मृत शस्त्र बेद पुकारे पतति पा न तेरो नाम ।
कौट भक्त तेरी करे आर्ती सिद्धनाथ सुर ग्यान ।

जनम जनम एही फलु मांगो प्रेम भक्त देहो दान ।
महादास सचु प्रगटि कहति है सुनीए श्री भगवान ॥३॥

जय जय आर्ती राम जी तिहारी ।
दीन दियाल भक्त हितकारी ॥
जन हित प्रगटे हरि बपु धारी । जन प्रहिलादि प्रतज्ञा पारी ।
द्रुपत सुता के चीर बधाए । गज के काज पिआदे धाए ।
दस सिर छेद बीस भुज तोडी । सुर तैतीस बंद ते छोडी ।
छत्र गहन कर लछमन भ्राता । आर्ती कर्त कौशल्या माता ।
सुक सार्द नार्द मुन गावै । भर्त शत्रघन चवर झुलावै ।
सन्मुष चर्न गहे हनूबीरा । ध्रू प्रहिलाद बाल सुभ बीरा ।
सीता सहित अयोध्या आए । सभ सावल मिल मंगल गाए ।
रावण जीता राम ग्रहि आए । रामानंदि स्वामी आर्ती गाए ॥४॥

आर्ती करत जनक करि जोरे ।
हरि हरि बडे भाग राम जो आए हो मोरे ।
सीया स्वंवर धनष चढायो । सभ भूपन को गर्बु मिटायो ।
तोड पिनाक कीयो दोऊ तुटिका । रघुकुल हर्षि रावण भई संका ।
आई सीता संग सहेली । हर्षि निर्ष उस माला मेली ।
कंचन थाल कपूर को वाती । सुर नर मुन जन आए बैराती ।
गज मोतीअनि को चौंकु पुरायो । कनक कलस भर मंगल गायो ।
धंन धंन राम लषमन दोऊ भाई । धंन्य दशरथ कौशल्या माई ।
मिथुला पुर मै वजत वधाई । दास मुरार स्वामी आर्ती गाई ।५।

आर्ती नृसिह कवर की बेद बिमल जसु गावै ।
प्रभ जी पहिली आर्ती प्रहिलाद उबारे हरिनाषस नषि उदर बिडारे
दूसरो आर्ती बाबन सेवा बलि के द्वार पधार्यो देवा ।
तीसरी आर्ती ब्रंह्म पधारे सहस्राबाहू के कार्ज सारे ।
चौथी आर्ती असर सिघारे भगत भभीछन लंक पधारे ।
पंच आर्ती कंस पछारे । गोपी ग्वार सकल प्रितपारे ।
तुलसी को पत्र कंठ मन हीरा हर्षि निर्ष गावै दास कबीरा ॥६॥

कहा लै आर्ती दासु करे हरि हरि, सकल भवन जांकी जोत फिरै।
सात समुद्र जांके चर्न निवासा काहा भयो जल कुंभ भरे।
कोट भांन जांके नष की सोभा कहा भयो कर दीप धरे।
ठारा भार रुमांवल जांके कहा भयो सिर पुशप धरे।
अनेक भांत जांके वाजे कहा झालरि झनकार करे।
शिव सन्कादक अरु ब्रंह्मदिन नार्द मुन जांको ध्यान करे।
लष चौरासी व्यापक रांमा केवल हरि जसु गावे नामा ।।७।।

आर्ती कीजै राजा राम रीझै।
भक्त करो जम त्रासु न दीजै।
पहली आर्ती पुहप की माला काली नाग नथ ल्याए कृष्ण गोपाला
दूसरी आर्ती देवकी नंदन भक्त उधार्न असर नकंदन।
तीसरी आर्ती त्रिभवन मोहे गर्ड सिंघासन राजा राम जी को सोहे
चौथी आर्ती चौदस पूजा एक नरंजन स्वामीऊैर न दूजा।
पांचवी आर्ती रामजी को भावै रामजी के हरि जस नामदे गावे ८

आर्ती हनूमान लाला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कौला की ।।
जांके बल गर्जे अरु कांपे। रोग सोग दुष्टंसीव न जांके ।।
अजुनी पूत महा बलदाई। साधन सेवक सदा सहाई ।।
दे बीडा रघुनाथ पठाए। लंका प्रजाल सीया सुधि ल्याए ।।
लंक सी कोट समुद्र सी षाई। जात पवन सुत वार न लाई ।।
लंक प्रजाल असर सभ मारे। राजा राम जी के काज सवारे ।।
लछमन मूर्छ परे धर्नी पर। आन सुजीवन प्रांन उबारे ।।
वावी भुजा सभ असर सिंघारे। दाहिनी भुजा सभ संत उधारे ।।
पैठ प्याल तोडे सभ किंकर। अही रांवण की भुजा उफारी ।।
घंटा ताल पषाउज वाजे। जगमग जोत अवधि पुर राजे ।।
कंचन थाल कपूर सुहाई। आर्ती कर्त अंजनी माई ।।
सुर नर मुन जन आर्ती उतारे। जय जय जय हनूमान उचारे ।।
जो हनूमान जी की आर्ती गावे। बसे बैंकुंठ वहुरि नही आवै ।।
लंक वधो सन सीआ रघुराई। तुलसीदास स्वामी आर्ती गाई ।।९।।

हर्ति सकल संताप जनम के मिटत तलब जम काल की ,
आर्ती कीजै मदन गुपाल की ।।
गो घृत रचित कपूर की बाती झलिकत कंचन थाल की ।
चंद्र कोट ससि भान कोटि छबि मुष सोभा नंद लाल की ।
शंष चक्र गदा पद्म विराजे उर बाजंती माल की ।
कीट मुकट कर सारंग सोहे अंजरी कुस्म गुलाल की ।
सुंदर लोल कपोलन की छबि निर्षत व्रिज के बाल की ।
सुर नर मुन जन करे आर्ती मोक्ष मुक्त प्रितपाल की ।
घंटा ताल मृदंग झांझरी बाजत बैन रिसाल की ।
हों बल बल रघुनाथ दास पर मोहन गोकल बाल की ।। १० ।।

निर्ष सरूप सीया रघुबर को छव नही जात वषानी ।
आर्ती कर्त कौशल्या रानी ।।
कनक थाल गज माणक मुक्ता भरे सो बहु विधि आनी ।
मार्यो मान सकल भूपन को कीर्त्त बेद बषानी ।
तोड्यो धनष जनक जगपूर्ण तीन लोक मै जानी ।
जनकराय की लाषी पर्सराम हित मानी ।।
दसरथ सहित अवधपुर वासी उचिरति जयजयबानी ।
तुलसीदार्स प्रभ अवचल जोडी भक्त अभैंपद दानी ।। ११ ।।

अथ श्री जोग चांदना

ओं सति सरूप बाबा सांईदास जी

रागु हिंडोल

परिसादि गुर के भउो आनंदि।
पूर्न पाओ मुनि मुकंद ॥—रहाऊ

मनुअ उलिटयो एके वारि।
संसा भर्म सभ दीयो टारि।
नषि सिर पूर्न ब्रह्म ज्ञानि।
मानो नाही देव वहु आनि।
सति गुरि किरिपा तिविहूं जानि।
जवि लागे गुर चर्न ध्यान।
विहारी दास प्रभ भए क्रपाल।
कर्मचंद रहे चर्न नालि।
उलिटि परियो जवि आतिमा।
आनि ठौरि काई रही नाह।
जलि थल महल सर्व पूरि।
जवि देषो तवि है हजूरि।

चौपाई—

सति गुरि पलक है बहुति प्यारी।
रोम रोम विच लागी तारी।
नषि सिष पूर्न ब्रह्म ज्ञानि।
कर्मचंदि गुरि लागो ध्यानि।
सतिगुरि किर्पा अपर अपारि।
जांको नाही पारावारि।
हरि की क्रपा कोई दासु विष्याने।
कर्मचंदि गुरि चर्न पछाने।

द्वादिस मेलो सुर्त लगाइ।
अंतिर वाहर रह्यो समाई।
गगिन चढे चढ गर्जे जाइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न मिलाइ।
इसि चर्नन का इस्थर धरो ध्यानि।
कर्मचंदि गुरचर्न मैं सरहो गलितानि।
अयसा धारो जु दौडि मिटावे।
कर्मचंदि तवि दर्सन पावे।
इस दर्सन का पावे भेव।
नषि सिषि पूर्न आतिम देव।
अनिभैय कथा भै नाही कोई।
कर्मचंदि गति पावे सोई।

चौपाई—

अयसी वाणी वणिने लागी।
राम नाम पाओ वडिभागी।
अनिभैय कथा सोहं जाप।
अयसे जाप वढे परिताप।
कर्मचंदि गुरि चर्न वीचारि।
वाहर अंतिर जोती तारि।

दो०—आसा अंतिर मारिए पाईए पदि निर्वानि।
कर्मचंद गुरि चर्निते आठि पहरि गलतान॥
कर्मचंद परि करणा करो धरो पीठ परि हाथ।
मानि वलेके बगते राष लिओ महाराज॥

सो०—वुकिल विच यारु असाडा काहे वाहरि जाईए।
इसि यारि दी सूर्त ऊपर पलि पलि विलम नि लाईए॥
अयसे स्वास मतु करों अजाई स्वास स्वास चित लाईए।
सतिगुरि सिहजा उपरि वसिए त्रिगुटी महल सुष पाईए॥
त्रिगुटी पाईए गुरि परिसाद कर्मचंदि गुनि गाईए।

अइसी लगी वलाइ लागित ही भ्रमु जरि गियों।
जनिम मर्नि भौउ जाइ चर्न कमल की मौजिमै ।।
चर्न कविल मैं छकि रहे निसिवासरि गलतानि।
कर्मचंदि गुरचर्न धूर परि लागि रहे गुर ज्ञानि ।।

चौ०—अइसा दाता कौंन है दे आतम को वीचारि।
विन गुरि कैसे पाईए अंतिर गत रस सारि ।।
गुरि दाते गुरि वडै है गुरि किरपा ते पाइ।
कर्मचंदि गुर चर्न धूरि परि अनिक वार बलि जाइ ।।

पौड़ी—
अंतिर अइसी जोति प्रकासी।
झिलि मिल दर्सन सदा बिगासी।
अयसी जोति को लागे भाई।
कर्मचंद गुर चर्न सहाई।
सनिकादिक ब्रह्मादिक थाके जानि।
तुम भी भजो सभ मेरो कानि।
अइसी किर्पा जनि पहराई।
कर्मचंदि सोहं स्वास स्वास समाई

पौड़ी—
उलिटि कौल जवि ऊपरि जाइ।
नाडी नाडी स्वास वताइ।
सूषम नाड सूषम गति पाई।
कर्मचंदि गुरि सदा सहाई।
अष्ट कौल है जांके पात।
पाति पाति फूल विन सोहं जाप।
इसि सोहं का करो वीचारु।
कर्मचंद गुर चर्न अपार।

पौड़ी—
अपारि कला को जो कोई लागे।
जाके भागि सोई निसि जागे।

कर्मचंदि तुम जागो भाई।
सोआं सोइआ किउ रैन गवाई।
उलिटि पौन गगनतरि जाइ।
चर्न कौल मै रहुओ समाइ।
अइसा दर्सुन देषो भाई।
कर्मचंदि मिल जोति सवाई।

दो०—गगिनि मार्ग मै जोति झिलमिली तहा अंवृत रसु पीजे।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि चितु चेतिन करि दीजे॥

पौ०—गगनि मंडिल मै अंवृत कूआ तहा जाइ लिवि लागे।
तहा जोत झिल मिल हरिसे सोहं सविद मिला जागे॥
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि स्वास स्वास चित लागे।
सुर्त समानी सविद मै सवदि चढिओ अकास।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि लागी वहुति प्यास॥
इही प्यास लागी रहे निस वासरि अरि भोरि।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि होए नैनि चकोरि॥
चकोर दिष्ट अकास की आनि नि कितिहूं जाइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि रहियो सर्व समाइ॥
अकास चांदना सविद है चंदि चकोरि के भाइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनेक वारि वलि जाइ॥
अग्नि चुगे चितु ना जले सीतिल ब्रह्म वीचारि।
कर्मचंदि गुर चर्न धूर परि अनिक वारि वलहारि॥

पौ०—उलिटि परा जवि आप मय सर्धा रही नि काइ।
रोम रोम विच छकि रहियो अंतिरगति लिव लाइ॥
रूप रेष अश्चर्ज है तहा कर्मचंदि चितु लाइ॥

पौ०—पर्म पुर्ष को जानीए तौ परिमार्थु होइ।
जहा सति गुरि का उपिदेसु है परिमार्थ कहीए सोइ॥
औरि परिमार्थु कछु नही देषो सविद वीचारि।
कर्मचंदि गुरि क्रपा ते पाए अपरि अपार॥

परिमार्थु परिलोक वतावे सति गुरि चर्न मिलेत हरि ध्यावे।
परिमार्थु है इसका नाम कर्मचंद गुर चर्न ध्यान ॥
उलिटि परा जवि प्रभू अपार सोहं आत्म करो उचारि।
प्रेम परसादि गुरि लागो धाइ कर्मचंदि गुर ज्ञानि वताइ ॥

दो०—अपिर अपारि की बाति कौं लागि रहो दिन रात।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि आइ मिल्यो परिभाति ॥

उलिटियो कौलि चडियों अकास मनि पौने को लीयो ग्रास।
मनि ग्रास यों सुर्ति लगाइ कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि
अनिक वार वल जाइ ॥
मनु चंचल निश्चल भयौ सतिगुर के परिसादि।
औरि जतनि सभ कछु नही सतिगुरि चर्नी लागि ॥
इस मनि का एही उपाउ निस वासरि पल ध्यान।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि लागि रहियो गुर ज्ञानि ॥
मनि की वूटी गुरि सविद है मानि लियों तति काल।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि ते मिटि गियों सकिल जंजाल ॥
वूटी एह अश्चर्ज है सति गुरि दैई वताइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक बारि बल जाइ।
सति गुरि का उपदेसु मानि के वूटी लेहु वीचारि।
सति गुरि किरपा गुर नजिर है वूटी अपर अपार ॥
बूटी अपिर अपार परिसति गुरि ते पाइआ।
कर्मचंदि गुरि चर्न ते घरि निर्भो आइआ ॥
मनुआ जीत्या सति गुरि क्रपा ते जनिम ते जनिम मर्न दुषि जाइ।
जो कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक वार वल जाइ ॥
संति सर्न की ऊपमा मो पह कही नि जाइ।
अइसी सर्न सहाइ हम्हारे जनिम मर्न दुष जाइ ॥
सांई सर्न प्रहलादि उवारिउो कर्मचंदि वलि जाइ।
सनिक सनंदन व्यासदेउ गहर गंभीरा ॥

सांई सर्न नार्द जी कही वही सर्न रघवीरि।
गुरि किर्पा ते पाईए एही संतिन की धीरि।।
संतिअचर्ज अचरुजु कर्ताने कर्मचंद गुरि ज्ञानि बष्याने।
संत सहाई सेवका जनिम मर्न दुष जाइ।
कर्मचंदि गुर चर्न धूरि परि अनिक वारि बल जाइ।।
संतिन धूडि अपार है अदिभुति कही नि जाइ।
कहिन सुनिन ते परे है तहा कर्मचंद ठहराइ।।
चात्रक चित चकोरि के एन्हा प्रेम की वांण।
चातक चंद मै थस रहो प्रेमी दर्स नि मानि।।
चात्रक बूंद प्यास है रलि मिल एको दान।
कर्मचंद गुर चर्न धूरि परि रिदे न करु अभमान।।
वर्ण आश्रम अभमानि है इउ मैं चिंता रोग।
अभमानि त्याग लाग नाम को पावो अंवृति भोग।।
इही भोग इही जोगि है इहि लील्हा अपर अपारि।
कर्मचंदि गुरि किर्पा ते लाग रही लिव तार।।
इहि लील्हा लिव तारि की मोपे कही नि जाइ।
कर्मचंदि गुर किर्पा ते लील्हा माह समाइ।।
अनिभय मथे इस तुल नाही छंदि।
कर्मचंद गुरि किर्पा ते पाओ सर्व अनंदि।।
इह अभमानि को त्याग के रहो चर्न सो लाग।
कर्मचंद गुरि चर्न ते तवि पावो वैराग।।
वैर राग ते रहित है वैयरागी कहीए सोइ।
कर्मचंद गुर चर्न लगि दुरिमति मनि ते षोई।।
योगु चांदना नामु है पंथु है अपर अपार।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि लागि रही लिव तारि।।
लिवि लागी चांदनु भया निसिवासरि अरि भोरि।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि होए नैनि चकोरि।।
चकोरि चांदना आपि है प्रेमी लीजै मानि।
कर्मचंदि गुरि चर्न मै लाग रहयो है ध्यानि।।

बैन समाने नैन मै नैन रहे निराधारि।
नैन वैन मै एकता पाए पुर्ष अपारि॥
अपारि कला नैनन मै आई नैनो भीतिर रह्यो समाई।
इक पल जांदा नजिर नि आवै अंजन माह निरंजन पावे॥
कर्मचंदि गुरि चर्न मिलाइ।
अइसा परिचा अंतिर पाइआ। पलि पलि चढिदा रूपु सवाइआ॥
उसि परिचे को जांने कोइ। सति गुरि मिले निरंजन होइ।
अइसी दात सति गुरि की जांनि। कर्मचंद गुरि चर्न ध्यानि॥
निर्मल जोत प्रकासीए सतिगुरि के उपिदेस।
कर्मचंदि गुरि किर्पा ते पाए अंतिर वेस॥
एह वेसु विसवासु हे भाई रुपु रेष कछु लषियो नि जाई।
अपरि अपारि गति लषी नि जाइ कर्मचंदि गुरि चर्न समाइ॥
अंतिरि गति रसु पावो भाई गगनि मार्ग मै जोत समाई।
गगन गुफा मै अंवृत सारि कर्मचंद गुरि चर्न अपारि॥
सति गुरि सविदु प्रकास्या आओं अंवृति स्वादि।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि मिटि गए सकिल विवादि॥
सतिगुरि विरहो जागआ रोम रोम छक जाइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक वारि वल जाइ॥
उलिट पलट का षेल क्या जाने चतिर सुजानि।
कर्मचदि गुर चर्न धूरि परि लाग रह्यो गुरि ज्ञानि॥
मनुआ उलिटि चढयो अकास। गगिनंति मै लीनो वास॥
सर्व सुषु तहा भओ कल्यान। तहा आत्म पूजा गुर चर्णन ध्यानि॥
जाइ निरिवास भओ तहा भाई। औरि चितिवना उठे नि काई॥
नषि सिष पूर्न भओ प्रकास। तवि ही पाओ अंतिरि बास॥
अंतिरि कथा सुनो रे भाई। रूप रेष कछु लषयो नि जाई॥
कोटि सूर्य का भओं प्रकास। तवि चर्न कौल मै लीनो वासु॥
अपरि अपारि लील्हा तेरी जानी। भ्रम भौ जल ते उतिरे पारि॥
भ्रम भौ जल कहा रे भाई। चर्न कौल की एह वडिआई॥
स्वासु अविर्था कतहूं न जाइ। स्वास स्वास मै सुर्त समाइ॥

स्वास सुर्त का मेलु है सोहं अपिर अपारि।
सुर्त समानी सविद मै सविद रह्यो निरिधारी ।।
कर्मचंदि गुर चर्न धूरि परि पाए पुर्ष अपारि।
चर्न अपरि अपारि है चर्नन का करो विष्यान ।।
कर्मचंदि गुर चर्न ते पाउौ अभे पदि दान।
वडिभागी तिस को जांनीए पावह् गुरि को ज्ञानि ।।
कर्मचंदि गुरि चर्न ते चढियो पदि निरवांनि।

सति गुर ज्ञानि है अपर अपार। नषि सिष पूर्न ब्रह्म वीचार ।।
ब्रह्म वीचारि का करो वष्यानि। योगि चांदना लीजै मानि ।।
योग चांदने सविद प्रकास। कर्मचंद गुर पूरी आस ।।

ज्ञानि कला बढती रहै सति गुरि अपिरि अपार।
योग चांदना जानीए कर्मचंद बिसथारि ।।
हौउ भा चिंता रोगु है तिस का करो त्याग।
कर्मचंद गुरि चर्न ते पाओ ब्रंह्म वैरागि ।।
वैराग कला गुरि ज्ञानि है औरि जतिन नहीं कोइ।
रोम रोम मय छकि रहे तहा जनिम मिर्त नही होय ।।

जनिम मिर्त कौनि को कहीए। अपारि कथा अंतिर ही लहीए ।।
अपारि कथा का करो बीचारि। तहा योग चांदना अपरि अपारि ।।
जहा जोति प्रकासी है निरधारि। सुर्त स्वास मिल सविद उचारि ।।
उलिटि कौल गगनंतिर जाइ। कर्मचंदि गुरि दीया दिषाइ ।।

अंतिरि बाहिर छक रहियो निसि दिन आनंदि पाइ।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि रोम रोम छक जाइ ।।
योगि चांदना नामु है सति गुरि लियो सभालि।
अनभय कथा कौनि सो लहीए सतिगुरि पूर्न द्याल ।।

सति गुरि पूर्न नामु दिढाए। करि किरिपा गुरि चर्न मिलाए ।।
अंतिर पाओ ब्रह्म ज्ञानि। कर्मचंद गुरि का एह दानि ।।
पूर्न आत्म ज्ञानि किर्पा सति गुरि होइ। जनिम मिर्त नही जाने कोइ ।।

जीविति मुक्त कहीए सोइ। कर्मचंद गुर चर्न ते अभे पदार्थु होइ

गगिनंतरि मै षेलीए निसि दिनि आठो जामि।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि लागि रहयो गुरि ज्ञानि ॥
जनिम मिर्त ते पारि हे गावे सोहं गीति।
कर्मचंद गुरि चर्न ते होए नैनि अतीति ॥

मनि को जीति अजीति पदि पावै। सूर्त सविद लै कंठ लगावे ॥
गुरि किरिपा गगनंतिर जाइ। मनुआ उलिटिआ मने समाइ ॥
गुरि अंतिरि रंग दीओ वताइ। अंतिरि गति लिव पूर्न लाइ ॥

आतम सो लिव लागी रहे वाजे सविदि गँभीरि।
तहा अनहद सविद अपारि है सोहं गावे गीति।
कर्मचंद गुरि चर्न ते होए नैनि अतीति ॥

करि किरपा पाईए हइ भाई। आपे आइ जोत समाई ॥
रोम रोम विच रूपु सवाई ॥
नषि सिष पूर्न आत्माज्ञानि। तहा चर्न कौल का लागा ध्यानि
सो एह चर्न है अविर अपार। कर्मचंदि लिव लागी तारि ॥

प्रेम कला बढ़ती रहे घटिती भली नि जानि।
कर्मचंदि गुर चर्न धूरि परि पाए पुर्ष सुजानि ॥
एह प्रेम अश्चर्ज है अंतिर रहयो समाइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक वारि वल जाइ ॥
प्रेम समाना सहिज मै सहिज प्रेम मिल जाइ।
सहिज प्रेम मिलए कहे आनि न कतिहूं जाइ ॥
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि प्रेमी सहिज गति पाइ।
सुर्त समानो प्रेम है उलिटि मनि ही कों षाइ ॥
मनु ही सवदु हो रहयो गगिनंतिर मै जाइ।
कर्मचंदि गुर चर्न धूरि परि अनिक वारि वल जाइ ॥
सुंन्न सविद का चांदना देषे अचरज रूपु।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि पाए प्रेम अनूपु ॥
सुंन सविद अति सिषर हे गावे सोहं गीति।
कर्मचन्दि गुर चर्न धूरि परि होए नैनि अतीति ॥

अतीत मार्ग अपारि है अगम पंथ को सारि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि पाए प्रेम अपारि ॥
प्रेम पुर्ष अपारि हे निरंजन की हय जोति।
कर्मचन्दि गुरि चर्न ते आत्म निर्मल होति ॥

आगे अगे अगे रिजाइ। रोम रोम विच रह्यो समाइ ॥
नषि सिषि पूर्न आतम ज्ञानि। तहा चर्न कौल का लागा ध्यान ॥
चर्न कौल कैसे है भाई। तांकी महिमा कही नि जाई ॥
तिन चर्नन का करो प्यारि। तवि ही पावो मुक्त द्वारि ॥
वंधनि मुक्त तहा कछु नाही। प्रेम पदार्थ हे घटि माही ॥

अचिव अंवृत छक रहे पाइउो पदि निर्वानि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि सदा सदा गलितानि ॥
अयसा दाता को नही जैसे संत उपिकारी।
संति चर्न की धूरि परि जाउ सदा वलिहारी ॥
संति जवी किरिपाल होइ तवि मिले मुरारी।
चर्न कौलि की धूरि परि कर्मचन्द वलिहारी ॥
सांई देवल देवता आत्म देवल होइ।
आत्म देवल स्वास है मनुआ लेहु परोइ ॥
मनु मनिसा मिल षेलु है देबल कहीए सोइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि तहा जनिम मिर्त होइ ॥
जनुमु मिर्तु एक वाति है इहि वाति मै नाह।
वाति समानी बाति मै एह अचरजि रूप अपारि ॥
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि पाए अलिष अपारि।
अंतिरि लिवि लागी रहे गर्जे सविद गंभीरि ॥
चहु दिस चमिकै दामनी सोहं पुर्ष रघुवीरि।
कर्म चन्दि गुरि क्रपा ते उतिरे बेनी तीरि ॥
गुणु को ग्राहु जु कीजिए औगिरग देहु बहाइ।
गुरग औगरग ते परे है तहा कर्मचन्द ठहिराइ ॥
भग्ति भय को दूरि करि निर्भौ गावो गीति।
कर्मचन्दि गुरि क्रपा ते होए नैनि अतीति ॥

भिष्या मांगी नाम की सति गुरि सदा क्रपाल।
कर्मचन्दि गुरि क्रपा ते एह स्वासनि की माल॥
एह माला है नाम की मका मनुआ नाह।
कर्मचन्द गुरि क्रपा ते सोहं हंसा गाह॥
कांटा लगियो प्रेम का अंतिर धसता जाइ।
जाता जाता तहा गया जहा सवदि सुर्त मिल पाइ॥
एह वाति है प्रेम की नषि सिष रह्यो समाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि अनिक वारि वलि जाइ॥
प्रेम प्रकासयो सहिज मै सति गुरि दीउौ वताइ।
नषि सिष आतमु प्रगटियों अंतिर गति लिव लाइ॥
अंतिर लिव लाड़ी रहे सतिगुरि दीयो वताइ।
कर्मचन्दि गुर चर्न परि अनिक वारि वल जाइ॥
सतिगुरि विरिहो जागिआ जनिम जनिम सुषु पाइ।
कोटि जनिम का पंथु था पल मै पहुंचे जाइ॥
स्वास स्वास भजु नाम कों बिरिथा स्वास नि षोइ।
रतिन स्वास जबि जबि जान्या मनु माने सुषु होइ॥
अयसे स्वास तो बलि बलि जाईए। चर्न कौल चितु द्रिढ करि लाईए
चर्न कौलु मै कौतिक देष्या। निज सरूप मिल आनंद पेष्या॥
आनंदि कला वढती ही जाए। कर्मचंदि चितु चर्न समाइ।
रा रा ममा भगतु है सोहं गावो गीति।
कर्मचंदि चितु गुरि चर्न धूरि परि होए नैन अतीति॥
भानु प्रकासयो जगित मै तिमर गियो विवहाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड पर अचिरजि भानि चढाइ।
कुसंगि कविहूं नि कीजिए सदा रहो सति संगि॥
कुसंगि मार्गु अज्ञानु है सति संगु सदा बीचारु।
दुषु सुषु कविहूं न लागही इहि संतिन का उपकारि॥
संत सदा अरोग है रोगी सदा कुसंगि।
इसि कुसंगि को त्यागि देह संतिनि सौ लिव लाइ॥
कर्मचन्द गुरि चर्न धूड परि जनिम मर्न दुष जाइ।

हमरी संति सो बनि आई।
संतिन सो हमि लेवा देवा संतिन सो विवहारा॥
संतिन सो हम लाहा षटआ भग्ति भरे भंडारा।
सँति चर्न की किरिपा होई उतिरे बेनी पारा॥
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते पाए चर्न अपारा।
गुह्यि कथा मै लागो भाई। अंतिरि वाहरि रहयों समाई॥
अंतिरि वाहरि जांका वासा। रोम रोम विचरहयो प्रकासि।
प्रकास भउो जबि आतम निर्मल रूप अपारि।
निर्गुनि सुर्गुन एकता अटिल रूप चित्त धारि।
संति कृपा ते जानिआ गुह्य कथा अपारि।
गुह्य कथा निरिवैरि है वैरु नि कबिहूं जानि।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते लागि रहयो गुरि ज्ञानि॥
प्रेमी सदा चकोरि है वासना उठे न काइ।
नैनि समाने जोति मै जोति नैनि मिल जाइ।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते नैनिन जोत समाइ॥
चंचल मिर्गु मारो रे भाई निहचलु सुर्त सदा घरि आई।
चंचलु मारिउो गुरि किरिपा जानि कर्मचन्द गुरि लागो ध्यानि
एक कनिक अरि कांमनी दोवे करों सभ त्यागि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि तवि पावो वैराग।
कनिक कांमिनी वाति है मनुआ कतिहूं न जाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न ते अंतिरि गति लिवि लाइ।
अइसा प्रेमु प्रकासउो मनुआ लेहु उलिटाइ।
मनु उलिटांना देह ते गगिन गुफा मै जाई।
गगिन गुफा मै षेलते कर्मचन्दि सुषु पाइ॥
नैना अटिके जोति सो जोति नैनि मिलि जाइ।
नैनि जोति है आतमा परिमातम रहयो समाइ।
गुरि किर्पा अश्चर्ज है, अचरजु रहयो समाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि आतम गति लिव लाइ।
बिन परितीति कार्ज नही जो तीर्थ फिरे सकल बनिवास।
जवि प्रतीत आवे घटि माह कार्ज सकल अर्तुही माह।

कार्ज सकिल पूर्न भए चर्न कबिल चितु लाइ ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि अनक वारि बलजाइ ।
हरि सेवा द्वादस वर्ष गुरि सेवा पल एक ।
ताह वरावर सांईदास धर्म नि होति अनेक ।
नेह रीत की प्रीति का मर्मु न जाने कोई ।
कर्मचन्द गुर चर्न ते लगे सो पूर्न सोइ ।
नेह रीत की प्रीत करु और प्रीत नही जान ।
कर्मचन्द गुर चर्न सौ सो सांची लागी मान ।
बेपरवाह सतगुर की कृपा जानति लेह वीचार ।
कर्मचन्द गुर चर्न धूर पर अनकवार वलहार ।।

इतिश्री जोग चांदना समाप्तं शुभंमस्तू ।

हरिश्चन्द-कथा

उों स्वस्ति श्री गरोशाय नमः

दो०—कौलापति को सिमरीए गरापति गिरा व्यास।
गुरु चर्नन को रिदे धरि कार्ज होवे रास॥

चौपाई—

वंदो प्रथम गुरां के चर्ना। जिह् प्रसाद दुस्तर जग तर्ना॥
सूर्य रूप तिमर के हंता। दाता मोक्ष प्रभू भगवंता॥
वर्षे ज्ञान शक्र की न्याई। शिष्य अ्रचै चात्रक सुष पाई॥
इंद्र वर्से समा विचारी। गुरु नित वर्से जगत मंझारी॥
वर्तन नीच जिवे जलु रहे। ऊच पुर्षु तिस कोऊ न छुहे॥
मिले सुरसरी होइ न आना। पान करे पंडित परिधाना॥
तिमि गुर मिले नीच जनु कोई। ब्रह्मा की सम सर सोऊ होई॥
गुरु है सकल भवन के राजे। ब्रह्मा शंभु गुरा के साजे॥

दो०—सप्त लोक चौदा भवन आद अंत के माह्।
गुरु समान दाता अवर तीन लोक मै नाह्॥

चौपाई—

वंदौ कृष्णचंद के चर्ना। कवल वदन सुंदर सभु वर्ना॥
दुष्ट विदार्न संत सहाई। विघ्न विदार्न सभ सुषदाई॥
अचल रूप अच्युत अविनाशी। जगु उपजावन सक्ल विनाशी॥
ज्ञान रूप विज्ञान सरूपा। काल द्वैत ते पर्म ' अनूपा॥
श्रिष्ट रूप सभु षेलु तुम्हारा। तूं प्रभु सकल रूप ते न्यारा॥
जो जनु तुमरी सर्नी आवै। जग मै सुष पर्म. गति पावै॥

छन्द—

सिर मौरमुकटि वजंती माला पीत वसन सुहावहे।
कंचन तनी नव सात साजहि नील पट छब पावहे।।
नित करे नव तन चर्न सुंदर कबि कवन छवि को जानही।
जो धरे जुग पद रिदे भीतर सोई पर्म सुजानही।।

सोरठा—

सुनो संत चितु लाइ हरि भगतिन की बार्ता।
करै क्रष्ण सहाइ कथा संपूर्ण होइ तब।।

चौपाई—

नमो नमो गुर पर्म दियाला। नमो नमो जसुधा के लाला।।
नमो नमो सभ जग के संगी। नमो नमो महादास त्रिभंगी।।
नमो नमो गज वदन विनायक। नमो नमो सूर्य वर दायक।।
नमो नमो शिव शक्त गंभीरा। नमो नमो सुक व्यास समीरा।।
नमो नमो जल धर्न अकासा। नमो नमो पावक पर्गासा।।
नमो नमो सुर मुनी चौरासी। नमो संत सभु ग्यान प्रगासी।।

दो०—नमो नमो सभ श्रिष्ट को इंद्री नमो शरीर।
पंच तत्व आतम नमो नमो भानसुत वीर।।

चौपाई—

स्यामदास सति गुर के चर्ना। तांकी गहो सुद्रिढ करि सर्ना।।
संतदास जो रिदे ध्यावे। दर्गा गिया पर्म सुषु पावै।।
गुर्वषशदास गुर दया सरूपा। ज्ञान दया मै महा अनूपा।।
जो सिमरे सोई सुष पावैं। गुर जन सोई गुरो को ध्यावैं।।
संवत ठारा सै अरु तेई। क्रष्ण पक्ष एकादश तिथ एई।।
मघर मास विष्ण की वीसी। मंगलवार पुनर्वस थीसी।।
ता दिन उपज्यो रिदे मंझारा। रचो कथा कछु होइ उधारा।।
जग मै जीवन सुफन समाना। कहो कथा गुरि करै जु दाना।।

दो०—जग मै जीवन तो भला करै कछुक सुभ काज।
नही तो मृतक ही भला काहे करे विषाध।।

चौपाई—

जीवै तो जो धर्मु कमावै। कै जीवै परि स्वार्थ धावै ॥
कै जीवै परमातम जाने। कै जीवै गुरु भगति सुजाने ॥
कै जीवै सा मानस रूपा। कै जीवै धर्मी जग भूपा ॥
कै जीवै तीर्थ के वासी। कै जीवै जग सदा उदासी ॥
जीवै पुरुषु जो जस के साथा। स्त्री जीवै सील सुहाता ॥

दो०—जीवन तांका धन्न है जो जस सेती जांह।
ध्रिग जीवन तिस नरो का अपिजसु जांके नाइ ॥

चौपाई—

जन्म अनित्य सदा थिरु नही। तांते एहि उपजो मन माही ॥
अवध घनी दिन अधिक विहाए। हरि जसु मुष ते कबूं न गाए ॥
अवि कछु हरि की कथा वषानो। गुरु चर्नी पंकज चितु आनो ॥
सभि संतनि की आग्या पावो। हरीचंद की कथा सुनावो ॥
ऊक चूक को हास नि कीजै। दधिसुत की रक्षा करि लीजै ॥
श्रुत नही सुने नही वुध भारी। रसना वासु करो गिरिधारी ॥
उपजी अधिक मोह मन आसा। कहो कथा चित पर्म हुलासा ॥

दो०—जुग पुनीत सति युग बडा सुंदर पर्म रिसाल।
उपज्यो तांके मध्य मै हरिचन्दु भूपाल ॥

सोरठा—

सुनो संत चितु लाइ कथा पुनीतम सुधा सम।
रोम कही प्रगटाइ धर्म पुत्र वन मै सुनी ॥

चौपाई—

प्रथमे गुर पद सीस निवावो। हरीचन्द की कथा सुनावो ॥
पुरी अयोध्या पर्म पुनीता। रतिन जड़िति कंचन की भीता ॥
सुंदर पुरी अमित विस्तारा। धरै कलस दल सुभग सवारा ॥
जड़े अनेक मणी के साथा। चमिके ससि सूर्ज की भांता ॥
ध्वजा पताके सभी दुआरे। पूर्न लछ सभी भंडारे ॥
पर्म विवेकी नर तिहि ठौरा। रसे प्रेम सभ ही सिर मौरा ॥

मांगत जन गंधर्व समाना। पंडित जन को लाल विधाना ।।
चार वर्ण जानो फलचारी। सचिव जान सुभ कर्म विचारी ।।
दो दसि जोजन वसै वजारा। होवहि कर्म धर्म विवहारा ।।

दो०—आठ पहिर तिस नगर जन करे निगम उचार।
हाथ कमावै कर्म शुभ हिरदे प्रभू पियार ।।

सोरठा—

सोभा पर्म अनूप अवध समान वैकुंठ के।
कौनु कहै नर रूपु उमा व्यास न कह सकै ।।

चौपाई—

तांके निकट वहै अनुरागी। अघ नासन सरिजू वडि भागी ।।
तांकी उपमा वेद वषाने। कै उपमा शंकर जी जाने ।।
ता परि चले तरंग अपारा। सभ प्रवाह मुक्त को द्वारा ।।
तरि वरि सघ्न सकल फल पूरे। दातु करै दाता जनु सूरे ।।
षग अथित्य तां करै अहारा। रस्ना रटै अनक परिकारा ।।
फूले फूल अनक परकारी। वर्णो वस्त होइ विस्तारी ।।

दो०—राजु करै तिस पुरी मैं हरी चंद बलबान।
पर्म विवेकी कर्मवानु देत मान शत मान ।।

चौपाई—

उठि प्रभात नृपु करित सनाना। वहुरि करै कोलापति ध्याना ।।
नौ सति साज करै हरि पूजा। केशव विना रिदे नही दूजा ।।
पूजे वहुरि वसंतर देवा। तांपरि करै सकल सुर सेवा ।।
धेन अनेक करै तव दाना। वहुरि पितर के कर्म विधाना ।।
अवनीसुर[1] के चर्न धुलावै। सुधा समान भोजनु त्रिपतावै ।।
हीरे रतन दक्षणा देई। तव चरणोदक हरि का लेई ।।
दिज चर्नन का नीरु अचावै। विष्ण अर्प कछु भोजनु पावै ।।
वस्त्र पहिरि सिंहासन जाई। पहिर एक नृप न्याउ कराई ।।

---

१. अवनिसुर=ब्राह्मण।

दो०—ता पाछे नृप सभा मै होह राग धुनिकार।
निर्त होइ सभ अपसरा मानो सुरपति द्वार॥

चौपाई—
तापरि होइ कथा भगवाना। तीर्थ वर्त महातम ज्ञाना॥
पुस्तक पूज भूप सिर नावै। मांगत जन को दान दिलावै॥
जाइ अषेट तवै भूपाला। परिजा पाप हरै तत्काला॥
संध्या समे भवन के आवै। त्रिकालग्य शुभ कर्म कमावैं॥
आठ पहिरि सुभ कर्म कमाई। परिस्वार्थ सुति उठि कै धाई॥
तांकी नार कर्म अनुरागी। तारा लोचन अति वडिभागी॥
तिस के कर्म सुनो चितु लाई। मानो सील सुकर्म वनाई॥
प्रभु की भग्ति दया को रूप। विषे कर्म ते रहित अनूप॥
संत दिजो के पद अनुरागी। प्रभु की भगति रिदे महि जागी॥
करै वर्त्तु चंद्रायण आदा। बोले वचन न विनु मर्जादा॥

दो०—तन सुगंध सीस सों वदन द्रिग कुरंग गज चाल।
मानो सागर की सुता रितु ते पर्म रिसाल॥

दो०—तेजु समान मयंक के सभ सषीअनि परि दियाल।
हरे सकल दु:ख जगत के अैसी बुद्धि विशाल॥

चौपाई—
वरस पचीस दोऊ नर नारी। विधि जोरी निज करै सवारी।
एक पुत्र तिन के गृह जायो। नाम रिवतास वसिष्ट धरायो।
अति पुनीत सुन्दर वडिभागी। स्याम चर्न मै अति अनुरागी।
करी भूप दिज सेव अपारा। गऊ लक्ष संकल्प उदारा।
धर्मराज जग करै भूपाला। मंत्री नृप के वुधि विशाला।
एक दिवस भूपति मनि आई। रचो यग्य कछु संग नि जाई।
इकताली अरु साठ विचारे। करि संकलप भूप मन धारे
जिउं जिउं वेद कहे मथ कर्मा। तिउं तिउं भूप करै नित धर्मा

दोहा—करै यग्य विधिवंत नृप हरीचंद वलवान।
सप्त लोक को वेध के जसु छायो निर्वान॥

चौपाई

हरीचंद को धर्म विलोकी। इंद्र उपज्यो मन महि सोकी।
देव अपसरा सकल बुलाए। सभि को अपना कष्ट सुनाए।
हरीचंद को तपु वलवंता। छीने राजु करे मम अंता।
कहे देव सुन ए सुर राजा। पठो अपसरा पूरे काजा।
चली उर्वसी आयसु पाई। पात्र रूप सभा मैं आई।
भूप कह्यो तुमरो को देसा। कित निमित्त कीनो परवेसा
वोली वधू तवै छलवानी। सुनो उदार पर्म सुरज्ञानी।
सुनि गुन दछन तज्यो तुमारे। वडी प्रीति अति रिदे हमारे।
तुमि देषो निज गुन दिषरावो। आज्ञा लै निज भूम सिधावो।
उठी तवै भूपति सिरुनाई। निर्त करी कछु कही नि जाई।
राग तान सुर ग्राम अनूपा। गावहि राग धरे जन रूपा।
काम बान तिन दीए चलाई। हस मुसकाइ निमज होइ जाई।
कबू दीन होइ तनु सुकचावे। कवि प्रसिद्ध हो चर्त दिषावे।

दो०—सभा सकल मोहत भई भूपत सहिज सुभाइ।
जैसे प्रवल वियार ते मेरु नही अकुलाइ॥

चौपाई—

जैसे पारस पर्म पदार्थ। संत जना के नाही स्वार्थ।
अनेक जतन करि अति अकुलाई। दीए पान भूपति बैठाई।
छल्यो न भूपु दीन अति भई। अवर सभा आतुर चलि गई।
जाइ इंद्र को व्रितंतु सुनायो। वहुरि एकु प्रसंगु दिढायो।
कहे उर्वसी सुनो सुर राजा। कहो कथा पूरो सभ काजा।
व्रह्मनु एकु रहे षट कर्मी। विष्णु भगत अरु महा सुधर्मी।
एक दिवस तीर्थ के हेता। चल्यो विप्प ज्ञान तत्ववेता।
मार्ग माह कुरंग दिषायो। तांके संग स्वान लपिटायो।
अपुनी पूज देष सकुचावे। स्वान कहे मतु छीन लि जावे।
कहो नाथ तांके कित काजा। हरीचंद को तिव तुम राजा।

दो०—नहि इछा तुमि पुरी की हरीचंदु सुरईस।
त्रास न मिटयो इंद्रि को गयो शर्ण जगदीश॥

चौपाई—

रच्यो इंद्र तपु केशव द्वारे। सभ शरीर पद नष पर धारे।
अवर इस असो तपु धारयो। जल अहार चित ते सभि टारयो।
शिव विधि वरुदे कष्ट दिषाई। कष्ट निवार्ण केशव राई।
देष कष्ट संत का जवही। लज्जावान होइ हरि तविही।
देष इंद्र का तपु अधिकारी। चलि आए तब विष्ण मुरारी।
दया सिंध प्रभु क्रपा निधाना। इंद्रि प्रति वोले भगवाना।
अहो तात कित कष्टु कमावो। जो चाहो वरु तप ते पावो।
देहु नाथ वरि वचन समेता। मांगा तुम मनि आवे जेता।
हरीचंद नृप अवध रहाई। तांका धर्मु नष्ट होइ जाई।

दो०—सुने देवपत वचन जवि अति सकुचाने नाथ।
धर्मु निवाहन नामु मम करो धर्मु कित घात॥

चौपाई—

तापर नृप निज भक्त हमारा। जन समान मुह औरु न प्यारा।
जैसे वेद बडा जग माही। विनु दिज निगम नि सोभा पाही।
दिज चाहित कति और वनावै। श्रुत कहु कैसे दिज प्रगटावैं।
संत अनेक मोह सभ भए। ईसर कहो संत किन कहे।
संत दुःख मोको नही सोहे। तुम जा करो जु तुम ते होहे।
सुरपति जाइ कहो रिषि राजे। हे स्वामी पूरो मम काजे।
हरीचंद का धर्मु गवावो। हमिरे रिदे अनंद वढावो।
देव रिषै चित वाति विचारी। देषो भूपति प्रतीत प्यारी।
जाय विलोको नृप को नेमा। है इस्थिर किधो होत अनेमा।
रूप तपी वैराह वनायो। द्रुम आश्रम नौतन सभ धायो।
रक्षक देष्यो नैन निहारी। जात अनेकन उबिरी डारी।
रक्षक औधपती पहि आयो। सभ व्रतंतु तिन भाष सुनायो।

दो०—भूप सुनो रक्षक कहे कह्यो नाथ सत्त वाति।
आस नि कीजै फूल फल नौतन वाग निपात॥

चौपाई

भूप कहा तांको कहा हूआ। तांका दुष्टु कौनु जग दुआ।
जिहि वप हरि हरिणोय चमारे। नाथ रूप तिहि वाग उपारे।
सो अविलौ ठांडातिहि ठौरा। चलो नाथ लावौ गौरा।
कै वहु तनि धरि शिव विधि आइयो। कै होणी निज रूप वणाइयो।
तवि राजे हय वेग वुलाया। चमू रहित भूपति उठि धाया।
नरपति देष वेराह नसाना। पाछे चल्यो भूप वलवाना।
सरजू अघनासन के तीरा। धरि बैठो मुनि तपी सरीरा।
तिसी ठौर पहुच्यो नर नाहू। बैठो रूप तपी धर जाहू।
देष तपी नर्पति सिरु नायो। बहुरोभूप वराह पुछायो।
तपी कह्यो हमि नाह निहारे। कोऊ न पंडित सचिव तुमारे।
असे समे पुनीतम राजा। सूकर षोजो तुमि कित काजा।
मानस जन्म न वारंवारा। कित विसरायो प्रान प्यारा॥
ते नर धन्न जगत के माही। करै दान हरि भगति कमाही॥

दोहा—धन्न पुरुसो जगत मै सुनो भूप बलवान।
परि स्वार्थ हित सो करे भक्त प्रभु सनमान॥

चौपाई—

तांते तुम छत्री को रूपा। होते नैन परो परो किति कृपा॥
विलम त्याग कीजे इस्नाना। करो दान केशव के ध्याना॥
तवि राजे दोनों कर जोरी। हाथ वंध के करो निहोरी॥
उत्तरेया भूप मुनी के भाषे। शस्त्र षोल्ह अस ऊपरि राषे॥
मज्जन कीयो पुनीतम वारा। गुप्त दान मन भीतर धारा॥
सरजू मज्ज मुनी पह आए। आगे षेल मुनीस वनाए॥
कंन्या तरण वाल वलवाना। वस्त्र अंग विवाह समाना॥
नृपत देषि मुनी को भाषे। कहो सत्य इहि क्या रचि राषे॥
भाषु यथार्थ हमरे आगे। छल अरु कपटि गिरा को त्यागे॥

दोहा—दोनो संतत नृपत की सुनो भूप चितु लाई।
पढो जान परमार्थी इनका करो विवाह॥

चौपाई—

देस विहीन यांके पितु माता। तूं भूपति है जग विष्याता॥
कंन्या कुल का मय पुजारी। आयो जान तुमे उपिकारी॥
तांको भूप कहया श्रुत ज्ञाता। जाको मात पिता नहीं भ्राता॥
तव मुनि कहयो नि लावो वारा। भूप जात है समा हमारा॥
देवा लग्न निवहु जु राई। जाते अवधि होत अधिकाई॥
वेदी रची नदी के तीरा। वैठो भूप सिमर रघुवीरा॥
कीयो विवाह निगम जो कहयो। वालकु तिसी ठौर वहि रहयो॥
कहयो कुअर कु कुछ देहो राजा। देन दर्व विनु विआह नि काजा॥
भूल्यो मै जो व्याहु करायो। अगला कष्टु मोहि दिष्टायो॥
सोच करो सुत रिदे नि आना। मै निज राजु दीयो तुझि दाना॥
तवि दिज कहया दक्षिणा दीजे। व्याह दान विधि पूर्ण कीजे॥

दोहा—कीयो नृपत संकलप तव कंचन चाली भार।
होणहार हिरदे वसो पाछे करी संभार॥

चौपाई

तव एहि वात भूप मन आई। दानु कीयो ग्रह मै कछु नाही॥
तव दिज कहयो द्रव मुहि दीजे। जाहु भवन राणी ते लीजे॥
आगे करत हुती सुभ कर्मा। भूप वचन सुनि उपज्यो भर्मा॥
राज दान सुनि अति हरिषानी। कंचन की चिंता उरि आनी॥
वस्त्र भूषन सकल उतारी। चेरी चीर लीए तनि धारी॥
चली भूप पै सिमर गोपाला। संचव चले संग वुद्धि विशाला॥
स्मिरत जात पंथ रघुनाथा। धर्म निवाहन संकट साथा॥
निकट जाइ पत कीयो प्रणामा। बोली वचन शुभग नृप वामा॥

दोहा—चिंतन कीजे जगत पति सभा न ईहा एह।
राजुदीयो जिउं वालको दिज को तीनो देहू॥

चौपाई—

वाल सचिव को भुज गहि दीने। तवी अनधि को विदआ कीने॥
भूपत कहयो सुनो मुनराई। वेचो हमे जहा मनि आई॥

कंचन कहचो वतावो माटी। षोवो सकल तुमारी षाटी ।।
तव दिज क्रोधु रिदे मह कीना। नृप रानी को अति दुषु दीना ।।
वचन हाथ कर लातन मारे। त्यागो तुमै कहो सुत हारे ।।
नृपति कहयो होइ नही एही। कंचनु लेहु वेच मम देही ।।
तव दिज तीनो पंथ चलाए। जल अहार विनु घाम दुषाए ।।
पंथ कष्टु कछु कहयो न जाई। धर्म पुत्र को रोम सुनाई ।।
अपना कष्टु भूप विसराना। दिज दुख देष वहुत अकुलाना ।।
ब्राह्मण भूषा हमरे साथा। यहि है हमै वडो उतपाता ।।

दोहा—मन महि सोचत मग चलति बीते षटि दिन चार।
पहुचे काशी दिज सहित रानी भूप कुमार ।।

चौपाई—

काशी पर्म कतूहल भारी। अति पुनीत शंकर की प्यारी ।।
कहिन नि आवै सकल समाजा। रवि प्रकास अलूक कित काजा ।।
विकै दास तिह ठौर उतारे। आए लोक षरीदन हारे ।।
नृप रानी को रूपु अपारी। आई गनका लेवन हारी ।।
तव राजा मन अति विलषाना। कीउो रिदे सूर्य को ध्याना ।।
हम रघुवंसी अंस तुमारी। जात धर्म अस्नुषा तुमारी ।।
कुप्यो भानु सुर सकल पठाए। मर्कट रूप धर्न पहि आए ।।
नगर नायका सकल सिंघारी। गई भाग सो उवरी नारी ।।

दोहा—चली धर्म की वार्ता आई नगर मंझार।
रानी वालक लै गयो दे दिज पंझी मार ।।

चौपई—

ब्राह्मण हुतो तत्त्व को वेता। ज्ञानवान हरि भगति सुचेता ।।
वृद्धि अवस्ता परि उपकारी। ता प्रति रानी वात उचारी ।।
तात कहो हम कछु सेवा। धरो सीस जो भाषो देवा ।।
पुत्री कोऊ न सेव हमारे। केशव सिमरो बैठो द्वारे ।।
कुअरि कहचो मोय आज्ञा ताता। ल्यावो कुस्म प्रभू को प्राता ।।
रानी कुअरि रहे दिज साला। सुनो भूप की वात भुआला ।।

सोरठा—

दिन मरण को वोले प्रभू केशव कृष्ण मुरार।
धर्म छुडावौ अवधि पति कला द्वादस धारा ॥

दोहा—धर्म कही रिषि रोम को कहो नाथ प्रगटाइ।
इंद्र कहा सुधारयो भूप विगार्यो काइ ॥

चौपाई—

रोम कहे सुनीए राजाना। कीयो मष को नृप अभिमान।
जग्य दान तप तीर्थ करे। विनु हरि भजन काज नही सरे॥
कर्म करे जा लहे सरीरा। सो सरीर्दाता रघुवीरा।
तांको त्याग करे हंकारा। अनेक जन्म पावै दुषभारा॥
उौर वात इक रही दुराई। इंद्रि वचन दीयो रघुराई।
अपिने हित प्रभ नाह वढायो। विधि शंकर का नाह मटायो॥
अपने तैसो गुन वडआवै। जो जनु प्रभु की सरनी आवै।

दो०—संतन के अघ हर्ण को देत कष्ट गोपाल।
जव लग चंदन ना घसे चढे न केशव भाल॥

चौपाई—

आग्या मान प्रभू भगवाना। दीयो कष्ट नरपति को भाना।
तेज जरे परि धर्म नि त्यागे। करी विनै तव देवो त्यागे॥
आयो तिसी समे चंडाला। भार बीस दे लियो भूपाला।
जब दिज आगे नृप सिरु नाया। ता पाछे जल पान करायो॥
द्वादश दिन महि जलु नही लीना। हरीचंद अैसो प्रण कीना।
नृप मतंग प्रत बचन उचारे। अवि सरीर मम भए तुम्हारे॥
जवि लग प्रान कलेवर माही। कहु दियाल क्या सेवक माही।
मातंग कहो सुनहो वुधवाना। कहो सत्त सुनो सुजाना॥
जाम तीन जल को तुम ल्यावो। रजिनी प्रेत नगर दिष्टावो।
मति शव जाइ जराइ न कोई। मुहिर जुगल दे जारे सोई॥

दो०—हमि को आज्ञा नृपत की शव सो लेहु संभार।
काठी वस्त्र युग मुहिर नरि दे करे जुहार॥

चौपाई—

आग्या मान लई भूपाला। कर्न लगा कारज ततकाला।
ल्योवे नीर त्रिवेनी पावन। धरे नीच गृह सुर जसु गावन ॥
जाम चार ग्रह टहिल कमावे। विना कहे जो दिष्टी आवे।
जिह को कहे तहा उठ भागे। मान विश्राम नृपत सभु त्यागे ॥
ऊच नीच सभु सेव कमावे। मन मै कृष्ण गुन गावे।
तीन जाम जलु भरे भूपाला। गवने नगरी बुध विशाला ॥
जाम एक दिज के गृह जावे। सुने कथा पर्मातम ध्यावे।
रजंनी जाइ प्रेत अस्थाना। ध्यावे हिर्दे पुरुषु पुराना ॥
निद्रा कैसी विना अहारे। कहे रोम सुनु नृप हरि प्यारे।

दो०—करे सीव ग्रह नीच के रघुवंसी राजान।
गर्व्र करे क्षित दर्व को ते मत मंद अजान ॥

चौपाई—

अपदा वल भूपत परि पायो। तव नर पति चित इउं ठहिरायो।
हमि परि कृपा करी गोपाला। सिमरन समा दीयो नंदलाला ॥
राज समै हरि भगति न होवे। ध्रिग नर स्वास भजन विनु षोवे।
अपदा हुतों तेऊ तपु भयो। ज्ञान विचार नृपत सुषु लयो ॥
शक्र जाने हेतु हमारा। लहित कष्ट भूपति अति भारा।
प्रभु विषयनि की मैलु गवावे। बिना भगति प्रभु भेदु न पावे ॥
अैसे वीते नृप दिन तीसा। ईस रिदेइ धरे नरि सीसा।

दो०—गई देह घटि भूप की रहे संष अरु स्वास।
जाए त्रिवेनी नीर को सके न कलस उकास ॥

चौपाई—

निज सत्या प्रभु नृप तन धारी। कोऊ न जाने षेल मुरारी।
रानी के मन उपजी वाता। देषो जाइ प्रान पति नाथा ॥
ईश्वरु भर्त्ता भेदु न कोई। ईसी नगर दासन मै होई।
दिज आज्ञा ले चली त्रवेनी। सुंदरता को सुन्दर देनी ॥
सीलवान हरि भगत सुजाना। पहुची तव गंगा अस्थाना।

दोहा—गई त्रिवेणी के निकटि देषे सभ ही घाट।
द्रिष्ट न आयो नृप कहूं अति कुमलानी गात ॥

चौपाई—

मन मै सोचे करे बिचारा। कौन ठौर मम प्रान प्यारा ॥
इसी नगर के उौर हि गियो। अवि पीआ मिलन दुहेला भयो ॥
सेव न रही दर्सन भी नाह। विधि के अंक न मेटे जाह ॥
भ्रमे विष्णु चव्यी अवतारी। अैसी भावन होवन हारी ॥
तव मानस की कौन चलाई। नरि मति सोच करे कोऊ भाई ॥
पै देषो नीचन को घाटा। होइ सोई जो ईश्वर ठाटा ॥
षोजत गई त्रिवेणी नीरा। घाट मतंग भरे नृप नीरा ॥
रानी देष्यो भूप सरीर। समा विलोक उठी तन वीर ॥
हुतो मास सौ भयो उदासा। रहे संष नृप चर्म स्वासा ॥
उौर रहे द्रिग कमल सरूपा। देह विहीन नि पावै रूपा ॥
रानी तव नृप कीया प्रणामा। धन्न धन्न मुष कीया बषाना ॥
देषी भूप पतिवृता नारी। चले चार द्रिग नीर अपारी ॥

दोहा—धर्म कहो रिष रोम को हे मुन मर्मु मिटाई।
राजु त्यागो धर्म हितु किउ पछतावे राइ ॥

चौपाई—

धन्न बुद्ध तुमरी राजाना। राजा नमित्त नाही पछुताना ॥
विछुरे मीत मिलै जव आई। चलै नीर द्रिग एही सुभाई ॥
रानी कह्यो कवन ग्रह रह्यो। सभ व्रितंतु भूपतु सभ कह्यो ॥
रानी पूछ्या वहुरा राजा। कीओ अहार किधो नहीं काजा ॥
भूपत कह्यो सुनो हे नारी। ग्रहि चंडाल के ठौर हमारी ॥
तिस ग्रहि कैसे भोजनु पावो। हित करि देइ तबू नही षावो ॥
पूछो और वात अवि तोही। उठे कलस भाषो विधि सोई ॥
रानी कह्यो हाथु नही लावो। जुगत एक अवि तोह वतावो ॥
जल मै पैठो कांधे धरो। चलो भवन दिज करुणा करो ॥
नृपत नीर घट सीस उठायो। जीरन चीर सुकांधे पायो ॥

कलस उठाइ चल्यो भूपाला। निर्षयो आवतु दुषी चंडाला ॥
हरीआ सुनो हमारी वाता। कहो कवन दुषु तुमरे गाता ॥
करो अहारु कि रहो उपिवासा। कहो साचु मम आगे दासा ॥
तुम आज्ञा बिनु कछु नही पायो। तुम पूछ्यो नही मोह सुनायो ॥
चलो भवन अवि करो अहारे। नही नाथ सो काज हमारे ॥
सीधा लेहु जोऊ मन आवै। सुनो नाथ सो सोह न भावै ॥
आज्ञा होइ तो करौं अहारा। ल्यावो नगर मांग घर चारा ॥

दोहा—जन्मु हमारा षतरी भए तुम्हारे दास।
देह तुमारी सर्ण है धम्र हमारे पास ॥

चौपाई—
तुमरो ग्रह नही करो अहारा। मानस जन्मु न वारंवारा ॥
सेव करो तुमरे अस्थाना। जव लग वसे देह मै प्राना ॥
मातंग कहे सुनु बुद्धि विशाला। वेचो कोरा मो हथे माला ॥
देह कहो तुम सो नही काजा। मास संष और रुधिर समाजा ॥
उौर देह मै भरे विकारा। वेचो तुम मौ कहो विचारा ॥
मै तु दर्व दीयो अति भारी। तुम का मोह दीआ मो कहो विचारी ॥
पंच तत्व सो द्रिष्ट नि आवै। आतमनिहस्वार्थ श्रुति गावे ॥
इंद्री अरपरिकिर्त हंकारा। मन है सो निर्वध अवारा ॥
पाप पुंन्य जौ देह कमावे। सो प्रानी ले संग सिधावे ॥

दोहा—तोह कह्यौ मै विक्यो हां कहा बिचायो तोह ॥
ठौर धनी देह तुम विकी छुटी कवन विधि होई ॥

चौपाई—
प्रथमे देहि तिसकी की कहीए। आद पुरुष की जिस ते लहीए ॥
माता पिता की प्रगटि कहावे। जांते जनमु अमोलक पावे ॥
गुरु धारे ता गुरु की होई। जुवती की जाने सभ कोई।
फुन प्रोहित की कहै ज्ञानी। ऐसी वात सो श्रुती वषानी ॥
हसे रिदे मुष कहे चंडाला। लषे दास की वुद्धि विशाला।
उनि की हैं तां कहो बिचारी। उत्तरु दीजे मोहि संभारी ॥

दो०—उन ते मै उतपत भयौ रह्यो एक अव तोह।
सुनु मतंग चितु लाइ के कहो जथार्थ मोह ॥

चौपाई—
सकल जगत ईश्वर को आही। सो अवि कहो सुनो चितु लाई।
तो पै वेचो मम पुर्षार्थ। दीयो उौर सो कहो जथार्थ ॥
पितर कर्म से करि सुत छुटिकावे। तिरीआ ते जब सुतु प्रगटावे।
गुरते मुक्ता ते शिष्य तबे। गुरु के वचन धरे चित जबे ॥
प्रभु प्रसन्न जा भगत कमाही। दास उण[1] तजो आज्ञा माही।

दो०—बेचे मन की भावना उौर वेचना काहि।
इष्ट न त्यागे वंस का कहे वेद प्रगटाइ ॥

चौपाई—
नीच जनम वड बुद्धि तुमारी। कांते लही देहि भ्रम टारी।
कहो दास सुनीए चितु लाई। क्षत्री जन्मु पूर्व मै आही ॥
नीच संग दिज धन हित धांयो। मातंग जन्म तां फल ते पाओ।
उजैन नगर मम तुम था वासा। तुमरे भवन होत मै दासा ॥
सेव करी तुम दर्व न दीआ। उलिटा देस निकारा दीआ।
मम तुम वीच हुतो करतारा। तिन प्रभ कीयो तौह पनहारा ॥

दो०—जैसी तुमरी भावना तैसे करो अहारु।
दोसु न दीजै मोह कछु फल दाता करतारु ॥

चौपाई—
नगर जाइ कै करो अहारा। मैं जोहित था धर्मु तुमारा।
ते नर धन्न जगत के माही। अपद परे सत्तु त्यागे नाही ॥
जो जनु अपना धर्मु गवावै। जम पुर दुषी जगत दुष पावै।
लै आज्ञा नृप पुरी सिधायो। जाच नगर तंदल ले आयो ॥
इन की भिक्षा तजी भूआला। नीच भवन अरि दिज भूपाला।
आइ त्रिवेनी तीर सधारे। दया रूप नृप कीयो विचारे ॥
आवे दिज कोऊ करै अहारा। तब सेवन है जोगु हमारा।
विश्वामित्र रूप दिज आयो। चर्न पषार भूप वैठायो ॥

---

१. उण < ऋण

सभ भोजनु दिज कीयो अहारा। कहो भूप नित निंवत हमारा।
नीर पीयो नृप तब वड भागे। नित्य सेब सो करणे लागे॥
उठे प्रात बहु तंदल ल्यावे। तिन सभिनन सो दिज तृपतावे।
असे बीत गयो इक मासा। दिज भुक्ते नृप रहे उपासा॥

दो०—दया सिंध उपजी दया बोला लीये रिषिराइ।
कष्ट निवार्न सुष दैन संकट कर्न सहाइ॥

चौपाई—

लै अहार भूप तहा आए। श्रम अति भयो दिज कहूं सिधाए।
नरपति घटि भीतर अकुलावे। धर्मु रहे दिज भोजनु पावे॥
सूर्ज साष भरी तिह काला। करि अहार श्रुत बुद्ध विशाला॥
दिज जोहत था धर्मु तुमारा। तुम सत राष्यो जगत अधारा॥
तव ब्राह्मण नृप उौर जिवायो। उपज्यो अधिक सो भोजनु पायो॥
विश्वामित्र तव शक्र वुलायो। तांको इक उपदेसु वतायो॥
देषो धर्मु भूप की नारी। अरिधंगी हहि वुद्धि उदारी॥
जो त्रिआ का धर्मु छुडावो। तौबी भूप धर्मु को धावो॥
सुनो मुनि श्रुत कहें विचारी। पाप पुण्य पति षोवे नारी॥
भूप त्रीआ पति पापी तारे। नीच नारि पत नरके डारे॥

दो०—स्वर्ग षडे पति पतति को सतु राषे जो नारि।
शुभ भर्ताके नीच तीय देवे सभ गुन टारि॥

चौपाई—

तांते जाइ देषु नृप नारी। सभ ते वुद्धि तुमारी भारी॥
चलै तपी सुन सुरपति वानी। पहुच्यो तहा जहा नृप रानी॥
जात कुअर नित दिज फुलवारी। ल्यावन पुशप हेत वनवारी॥
वन भुयग तिहि हाथ डसायो। गिरयो कुअर माली दिष्टायो॥
गियो निकट तरवर रषवारा। देष्यो वाल प्राण ते प्यारा॥
सोभा विनु प्राणनि इउं पावे। जो विसंत ते मदन रिसावे॥
फूले फूल अनक चहूं ओरा। पर्यो मध्य तहा वाल किसोरा॥
उडगण सो मैयंक रुसाए। मानो सभी मनावन आए॥

वदन सुधारयो गोद हि लीआ । मानो ससी अलोपन कीआ ।।
पंथ चले अरु वदन निहारे । जिउ सरोज हिमकर के मारे ।।
मार्ग मिले जोऊ नरि नारी । करै प्रेमु तिस रूपु निहारी ।।

दो०—गयो भवन तव विप्र के माली जगत अपार ।
प्रेम विकल बोलत वचन दासी पूत संभार ।।

चौपाई—

बीनत कुसम भुयंग डसाना । कीयो वाल के प्रान पयाना ।।
रानी कहेउ तजो इस ठौरा । सेव करो दिज वोल न वौहरा ।।
तुमरा पूतु मैयंक समाना । विना हेत कित वचन वषाना ।।
सुनो दास नदी नाम संजोगा । करे मूढ भावे क्या वियोगा ।।
सो धरि अवनी चलता रहयो । वचन श्रवण बुत दिज इउ कह्यो
पुत्री ना कछु दोसु हमारा । तुम परि क्रोध वंत कर्तारा ।।
जाहु देस की रींत कमावो । भाला दाग गंगा महि पावो ।।
तिसी हेत तिन लीउो उठाई । वालु कंठ सो लीयो लगायी ।।
चली तहा जहा प्रेत निवासा । मनि ते तजि नार सुष आसा ।।
तिसी समे हरी चंद निहारी । बोल्यो वचनु सुनो हे नारी ।।
जुगल मुहिर दे चीर हमारा । तवि इसि ठौर करो वौहारा ।।
रानी कहे सुनो पीआ प्यारे । तुम सो भिन सु कहा हमारे ।।
इकु भूषनु रह्यो कंठ दुराई । लीयो भूप सो वेग छिनाई ।।
दागु देइ गंगा तटि आई । वालक जल मै दीयो वहाई ।।
गंगा को प्रभ वचन उचारे । राषो समझ अमान हमारे ।।
इसको जीवन करै अहारा । एहि वालकु मोह सभि ते प्यारा
भूप वचन करि चलता रह्यो । रानी का दुष जानि न कह्यो ।।
होइ विकल इक मठ मैं सोई । सकल आस तिन जग की षोई ।।

दो०—विश्वामित्र तिसे समे कीयो औरु छलु जाइ ।
काशीपति के सुता के भूषन लीए दुराई ।।

दो०—आन पहिराए सोवती इस मन नही संभार ।
रचि माया का वालु इकु धरियो तहा सिंघार ।।

दो०—रुधर नार के हाथ मुष दीयो वेग लगाइ ।
प्रतीहार को रूपु धरि कह्यो भूप को जाइ ।।

चौपाई—
कहो बात सुनीए राजाना। सुनो नाथ दिढ वंत विधाना ।।
एक वधू तुमि पुर मै आई। अति कलजोगन वड दुषदाई ।।
भंज्यो तिन तुम सुता भंडारा। पहिरे भूषन अनक परकारा ।।
घाइयो वालु इकु ठौर मसाना। परयो तहां सुनिए बलवाना ।।
घाइयौ घना परयो तिहि थोरा। सोई मठि मै निद्रा घोरा ।।
पठो सैन तिस वेग ले आवे। मनु जागे कितहूं दुर जावे ।।
तव राजा कछु दूत वुलाए। आज्ञा करि तिस ओर पठाए ।।

सोरठा—मतु को करे गुमान दान धर्म अरु राज को।
इसके कौन समान जो कलजोगन अवि भई ।।

दोहा—रोम कहे जो नर उचित सुनीए सो राजान ।
करे नि आसा कर्म फल बिना भजन भगवान ।।

चौपाई—
कहे रोम सुनीए राजाना। आई सैन जुवत अस्थाना ।।
लई उठा इतिनो तब रानी। देष कोप नरि अति विलपानी ।।
वहुरि निहारयो आप शरीरा। भूषन अंग रुधिर तन चोरा ।।
मन महि कंपवान तव भई। पकिर भुजा तव गारी दई ।।
नगर लोक सभ जुरे अपारे। बड़े क्रोध तिन के तन भारे ।।
मारे ईट ढला उर लाटी। वजै लत्तनन छटी चपाटी ।।
एक धकेलै देवह गारी। कुपे ईस तव कोनु उवारी ।।

दो०—श्रवण लाग रिषि राज के त्याग धर्म वर मोह
सुष भौगो सभ जगत के अवी छुडावो तोह ।।

चौपाई—
रानी कहे सुनो दिज देवा। उचित हमो को तुम पद सेवा ।।
करहु अनुग्रहु मोपर सोई। ईसर चर्न रिदे द्रिढ होई ।।

लागी होन तव मार अपारा। नरि भोगे जो दे करितारा॥
इसी भांति नृप पै ले गए। तव भूपति इउं भाषत भए॥
भेजो इसे मतंग के द्वारे। त्याग विलंम इस प्रान सिघारे॥

दो०—गई भवन चंडाल के होते जहा भूपाल।
देष दया उपिजी तिसै वोले वचन दियाल॥

चौपाई—

सुनो दास तुम वात हमारी। नहि कल जोगन एहि विचारी॥
मारन तज्यो त्याग जीय आयो। कहो सोई जो तुमि मन भायो॥
पूछो मोह तजो मतु नाथा। सुन नृप कुपे तुमारे साथा॥
सो दिन धन्न दास जिय जाने। पूछे मंत्र ईस सत्त माने॥
उचित दास को भाषे सोई। जाते ईसर हानि न होई॥
तुम को त्यागन कह्यो न भूपा। कही नृपत सो वात अनूपा॥

दोहा—निज कर हनी नि जात है सुनो दास चितु लाइ।
आज्ञा कीनी तोह को इसे सिधारो जाइ॥

चौपाई—

आज्ञा मान लई घर आगे। वधू सराहे अपने भागे॥
रानी मन उपिजे सुष भारे। कहे रिदे वडि भाग हमारे॥
पति के हाथ मृत्य तीआ पावे। विना दोष सो स्वर्ग वसावे॥
रोम कहे सुनीए भूपाला। मिटै न अंक लिषै विधि माला॥
देष समा मुसकावे राजा। हो तो और अव एह समाजा॥
संग उतिसाह इसे वर ल्यायो। विना दोष अवि मारण धायो॥
रानी तव मुष भूप विलोके। अपनी चिंतन पति हित सोके॥
दया भूप मन कीयो निवासा। वन त्यागन की धारी आसा॥

दो०—रानी अपने ईस के देषे नैन कृपाल।
धर्म निवाहन के लीए वोली वुद्ध विशाल॥

चौपाई—

सुनो नाथ तुम कहा सिधाए। करो नि काज जासु हित आए॥
भूप कह्यो सुनु प्रान प्यारी। त्यागो वन तुम जाति नि मारी॥

सुनो नाथ जो दया कमावो। हमिरा अपिना धर्मु गंवावो ।।
वनि मै मोहि लि जाबे कोई। तुमि ईश्वर को द्रोही होई ।।
तजी अवधि हित धर्म पुनोता। नीच वात धारी कितु चीता ।।
क्रूपो भूपु सुन वचन पियारी। गहे केश अविनी परि डारी ।।
छुरका काढ कंठ पे धरयो। ब्रह्मा विष्णु रुद्र आ फरयो ।।
और आइ संग अमर पुनीता। कुस्म वरष जय कारा कीता ।।

दो०—धन्न धन्न भाषत भए सुरन सहित भगवान।
त्याग करो रानी हनुन बैठो अमर बिवान ।।

चौपाई—

तब नृप को हर कंठ लगाया। रानी सो अति नेह बढाया ।।
कहे भूप मातंग जु आषे। तजो तबै नही तुमरे आषे ।।
देवो तवे मतंग वुलाइयो। नगर सहित कांशी पति आयो ।।
नीच कही तव त्यागी नारा। सुमन वरिष सुर कीयो जयकारा ।।
नीच त्यागुनही करै भूपाला। तरयो नगरु अरु पसू चंडाला ।।
गंगा ते वालकु हरि लीआ। तवी नृपती की गोदी दीआ ।।
कांशी जन अवधि सभ आए। उडी अवधि वैकुंठ सिधाए ।।
चार षाण ले मुक्त सिधाइयो। रोम युधिष्ठर भाष सुनाए ।।

दो०—कथा नृपत हरीचंद की सुने सकल चितु लाइ।
होह रूप सोऊ कृष्ण कों गुरु जन हरि गुनराइ ।।

चौपाई—

जो जनु सुने मुक्त होता। हाइ मुक्त परवार समेता ।।
अपिदा मो नरि सुने जु कोई। तांकी अपदा सभु षिउ होई ।।
पुत्र हेत जो सुनो सुनावे। वढै वंस इउ वेद वतावे ।।
अवि मुह दान प्रभु ईही दीजै। आवागौन निवार्ण कीजै ।।
दधि सुत अक्षर जनिन हारे। तांसो रछा करु करितारे ।।
गुरवषसदास गुर भए सहाई। कथा कही तब सभु प्रगटाई ।।
जो जन सुने रचे हरि संगी। महादार्स प्रभु लाल त्रिभंगी ।।

दो०—चैत्रमास नवमी दिने शुभ विधि मंगल वार।
कथा भूप हरीचंद की पूर्ण भई वीचार॥

अडिल्य—सुने कथा जो प्रानी प्रीत लगाइके।
पावे सभ सुष भोग प्रभू को ध्यायके॥
भिन्न भिन्न होवे कवि ही ईश्वर संगते॥
भक्त प्रेम लहे दान महादास त्रिभंगते॥

इति श्री महापुराणे दान धर्मे हरीचंद कथा संपूर्ण, शुभंमस्तू
संवत् १८३७ लिषतं आतमाराम।

साईंदास जीवनी

ॐ स्वस्त: श्री गणेशाय नमः

दो०—सिमर सदा ओंकारि कों जोति रूप भगिवान।
निर्गुण सुर्गण जो पुर्ष दूजा कोऊ नि आनि॥
जगिदंवा को ध्यान धरि विनती करों बहोर।
कथा संपूर्ण कीजिए वसो वदन सदा मोर॥
मारति सुति कों सिमरीए सदा क्रपाल अनंति।
जिहि प्रसादि सुक्रत सभै अरि भंजनि हरि संति॥
गौरी सुति का ध्यान धरि सभ सिध कारण हारि।
विघनि हरिन मंगल करन गणपति लेह वीचारि॥
गुर पद प्राग ध्यावहौं मनि वच कर्म वीचारि।
संकटि मै रक्षा करै भय जल तारन हारि॥

चौपाई —

प्रथमे सिमरो एक ओंकारा। सकल सृष्ट के रचनेहारा॥
जगि उपिजाविन सकल सिधारी। सभ मै व्यापक जोत तुमारी॥
सकल कर्म के किरणे हारा। कर्म वानु कर्मा ते न्यारा॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुरि ध्यावे। निगिम पुराण संत जस गावे॥
मुनि जनि जांको अंत न पायो। नार्द व्यास रमा अह गायो॥
तुमरे गुन प्रभ अपर अपारा। जग में कवि को वरिननहारा॥
चीटी सिंधु हाथ नहि पावै। गगन प्रभू नर करन समावे॥
ए कारनि करि आवे नाथा। लहे न तुमरे गुनि को गाथा॥

दो०—आदि सनांतन एक तूं दूजी कोऊ न वात।
करितनि कहा कुंभारि कों अत वतावै नाथ॥

चौपाई—

तांते तुमको करो प्रणामा। अपिनी भगित देह् घनि स्यामा ।।
श्री कविला को सीस नवावों। जिह् प्रसादि सभ करि सिध आवों ।।
एक रदन को धरो ध्याना। होए सिध सभ विविध विधाना ।।
पविन कुमारि चरिन सिर नावो। जिह् प्रसादि निर्मल मति पावों
प्रणवो शश सूर्य भगिवाना। जिहि प्रसादि पावो सुष नाना ।।
सिमरो सिध साध सुरि देवा। जिहि प्रसाद पावो हरि सेवा ।।
प्रणवो हरि के संत अनंता। जिह् सिमरे पावो भगिवंता ।।
सिमरो सति गुरि सदा क्रपाला। जिह् सिमरे पर्सों नंद लाला ।।

दो०—प्रणिवो सतिगुरि सांईदास रिध सिध सुषि देह् ।
मनि वच कम ध्याईए जो चाहे सो लेह् ।।

चौपाई—

प्रथमे सिमरो सांईदासा। जांके सिमिरे सदा हुलासा ।।
अमिर्दास नरि हरि गुनि गावों। विष्णदास सुषानंदि ध्यावो ।।
रामानंदि कौं धरों ध्याना। कांशीदास सिमरो गुरि ज्ञाना ।।
वंसी राम चरित सिर नावों। यथा बुद्धि मे भाष सुनावो ।।
माधोदास सिमरो गुर तोही। भार्थी चंदि सिमर सिध होई ।।
विहारीदास मुरारी गावो। जगि जीवनदास प्रेम सो ध्यावो ।।
सविल सिंध वलराम भगौती। नौरंगराई पूर्ण सभ जोती ।।
नूप राइ ध्यानतराइ वरिनो। दलपति राइ हरीचंद सरिणो ।।
हक़ूमत राइ पूरन गुरि गाबौं। महाराज पूरनि गुरि ध्याबो ।।
कर्मचंदि गुरि क्रष्ण सरूपा। निवल्लराइ गुरि परिम अनूप ।।
हरी राम साहवराइ वरनो। हरि जस क्रष्ण चंदि की सरिणो ।।
अंवृत राय भागि मल जांनों। हरि जस चोपति राइ पछानो ।।
सभ परिवारि कहनि नही आवे। गुरिजनि सोई गुरौं को ध्यावे ।।
सिमरो गुरि महादास त्रयभंगी। आदि अंति मे होवे संगी ।।
सोभा राम सिमरो गुरि तोही। क्रपा राम सिमरे सुष होइ ।।
तांते सभ कों करो प्रणामा। करो सहाय होवे सुभ कामा ।।

दो०—इछ्या मनि मै उपिजिआ गुरि जस कहू बनाय।
कथा संपूर्ण होय तब सभ मिल करो सहाय।।

चौपाई—

प्रथमे सिमरों श्री गोपाला। नंदलाल सुंदर वृज वाला।।
दसरथ सुति कौं धरों ध्याना। रामचंद्र पूरण भगिवाना।।
जनिक सुतां कों सीस निवावों। यथा वुद्धि मै भाष सुनावो।।
ऊक चूक जहां मोसो होई। वुद्धवानि करिए सुद्धि सोई।।
संमत ठारा सैय नातीसा। करो कथा गुरि पगि धरि सीसा।।
मघरि मास कृष्ण पक्ष जांनो। ता दिन कथा कही पहिचानो।।
तिथ अमावस मंगल वारा। मध्यानि समे कीयों विस्तारा।।
वरिणो नरि हरि पुरी अनूपा। अति पुनीति सुंदरि जिस रूपा।।
ताकी सोभा कही नि जाई। सर्वर द्रम वेली कर छाई।।
सुंदिर तटि मैं वारि सुहावे। विगसे कविल भविर छवि पावे।।
नाना विध के वृक्ष अनूपा। अति विसाल सुंदिर जु सरूपा।।
षग रसना तहां रटै अपारा। चले सुगंध मुक्त को द्वारा।।
कोइल कीर कपोत सुहावे। चकिवी चकवा प्रेम वधावे।।
मोरि चकोर षंजन वग राजें। वक वुलवुल सुर्ष चिराये।।
तूती चिडी मुनिआ गावै। पपीहा घना गरिज सुनावे।।
और जंत तहा वसे अपारा। कहियो न जाइ सकल विस्तारा।।
अनिक भांति तहा फूल विराजे। जांकी सोभा उडगण लाजे।।
रावेली संग चंवा सोहे। सदा गुलावि गुलाला मोंहे।।
गुल दादी सतिवरगि सुहावे। गुलावास अध्क छवि पावे।।
नाना विध तहां कुंज आपारी। कही न जाय सकल फुलवारी।।
सुंदरि पुरी अमत विस्तारा। यथा वुद्ध मे कहो विचारा।।
परिम अनूप तहाराजे। सुंदर कुंज परिम छवि छाजे।।

दो०—अल्प वुद्ध मम तुछ है कथा अमित विस्तार।
गुरि आज्ञा कों सीस धर कहो सकल विस्तार।।

चौपाई—

अनिक भांति के भविन विराजे। छजा अटा अधक छव छाजे ॥
लिष चित्र का अधक अपारा। सुंदरि मूर्त भीत मझारा ॥
जा पताका कलसा विराजे। सुंदर सकल सभी गृह राजे ॥
जगि हौंम का धूप सुहावै। रवि मार्ग मय सोभा पावे ॥
नर हरि पुरी अधक छवि छाजे। सांईदास का वंस विराजे ॥
परिम अनूप सभै सुरि ज्ञाना। वुद्धवान हरि भगत सुजाना ॥
ज्ञानि धर्म के जानन हारे। जोगि विराग अधक विस्तारे ॥
गीता आदि सभै श्रुति गावै। क्षमावान हर्भग्त सुहावे ॥
कर्मवान सभ दया निधाना। हरि सिमरन बिन वाति न आना ॥
रूप वानि सुंदिर छवि भारी। मैन कामदेव निर्ष होवे छवि हारी ॥
भूषन वसनि अनिक परिकारा। सुंदिर सभी सकल परिवारा ॥
चारि वर्ण तहा अधक सुहावे। कर्म वान सभ सोभा पावै ॥

दो०—हरि चरिचा विन वाति कों दूजी करे न आन।
परिम ववेकी कर्मवान सभ हरि भक्त सुजानि ॥

चौपाई—

सांईदास तिहि कुल उजियारा। नरिहरि दास भए औतारा ॥
नरहरि दास वैकुंठि समायो। कांशीदास तवि टीका पायो ॥
तांके संग सभी परिवारा। कह नि सको छबि अधक अपारा ॥
सकल परिवारि सभा मै छाजै। कांशीदास तहा मध्य विराजे ॥
तांकी उपमा कहनि न आवै। सुरन सहत जु सक्र सुहावे ॥
उडिगण सहत शश जो विराजै। मणनि मध्य मानिक जु विराजे ॥
कही नि जाइ सभा की सोभा। निर्ष जोऊ सोऊ मनि लोभा ॥
वाजे वजे अनिक परिकारा। कही नि जाइ परिम धुनि कारा ॥
जल तरंग्य सुभ वाजे वीना। कानूं वजे प्रेंम रस भीना ॥
रवाव पषावज अरि षटताल। झाझरि छइणे भेर करणाल ॥
राग जहाज सभी विध राजे। औरि साजि तहा अनिक विराजे ॥

दो०—अंवृति कुंडिली तूवरी डफ मृदंगि पछान।
सितार दुतारा सारङी ढोलक षंजरी जान ॥

चौपाई—

वाजे वाजे अनक परिकारी। उपिजे राग परिम छवि भारी ।।
गावै भइरों देव जैधारी। राम कली अरि ललत तुषारी ।।
टोडी आसा पंचम जानो। जैतसरी असावरी मानो ।।
गारा सिंध सूही वड हंसा। सारंगि सोरठ सभ तें सरसा ।।
वरिवा गौरी नटि कल्याना। विहाग कानडा अधक सुहाना ।।
किदारा दरिवारी अरि गोडा। दीपक सुने होइी सभ वौरा ।।
मेघ मिलाइ हिंडोल वसंता। जै जैवंती कमोद अनंता ।।
जैतसरी का छैलीजानो। कामोदी मालसरी पछानो ।।
गूजिरी गावै अति छवि भारी। ओरि राग तहा अधक अपारी ।।
जो समझे सो आष सुनाए। गुहज राग सभ कहि न जाए ।।
समे समे करि सभ को गावै। मांनो सुरि पति सभा सुहावै ।।

सोरठा—उठे जो रागि गंभीरि होह तान अनेक छवि।
परिम गुननि की भीरि कह्यो न जाइ समाज सभ ।।

चौपाई—

होइ सभा मै परिम अनंदा। चोया चंदन अतिर सुगंधा ।।
कांशीदास तहा अधक सुहावे। चविर मोरछडि अनिक झुलावे ।।
वंदि जनि जसि करे अपारा। चर्चा होइ अनिक परिकारा ।।
निर्गुण सर्गुण ज्ञानि विरागा। कर्म विवेक श्रुति निगम विभागा
वरत महातम प्रभ कों ध्याना। तीर्थ उपमा हरि जस ज्ञाना ।।
चारि वर्ण के कर्म वषाने। सभ कुलि की मिरिजादा जाने ।।
करे परसपर हरि गुन ज्ञाना। बुद्ध वानि हरि भगित सुजाना ।।

दो०—कांशीदास का वीर लघ माधोदास जिह नाम।
गुनी ग्यानी सा पुरष निर्मल भक्त नहिकाम[1] ।।

चौपाई—

ताके रिदे फुरी इक आसा। सुनो संत सो कहों प्रगासा ।।
अपिना वंस धंन करि जान्यो। पूर्न गुरि सांईदास पछान्यो ।।

---

१. नहिकाम < निष्काम।

जाके वंस परिम सुष पाओ। ताका जनम सुनिन जीआ आयो
काशीदास को कीयों प्रणामा। कीयो प्रश्न सुंदिर नहकामा॥
नाथ एक संसा मनि माही। सिध होय तुम कृपा गुसाई॥
काशीदास तवि कह्यो वीचारी। कहो तात जो वाति तुमारी॥
नाथ एक पूछो तुम वाता। भ्रमि मिटाइ मोह करो सनाता॥
सांईदास का जनिम सुनावो। आद अंति सभ मोह वतावो॥
कविन काज आए जगि माही। क्या करि गए सुनी मोह नाही॥

सोरठा—कहीए सभ प्रगटाइ नाथ न सका रहे कछु।
सो मोह देह वताय आदि अंत पूर्ण कथा॥

चौपाई—
वोले काशीदास कृपाला। माधोदास धंनि वुद्धि विसाला॥
पूछी तोह भली सुरि ज्ञानी। सुनो सकली सभ कहो वषानी॥
सो दिनि धंनि जगित मै जान। हरि गुरि चर्चा करे वषान॥
तुम पूछा गुरि कथा गंभीरा। जो कोइ सुने हरे भौ पीरा॥
एक समे द्वापर के अंता। भयो विप्र इक हरि को संता॥
काशीपुरी नगिर तिस जानो। नाम सदा सरूप पहिचानो॥
ज्ञानिवानि सुंदरि षटि कर्मी। निर्मल भक्त समान सुकर्मी॥
तांके सुति इक भयो अनूपा। वुद्धिवान हरि परिम सरूपा॥
विद्या गुनि मै अति भरिपूरा। ज्ञानिवानि सभ ही विधसूरा॥
जोगभरिष्टी[1] तांको जानो। नाम नरोंतम राय पछानो॥
हरि जस गावें सदा सुज्ञाना। पूजे दिज सूरि संति पुराणा॥
वरस द्वादस का जवि भयो। सभ सुष त्याग तवी वनि गयों॥
जाइ लगो तपि करन अपारा। गंगा तटि मय वाल कुमारा॥
अति पुनीति आश्रम सुषिदाई। तांकी सोभा कही न जाई॥
तरिवरि सकल फलन के पूरे। दान करे दाता विध सूरे॥
आभ्यागत षग करे अहारा। सीतिल नीरि सुगंध अपारा॥
वेली के संगि पुष्प विराजे। मानो निश मैं उडिगन राजे॥
तीनि भांति की विहारि अनूपा। सीतिलि मंदि सुगंध सरूपा॥
तिस अस्थान करे तपि भारी। सुनो ताति सभ कहो विचारी॥

---

१. जोगभरिष्टी < योगभ्रष्ट।

सौ वरिसां तहा वनि फल षाए। दो सै वर्ष पत्र भुगताए॥
दो सै वरिस कीयो जलि पाना। बहुरि कीयो प्रभ पंकज ध्याना॥
नवि सै वरिष कीयो तपि भारी। आए तहा प्रभू गिरिधारी॥
उस्तति करी प्रभू भगिवाना। धंन्न मुनी सरि संत सुजाना॥
कीयो कठन तपु अधक अपारा। अवि मुनि भोगो धाम हमारा॥
जो वरि मांगो देवो सोई। संत सप्त है निश्चे मोही॥
तवे मुनी सरि नैन उघारे। निर्षे केशवि प्रान पिआरे॥
उपिमा प्रभ की कहन न आवे। तुछ वुध कहु कहा वतावें॥
तदप कहो योऊ मनि आई। यो ओह मूर्त होइ सहाई॥
कीटि मुकटि प्रभ के सिरि सोहे। ससी अरि भानि कोटि मनि मोहे
सोहे सुंदरि कछ[1] घुंघरारे। अति मुष धाम प्रान ते प्यारे॥
मस्तक परिम बिशाल विराजे। भवा कमान कोटि छवि छाजे॥
तापरि सुंदिरि तिलक सुहावे। तांकी सोभा अति छवि पावे॥
श्रविनन कुंडल परिम अनूपा। निर्ते मैन धरे विवरूपा॥
कपोल निर्ष मनि होय अनंदा। विना कलंक जानि जुग चंदा॥
नैन विशाल श्रवन संग सोहे। विन गुन श्याम मीन मृग मोहे॥
मुष पराग छवि कही नि जाय। अलमुन जानि तहां रहे लुभाय॥
वदिन मध्य वतीस विराजे। सलतापत सुता सुत छवि छाजे॥
कीरि नासका परिम सुहावे। दध सुति तहा परिम छवि पावे॥
सुंदिरि कंठ वैजंती माला। उरि विशाल सोहे नंदि लाला॥
शिव सुत वाहन तस भषयोऊ। तस प्रय कंठ विराजे सोऊ॥
भुजा अनूप भूषरण संग सोहे। अति विचत्र सुरि नरि मुनि मोहे॥
पीतांविर कटि कंकनी राजे। नाभि पराग कोटि छवि छाजे॥
रजिनी मंडिन रिपजु कहावे। तिहि वाहन रिप कटि सो पावे॥
छुद्र घंटिका वजत अनूपा। कौलापति सी पीठि सरूपा॥
कंचनि दंड जंघ छवि वरिणी। नूपरि वजे सुभगि मनि हरिनी॥
चरिन पराग छवि कही नि जाइ। सुर मुनि जनि तहा रहे लुभाइ॥

---

१. कछ <कच=बाल।

विश्वे नष अति सोभा पावे। भानि कोटि छवि देष लजावे ॥
एमूर्त जो रिदे वसावे। माधोदास सो जनिम नि आवे ॥

काशीदास उवाच—

दो०—अयसो रूप निहार के पायो मुनी आनंदि।
हाथ जोड ठाढा भयो निर्ष प्रभू सुष कंद ॥

सोरठा—पुनि पुनि पुलकत गात पंकज लोचनि जलि ढरे।
रिदे न प्रेम समात करिन लगो उस्तत मुनी ॥

मुनवाच—चौपाई—

नमो नमस्ते एक ओंकारा। अचल रूप सभ षेल तुमारा ॥
नमो नमस्ते प्रभ जगिदीसा। निर्गुण रूप सकल जगिईसा ॥
सकल भविन में जोत तुमारी। सदा निकाम प्रभू गिरधारी ॥
एक पलक सभ सृष्टि उपाई। नमो नमस्ते सभ सुषिदाई ॥
तीनि गुननि ते रहत न्यारा। चौथे पदि मैं बास तुमारा ॥
असुर दहन सुरि संत सहाई। नमो नमस्ते केशव राई ॥
षीरि शयन कविला के स्वामी। नमो नमस्ते प्रभ निहकामी ॥
तुमरे गुनि प्रभ अपर अपारा। शिवि विध शेश गिरा नही पारा ॥
उस्तति करो कहा लग तोरी। नाथ अनाथ नाथ मति थोरी ॥
वरि दीजे प्रभ होय कृपाला। मांगे मुनी सुनो नंदि लाला ॥
तुम सा सुतु पावो जग माही। रहों सदा प्रभ पंकजि छाही ॥
एही कामना मनि महं आई। विषे वासना फुरे ना काई ॥
वचिन वृथा नही होय तुमारा। रहे वंस धरि जगिति हमारा ॥
जो प्रभ हमारे कुल मह आवे। तुम चर्ननमै प्रीति लगावै ॥
जवि उपजो तवि तुमरो सरिनी। करों सदा संतन की करिनी ॥
तुम मूर्त्त वस रिदे मझारा। टरे न कविहूं सुनि करितारा ॥
ए कह मुनी नियायो सीसा। हो प्रसंन्न वोले जगिदीसा ॥

कृष्ण उवाच—

सोरठा—वोले प्रभ मुसकाय धंन्न मुनीसरि वचन तुम।
मम कह वृथा न जाइ जो तोह मांग्यी सूफल सभ ॥

चौपाई—

बोले तवे प्रभू भगिवाना। धंन्न मुनीसरि संत सुजाना॥
वरि मांगो तुम परिम अनूपा। तुम सुत होय धरों जगिरूपा॥
अवि चलीए मुनि धाम हमारे। सुफल करो सभ काज तुमारे॥
सुरि विवान प्रभ लीए वुलाई। बैठे तहां मुनीसरि जाई॥
गए मुनीसरि हरि के धाम। पाए सुष मुनि अति विश्राम॥
प्रभ की क्रपा जा परि होई। ताको विघन न व्यापे कोई॥

काशीदास उवाच—

दो०—वसे मुनी वैकुंठ मैं भोगे भोग अपारि।
माधोदास सुनि लीजिए कह्यो सकल विस्तारि॥

चौपाई—

वसे मुनीसरि प्रभ के धाम। भोगे भोग सदा निहकाम॥
दश सहस्र मुन वरि सुष पाए। हर्ष शोक मनि कबूं न आए॥
एक दिवस मुन के मन आई। बरि मांगो जो कहो कनाई॥
प्रभ की प्रीति विना जग माही। राजि भोगि षेले सुष माही॥
अंतिरजामी प्रभु भगिवाना। हिरदे की जाने घनिश्यामा॥
वोले विहस प्रभू गिरिधारी। धंन्न मुनीसरि प्रीत तुमारी॥
जगित माहि सुष परिम अनूपा। असन वसन त्रीया अनिक सरूपा
तिने निर्ष मुनी नाह लुभाई। हमरी प्रीत रही उरिछाई॥
तांते मुनि तुम अति वडिभागी। प्रीति राष माया निज त्यागी॥
हमरी प्रीति जोऊ उरि धारे। रहे मुनोसरि संगि हमारे॥
तुमरे मनि की सभ मैं जानी। कहो तोह सुनिए मुनि ज्ञानी॥
चाहो वरि मांग्या मुन राई। भूरि लोक मैं पैंठो जाई॥
बचिनी वर्था नही होइ हमारा। ऊहा करों सभ काज तुमारा॥

दो०—जाहु मुनी अवि मही पर होय सिधि सभ बाति।
तिसी वंस मय प्रगिटीयों जहां तुमारो ताति॥

चौपाई—

कविन ताति हय नाथ हमारा। कहीए प्रभू सकिल विस्तारा॥
सुनो संत मैं तोह सुनावों। ताति माति सभ वंस वतावों॥

जवि तुम तपि करिने बनि आए। पिता तुमारे पाछे धाए ॥
षोजे गृह वनि सभ स्थाना। तीर्थ षोजे विविध विधाना ॥
तुमरा षोजु कहूं नही पायो। तवि दिज गंगा तटि कों धायों ॥
गंगा जलि मय प्रानि त्यागे। वरि मांग्यो हम से वडि भागे ॥
आगे जहा जनिम मैं जावो। वोही पुत्र कविलापति पावो ॥
अस कहि दिज ने प्रान त्यागे। वसे स्वर्ग मैं दिज वडि भागे ॥
तुमरे हेत दीए दिज प्राना। तांके बंश जाह सुरि ज्ञाना ॥
उसके सुति होइ धरो औतारा। नामि मल्लिरिष पिता तुमारा ॥
प्रगिटो जाइ तिसी के द्वारे। हम होंवे मुनि तात तुमारे ॥
रामानंदि मोह नाम पछानो। चारो सुति चारो फल मांनों ॥
वैकुंठ माहि प्रभ कथा सुनाई। माधोदास मैं तोहि वताई ॥

काशीदास उवाच—

दो०—इस विध आए मही परि सुनो अनुज चितु लाइ।
धरि औतारि कार्य कीए सो सभ कहो सुनाई ॥

चौपाई—

इस विध आए जगित क्रपाला। सुनो कथा अवि परम रसाला ॥
आज्ञा भई प्रभू की जवै। आए नाथ मही परि तबै ॥
दिन पूर्ण जवि होइ वताए। नाथ मात के गर्भ समाए ॥
जनिम लीयो तवि जगत मझारा। सो अवि कहो सकल विस्तारा ॥
संवतु पंद्रा सै पंचीसा। कहो कथा सभ प्रभ पगि धरि सीसा ॥
पुष्प नक्षत्र नृिस्पति वारा। अर्ध रैन प्रभ भए औतारा ॥
बीसी विष्ण क्रष्ण पष्य जानो। दश अरि तीनि थिति पहिचानों ॥
माघ मास सुंदिरि सुषिदाई। अति पुनीति छवि कहीनि जाई ॥
अति अनंदि की रैन पछांनो। भई प्रभात पुनीतम मानो ॥
मल्लिराय दिज लीयो वुलाई। उपिमा तांकी कही नि जाई ॥
सास्त्र वेद प्रश्न पहिचाने। सामुद्रीक विध वति करि जांने ॥
वेद बचन मैं पूरा जानों। जोतकराय तह नामु पछानों ॥
कर्म वान सुंदिर गुण जाता। विद्या वान परिम विख्याता ॥
लग्न समा सभ तात वतायो। जनिमपत्रका दिज लिष ल्यायों

पूजा करी अनिक परिकारा। बहुरि कह्यो कहूं वाल व्यवहारा
सगल पत्रका वाच सुनाई। गृह नक्षत्र सभ दीयो वताई॥
सभ गुनि दिज ने भाष सुनाई। हेमराज नाम ठहिराई॥
वहुरि कहो दिज सकल सुनाई। होइ हरि भक्त वृथा नहि जाई॥

दिजउोवाच—

इस का बंस सदा सुषि पावे। व्रह्म वाक्य वृथा नही जावे॥
इसकी कुल प्रभ धरे औतारा। वधे वंस सदा अपर अपारा॥
वेद वचिन सभ भाष सुनावो। वृथा होइ तवि दिज न कहावों॥
अस कहि ब्राह्मण भविन सिधाए। वंदि जनि जाचक तवि आए॥
यथा शक्त तिन दीना दाना। सादरि सहति कीओ सत माना॥
सभ वृतांतु दियो तोह सुनाइ। माधोदास सुनो चितु लाइ॥

कांशीदास उवाच

दो०—देव पितरि गुरि महि सुर पूजे विवध विधान।
मंगत जानी लागै सभै तोषै करि सति मान॥

चौपाई—

चक्ष पुत्र जिह भविन वसावे। तांकी सुता कों सुत जो कहावे॥
प्रथम करी ताही की पूजा। मारति सुति पित पूज्यो दूजा॥
सलतापति की सुता कहा वे। तिह पति पूज परिम सुष पावे॥
निश दिन रचे जगित विवहारा। तिसको पूजो सहत प्रवारा॥
सुर पति गृह नक्षत्र सभ पूजे। औरि सभी जो वेदन सूझे॥
करी वंस की रीत अपारा। होइ परसपरि मगल चारा॥
निसि दिन होवे परिम अनंदा। आए चेत परिम सुष कंदा॥
नाम कर्ण के विप्र जवाए। व्यंजनि अनिक दिजै भुगिताए॥
करि पूजा दिज पगि सिर न्याए। सांईदास तव नाम धराए॥
पांच वरिष के भए कृपाला। आए लागी परिम रिसाला॥
देष्यो वालक परिम अनूपा। वुद्धवान और महा सरूपा॥
तातमात कुल वंस पुछाए। भविन पूछ लागी गृह आए॥
समा जानि कीनी कुडिमाई। लागि लीए मिरजादि सुहाई॥

विदया मांग गए निज द्वारे। मंगल भए दोऊ दिस भारे ॥
वरस जुगल जवि और बीताए। लागि विवाह देन तवि आए ॥
कहि सभ वाति गए निज धामा। होन लगे दो दिस सुभ कामा ॥
कुलि मिरजादा सकल कमाई। सदा वंस जो होती आई ॥
चारि भांति की बनी वराता। बालक वृद्ध जुवान गौराता ॥
भूषन वसन सभी कों छाजे। वाहन षिजमतदार विराजे ॥
दूलो की छवि कही न जाई। पीति वसनि तिन रहे सुहाई ॥
सोस सेहरा मुकटि विराजे। सुंदरि षडग कंध परि राजे ॥
भाल तिलक द्रग गुनज सुहावे। झुमका श्रविन परिम छवि पावे ॥
मुषि तमोल दसा रचा सोहे। सुंदरि हांस सभी मन मोहे ॥
भूषन सकल अंग मै राजे। सुंदिर पनी आर्चन विराजै ॥
और सकल छवि कही न जाई। माधो दास सुनो चितु लाई ॥

काशीदास उवाच—

दो०—चली वरात अपार तव होइ परिम आनंदि।
लयो समाज संभाल सभ अनुज सुष कंदि ॥

चौपाई—

चलो जनेत वजावत वाजे। दीसें सभी सकल विध राजै ॥
तिसी नगर मै पहुचे जाई। जहा वसे समिधी सुषदाई ॥
आगे लोक लेन तव आए। सुंदरि धाम तवी वैठाए ॥
निश मिलनी मही अपर अपारा। अग्र षेल कीयो सभ व्यवहारा ॥
केसरि छिडक सभी नहिलाए। जस के चीर भटि पहिराए ॥
वैसाष इकीया साहा जानो। अर्ध रैन कीयो कंन्या दानो ॥
निसवासर षटि ऊहा बिताए। तोषे लागी सभि मिरिजाद ॥
गृह को काजि करै मनि भावै। विद्या पडे परिम सुष पावै ॥
वरिस द्वादस के जवि भए। सुरिभी के संगि वनि मै गए ॥
धेन चराइ प्रभू गृह ल्यावै। मनि भीतरि केशवि को ध्यावैं ॥
आज्ञा करो प्रभू गिरधारी। मुकंद दास को कह्यो मुरारी ॥
अवि तुम भूर्लोक को जावो। सांईदास कों करि सिष आवो ॥

आज्ञा लइ तव मही सिधाए। प्रभ नगिरीं तास गुरि चली आए ॥
तरिवर तले विलोक्यो आई। पोढयो हुतो चीर धरि पाई ॥

कांशीदास उवाच —

दो०—चर्न लगाइ उठाययों जपत उठयों प्रभ नाम।
निर्ष्यो रूपु जु संत कों कीन प्रभू प्रणाम ॥

चौपाई—

मुकंदिदास तवि कीउो उचारा। दूध पिआवो वाल कुमारा ॥
वैठो प्रभ इसी अस्थाना। जावो नगरी कृपा निधाना ॥
काहे नगरी वाल सिधावो। दूहाइ दूध लै आवो।
एक सुरभि तवि दैई वताइ। इसको दुहो दूध ले आव ॥
दुही लीयो षीर अपारा। आनि चर्न पर करी जुहारा ॥
लीयो दुध तवि निकटि वैठायों। श्रविनन मैं हरि नाम सुनाउयो ॥
पीआ दूध जेता मनि आवा। अधक वधा सांईदास पीआवा ॥
जो कोऊ कहे दूध किह काज। लीने भेट करी मिरजाद ॥
लीयो प्रसादि गुरों को जवे। दिष्टयो जनिम पाछला तवै ॥
मुकंदिदास को सीस निवायो। उठो जव तवि दिष्ट नि आयो ॥
मनि मह लागि रही एह आसा। कैहे प्रभू कै ताके दासा ॥
सतिगुरि सोई भया अवि भोरा। नाम न पूछो मै मत भोरा ॥
हरि गुरि को जो नाम नि गावे। यम पुर माहो परिम दुष पावै ॥
ताते कहा जपो मै नामा। दे प्रभ लैहो विश्रामा ॥
भई गिरा तवि गगनि मंझारा। मुकंद दास हय नाम हमारा ॥
औरि कामना मनो गवावो। प्रभ पंकज मै प्रीत लगावो ॥
गिरा सुनी तवि भय आनंदा। जपन लगे तवि नाम मुकंदा ॥
लागी वेरि प्रभ वहु विरमाए। गौयां षेत घने तवि षाए ॥
गौऊनिकारि नगिर ले आयो। षेती का पति पाछे धायो ॥
आनि नगिर तिन करी पुकारा। सांईदास सभ षेत उजारा ॥
और साहदी कहे अनेक। षेत माह नाही षिलचा एक ॥
मलराय सांईदास वुलायो। कहो षेत किह हेत गवायों ॥
कंपति गाति के होयो भैय भारी। गाई तात नही एको डारी ॥

संति कहे जो सहज सुभाइ। करे काज प्रभ पल मै जाइ ॥
सांईदास जबि मुष ते भाष्यो। षेत जमाइ तवै प्रभ राष्यो ॥
षेतीं के पति पैंच बुलाए। मल्लराय देषन संगि आए ॥
गए षेत के जवी हजूरि। चहू दिसा मइ हय भरिपूरि ॥
षेती का पति विसमय भयों। दीसे पात न एकों गयों ॥
माधोदास सुनो चितु लाई। सकली कथा कहो प्रगिटाई ॥

काशीदास उवाच—

सोरठा—करी तबै धिधकार षेती पति कों मिल सभै।
पाछे करी वचारि धंन्न मल्लराय तात तुम ॥

चौपाई—

सकल पंच ने कीओ विचारा। धंन्न मल्लराय तात तुमारा ॥
षेती षाई सभो निहारी। अवि नही छीनी एको डारी ॥
ऐसी कही भविन चल आए। आपो अपिने काज लुभाए ॥
पिता मल्लराइ करी विचारा। बनि नही भेजो वाल कुमारा ॥
ताते भविन रहन प्रभ लागे। सेवे प्रभु पंकज अनुरागे ॥
संत सेव षटि कर्म कमावे। हरि मूर्त लइ रिदे वसावें ॥
करे गुहज तप अपर अपारा। प्रगिटि करे सभ जगत व्यवहारा ॥
वीस वर्स के जवि प्रभ भए। अमरदास तवि गृह प्रगटए ॥
शादी करी सभी कुलि रीति। भई वाल की सभ मनि प्रीती ॥
पंच बर्ष जवि बीते जानो। नरिहरिदास जनिम पहिचानो ॥
चतुर्वर्ष जवि बीते भाई। विष्णदास प्रगिटे जगि आई ॥
तीन वर्ष जविही चलि गए। सुषानंद तवि जगि प्रगटए ॥
चारो सुति प्रगिटे अवितारा। तुछ वुद्ध कहा करो वीचारा ॥
तांते सभ को करो प्रणामा। हरि गुन गाइ लहो विश्रामा ॥
द्वादिस वर्ष भए सुति चारो। क्षौरी कर्म कीयो पित भारो ॥
चारि बंस के लागी आए। निर्षे वाल परिम सुष पाए ॥
नविता देह गए निज गेहू। भयो वंस मै परिम सनेहूं ॥
भिन्न भिन्न सभ तवी विवाहे। होवै वंस मै परम उछाहे ॥
भए विवाह वडन जो आषे। उपमा औरि कहा कोऊ भाषे ॥

सोरठा—कीए जगित व्यवहार और मृजादा वंस की।
सुक्रति धर्म विचार पाए परिम आनंदि तवि ॥

चौपाई—

होय वंस मय मंगल चारा। रामा नंद भए औतारा ॥
हाड मास नौमी तिथ जानो। वृहस्पति वारि पुनर्वस मानो ॥
बचन हेत आए महाराज। सकल संत के पूर्ण काज ॥
सुंदिरि देह सभी विध राजे। सिरि परि कच घुंघरारे छाजे ॥
भाल तिलक सुभ रचयों विधाता। द्रगि दिशाल सुंदिर सभ गाता ॥
दिज वुलाइ सभ अंगि दिषाए। लछनि देष दिजै सुष पाए ॥
सकल लोक कों दिजह सुनाओ। धरि औतारा ईस जगि आयो ॥
कविन काज आयो जगि माही। ए हम मर्म मय जानयों नांहो ॥
द्वादिस वर्ष रहे तुम द्वारे। वहुरो वाल वैकुंठि सिधारे ॥
एह मम वचन वृथा नही जांनो। ईस सरूप बाल पहिचानो ॥
सुनि सांईदास परिम सुष पावै। गुहजि बाति किस हूं नि बतावे ॥
करि है मनि ही मैं प्रणामा। निश दिन, करे प्रभू को ध्याना ॥
करि मज्जनि लै वसनि पहिरावै। भूषनि सकल प्रेम सो लावै ॥
व्यंजन अनिक करावे पाना। प्रीति करै बहू विवध विधाना ॥
वर्स अष्ट के भए क्रपाला। क्षौर कर्म कीयों तिह काला ॥
करि इसनानि सभा वैठायों। भूषनि वसनि दास लै आयों ॥
पीति पागि प्रभ सीस बिराजै। तुरिरा कलिगी कनक विराजै ॥
कुंडिल कानि केसरी जोडा। कनिक जनेऊ केसरि षौडा ॥
पीति उपरना कंध विराजे। भूषनि हेम अंग मैं छाजे ॥
भाल तिलक केसरि का सोहे। तामै तंदल सभै मनि मोहे ॥
मुष तंवोल सुंदरि सभ अंगा। अति अनूप वालक जो संगा ॥
कंचन कंकन करि मै राजै। हेम जडित नगि हाथ विराजै ॥
रसना सोहे अंवृत बांनी। माधोदास सुनए सुरि ज्ञानी ॥

अडल—सुंदरि अंगि अनूप परिम छब पाविहै।
मुषि पराग छवि निर्षत मैन लजावि है ॥

मंगिल परिम अनूप सषी सभ गाविही।
सुंदिर रूप निहारि परिम सुष पावही ॥

चौपाई—

माधोदास सुनो चितु लाई। आगे औरि कथा जो आई ॥
एक समे वैठे सुष धामा। सांईदास जपते प्रभ नामा ॥
रामानंदि तहा चलि आए। करि दंडवत कछु बचन सुनाए ॥
सो मै कही तोह प्रगिटाई। सुनो तात तुम रिदा लगाई ॥
रामानंदि तवि बचनि उचारे। सुप्रस्थान इकंत निहारे ॥
आज्ञा देहु तात हरिषाई। वसो धाम निज आइस पाई ॥
द्वादश वर्स रहयों तुम द्वारे। कीए बचन सभ सत तुमारे ॥
कलप माह चवी औतारा। कहे वेद मै आदि वीचारा ॥
तिन राम ऋष्ण मुष जानो। जो ईहा रहे सो ऊहा पछानो ॥
भक्त सनेह अधक औतारा। भक्त समान नही कछु प्यारा ॥
जहा संत को कोऊ सिधारे। धरि औतारि जावो तिह द्वारे ॥
कार्य होइ संत्त कों तहां। सेवों दास होइी के तहां ॥
भक्त जना की टहल कमावों। जनि के कार्ज देरि न लावों ॥

सोरठा—तजो वेद मिरजाद षीरिसैन अरि नागसुष।
कविला के सुष आद त्याग संत कार्ज करों ॥

चौपाई—

अवि तुम वचिन सनेह औतारा। औरि नही जगि काज हमारा ॥
अवि मै होवो अंतिर ध्याना। आज्ञा देहु संत निहकामा ॥
सांईदास तबि बचिन उचारे। नाथ चलै हम संग तुमारे ॥
प्रभकों त्याग रहे जग माही। ताका ध्रगु जीविन जगि माही ॥
सुनो संति अवि बचन हमारे। विध के वचिन टारै नहीं टारै ॥
कही औध विध ईहा वितावो। वहुरो मोह मै आइ समावो ॥
मोहि तोह मांहि भिन्न कछु नाही। ईसर संत एक श्रुति गाही ॥
ताति तोष करि वाहरि आए। वंस माह किनू भेद न पाए ॥
आई चौदश परिम पुनीता। मज्जन चलैन सकल संगि मीता ॥
पितर सरोवरि करे स्नाना। प्रीति सहत स्मिरे भगिवाना ॥

करि मज्जन सभ वाहरि आए। रामानंदि तवि वचन सुनाए।।
सुनो संति अवि कहो विचारा। जोउ तिस समै भउों व्यविहारा।।
वचिन कहे सभ को प्रगिटाई। सुनो सभी अवि रिदा लगाई।।
तिसी सरोवरि जो नरि न्हावे। मुक्त लेह हरि चर्न बसावे।।
मनि चित लाइ करे इस्नाना। यो मांगे सो पावे दाना।।
सुति हित धारि वचनि क्रम सेवे। तात काल तव सुभ लेवे।।
केशवि सिमर करे सनाना। लहे सकल सुंदर फल नाना।।

लहे मुक्त ज्ञानि वैराग जोग है सिद्ध विद्या पाविंही।
धनि अर्थ काम जु सूर सेवें विजै करि गृह आविही।।
करि सभी जगि के काज पूर्ण दुष दारिद गवाविंही।
हे सुषी सदा कृपाल केशवि हरि सिमर टोमंडी नाविहै।।

सोरठा—ठाढे नीरि मछारि कहे वचनि प्रगिटाइ नाविहै।
सभ कों करी जुहारि अंतिरि ध्यान भए तवै।।

चौपाई—

कहे वचन सभंही सुन लए। अंतरि ध्यानि तवै प्रभु भए।।
भए सोच तवि अपर अपारा। षोज्यो सभै फुनि नीरि मंझारा।।
थके विलोक कहू नही पाए। चक्रति भए नगिर चलि आए।।
भेउौ विजोग नही भाषों। मंगल सकल प्रेम सो आषों।।
सांईदास तवि सभ समझाए। आदि कथा सभ भाष सुनाए।।
इसकों वाल नही पहिचानो। पूर्ण व्रह्म सभी मनि जानो।।
सांईदास तवि सभै सुनाई। माधोदास मै तोहि वताई।।

कवित्त—

तात कही सुनी बाति सभै टरि सोक गयों सभ ही सुष पायों।।
भ्राति सनेह विसारि दीए प्रभ कों पहिचानि रिदा ठहराओ।।
जगित विहारि कीए सुभ ही सभ मंगल मोदि अनंदि बधायों।।
जानि महात्म टोभडीका सभ ही मिल के तहा सीस निवायों।।

काशीदास उवाच—

भक्त करे सांईदास अपारा । कह्यों नि जाइ सकल विस्तारा ।।
जोग प्रेम दया की करिणी । मम बुध तुछ जाइ नही वरिणी ।।
निसवासरि प्रभ पंकजि ध्याना । हरि सिमरनि विन वाति नि आना
सुति दारा का हित विसरायों । निज मनि लइ प्रभ पंकज लायों ।।
छौडि दीए सभ जगि ववहारा । रहे प्रभू को नाम अधारा ।।
आपा परा दोऊ विसराने । जीवि ब्रह्म एको पहचाने ।।
कछुक वर्स जवि गए बिताई । औरि प्रसंग उठो तवि भाई ।।
अमिरिदास पोढो निज ग्रेहा । सुपनि है निहारी सिर बनि देहा ।।
भई पुनीति प्रभाति सुहाई । माति पिता कों भाष सुनाई ।।
सुनि सांईदास गही तबि मौना । कह्यो वहुरि भ्रम गिने को ना ।।
अमरिदास तवि कहो वहोरा । संसानाथ मिटावो मोरा ।।
तुम सर्वज्ञ सकिल जगि ईसा । मोहि निहारियों धरि बिन सीसा ।।
सुनो तात मै तोह सुनावो । सुफनि वाति फल आष बतावों ।।

सांईदास उवाच—

सुफने मै जो तीर्थ नावै । लहे कष्ट वडि संकटि पावे ।।
भैसा फील वराह निहारे । सर्प डसे इंद्र वज्र विदारे ।।
सो नरि जाइ वेगि यम धामा । रहे जगित नही सुष विश्रामा ।।
माया सुफने मै कोऊ पावे । गृह की संपत्त वेग नसावे ।।
सुफने मैं परि नगिर विलको । मिले सभी जेई न विलोके ।।
अविध भोगि जाई तिन द्वारे । काल वली जाइ तिसे संघारे ।।
सुफने मै जिस शत्रु गहे । कष्टि पाइ कै यम पुरि लहै ।।
दुरजनि हते के सिघ गरासे । लहे त्रास होवे उपहासे ।।
दक्षरण कुंडि बधू लैं धावै । वर्स एक मै यम पुरि जावै ।।
नीरि वुडे के षूहे पडे । संकटि पडे कैसे नरि मरे ।।
उडे जोऊ नरि निश के माही । तजे देस संसा कछु नाही ।।
बोले निश जो वादि विवादा । आवे कष्ट महा अपराधा ।।
नीच वस्तु जो सुफने षावे । ताकी संपति वेग नसावे ।।
नृपत षाइके लोभ निश करै । तांका तेज निमर्क मै टरै ।।

मृत्क वस्त निस मांगे कोऊ। अविगुण वडा जाणीए सोऊ ॥
इनि सुफनिन मै जो कोऊ आवे। जपे प्रभू कों दानि कमावे ॥
तुमरा सुपन सुनावो पाछे। अवि सुनि सुपन कहें सुति हाछे ॥
ईसर को जो सुपन अराधे। तांके संपत निश दिन वाधे ॥
सुपन माह गुरि जस दर्लावे। करे अनंद सदा सुष पावे ॥
पूजे संत विप करे दाना। लहे सुष वहु विवध विधान ॥
हेम दान जो सुपने करे। तांके पातक सभ ही टरै ॥
देवी का निश दर्सन पावै। तांके लक्ष पलक मै आवे ॥
सुपने मे जो सैनि निहारे। होह मेघ के वार द्वभारे ॥
और सुपन है अनिक प्रकारा। सुभ असुभ को लेइ वीचारा ॥

कांशीदास उवाच—

दो०—सुपन जु आवे किस को भला बुरा पहचाना।
जगि सुपने का एही फल जपे प्रभू कों दान ॥

सांईदास उवाच—

अबि भाषो सुति सुपन तुमारा। तांका फल अवि कहो वीचारा ॥
सीसि भिन्न और व्याहन जाइ। मास माह यम ताको षाइ ॥
ताते सिमरो श्री भगिवाना। यथा जुगित कछु करिहो दाना ॥
इह ते होइ सुपन को नास। सुनो ताति सभ सुपनि प्रगास ॥
असतति करी चर्न लपटाए। हरि गुनि गावित धाम सिधाए ॥
भविन आइ कीनो दिज दाना। जपन लगे तवि नाम निधाना ॥
हरि सिमरत हरि ही होइ गए। हरि हरि जन में भिन्न न रहे ॥
एक मास प्रभ के गुन गाए। अमरदास वैकुंठि सिधाए ॥
माधोदास सुनो चितु लाई। आगे और कथा जो आई ॥
सांईदास बैठे स्थाना। प्रभ गुनि गावित क्रपा निधाना ॥

काशीदास उवाच—

नानकदास तहा चलि आए। रूप कलंदरि का तनि लाए ॥
विंजनि सभ सांईदास सिधारे। प्रभ कों अर्पे प्राण अधारे ॥
नानक दास तहा चल गए। विंजन सिध वहा सभ भए ॥
अंतिर सुध पटि मेले गाति। जनिनानिक इहु बोले वात ॥

आज्ञा होइ तो आगे आओ। भूष घनी कछु भोजनि पावों ।।
नानिक कहे एसे भय देषी। एभीह को संति विवेकी ।।
सांईदास तवि मनि मुसकाए। नानक हमको देषन आए ।।
बोले तिसी समे सांईदासा। नानिक कहा धरी मनि आसा ।।
हम तुम एक नगिर के भेदी। ईहां कहावो नानक वेदी ।।
आयो तुम को वंस सुभाव। तुम संतनि सो कीयों दुराव ।।
गुरि संतन [सो दगा कमावैं। सोऊ साधु किहि हेत कहावे ।।
नानकदास कहै मुसकाई। सांईदास तुम धंन्न कमाई ।।
मे तुम कों तुरि देषन आयों। हरि का संति संपूर्ण पायों ।।

नानक उवाच—

संति मिले की सुनो वडिआई। मिले संति अघ कोटि मिटाई ।।
गंगा आद सभ तीर्थ न्हावे। कंचनि गिर ले दानि कमावे ।।
सहस्र बर्स वर्त तप धारे। तीर्थ मे जो अपर अपारे ।।
लष वर्स लेय दिज भुगतावे। गुह्य जाप के कलप कमावे ।।
साधे कर्म धेन लष दाना। पूजे केशवि विवध विधाना ।।
करे ज्ञानि श्रुति निगम वषाने। सभ ही जगित अन्यथा जाने ।।
एह कार्ज सभ ही करि आवे। संति मिले समफल नही पावें ।।
हरि गुरि संति भिन्न नही कोई। मिले जिसी कों उधरे सोई ।।
सो फल मोह प्राप्त भयों। सांईदास तुम दर्सन लहयों ।।

कांशीदास उवाच —

दो०—ऐसे वचन कहै तबै जन नानक प्रगिटाइ।
क्षत्री वंस मृजाद करि भोजनि कीयो अघाइ ।।

चौपाई—

माधोदास सुनो चित लाई। कहो कथा तोह सभ सुषिदाई ।।
भोजन पाइ जुगिल चलि आए। वैठे मध्य सभा तवि जाए ।।
चर्चा करी भक्त की भारी। वहुरो उचिरे नाम मुरारी ।।
सुषिमनी सोदरि नानक गायों। ज्ञान रत्न सांईदास सुनाउो ।।
भए परस्पर दोऊ अनंदा। गुन गाए प्रभु परिमानंदा ।।

नानक कह्यों वाति सुनि लीजै। कछु जनि लहै कछु मोहि दीजै॥
सांईदास जुग कुंभ पुराए। जनि नानक के पास धराए॥
पाछे कही वाति सभ भावि। किसी सो लेह किस सो पाब॥
नानक नाम का दोऊ भिगाई। वहु उसमें वहु उस मैं पाई॥
जुगल वाति परसपरि कीनी। सैली लई कढाही दीनी॥
नानिक कैहो मोह अंस कहावे। विहाह करै श्रीफल लै आवै॥
अस कहि नानकि विदया भए। महादेव के दर्सन गए॥
मांधोदास सुनावो तोह। यथा वुद्ध मैं आवै मोहि॥

काशीदास उवाच—

दो०—नानकि जनि विदया भए प्रभू विराजे धाम।
सलितापति की सुता जो ता पत जपते नाम॥

चौपाई—

सिंघ गुरु जो तास अहारा। तिस असवारि पिता जो प्यारा॥
निशि दिन जपते तांको नांमा। जांह वस्राद करे विश्रामा॥
वाणी करी अनक परिकारा। अविर जगित के तजे विवहारा॥
साधे प्रेम जोगि वैरागा। ज्ञान मौन होए अनुरागा॥
सदा प्रभू को सिमरनि करै। अविरि वाति कोऊ रिदे न धरै॥
अैसी भगित देष गिरिधारी। भैजे देव विवान मुरारी॥
जबै विलोके प्रभ सांईदासा। प्रभ मिलने की वाढी आसा॥
होइ प्रसंन्न सभ अंस वुलाई। सभना कों एह वाति सुनाई॥
तिना कहा जो आज्ञा होई। करै नाथ हम कार्ज सोई॥
ल्यावो धेन करे हम दाना। औरि कीजिए सभ सम आना॥
यद्यपि कर्ता कर्म नि रहे। तदिप कीए वेद जो कहे॥
माधोदास सुनो चितु लाई। कथा सुनो जो आगे आई॥

कांशीदास उवाच—

सोरठा—कही सुतो इह बात सुनो नाथ मोहि विनती।
कहीश्रुतो इह तात वडा चलत कछु सिष्यलैइ॥

सांईदास उवाच—

सुनो तात एह सिष हमारी। कहों सभै लीजै चितधारी।।
जो मुष कहो सो निश्चे करियो। दुक्रति त्याग सुक्रति चिति धरियों
करियों यथायुक्त कछु दाना। और करौं कविलापत ध्याना।।
दुक्रति सों कविहूं नही लागो। रविसुति त्रास धार जीया जागो
तीर्थव्रति दिजो को पोषो। गुरि अरि संत प्रीत सो तोषो।।
करि षटि कर्म इष्ट देव सेवो। ईसर कों चरिणोदिक लेवो।।
करि विंजन हर को भुगितावो। अर्चे रास अग्नि तप तापो।।
दुष्टन का संगि तियागो। संति चरन मैंय निस दिन लागो
निगम सुनो परिवधू न रांवो। सुक्रति सभले रिदे वसावो।।
आत्म चीन्हो सहति ज्ञाना। अविर कीए वहि सभ सति माना।।
संति सिष्य सभ भाष सुनाई। जगित सिष सुनीए चितु लाई।।
करै वडन की निस दिनि सेवा। औरि अराधे देवी देवा।।
कार्ज करै वडिन की रीता। सुक्रति करै तजै विपरीता।।
मित्र करै सभ ही विध पूरा। सुंदिरु सषी सुधरि नृप सूरा।।
स्वार्थ मैं चित भंग न करै। आपन ही सो निस दिन डरे।।
कुलि के कर्म कबूं नही त्यागे। शत्रू के भविनि निस दिन जागे।।
इतिनो को करि मित्र न जाने। साधू सिंघ त्रीआ नृप अज्ञाने।।
परित्रीआ सो हेतु न लावे। जूया तजो अभष न षावे।।
सुरिपति तोषे कर्त कमाई। अग्नि तोष के भोजन षाई।।
जो गेही एह लछन करे। तांकी संपत कबूं न टरै।।

कांशीदास उवाचि—

दो०—लक्ष जु होवे धर्म की तजे नही सुभ काज।
जगत माहि सुषि पाविहे रविसुति होइ मुथाज।।

छन्द—

सुनि तात वात विचार चितधर एही सिष्य कमावनि।
अघ त्याग सुक्रति धार जीमैं प्रीति प्रभू लगाविनी।।
मनि वचन कर्म विचारि सुरि दिसात प्रभू मुन वरियाईए।
जुगल हो सुष रवि सुत न ग्रासे एही सिष कमाविए।।

कांशीदास उवाच—

सुनो ताति अवि सभी सुनावो। वात गुप्त तुम भाष वतावों ।।
जो मन कुल हो है हरिदासा। ताकी सिध करै सभ आसा ।।
हर्को त्याग रहे जगि माही। यमपुर दुषीय गति सुष नाही ।।
तात वात सभ ही मनि धर्नी। केशव सिमरि करौं सुभ कर्नी ।।
अवि मैं चलो प्रभू कै द्वारि। ताति सभी लीए चितिधारी ।।
सभ ही कीओं तवो प्रनामा। प्रीति सहत ढरै लोचन सामा ।।

सुतवाच—

नाथ नाह हम बुद्ध उदारी। रछ्या कीजै सदा हमारी।
वंस सदा प्रभ तुमरी सर्नी। तांकी रछ्या निसि दिनि कर्नी ।।
औरि नही कोई ओटि हमारे। ईहा ऊहा प्रभ चर्न तुमारे ।।
हमरी वुध नि परिम विशाला। नाथ संभाल करो प्रतपाला ।।
प्रभ सहाइ विन स्वास नि आवे। नाथ कहा कोऊ कर्म कमावे ।।
ताते सदा वसो हम संगा। दुष्ट जीवि प्रभ तजो न गंगा ।।

सुतोवाच—

दो०—कुटल कुचाली दुष्ट जो तौ भी करों न त्याग।
नीरि न वोडे काठ को जानि आपने भाग ।।

चौपाई—

वोले तवे प्रभू सांईदासा। करों सदा तुम माह निवासा ।।
जैसे गंध वसे कुसमाही। औरि जानि आत्म घटि ताही ।।
सैल माह जो अग्न बसावै। जलि मै सभ जी दिष्ट न आवे ।।
वीज माह जो तरिवरि होई। जौ जगि संति लषे नहि कोई ।।
तिउ तुमरे संगि वसे मुरारी। जुगि जुगि रछ्या करे तुमारी ।।
जगित तात बिर्था करि जानो। जिउ सुपने की संपत मानो ।।
सुति दारा कों सुष कछु नाई। विछुकी जनिनी की न्याई ।।
जगित मध्य जो मित्र विचारे। कूप सदेह के देषन हारे ।।
माया को जो सुन्दिर जानो। चूडेली की प्रीत पछानो ।।

दो०—मित्र तुमारे जौ सभी सो मै दिवों वताइ।
कहो सभी विस्तार करि तात सुनो चितु लाइ ॥

चौपाई—

मनि है मित्र जो हरि को ध्यावे। श्रवनि मित्र हरि जस सुनि आवे ।।
चर्न मित्र जो तीर्थ करै। सीस मित्र प्रभ पंकज परै ।।
हाथ मित्र जो धर्म कमावे। नैन मित्र हरि दर्सन पावे ।।
रसना मित्र जो हरि गुन जाने। देह मित्र हरि टहल पछाने ।।
और‍ि मित्र सभ वृथा तुमारे। सति गुर मित्र जो भौजल तारे ।।
देह मित्र जो एसो करै। औरि मित्र जाने सो मरे ।।
एह तुम बचिन रिदे मै धारो। प्रभ सो प्रीति न कविहूं टारो ।।
अवि तुम हमरी आज्ञा कीजै। मही सुधार कुसा तहा दीजै ।।
तांके ऊपरि तिल छिटिकावों। साल ग्राम सिला लैय आवो ।।
गीता श्रुति लैय धरो सिराणे। तुलसी चौरा सन्मुष आने ।।
कपला नाम गौऊ ले आवो। जो तिस कह्या सोई पहिनावों ।।
तेल घृत गुडि लून अनाजा। भूषन वसनि पीतांवरि वाजा ।।
गंगा जल सो कीयो स्नाना। विधवति सहत कीयों सभ दाना ।।
यद्यप कर्णी कछू नि रही। तद्यपि करी वेदि जो कही ।।
माधोदास सुनो चितु लाई। कथा कहो जो आगे आई ।।

कांशीदास उवाच—

दो०—करी मृजादा वंस की औरि सभी सुभ काज।
पठे जो देव विबान तवि सकल वंस के राज ।।

चौपाई—

होइ सविद तहा अपर अपारा। वेदि पडे तहा दिज धुनिकारा ।।
एक रवाबी सदा हजूरा। तांको कहयों भाग वर पूरा ।।
तिन मांगयो मै एह वरि पावो। चिषा चढो तौ सविद सुनावों ।।
एही इछया रिदे हमारे। वृथा होवो वचन तुमारे ।।
जवि एह सुनी मोन हो गए। तीनि वारि तिस धृग धृग कहे ।।
क्या तुध मागयो तै अज्ञानी। तुमरे रहे न देवा पानी ।।
सकल कथा मै प्रगिटि सुनाई। माधोदास सुनि चितलाई ।।

दो०—कीनो दानि अपार तवि सभू कों कंठ लगाइ।
त्याग जगत प्रभ इउ मिल सागिर बूंद समाइ ॥

चौपाई—

पाछे करी वेद मिर्जादा। अौरि करी सभ कुल की आदा ॥
चंदनि की सभ चिषा वनाई। तहा जाय कै देह टिकाई ॥
गियों हाथ लैं डूंम तंमूरा। कीजै बचन प्रभू अवि पूरा ॥
वजैं नगारे डुले निशाना। ह्रिए कै वाज पडै सुरि ज्ञाना ॥
होइ सविद तहा अधक अपारा। ढरै नैन जलि सुदरि धारा ॥
उठि वैठे सभ दर्सन पाए। सविद पांच तिनि डूम सुनाए ॥
अैसी देष जगित सिरि नायो। वचिन हेति एह चलित्र दिषायों ॥
वहुर देह तिस ठौरि समाई। प्रभ का सिमर अग्न प्रगिटाई ॥
कह्यों न जाइ समा वहिसारा। नभ मै देव करै जैकारा ॥
करि कार्ज सभ भविन सिधाए। नरिहरिदास तिलक वैठाए ॥
कीए कर्म जो श्रुति के आषे। अौरि जगत के करि अभिलाषे ॥
जो एह कथा सुने चितु लाई। तांको दुभदा रहे न काई ॥
अवि एहि कथा संपूर्ण भई। जो कोऊ सुने सोऊ फल लई ॥
माधोदास मै तोहि सुनाई। तांका फल सुनि लीजै भाई ॥
पढै जोऊ हित चित लाई। तांके सति गुर सदा सहाई ॥
पढै जोऊ नरि धनि के हेत। तांके लच्छ वधे वहु नेत ॥
सुति दारा हित जो नरि ध्यावे। सो भी तातिकाल फल पावे ॥
जो कोऊ पडै हेत गिरिधारी। तांको देवे मुक्त मुरारी ॥
पढै कष्ट मै जो नर कोई। तांका कष्ट सभी षय होई ॥
जो कोऊ पढै सहज सुभाव। तांके सतिगुरि सदा सहाई ॥
गुरि जनि सोई गुरों की सर्नी। कथा पुनीत सकल तिस बरिणी ॥
माधोदास सुनी तै सारी। तांते पावो मुक्त मुरारी ॥

कवि उवाच—

सोरठा—प्रभ दीजै इह दान मांगो प्रभ करि जोडि के।
रहै रिदे तुम ध्यानि रवि सुति कष्ट निवारियों ॥

चौपाई—

अभै राम की आज्ञा पाई। कथा कही तब सभ प्रगिटाई॥
ऊक चूक सुध करि लीजै। दध सुति की रछ्या करि लीजै॥
महादास सिमरों गुर पुरा। स्यामदास दर्गाह का सूरा॥
संतिदास सिमरों औतारा। गुरिबषसदास भौ टारनिहारा॥
सिमरो क्रष्णचंद व्रजिबासी। सदा सहाइ कटै यम फासी॥
गुरि जनि दास तुमारी आसा। लहै सदा तुम चर्न निवासा॥

दो०—फागनि वदी जो पंचमी वृहसपतिवार पछान।
अठारा सै उनतीसवा भयों संपूर्ण जानि॥

दो०—वंसी राम क्रपा करी सति गुर भए सहाइ।
क्रष्ण चंदि की क्रपा सो सकली कही वनाइ॥

दो०—लेषक श्री सवायां राम श्री काशी तिस वास।
जो जो पडै सो सुष लहै अंति विष्णुपुर वास॥

श्री रामायनमः श्री संकटा दैव्यैनमः सुभंभूआतु लिषी टहलदास।

अथ महादास जन्म साखी

ओं स्वस्ति गणेशायनमः बावे महादास की जन्म साषी लिष्यते ।

दो०—कवलापति को ध्यान धर सिमरो गुरु पद कंज।
श्री कवला को वेनती दीजै वुद्धि प्रचण्ड ।।

चौ०

प्रथमे सिमरो श्री नंदलाला । भगत वछल प्रभ दीन दिआला ।।
सिमरो गणपत आदि विनायक । एक दंत शुभ सुकृत दायक ।।
धूम्रकेत शशिभाल विराजे । द्वादश नाम विधाता साजे ।।
गुरु चर्ननि को सीस निवावों । जिह प्रसाद निर्मल मति पावों ।।
मानस रूप जगत्त मैं आओ । पूर्ण व्रह्म सो वेद वताओ ।।
संवत् ठारा सै अरु ठाई । वसंत पंचमी तिथ सुषदाई ।।
तां दिन उपजे अधिक हुलासु । करो कथा उर भगत प्रगासु ।।
जगदंवा जै होहिं क्रिपाला । पूर्ण होइ कथा तत काला ।।

दो०—संतदास ने पूछआ स्यामदास प्रति वात।
किस विधि उपजे महादास मोहि सुनावो नाथ ।।

चौ०—

संतदास ने वात उचारी । स्यामदास को कह्यो विचारी ।।
कथा सुनावो मोही क्रिपाला । किस विधि आए जगत दिआला
महादास का जन्म सुनावो । हमरे हृदे आनंद वधावो ।।
स्यामदास तबि कह्यो विचारी । संतदास धन्न वुद्धि तुम्हारी ।।
जैसे तुम पूछी मोह वाता । पार्वती पूछो शिव नाथा ।।
कथा सुनावो शंभु क्रिपाला । प्रथमे जग जिउं रचयो दियाला ।।
आदि कथा तव शंभु सुनाई । सो मैं कहों तोह समझाई ।।
जनम प्रभ का तिस मै आवै । जो कोई सुने मुक्ति फल पावै ।।
संतदास अव तोंह सुनावो । जन्म कथा अमृत प्रगटावो ।।

दो०—शंभु सुनाई उमा को सोई सुनावो तोहि।
सुनो सिष्य चितु लाइ के जो तुमि पूछी मोहि ॥

चौ०
तांते करौ ब्रह्म को ध्याना। निर्गुण रूप श्री भगवाना ॥
षीर शयन सभ सुष को सांई। अलष अलेष अभंग गुसांई ॥
कीयो न होतो जगत पसारा। रहत प्रभू तव धुंधकारा ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र ताहि साजे। सगल स्रष्ट प्रभ माह विराजे ॥

दो०—उठी प्रभू के मन विषे कीजे जगति उपाइ।
एक पलक मैं प्रथमी नवषंड धरी वनाई ॥

चौ०
नाम कवल ब्रह्मा उपजयो। कबल पुष्प पर इसिथित भयो ॥
सीसू ते शंकर अवतारा। वडो देव देव मैं भारा ॥
हिर्दे ते भयो विष्णु सरूपा। सगल देव देव को भूपा ॥
सेस नाग जंघन ते भयिओ। पताल लौक को षोजत गयो ॥
पुन प्रभ भए वैरांट अवतारा। कीयो चरित्र महा अति भारा ॥
सीसूं ते सत गगन वनाए। सस अरु भान कटाक्ष सुहाए ॥
सात समुद्र उदर विस्तारा। सलता जान प्रभू की नाडा ॥
ठारा भार रोमावल जानो। पर्वत सगल संष पहिचानो ॥
बावी कुक्ष भया गिर भारी। दाहनी कुक्ष कैलास विचारी ॥
पृष्ट प्रभू कंचनि गिरधारयो। सात पताल चर्ण विस्तारयो ॥
सत्या की प्रभ भूमी वनाई। कान मैल प्रभ जल मै पाई ॥
चार वेद स्वासन के धारे। कीया वनाइ वनावनि हारे ॥

दो०—मैल जु डारी जल विषे उपजे दैत अपार।
हरणायच मधु कीटक अऊर सकल परवार ॥

चौ०
जल मै करे कुतूहल भारी। सुत दारा संग सभ परवारी ॥
एक समे सभ वार आए। देषी भूम वहुत सुष पाए ॥
मन मै आइी ऐसी वाता। एस को ले चलीए जल ताता ॥

अवनी तवै समेटत भए। काछ मार जल मै ले गए॥
अवन का तित को एह् भार। जइसे कवल लए नर धार॥
नाचे कूदै करै कतूला। देषी भूम अनूप अमोला॥
मन मै संका कछू न आनै। आप समान किसू नहि जाने॥
जांके रिदे नही भगिवाना। दैत नाम ताही को जाना॥

दो०—देषे प्रभ जी ध्यान धरि मही नही दिष्टाप।
तवहि रिदे महि जानियो लीनो दैत दुराप॥

चौ०—
तव प्रभ भए वराह अवतारा। कीआ अस्थूल महा अति भारा॥
तांकी उपमा कहन न आवे। शिव व्यास सुक सारद गावे॥
सुमेर पर्वत जो पग मै आवै। चांपे नेक भासिम हो जावे॥
अवर रूपु को कहा वषाने। जिन प्रभु कीआ सोई प्रभु जाने॥
क्रोप धार तव जल मै गए। तिन असरन को छेदत भए॥
दाहने दंत असर सिघारे। वामे दंत मही ले धारे॥
अवनी तहा बिराजत कैसै। चावति तित नरि लागति जैसै॥
अवनी को ले वाहर आए। संग दोऊ निसाचर ल्याए॥
उसी ठवर लै मही विछाही। तुचा दुहन को ऊपरि पाई॥
सेस नाग की कुंडलु डारयो। सुमेर पर्वत लय मध्य पधारियो॥
दुहू दिसा भूधर अति भारी। मध्या गिर कैलास विचारी॥
ऐरावति चहु दिसा ठहिराए। ससि अरि भान दोऊ नभि छाए॥
निसवासरि सो सेवन लगे। भान मयंक होय अनुरागे॥
नभ मै सेवै करै उजिआरा। कीअ प्रभू अति षेल अपारा॥
रुद्र विष्णु महीप धराए। व्रह्मा को लै वेद दिषाए॥
ताते सभना आप पछाना। व्रह्मा विष्णु रुद्र तव जाना॥

दो०—इस विध मही टिकाय कै कीनो वहुर विचार।
आज्ञा व्रह्मे को दई रच्यो सकल संसारु॥

चौ०—
आज्ञा भई प्रभू की जैसे। रच्यो सृष्ट व्रह्मा पुन तैसै॥
एक प्राट कंन्या उपजावे। दूजे ते लै वाल दिषावे॥

इस विध रची जु सृष्ट अपारा। चार वर्ण पुन भए अवतारा॥
ब्राह्मण मुष ते हर उपजायो। क्षत्री भुज ही ते अपतायो॥
जंघन ते भए वंश अवतारा। चरिनन ते सूदरि वपु धारा॥
चार वर्ण सभ ही जगु छयो। जो जिह जान्यो सो तिह लयो॥
ऐसे सकली सृष्ट पसारी। तीनो देव रहे ब्रह्मचारी॥
तवि कविला मनि माह विचारी। तीन सरूप कीए जु षरारी॥
तीनो की जा सेवा करो। तीन रूप हो तिन को वरो॥
तीन सरूप कीए जग माता। लक्ष्मी ब्रंह्माणी अंबाता॥
एस विध तीनो सेवन लागी। सहज सुभाय होय अनुरागी॥
अवरि सृष्ट भई अपिर अपारा। इस विध रच्यो सकल संसारा॥
ब्रंह्मा वेद पढन तव लागे। क्षत्री राज करे अनुरागे॥
मुनवरि तपु करि है अतिभारी। वैश्य वणज की चाह विचारी॥
सूद्र हल जोते कसाना। होह अनाज सकल सुष माना॥
संतदास सुनु कथा सुहाई। आगे अवर सुनो जो आई॥

दो०—इस विध रचीयो उपारजा सुनो संत सुर ज्ञान।
श्री गुर चर्न प्रताप ते आगे करो बषान॥

चौ०—

एक रही प्रभ के मन आसा। सुनो संत सो करो प्रकासा॥
सागर की प्रभ चित बिचारी। महा वली जल निध अति भारी॥
जो कवहू इसके मन आवे। सकल सृष्ट करि क्रोप लुडावे॥
ताते इसका गर्व निवारो। सकल सृष्ट तव सुषी निहारो॥
एक करो निश्चर के नासा। संषासुर अति तेज प्रकासा॥
ताते अव ही वात वनावो। ब्रांह्मा के मन भ्रम उपजावो॥
ऐसी वात प्रभ के मन आई। ब्रंह्मा वेद पडत था भाई॥
देष वेद उपज्यो हंकारा। हम सम विष्ण न रुद्र विचारा॥
जो हम वेद पढो नही वानी। कवन भांति करि जाह पछानी॥
वात तव कहते भए। नृत काल के वसि हो गए॥
हिद्रे की जाने जदुराय। प्रभ संषासुर लीयो बुलाय॥
उस्तति करी प्रभू भगवाना। तोह समान नही बलिवाना॥

एक काज हमका कर आयो। ब्रह्म के जा वेद दुरायो।।
चल्यो तबि संषा सुरु धाई। ब्रंह्मा के पुर पहुतो जाई।।
ब्रांह्मा के जाय वेद दुराए। देषे निगम वहुत सुष पाए।।
वेद न देयो किसी को जाय। ऐसी गइी दैत मन आइ।।
तीन देव तें वेमुष भयो। ताक मही की सर्नी गयो।।
वसुधा कही तवै यह वाता। जाह समेर पहि राषे ताता।।
गयो दैत सुमेर पहि धाइी। दीयो सुमेर समुद्र वताइी।।
गयो समुद्र पास अज्ञानी। सकल वात तिन जाय वषानी।।
तवि सागर कह्यो आगे आपु। दीनी वुध प्रभू विसराय।।
दैत वड्यो सागर मय जाय। ब्रंह्मा उठे तवे अकुलाय।।
वेद न देषे अपने पासा। चिंता वढी गयो जु हुलासा।।
तवि विध अैसी वात विचारी। हरि सो गर्भ[1] कीयो हम भारी।।
तांते इतना त्रासु दिषायो। भली करी हरि गर्भ मिटायो।।

दो०—हर वेमुष जो होयगो तांके नही अनंद।
जगत माह दुष पाव है यमपुर पडीए वंद।।

चौ०—

ऐसो कहित ब्रंह्मा उठ धाए। नाग लोक तवि पलि महि आए।।
सुरन सहित देषे यदुनाथा। आन चर्न परि नायो माथा।।
उसितिति करी प्रभू की भारी। देष विरंच हसे गिरिधारी।।
विध सो कही तवै जदुनाथा। कीयो अनिग्रह भए सनाथा।।
तोह समान विध देव न कोइी। भूत भविष होय न होइी।।
आजु पुरी मोह भइी सनाता। आए तुमरे चर्न विधाता।।
तव विरंच यह वात उचारी। आए अपने काज मुरारी।।
तुम सो गर्व कीयो जदुराइी। तवि किन लीने वेद दुराइी।।
हरि वेमुष जो होवे नाथा। तांतो कवहू नही कुसलाता।।
ताते मोह अनुग्रह कीजे। अव की वार राष मोह लीजे।।
होय प्रसंन कही प्रभ वाता। संषासर हम पठयो विधाता।।

---

१. गर्भ<गर्व।

उसको चलो विलोके जाय। किसी ठौर मय बैठो जाय ॥
तीनो देव मही परि आऐ। देव दैत सभ संग लिआए॥
पूछी मही प्रथम भगवाना। तिन सुमेर को लीनो नामा॥
तवि हरि कंचन गिर पहि आए। सकल व्रतंतु सुमेर सुनाए॥
उस्तति करी हेमगिर भारी। नाह निसाचरु रष्यो षरारी॥
आइआ था प्रभु हमरे धोरे। हम पठयो सागर को पोरे॥
अैसा कवन सुनो करतारा। तुमरा वेमुषु राषन हारा॥
अंवृत को प्रभ दूर विडारे। विष की गंठ वदन मह डारे॥

दो०——मही उधारन षल दलन संतन सदा सहाइ।
तुमरा वेमुष राष के कवहू नही सुषु पाय॥

प्रभ की निंद्या सुने जो कोई। व्रह्म घात का तिस फलु होई॥
हरि वेमुष प्रभ जहा वसावे। नष्ट करे तिस वेर न लावे॥
ऐसी कही चर्न लपटाना। सागरि ओर चले भगिवाना॥
मार्ग अर्ध जवे प्रभ गए। आश्रम एक विलोकत भए॥
सुंदर अधक अनू सुहावे। उपिमा तांकी कहन न आवे॥
द्रुम वेली तट अधक अनूपा। फूले फूल अनूप सरूपा॥
वोले कोकलि मोर चकोरा। चकवी चकवे प्रेमु न थोरा॥
केहर मिरिग एक अस्थाना। वेर भाव तित कवहू न ठाना॥
अनक भांति के फूल सुहाय। तिन की छव सो मैन लजाय॥
तांके मध्य मुनी सर राजे। तांका तेज देष रवि लाजे॥
ज्ञानवात सुंदर सुर ज्ञानी। तांकी उपमा सुनो भवानी॥
हरि सिमरण विन अवर न वाता। तारक मुन तिह नाम विष्याता॥
तिस आश्रम प्रभ जी चल आए। देव देत सभ संग सुहाए॥
देष मुनीशरु अत सुष पाइयो। जन्म जन्म का त्रास मिटाइयो॥
उस्तत करन तवै मुन लागै। गद गद कंठ होइ अनुरागा॥
नमो नमस्ते श्री भगवाना। आद पुर्ष पर्मातम रामा॥
नमो नमस्ते आदि सरूपा। मही उधारण कृष्ण अनूपा॥
जग उपजावन सकल विनासी। निर्गुन रूप सकल प्रगासी॥
सकल सृष्ट मैं जोत तुम्हारा। सभ के निकट सभू ते न्यारा॥

उस्तत करो कहा लग तोरी। नाथ अघ मोह मन थोरी ॥
तांते प्रभ दीजे इक दाना। रहे रुदे मैं तुमरो ध्याना ॥
तव ऐसे बोले भगवाना। प्रेम भगति मुन दीनी पाना ॥
तुमरे रिदे करो मय वासा। मम सिमरन विन अवर न आसा ॥
जन्म तोह निकट वसावो। जहा मुन जाहु तहा संग जावो ॥
प्रभ पंकज मुन सीस निवावो। वही ध्यान ले रिदे वसायो ॥
मुन को तोष चले गिरधारी। आए सागर निकट मुरारी ॥
सागर को बोले भगवाना। निसचर देह वेग वलवाना ॥
जलनिधि कह्यो देवो प्रभु कैसें। क्षत्री धर्म होता नहि ऐसे ॥
प्रथमे देषो युद्ध हमारा। जीतो मोह लेहु करतारा ॥
जल निधि गर्ज गयो नभ ओरा। काटयो स्वास चक्र के जोरा ॥
तीन वार इउं गर्जत भयों। काटत स्वास सभी प्रभु गयो ॥
संतदास सुनीए चित लाई। कहे उमा को शंभू राई ॥

दो०—जितयो सागर इस विधी कीनो वहुं संग्राम।
सुनो सिष्य चित लाय के कीए प्रभु जो काम ॥

चौ०—

कंचन गिर को कीयो मधाणा। कछ रूप कीना भगवाना ॥
कंचन गिर के तले टिकायो। भुजा प्रभू जी ऊपर पायो ॥
वासक का ले नेत्रा कीनौ। ले कर देव को दीनो ॥
दैत गए तव मुष की ओरा। पूछ देव ने फडी वहोरा ॥
रिडकयो सागर कर विस्तारा। काढे रत्न अमोल अपारा ॥
एरापति सुर सारंग बाजा। सस विष अमृत मध मणसाजा ॥
धनंतर सहत अरंभा आई। कल्प वृक्ष तव आयो भाई ॥
तव सागर मन माह विचारी। आन चर्न की सर्न निहारी ॥
कवला दैत प्रभू के हाथा। फुन चर्नन पर नायो माथा ॥
फुन प्रभ भए मछ अवतारा। सागर मध्य गए करतारा ॥
संषासुर को छेदत भए। वेद आन ब्रह्म को दए ॥
संषासुर को कह्यो मुरारी। तोरी धुन मोह परम पिआरी ॥
हमरी पूजा जोऊ कमावे। तुमरी धुन विन विर्था जावे ॥

बहुर रत्न वांटे गिरधारी। सुनो उमा सो कयो विचारी ॥
सस विष दोनो मोह त्रिपतायो। अमृत मध्य सुर असुर पिलायो ॥
चार रत्न सुरपति को दीने। रंभा वक्ष सुर मनि परवीने ॥
चार रत्न राषे जदुनाथा। सारंग संष लष मण साथा ॥
धंनतर काढ जगत को दीनो। सप्त मुषी सूर्य परवीनो ॥
देव दैत निज गृह को आए। बहुरो प्रभ वैकुंठ सिधाए ॥

श्लोक - सुने कथा जो याह परम सुष पावही।
वसे स्वर्ग मै जाइ बहुर नही आवही ॥
प्रेम भगत की चाह रिदे ते ना टरे।
दूष दरद अधरोग कथा सुनते हरे ॥

चौ०—

वैठे हुते शंभू कैलासा। जगदंवा पूछे तब वाता ॥
प्रश्न कीयो तव सुभग भवानी। कथा सुनावो शिव सुर गियानी ॥
विष्ण कहो प्रभ कहा विराजे। कवन समाज प्रभू संग छाजे ॥
सुनो रमा अव तोह सुनावो। जहा वसे सभ ठवर वतावो ॥
जज्ञ होम हर पूजा होई। तहा विराजे निश्चे सोई ॥
हर की कथा जहा विस्तारी। जान रमा तहा वसे मुरारी ॥
कीरत्तन कर संति अनुरागी। तहा प्रभू साक्षात विराजे ॥
हर मूर्त्त को धरे धिआना। तांके रिदे वसे भगवाना ॥
तीर्थ वर्त संत गुरु पूजा। सुकृत कर्म अवर नही दूजा ॥
तांके रिदे करे हर वासा। सुनो सती हर कथा प्रगासा ॥
योगी प्रेम सहित जो ध्यावे। तांके रिदे प्रभू सुष पावे ॥
वाह्मण धेन देव हितकारी। तांके रिदे वसे गिरधारी ॥
पर उपकार को जो उठ धावे। हर जीताँ के रिदे वसांवे ॥
समदिष्टि जो होइ समाना। तांके रिदे वसे भगवाना ॥
रामकृष्ण को सिमरे कोई। तांके रिदे सती हर होई ॥
अवर वसे बैकुंठ गुसांई। सुनो रमा जहा वसता नाही ॥
हर की निंद्या संत न सेवा। तहा न वसे देवन को देवा ॥
काम क्रोध सुक्रत नहि कोई। सुनो रमा प्रभु तहा न होई ॥

ब्राह्मण धेन जल निंद्या गावे। तहा सती हर निकट न आवें।।
जहा पाप है अधिक अपारा। तहा नही जानो करतारा।।

दो०—सर्व दुक्रत जहा वसत है तहा वसे हर राइ।
तम सूर्य एक ठउर मे सती नही मिल जाइ।।

चौ०—

वहुर कह्यो शिव को जग माता। संसा मोह मिटावो नाथा।।
कैहो वसे वैकुंठ मुरारी। कथा सुनावो सोई विचारी।।
कैसा धाम सुनावो सोई। संसा मन में रहे न कोई।।
तैसा सती कवन विध भाषो। जेती वुद्धि मोह तेता भूषो।।
प्रभ लील्हा कहन न आवे। नारद व्यास सारदा गावे।।
ढाई लष जोजन विस्तारा। सात पुरी तिस पंथ मंझारा।।
तांके भिन्न भिन्न सुन नामा। सस उडगन विश्रामा।।
सुर विरंच निज धाम बषानो। तांके शिषर स्वर्ग पहिचानो।।
चार लाष जोजन मग ठानी। पुरी पुरी एती विछ जानी।।
इतिना है तिन का विस्तारा। तांके शिषर वैकुंठ द्वारा।।
सुनो सती सो कैसो द्वारा। जेती वुद्ध कहो विस्तारा।।
द्रुम वेली तहा पुष्प अपारा। चले सुगंध मुक्त को द्वारा।।
कंचन को सभ कोट विराजे। मण मुक्ता द्वारन मैं राजे।।
सुंदर तट अनूप सुषारा। विगसे कवल अनक परकारा।।
कंचन की सभ पाल सुहाई। तांकी सोभा कही न जाई।।
कुंदन के सभ भवन अनूपा। लिषे चित्र का परम अनूपा।।
मण मुक्ता तहा षचत अपारा। भान मयंक कोट उजीआरा।।
निर्त करै सुर वधू सुहावे। मूर्त्तवंत राग सभ गावे।।
देब करै सभ जै जै बानी। निगम करे उस्तत जु भवानी।।
सिंघासन ब्राजे घनश्यामा। आद पुरुष परमात्म रामा।।
संष चक्र गदा पद्म विराजे। कीट मुकट कोटक छव छाजे।।
कुंडल कान प्रभू के सोहे। कोट मदन छव निर्षत मोहे।।
वाजे वजै अनेक परकारा। पीतांवर छव वनी अपारा।।
चवरे ढाल हुर पीठ सुहावे। चवर करे अति सोभा पावे।।

तेजवान सुंदर सुर गिआन। अति अनूप हर भगत सुजान ॥
नव ते चले सुगंध अपारा। कोट मदन छव मोहन हारा ॥
ऐसे चवर ढाल सुर ज्ञानी। तांकी उपमा सुनो भवानी ॥
निसवासर प्रभ जी को सेवे। ध्यान प्रभू का रिदे समेवे ॥
पार्वती को संभु सुनाई। संतदास मै तोह वताई ॥

सो०—कही तवै इह वात पार्वती शिव नाथ को।
मोह सुनावो नाथ कबन समाज वैकुंठ में ॥

चौ०

सरवर द्रुम वेली अस्थाना। कवन पुन्य ते कीओ पिआना ॥
चवर ढाल की कहीए बात। कवन पुन्य कर आयो नाथ ॥
धन्य वुद्धि है संत तुम्हारी। सगली कहो कथा विस्तारी ॥
अठ सठ सगल सरोवर जानो। कवल सेस के फन पहिचानो ॥
क्षीर सयन मै कबहूं न पेषे। होइ विराग प्रभू को देषे ॥
द्रुम वेली सभ वृज ते आए। धरे अवतारा संग ले आए ॥
मरा मुक्ता कला पहिरावे। हेम सोई जो दिज रिदवावे ॥
राग करै गंधर्व सुज्ञान। संत प्रभू के देव पहिचान ॥
अव रमा अवध सुनावो तोही। यथा वुद्धि मै आवे मोही ॥
प्रथमे कथा चक्र की जानो। तीस कला भानज की जानो ॥
प्रथमी पर जव चढयो आई। सगल श्रष्ट कर तेज लाई ॥
अवनी दग्ध होन तव लागी। निर्षी मही प्रभु अनुरागी ॥
देव दैत सभ करी पुकारा। दग्ध होत प्रभ सभ संसारा ॥
वीस कला काटी भगवाना। द्वादश राषी जगत समाना ॥
एक कला प्रभ अपनी डारी। बीस कला मानुज की भारी ॥
एक वीस का चक्र वनायो। सो प्रभ अपने हाथ रषायो ॥
ऐसा कीआ प्रभू ने काम। तांको सती सुदरसन मान ॥
अव ही कथा कथा कव की आई। सुनो रमा जो वेद वताई ॥
महा प्रलो जो जग मै आवे। सगल श्रृष्ट तिस माह समावे ॥
चौरासी सभ जड मै जाई। कर्मवान की नाल सुहाई ॥
दाता तिस के पुत्र समावे। सभ जरनल मै सिद्ध सुहावे ॥

सेतदलन मै अठसठ जाने। पिराग महा हर आप विराजे ॥
तेती काट तरी मै वासा। तांके सीस सभ परगासा ॥
सगल सृष्ट तिस माह समावे। सुनो सती सो कवल कहावे ॥
सागर मथन गए नंदलाला। पाच जंन्म तहा लीयो गुपाला ॥
गदा प्रभू की ऐसी जान। सगल दैत को नास पछान ॥
पार्वती तव कही वहोरा। संसा नाथ मिटावो मोरा ॥
द्वादस कला रही अधिकाई। सो प्रभ कहो कहा ठहराई ॥
सुनो रमा रवि कला विराजे। सो तुम कहो सगल विध साजे ॥
यारा कला नरक पर डारी। एक कला सम मही उधारी ॥
सुनो रमा अब कथा सुहाई। आगे चवर ढाल की आई ॥

दो०—चवर ढाल की कथा को सुने जोऊ चित लाइ।
हर मूर्त्त तिस रिदे मै सदा रहे विरमाय ॥

चौ०—

सागर मथन गए गिरधारी। मुन जो देषयो पंथ मंझारी ॥
तांसो कही हुती भगवाना। मन मुन राषो हमरा ध्याना ॥
ता दिन ते मुन ए ठहराई। हर मूर्त्त लै रिदे वसाई ॥
मन भीतर तिसको न्हउलोवे। पाछे सुंदर चीर पहरावे ॥
कीट मुकट हर को पहरावे। भूषन सगल प्रेम सो लावे ॥
पान फुल्ल सभ मन मै सेवे। अवर सुगंध रिदे मै देवे ॥
अनेक विंजन कर प्रभ भुक्तावे। फुन हर जी को चवर झुलावे ॥
निस दिन ऐसी ही मुन करे। अवर वात न कोऊ रिद धरे ॥
एक दिवस मुन सभ क्रत कीनी। फुन पाछे कर चवरी लीनी ॥
चवरी करत गए मुन प्राना। चबर ढाल कीनो भवाना ॥
अंत समे जो मन मै आवे। सुन गिरजा तैसो फल पावे ॥
ऐसा जहा सगल विस्तारा। सुनो रंमा वैकुंठ दुयारा ॥
सगल देवते आगे जावे। ले प्रभ जी को चवर झुलावे ॥
सुनो नाथ मन ऊहा समायो। कवहूं जगत माहि नहि आयो ॥
सुन गिरजा मुन कहू न जान। जहां जहां जाए संग भवान ॥
अष्ट अवतार भए भगवाना। सेवे सिहजा मुनी सुजाना ॥

मन भीतर हर को ठहरायो। किर्पानाथ तव नाम कराया ॥
सत्तयुग त्रेता द्वापर गए। अंत समे कृष्ण जी भये ॥
धर अवतार असुर सिंघारयो। सकल मही को भार उतारयो ॥
क्रीडा करी अनक परकारा। सगली कहो होए विस्तारा ॥
पूछी तोह अवर सुर गिआना। संतदास सुन कथा सुजाना ॥
अंतरध्यान भये गिरधारी। व्यास देव तहा कथा उचारी ॥
श्री भगवान कथा सुहाई। जो कोई सुने मुक्त फल पाई ॥
व्यास देव वैकुंठे गए। जो कोई सुने मुक्त फल पाई ॥
तवे प्रभू इउं वोले वानी। आवो व्यास देव सुर गियानी ॥
उस्तत करी व्यास अति भारी। फुन चर्नन की सर्न तिहारी ॥
व्यासदेव तव वोले वानी। रिदा ठहरावो सारंग पानी ॥
सास्त्र करे अनेक परकारा। सांत न आवे मोह मुरारी ॥
श्री भागवत मोह सुनावो। ताते व्यास परम सुष पावो ॥
व्यास देव तब कहने लागे। सुनी प्रभ जी हो अनुरागे ॥
सुंदर कथा अनूप सुहाइी। सुनी सकल प्रभ व्यास सुनाइी ॥
अैसी कथा कही गंभीरा। देव मुनी मन रही न धीरा ॥
प्रेम सहित हो व्याकल गए। व्यास देव जग कहते भए ॥
सकल सभा को प्रेम वढायो। कही कथा व्यासे सुषु पायो ॥
उस्तति करी चर्न लपटाए। आज्ञा लय निज आसन आए ॥

दो०—व्यास देव सुषु पाइ के गए अपने धाम ॥
चवर ढाल कर जोर के प्रभ को कीयो प्रनाम ॥

चौ०—

कर कृपा वोले भगिवाना। कहो रिदे की मुन सुर ज्ञाना ॥
कहा कामना तुम मनि आइी। हमको कहो सकल मुनराइी ॥
तुम तो निज आश्रम वैठाए। इच्छा कहा रही मुन राए ॥
मागो एक प्रभ जी दाना। करो अनुग्रह श्री भगवाना ॥
मांगो सोइ जोइ मन आवे। जिस विधि तुमरा संसा जावे ॥
जो तुम मांगो देवो सोई। संत सप्त है मुन वर मोही ॥
तवै मुनीवर मागन लागा। गदगद् कंठ होइ अनुरागा ॥

पंकज लोचन जल भरि डारे। पुलके रिदा प्रेम वस भारे॥
कृष्ण रूप जवि कीओ गुपाला। छाड़यो मोह वैकुंठ द्याला॥
वहु क्रीडा मोह नाह निहारी। कहा मुक्ति पाय गिरधारी॥
सोई रूपु देह दसीइी। क्रीडा रास सकल जदुराई॥
सुनो संत मै तोह सुनावो। वैकुंठ रासे कैसे मैं पावो॥
वैकुंठ माइ जोइी चलि आवे। समसरूप मेरो हो जावे॥
नटवर वपु ईीहा कैसे धारो। वेदन की मरजादा टारो॥
ताते मय ही लीयो औतारा। ऊहा करो सभ काज तुमारा॥
माया तै प्रभ अति डर पावौ। जिते मोह ईीहा नही धावो॥
भजो मही मोह नंद लाला। कीजे दया सदा कृपाला॥
तुमरो रछया करो सुजाना। निज माआ ते तू वलवाना॥
क्षत्री कुल मै जन्म् तुमारा। उतमु मात पिता ग्रह प्यारा॥
गोविंद नगर तुम्हारो वासु। सकल वेस मैं परिम हुलासा॥
कर्मवान सभ लोक सुजाना। दाता सूर सती पहिचाना॥
पंजावराय ग्रह घर अवतारा। माहादास है नामु तिहारा॥
वैकुंठो उतरि मही नही जावे। भूर लोक ते पलि मैं आवे॥
ताते स्वर्ग वसो मुन राइी। लाष वर्स ऊहा राज काइी॥
अव सूक्षम करो विस्तारा। सौ वर्सा राहो पुरी मझारा॥
सात पुरी मै राज कमावो। सौ सौ वर्स पुरी मय छावो॥
इतना सात पुरी मय जावो। तवि तुम भूर लोक मै पावो॥
स्वर्ग पुरी के लोक बुलावो। ले प्रभ मुनी ववान पठाए॥
सकल पुरी मै राज कमाय। भूर लोक मय पहूचे आइ॥
सकली कह्यो होय विस्तारा। इस विध भय जगत अवतारा॥

दो०—आए जग मै इस विधी लीनो प्रभ अवतारा।
सुनो सिक्ष चित लाय के उौर सकल विस्तारा॥

चौ०

भाद्रो वदी अष्टमी जानो। विती पात तव योग पछानो॥
नक्षत्र पुनरवसु आइतवारा। अर्ध रैन प्रभ भयो अवतारा॥
संवत सोला सै अरु सतरि। वीसी विष्ण सुभजु नक्षत्र॥

ग्रत ग्रनंद सो रै विताई। भई प्रभात पुनीत सुहाई॥
पंजाबराय तव विप्र वुलायो। विद्या धरि तिस नाम सुहायो॥
जन्म सभा सभ कीयो विस्तारा। जन्म पत्र का लिषी ग्रपारा॥
लिषी पत्रका पर्म सुहाई। हर सेवक तहा नाम ठहराई॥
सकल चिहनि तिन ग्राष सुनाई। हो हरि भक्ति वृथा नहि जाई॥
निसवासरि तवि चितवनि लागे। कार्तिक् मास ग्राय ग्रनुरागे॥
नामकर्ण के विप्र जिवाए। महावली तवि नाम राषाए॥
पंच वर्ष इउ वीते जानो। तवि यह जन्म हमारा मानो॥
पंच वर्स जबि उौर विताए। तात मात सुरपुरी सिधाए॥
एक वर्स जव उौर वितायो। हम को त्याग प्रभू उठधायो॥
लहाउर मैं पहूचे जाय। शाहूंकार ने रक्षे लुभाय॥
दंग्रानत राय नाम तिह जानो। दाता सूर सती पहिचानो॥
देष्यो वालक पर्म ग्रनूपा। वुधवान ग्ररु महा सरूपा॥
दोनो कोठी देई वताय। कहेया जाय ऊहा वराज कमाय॥
प्रथमे गये वंजीरावादा। कीयो जाय सभ उन के काजा॥
ताते काज कर्ण सभ लागे। सेवे साध होय ग्रनुरागे॥
उठे प्रभात नदी मै नावै। प्रीत सहित दिज साथ जिवाए॥
एक वर्स प्रभ ऊहा वसाए। वहुरो सात धरे मय ग्राए॥
सोई मर्म ऊहा कर्णे लागे। प्रेम प्रमाय होय ग्रनुरागे॥
सिंध नदी मय करै सनाना। प्रीत सहित सिमरे भगवाना॥
पहिर रैन के नित उठ जावै। सवा पहिरवीते दिन लावै॥
पांच वर्स ऐसी विध करी। प्रेम सहित सिमरे नर हरी॥
एक दिवस सनान सिधाए। नित कर्म सभ जाप कमाए॥
भजन ध्यान करि कींयो प्रनामा। पीठ लगायो पंजा स्यामा॥
ग्रति उकिलाय उठे मनि माही। व्याकुल भए सुर्त कछु नाही॥
भए सुचेत प्रभू को ध्यायो। पिसला जन्म सभी दिष्टायो॥
कृष्ण कृष्ण कय सिमरण लागे। सोए वहुत दिनन के जागे॥
दर्सनु देह कृष्ण कृपाला। करो ग्रनुग्रह श्री नंदलाला॥
तीन वार इउ कहते भए। सिंध चीर भूधर चढ गए॥
नामु जला लीग्रा ग्रति गिरभारा। गिरि दे वहे सिध की धारा॥

तिस गिर के प्रभ ऊपर गए। तीन वार इउ कहते भए ॥
दर्सन देह कहयो गिरधारी। कूद परे तवि सिंध मझारी ॥
सात नदी तहा पर्म सुहाइी। नीर अथाह कह्यो नही जाइी ॥
जल थल पूर रहयो भगवाना। कंठ लगाय लीए घनस्यामा ॥
दर्सन कीजै संत हमारा। जैसा चाहे रिदा तुमारा ॥
इीहा नही प्रभ हमरे काज। दीजे भूर लोक महाराज ॥

दो०—भूधर ते मैं गिरो हां सुनो विने महाराज।
वूडो गहिरे नीर मैं इीहा दर्स किह काम ॥

चौ०

वचन सभालो श्री नंद लाला। भूर लोक मोह कह्यो गुपाला ॥
वचन वृथा नही होय तुमारा। संत सप्त करो सनारा ॥
जहा तुमारे मन की आस। तिसी ठौड मम चलीए दास ॥
तोह समान मोह अवरु न प्यारा। महादास तव नाम तुमारा ॥
भूर लोक जो दर्सन पावो। तवि नीर ते वाहर जावो ॥
आज्ञा दइी प्रभू भगवाना। गए छाड सुर तिस अस्थाना ॥
पंजा लगे उठ्यो अकुलाय। तिसी ठौड मै वैठे जाय ॥
उठ आइए तव नगरी धाय। दीनी कोठी सभी लुटाय ॥
साहूकार तकि सभ सुन आए। कोठी देष पर्म दुष पाए ॥
पर्जा सभा इकत्र भइी। साहूकार पहि चीरी गइी ॥
तिस मंदर मै रह्यो नए। षिलचा कोऊ दात मय देय ॥
स्वामी को भीतर बैठायो। द्वारे कुलफ कपाट चढायो ॥
उैसी विध करी वाहर आए। आगे षडै प्रभू दिष्टाए ॥
वहुड पकड ले अंदर गए। प्रभ वाहर भीतर सम रहे ॥
बाज मार तिन सफा वुलाए। षोले कुलफ तव वाहर आए ॥
आप प्रभू को नायो माथा। मर्म न जान्यो तुमरो नाथा ॥
पांच दिवस जव वीते जाइी। साहूकार तवि पहुच्यो आइी ॥
कोठी देष पर्म दुषु पायो। क्रोध होय तवि वचन सुनायो ॥
उैसे वचन तवि कहने लागा। जागे दुष सुष सुफने भागा ॥
तुम संग कवन बुरा हम कीना। ऐसा दुषु मोह कित तुम दीना ॥

शास्त्र वेद पुराण सुनावे। परि धनि ले जो दान कमावे ।।
कोट मणो का सेरु न होइी। ऐसा काज कोयो किति तोही ।।
अवर सुनो मै तोह सुनावो। अघे पाप इक और वतावो।।
स्वामी का जो वुरा चितावे। धवल कछ अह मही कंवावे ।।
करे ध्रोह स्वामी के संगा। होइ नि निर्मल नावे गंगा ।।
कित तुम हमरा दर्वि गवाऊो। कवन ज्ञान हिरदे मै आयो ।।
सो तुम आष सुनावो मोही। उपजी कवन लहर मन तोही ।।
तुमरा एह न था इतिवारा। ऐसे सोरे काज हमारा ।।
माया की मोह चित गवाई। तुमरी चित वसी सन आई ।।
तू जो बुद्धवान सुर गियान। ऐसा काज कीयो कित जान ।।
येह चिंता अव दूर गवावो। औरा तछ ले कोटी षावो ।।
ऐसी वात कही साहूकार। बुद्धवान अति रिदे उतार ।।

दो०—वोले तव महादास जी सुनो शाह इक वात।
दर्व लीजिए आपना और वैठावो नाथ ।।

चौ०—

वोले तवी प्रभु महादासा। तुमरी अंस न राषोई मासा ।।
एक लाष तोह गिन दीनो। दो लष जाय पेड मैं चीनो ।।
सगल साह मिल अंदर गए। दो लष दर्व देषते भए ।।
मन में उपजयो पर संतोष। ज्ञान्यो निर्मल हर को लोक ।।
उस्तति करी चर्न रज धारे। नाथ रहौ हम संग तुमारे ।।
तुम तो दीदुनी सुष पावो। गृह मैं वैठे प्रभ को ध्यावो ।।
उस्तत करी चर्न लपटाए। तिन को तो प्रभू वन आए ।।

दो०—तुरे इहा सोइ सविधी संति दास सुन लेह।
चले जु वनि को धाइ के हिरदे अधिक सनेह ।।

चौ०—

वन में विचरे अनक परकारा। कृष्ण कृष्ण कर करह पुकारा ।।
तीन दिवस वन भीतर भए। लगी भूष होइ व्याकल गए ।।
तव ही मन में यह ठहराही। भोजन करो प्रभू दिष्टाई ।।

षीरषंड विच मेवा पावे। निज कर कौर मो भुगतावे ॥
भोजन करो एही परकारा। नहि अनाज सप्त कर बारा ॥
ह्रिरदे की जाने करतारा। आए रूप धार वनजारा ॥
वैल तवै हर निकट उतारे। सुंदर षोडी अपर अपारे ॥
गऊ दुहाय दूध ले आए। वहुडो पकड प्रभू वैठाए ॥
षीर षंड विच मेवा पावो। पकड भुजा तव प्रभू वैठायो ॥
अपने हाथ दीए मुष ग्रासा। हठ कित कीनो तुम महादासा ॥
अव तुस जी का त्रास मिटावौ। दरसन करो मोह गति पावो ॥
तव प्रभ सगल समाज वुलायो। गोपी गुयार सगल वन छायो ॥
सोला संस एक सय आठा। सुंदर वसन पीत धर पाटा ॥
पहरे भूषन अपर अपारा। मरण मोती लगे अनक प्रकारा ॥
निर्त करै अति परम सुहावे। देव वधू छव देष लजावे ॥
आए गुपार प्रभू के कैसे। धरे मदन तन होत न ऐसे ॥
क्रीट मुकट विन कृष्ण समाना। सोला सहंस परम सुर ज्ञान ॥
वेली कुज पुहप वन छाए। गौया वछरे वृक्ष सुहाए ॥

दो०—गोपी गुयार वुलाइ के दीनी रास वनाइ।
जोडी हलधर वीर की उमा कही न जाइ ॥

चौ०—

चहु दिस ठाढे सगल ग्वारा। इक इक गोपी मध पधारा ॥
कर कर सगलन गहि लीने। सुंदर सगल प्रेम सर भीने ॥
मध्य विराजे श्री नंदलाला। मौर मुकट घुंघराले वाला ॥
तांकी उपमा कही न जाई। भान पीठ तम रहो दुराई ॥
मस्तक तिलक सुंदर विराजे। भवां कमान कोट छव छाजे ॥
कुंडल कान कपोल सुहावे। नित करे छव मैन लजावे ॥
वदन मध्य वतीस विराजे। तिन की दुत दधसुत्त छव लाजे ॥
सुंदर वदन वजंती माला। पीति वसन सोहे नंद लाला ॥
स्याम सरीर नग भूषन सोहे। उडन रैन अंधारी होवे ॥
रिदा विसाल काछनी छाजे। छुद्र घंटका अति छव वाजे ॥
नाभ कमल पर कच सुहाए। अमृत पीन कवल अली आए ॥

अलसी पुहप रंग छवा छाजे। कैले पात सी पोठ विराजे॥
प्रेम कृपाल नैन रतनारे। गुण सो भरे मीन मृग हारे॥
सुंदर वैन वजावन लागे। तीन भंग सोहे अनुरागे॥
पग मै सुंदर नूपर वाजे। चर्न कवल सभ तीर्थ राजे॥
ये मूर्त जो रिदे वसावे। संतदास सो जन्म न आवे॥
कर्ण लगे तव निरत्त अपारा। वर्षे पुहप देव जैंकारा॥
ऐसी रास रची गिरधारी। अतर अंवीर उडे अति भारी॥
सीतल मंद सुगंध सुहाई। चले समीर प्रेम सुखदाई॥
पशु पक्षी द्रुम करे जैंकारा। देषो भगत सरूप हमारा॥
क्रीडा करी अनक परकारी। गोरस चोरो वाल सषारी॥
जसुधा राधे और वृज वाला। बाबा नंद वडे सभ ग्वाला॥
इक इक गोपी ग्वार दिषावो। वैन वजाइ संत तृप्तायो॥
टेढा फैटा दीयो क्रिपाला। कुंडल एक तिलक दीयो भाला॥
दीयो संत को वृज दिषलाई। संतदास सुन कथा सुहाई॥

दो०—दीए भक्ति को चार फल सौ तुम कहो सुनाइ।
कुंडल फैटा तिल फुन प्रेम भगति हर राइ॥

चौ०—

धर्म पालक का तिलक लगायो। अर्थो का फैंटा पहरायो॥
कामना का कुंडल दीयो काना। मकत फल का प्रेम पछाना॥
वहुरे वोले श्री गिरधारी। सुनो संत जी वात हमारी॥
जाहो सत्त गुर सीस चढायो। वहुरे धाम हमारे आवो॥
तीर्थ वर्त्त दान मम ध्याना। सत्त गुर विना किसी नहि काम॥
कहो संत जहा आज्ञा होई। धारो सीस जा गुर सोई॥
नर हर पुरी जाह निज दासा। सांईदास के वंस प्रगासा॥
उज्जल वंस सगल सुर गियान। बुधवान हर भगत सुजान॥
कर्मवानू सुंदर सुर गियानी। मम निज भक्ति वंस निहकामी॥
सांईदास तिस कुल उजआरा। जांका जान सगल परकारा॥
तांके वस भयो अवतारी। वंसीराम है जोत हमारी॥
तांको जाइ करो प्रणामा। भए संपूर्न तुमरे कामा॥

तांका दरसन परम अनूप। जानो संत हमारा रूप॥
नाती सांईदास का जानो। सगल वंश मोह रूप पछानो॥
अब प्रभ कथा सुनावो मोही। सांईदास प्रभ कैसे होई॥
सुनो संत इस जगत मंझारा। मम विनु उौर नही कोई न्यारा॥
सगल जगत मोही को जानो। जीव जंत द्रुम पसु पहिचानो॥

दो०—सुने संत चित्त लाय के सभ जग हमरा रूप।
अवर नही संसार मै दूजा कोई सरूप॥

चौ०—
सभ जग हमरा रूप पछानो। मो विन उौर नही कोई जानो॥
सर्व जगत मै कीया पछानो। कृष्ण नाम ताही ते जानो॥
सकल मही को करने हारा। तांते गोविंद नाम हमारा॥
अवनी की जो करो प्रतपाला। तिस ते जानो नामु गुपाला॥
सकल जगत के पाप दुरावो। तवि ही हर जी नामु कहावो॥
माया को हम सिरजन हारा। माधव जानो नाम हमारा॥
मधुमौ नामा हम दैत सिधारयो। मधुसूदन तव नाम विचारयो॥
सर्व जगत परि रहो कृपाला। ताते जानो नाम दिआला॥
मीन रूप धरि जल निध गयो। मछ नाम ताही ते भयो॥
सकल मही को वोझ उठावों। तांते कछ रूप जु कहावों॥
सुगम रूपु कीयो वलद्वारे। वावनु जानो नाम हमारे॥
मुर नामा मै राषस मारा। तांते जानो नाम मुरारी॥
पर्सि पकिड छत्री सिंघारे। पर्सराम तव नामु हमारे॥
भग्त हेत मय दो वपु धारे। नरसिंह जानो नाम हमारे॥
गोवर्धन मै हाथ उठायो। गिरधारी तवि नामु कहायो॥
गोकल मै जन्मु जु धारा। गोकल नाथ तव नामु हमारा॥
श्री भागवत मोह उचारा। तवि भगिवान जो नाम हमारा॥
नही आकार हमारा जानो। निराकार तवि नाम पछानो॥
सकल नरन मै व्यापन हारा। नारायण तव नामु हमारा॥
कोऊ नही निज पुर को वासी। तांते नामु मोह अवनाशी॥
कबू न होवे काल हमारा। इस ते नाम अकाल विचार॥

सकल जगत मै जोत पछानो। जोतीस्वरूप नाम तवि जानो ॥
सकल त्रास ते रहो न्यारा। निरभो जानो नामु हमारा ॥
देवकी के ग्रह मौ उपजायो। देवकीनंदन नामु कहायो ॥
धरि औतार असर सिंघारे। असुरनिकंदन नाम हमारे ॥

दो०—काली के सिर निरति करि पायो वहु विसराम।
महादास तव जानीए काली नाथ मोह नाम ॥

चौ०—
मथुरा मै जो कंस सिघारे। कंसनिकंदन नाम हमारे ॥
रघकुल मै जो भयो अवतारा। राघो जानो नामु हमारा ॥
कोई न वंसु हमारो जानो। निर्वासी तवि नाम पछानो ॥
रघुकुल मै जो रावण मारे। तवि रघुवीर जो नाम हमारे ॥
कौशल्या को अधक प्यारा। कौशल्या नंदन ना हमारा ॥
सकल भवन मै रहता जानो। सत्त मोह तव नामु पछानो ॥
सकल जगत के करणे हारा। तांते नाम मोह कर्तारा ॥
भगतो के पाछे उठ धावो। भगत वछल तव नाम कहावो ॥
सकल भवन मै मोह हमारा। तांते प्रभू है नाम हमारा ॥
दीना के संग दआ कभावो। तिस विध दीनानाथ कहाओ ॥
वावा नंद को परम पिआरा। नंदनंदन तवि नामु हमारा ॥
सकल सृष्ट मै जानो उत्तम। इस ते हमरा नाम नरोत्तम ॥
इंदर ते गोकल जुउबारी। तांते नाम मोह गिरधारी ॥
वन भीतर मैं अत सुष पावो। वनवारी तवि नाम कहावो ॥
गीपीआ के संग क्रीडा ठानो। गोपीनाथ तव नाम पछानो ॥
सकल मही को करो प्रतपाला। वसुधानाम तवि नामु हमारा ॥
नौतन सृष्ट नेत उपजावो। जग उपजावन नामु कहावो ॥
सकल सृष्ट सभ पल मै नासो। सकल विनासी कहीए तासो ॥
रमयो सकल रिदे के माही। सभ घट बासी नामु जु ताही ॥
किसीठौड मै दिष्ट न आवो। सभ ते न्यारा नामु कहावो ॥
द्रुम के संग वाध्ये महतारी। दामोदर तव नामु विचारी ॥
कवहू उपज न विनसन आवो। तांते अच्युत नामु कहावो ॥

नव षंड मै जो जोत पसारा। जोतवान तव नाम हमारा॥
कौला ते मय रहो न्यारा। कौलानाथ तव नाम हमारा॥

दो०—कौलासन को जगत मय और न प्यारो मोहि।
महादास कौलापति उौर सुनावो तोहि॥

चौ०—
राधा के संग प्रीत कमावो। तांते राधारवन कहावो॥
सकल प्रण मै वास विचारो। तांते प्रभ जी नाम विचारो॥
सकल असुर को देउ विडारी। तांते मेरो नाम षरारी॥
वैकुंठ है मोह पिआरा। वैकुंठवासी है नामु हमारा॥
काली को मै नाथ ले आयो। काली नाथ तव नाम कहायो॥
जग निद्रा ते रहो न्यारा। गुडा केस तवि नामु हमारा॥
इद्रीआ के वस कवहू न आवो। रिसीकेस तवि नामु कहावो॥
वैठ हमाले योगु कमायो। बद्रीनाथ तवि नामु कहायो॥
वुध दुराव धरो औतारा। वोध रूप तवि नामु हमारा॥
सीता सहित शंकर त्रिपतायो। रामनाथ तवि नाम कहावो॥
दुर के जाय पुरी मै डारी। द्वारकानाथ तवि नाम विचारी॥
जरासिध के युध नसायो। रणछोडराय तव नाम कहायो॥
चौरासी को मय भुक्तावो। तांते कवर कल्याण कहावो॥
सागर रिडक सिषासुरु मारा। शेष नरायण नाम हमारा॥
सर्व स्वर्ग मय वसता जानो। स्वर्गवासी तवि नाम पछानो॥
अलसी पुहप रंग मय धारयो। नामु सावरा मोह उचारयो॥
घन समान मोरा वपु जानो। कानैया मोह नाम विचारो॥
एक चर्न मय पनीआरा डारा। तव ते वांका नाम हमारा॥
विचरो सर्व जगत के माही। नाम विहारी जानो ताही॥
कुंजन मै जो क्रीडा धारी। तांते जानो कुंजविहारी॥
सादर रूप मदन ते जानो। मदनमोहन तव नाम पछानो॥
माया मोह जगत को पायो। तांते मोहन नामु कहायो।
जृया सगल मोह को जानो। इस ते छल मोह नाम पछानो॥
चंगराइी वृज करी अपारा। चवैआ तव नाम हमारा॥

दो०—सकल भवन मै रह तहो किसू न संग छुहाव।
महादास इउ जानीए निर्मल मेरो नाम॥

चौ०

विंद्रावन मै वैन वजायो। वंसीधरि तवि नाम कहावो॥
गोवन के संग वैन वजावो। मुर्लीधर तवि नाम कहावो॥
सकल जगत मोह् करै जुहारा। जगवंदन तवि नामु हमारा॥
सकल भवन को जानो ईसा। तांते जानो नामा जगदीस॥
विचरो जगत विबिध परिकारा। सकल जगत वासी नाम हमारा॥
सकल जगत के करहो कामा। जगत विलासी मेरो नामा॥
मथरा मय जो राज कमायो। मथुरावासी नामु कहायो॥
गोकल धरहौ अनेक अवतारा। गोकलवासी नाम हमारा॥
वृज को त्याग किते नही जावौ। तौ वृजवासी नाम कहावौ॥
जहा नीर तहा हम को जानो। जलनिध वासी नाम षछानो॥
सकल जगत को करो उधारा। जगत उधारण नाम हमारा॥
सकल वनन मै धेन चरावो। वन माली तवि नाम धरावो॥
विंद्रा वन षस माषन षावो। ढढौना तव नाम कहावो॥
सभति सूषम मो को जानो। तांते छौना नाम पछानो॥
प्रथमे सगल जगत मै धारा। सिरिजनहार तव नाम हमारा॥
जसधा ते दुर माषन षायो। माषन चोर तवि नाम कहायो॥
सकल घटा मै वसता जानो। घट प्रगासी तवि नाम पछानो॥
सकल मही के रचने हारा। गोसांई तवि नाम हमारा॥
सकल विश्व मय व्यापत मानो। विह्ग नाम तवि मोरा जानो॥
मही उधारण असर सिघारे। तिस ते नामु बराह हमारे॥
सकल मुक्त के देवन हारा। तांते नामु मुकंद हमारा॥
राधा के संग मोह् कमायो। राधावल्लभ नाम कहावो॥
संता के संग सदा वसावो। तिस ते संत सहाय कहायो॥
सकल संत की टहल कमावो। इस ते सांईदास कहावो॥
महादास त्रय गुण ते न्यारा। तां तिरभंगी नामु हमारा॥

अडल—

इक सौ प्रभु का नाम सुने मनु लाय के।
पावे पर्म पदार्थु हर को ध्याय के॥
दुष दरद अघ संकट नर को ना लगें।
चौरासी के दुष सुनते भगै॥

चौ०—

संतदास सुन तोह् वतावो। आद अंत लौ कथा सुनावो॥
एह सभ नाम कहै गिरधारी। सगल सृष्ट निज रूप दिषारी॥
उस्तत करी चर्न लपटायो। आज्ञा लै नर हर पुर आयो॥
महा दास गुर नगरी आए। कृष्णचंद वैकुंठ सिधाए॥
सत्तगुर पुरी विलोकी आइ। उपमा तांकी कही न जाइ॥
सुंदर भवनु अनूप द्वारे। लिषै चित्रका पर्म सुधारे॥
वोले कोकल मोर सुहाए। द्रुम वेली छव कही न जाए॥
फूली अनक भांत फुलवारी। काम वधू देषे छव हारी॥
सुंदर सर मै कवल सुहावे। गूंजे भवर परम सुष पावे॥
सुंदर सुभग वने दरवाजे। मानो आय विधाता साजे॥
तांके मध्य सगल परवारा। ज्ञानवान हर भक्तिह अपारा॥
ऐसी नगरी परम अनूप। वंसीराम जहा कृष्ण सरूप॥
गिरदे सभा हंस की छाजे। सुरन सहत जिउ शक्त विराजे॥
गावत गुन प्रभ के वहु रंगी। सभा गए महादास त्रिभंगी॥
उस्तत करी चर्न लपटाए। वंसीराम ने कंठ लगाए॥
आदर सहत निकट वैठायो। श्रवनन मै हरनाम सुनायो॥
अति अनंद सो विचरण लागे। हर गुण गावत अत अनुरागे॥

दो०—इस बिध कीने काज सभ संत दास सुन लेह।
आए षोजत हम सवै पिछला जान सनेह॥

चौ०—

अव तुम सुनो हमारी वात। ढूंढत फिरत हुते दिन रात॥
षोजत गए वजीरावाद। निरषे प्रभू भये सभ काज॥
चर्नन पर हम सीस निवायो। जन्म जन्म का त्रास मिटायो॥

भए सिष्य तव सेवन लागे। प्रेम भगति मैं प्रभु अनुरागे॥
वानी करी अनक परकारा। सगली कहो होइ विस्तारा॥
आठ वर्स हर भगत कमाए। वहरो प्रभ बैकुंठ सिधाए॥
चौरी करन प्रभू को लागे। संसा मेट होइ अनुरागे॥
संतदास तुम अति वडभागी। जिन गुर कथा सुनी अनुरागी॥
सुनी कथा जो फल होई। तुम को आष सुनावो सोई॥
तुमरे गृह होवे अवतारा। करह सगल वंस उजीआरा॥
दाता सती भगत सुर गियानी। प्रेम भगति ज़िस रिदे समानी॥
गुरवषसदास तिस नाम पछानो। जांकी कथा सोई वहु जानो॥
प्रेम भगति रहे कुल छाई। रिध सिधि तहा टहल कमाई॥
तुमरा वंस सगल सुष पावे। सत्त होइ इह वृथा न जावे॥
जिह इछा को सुने सुनावे। तातकाल सोई फल षावे॥
गुरजन सोई जिसे गुर जान। संतदास सुन कथा सुजान॥

दो०—कही कथा संतदास को स्यामदास प्रगटाई।
पढे सुने तिस जगत सुष अत मुक्त फल पाई॥
एकम फग्गन वदी को वीर वार पहिचान।
ठारा सै अरु ठांहीए भई संपूर्न जान॥

इति श्रीमतगुर देव जन्म साषी समाप्तम्।
लिषत व्रिजानंदु गुसांई ते जयकृष्ण गुसांई वंगुले दे विच्च
लिषी सुभमस्तु सर्व जगतां शुभं भवेत॥

मंगलं लेषकानंच पठकानां च मंगलं।
मंगलं सर्व भूतानां भूम भूपति मंगलं॥
चतुर्वेदं चतुर्यज्ञ चतुर्वर्ण स्तथेवचत्रियो संध्या।
त्रियो लोका वर्णानां ब्राह्मणो गुरु॥

अथ वार अमरदास

ओ स्वस्ती श्री गणेशायनमः

राग सोरठ—वारि—

कोई होइ सूरा मुक्त षेतु जीते।
जनिम अरि मनि को बांध रषना करे ब्रह्म की जोत मिल जाइ वाते। रहाऊ
कर्म अरि भर्म की कोट काइया बनी, भयो मवासु मनु भूपु भारी।
पांच पाचीस पकर्मो रहे, धर्म की सफा ले सभ विडारी।
करे आधर्मु कछू धर्म माने नही, सूर मनिसा सकिल और धारी।
चारि युग वस कीए, जनिम जूंनी दीए, सकल ब्रह्मंड विसु गर्भ हारी। १
क्रोधु परिधान तहा कामु कुटवाल करी, लोभ मो दी कटि करसत मेले
मोहु दरिवानि पाकित मोरचे, दुष अरि सुष रहि निकिट चेले।
कीयो सरदारु हंकारि सभ फौजका, वडो षतहांन हठहांन पेले।
लोभ की घटा हथ आरि हौमै धरे, भर्म अंधी सकल फागु षेले।
तोप तिष्ना धरी दुर्मत दारु भरी सुर्त अरि निर्त के पाइ गोले।
बाद विवाद ले भारी दानो धरी, आंच रिंजक षुदी आन फोले।
पाप अरि पुनन की वडेरी फिरे, नर्क अरि सर्ग पहिरे संजोले।
बांध जामीन निआरि होए, वडे रजिमानी नाह जाह तोले।
उठियों वुध सूर रिस मर्म की उपिज के, चढियों रणजीत ले फौज सारी।
ज्ञानि बिबेक सुभ विचारु सुभमर्म ले, देआ अरि सांति निज गति निआरी।
सील संतोषु चितु षिमा धीर्ज, धर्म नेमु जतु सतु सहिज सफा सारी।
प्रेम हारों लज सौल करी जुगत कों, कोटि के निकटि जाई विध सवारी।
देष चहूं ओरि कहूं लाकी ठौर नाह, उठयों विचारि देसूं रघलाई।
सविद षोदिन कीआ, चितु आगे दीआ, धसे गड जाई नौबत वजाई।
भयो मुकाबला, आई दोउ फौज का, उठे रण सूर तहा मारि पाई।
इतिते कामु अरि, अरि सील इतिते, चल्यो द्रष्ट को सैहथीउन चलाई।
सहिज की चालि गुरि ज्ञान की ढाल लै, सुमत का फेरु लय उनि बचाई।

अवगत तलवार सो झारि टुकडे कीयों, काम की लोथ इति षेत आई ।
नाद अनिहदि घुरे बाजत मारु सुरे,क्रोध परि षिमा करि कोप धाई ।
होय सनमुष लरे सर कसाके परे, एक ते एक का सुरु ससाईया ।
कपिट कमनि अरि तीर दुर्बचन का,आन करि लोह उन उसे लाईआ ।
निर्ष उनिमान निवनि जमि दर्स के,दै आ मुष राष उनिमांत पाइआ ।
काढ सुभ बचिन का बान तनु छेदउो, क्रोध को भार धर्न लटाइआ ।
षेत को जीत के आन मुजराकीआ, सभा मै उसे जस तिलुकु आइआ ।
मोह बाबे की की बिध अबि बनी आइ रण सूरआ जोरु पाइआ ।
निफलु है उोहु एह सरुसु है जोधा बली, डरियो उहु देषकेउ सेसाआइ
चलयों दे पीठ इह दौर के पहुचिउो तोर गह दंत तृण सर्न आइआ ।
मोह को बाध के आन चेरा कीआ, देआ करि आदनी टहल लाइआ
चडियो हंकारु उति फौज के अति बली काज की लाज बीडा उठाइउों
त्रिगुन हथआर बेकारि कटि बांध के, पहर बषतरि षुदी लर्न धाइउों
बीर बैताल ले पात्र हथि जोगनी, नाथ भैरौ प्रबुलु रत्तु त्रिहाइउो
ब्रंह्म के लोक ते सुनित नार्द मुनी किंगुरी पकर ततकाल आइउों ।
रुंडि की माल कोई सुबाहन चढ़े सुष मनाहिर्ष हो नादि वाइउो ।
षविर इनि को भई कहत मसलतनई चढियो धीर्जु तेज धर्न धस के ।
सत सर्न की ढाल तलबारि लै मर्म की मत्त को संग लै आन ठहके ।
परी जबि मार तबि लरह हंकारि सिउ, जिउ सूरि रण माह भभके
होय पुरिजे गए हार दोनो परै, प्रीत जम धरि दई एन वह के ।
फोरबषत रधसी जाइ हीए वसी, गिरउों हंकारु सभ लोकु त्रह के ।
गिरे वहु सूर रण भूप बलवंत के, रह गियो लोभु तिन चढति कीनी
वादबेवादि हो हर्ष अरि सोक की सकल की फौज ले साथ कीनी ।
चल्यो संतोषु अरि धर्म वुध कटि कलै, दाद प्रोते वहुत साथ लीने ।
जाय लशकरि पए काट शसत्र लए, सारभाजी सकल लोक दीनी ।
तीर तोपै लरै सूर धर्नी झरै, भयो अंधेर रव जोत छाई ।
लोथ परलोथ तरिफे पई, मीन जिउआइ रणषेत कल रुधर भीनी ।
वडे दल मारि सिरदार ही रह गए, लोभ की रसत संतोष भारी ।
अनाज पानी सकल स्वाद सभ हिर लीए, परी अब उनो को आन भारी
गए बल टूट तब हार सभ ही पए, बाध मुशका लैई सभा सारी ।

पकडि आगे धरे जाह कंपत डरे, मिले बुध भूप को करि जुहारी।
आइ करि प्रेम कर जुगत ले नेम को, ध्यान धरि ब्रंह्म की अगन जारी
पाप अरि पुंन दुष सुष त्रिष्णाषुदी, दुर्मत्त पाकिर्त करि दगध मारी।
पकरि मनुआ लीआ बांध वुध वस कीआ, आइ पगि लाग भजों दीनहारी
ढाहनौ कोट जहा उोटसी भूप की, षोल्ह षटि भेद रव गगनि फारी
कीयो मयदान गड जोत का चांदना, आद अरि अंत मित द्रिष्ट आई
जनिम अरि मर्न को चूक झगडा पडो नर्क अरि स्वर्ग की छुटी धाई
हर्ष अरि शोक ते होय न्यारे रहे, सुर्त अरि निरत लै सभ ववहाई।
जनिम लै अमरदास गुरि चर्न लय, भगित अरि मुकति वग सीस पाई

इति श्री अमरदास वार संपूर्ण शुभं भूयातु॥

अथ वार कांशीदास

अथ वारि बावे काशीदास लिष्यते ।

सत्यसरूप अवितारि धरि, उपज्यो कल मै आइ ।
सांईदास रचना रची, कौतक दीयो दिषाई ।
नरिहरि के ग्रह जन्मयों, सुंदरि सती सपूत ।
टिके बैठा कांशीदासु, जिन रंगु दिषाइआ ।
औरि औतारि पाछे पडे, जगि तू हे आइआ ।
जो चरिनी लागे आइ के, सौ मुक्ति पठावा ।
वरिनति कलि होणी कहो, जो वेदा भाष सुणाइआ ।
दिलीओ चलिआ जहागीरु, कशिमीरे धाइआ ।
मजिली मजिली चलिता, लाहौरे आइआ ।
हरिनि मुनारे आइ के, वहु डेरा पाइआ ।
लशिकरि सभ तियारि करि, अशिकारा सिधाइआ ।
पातिशाहु मुषो वोलआ, असबिधानि वुलाइआ ।
जिस दे अगे मिरगु जाइ, सो मारि लिआवो ।
घोडा पिछे मिर्ग दे, पातिशाहु चलावी,
अगो मिर्गु नि आइआ, मुडि वागि सम्हाली ।
वागु जि डिठा पातिशाह, अति वहु हिर्षाइआ ।
माली वेग वुलाइआ, तिस आष सुणाइआ ।
जी एह हिंदुआ की राषी रहे, तिस वागु लवाइआ ।
वेगि वुलाइओ तिस नू, पातिशाह कहाइआ ।

पौडी—

एह षबिरि होई महंतनूं, तिसि देषण आइआ ।
हरिष होइआ वहु पातिशाहु, हसि पास बाहाइआ ।
तनि मनि दी चिंता मिटी, पूरण दरिसाइआ ।

कलिगी माला मोतिश्रा, तिस भेटि चाढाइश्रा ।
बहुत रिहंसा पाति शाहु, घरि उठ सिधाइ श्रा ।
एह हकीकित पातशाह दी, वेगम सुरण पाई ।
पातिशाह ओहु जु कोणु फकीरु हे, जिस दी ते करी वडश्राई ।
एह संगति हे गुरु अर्जने, जिन्हा धुम्य रचाई ।
एह ढिल नि कीजे पातशाह, तिस बंन्हि मंगाई ।
गुसे होइश्रा पातिशाह, षोजि मीरि सदाइश्रा ।
वन्ह लिश्रावो फकीरि नूं डेहरा ढहाई ।
जिथे वणिश्रा डेहरा तिथे मसीति वरणाई ।
होरणी किसे नि मेटीए, कलि वुध्य गवाई ।
चडिया षोजु मीरु, वदोकी श्राइश्रा ।
कहीश्रा वेले बेलदार, डेहरा जु चाइ ढाए ।
जिथे कहीश्रा तिथे रतु पाक चलाई ।
बेलदारि धरिनी परे, जिन्हा श्राप गवावे ।
षोजि मीरि कांशीदास को, कह पठो इठि जाई ।
हमे जु मिलउौं श्राइ के, तुरिकनि मिलउों जाइ ।
संगत सेवक हाथ जोड के, बेनती कही सुनाइ ।
स्वामी तुर्क नि मलउो जाइके, कहा बने कछु श्राइ ।
रे मिले बिना ना रह सकों छपो तां श्रावे लाज ।
ताते मिलए जाइ के, सुफले होवे काज ।
पातिशाह को मिलने चले । काशीदास सिधाए ।
एह षविर होई मुरार नू, तिस श्राइ वंगारे ।
श्राज्ञा करो महंति जी, मै कहा पुकारे ।
लशकरि सभ सफाउ करि, भंन्ना जु नगारे ।
श्राज्ञा करो महंत जी, धरिती श्रपुठी पाई ।
बरिषा गोलश्रादी करो, विजिली चंमिकाई ।
महिली श्रगि लगाइ के, डेरे जु ढहाई ।
मै इना उतेरा राषदा, मुष श्राष सुरणाई ।
धीरा होउ मुरारि जी, गुसा नहीं करिए ।
इतिना जोरु नि लाईए, मनि श्रंदिर जरीए ।

साडे सिरि ते करिता पुरषु है, भैइ काहे डरीए।
पति रषे गुरु सांईदास, मनि धीरि जु फडए।
असिवषा उठि दोडआ, गलि कंन्ह सुणाई।
एह फकीरु ना छेडए, सिंधु सुता भाई।
कहिआ किसे ना मानदा, बरिजे सु लुकाई।

पौडी—

बंदी षाने षड रषो, जहागीरि फरिमाइआ।
तुसी संगत हो गुरुअर्जने, जिन्हा वरुध्यु उठाइआ।
पातशाहु कहे तुसा नाउ फकीरु किउ सदाइआ।
तुसी चढि इशकारे षेडदे, असा नामु जपाइआ।
बिन करामात नि छुडसा, करामात दिषावो।
नही त गरदनि मारिसा, नही ति धर्मु गवावो।
तुसा नामु फकीरु किउ सदाइआ, मुषि आष सुनाइआ।
बिना करामात न छुडसा, सौ जतुनु करावो।
पातशाह ले माला जोरिदे सुटी मैदाने।
करामाति असाडी एस विचि, आप लेहु पछाने।
हाथी घोडे पहलवान, लूटे सभ दाने।
विने नि जाइ उठाईआ, सकिले हैराने।
चतिर साल कहे पातशाह, एह साधु मुलू नि छेडउो जाइ।
बारि बारि बेनती कारो, समिझ देषु मनि माह।

पौडी—

राजा आषे चतिरसाल, अवेही नि करीए।
अवेहा साधु न छेडओ, मैं करिता डरिए।
एन्हा दा रंगु भलेरा दिसदा, अरिजा सभ धरिए।
भैं साहवि दे डरिए पातशाह, किउ अनि आई मरीए।

पौडी

कला उठाई पातशाह, राती सपणु नि आवे।
सिहजा फडि फडि सटीए, महिली अगि समावे।

वाही वधी नूरिजा, सिंघ रूप दिषावे।
जलि तडिफे विच सगिले, फिर जलु कहूं नि पावे।
कंब्या वहुता पातिशाहु, पेरि उते ते सिरु तल होइउों।

पौडी—

नंगी पैरी पातशाहु आइआ।
नालेवेगम नूरिजां दुहा सीसु निवाइआ।
असा विच होई अवग्या, गलि पलू पाइआ।
देसु मुलुषु कुछु मंग लै, वहु जतुनु कराइआ।

पौड़ी—

जिन्हा विरुधु उठाइआ, संतनि का बुरा न षोजु।
सांईदास चरिनी लगो, मुझ सिर पगु धरिए।
पूछो गुरि को सोध, असा न कछु लोडीए।
पातिशाह् किउ तुध वुलाए।
ऐह् देसु असा नू वहुतु है, मंगा मनि भावे।
तुसा माइआ गर्वु है, असा नामु जपाए।
पातिशाह् फकीरु नि छेडए, मतु मार गवाए।

पौड़ी—

आपे माला उठाइ के, ले फेरनि लागे।
पातशाह् फकुरु न कोई छेडए, आषा तुह् आगे।
बंदी षानिउों कढ के, पैन्हाए षगे।
विच गिरो दे साध, सगि ले मागे।
पातशाह् अवैही रत्तनि रषीए, कलि सुती जगे।

पौड़ी—

पातशाह् गर्बु कीआ सो हारआ क्या राजे रानी।
माइआ देष नि भुलु तूं, साध आष बिषाणी।
अजिक कलक चौहु दीनी, तजि संग लराणी।
जहागीरु हथि जोड के, चरिनी लपिटानी।

पौड़ी—

सुइना मोती थालु भरि, लै भेंटि चढ़ाई ।
असा ना कछु लोडीए, पातशाहु सकिले देहु लुटाई ।
माइया देष न भुलु तूं, साधु आष सुणाये ।
कांशीदास ग्रह उठ चले, सांईदास सहाए ।

"इति बावे कांशीदास दीवारि"

अथ धन्ना चरित्र लिष्यते

पौड़ी—

कलिरि धंना गाई चारे, ब्रह्मुणु निषिस्यो आई।
उसि नाइ धोइ पूजा विसथारी, बैठा ध्यानु लगाइ।
नाइ धोइ वहालआ सुठाकुरु, पास धंन्ना वैठा आइ।
धंन्ना आषे सुण वोइ दादा, मैनू चरिनी लाइ।
ब्रह्मुणु आषे सुण वोइ धंनआ, तूं अवि की घडी निवाइ।
चंगुहु ठाकुरु तैनूं देवा, वडा कोई मुटिआरु।
सभना दा पिउ मैरे घरि है, चलु असाडि नाल।
ब्रह्मण दे घरि धंना अइआ, दादा ठाकुरि देह।
उसि भाल ढूंडि पंसेरी दिती, लै धंनआ ठाकुरु एह।
पहिला भेटि चढा जाइ मैनू, सुफली तेरी सेउ।
धंने गौऊ लवेरी दिती, ठाकुरु लैदो आइआ।
टोभे तेजाइ लेउ अरंभी, भूरा हेठ बिछाइआ।
नाइ धोइ बहालआ सुठाकुरु, ता घरि सोभता आइआ।
जा तू षावे ता मै षावा, धंने दिढि चितु आइआ।
अंतिर जामी जानिन हारे, गोबिंद भोगु लगाइआ।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धंनआ, मै करा तुम्हारी सेव।
फेरा हल्ट किआरे छडा, कंम्मु करा मै एह।
गाईआ चारा कंम्य सवारा, जाणा सभे भेउ।
तुह मैनूं तनु मनु धनु अर्पआ, तू निर्भे पैइ सोउ।
कंमु हवाले हरि दे कीता, धंना घरि नू आइआ।
अगो तिरिआ पुछनि लगी, कित भरिवासे आइआ।
अषे किसे नाल वोल आहो, अँ षेत वगु षडाइआ।
दादै असा नाल चंगा कीआ, कामा भला रलाइआ।

ब्रह्मण दे घरि धंना आइआ, दादा ठाकुरु मेरा गौआ चारे ।
कंम करे सभ घरि दे दादा, असा नही कैई सारे ।
घरि ते वाहुरु हरि नू सौप्या, लाह सुटे सभ भारे ।
दादा ठाकुरि तेरे ओडिओ केउे, मेरे होए मुटिआरे ।
ब्रहिमुणु आषे सुण बोइ धंनआ, तै जाणआ हरि का भेउ ।
निहचलु डोरी तै हरि सो रषी, तैनूं मिलआ निरंजन देव ।
मैनू दरिसु दिषाई धंनआ, मै तेरा गुरदेव ।
धंना आषे सुण वोइ दादा, मै तैनू दरुसु दिवांई ।
ब्रहमणु नू लैवा हरि आइआ, अगे शामु चरेदा गाई ।
अंहु वेषु षलाही दादा, मै सभे कर्म कराई ।
धंने नू हरि नजिरी आवे ब्राह्मणनूं दिसे नारी मै सभे कर्म कराई ।
ब्रहमणु आषे सुण वाइ धंन्नआ, तू मैनू दरिसु दिवाइ ।
गुरु उधारे सिष्य वाहे, किया सिष्यु उधारे चाइ ।
मैं भी हा वडिभागी धंन्नआ, मैंनूं एह जुडिआ आइ ।
मेरा हुंदा सुण वोइ धंन्नआ, तू हरि दी पैरी पाइ ।
धंना आषे सुणो नारइण, मेरे गुरि को दरुसुनु दीजे ।
जिस दे पिछे मिलआ मैनू, कथा मेरी सुण जीजै ।
जे एस भूठी सेउ अरंभी तुसी किरिपा करी भीजो ।
धंना आषे सुणौ नराइण, तू रीझु असाडी रीझे ।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धंनआ, मै इसे नि दर्सना दीजैं ।
एह भूठा परिपंची ब्राह्मणु, इनि कर्म बले रे कीरे ।
सारा जनुमु गवाइओं अैवे, एहदा अजे मनुआ भीजे ।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धंनआ, मै इसे न दरसुनु दीजैं ।
धंना आषे सुणो नाराइण, परिबलु तेरी माइआ ।
जिन्हां नूं तूं आप अराधे, तिन्हा कौणु भुलाए राइआ ।
पूरिण ब्रह्म सनातनि साषी, वडा तेरा है साइआ ।
भगिता दा हितकारी ठाकुरि, वेदि पुराणी गाइआ ।
मेरे गुरि नू दरिसुनु देई, सरिण तुम्हारी आइआ ।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धंनआ, मैयहां, क्रष्ण मुरारे ।
जो प्रानी मेरी सरिनी आवे, सो प्रानी मै तारें ।

भगित करे सोई मै भावे, क्या पुरिष क्या न्यारे।
ब्रह्मण दी हमाइति डाटी, एह बिलंघु गुपारे।
धंने दा हरि साथी होइआ, जो आषे सो मंन्ये।
घुङिणीआदीआ टिंडा चबाए, अणि चुपाए गंन्ने।
मिसी रोटी सागु षवाले, छाह पिआले छन्ने।
मेरे गुरि नूं दरिसुनु देई, मै कूक सुणावा कंन्ने।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धंनआ, मै तेरे वसि परिआ।
जिउ जिउ नचाए तिवे तिउ नचा, तूं नाल मेरे है षरिआ।
ठाकुरि चतिरभुजि रूपु कीता अबिनाशी,
ता ब्रहमण हरि दा दरिसुनु करिआ।
ब्रह्मणि नूं हरि दर्सुनु दिता, परिम मनोर्थु पाइआ। धंने गुरु तराइआ
गोर्षनाथ मछिंद्र उधारे, कढ संगल दीयो ल्याइआ।
माधो बंसी सांईदास किया, मुक्त पदार्थु पाइआ।
सावलदास गुरां दी कृपा, चलित्रु धंने दा गाइआ।

परिशिष्ट–१

गुरु परंपरा तथा गुसांई वंशपरंपरा

अथ गुर परनाली लिष्यते

प्रथमे ब्रंह्म, ब्रह्म के शिष्य मूल, मूल के शिष प्रकित्तं, प्रकिर्त्त के शिष बिजाबंग, बिजाबंग के शिष उोंकार, उोंकार के शिष महित्तत्त, महित्तत्त के शिष आदिमूल नारायण, आदिमूल नारायण के शिष महालक्ष्मी, महालक्ष्मी के शिष अक्षवासरूप, अक्षवासरूप के शिष उजासमुनि, उजासिमुनि के शिष्य जोत मुनि, जोतमुन के शिष प्रिथ्य-मुनि, प्रिथ्यमुनि के शिष प्रगटि मुनि, प्रगट मुनि के शिष गंभीर मुनि गंभीर मुन के शिष द्रिगमुनि, द्रिगमुन के शिष अचल मुन, अचल मुन के शिष श्रुत प्रगास, श्रुत प्रगास के शिष नार्दमुन, नार्दमुन के शिष फटिक मुन, फटिक मुन के शिष सत्त मुन, सत्तमुन के शिष वैरागमुन, वैरागमुन के शिष त्याग मुन. त्याग मुन के शिष रहित मुन, रहितमुन के शिष धीर्जमुन, धीर्जमुन के शिष संतोषमुन, संतोष मुन के शिष दया मुन, दयामुन के शिष तुलसीमुन, तुलसीमुन के शिष बृषमुन, वृषमुन के शिष चंद्रमुन, चंद्रमुन के शिष फीहोमुन, फीहोमुन के शिष महामुन, महामुन के शिष जाइमुन, जाइमुन के शिष पुंडरीकक्ष्या, पुंडीरकाक्ष्या के शिष पुष्पदेव, पुष्पदेव के शिष रामामिश्र, रामामिश्र के शिष महा-पुराण, महापुराण के शिष विद्याधर चौवे, विद्याधर चौवे के शिष उतासमुन, उतासमुन के शिष जग्यासमुन, जग्यासमुन के शिष प्राण-कुश, प्राणकुश के शिष रामानुज, रामानुज के शिष इतिरामानुजसंबृत ।

रामानुज के शिष श्रुतपीपा, श्रुतपीपा के शिष श्रुतधाम, सुर्तधाम के शिष सुर्त वैदेही, सुर्त वैदेही के शिष मंगलमुन, मंगलमुन के शिष **इति त्रेता सज्ञा ।**

मंगलमुन के शिष प्रतालमुन, प्रतालमुन के शिष रिष्ट मुन, रिष्ट

मुन के शिष गोपमुन, गोपमुन के शिष कुलतारक, कुलतारक के शिष पद्मलोचन, पद्मलोचन के शिष पद्माचार्या पद्माचार्य के शिष देवाचार्य, देवांचार्य के शिष सुषाचार्य, सुषाचार्य के शिष बंसीधरचार्य, बंसीधरचार्य के शिष कृपाचार्य, कृपाचार्य के शिष बिष्णाचार्य, बिष्णाचार्य के शिष प्रषोत्तमाचार्य, प्रषोत्तमाचार्य के शिष नरोत्तमाचार्य, नरोत्तमाचार्य के शिष गंगाधरचार्य, गंगाधरचार्य के शिष सदाचार्य, सदाचार्य के शिष रामाचार्य, रामाचार्य के शिष धीरानंदि, धीरानंदि के शिष देवानंदि, देवानंदि के शिष शामानंदि, शामानंदि के शिष सुर्तानंदि, सुर्तानंदि के शिष अस्तवानंदि, अस्तवानंदि के शिष अच्युतानंदि, अच्युतानंदि के शिष पूर्णानंदि, पूर्णानंदि के शिष सिरीआनंदि, सिरीआनंदि के शिष हरीआनंदि, हरीआनंदि के शिष राघवानंदि, राघवानंदि के रामानंदि, रामानंदि के शिष अनतानंदि, अनतानंदि के शिष पर्मानंदि, पर्मानंदि के शिष मुकंददास, मुकंददास के शिष सांईदास।

ओं स्वस्ति श्री गणेशायनमः। सति सरूपि बाबा सांईदास जी ।।

बाबेसांईदे पुत्र ५—नरहरदासु[1], अंबिदासु, विष्णुदासु, सुषानंदु, रामानंदु।

नरहरिदास दे ४—कासीदासु, माधोदासु[1], भार्थीचंदु, लालचंदु ।

काशीदास दे ३—विहारीदासु, मुरारी दासु, जुगजीविणी दासु ।

विहारीदासि दे ३—केविलिराम, सविलदासु, भगौतीरामु ।

साविलदासि दी दुयधीआ २—कालीये, धंम्ही ।

केविलिराम दे ६—कर्म्मचंदु, हरीरामु, महाराजु, साहवराय हकूमराय नवलराय ।

हरीराम दे ४—सोभारामु, शिवरामु, साधूरामु, लछोरामु ।

सोभाराम दा १—किर्पारामु ।

किर्पाराम दे ३—अभेरामु, सरिधा रामु ।

अभेरामि दे ६—रामिकर्नु, हरिकर्नु, वकुंठिदासु, मथरादासु, बिलासिदासु, द्वारिकादासु ।

सरिधारामि दे ४—जसिकर्नु, जयकर्नु नाशघदासु त्रिलोकिदासु ।

शिविराम दे ५—आतिमारामु आज्ञारामु रगीरामु, दैआरामु भोलारामु।

अज्ञाराम दे ३—धजारामु, बालिरामु, मोतीरामु ।

---

१. शब्द "अमरदास" है।

रंगीराम दा २—धनरामु ।

दयारामु दे २—हरिनामु, रामिकिष्णु ।

महाराज दे ५—हरिनरायण, नंदीरामु, दयालिदासु मनिसारामु, भोलारामु ।

हरनरायण दे २—धनिपतु, जसिपति ।

धनिपति दे ३—चर्णिदासु, प्रेमिदासु, शामिदास ।

जसिपति दे २—ऊशिनाकु०, षुसिवषितिराय ।

षुसिवसितिराय दा १—धर्मिदासु ।

नंदीरामि दे ३—गुर्जिनिदासु, रामिदासु, गरीविदासु ।

गरीबिदासु दा १—प्रसिधरामु ।

रामिदासि दे ३—रत्निदासु, गोपालिदासु, मंगिलिदासु ।

रत्निदासि दा १—सुषिबासीरामु ।

द्यालिदास दे २—गोला, रामिनाथु ।

रामिनाथु दा १—जयनंदु ।

मनसारामु दा १—रामजसु ।

रामजसु दे २—आसानंदु, सदानंदु ।

भोल्हारामु दे ४—राधेकिष्णु बालक्रिष्णु रामिक्रिष्णु ।

राधेक्रिष्ण दा १—भगितरामु ।

साहिबराय दे ४—रामि कौरु, मंगिरामु, मताबिराअ, चौपितिरा ।

रामिकौरु दे ३—भगिवानिदासु, बागु, पहलिदासु ।

भगिवानिदासि दे २—प्रेमिदासु, अनंतिदासु ।

बागि दे ४—सर्वि सुषु, सुषिलालु, रामिद्यालु, किष्णुद्यालु ।

भगितरामि दे २—मस्तिरामु, सहजरामु ।

मताविराय दे २—दध्नारामु, किष्णरूपु ।

किष्णरूपु दे २—शामिदासु, निधानुदास,

शामदासि दे २—रामिराख, वछाधारो ।

चौपितिरा दे २—लालिदासु, रत्नदासु ।

रत्नदासु दे २—गरीविदासु, भवानीदासु ।

हकूमितिरा दा १—सलामितिरा ।

सलामितिरा दे ४—वचिनिदासु, नरायणदासु, हरिदासु, संतिदासु ।

वचिनिदासि दे २—ब्रिजा नंदु, हरिनंदु।
ब्रिजानंदि दा १—जयनंदु।
जयनंदु दा १—हरिनंदि।
हरिनंदि दा १—जयदासु।
हरिदासि दे २—सेविकिरामु, वालिकिरामु।
सेविकिरामि दा १—सदारामु ।।१।।
मुरारीदासि दे ५—नरंगिरा, दिग्रानितिरा, अनूपिरा, अटिलराय, वीठिलिरा।
दिग्रानितिरा दे ३—हरिजसिरा, किष्णिकोंर, अब्रितिरा।
हरिजसिरा दे ५—वकेरा, रामिकृष्णु, नरायणदासु, ठाकुरिदासु, रामिदासु।
वकेरा दे २—जयकिष्णु, हरिकिष्णु।
हरिकिष्णु दा १—सदानंदु।
रामकिष्ण दा १—धजारामु।
नरायणदास दे २—रत्नदासु, महादासु।
किष्णकौरि दे ३—बाघिमलु, दयारामु, आज्ञारामु।
वाधिमल्हि दा १—शामिदासु।
शामिदासु दे २—रामि भजु, चंदु।
दयादाम दा १—सर्विद्यालु।
सर्विद्यालु दे १—रामधनु।
अंब्रिरा दे २—लछोमी नरामण, सदानरायण।
लछीमी नरायण दे २—प्रभदिग्रालु, किष्णदिग्रालु।
अनूपिरा दा १—भागिमल्ल।
भागिमल्ह दे २—रामिरा, मनिसारामु।
रामिरा दा १—रामिजसु।
मनिसारामि दा १—लालदासु ।।२।।
जुगिजीविणिदासि दे ३—मिहिर चंदु, दलिपति राय, हरीचंदु।
मिहरचंदु दा १—जोधारामु।
जोधारामु दे २—ब्रिजिनाछु, किष्णसहा।
किष्णसहा दे २—जय भगिवानु, शिविदिग्राल।

शिविद्यालु दे २—जसुवंतु, जयनंदु।
जयभगिबानु दे २—सदानंदु, ब्रिजानंदु।
दलिपति रा दा १—हरसहा।
हरसहा दे ५—हकीकिति रामु, गुर्विदिरा, देसिमुषी, गुरिवषुसु, भगिवंतु।
हकीकितिरा दे ४—गुरि सहा, रामिदासु, जयसिंघु, सदोषा।
लालिदासि दे ३—देवीसहा, सुषिदिग्रालु, कासू।
कुलिजस दा १—पिंडी।
पिंडी दे २—ज्वालादासु, मैग्रादासु।
रामदासि दे ३—दर्स्निदासु, भगिवानिदासु, नरायणदासु।
दर्स्निदासि दा १—मूलिराजु।
मूलिराजु दे २—गुरुदासु मथिरादासु।
भगिवानिदासि दा १—सर्निदासु।
नरायणदासि दे २—महादासु, देवीदासु।
जयसिध दा १—वागु।
वागु दे २—निवाहू, गुपालिदासु।
गुविदिराय दे ५—दयारामु, रामिचंदु, लछिमिनिदासु, गरीबिदासु, रतनदासु।
दग्राराम दे २—वचुनिदासु, टहिलिदासु।
टहिलिदासु दे २—देवीदासु, बच्चिनदासि।
बच्चिनदासि दा १—रामिजसु।
लछिमिनिदासि दा १—रामरखा।
गरीबिदासि दा १—रामिनाथु।
देसिमुषी दे २—सहजरामु, नरायणादासु।
नरायणदासु दे २—रामिसिंघु, किष्णिदग्रालु।
सहजरामि दे २—ग्रबीरचंदु, राधेकिष्णु।
गुरिवषिराय दे ३—रामिकिष्णु, जयकिष्णु, रामिनाथु।
हरीचंदि दा १—हकूमितिरा।
हकूमितिरा दे २—वस्तीरामु, लधारामु।
वस्तीराम दा १—ग्रातिमारामु ॥३॥

माधोदास दे धीइ १—पुत्रि ।
भार्थीचंदि दा १—बुलाकीदासु ।
बुलाकीदासु दे २—मौबितिरा, गुलाबिरा ।
गुलाबिरा दे १—लजारामु ।
लजारामु दे २—नौनिधिरा, भवानीदासु ।
भवानीदासु दे २—देवीदासु, रामिरखा ।
नौनिधिरा दे २—गिरिधारी, ब्रिजानंदु ।
लालिचंदि दे ३—जग्ता, माना, बालिकिदासु ।
जगिते दे १—जयगुपालु ।
जयगुपालु दा १—ब्रिंद्राबनु ।
ब्रिंद्राबनु दे ३—गरीबिदासु, फकीरिदासु, रतिनदासु ।
रतिनदासु दा १—अटिलिरामु ।
फकीरिदास दा २—बालिकिष्णु, गुरीआ ।
माने दा १—जवेहरी दासु ।
जवेहरिदासु दा १—केसोदासु ।
केसोदासु दी धीइ १—षिधडीऐ ।।४।।
अर्विदासु दे २—नारिसिंघु. गोपीनाथु ।
नारिसिंघु दे २—बसंतिरा, कौलापत ।
कौलापत दा १—फिरेचंदु ।
फिरेचंदु दा १—ऊदेरामु ।
उदेरामु दे ३—धनैआ, रूपिनरायरण, किष्णिदासु ।
किष्णिदासु दा १ लालिदासु ।
लालिदासु दा १—जसकर्नु ।
रूपिनरायरण दे २—शामु, हरिदासु ।
हरिदासु दे २—गोकिलिनंदु, बिजानंदु ।
गोपीनाथु दा १—निहालिचंदु ।
निहालिचंदु दा १—रामिचंदु ।
रामिचंदु दा १—साहबिरा ।
विष्णिदासि दे ३—उग्रचंदु, कल्यानिदासु, भागिमलु ।
ऊग्रिचंदि दा १—चैनिसुषु ।

चैनिसुषु दे २—नंदिलालु, गुजिरिमंलु।
नंदिलालि दा १—हुंदेरा।
हुंदेरा दे ३—राजिकैरु, दाशिविसहा, धनिपतु रामिजसु।
धनिपति दे २—नानुकु, सुषिनिधानु।
गुजिरि मंलि दे २—रामराय, रामिजी।
रामिजी दे ३—रामिद्याालु, शर्विद्यालु, किष्णद्यालु।
रामिद्यालि दे २–रामिभजु, देवीदासु।
कल्यानिदासि दा १—ऊतिमिदासु।
ऊतिमिदासु दा १—गंगारामु।
गंगारामु दे ५–चेतिनिदासु, प्रीतिमदासु, जग्निनाथु, धीर्जिरामु,
दसिवंधीमलु।
प्रीतिमदास दे २—लाषीरामु, विलाषीरामु।
विलाषीरामु दे—देग्राद्यालु, रामनाथु।
लाषीचंदि दे २—ऊशिनकरा, रामिकिष्णु।
रामिक्रिष्णु दा १—सेविकिरामु।
ऊशनकिराय दे २—हुकिमचंदु, नरायणदासु।
जग्निनाथि दे ३—ग्यानिदासु, बाहडु, मिलिषीराम।
धीर्जिरामि दा १—रामिकौरु।
दसिवंधीमलि दे ३—मजिलिसिरा, बाधिमलु, चंद्रिभानु।
चन्द्रभानु दा १—सरिधारामु।
बाधिमलु दा १—किष्रिणदासु.
मजिलिसि दा १—भागिमलि।
भागिमलि दा १—मित्रिसैनु।
मित्रिसैनु दा १—मगिलि सैन।
मगिलिसैन दा १—दयारामु।
दग्राराम दा १—देवीदासु ॥३॥
सुषानंद के ॥४॥ रामानंदु ऊौतारि ॥५॥

संवत् १८५२ मीति ग्रसूजो दिनि बारिवे १२ वीरिवारि लषे
नासरिवति बाविआदे लिषितंम रामिकनु सुभंमस्तु ११११११११

परिशिष्ट २

ओं श्री गणेशायनमः

सतगुर बाबा सांईदासायनमः। ओं अंतरराम नरन्तर राम।
कांशी क्षेत्र अयुध्या धाम गंगा तुलसी शालगराय।
तत्व निरंजन तारक राम॥
ओं अन्तो गुन पासना सें दर बीजंम रामाय हृन्नू मुष डाली रोही
मादिष्टो भजतां कामदो मणी।

खतरी—

ओं ह्रीं ह्रां शरीगं रामाय नमः नरसिंघाय नमः,
सत गुर बाबा सांईदासायनमः।
ओं आद बैराग सनातन धर्म दंड कर्मनडल वैष्नव कर्म॥
वैशनव कर्म रहे लव लीन तन मन सोधे होवे आधीन॥
नष सिष्ट दाढी वजर मुंज कपीन मुंज के केस सनकादक॥
शीषा गुरू राघवा नन्द जी कहें गुरू रामानन्द जी से उचरन्ता
इतना सनकादिक बीज मंत्र समपूरनम॥

गोदावरी प्रक्रमा, अयुध्या धर्मशाला, चित्रकूट सुख वलास, सीता अष्ट हनुमान परीक्षत, राम देवता राम मंत्र, अचत्य गोत्र, शाषाअन्त रिंगवेद, राम गायत्री निरवान, अषाडा शालग्राम, महन्त गलता गादी, छोछा मंत्र, लिंग शरीरंग, वयापकं चराचरं, सोहं राम नरंजन, चरनं शरनं परपद्ये।

गुरू मंत्र—ओं अंतर राम नरंतर राम कांशी क्षेत्र अयुध्या धाम तत्व नरंजन तारक राम।

सारस्वत व्रहमन कात्यानी सूत्र शाषा **मादयदनी पंच** प्रव्र भृगू-मार्ग-उर्ग-यमदग्नी-प्राशर-यजुरवेद।

परिशिष्ट ३

सात अखाड़े

दगम्बर, निर्बानी, निर्मोही, षाषी, नरालमबी, बलभदरी, सन्तोखी।

सन्त बाबा सांईदास जी के अस्थान—

धर्मशाल रयासत चंबा, विश्नदास जी के कल्यान दास जी। बल बाबा जिला अमृतसर।

माधोदास, बन्सीदास, महादास—ढोडा, जिला सयालकोट।

कांशीदास जी, ब्रिद्राबनदास—शेरपुर, रयासत झालरा पाटन।

कांशीदास, मरारदास—फलौर।

केवलराम, भगवानदास—तरदे, जिला अमृतसर।

श्री गोबन्दपुर—माधोदास, दुरगादास।

लाहौर—राम गलैलादास।

रनधीर, कर्मचंद, मनहरदास—फतेपुर।

मुरारीदास, रूपचंद—कशमीर।

मुरारीदास गोपालदास—रामबाग।

'गोसाईं साहित्य' प्रकाशन की योजना

श्री ओमप्रकाश गोसाईं
मंत्री, सतगुरु सिद्ध बाबा साईंदास सेवक संघ

१९४७ ई०, सितम्बर का महीना—

सारा पश्चिमी पंजाब भीषण साम्प्रदायिक हिंसा, नृशंस हत्य, अपहरण और लूट-पाट की आग से जल रहा था। एक दिन हठात् ज़िला गुजराँवाला का सुविख्यात गाँव 'बद्दोकी गोसाइयाँ' भी इस विनाशकारी आग की लपेट में आ गया। "बद्दोकी गोसाइयाँ"—जिसे आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले परम सन्त महान् योगी और संगीतज्ञ गोसाईं बाबा साईंदास ने बसाया था,—'बद्दोकी गोसाइयाँ'—जो संगीत-साधना का एक प्रसिद्ध केन्द्र और गोसाईं सन्त परम्परा का तीर्थ-स्थान था—जहाँ सन्तों, संगीतज्ञों के अतिरिक्त डा० श्री गोकुलचन्द नारंग और भारत के वर्तमान गृह-मन्त्री श्री गुलज़ारीलाल नन्दा से अनेक समाज-सेवी और देशभक्त मनीषी भी पैदा हुए,—बद्दोकी गोसाइयाँ—जो शताब्दियों से हिन्दू-मुस्लिम एकता, भाईचारे, सुख व शांति का गौरव-स्थल बना चला आ रहा था—देखते ही देखते उजड़ गया। बाबा साईंदास की पवित्र गद्दी टोमड़ी साहिब और उनके वंशजों के घर भी लूट लिये गये। हिन्दू बहुसंख्या का यह गाँव जिसमें ब्राह्मणों के घर सबसे अधिक थे, हिन्दुओं से नितान्त शून्य हो गया। कुछ मारे गये, बाकी के सब हिन्दू और गद्दी के महन्त भी जीवन-रक्षा के लिए सेना की सहायता से शरणार्थी शिविर में पहुँच गये। गाँव में गहमा-गहमी, चहक-चहकार के स्थान पर मौत का सा सन्नाटा छा गया। चोरों ओर तबाही की विभीषिका फैल गई। ध्वस्त घर, टूटे हुए दर और दीवारें मानव हृदय में भय के निश्तर घोंपने को तैयार खड़े नज़र आने लगे, धरती का कणकण खून का प्यासा बन गया। ऐसी भीषण परिस्थिति में एक व्यक्ति बड़ी सतर्कता और साहस के साथ इस तीर्थ क्षेत्र के महन्त के निवास-स्थान की ओर बढ़ रहा था। उसकी नज़रें बार-बार तेज़ी से चारों ओर दौड़ जाती थीं। निश्चय ही वह प्राणों से भी प्यारी किसी वस्तु की तलाश कर रहा था। यह न होता तो वह इस क्षेत्र में पग रखने का साहस न कर पाता, क्योंकि इस क्षेत्र में उस समय पग रखना जान को जोखिम में डालना था। लेकिन वह व्यक्ति प्राणों को हथेली पर रखकर आगे बढ़ता चला गया, एक अत्यन्त निर्भीक वीर पुरुष की भाँति। महन्त जी के भवन के आँगन में पहुँच कर उसने देवनागरी लिपि में हस्त-लिखित बड़े-बड़े पन्ने इधर-उधर बिखरे हुए देखे। उसने तुरन्त उन पन्नों को उठा लिया और श्रद्धापूर्वक सिर आँखों से

लगाया। वह और आगे बढ़ा और उसने देखा कि उन पन्नों के साथ का हस्त-लिखित पूरा ग्रन्थ एक स्थान पर अस्तव्यस्त अवस्था में पड़ा था। उसका हृदय हर्ष से उछल पड़ा। उसने तुरन्त उन पन्नों और ग्रन्थ को कपड़े में बाँधकर सिर पर रख लिया और तेज़ी से अपने गंतव्य स्थान की ओर चल पड़ा। उस समय भी रह-रहकर कई ध्वस्त घरों और दीवारों की ओट से अल्लाहु-अकबर के नारे, दरवाज़ों के तोड़े जाने की आवाज़ें और लूट-पाट का शोर-गुल सुनाई दे रहा था। वह वीर पुरुष उस हस्तलिखित ग्रन्थ को सिर पर उठाये शरणार्थी-शिविर में अपने साथियों के पास पहुँच गया।

वे वीर पुरुष गोसाईं हवेलीराम थे, जो आजकल जिला करनाल के रावर नामक गाँव में आबाद हैं और यह ग्रन्थ, जो इस समय बड़ा सुन्दर रूप लिये आपके हाथ में सुशोभित है, उसी हस्तलिखित ग्रन्थ या पाण्डुलिपि के मुद्रित संस्करण की एक प्रति है। इस ग्रन्थ की रचना लगभग ५०० वर्ष पूर्व गुरु नानक देव जी महाराज के समकालीन सन्त गोसाईं बाबा साईंदास जी महाराज ने की थी और इसका कुछ भाग उनके उत्तराधिकारियों द्वारा बाद में रचित हुआ। परन्तु विधि का विधान अत्यन्त विचित्र है। यह ग्रन्थ देश के विभाजन से पहले जब सब सुविधाएँ उपलब्ध थीं तब तो प्रकाशित न हो सका था, किसी ने इस ओर ध्यान ही न दिया था और अब ऐसे समय में जब कोई सुविधा तथा संभावना नज़र नहीं आ रही थी, यह ग्रन्थ शानदार रूप में प्रकाशित होकर साहित्य जगत को अपनी प्राचीनता, उत्कृष्ट विषय वस्तु और साहित्यिक मूल्यों द्वारा अपनी ओर आकर्षित करने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशित किये जाने की प्रेरणा कैसे उत्पन्न हुई और इसके प्रकाशित किये जाने के सिलसिले में किन-किन कठिनाइयों का सामना हुआ—यह एक लम्बी और दिलचस्प कहानी है। प्रथम यह कि यदि गोसाईं हवेलीराम जी प्राणों की बाज़ी लगाकर इस ग्रन्थ को भीषण साम्प्रदायिक मार-काट के क्षेत्र से निकालकर सुरक्षित स्थान पर न पहुँचा देते, तो इसके प्रकाशित किये जाने की प्रेरणा का या प्रकाशित किये जाने का प्रश्न ही पैदा न होता। पर बात यह हुई कि गोसाईं बाबा साईंदास की गद्दी—तोमड़ी साहिब बद्दोकी गोसाइयाँ तो पाकिस्तान के कब्ज़े में आ गया और इस गद्दी के लाखों अनुयायी, शिष्य और श्रद्धालुओं को पाकिस्तान छोड़कर भारत आना पड़ा। उनसे अपना वह तीर्थ-स्थान और गुरु-दीक्षा-मंदिर छिन गया। मन की आध्यात्मिक शान्ति का परम्परागत साधन कोई न रहा। तब परम सन्त और गुरु बाबा साईंदास जी के इस हस्तलिखित ग्रन्थ की ओर उनके अनुयायियों और परम्परागत शिष्यों का ध्यान गया। इन्होंने अपनी गुरु-गद्दी अथवा दीक्षा-मंदिर के अभाव की पूर्ति का उपाय इसी ग्रन्थ को समझा। इससे इस ग्रन्थ के मुद्रण और प्रकाशन के लिये प्रेरणा पैदा हुई। लेकिन यह कोई
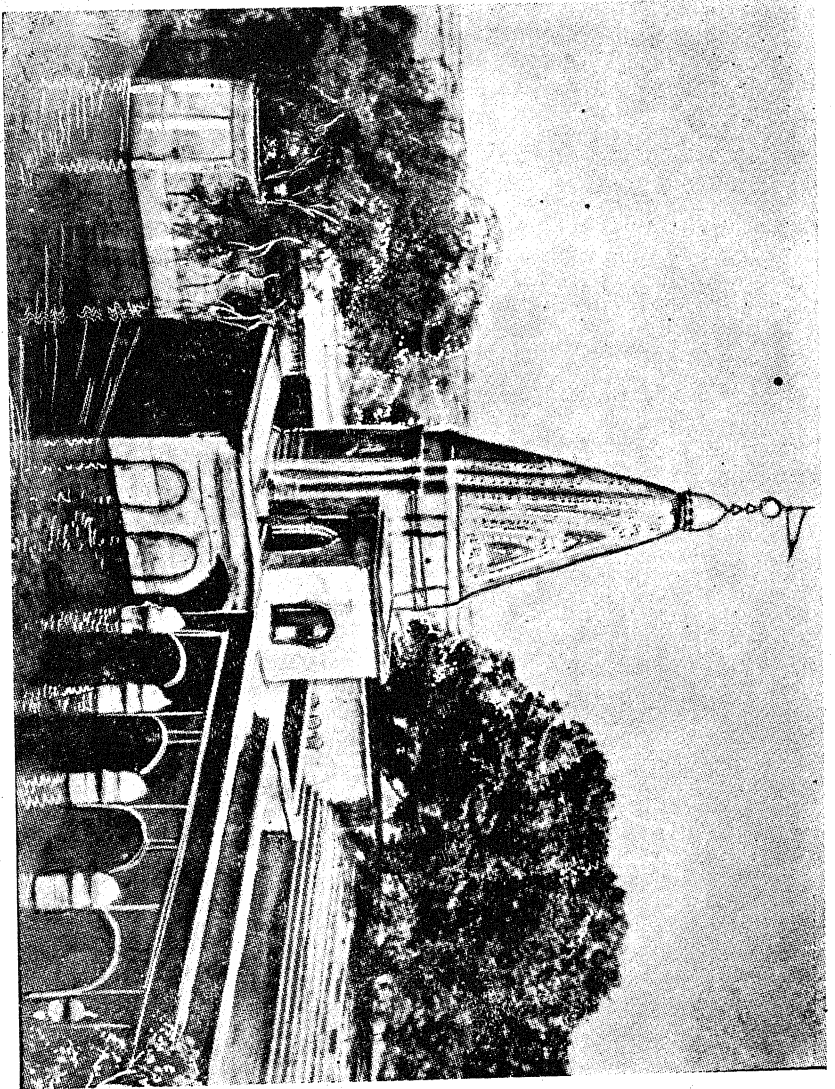
गोसाईंयों का तीर्थ "दरबार टोंभडी साहब"   बद्दोकी गुसाईंया (गुजरांवाला)

आसान काम न था। क्योंकि यह किसी एक व्यक्ति के वंस का नहीं था और गोसाईं-गद्दी के लाखों श्रद्धालु पाकिस्तान से उजड़ कर आये थे तथा भारत के विभिन्न स्थानों पर आबाद हो रहे थे। उनको संगठित करना और उनसे ग्रन्थ के छपवाने के लिये पर्याप्त धन इकट्ठा करना एक बहुत बड़ी समस्या था। अनेक कठिनाइयों का सामना था, पर इससे प्रेरणा दबी नहीं। बट्ठोकी गोसाइयाँ के जो लोग दिल्ली आकर आबाद हुए, वे संगठित हुए और उन्होंने इस ग्रन्थ को, जिसका मौलिक नाम 'ग्रन्थसाहिब' है, छपवाने का कार्यभार डा० बालकृष्ण जी को सौंपा। उन्होंने यथाशक्ति प्रयत्न किये, परन्तु सफलता न मिली। पहली कठिनाई तो यह थी कि 'ग्रन्थसाहिब' की पाण्डुलिपि ठीक-ठीक पढ़ने में न आती थी।

एक दिन मेरी माता पुष्पावती जी डा० बालकृष्ण के यहाँ गईं। उनको डाक्टर साहिब से मालूम हुआ कि अन्य कठिनाइयों के अतिरिक्त 'ग्रन्थसाहिब' की पाण्डु-लिपि के ठीक-ठीक न पढ़े जा सकने की कठिनाई तो इस ग्रन्थ के छपवाने के काम को शुरू ही नहीं होने देती। माता जी इस दिशा में प्रयत्न करने का आश्वासन देकर डा० बालकृष्ण जी से 'ग्रन्थ साहिब' ले आईं।

हम जिस मुहल्ले में रहते हैं, वहाँ पंजाब से आये हुए महानुभावीय (जय कृष्णी पंथीय) सम्प्रदाय का एक मन्दिर है। इस मंदिर में उस सम्प्रदाय के कई हस्त-लिखित ग्रन्थ पड़े हैं। ये सब बातें मेरी माता को मालूम थीं, क्योंकि वे उस मंदिर में कथा-कीर्तन सुनने के लिये जाया करती थीं। उन्होंने उक्त सम्प्रदाय के एक महानुभाव श्री योगीराज शास्त्री से 'ग्रन्थसाहिब' के विषय में चर्चा की। उन्हें हस्तलिखित ग्रन्थ पढ़ने का अच्छा अभ्यास है। श्री योगीराज जी को 'ग्रन्थ-साहिब' की पाण्डुलिपि दिखाई गई। वे इसे पढ़कर बहुत प्रभावित हुए। मैंने जब उनसे 'ग्रन्थसाहिब' के कुछ पद और उनकी व्याख्या सुनी, तो मैं भी अत्यन्त प्रभावित हुआ। मैंने महसूस किया कि श्री योगीराज जी ऐसे विद्वान हमारे काम में बड़े सहायक हो सकते हैं और मुझे बड़ी खुशी हुई, जब उन्होंने हर्षपूर्वक हमें सहायता देना स्वीकार कर लिया। इसके बाद 'ग्रन्थसाहिब' के छापने के विषय में डा० बालकृष्ण गोसाईं, श्री महन्त रामेश्वरीदास, बाबू गोपालदास, श्री योगीराज और मैंने मिलकर विचार-विमर्श किया। उस समय हमारे सामने दो बातें आईं। एक यह कि ग्रन्थ साहिब' के शुद्ध मूल पाठ के अनुरूप उसकी एक ऐसी प्रतिलिपि तैयार कराई जाय, जो ठीक-ठीक पढ़ी जा सके और छपने के लिये प्रेस में भेजने के योग्य हो। दूसरे यह कि छपवाने के लिये धन का संग्रह किया जाय।

पहली बात के लिये—हम दिल्ली विश्वविद्यालय के 'हिंदी विभाग' के रीडर श्री विजयेन्द्र स्नातक से मिले। निश्चय हुआ कि ग्रंथ साहेब की हाथ से एक प्रतिलिपि (Copy) तैय्यार करवाई जाय। इस बारे में लगभग छः महीने

के परिश्रम से एक व्यक्ति मिले। यह थे पं० साधुराम शास्त्री। पंडित साधुराम ने काम कर देने का वायदा किया। काम चालू हो गया। काम बड़ा धीरे-धीरे चल रहा था। पंडित जी का बीच में ही स्वास्थ्य खराब हो गया और काम अधूरा रह गया। हम जहां से चले थे फिर वहीं आ गये। तभी दैवयोग से श्री योगीराजजी के प्रयत्नों से हमारा यह काम जयकिशन हिंदी टाइपिस्ट ने कर देने का वायदा किया। इस प्रकार चार टाइप कापियां तय्यार हो गईं। हमारा एक काम पूरा हुआ। हम पं० साधुराम शास्त्री तथा श्री जयकिशन हिंदी टाईपिस्ट के बहुत ही आभारी हैं। विशेषकर श्री जयकिशन तो वधाई के पात्र हैं जिन्होंने इस काम को निश्चित समय के भीतर समाप्त कर दिया।

इसके बाद दूसरी बात थी 'रुपया इकट्ठा' करना। इस काम को चालू करने से पहले हमने "सिद्ध बाबा साईंदास सेवक संघ" नाम से एक संस्था की स्थापना करली थी और अब उसे दिल्ली राज्य सोसाइटी एक्ट के मताहत रजिस्टर्ड करवा लिया गया है। उसका हिसाब किताब बाकायदा तरीके से स्टेट बैंक में खोला गया। इन सब बातों को करने के उपरांत आर्थिक सहायता के लिये हम लोग पंजाब के पुराने परोपकारी नेता श्री डॉ० गोकुलचंद जी नारंग से मिले उन्होंने पहली मुलाकात में यह वचन दिया कि सारा रुपया तो वे नहीं लगा सकते मगर जितना रुपया इस ग्रंथ की छपाई के लिये चाहिये उसका आधा हम लोग इकट्ठा करें। सेवकसंघ की बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मत्ति से पास हुआ कि प्रत्येक सदस्य स्वयं २५०) रु० से कम दान नहीं करेगा, साथ ही यह प्रयत्न करेगा कि इतना ही दान और लोगों से दिलवाए। हमारे इस प्रस्ताव का स्वागत हुआ और हमारे इस उद्देश्य की सफलता के लिये निम्नलिखित महानुभावों से नीचे दी गई धन राशि प्राप्त हुई।

१.	श्री गोपालदास गोसाईं	सुपुत्र श्री मायारामजी	रु०	५००.००
२.	,, चिमनलाल बतूरा	,, दीवान चंद बतूरा	,,	५००.००
३.	,, केसरराम नारंग	,, नानकचंद नारंग	,,	५००.००
४.	,, डॉ० बालकृष्ण गुसाईं	,, रामचंद गोसाईं	,,	२५०.००
५.	,, कस्तूरीलाल भास्कर	,, डा० बालकृष्ण गोसाईं	,,	२५०.००
६.	,, कैलाशनाथ भास्कर	,, ,, ,, ,,	,,	२५०.००
७.	श्रीमती फूलावन्ती	धर्मपत्नी रायसाहिब परमानंद गोसाईं	,,	२५०.००
८.	,, पुष्पावती गोसाईं	,, श्री रामनाथ गोसाईं	,,	२५०.००
९.	श्री ओंप्रकाश गोसाईं	सुपुत्र ,, ,, ,,	,,	२५०.००
१०.	,, ओंप्रकाश भास्कर	,, ,, रामरखामल गोसाईं	,,	२५०.००
११.	,, अमरसिंह बजाज	,, ,, ला० जगतराम बजाज	,,	२५०.००
१२.	,, मनोहरलाल तलवार	,, ,, हरिचंद तलवार	,,	२५०.००
१३.	,, बिंद्राबन गोसाईं	,, ,, श्री जगन्नाथ गोसाईं	,,	२५०.००

१४. ,, रखाराम गुलाटी ,,	,, गंगाराम गुलाटी	,,	२५०.००
१५. ,, डॉ० रघुनाथ भास्कर ,,	,, शिवरामदास गोसाईं	,,	२५०.००
१६. ,, धर्मवीर नंदा आदि बंधु ,,	,, रामनाथ नंदा	,,	२५०.००
१७. ,, प्रकाशनाथ आदि बंधु ,,	,, ला० ठाकुरदास बहल	,,	२५०.००
१८. ,, प्राणनाथ बहल आदि बंधु ,,	,, बिशम्बरदयाल बहल	,,	२५०.००
१९. श्रीमती पुष्पावती	धर्मपत्नी ज्ञानचंद गोसाईं	,,	२५०.००

इस प्रकार उपरोक्त धनराशि का संग्रह कर लेने के बाद हम डॉ० गोकुलचंद जी नारंग से मिले। उन्होंने एक सहस्र रु० १०००.०० स्वयं दिया तथा शेष कागज़ पर लगने वाली राशि रु० १९४०.५० मेसर्स गोकुलचंद रामसहाय मरवाह कानपुर से दिलवाई। कुल २९४०.५० की राशि डॉ० नारंगजी के प्रयत्नों का फल है। इसके अतिरिक्त शेष रुपया छोटी-छोटी रकमों के रूप में "सेवक संघ को प्राप्त हुआ, जिससे हम इन आर्थिक मद्दों को पूरा करने में समर्थ हुए। इस रूप में ग्रंथ साहिब के छपने के दोनों काम पूरा कर लेने पर हमारा ध्यान प्रचार की ओर गया।

इसी बीच "ग्रंथ साहिब" को लेकर श्री योगीराज शास्त्री ने अपने 'थीसिस' के विषय को (Subject) चुना। इसके लिये डॉ० हरभजनसिंह खालसा कालेज के हिंदी के लेक्चरर उनके गाइड बने। उनसे भी ग्रंथ साहिब के बारे में कभी-कभी बातचीत होती रही। उनसे प्राप्त होने वाले सुझावों के लिये हम उनके भी आभारी हैं। डॉ० विजयेन्द्र स्नातक से बार-बार मिलने का मौका तो नहीं आया पर उन्होंने इस काम को प्रारंभ करवाया अत: उनका भी हम आभार मानते हैं।

ग्रंथ साहिब का प्रचार—इस बीच ग्रंथ साहिब की बानियों और सतगुरु सिद्ध बाबा साईंदास और उनके द्वारा चलाए हुए गुसाईं मत का परिचय देने के लिए श्री रामनाथ कालिया और श्री जगन्नाथ प्रभाकर के प्रयत्नों से समाचारपत्रों (मिलाप, प्रताप, तेज और 'नवभारत टाइम्स' आदि) और आकाशवाणी में समय-समय पर लेख छपे तथा वार्ताएँ प्रसारित हुईं। इन सबका सेवक संघ आभारी है।

अंत में हिंदी प्रिंटिंग प्रेस के संचालक श्री श्यामसुन्दरजी और नेशनल पब्लिशिंग हाउस के मालिक श्री कन्हैयालाल जी के सहयोग के लिये भी मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूं।

●